vol 2

0613 सहीह मुस्लिम

हदीस नं. 1731

सहीह मुस्लिम

तालीफ़

इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज नीशापुरी (रह.)

उर्दू तर्जुमा

फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अब्दुल अज़ीज़ अल्वी

तख़रीज

मौलाना अदनान दुर्वेश

तक़रीज़

मौलाना इरशादुल हक़ असरी

मिलने के पते

मकतबा तर्जुमान, 4116 उर्दू बाजार, नई दिल्ली
फोन: 011-23273407

तौफिक बुक डिपो, 2241/41 कुचा चैलान,
दरियागंज, नई दिल्ली 98732-96944

अल हिरा पब्लिकेशन, 423 उर्दू बाजार, मटिया महल
जामा मस्जिद, दिल्ली 090153-82970

मदरसा दारूल उलूम सलफिया,
मोहल्ला सब्जी फरोश, रतलाम, (एम.पी.)

मोहम्मद अब्बास, 903, बडे ओम्ती,
जबलपुर, (एम.पी.) 89595-13602

हाफ़िज़ मोहम्मद राशिद,
विज्ञान नगर, कोटा (राज.) 70146-75559

तौहीद किताब सेन्टर, 08039-72503 सीकर (राज.)
कलीम बुक डिपो, सीकर (राज.) 70148-98515

नईम कुरैशी, 2 सी.एच.ए. 18 हाउसिंग बोर्ड,
शास्त्री नगर, भट्टा बास, पुलिस स्टेशन के पास, जयपुर
(राज.) 82091-64214

अब्दुर्रहीम मुतवल्ली, मर्कजी मस्जिद अहले हदीस,
जोधपुर (राज.) 93143-66303

अल कौसर ट्रेडर्स,
जोधपुर 94141-920119

मकतबा अस्सून्नह,
मुम्बई 08097-44448

उमरी बुक डिपो, मदरसा तालीमुल कुरआन,
अशोक नगर, हिल नं. 3 कुर्ला, मुम्बई 82918-33897

दारूल इल्म,
नागपाड़ा, मुम्बई 022-23088989, 23082231

मो. इस्हाक, अल हुदा रिफाई फाउण्डेशन,
खजराना, इन्दौर 95846-51411

शैफुल्लाह खालिद,
माणक बाग, इन्दौर 98273-97772

अबू रेहान मुहम्मदी मदनी,
जुलैखा चिल्ड्रन हॉस्पीटल केसर कॉलोनी,
औरंगाबाद 88307-46536, 95452-45056

शैख सुहैल सल्फ़ी,
मकतबा सलफिया, वारणासी 094519-15874

आई.आई.सी.
नूरी होटल के पास, हाण्डा बाजार, भुज, कच्छा
(गुजरात) 094291-17111

मकतबा अलफहीम, मऊनाथ, भंजन (यूपी)
0547-2222013

नसीम खलीली, नीमू डायमण्ड फुट वियर, 87 बोधा
नगर, भूतला रोड़, आगरा (यूपी) 084497-10271

ALL INDIA DISTRIBUTOR
AL KITAB INTERNATIONAL
JAMIA NAGAR, NEW DELHI-25
PH: 26986973 M. 9312508762

SOLE DISTRIBUTOR
POPULAR BOOK STORE
OUT SIDE MERTI GATE, JODHPUR [RAJ.]
9460768990, 9664159557

सहीह मुस्लिम

तालीफ़

इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज नीशापुरी (रह.)

उर्दू तर्जुमा

फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अब्दुल अ़ज़ीज़ अ़ल्वी

तख़रीज

मौलाना अदनान दुर्वेश

तक़रीज़

मौलाना इरशादुल हक़ असरी

ज़िल्द नम्बर

हदीस नं. 613 से 1731 तक

नाम किताब	सहीह मुस्लिम	
तालीफ़	इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज नीशापुरी (रह.)	
उर्दू तर्जुमा	फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ अ़ल्वी	
हिन्दी तर्जुमा	दारूत-तर्जुमा, शोबा नश्रो इशाअ़त जमीअ़त अहले हदीस, जोधपुर (राज.)	
तख़रीज	मौलाना अदनान दुर्वेश	
तक़रीज़	मौलाना इरशादुल हक़ असरी	
तस्हीह व नज़्रे सानी	मौलाना जमशेद आलम सल्फ़ी (97857-69878)	
लेज़र टाइपसेटिंग	मुहम्मद गुफ़रान अन्सारी	
मेनेजिग डायरेक्टर	अली हम्ज़ा, (82338-55857)	
प्रिण्टिंग	आदर्श आफसेट, स्टेडियम शॉपिंग सेन्टर, जोधपुर 92144-85741	
बाइंडिंग	कमाल बाईण्डिंग हाउस, यादगार मास्टर जहुरुद्दीन साहब मो. शाहिद भाई 93516-68223 0291-2551615	
प्रकाशन (प्रथम संस्करण)	मुहर्रम 1441 हिजरी (सितम्बर 2019 इस्वी)	
तादादा कॉपी : 500	तादाद पेज: 624	क़ीमत: रु. 600/- जिल्द (रु. 4500 आठ जिल्द सेट)

प्रकाशक	मर्कज़ी अन्जुमन खुद्दामुल क़ुरआन वल हदीस, जोधपुर
जेरे निगरानी	शहरी व सूबाई जमीअत अहले हदीस, जोधपुर-राजस्थान

मिलने के पते

मकतबा तर्जुमान, 4116 उर्दू बाजार, नई दिल्ली
फोन: 011-23273407

तौफिक बुक डिपो, 2241/41 कुचा चैलान,
दरियागंज, नई दिल्ली 98732-96944

अल हिरा पब्लिकेशन, 423 उर्दू बाजार, मटिया महल
जामा मस्जिद, दिल्ली 090153-82970

मदरसा दारूल उलूम सलफिया,
मोहल्ला सब्जी फरोश, रतलाम, (एम.पी.)

मोहम्मद अब्बास, 903, बडे ओम्ती,
जबलपुर, (एम.पी.) 89595-13602

हाफ़िज़ मोहम्मद राशिद,
विज्ञान नगर, कोटा (राज.) 70146-75559

तौहीद किताब सेन्टर, 08039-72503 सीकर (राज.)

कलीम बुक डिपो, सीकर (राज.) 70148-98515

नईम कुरैशी, 2 सी.एच.ए. 18 हाउसिंग बोर्ड,
शास्त्री नगर, भट्टा बास, पुलिस स्टेशन के पास, जयपुर
(राज.) 82091-64214

अब्दुर्रहीम मुतवल्ली, मर्कजी मस्जिद अहले हदीस,
जोधपुर (राज.) 93143-66303

अल कौसर ट्रेडर्स,
जोधपुर 94141-920119

मकतबा अस्सून्नह,
मुम्बई 08097-44448

उमरी बुक डिपो, मदरसा तालीमुल कुरआन,
अशोक नगर, हिल नं. 3 कुर्ला, मुम्बई 82918-33897

दारूल इल्म,
नागपाड़ा, मुम्बई 022-23088989, 23082231

मो. इस्हाक, अल हुदा रिफाई फाउण्डेशन,
खजराना, इन्दौर 95846-51411

शैफुल्लाह खालिद,
माणक बाग, इन्दौर 98273-97772

अबू रेहान मुहम्मदी मदनी,
जुलैखा चिल्ड्रन हॉस्पीटल केसर कॉलोनी,
औरंगाबाद 88307-46536, 95452-45056

शैख सुहैल सल्फ़ी,
मकतबा सलफिया, वारणासी 094519-15874

आई.आई.सी.
नूरी होटल के पास, हाण्डा बाजार, भुज, कच्छा
(गुजरात) 094291-17111

मकतबा अलफहीम, मऊनाथ, भंजन (यूपी)
0547-2222013

नसीम खलीली, नीमू डायमण्ड फुट वियर, 87 बोधा
नगर, भूतला रोड़, आगरा (यूपी) 084497-10271

ALL INDIA DISTRIBUTOR
AL KITAB INTERNATIONAL
JAMIA NAGAR, NEW DELHI-25
PH: 26986973 M. 9312508762

SOLE DISTRIBUTOR
POPULAR BOOK STORE
OUT SIDE MERTI GATE, JODHPUR [RAJ.]
9460768990, 9664159557

फेहरिस्ते-मजामीन

मज़मून	सफ़ा नं.

मज़मून	सफ़ा नं.
इस किताब के कुल 52 बाब और 324 हदीसें हैं।	132
किताबुस्सलात (नमाज़ का बयान) हदीस नम्बर 837 से 1160 तक	137

मज़मून	सफ़ा नं.

इस किताब के कुल 34 बाब और 145 हदीसें हैं

كتاب الطهارة

किताबुत्तहारत
(तहारत का बयान)

हदीस नम्बर 613 से 678 तक

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 19 : दाहिने हाथ से इस्तिन्जा करने की मुमानिअत (मनाही)

(613) अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा अपने बाप से रिवायत बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से कोई पेशाब करते वक़्त अपना ज़कर (अज़्वे तनासुल/लिंग) दाहिने हाथ से न पकड़े और न दाहिने हाथ से इस्तिन्जा करे और न बर्तन में (पानी पीते वक़्त) साँस ले।'

(सहीह बुख़ारी : 153, 154, 5630, अबू दाऊद : 15, नसाई, इब्ने माजह : 310)

(614) अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा अपने बाप से रिवायत बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई बैतुल ख़ला में दाख़िल हो तो अपना अज़्वे मख़सूस (शर्मगाह) अपने दायें हाथ से न छूये (उसको हाथ न लगाये)।'

(615) हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने मना फ़रमाया है, 'कोई बर्तन में साँस ले या ये कि अपने ज़कर (लिंग) को अपना दायाँ हाथ लगाये या ये कि अपने दायें हाथ से इस्तिन्जा करे।'

باب النَّهْيِ عَنْ الاِسْتِنْجَاءِ، بِالْيَمِينِ

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ هَمَّامٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ يُمْسِكَنَّ أَحَدُكُمْ ذَكَرَهُ بِيَمِينِهِ وَهُوَ يَبُولُ وَلاَ يَتَمَسَّحْ مِنَ الْخَلاَءِ بِيَمِينِهِ وَلاَ يَتَنَفَّسْ فِي الإِنَاءِ " .

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ، عَنْ هِشَامٍ الدَّسْتَوَائِيِّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمُ الْخَلاَءَ فَلاَ يَمَسَّ ذَكَرَهُ بِيَمِينِهِ " .

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا الثَّقَفِيُّ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم نَهَى أَنْ يَتَنَفَّسَ فِي الإِنَاءِ وَأَنْ يَمَسَّ ذَكَرَهُ بِيَمِينِهِ وَأَنْ يَسْتَطِيبَ بِيَمِينِهِ .

फ़ायदा: पानी पीते वक़्त साँस बर्तन के अंदर नहीं लेना चाहिये बल्कि बर्तन को मुँह से दूर कर लेना चाहिये।

बाब 20 : तहारत व पाकीज़गी वग़ैरह में दायें तरफ़ से आग़ाज़ करना

باب التَّيَمُّنِ فِي الطُّهُورِ وَغَيْرِهِ

(616) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) वुज़ू में जब वुज़ू फ़रमाते, कंघी करने में जब कंघी करते और जूता पहनने में जब जूता पहनते, दायें तरफ़ से आग़ाज़ करना पसंद फ़रमाते थे।

(सहीह बुख़ारी : 168, 446, 5380, 5854, 5926, अबू दाऊद : 4140, तिर्मिज़ी : 608)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، أَخْبَرَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَشْعَثَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ إِنْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَيُحِبُّ التَّيَمُّنَ فِي طُهُورِهِ إِذَا تَطَهَّرَ وَفِي تَرَجُّلِهِ إِذَا تَرَجَّلَ وَفِي انْتِعَالِهِ إِذَا انْتَعَلَ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अत्तयम्मुनु : दायें तरफ़ से आग़ाज़ करना, इस काम का ताल्लुक़ हाथ से हो या पाँव से या किसी जानिब से। **(2) तरज्जुल :** कंघी करना। **(3) इन्तिआल :** नअल (जूता, चप्पल) से है जूता पहनना।

(617) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने तमाम कामों में दायें तरफ़ से शुरूआत करना पसंद फ़रमाते थे, अपने जूते पहनने में, अपनी कंघी करने में और अपने वुज़ू करने में।'

وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَشْعَثِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُحِبُّ التَّيَمُّنَ فِي شَأْنِهِ كُلِّهِ فِي نَعْلَيْهِ وَتَرَجُّلِهِ وَطُهُورِهِ

फ़ायदा : वो काम जिनका ताल्लुक़ नज़ाफ़त व तहारत व पाकीज़गी से है और उनसे हुस्न व निखार या इज़्ज़त व शर्फ़ का इज़हार होता है, उनमें आम तौर पर आप दायें तरफ़ से आग़ाज़ फ़रमाते थे। कुछ जगह आपने बायें तरफ़ से भी आग़ाज़ फ़रमाया है। जैसाकि जूता पहले बायाँ उतारते, मस्जिद से पहले बायाँ पाँव निकालते, बैतुल ख़ला में पहले बायाँ पाँव दाख़िल फ़रमाते थे।

बाब 21 : रास्ते और साये में क़ज़ाए हाजत से मुमानिअत

باب النَّهْيِ عَنِ التَّخَلِّي، فِي الطُّرُقِ وَالظِّلاَلِ

(618) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम लानत का बाइस़ बनने वाले दो कामों से

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ جَمِيعًا عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ جَعْفَرٍ، - قَالَ ابْنُ أَيُّوبَ

حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - أَخْبَرَنِي الْعَلاَءُ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " اتَّقُوا اللَّعَّانَيْنِ " . قَالُوا وَمَا اللَّعَّانَانِ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " الَّذِي يَتَخَلَّى فِي طَرِيقِ النَّاسِ أَوْ فِي ظِلِّهِمْ " .

बचो।' लोगों ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! लानत का सबब बनने वाले दो काम कौनसे हैं? आपने फ़रमाया, 'जो इंसान लोगों की गुज़रगाह या उनके साये में क़ज़ाए हाजत करता है (लोग उसको बुरा-भला कहेंगे)।'
(अबू दाऊद : 25)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) इत्तक़ुल्लआनैन : यानी वो काम जो लानत व तअ़न का बाइस़ बनते हैं, लोगों को बुरा-भला कहने पर आमादा करते हैं या उसकी दावत देते हैं। यानी आ़दतन लोग ऐसा काम करने वाले पर लानत भेजते हैं। **(2) अत्तख़ल्ली :** क़ज़ाए हाजत करना। **तरीक़ुन्नास :** लोगों की गुज़रगाह जिस जगह लोग आयें-जायें। **(3) फ़ी ज़िल्लिहिम :** उनके साये की जगह, जिस जगह लोग उठते-बैठते हों, ठहरते हों, पड़ाव करते हों, क़ैलूला करते हों (हर सायेदार जगह मुराद नहीं)।

फ़ायदा : लोग जिस रास्ते पर चलते हों या साये की जिस जगह आराम करने के लिये बैठते हों, अगर कोई गंवार और नादान आदमी वहाँ क़ज़ाए हाजत करेगा तो लोगों को उससे अज़ियत और तकलीफ़ पहुँचेगी जिसकी वजह से वो उसको बुरा-भला कहेंगे और लानत करेंगे इसलिये इस हरकत से बचना चाहिये। कुछ हदीसों में एक तीसरी जगह मवारिद (पानी की घाट) जहाँ लोग पानी के लिये आते-जाते हों, का ज़िक्र है। मक़सूद ये है कि अगर इंसान को घर से बाहर क़ज़ाए हाजत करना हो तो वो ऐसी जगह बैठे जहाँ लोगों का आना-जाना न हो और लोगों के लिये तकलीफ़ की वजह न बने।

باب الاِسْتِنْجَاءِ بِالْمَاءِ مِنَ التَّبَرُّزِ

बाब 22 : क़ज़ाए हाजत की सूरत में पानी से इस्तिन्जा करना

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي مَيْمُونَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم دَخَلَ حَائِطًا وَتَبِعَهُ غُلاَمٌ مَعَهُ مِيضَأَةٌ هُوَ أَصْغَرُنَا فَوَضَعَهَا عِنْدَ سِدْرَةٍ فَقَضَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَاجَتَهُ فَخَرَجَ عَلَيْنَا وَقَدِ اسْتَنْجَى بِالْمَاءِ .

(619) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक बाग़ में दाख़िल हुए और आपके पीछे एक लड़का भी चला गया, जिसके पास वुज़ू का बर्तन था और वो हम सबसे छोटा था। तो उसने उसे एक बेरी के दरख़्त के पास रख दिया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़ज़ाए हाजत की और पानी से इस्तिन्जा करके हमारे पास तशरीफ़ लाये।
(सहीह बुख़ारी: 150-152,217,500 अबूदाऊद : 43)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) हाइत : वो बाग़ जिसके गिर्द दीवार हो। **(2) मीज़ात :** वुज़ू करने का बर्तन (वुज़ू करने का आला)।

(620) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) क़ज़ाए हाजत के लिये ख़ाली जगह जाते तो मैं और मेरे जैसा लड़का पानी का बर्तन और नेज़ा उठाते तो आप पानी से इस्तिन्जा करते।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، وَغُنْدَرٌ، عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي مَيْمُونَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدْخُلُ الْخَلاَءَ فَأَحْمِلُ أَنَا وَغُلاَمٌ نَحْوِي إِدَاوَةً مِنْ مَاءٍ وَعَنَزَةً فَيَسْتَنْجِي بِالْمَاءِ

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अल्ख़ला : ख़ाली जगह, जहाँ कोई न हो। **(2) अनज़ह :** डण्डा जिसके नीचे फल लगा हो, नेज़ा।

(621) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) क़ज़ाए हाजत के लिये खुली जगह तशरीफ़ ले जाते और मैं आपके लिये पानी लाता तो आप उससे इस्तिन्जा करते।

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَبُو كُرَيْبٍ - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنِي ابْنَ عُلَيَّةَ- حَدَّثَنِي رَوْحُ بْنُ الْقَاسِمِ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي مَيْمُونَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَتَبَرَّزُ لِحَاجَتِهِ فَآتِيهِ بِالْمَاءِ فَيَتَغَسَّلُ بِهِ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) यतबर्रज़ : बराज़ की खुली जगह, जहाँ इंसान लोगों की नज़रों से ओझल हो सके, यानी क़ज़ाए हाजत के लिये आप आबादी से दूर तशरीफ़ ले जाते थे ताकि इस हालत में आप पर लोगों की नज़र न पड़े। **(2) यतग़स्सलु बिही :** पानी से इस्तिन्जा की जगह को धोते, मक़सद इस्तिन्जा करना है।

फ़ायदा : क़ज़ाए हाजत के वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) नेज़ा साथ रखते थे। ताकि उसको सामने गाड़कर उस पर कपड़ा वग़ैरह डालकर ओट कर ली जाये या उसको देखकर कोई उधर से गुज़रने का क़सद न करे या इससे सख़्त ज़मीन को नर्म कर लिया जाये ताकि छींटे न पड़ें या अगर कोई मूज़ी कीड़ा-मकोड़ा सामने आ जाये उससे बचाव किया जा सके या बवक़्ते ज़रूरत उसको सुतरह बनाया जा सके। (फ़तहुल बारी : 1/331)

बाब 23 : मोज़ों पर मसह

باب الْمَسْحِ عَلَى الْخُفَّيْنِ

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ جَمِيعًا عَنْ أَبِي مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، وَوَكِيعٌ، - وَاللَّفْظُ لِيَحْيَى - قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ هَمَّامٍ، قَالَ بَالَ جَرِيرٌ ثُمَّ تَوَضَّأَ وَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ فَقِيلَ تَفْعَلُ هَذَا . فَقَالَ نَعَمْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بَالَ ثُمَّ تَوَضَّأَ وَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ . قَالَ الأَعْمَشُ قَالَ إِبْرَاهِيمُ كَانَ يُعْجِبُهُمْ هَذَا الْحَدِيثُ لأَنَّ إِسْلاَمَ جَرِيرٍ كَانَ بَعْدَ نُزُولِ الْمَائِدَةِ .

(622) हम्माम बयान करते हैं हज़रत जरीर (रज़ि.) ने पेशाब किया, फिर वुज़ू किया और अपने मोज़ों पर मसह किया, तो उनसे कहा गया, आप ये काम करते हैं? तो उसने जवाब दिया, हाँ! मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा, आपने पेशाब किया, फिर वुज़ू किया और अपने मोज़ों पर मसह किया। इब्राहीम बयान करते हैं लोगों को ये हदीस़ बहुत पसंद थी, क्योंकि जरीर (रज़ि.) सूरह माइदा के नाज़िल होने के बाद मुसलमान हुए थे।

(सहीह बुख़ारी : 387, तिर्मिज़ी : 93, नसाई : 1/82, इब्ने माजह : 843, 3235)

फ़ायदा : मालूम होता है कि सहाबा किराम (रज़ि.) सूरह माइदा की आयत से पाँव धोने का हुक्म समझते थे। अगर वो इस आयत से पाँव पर मसह का हुक्म समझते तो उन्हें ये हदीस़ इतनी ज़्यादा पसंद न होती अगर हज़रत जरीर (रज़ि.) सूरह माइदा के नाज़िल होने से पहले मुसलमान हो चुके होते तो ये एहतिमाल पैदा हो सकता था कि मसह का हुक्म माइदा की आयत से जो धोने पर दलालत करती है मन्सूख़ हो चुका है। इसलिये तमाम अहले सुन्नत के नज़दीक मोज़ों पर मसह करना जाइज़ है। सिर्फ़ शीया और ख़ारजी इसके मुंकिर हैं। उनके नज़दीक मोज़ों पर मसह नहीं हो सकता। ख़ारजियों के नज़दीक पाँव धोये जायेंगे और शीया के नज़दीक पाँव पर मसह होगा।

وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَعَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، ح وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، ح وَحَدَّثَنَا مِنْجَابُ بْنُ الْحَارِثِ التَّمِيمِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ مُسْهِرٍ، كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ

(623) इमाम साहब अलग-अलग उस्तादों से रिवायत बयान करते हैं कि अब्दुल्लाह के शागिर्दों को ये हदीस़ बहुत पसंद थी क्योंकि जरीर सूरह माइदा के उतरने के बाद मुसलमान हुए थे।

بِمَعْنَى حَدِيثِ أَبِي مُعَاوِيَةَ غَيْرَ أَنَّ فِي، حَدِيثِ عِيسَى وَسُفْيَانَ قَالَ فَكَانَ أَصْحَابُ عَبْدِ اللَّهِ يُعْجِبُهُمْ هَذَا الْحَدِيثُ لأَنَّ إِسْلاَمَ جَرِيرٍ كَانَ بَعْدَ نُزُولِ الْمَائِدَةِ

(624) हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) की रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ था। आप कुछ लोगों के कूड़ा फेंकने की जगह पर पहुँचे और खड़े होकर पेशाब किया। तो मैं दूर हट गया। आपने फ़रमाया, 'क़रीब आ जा।' तो मैं क़रीब होकर आपके पीछे खड़ा हो गया। (फ़राग़त के बाद) आपने वुज़ू किया और मोज़ों पर मसह किया।

(सहीह बुख़ारी : 225, 224, 226, 2471, अबू दाऊद : 23, तिर्मिज़ी : 13, नसाई : 1/25, इब्ने माजह : 305, 306, 544)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، أَخْبَرَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ، قَالَ كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَانْتَهَى إِلَى سُبَاطَةِ قَوْمٍ فَبَالَ قَائِمًا فَتَنَحَّيْتُ فَقَالَ " ادْنُهْ " . فَدَنَوْتُ حَتَّى قُمْتُ عِنْدَ عَقِبَيْهِ فَتَوَضَّأَ فَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ .

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है अगर बैठने के लिये मुनासिब जगह न मिले और पेशाब की ज़रूरत लाहिक़ हो जाये तो खड़े होकर पेशाब किया जा सकता है। क्योंकि बैठकर पेशाब करना तहज़ीब व शाइस्तगी की अलामत है और इसका ताल्लुक़ आदाब व अख़्लाक़ से है। इसलिये कभी-कभार, ज़रूरत के तहत ऐसे करना जाइज़ है। आपकी आम आदत दूर जाने की थी और इस बार आप दूर भी तशरीफ़ नहीं ले गये और पर्दे के लिये हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) को अपने पीछे खड़ा किया।

(625) अबू वाइल बयान करते हैं, हज़रत अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) बोल के सिलसिले में तशद्दुद करते थे और बोतल में बोल करते थे और बयान करते कि बनू इस्राईल के किसी आदमी के जिस्म पर पेशाब लग जाता तो वो खाल के इतने हिस्से को कैंची से काट डालता। तो हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने कहा, मैं चाहता हूँ तुम्हारा उस्ताद इस क़द्र सख़्ती इख़्तियार न करे। मैंने

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، قَالَ كَانَ أَبُو مُوسَى يُشَدِّدُ فِي الْبَوْلِ وَيَبُولُ فِي قَارُورَةٍ وَيَقُولُ إِنَّ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَانَ إِذَا أَصَابَ جِلْدَ أَحَدِهِمْ بَوْلٌ قَرَضَهُ بِالْمَقَارِيضِ . فَقَالَ حُذَيْفَةُ لَوَدِدْتُ أَنَّ صَاحِبَكُمْ لاَ يُشَدِّدُ هَذَا التَّشْدِيدَ فَلَقَدْ رَأَيْتُنِي

أَنَا وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم نَتَمَاشَى فَأَتَى سُبَاطَةَ خَلْفَ حَائِطٍ فَقَامَ كَمَا يَقُومُ أَحَدُكُمْ فَبَالَ فَانْتَبَذْتُ مِنْهُ فَأَشَارَ إِلَيَّ فَجِئْتُ فَقُمْتُ عِنْدَ عَقِبِهِ حَتَّى فَرَغَ .

आप (ﷺ) को देखा कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ जा रहा था। आप एक दीवार के पीछे कूड़े के ढेर पर पहुँचे और तुम्हारी तरह जा कर खड़े हो गये और पेशाब करना चाहा। मैं आपसे हट गया। आपने मुझे इशारा फ़रमाया तो मैं ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपके पीछे खड़ा हो गया यहाँ तक कि आप फ़ारिग़ हो गये।

फ़ायदा : किसी मसले में तशद्दुद या इन्तिहा पसन्दी मुनासिब नहीं है। इस्लाम में इंसानी ज़रूरतों और मजबूरियों का लिहाज़ रखा गया है। इसलिये कुछ मक़ामात पर आम आदत के ख़िलाफ़ किसी उ़ज़्र को मल्हूज़ रख कर सहूलत और रुख़्सत की गुंजाइश रखी गई है और इफ़रात व तफ़रीत से बचते हुए मियाना रवी (दरम्यानी राह) को इख़्तियार किया गया है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحِ بْنِ الْمُهَاجِرِ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ نَافِعِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الْمُغِيرَةِ، عَنْ أَبِيهِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ خَرَجَ لِحَاجَتِهِ فَاتَّبَعَهُ الْمُغِيرَةُ بِإِدَاوَةٍ فِيهَا مَاءٌ فَصَبَّ عَلَيْهِ حِينَ فَرَغَ مِنْ حَاجَتِهِ فَتَوَضَّأَ وَمَسَحَ عَلَى الْخُفَّيْنِ . وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ رُمْحٍ مَكَانَ حِينَ حَتَّى .

(626) हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा (रज़ि.) से मरफ़ूअ़ रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) क़ज़ाए हाजत के लिये गये, मैं पानी का बर्तन लेकर आपके पीछे गया, जब हाजत से फ़ारिग़ हुए तो मुग़ीरह ने पानी डाला और आपने वुज़ू फ़रमाया और अपने मोज़ों पर मसह किया। इब्ने रुमह की रिवायत हुसैन की जगह 'हत्ता फ़रग़ है।'

(सहीह बुख़ारी : 182, 203, 26, 4421, 5799, अबू दाऊद : 82, इब्ने माजह : 545)

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، قَالَ سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ سَعِيدٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ فَغَسَلَ وَجْهَهُ وَيَدَيْهِ وَمَسَحَ بِرَأْسِهِ ثُمَّ مَسَحَ عَلَى الْخُفَّيْنِ .

(627) इमाम साहब एक और सनद से बयान करते हैं कि आपने अपना चेहरा और दोनों हाथ धोये और अपने सर का मसह किया, फिर मोज़ों पर मसह किया।

(628) हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा (रज़ि.) से रिवायत है कि इसी असना में कि मैं एक रात रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ था, आप उतरे और क़ज़ाए हाजत की। फिर आये तो मैंने उस बर्तन से जो मेरे पास था, आपके आज़ा पर पानी डाला, आपने वुज़ू किया और अपने मोज़ों पर मसह किया।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، أَخْبَرَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَشْعَثَ، عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ هِلاَلٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، قَالَ بَيْنَا أَنَا مَعَ، رَسُولِ اللَّهِ ﷺ ذَاتَ لَيْلَةٍ إِذْ نَزَلَ فَقَضَى حَاجَتَهُ ثُمَّ جَاءَ فَصَبَبْتُ عَلَيْهِ مِنْ إِدَاوَةٍ كَانَتْ مَعِي فَتَوَضَّأَ وَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ .

(629) हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा (रज़ि.) से रिवायत है कि एक सफ़र में मैं नबी (ﷺ) के साथ था, तो आपने फ़रमाया, 'ऐ मुग़ीरह! पानी का बर्तन लो।' मैंने बर्तन ले लिया और आपके साथ निकला। रसूलुल्लाह (ﷺ) चले, यहाँ तक कि मुझसे छिप गये। अपनी ज़रूरत पूरी की, फिर आप वापस आये और आप तंग आस्तीनों वाला शामी जुब्बा पहने हुए थे, तो आप उसकी आस्तीन से अपना हाथ निकालने लगे। वो उससे तंग निकला (हाथ न निकल सका) तो आपने अपने हाथ को नीचे से निकाल लिया, मैंने आपके आज़ा पर पानी डाला, तो आपने नमाज़ वाला वुज़ू फ़रमाया। फिर आपने अपने मोज़ों पर मसह किया, फिर नमाज़ पढ़ी।
(सहीह बुख़ारी : 363, 388, 2918, 5798, नसाई : 1/82, इब्ने माजह : 389)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُسْلِمٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، قَالَ كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فِي سَفَرٍ فَقَالَ " يَا مُغِيرَةُ خُذِ الإِدَاوَةَ " . فَأَخَذْتُهَا ثُمَّ خَرَجْتُ مَعَهُ فَانْطَلَقَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى تَوَارَى عَنِّي فَقَضَى حَاجَتَهُ ثُمَّ جَاءَ وَعَلَيْهِ جُبَّةٌ شَامِيَّةٌ ضَيِّقَةُ الْكُمَّيْنِ فَذَهَبَ يُخْرِجُ يَدَهُ مِنْ كُمِّهَا فَضَاقَتْ عَلَيْهِ فَأَخْرَجَ يَدَهُ مِنْ أَسْفَلِهَا فَصَبَبْتُ عَلَيْهِ فَتَوَضَّأَ وُضُوءَهُ لِلصَّلاَةِ ثُمَّ مَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ ثُمَّ صَلَّى .

(630) हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) क़ज़ाए हाजत के लिये निकले तो जब वापस आये, मैं पानी का बर्तन लेकर आपको मिला और आपके आज़ा (वुज़ू के हिस्सों) पर पानी

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَعَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، جَمِيعًا عَنْ عِيسَى بْنِ يُونُسَ، - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا عِيسَى، - حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ مُسْلِمٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، قَالَ خَرَجَ

رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لِيَقْضِيَ حَاجَتَهُ فَلَمَّا رَجَعَ تَلَقَّيْتُهُ بِالإِدَاوَةِ فَصَبَبْتُ عَلَيْهِ فَغَسَلَ يَدَيْهِ ثُمَّ غَسَلَ وَجْهَهُ ثُمَّ ذَهَبَ لِيَغْسِلَ ذِرَاعَيْهِ فَضَاقَتِ الْجُبَّةُ فَأَخْرَجَهُمَا مِنْ تَحْتِ الْجُبَّةِ فَغَسَلَهُمَا وَمَسَحَ رَأْسَهُ وَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ ثُمَّ صَلَّى بِنَا .

डाला। आपने अपने दोनों हाथ धोये फिर चेहरा धोया। फिर हाथ धोने लगे, तो जुब्बा तंग निकला, तो आपने हाथ जुब्बे के नीचे से निकाल लिये और उनको धोया, सर का मसह किया और अपने मोज़ों पर मसह किया, फिर हमें नमाज़ पढ़ाई।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ، عَنْ عَامِرٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ لَيْلَةٍ فِي مَسِيرٍ فَقَالَ لِي " أَمَعَكَ مَاءٌ " . قُلْتُ نَعَمْ . فَنَزَلَ عَنْ رَاحِلَتِهِ فَمَشَى حَتَّى تَوَارَى فِي سَوَادِ اللَّيْلِ ثُمَّ جَاءَ فَأَفْرَغْتُ عَلَيْهِ مِنَ الإِدَاوَةِ فَغَسَلَ وَجْهَهُ وَعَلَيْهِ جُبَّةٌ مِنْ صُوفٍ فَلَمْ يَسْتَطِعْ أَنْ يُخْرِجَ ذِرَاعَيْهِ مِنْهَا حَتَّى أَخْرَجَهُمَا مِنْ أَسْفَلِ الْجُبَّةِ فَغَسَلَ ذِرَاعَيْهِ وَمَسَحَ بِرَأْسِهِ ثُمَّ أَهْوَيْتُ لأَنْزِعَ خُفَّيْهِ فَقَالَ " دَعْهُمَا فَإِنِّي أَدْخَلْتُهُمَا طَاهِرَتَيْنِ " . وَمَسَحَ عَلَيْهِمَا .

(631) हज़रत उरवह बिन मुग़ीरह (रज़ि.) अपने वालिद से बयान करते हैं कि एक रात एक सफ़र में मैं नबी (ﷺ) के साथ था। तो आपने पूछा, क्या तेरे पास पानी है? मैंने कहा, जी हाँ। तो आप अपनी सवारी से उतरे, फिर चल दिये। यहाँ तक कि रात की स्याही में मुझसे छिप गये। फिर वापस आये, तो मैंने बर्तन से पानी आप पर डाला। आपने चेहरा धोया और आप ऊन का जुब्बा पहने हुए थे। आप उससे (तंग होने की वजह से) अपने हाथ न निकाल सके। यहाँ तक कि दोनों हाथों को जुब्बे के नीचे से निकाला और अपने (कोहनियों समेत) हाथ धोये और अपने सर का मसह किया। फिर मैं झुका ताकि आपके मोज़े उतारूँ, तो आपने फ़रमाया, 'इनको छोड़िये, मैंने दोनों पाँव धोने के बाद पहने थे।' और उन पर मसह फ़रमाया।

फ़वाइद : (1) हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा की रिवायत से साबित होता है, बड़ा आदमी छोटे से ख़िदमत ले सकता है और वो वुज़ू का पानी भी आज़ाए वुज़ू पर डाल सकता है। (2) मोज़े उस वक़्त पहनने चाहिये जब वुज़ू मुकम्मल हो चुका हो, अगर किसी ने दायाँ पाँव धोने के बाद मोज़ा पहन लिया, फिर बायाँ पाँव धोया और मोज़ा पहन लिया तो ये काम दुरुस्त नहीं है। इमाम मालिक, शाफ़ेई और अहमद (रह.) का यही मौक़िफ़ है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के नज़दीक ये काम सहीह है और इस सूरत में मोज़ों पर मसह करना दुरुस्त होगा। (शरह नववी : 1/134)

(632) हज़रत मुग़ीरह (रज़ि.) ने नबी (ﷺ) को वुज़ू करवाया, आपने वुज़ू किया और अपने मोज़ों पर मसह किया। मुग़ीरह ने मोज़े उतारने का इशारा किया तो आपने फ़रमाया, 'मैंने इनको पाँव धोकर पहना था।'

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ أَبِي زَائِدَةَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الْمُغِيرَةِ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ وَضَّأَ النَّبِيَّ ﷺ فَتَوَضَّأَ وَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ فَقَالَ لَهُ فَقَالَ" إِنِّي أَدْخَلْتُهُمَا طَاهِرَتَيْنِ " .

बाब 24 : पेशानी और पगड़ी पर मसह

باب الْمَسْحِ عَلَى النَّاصِيَةِ وَالْعِمَامَةِ

(633) हज़रत मुग़ीरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पीछे रह गये और मैं भी आपके साथ पीछे रह गया। तो जब क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ हुए पूछा, 'क्या तेरे पास पानी है?' तो मैं आपके पास वुज़ू करने का बर्तन लाया। आपने अपने दोनों हाथ और चेहरा धोया, फिर दोनों बाहें (कलाइयाँ) खोलने लगे, तो जुब्बे की आस्तीन तंग पड़ गईं। आपने अपना हाथ जुब्बे के नीचे से निकाला और जुब्बा कन्धों पर डाल लिया और अपनी दोनों बाहें (कलाइयाँ) धोईं और अपनी पेशानी और पगड़ी और मोज़ों पर मसह किया। फिर आप सवार हुए और मैं भी सवार हुआ और हम लोगों के पास इस हाल में पहुँचे कि वो अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ की इक़्तिदा में नमाज़ के लिये खड़े हो चुके थे और अ़ब्दुर्रहमान ने एक रकअ़त पढ़ा दी थी। जब उन्होंने नबी (ﷺ) की तशरीफ़ आवरी को महसूस किया तो पीछे हटने लगे। आपने उसे इशारा किया (नमाज़ पूरी करो) तो

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بَزِيعٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، - يَعْنِي ابْنَ زُرَيْعٍ - حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ الطَّوِيلُ، حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْمُزَنِيُّ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ تَخَلَّفَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَتَخَلَّفْتُ مَعَهُ فَلَمَّا قَضَى حَاجَتَهُ قَالَ " أَمَعَكَ مَاءٌ " . فَأَتَيْتُهُ بِمِطْهَرَةٍ فَغَسَلَ كَفَّيْهِ وَوَجْهَهُ ثُمَّ ذَهَبَ يَحْسِرُ عَنْ ذِرَاعَيْهِ فَضَاقَ كُمُّ الْجُبَّةِ فَأَخْرَجَ يَدَهُ مِنْ تَحْتِ الْجُبَّةِ وَأَلْقَى الْجُبَّةَ عَلَى مَنْكِبَيْهِ وَغَسَلَ ذِرَاعَيْهِ وَمَسَحَ بِنَاصِيَتِهِ وَعَلَى الْعِمَامَةِ وَعَلَى خُفَّيْهِ ثُمَّ رَكِبَ وَرَكِبْتُ فَانْتَهَيْنَا إِلَى الْقَوْمِ وَقَدْ قَامُوا فِي الصَّلاَةِ يُصَلِّي بِهِمْ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ وَقَدْ رَكَعَ بِهِمْ رَكْعَةً فَلَمَّا أَحَسَّ بِالنَّبِيِّ صلى الله

عليه وسلم ذَهَبَ يَتَأَخَّرُ فَأَوْمَأَ إِلَيْهِ فَصَلَّى بِهِمْ فَلَمَّا سَلَّمَ قَامَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم وَقُمْتُ فَرَكَعْنَا الرَّكْعَةَ الَّتِي سَبَقَتْنَا .

उन्होंने नमाज़ पढ़ा दी। जब सलाम फेरा, नबी (ﷺ) खड़े हो गये और मैं भी खड़ा हो गया और हमने वो रकअत पढ़ी जो हमसे पहले हो चुकी थी।

(अबू दाऊद : 150, तिर्मिज़ी : 100, नसाई : 1/86)

फ़वाइद : (1) इस हदीस़ से साबित होता है कि पेशानी पर मसह करने के बाद पगड़ी के ऊपर मसह करना जाइज़ है। पगड़ी को उतारकर सर का मसह करना ज़रूरी नहीं है। इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक और इमाम शाफ़ेई (रह.) के नज़दीक सिर्फ़ अकेली पगड़ी इमाम अहमद और कुछ हज़रात सिर्फ़ पगड़ी पर मसह के जवाज़ के क़ाइल हैं। मगर हदीस़ की बात मुक़द्दम है। सर के कुछ हिस्से पर मसह करना चाहिये। (शरह नववी : 1/134) **(2)** नमाज़ अव्वल वक़्त में पढ़नी चाहिये क्योंकि सहाबा किराम (रज़ि.) ने नमाज़ को अव्वल वक़्त में शुरू कर दिया, आपकी आमद तक इन्तिज़ार नहीं किया। (शरह नववी : 1/134) **(3)** हज़रत अबू बकर (रज़ि.) नबी (ﷺ) की आमद पर पीछे हट गये थे। क्योंकि उन्होंने अभी नमाज़ का आग़ाज़ किया था, लेकिन हज़रत अ़ब्दुर्रहमान पीछे नहीं हटे क्योंकि वो सुबह की नमाज़ की एक रकअत पढ़ा चुके थे। इसलिये अगर कभी ऐसी सूरत पेश आ जाये तो इमामे रातिब (रोज़ाना इमामत करने वाले) को नाराज़ नहीं होना चाहिये लेकिन मुक़्तदियों को भी जल्दबाज़ी से काम नहीं लेना चाहिये।

حَدَّثَنَا أُمَيَّةُ بْنُ بِسْطَامَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالاَ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ حَدَّثَنِي بَكْرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ ابْنِ الْمُغِيرَةِ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم مَسَحَ عَلَى الْخُفَّيْنِ وَمُقَدَّمِ رَأْسِهِ وَعَلَى عِمَامَتِهِ .

(634) हमें उमय्या बिन बिस्ताम और मुहम्मद बिन अ़ब्दुल आ़ला दोनों ने मुअतमिर के वास्ते से उसके बाप की बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह से हज़रत मुग़ीरह (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने मोज़ों, अपने सर के सामने के हिस्से और अपनी पगड़ी पर मसह किया।

(अबू दाऊद : 150, तिर्मिज़ी : 100, नसाई : 1/76)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ सर के मसह का आग़ाज़ सर के सामने वाले हिस्से से किया जायेगा और अगर सर पर पगड़ी भी हो तो सामने के हिस्से के साथ पगड़ी पर मसह किया जायेगा।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ بَكْرٍ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنِ ابْنِ الْمُغِيرَةِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(635) हमें मुहम्मद बिन अ़ब्दुल आ़ला ने मुअतमिर के वास्ते से उसके बाप की, बक्र से हसन की, मुग़ीरह के बेटे से उसके बाप की रिवायत ऊपर की रिवायत की तरह बयान की।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، جَمِيعًا عَنْ يَحْيَى الْقَطَّانِ، قَالَ ابْنُ حَاتِمٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنِ التَّيْمِيِّ، عَنْ بَكْرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنِ ابْنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ بَكْرٌ وَقَدْ سَمِعْتُ مِنِ ابْنِ الْمُغِيرَةِ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تَوَضَّأَ فَمَسَحَ بِنَاصِيَتِهِ وَعَلَى الْعِمَامَةِ وَعَلَى الْخُفَّيْنِ .

(636) हज़रत मुग़ीरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने वुज़ू किया और अपनी पेशानी और पगड़ी और मोज़ों पर मसह किया।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَعْمَشِ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ، عَنْ بِلاَلٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مَسَحَ عَلَى الْخُفَّيْنِ وَالْخِمَارِ . وَفِي حَدِيثِ عِيسَى حَدَّثَنِي الْحَكَمُ حَدَّثَنِي بِلاَلٌ

(637) हज़रत बिलाल (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मोज़ों और पगड़ी पर मसह किया। ईसा की हदीस़ में अ़न अल्हकम और अ़न बिलाल की जगह हद्दस़नी अल्हकम हद्दस़नी बिलाल है।
(तिर्मिज़ी, : 101, नसाई : 1/75, इब्ने माजह : 561)

وَحَدَّثَنِيهِ سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا عَلِيٌّ - يَعْنِي ابْنَ مُسْهِرٍ - عَنِ الأَعْمَشِ بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ فِي الْحَدِيثِ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ

(638) और यही रिवायत मुझे सुवैद ने अ़ली बिन मुस्हिर के वास्ते से आ़मश की मज़्कूरा बाला सनद के साथ सुनाई, उसमें अ़न रसूलिल्लाह की बजाय रऐतु रसूलल्लाह(ﷺ) है।
(तिर्मिज़ी:101, नसाई : 1/75, इब्ने माजह : 561)

मुफ़रदातुल हदीस़ : इस हदीस़ में पगड़ी के लिये अ़मामा की जगह ख़िमार (ओढ़नी) का लफ़्ज़ आया है। क्योंकि पगड़ी भी ख़िमार की तरह सर को ढांप लेती है। (शरह नववी : 1/135)

बाब 25 : मोज़ों पर मसह के लिये मुद्दत की तहदीद

باب التَّوْقِيتِ فِي الْمَسْحِ عَلَى الْخُفَّيْنِ

(639) शुरैह बिन हानी बयान करते हैं कि मैं हज़रत आइशा (रज़ि.) के पास मोज़ों पर मसह के बारे में पूछने की ख़ातिर हाज़िर हुआ तो उन्होंने कहा, अली बिन अबी तालिब के पास जाओ और उनसे पूछो, क्योंकि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ सफ़र किया करते थे। हमने उनसे पूछा तो उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुसाफ़िर के लिये तीन दिन-रात और मुक़ीम के लिये एक दिन-रात मुक़र्रर फ़रमाया। अब्दुर्रज़्ज़ाक़ कहते हैं, सुफ़ियान (सौरी) जब अम्र का तज़्किरा करते तो उनकी तारीफ़ करते।

(नसाई : 1/84, इब्ने माजह : 552)

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا الثَّوْرِيُّ، عَنْ عَمْرِو بْنِ قَيْسٍ الْمُلاَئِيِّ، عَنِ الْحَكَمِ بْنِ عُتَيْبَةَ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُخَيْمِرَةَ، عَنْ شُرَيْحِ بْنِ هَانِئٍ، قَالَ أَتَيْتُ عَائِشَةَ أَسْأَلُهَا عَنِ الْمَسْحِ، عَلَى الْخُفَّيْنِ فَقَالَتْ عَلَيْكَ بِابْنِ أَبِي طَالِبٍ فَسَلْهُ فَإِنَّهُ كَانَ يُسَافِرُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَسَأَلْنَاهُ فَقَالَ جَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ وَلَيَالِيَهُنَّ لِلْمُسَافِرِ وَيَوْمًا وَلَيْلَةً لِلْمُقِيمِ . قَالَ وَكَانَ سُفْيَانُ إِذَا ذَكَرَ عَمْرًا أَثْنَى عَلَيْهِ .

फ़वाइद : (1) इस हदीस से मालूम हुआ कि हज़रत आइशा (रज़ि.) हज़रत अली (रज़ि.) का नाम लेने या उनका ज़िक्रे ख़ैर करने में कोई इन्क़बाज़ महसूस नहीं करती थीं। इसलिये नबी (ﷺ) की मर्ज़ुल मौत में जो दो आदमी आपको मस्जिद में सहारा दे कर ले गये उनमें से एक का नाम लेना और दूसरे का नाम न लेना इस बिना पर नहीं था कि आप उसका नाम लेना पसंद नहीं करती थीं। आगे सराहतन हज़रत अली (रज़ि.) का नाम आ रहा है। (2) इस हदीस से साबित हुआ, मुद्दते मसह (मोज़ों पर) मुसाफ़िर के लिये तीन दिन और तीन रात है और मुक़ीम के लिये एक दिन और एक रात है। हाँ! ग़ुस्ल की सूरत में मोज़े उतारने होंगे। इसलिये इमाम मालिक की तरफ़ मन्सूब क़ौल कि मसह के लिये कोई मुद्दत मुक़र्रर नहीं, दुरुस्त नहीं है। (3) जब किसी आलिम से कोई मसला पूछा जाये और उससे बेहतर बताने वाला मौजूद हो तो उसे साइल को उससे पूछने के लिये कहना चाहिये।

(640) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) हदीस बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ عَدِيٍّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَبِي أُنَيْسَةَ، عَنِ الْحَكَمِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُخَيْمِرَةَ، عَنْ شُرَيْحِ بْنِ هَانِئٍ، قَالَ سَأَلْتُ عَائِشَةَ عَنِ الْمَسْحِ، عَلَى الْخُفَّيْنِ فَقَالَتِ ائْتِ عَلِيًّا فَإِنَّهُ أَعْلَمُ بِذَلِكَ مِنِّي فَأَتَيْتُ عَلِيًّا فَذَكَرَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(641) शुरैह बिन हानी बयान करते हैं कि मैंने मोज़ों पर मसह का मसला हज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने कहा, अली (रज़ि.) के पास जाओ क्योंकि वो ये मसला मुझसे ज़्यादा बेहतर जानते हैं। तो मैं अली (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने मज़्कूरा बाला मसला नबी (ﷺ) से बयान फ़रमाया।

باب جَوَازِ الصَّلَوَاتِ كُلِّهَا بِوُضُوءٍ وَاحِدٍ

बाब 26 : एक वुज़ू से सब नमाज़ें अदा करना (यानी पाँचों नमाज़ों का जवाज़)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ سُفْيَانَ، قَالَ حَدَّثَنِي عَلْقَمَةُ بْنُ مَرْثَدٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم صَلَّى الصَّلَوَاتِ يَوْمَ الْفَتْحِ بِوُضُوءٍ وَاحِدٍ وَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ فَقَالَ لَهُ عُمَرُ لَقَدْ صَنَعْتَ الْيَوْمَ شَيْئًا لَمْ تَكُنْ تَصْنَعُهُ . قَالَ " عَمْدًا صَنَعْتُهُ يَا عُمَرُ " .

(642) सुलैमान बिन बुरैदा अपने बाप से बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के दिन सब नमाज़ें एक वुज़ू से पढ़ीं और अपने मोज़ों पर मसह किया, तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने आपसे पूछा, आपने आज ऐसा काम किया जो आपने पहले कभी नहीं किया, तो आपने जवाब दिया, 'ऐ उमर! मैंने अम्दन (जान-बूझकर) ये काम किया है।'

(अबू दाऊद : 171, तिर्मिज़ी : 61, नसाई : 1/86, 510, 1928)

फ़ायदा : इस हदीस से साबित हुआ जब तक इंसान बेवुज़ू न हो तो वो कई फ़राइज़ व नवाफ़िल एक वुज़ू से ही अदा कर सकता है और ये हदीसे मुबारका इज़ा क़ुम्तुम इलस्सलाति फ़ग़्सिलू वुजू-हकुम आयत के मुनाफ़ी नहीं है। क्योंकि आयते मुबारका का मानी ये है अगर तुम्हारा वुज़ू न हो और तुम नमाज़ के लिये उठो तो वुज़ू कर लो। ताहम दूसरी रिवायात से मालूम होता है वुज़ू की मौजूदगी में वुज़ू कर लेना, नूर अला नूर है। क्योंकि आप आम तौर पर हर नमाज़ के लिये वुज़ू करते थे और आयत का ज़ाहिरी तक़ाज़ा यही है। (शरह नववी : 1/135)

बाब 27 : वुज़ू करने वाले या दूसरे इंसान के लिये जाइज़ नहीं है कि वो अपने हाथ को, जबकि उसके पलीद होने का शुब्हा हो, तीन बार धोये बग़ैर बर्तन में डाले

باب كَرَاهَةِ غَمْسِ الْمُتَوَضِّئِ وَغَيْرِهِ يَدَهُ الْمَشْكُوكَ فِي نَجَاسَتِهَا فِي الإِنَاءِ قَبْلَ غَسْلِهَا ثَلاَثًا

(643) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई नींद से बेदार हो तो अपना हाथ उस वक़्त तक बर्तन में न डाले जब तक उसे तीन बार धो न ले क्योंकि पता नहीं है उसके हाथ ने कहाँ रात गुज़ारी है।'

وَحَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، وَحَامِدُ بْنُ عُمَرَ الْبَكْرَاوِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ" إِذَا اسْتَيْقَظَ أَحَدُكُمْ مِنْ نَوْمِهِ فَلاَ يَغْمِسْ يَدَهُ فِي الإِنَاءِ حَتَّى يَغْسِلَهَا ثَلاَثًا فَإِنَّهُ لاَ يَدْرِي أَيْنَ بَاتَتْ يَدُهُ " .

(644) इमाम साहब मज़्कूरा बाला रिवायत अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं।
(अबू दाऊद : 103)

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي رَزِينٍ، وَأَبِي، صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، فِي حَدِيثِ أَبِي مُعَاوِيَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَفِي حَدِيثِ وَكِيعٍ قَالَ يَرْفَعُهُ بِمِثْلِهِ .

(645) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से अबू हुरैरह (रज़ि.) जैसी रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، ح وَحَدَّثَنِيهِ مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، كِلاَهُمَا عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ .

(646) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई बेदार हो तो वो अपने हाथ पर तीन बार पानी डाले, पेश्तर इससे कि वो अपना हाथ अपने बर्तन में डाले। क्योंकि वो नहीं जानता उसके हाथ ने किस हालत में रात गुज़ारी।'

وَحَدَّثَنِي سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، قَالَ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ أَعْيَنَ، حَدَّثَنَا مَعْقِلٌ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ" إِذَا اسْتَيْقَظَ أَحَدُكُمْ فَلْيُفْرِغْ عَلَى يَدِهِ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ قَبْلَ أَنْ يُدْخِلَ يَدَهُ فِي إِنَائِهِ فَإِنَّهُ لاَ يَدْرِي فِيمَ بَاتَتْ يَدُهُ " .

(647) इमाम साहब अपने दूसरे उस्तादों से बयान करते हैं, सब की रिवायत में है कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी (ﷺ) से मज़्कूरा बाला हदीस़ बयान की। सबने कहा, यहाँ तक कि हाथ को धोये, उनमें से किसी ने भी स़लास़ा (तीन बार) का तज़्किरा नहीं किया, लेकिन जो रिवायत हम पहले जाबिर, इब्ने मुसय्यब, अबू सलमा, अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़, अबू सालेह और अबू रज़ीन से बयान कर चुके हैं। उन सबकी हदीस़ में तीन बार का ज़िक्र मौजूद है।

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، - يَعْنِي الْحِزَامِيَّ - عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، ح وَحَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ مَخْلَدٍ - عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جَعْفَرٍ، عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ، ح وَحَدَّثَنَا الْحُلْوَانِيُّ، وَابْنُ، رَافِعٍ قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالاَ جَمِيعًا أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي زِيَادٌ، أَنَّ ثَابِتًا، مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زَيْدٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، فِي رِوَايَتِهِمْ جَمِيعًا عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِهَذَا الْحَدِيثِ كُلُّهُمْ يَقُولُ حَتَّى يَغْسِلَهَا . وَلَمْ يَقُلْ وَاحِدٌ مِنْهُمْ ثَلاَثًا . إِلاَّ مَا قَدَّمْنَا مِنْ رِوَايَةِ جَابِرٍ وَابْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي

سَلَمَةَ وَعَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ وَأَبِي صَالِحٍ وَأَبِي رَزِينٍ فَإِنَّ فِي حَدِيثِهِمْ ذِكْرَ الثَّلاَثِ .

फ़ायदा : इन अहादीस़ से मालूम होता है कि अगर इंसान सो कर उठे तो उसे पानी के बर्तन में हाथ नहीं डालना चाहिये जबकि उसे ये अन्देशा हो कि मेरा हाथ ऐसी जगह लग सकता है जहाँ हाथ लगने को इंसान तबई तौर पर अच्छा नहीं समझता और अगर किसी जगह हक़ीक़तन नजासत लगी हो, उसको तो हर सूरत में तीन बार धोना पड़ेगा, क्योंकि उस जगह सिर्फ़ अन्देशा और ख़तरे की बिना पर हाथ को तीन बार धोने का हुक्म दिया गया है। हालांकि अगर इंसान ने पानी से इस्तिन्जा किया है तो अ़ज़्वे मख़्सूस पर कोई ज़ाहिरी नजासत नहीं लगी होती और ढेले से सफ़ाई की सूरत में भी, नजासत का जिर्म या मवाद बाक़ी नहीं रहता, उसके बावजूद हाथ को तीन बार धोना चाहिये और इस हदीस़ को इससे कोई ग़र्ज़ नहीं है कि वो बर्तन क़लील पानी वाला हो या कस़ीर पानी वाला, बल्कि उसमें सोकर उठने के बाद पानी के इस्तेमाल के लिये एक अदब व तहज़ीब की राह बतलाई गई है।

बाब 28 : कुत्ते के बर्तन में मुँह डालने का हुक्म

باب حُكْمِ وُلُوغِ الْكَلْبِ

(648) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब कुत्ता तुम में से किसी के बर्तन में मुँह डालकर पी ले तो उस चीज़ को बहा दो फिर बर्तन को सात बार धो लो।'

(नसाई : 1/53, इब्ने माजह : 363, 14607)

وَحَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، أَخْبَرَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي رَزِينٍ، وَأَبِي، صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا وَلَغَ الْكَلْبُ فِي إِنَاءِ أَحَدِكُمْ فَلْيُرِقْهُ ثُمَّ لْيَغْسِلْهُ سَبْعَ مِرَارٍ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) वलग़ल कल्बुल इनाअ या फ़िल्इनाइ : कुत्ते का बर्तन में मुँह डालकर चपड़-चपड़ करके पानी पीना। **(2) फ़ल्युरिक़्हु :** उसको बहा दे, उसको गिरा दे। **इहराक़ुल माइ :** पानी गिरा देना।

(649) इमाम साहब ने एक और सनद से मज़्कूरा रिवायत बयान की। फ़ल्युरिक़्हु अल्फ़ाज़ बयान नहीं किये।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ وَلَمْ يَقُلْ فَلْيُرِقْهُ .

(650) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब कुत्ता तुममें से किसी के बर्तन से पी ले तो वो उसे सात बार धोये।'

(सहीह बुख़ारी : 172, नसाई : 1/52, इब्ने माजह : 364)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا شَرِبَ الْكَلْبُ فِي إِنَاءِ أَحَدِكُمْ فَلْيَغْسِلْهُ سَبْعَ مَرَّاتٍ " .

(651) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की रिवायत सुनाई कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से किसी एक के बर्तन की तहारत जब उसमें कुत्ता मुँह डाल दे ये कि वो उसे सात बार धोये, शुरू मिट्टी से करे।'

وَحَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " طُهُورُ إِنَاءِ أَحَدِكُمْ إِذَا وَلَغَ فِيهِ الْكَلْبُ أَنْ يَغْسِلَهُ سَبْعَ مَرَّاتٍ أُولاَهُنَّ بِالتُّرَابِ " .

(652) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से किसी एक के बर्तन की पाकीज़गी, जबकि उसमें कुत्ता मुँह डाल दे ये है कि वो उसे सात बार धोये।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ مُحَمَّدٍ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " طُهُورُ إِنَاءِ أَحَدِكُمْ إِذَا وَلَغَ الْكَلْبُ فِيهِ أَنْ يَغْسِلَهُ سَبْعَ مَرَّاتٍ " .

(653) हज़रत इब्ने मुग़फ़्फ़ल (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कुत्तों को क़त्ल करने का हुक्म दिया। फिर फ़रमाया, 'उनका कुत्तों से क्या रब्त व ताल्लुक़? फिर शिकारी कुत्ते और बकरियों के लिये कुत्ते की रुख़सत दी और फ़रमाया, 'जब कुत्ता बर्तन में

وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، سَمِعَ مُطَرِّفَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يُحَدِّثُ عَنِ ابْنِ الْمُغَفَّلِ، قَالَ أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِقَتْلِ الْكِلاَبِ ثُمَّ قَالَ " مَا بَالُهُمْ وَبَالُ الْكِلاَبِ " . ثُمَّ رَخَّصَ

فِي كَلْبِ الصَّيْدِ وَكَلْبِ الْغَنَمِ وَقَالَ " إِذَا وَلَغَ الْكَلْبُ فِي الإِنَاءِ فَاغْسِلُوهُ سَبْعَ مَرَّاتٍ وَعَفِّرُوهُ الثَّامِنَةَ فِي التُّرَابِ " .

मुँह डाल दे तो उसे सात मर्तबा धोओ और आठवीं बार मिट्टी से साफ़ करो।'
(अबू दाऊद : 73, नसाई : 1/54, 1/177, इब्ने माजह : 365, 3200-3201)

وَحَدَّثَنِيهِ يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، كُلُّهُمْ عَنْ شُعْبَةَ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّ فِي رِوَايَةِ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ مِنَ الزِّيَادَةِ وَرَخَّصَ فِي كَلْبِ الْغَنَمِ وَالصَّيْدِ وَالزَّرْعِ وَلَيْسَ ذَكَرَ الزَّرْعَ فِي الرِّوَايَةِ غَيْرُ يَحْيَى .

(654) इमाम साहब मज़्कूरा बाला रिवायत (ऊपर वाली) अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं। यहया बिन सईद की रिवायत में इतना इज़ाफ़ा है कि आपने बकरियों की हिफ़ाज़त, शिकार और खेती की रखवाली के लिये कुत्ता रखने की इजाज़त दी। यहया के सिवा ज़रअ (खेती) का ज़िक्र किसी ने नहीं किया।

फ़ायदा : इन अहादीस से मालूम होता है कि अगर कुत्ता बर्तन में मुँह डालकर कोई चीज़ चाट ले, पी ले तो उसको गिरा दिया जायेगा, बर्तन को पहली बार मिट्टी से मांझा जायेगा और फिर सात बार पानी से धोया जायेगा।

अफ़्फ़िरूहुस्सामिनता बित्तुराब का मक़सद है कि मिट्टी से सफ़ाई को शुमार करने से तादाद आठ बार हो जायेगी। ये मक़सद नहीं है कि पहले सात बार पानी से धोकर आठवीं बार मिट्टी इस्तेमाल करो। क्योंकि इस तरह तो बर्तन को बाद में फिर पानी से धोना होगा और तादाद आठ से बढ़ जायेगी और ये मानी ऊलाहुन्न बित्तुराब कि आग़ाज़ मिट्टी से करो के भी मुनाफ़ी होगा और जुम्हूर अइम्मा के नज़दीक बर्तन सात बार धोना ज़रूरी है और ये हुक्म सिर्फ़ कुत्ते के झूठे के लिये है क्योंकि उसके जरासीम, इन्तिहाई मुहलिक (जानलेवा) होते हैं। सिर्फ़ इमाम अबू हनीफ़ा तीन बार धोने को ज़रूरी क़रार देते हैं और इसके लिये हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के अमल को दलील बनाते हैं हालांकि मरफ़ूअ रिवायत की मौजूदगी में किसी सहाबी का अमल दलील नहीं बन सकता। नीज़ हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सात बार धोने का हुक्म भी साबित है, लिहाज़ा उनका वही फ़ैअल व क़ौल राजेह होगा जो उनकी मरफ़ूअ रिवायत के मुताबिक़ है और कुत्ता जुम्हूर के नज़दीक नजिस है। इसलिये उसका झूठा नापाक है। लोगों की सहूलत और आसानी के लिये हाजतमन्द लोगों को कुत्ता रखने की इजाज़त देने का ये मतलब नहीं है कि वो पाक है। जैसाकि इमाम मालिक (रह.) से एक क़ौल तहारत का नक़ल किया जाता है कि सात बार धोने का

हुक्म तअब्बुदी है। जिसकी हिक्मत हमारी समझ से बाला है। वैसे कुत्ता नापाक है लेकिन कुछ मालिकिया कुत्ते को नजिसुल ऐन क़रार देते हैं।

बाब 29 : ठहरे हुए पानी में पेशाब करने की मुमानिअत (मनाही)

باب النَّهْىِ عَنِ الْبَوْلِ فِي الْمَاءِ الرَّاكِدِ

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَمُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَنَّهُ نَهَى أَنْ يُبَالَ فِي الْمَاءِ الرَّاكِدِ .

(655) हज़रत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने खड़े पानी में पेशाब करने से मना फ़रमाया है।

(नसाई : 1/34, इब्ने माजह : 343)

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ هِشَامٍ، عَنِ ابْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ يَبُولَنَّ أَحَدُكُمْ فِي الْمَاءِ الدَّائِمِ ثُمَّ يَغْتَسِلُ مِنْهُ " .

(656) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम में से कोई हर्गिज़ ठहरे हुए पानी में पेशाब न करे कि फिर उसमें नहाने लगे।'

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ مُحَمَّدٍ، رَسُولِ اللَّهِ ﷺ . فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " لاَ تَبُلْ فِي الْمَاءِ الدَّائِمِ الَّذِي لاَ يَجْرِي ثُمَّ تَغْتَسِلُ مِنْهُ " .

(657) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'साकिन पानी जो चलता नहीं है, में पेशाब न करो कि फिर उससे नहाने लगो।'

(तिर्मिज़ी : 68)

फ़ायदा : ऊपर की हदीसों से साबित होता है कि ठहरे हुए पानी में पेशाब नहीं करना चाहिये। आपने ठहरे हुए पानी के लिये क़लील या कसीर मिक़्दार (कम या ज़्यादा मात्रा) बयान नहीं फ़रमाई। बिला क़ैद फ़रमाया है कि साकिन (ठहरे हुए) पानी में पेशाब न करो। लेकिन इसका ये मतलब नहीं है कि बहते पानी में पेशाब कर लिया करो। चूंकि आम तौर पर ये सूरते हाल ठहरे हुए पानी के सिलसिले में पेश आती है इसलिये आपने इसकी तसरीह फ़रमा दी है। इस तरह पेशाब बर्तन में करने के बाद उसमें

डालना या फेंक देना भी मक़सद और रूहे शरीअत के मुनाफ़ी है। इसलिये ये बात इन्तिहाई हैरानकुन है जो दाऊद ज़ाहिरी की तरफ़ मन्सूब की जाती है कि मुमानिअत पेशाब करने से ख़ास है पाख़ाना करना या बर्तन में पेशाब करके खड़े पानी में फेंक देना मना नहीं है। (शरह नववी : 1/138)

इस हदीस़ का ताल्लुक़ भी आदाब व अख़्लाक़ से है उसके तहत पानी के क़लील व कस़ीर (कम और ज़्यादा) होने की बहस़ छेड़ना, हदीस़ के असल मक़सद के मुनाफ़ी है। इसलिये ठहरा हुआ पानी क़लील हो या कस़ीर, दोनों सूरतों में इसमें पेशाब व पाख़ाना नहीं करना चाहिये। क्योंकि इस पानी से उसको नहाने की ज़रूरत भी पेश आ सकती है। फिर कहाँ से नहायेगा।

इमाम नववी (रह.) लिखते हैं, उसमें पेशाब करना हर सूरत में मना है, नहाना हो या न। (शरह नववी : 1/138) मक़सद तो ये है कि पानी में पेशाब करना आदाब व अख़्लाक़ के मुनाफ़ी है। राकिद ठहरे हुए की तख़्सीस तो सिर्फ़ इसलिये कर दी कि अगर नहाने की ज़रूरत पेश आ जाये तो फिर इंसान उससे कराहत व नफ़रत महसूस करेगा। इसलिये इमाम नववी (रह.) लिखते हैं, 'बिल्इत्तिफ़ाक़ नहर के क़रीब पेशाब करना जबकि पेशाब उसमें जा सकता हो मम्नूअ और नापसन्दीदा है।' (शरह नववी : 1/138)

बाब 30 : ठहरे पानी में ग़ुस्ल करने की मुमानिअत

باب النَّهْىِ عَنْ الاِغْتِسَالِ، فِي الْمَاءِ الرَّاكِدِ

وَحَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، وَأَبُو الطَّاهِرِ، وَأَحْمَدُ بْنُ عِيسَى، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ وَهْبٍ، - قَالَ هَارُونُ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، - أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، عَنْ بُكَيْرِ بْنِ الأَشَجِّ، أَنَّ أَبَا السَّائِبِ، مَوْلَى هِشَامِ بْنِ زُهْرَةَ حَدَّثَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ يَغْتَسِلُ أَحَدُكُمْ فِي الْمَاءِ الدَّائِمِ وَهُوَ جُنُبٌ " . فَقَالَ كَيْفَ يَفْعَلُ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ يَتَنَاوَلُهُ تَنَاوُلاً .

(658) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से कोई साकिन ठहरे हुए पानी में न नहाये जबकि वो जुनुबी हो।' अबू साइब ने पूछा, ऐ अबू हुरैरह! वो कैसे नहाये? तो उन्होंने जवाब दिया, पानी लेकर बाहर बैठकर नहाये।

(नसाई : 1/124, इब्ने माजह : 605)

फ़ायदा : इस हदीस का ताल्लुक़ भी आदाब व अख़्लाक़ से है कि ये बात तहज़ीब व शाइस्तगी जिसकी इस्लाम तालीम देता है के मुनाफ़ी है कि इंसान ठहरे हुए पानी के अंदर बैठकर गुस्ले जनाबत करे। इंसान को इस ग़र्ज़ के लिये किसी बर्तन में अलग पानी लेकर नहाना चाहिये या अगर बर्तन न हो तो इस तरह पानी इस्तेमाल करना चाहिये कि वो दोबारा उसी पानी में शामिल न हो जाये। ज़ाहिर है थोड़े पानी के अंदर बैठकर कोई नहीं नहायेगा। पानी ज़्यादा होगा तो वो ऐसे नहायेगा। इसलिये हदीस में क़लील व कसीर की क़ैद नहीं लगाई गई और पानी की क़लील व कसीर तादाद के बारे में शवाफ़िअ और अहनाफ़ में बहुत इख़्तिलाफ़ है। शवाफ़िअ ने एक सहीह हदीस की बुनियाद पर दो बड़े मटकों से कम पानी को क़लील क़रार दिया है और ज़्यादा को कसीर। अहनाफ़ के पास चूंकि इस मसले के बारे में सहीह और सरीह रिवायत नहीं है। इसलिये उनका एक मिक़्दार पर इत्तिफ़ाक़ नहीं है। हनाबिला का मौक़िफ़ इमाम शाफ़ेई वाला है। इमाम मालिक के नज़दीक क़लील व कसीर मिक़्दार का ऐतबार नहीं है। औसाफ़े सलासा (रंग, बू और ज़ायक़ा) में से किसी एक के बदलने की सूरत में (नजासत के गिरने की सूरत में) पानी नजिस होगा, वरना पलीद नहीं। मुहद्दिसीन, शवाफ़िअ या इमाम मालिक के मौक़िफ़ को तरजीह देते हैं।

बाब 31 : मस्जिद में पेशाब या कोई और नजासत पड़ी हो तो उसका धोना ज़रूरी है और ज़मीन पानी से पाक हो जाती है उसके खोदने की ज़रूरत नहीं है

باب وُجُوبِ غَسْلِ الْبَوْلِ وَغَيْرِهِ مِنَ النَّجَاسَاتِ إِذَا حَصَلَتْ فِي الْمَسْجِدِ وَأَنَّ الأَرْضَ تَطْهُرُ بِالْمَاءِ مِنْ غَيْرِ حَاجَةٍ إِلَى حَفْرِهَا

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - وَهُوَ ابْنُ زَيْدٍ - عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ أَعْرَابِيًّا، بَالَ فِي الْمَسْجِدِ فَقَامَ إِلَيْهِ بَعْضُ الْقَوْمِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " دَعُوهُ وَلاَ تُزْرِمُوهُ " . قَالَ فَلَمَّا فَرَغَ دَعَا بِدَلْوٍ مِنْ مَاءٍ فَصَبَّهُ عَلَيْهِ .

(659) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि एक देहाती ने मस्जिद में पेशाब करना शुरू कर दिया। कुछ लोग उसकी तरफ़ उठकर चले (ताकि उसको रोक दें) तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उसे छोड़ो, उसका पेशाब दरम्यान में मत रोको।' जब वो फ़ारिग़ हो गया तो आपने पानी का डोल मँगवाया और उसे उस पर डाल दिया।

(सहीह बुख़ारी : 6025, नसाई : 1/47, 528)

मुफ़रदातुल हदीस़ : ला तुज़्रिमूहु : ज़रम और इज़्राम का असल मानी काटना, क़तअ करना है। यहाँ मक़सद है पेशाब दरम्यान में क़तअ न करो, उसे कर लेने दो।

(660) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि एक देहाती मस्जिद के एक कोने में खड़ा होकर पेशाब करने लगा। उस पर लोग चिल्लाये (उसको आवाज़ दी) तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उसे छोड़ो।' जब वो फ़ारिग़ हुआ तो आपने उसके बोल पर पानी से भरे हुए डोल के डालने का हुक्म दिया।'

(सहीह बुख़ारी : 221, नसाई : 1/48)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الْقَطَّانُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ الأَنْصَارِيِّ، ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، جَمِيعًا عَنِ الدَّرَاوَرْدِيِّ، - قَالَ يَحْيَى بْنُ يَحْيَى أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَدَنِيُّ، - عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَذْكُرُ أَنَّ أَعْرَابِيًّا، قَامَ إِلَى نَاحِيَةٍ فِي الْمَسْجِدِ فَبَالَ فِيهَا فَصَاحَ بِهِ النَّاسُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " دَعُوهُ " . فَلَمَّا فَرَغَ أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِذَنُوبٍ فَصُبَّ عَلَى بَوْلِهِ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) साह बिही : उसको आवाज़ दी, पुकारा या डांटा। **(2) सब्बल माअ :** पानी गिराया या डाला।

(661) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि हम मस्जिद में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ बैठे हुए थे इस दौरान अचानक एक देहाती आया और उसने खड़े होकर पेशाब करना शुरू कर दिया। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथियों ने कहा, रुक जा! रुक जा! रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उसका पेशाब दरम्यान में मत काटो, उसे छोड़ो।' सहाबा किराम (रज़ि.) ने उसे छोड़ दिया, यहाँ तक कि उसने पेशाब कर लिया। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे बुलाया और फ़रमाया, 'ये

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ الْحَنَفِيُّ، حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ أَبِي طَلْحَةَ، حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، - وَهُوَ عَمُّ إِسْحَاقَ - قَالَ بَيْنَمَا نَحْنُ فِي الْمَسْجِدِ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذْ جَاءَ أَعْرَابِيٌّ فَقَامَ يَبُولُ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ أَصْحَابُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَهْ مَهْ . قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ تُزْرِمُوهُ دَعُوهُ " . فَتَرَكُوهُ

حَتَّى بَالَ . ثُمَّ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ دَعَاهُ فَقَالَ لَهُ " إِنَّ هَذِهِ الْمَسَاجِدَ لاَ تَصْلُحُ لِشَىْءٍ مِنْ هَذَا الْبَوْلِ وَلاَ الْقَذَرِ إِنَّمَا هِيَ لِذِكْرِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ وَالصَّلاَةِ وَقِرَاءَةِ الْقُرْآنِ " . أَوْ كَمَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ . قَالَ فَأَمَرَ رَجُلاً مِنَ الْقَوْمِ فَجَاءَ بِدَلْوٍ مِنْ مَاءٍ فَشَنَّهُ عَلَيْهِ .

मसाजिद पेशाब या किसी और गन्दगी के लिये मुनासिब नहीं, ये तो बस अल्लाह तआला के ज़िक्र, नमाज़, तिलावते कुरआन के लिये हैं।' या ऐसे ही अल्फ़ाज़ रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाये, फिर आपने सहाबा में से एक आदमी को हुक्म दिया वो पानी का डोल लाया और उसे उस पर बहा दिया।

फ़वाइद : (1) हदीस़ से मालूम हुआ आदमी का बोल (पेशाब) पलीद (नापाक) है और अगर मस्जिद नापाक हो जाये तो उसे फ़ौरन धोकर पाक कर लेना चाहिये। (2) नावाक़िफ़ और जाहिल के साथ नर्म रवैया इख़्तियार करना चाहिये, नीज़ दो ख़राबियों में से एक को इख़्तियार करते वक़्त कम दर्जे वाली ख़राबी को क़ुबूल करना चाहिये। (3) ज़मीन पर अगर नजासत पड़ी हो तो उसके इज़ाले (ख़त्म करने) के लिये उस पर पानी बहाना काफ़ी है, ज़मीन को खोदने की ज़रूरत नहीं है। (4) दूसरी हदीस़ से मालूम हुआ जाहिल को मसला नर्मी और प्यार से समझा देना चाहिये। (5) मसाजिद बनाने का असल मक़सद अल्लाह का ज़िक्र, नमाज़, वअ़ज़ व नसीहत, दीन की तालीम और तिलावते क़ुरआन है और उनको हर उस काम से बचाना चाहिये जो मसाजिद की अ़ज़्मत व तक़द्दुस के मुनाफ़ी है।

باب حُكْمِ بَوْلِ الطِّفْلِ الرَّضِيعِ وَكَيْفِيَّةِ غَسْلِهِ

बाब 32 : शीरख़्वार (दूध पीते) बच्चे के बोल (पेशाब) का हुक्म और उसको धोने की कैफ़ियत

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُؤْتَى بِالصِّبْيَانِ فَيُبَرِّكُ عَلَيْهِمْ وَيُحَنِّكُهُمْ فَأُتِيَ بِصَبِيٍّ فَبَالَ عَلَيْهِ فَدَعَا بِمَاءٍ فَأَتْبَعَهُ بَوْلَهُ وَلَمْ يَغْسِلْهُ .

(662) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बच्चों को लाया जाता था। आप उनके लिये बरकत की दुआ फ़रमाते और उनको घुट्टी देते, आपके पास एक बच्चा लाया गया। उसने आप पर पेशाब कर दिया, तो आपने पानी मँगवाया और उसके बोल (पेशाब) पर डाल दिया और उसे धोया नहीं।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) युबर्रिकु अलैहिम : उनके लिये दुआ करते और उन पर हाथ फेरते, बरकत का असल मानी कसरत और बढ़ोतरी है। **(2) युहन्निकुहुम :** तहनीक का मानी होता है खजूर वग़ैरह चबाकर बच्चे के मुँह में तालू पर मल देना। (शरह नववी : 1/139)

फ़ायदा : बच्चे की पैदाइश पर किसी अच्छे और नेक इंसान से घुट्टी दिलवानी चाहिये और उससे उसके लिये दुआ करवानी चाहिये। अच्छे और नेक लोगों को भी तवाज़ोअ व इन्किसारी से काम लेते हुए बच्चों के साथ मुहब्बत व प्यार करते हुए उनको ख़ैर व बरकत की दुआ देने में हिजाब महसूस नहीं करना चाहिये और बच्चे को घुट्टी देनी चाहिये। बच्चे के पेशाब का हुक्म आगे बयान होगा।

وَحَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ أُتِيَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِصَبِيٍّ يَرْضَعُ فَبَالَ فِي حِجْرِهِ فَدَعَا بِمَاءٍ فَصَبَّهُ عَلَيْهِ .

(663) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में एक शीरख़्वार बच्चा लाया गया, उसने आपकी गोद में पेशाब कर दिया। आपने पानी मँगवाकर उसे उस पर डाल दिया।

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) यरज़ड़ : दूध पीता बच्चा। **(2) हिज्र :** गोद, झोली।

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عِيسَى، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَ حَدِيثِ ابْنِ نُمَيْرٍ .

(664) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحِ بْنِ الْمُهَاجِرِ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أُمِّ قَيْسٍ بِنْتِ مِحْصَنٍ، أَنَّهَا أَتَتْ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِابْنٍ لَهَا لَمْ يَأْكُلِ الطَّعَامَ فَوَضَعَتْهُ فِي حِجْرِهِ فَبَالَ - قَالَ - فَلَمْ يَزِدْ عَلَى أَنْ نَضَحَ بِالْمَاءِ .

(665) हज़रत उम्मे क़ैस बिन्ते मिहसन (रज़ि.) बयान करती हैं कि वो अपने बच्चे को जिसने अभी खाना खाना शुरू नहीं किया था, लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और उसे आपकी गोद में रख दिया। यानी बिठा दिया, उसने पेशाब कर दिया, आपने पानी छिड़कने से ज़्यादा कुछ नहीं किया।
(सहीह बुख़ारी : 223, अबू दाऊद : 374, तिर्मिज़ी : 71, इब्ने माजह : 522)

मुफ़रदातुल हदीस़ : नज़ह बिल्माइ : पानी के छींटे मारे, पानी छिड़का। कहते हैं, नज़हल बैत बिल्माअ घर में पानी छिड़का।

وَحَدَّثَنَاهُ يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَعَمْرُو النَّاقِدُ وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ فَدَعَا بِمَاءٍ فَرَشَّهُ .

(666) इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं कि आपने पानी मँगवाया और उसे छिड़का (यानी नज़ह की जगह रश्श का लफ़्ज़ है)।

मुफ़रदातुल हदीस़ : रश्शल माअ : पानी छिड़का, पानी बिखेरा, आसमान फुवार बरसाये तो कहते हैं रश्शस्समाउ और यही मानी सन्नल माअ के हैं।

وَحَدَّثَنِيهِ حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ بْنُ يَزِيدَ، أَنَّ ابْنَ شِهَابٍ، أَخْبَرَهُ قَالَ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ، أَنَّ أُمَّ قَيْسٍ بِنْتَ مِحْصَنٍ، - وَكَانَتْ مِنَ الْمُهَاجِرَاتِ الأُوَلِ اللاَّتِي بَايَعْنَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَهِيَ أُخْتُ عُكَّاشَةَ بْنِ مِحْصَنٍ أَحَدُ بَنِي أَسَدِ بْنِ خُزَيْمَةَ - قَالَ أَخْبَرَتْنِي أَنَّهَا أَتَتْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بِابْنٍ لَهَا لَمْ يَبْلُغْ أَنْ يَأْكُلَ الطَّعَامَ - قَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ - أَخْبَرَتْنِي أَنَّ ابْنَهَا ذَاكَ بَالَ فِي حِجْرِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِمَاءٍ فَنَضَحَهُ عَلَى ثَوْبِهِ وَلَمْ يَغْسِلْهُ غَسْلاً .

(667) हज़रत उम्मे क़ैस बिन्ते मिहसन (रज़ि.) (जो सबसे पहले हिजरत करने वाली उन औरतों में से है जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की बैअत की थी और ये उक्काशा इब्ने मिहसन जो बनू असद बिन ख़ुज़ैमा के एक फ़र्द हैं, की बहन हैं) बयान करती हैं कि मैं नबी (ﷺ) की ख़िदमत में अपना वो बेटा लेकर हाज़िर हुई जो अभी खाना खाने की उम्र को नहीं पहुँचा था। उबैदुल्लाह कहते हैं, उसने मुझे बताया मेरे उस बेटे ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की गोद में बोल (पेशाब) कर दिया। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पानी मँगवाया और उसे अपने कपड़े पर छिड़क दिया और उसे अच्छी तरह धोया नहीं।

फ़वाइद : (1) इन अहादीस़ में सिर्फ़ उन शीरख़्वार (दूध पीते) बच्चों के पेशाब का ज़िक्र है जो खाना नहीं खाते, बच्चियों और उन बच्चों के पेशाब का ज़िक्र नहीं जो खाना खाते हैं। **(2)** इन अहादीस़ से मालूम होता है कि आपने शीरख़्वार बच्चा जो खाना नहीं खाता था, के पेशाब पर छींटे मारे हैं, उसको अच्छी तरह धोया नहीं है। लिहाज़ा ऐसे बच्चे के पेशाब पर जब वो किसी कपड़े पर कर दे, पानी छिड़क देना काफ़ी है। आम नजासत की तरह धोने की ज़रूरत नहीं है। शीरख़्वार बच्चों के सिलसिले में अइम्मा का मौक़िफ़ मुन्दरजा ज़ैल है :

1. शीरख़्वार बच्चा हो या बच्ची दोनों के पेशाब को धोना ज़रूरी है। इमाम अबू हनीफ़ा और मालिकिया का यही नज़रिया है।

2. शीरख़्वार बच्चा हो या बच्ची दोनों के पेशाब पर छींटे मारना काफ़ी है। इमाम औज़ाई की राय यही है और इमाम शाफ़ेई और इमाम मालिक का एक क़ौल भी यही है।

3. शीरख़्वार बच्चे के बोल पर पानी छिड़कना काफ़ी है और शीरख़्वार बच्चे के बोल को धोना पड़ेगा। इमाम अहमद, इस्हाक़ और इमाम शाफ़ेई का मशहूर क़ौल यही है और शाफ़ेई इस क़ौल को इख़्तियार करते हैं। मज़्कूरा बाला हदीस़ से इसकी ताईद होती है।

अगर शीरख़्वार बच्चा रोटी खाने लगे तो फिर बिल्इत्तिफ़ाक़ उसके बोल को धोना होगा। (सहीह मुस्लिम मअ़ नववी, जिल्द 1, पेज नम्बर 139)

باب حكْمِ الْمَنِيِّ

बाब 33 : मनी का हुक्म

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي مَعْشَرٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، وَالأَسْوَدِ، أَنَّ رَجُلاً، نَزَلَ بِعَائِشَةَ فَأَصْبَحَ يَغْسِلُ ثَوْبَهُ فَقَالَتْ عَائِشَةُ إِنَّمَا كَانَ يُجْزِئُكَ إِنْ رَأَيْتَهُ أَنْ تَغْسِلَ مَكَانَهُ فَإِنْ لَمْ تَرَ نَضَحْتَ حَوْلَهُ وَلَقَدْ رَأَيْتُنِي أَفْرُكُهُ مِنْ ثَوْبِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَرْكًا فَيُصَلِّي فِيهِ .

(668) अ़ल्क़मा और अस्वद बयान करते हैं हज़रत आ़इशा (रज़ि.) के यहाँ एक मेहमान ठहरा। सुबह वो अपना कपड़ा धो रहा था, तो आ़इशा (रज़ि.) ने फ़रमाया, 'तेरे लिये काफ़ी था कि अगर तूने उसे देखा था तो उसकी जगह को धो देता और अगर तूने उसे नहीं देखा, तो उसके इर्द-गिर्द पानी छिड़क देता। मैंने अपने आपको इस हाल में देखा कि मनी रसूलुल्लाह (ﷺ) के कपड़े से अच्छी तरह खुरच देती (क्योंकि वो ख़ुश्क हो चुकी थी) फिर आप उस कपड़े में नमाज़ पढ़ते थे।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : अफ़्रुकुह फ़रका : मैं उसको खुरच देती। कहा जाता है, फ़रकश्शय अ़निस्सौब का मानी होता है, किसी चीज़ को रगड़ या खुरच से ज़ाइल (ख़त्म) कर देना और ये तभी मुम्किन है जब वो चीज़ एक जगह जमी हो।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ अगर मनी कपड़े पर लग जाये तो सारे कपड़े को धोना ज़रूरी नहीं है। सिर्फ़ उतनी जगह धो डालना जहाँ मनी लगी हो काफ़ी है। अगर मनी नज़र न आये, सिर्फ़ शक पड़ जाये तो कपड़े पर छींटे मार देना ही काफ़ी है।

(669) हज़रत आइशा (रज़ि.) मनी के बारे में हदीस़ बयान करती हैं कि मैं उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) के कपड़े से खुरच देती थी।

وَحَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، وَهَمَّامٍ، عَنْ عَائِشَةَ، فِي الْمَنِيِّ قَالَتْ كُنْتُ أَفْرُكُهُ مِنْ ثَوْبِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ

(670) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से रिवायत बयान करते हैं और सब हज़रत आइशा (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) के कपड़े से मनी खुरचने की रिवायत सबसे पहली रिवायत की तरह बयान करते हैं।

(नसाई:1/157, इब्ने माजह : 539, 15976, 16004)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ - عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانَ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَرُوبَةَ، جَمِيعًا عَنْ أَبِي مَعْشَرٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ مُغِيرَةَ ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ مَهْدِيِّ بْنِ مَيْمُونٍ، عَنْ وَاصِلٍ الأَحْدَبِ، ح وَحَدَّثَنِي ابْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ مَنْصُورٍ، وَمُغِيرَةَ، كُلُّ هَؤُلاَءِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ، فِي حَتِّ الْمَنِيِّ مِنْ ثَوْبِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ نَحْوَ حَدِيثِ خَالِدٍ عَنْ أَبِي مَعْشَرٍ .

(671) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

(अबू दाऊद:371, नसाई :1/156, इब्ने माजह :537)

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ هَمَّامٍ، عَنْ عَائِشَةَ، بِنَحْوِ حَدِيثِهِمْ .

(672) अम्र बिन मैमून (रह.) का क़ौल है कि मैंने सुलैमान बिन यसार से इंसान के कपड़े को लग जाने वाली मनी के बारे में पूछा

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ، قَالَ سَأَلْتُ

سُلَيْمَانَ بْنَ يَسَارٍ عَنِ الْمَنِيِّ، يُصِيبُ ثَوْبَ الرَّجُلِ أَيَغْسِلُهُ أَمْ يَغْسِلُ الثَّوْبَ فَقَالَ أَخْبَرَتْنِي عَائِشَةُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَغْسِلُ الْمَنِيَّ ثُمَّ يَخْرُجُ إِلَى الصَّلاَةِ فِي ذَلِكَ الثَّوْبِ وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَى أَثَرِ الْغَسْلِ فِيهِ .

कि क्या इंसान उसको धोयेगा या कपड़े को धोयेगा? तो उसने कहा, मुझे आइशा (रज़ि.) ने बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मनी धुलवाते। फिर उस कपड़े में नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले जाते और मुझे उसमें धोने का निशान नज़र आ रहा होता।

(सहीह बुख़ारी: 229-230, 231-232, अबू दाऊद: 373, तिर्मिज़ी :117, नसाई:1/171, इब्ने माजह: 536, 16135)

وَحَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، - يَعْنِي ابْنَ زِيَادٍ ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، وَابْنُ أَبِي زَائِدَةَ، كُلُّهُمْ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ أَمَّا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ فَحَدِيثُهُ كَمَا قَالَ ابْنُ بِشْرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَغْسِلُ الْمَنِيَّ وَأَمَّا ابْنُ الْمُبَارَكِ وَعَبْدُ الْوَاحِدِ فَفِي حَدِيثِهِمَا قَالَتْ كُنْتُ أَغْسِلُهُ مِنْ ثَوْبِ رَسُولِ ﷺ.

(673) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से रिवायत करते हैं। इब्ने अबी ज़ाइद कहते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मनी धोते थे लेकिन इब्ने मुबारक और अब्दुल वाहिद की हदीस में है। आइशा (रज़ि.) फ़रमाती हैं, मैं उसे नबी (ﷺ) के कपड़े से धोती थी।

وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ جَوَّاسٍ الْحَنَفِيُّ أَبُو عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ شَبِيبِ بْنِ غَرْقَدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شِهَابٍ الْخَوْلاَنِيِّ، قَالَ كُنْتُ نَازِلاً عَلَى عَائِشَةَ فَاحْتَلَمْتُ فِي ثَوْبَىَّ فَغَمَسْتُهُمَا فِي الْمَاءِ فَرَأَتْنِي جَارِيَةٌ لِعَائِشَةَ فَأَخْبَرَتْهَا فَبَعَثَتْ إِلَىَّ عَائِشَةُ فَقَالَتْ مَا حَمَلَكَ

(674) अब्दुल्लाह बिन शिहाब ख़ौलानी (रह.) बयान करते हैं कि मैं हज़रत आइशा (रज़ि.) का मेहमान था। मुझे अपने कपड़ों में एहतिलाम आ गया, तो मैंने अपने दोनों कपड़े पानी में डुबो दिये। मुझे हज़रत आइशा (रज़ि.) की एक कनीज़ (लौण्डी) ने देख लिया और उन्हें बता दिया। तो आइशा (रज़ि.) ने मेरी तरफ़ पैग़ाम भेजा और फ़रमाया, 'तुझे अपने कपड़ों के साथ ये

عَلَى مَا صَنَعْتَ بِثَوْبَيْكَ قَالَ قُلْتُ رَأَيْتُ مَا يَرَى النَّائِمُ فِي مَنَامِهِ . قَالَتْ هَلْ رَأَيْتَ فِيهِمَا شَيْئًا . قُلْتُ لاَ . قَالَتْ فَلَوْ رَأَيْتَ شَيْئًا غَسَلْتَهُ لَقَدْ رَأَيْتُنِي وَإِنِّي لأَحُكُّهُ مِنْ ثَوْبِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَابِسًا بِظُفُرِي .

मामला करने पर किस बात ने उभारा? मैंने जवाब दिया, मैंने नींद में वो चीज़ देखी जो सोने वाला अपनी नींद में देखता है। उन्होंने पूछा, क्या तुम्हें उनमें कुछ नज़र आया? मैंने कहा, नहीं। उन्होंने फ़रमाया, अगर तुम कुछ देखते तो उसे धो लेते, मैंने अपने आपको इस हाल में पाया कि मैं उसे ख़ुश्क होने की सूरत में अपने नाख़ुन से रसूलुल्लाह (ﷺ) के कपड़े से खुरच देती थी।

फ़ायदा : इन अहादीस़ से साबित होता है अगर मनी गीली (तर) हो तो उसे धो दिया जायेगा और अगर ख़ुश्क हो तो सिर्फ़ खुरच देना ही काफ़ी है, धोना ज़रूरी नहीं है। इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद (रह.) का यही नज़रिया है। लेकिन इमाम मालिक के नज़दीक मनी ख़ुश्क हो या तर हर सूरत में उसे धोया जायेगा। लेकिन मनी की तहारत या नजासत के बारे में अइम्मा में इख़्तिलाफ़ है। हज़रत अ़ली, हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.), हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.), हज़रत आ़इशा (रज़ि.), इमाम शाफ़ेई (रह.), इमाम अहमद (रह.) से सहीहतर रिवायत की रू से मनी पाक है। इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मालिक के नज़दीक पलीद है। (शरह नववी : 1/140) ज़ाहिर है ये सिर्फ़ एक इल्मी और फ़िक्री बहस़ है, वरना इसके तर होने की सूरत में इसके धोने में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं और इंसान तबई तौर पर इंसानी फ़ुज़्लात अगर कपड़े को लगे हों तो उनसे कराहत महसूस करता है। वो नाक की बीनी और थूक हो या ख़ून और मनी।

तम्बीह : रसूलुल्लाह (ﷺ) बशर थे। अगरचे अफ़ज़लुल बशर और सय्यिदुल बशर थे और आप भी इंसानी हाजतों और ज़रूरतों के इस तरह मोहताज थे जिस तरह दूसरे इंसान। आप खाते-पीते थे, सोते-जागते थे, पेशाब और पाख़ाना करते थे। आपके जिस्म में भी दूसरे इंसानों की तरह ख़ून गर्दिश करता था और आपके लिये भी इन सब चीज़ों के अहकाम दूसरे इंसानों जैसे थे। आप अगर पेशाब, पाख़ाना करते थे तो दूसरों की तरह इस्तिन्जा करते और वुज़ू फ़रमाते। अज़्वाजे मुतह्हरात के पास जाने की सूरत में ग़ुस्ल फ़रमाते। आपके जिस्म को ख़ून लग जाता तो उसे धोते। अगर आपके ये सब फ़ुज़्लात पाक थे और ये आपका ख़ास्सह है तो इन चीज़ों के अहकाम आपके लिये अलग क्यों नहीं थे? अहनाफ़ के उसूल के मुताबिक़ कसीरुल वुक़ूअ़ मामलात के लिये ख़बरे वाहिद हुज्जत नहीं है। ऐसे मामले के लिये हदीसे मुतवातिर या मशहूर होना ज़रूरी है, इसकी बिना पर उन्होंने सहीह अहादीस़ को भी नज़र

अन्दाज़ कर दिया है और बहाना ये पेश किया है कि ये आम उसूल और ज़ाब्ते के ख़िलाफ़ है। फ़ुज़्लात के एख़राज की तो इंसान को आम तौर पर ज़रूरत लाहिक़ होती है और आप हमेशा खाते-पीते और पेशाब व पाख़ाना करते थे। बीवियों के पास जाते थे। अगर आपके ये फ़ुज़्लात पाक थे तो फिर ये चीज़ आम उसूल और ज़ाब्ते के ख़िलाफ़ है। इसके लिये हनफ़ी उसूल के मुताबिक़ ख़बरे मुतवातिर या ख़बरे मशहूर की ज़रूरत है। नबी (ﷺ) के फ़ुज़्लात, मुतबर्रक और पाक थे, तो आप उनसे छिपकर क्यों फ़राग़त हासिल करते थे। लोगों को उनसे फ़ायदा उठाने देते ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को उनके इस्तेमाल से दुनियवी और उख़रवी फ़वाइद हासिल होते।

कितनी हैरानकुन बात है कि आपके पेशाब की बरकत से आपके घर के कुंआँ का पानी, मदीना के तमाम कुंओं से शीरीं था, लेकिन आप पानी हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) के बाग़ से पीते थे और हज़रत उ़समान (रजि.) को मुहासिरा के दरम्यान वहाँ से पानी मुयस्सर न आ सका और अब वो कुंआँ कहाँ गया और आपको मुसलमानों के लिये मीठा कुंआँ ख़रीदने की क्यों ज़रूरत पेश आई।

बाब 34 : ख़ून की नजासत और उसके धोने की कैफ़ियत

باب نَجَاسَةِ الدَّمِ وَكَيْفِيَّةِ غَسْلِهِ

(675) हज़रत असमा (रज़ि.) से रिवायत है कि एक औरत नबी (ﷺ) के पास आई और पूछा, हममें से किसी के कपड़े को हैज़ का ख़ून लग जाता है तो वो उसके बारे में क्या करे? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उसे खुरच डाले, फिर पानी डालकर उसे (रगड़े) फिर उस पर पानी बहा दे (धो ले) फिर उसमें नमाज़ पढ़ ले।'

(सहीह बुख़ारी : 227, 307, अबू दाऊद : 361-362, तिर्मिज़ी : 138, नसाई : 1/155, इब्ने माजह : 629)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، قَالَ حَدَّثَتْنِي فَاطِمَةُ، عَنْ أَسْمَاءَ، قَالَتْ جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ إِحْدَانَا يُصِيبُ ثَوْبَهَا مِنْ دَمِ الْحَيْضَةِ كَيْفَ تَصْنَعُ بِهِ قَالَ " تَحُتُّهُ ثُمَّ تَقْرُصُهُ بِالْمَاءِ ثُمَّ تَنْضَحُهُ ثُمَّ تُصَلِّي فِيهِ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) तहुत्तुह : उसको खुरच डाले। **(2) तक़्रुसुहू :** उसको उंगलियों से मले, रगड़े, साथ-साथ पानी डाले ताकि उसका जर्म और माद्दा ज़ाइल (ख़त्म) हो जाये।

وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنِي ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يَحْيَى بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَالِمٍ، وَمَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، وَعَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، كُلُّهُمْ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَ حَدِيثِ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ .

(676) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

फ़ायदा : हैज़ का ख़ून पलीद (नापाक) है और उसका धोना और साफ़ करना ज़रूरी है और नजिस चीज़ को पानी से धोया जायेगा। उसके लिये गिनती (अ़दद) शर्त नहीं है। नजिस चीज़ का इज़ाला और सफ़ाई ज़रूरी है।

باب الدَّلِيلِ عَلَى نَجَاسَةِ الْبَوْلِ وَوُجُوبِ الاِسْتِبْرَاءِ مِنْهُ

बाब 35 : बोल (पेशाब) के नजिस होने की दलील और उससे बचाव और तहफ़्फ़ुज़ का ज़रूरी होना

وَحَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، وَأَبُو كُرَيْبٍ مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، قَالَ سَمِعْتُ مُجَاهِدًا، يُحَدِّثُ عَنْ طَاوُسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ مَرَّ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى قَبْرَيْنِ فَقَالَ " أَمَا إِنَّهُمَا لَيُعَذَّبَانِ وَمَا يُعَذَّبَانِ فِي كَبِيرٍ أَمَّا أَحَدُهُمَا فَكَانَ يَمْشِي بِالنَّمِيمَةِ وَأَمَّا الآخَرُ فَكَانَ لاَ يَسْتَتِرُ مِنْ بَوْلِهِ " . قَالَ فَدَعَا بِعَسِيبٍ رَطْبٍ فَشَقَّهُ بِاثْنَيْنِ ثُمَّ غَرَسَ عَلَى هَذَا وَاحِدًا وَعَلَى هَذَا وَاحِدًا ثُمَّ قَالَ " لَعَلَّهُ أَنْ يُخَفَّفَ عَنْهُمَا مَا لَمْ يَيْبَسَا " .

(677) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का दो क़ब्रों पर गुज़र हुआ, तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हाँ! इन दोनों को अ़ज़ाब हो रहा है ओर किसी ऐसी चीज़ की बिना पर अ़ज़ाब नहीं हो रहा जिससे बचना दुश्वार हो रहा, उनमें से एक तो वो लगाई-बझाई (चुग़ली) करता था और दूसरा तो वो अपने बोल से नहीं बचता था।' तो आप (ﷺ) ने एक ताज़ा खजूर की छड़ी मँगवाई और उसको चीर कर दो कर दिया। फिर एक, एक क़ब्र पर गाड़ दिया और दूसरा, दूसरी क़ब्र पर। फिर आपने फ़रमाया, 'उम्मीद है जब तक ये दो टहनियाँ सूखेंगी नहीं, उनका अ़ज़ाब हल्का रहेगा।'

(सहीह बुख़ारी : 218,1361,1378, 6052, अबू दाऊद : 20, तिर्मिज़ी:70, नसाई : 1/20-28, 1/106, इब्ने माजह : 347)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) फ़ी कबीर : उस गुनाह का छोड़ना मुश्किल या दुश्वार नहीं था या उनके गुमान में वो बड़ा गुनाह न था। वो कबीर तो था लेकिन अकबरुल कबाइर में से न था। (शरह नववी : 1/141) क़ाज़ी अ़याज़ ने यही तावील की है। **(2) नमीमह :** लोगों के दरम्यान फ़साद व बिगाड़ पैदा करने के लिये उनकी बातें एक-दूसरे तक पहुँचाना, यानी चुग़ली करता-फिरना। **(3) ला यस्तनिरु :** अगली रिवायत में है। **ला यस्तन्ज़िहु :** मानी है बचना, परहेज़ करना अपने जिस्म और कपड़ों को अपने बोल (पेशाब) से महफ़ूज़ रखने की कोशिश करना। **(4) अ़सीब :** खजूर की शाख़। **(5) रत्ब :** तर।

(678) इमाम साहब एक और सनद से बयान करते हैं जिसके अल्फ़ाज़ ये हैं कि दूसरा ला यसतन्ज़िहू अ़निल बौल औ मिनल बौल, बौल से एहतियात और परहेज़ नहीं करता था। पहली हदीस़ में ला यस्ततिरु मिम्बोलिही का लफ़्ज़ है।

حَدَّثَنِيهِ أَحْمَدُ بْنُ يُوسُفَ الأَزْدِيُّ، حَدَّثَنَا مُعَلًّى بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، عَنْ سُلَيْمَانَ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " وَكَانَ الآخَرُ لاَ يَسْتَنْزِهُ عَنِ الْبَوْلِ أَوْ مِنَ الْبَوْلِ " .

फ़ायदा : (1) चुग़ली खाना और अपने पेशाब के छींटों से अपने आपको बचाने की कोशिश न करना, ऐसा जुर्म है जो इंसान के लिये अ़ज़ाबे क़ब्र का बाइस़ बनेगा। इसलिये हमें पेशाब वग़ैरह नजासत से अपने जिस्म और कपड़ों को महफ़ूज़ रखने की पूरी कोशिश और फ़िक्र करनी चाहिये और चुग़लख़ोरी की आ़दत से बाज़ रहने का एहतिमाम करना चाहिये। (2) खजूर की तर शाख़ की तस्बीह को मदारे तख़्फ़ीफ़े अ़ज़ाब बनाकर, कुछ हज़रात ने क़ब्र के पास क़ुरआन मजीद की तिलावत को मुस्तहब क़रार दिया है और ये बिनाए फ़ासिदा अ़लल फ़ासिद है। अगर यही बात है तो फिर आपने क़ुरआन मजीद की तिलावत क्यों नहीं फ़रमाई और आपके सहाबा किराम (रज़ि.) और ताबेईने इ़ज़ाम (रह.) ने आपके इस काम से ये मानी क्यों नहीं निकाला, वो हमेशा इस अ़मल से क्यों महरूम रहे। (3) कुछ हज़रात ने इस हदीस़ से क़ब्र पर फूलों और दरख़्त की शाख़ों के रखने का जवाज़ निकाला है और दलील में हज़रत बुरैदा अस्लमी का काम पेश किया है। सवाल ये है कि अगर तख़्फ़ीफ़े अ़ज़ाब का बाइस़ शाख़े तर का तस्बीह कहना है तो उसके चीरने की क्या ज़रूरत थी। चीरने के बाइस़ तो वो जल्द ख़ुश्क हो गई। इस सूरत में तो आपको उन क़ब्रों पर कोई पौधा लगवाना चाहिये था। जो बरसों-बरस तक हरा-भरा रहता। नीज़ आपका ये मन्शा और नुक्तए नज़र सहाबा किराम (रज़ि.) ने क्यों नहीं समझा। अगर आपका यही मक़सद था कि तख़्फ़ीफ़ का बाइस़ तर शाख़ की तस्बीह है तो वो सब ऐसा ही करते और हर क़ब्र पर शाख़ नसब करते बल्कि दरख़्त लगवाते और इसका उस दौर में आ़म रिवाज होता। इसको सिर्फ़ बुरैदा अस्लमी ही क्यों समझे और उन्होंने भी अपनी क़ब्र के अंदर दो खजूर की शाख़ें रखने की वसियत कि क़ब्र पर गाड़ने की तल्क़ीन नहीं की। आपने तो एक शाख़ के दो टुकड़े किये थे और उन्होंने दो शाख़ें रखवाईं। एक हनफ़ी

इसकी हिक्मत ये बयान करते हैं, 'खजूर के दरख़्त में बरकत है क्योंकि अल्लाह तआला ने इसको शज्रए तय्यिबा क़रार दिया है।' ये तो फिर खजूर के दरख़्त के लिये ख़ास हुआ। फूलों और आम शाख़ों में ये बरकत कहाँ से आ गई। आपने तो खजूर की शाख़ के टुकड़े गाड़े थे और वो भी सिर्फ़ दो क़ब्रों पर, अगर ये अमल आम मुसलमानों के लिये अज़ाब में कमी का बाइस है और मुक़र्रबीन के लिये तरक़्क़िये दर्जात का सबब, तो आपने दूसरे लोगों को इससे क्यों महरूम रखा? उनकी क़ब्रों पर शाख़ का टुकड़ा नसब करने की तल्क़ीन और हिदायत नहीं फ़रमाई और न ही इस राज़ को जलीलुल क़द्र सहाबा किराम (रज़ि.) पा सके। असल हक़ीक़त ये है कि आपने अल्लाह तआला से उनके लिये अज़ाब में कमी की दुआ फ़रमाई। तो अल्लाह तआला की तरफ़ से आपको बताया गया कि आप एक हरी शाख़ के दो हिस्से करके उन क़ब्रों पर एक-एक गाड़ दें। जब तक उनमें तरी रहेगी, उस वक़्त तक उनके अज़ाब में कमी कर दी जायेगी। तो तौजीह की सेहत व ताईद के लिये हज़रत जाबिर (रज़ि.) की सहीह मुस्लिम के आख़िर में आने वाली एक हदीस़ मौजूद है, जिसमें इस क़िस्म का एक और वाक़िया बयान किया गया है और हज़रत जाबिर (रज़ि.) के पूछने पर आपने यही तौजीह बयान फ़रमाई है। (शरह नववी : 1/141) **(4)** क़ुरआन मजीद ने एक उसूल और ज़ाब्ता बयान फ़रमाया है, लैसा लिल्इन्सानि इल्ला मा सआ इंसान को वही चीज़ हासिल होती है, जिसके लिये उसने मेहनत व कोशिश की है। इस ज़ाब्ते से इस्तिन्सार के लिये हनफ़ी उसूल के मुताबिक़, हदीसे मुतवातिर या मशहूर की ज़रूरत है। ख़बरे वाहिद से भी ये काम नहीं चलेगा, तो ये किस क़द्र तअज्जुब अंगेज़ बात है कि इस तर शाख़ को दलील बनाया जाता है। या ज़ईफ़ अहादीस़ पेश की जाती हैं।

तम्बीह : अजीब बात है कि मौलाना ग़ुलाम रसूल सईदी साहब ने आख़िर में ग़ैर शऊरी तौर पर ये लिख दिया है, ये वाक़िया दो मर्तबा हुआ, हज़रत जाबिर (रज़ि.) की रिवायत में है, उन दो क़ब्र वालों को अज़ाब हो रहा था और इस रिवायत में अज़ाब का सबब नहीं बयान फ़रमाया और इस रिवायत में ये है कि आपने उनकी शफ़ाअत की और आपकी शफ़ाअत उनके हक़ में मक़्बूल हुई और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) की रिवायत में ये बयान है कि एक चुग़ली करता था और दूसरा पेशाब के क़तरों से नहीं बचता था और इसमें शफ़ाअत का ज़िक्र नहीं है। (शरह सहीह मुस्लिम : 1/988)

एक अजीब इस्तिदलाल : कुछ हज़रात ने इस हदीस़ से इस्तिदलाल किया है कि आप बरज़ख़ के हालात से आगाह हैं, अज़ाब, सबबे अज़ाब से आगाह हैं, अज़ाब दूर कर सकते हैं। सवाल ये है अगर आप सब कुछ जानते थे तो फिर इस हदीस़ का क्या मतलब है कि आप (ﷺ) बक़ीअ से गुज़रे और पूछा, आज यहाँ तुमने किसको दफ़न किया है? और कुछ के बक़ौल इस हदीस़ का ताल्लुक़ इस वाक़िये से है जैसाकि इब्ने हजर ने लिखा है। (फ़तहुल मुल्हिम : 1/455)

और जो मर्द मस्जिद में सफ़ाई करता था वो फ़ौत हो गया आपको पता न चला, फिर पूछने के बाद पता चला तो आपने फ़रमाया, 'मुझे उसकी क़ब्र से आगाह करो।'

इस किताब के कुल 33 बाब और 158 हदीसें हैं

كتاب الحيض

किताबुल हैज़
(हैज़ का बयान)

हदीस़ नम्बर 679 से 836 तक

हैज़ का मानी व मफ़्हूम

हैज़ वो ख़ून है जो बुलूग़त से लेकर सिन्ने यास (माहवारी रुकने) तक औरत को तक़रीबन चार हफ़्ते के वक़्फ़े से हर माह आता है और दौराने हमल और उमूमन रज़ाअत के ज़माने में बंद हो जाता है। एक हैज़ से लेकर दूसरे हैज़ तक के अर्से को शरीअत में 'तुहर' कहते हैं।

इस्लाम से पहले ज़्यादातर इंसानी मुआशरे इस हवाले से जहालत और तवह्हुमात का शिकार थे। यहूद इन दिनों में औरत को इन्तिहाई नजिस और ग़लीज़ समझते। जिस चीज़ को उसका हाथ लगता उसे भी पलीद समझते। इसे सोने के कमरों और बावर्ची ख़ाने (किचन) वग़ैरह से दूर रहना पड़ता। नसारा भी मज़हबी तौर पर यहूदियों से मुत्तफ़िक़ थे। उनके यहाँ भी हैज़ के दौरान में औरत इन्तिहाई नजिस थी और जो कोई उसको छू लेता वो भी नजिस समझा जाता था। (बाइबिल, अहबार, अहदनामा क़दीम, बाब 15, फ़िक़रह : 19-23) लेकिन उनकी अक्सरियत अमलन अहदनामे क़दीम के अहकामात पर अमल न करती थी बल्कि वो दूसरी इन्तिहा पर थी। आम ईसाई इस दौरान में भी औरतों से मुक़ारबत (हम बिस्तरी) कर लेते थे।

सहाबा किराम ने इस हवाले से रसूलुल्लाह (ﷺ) से सवाल किया। उसके जवाब में क़ुरआन मजीद की ये आयत नाज़िल हुई, 'और (लोग) आपसे हैज़ के बारे में पूछते हैं। बता दीजिये कि ये अज़ियत (का ज़माना) है, इसलिये महीज़ (ज़मान-ए-हैज़ या जहाँ से हैज़ का ख़ून निकलता है उस मक़ाम) में औरतों से (जिमाअ करने से) दूर रहो और उनसे मुक़ारबत न करो यहाँ तक कि वो हालते तुहर में आ जायें (हैज़ के दिन ख़त्म हो जायें) फिर जब वो पाक-साफ़ हो जायें तो उनके पास जाओ, जहाँ से अल्लाह तआला ने तुम्हें हुक्म दिया है, अल्लाह (अपनी तरफ़) रुजूअ करने वालों और पाकीज़गी इख़्तियार करने वालों से मुहब्बत करता है।' (सूरह बक़रह 2 : 222)

इस आयत में अल्लाह तआला ने महीज़ का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया है। ये मस्दर भी है और इस्मे ज़र्फ़ भी। मस्दर हो तो वही मानी हैं जो हैज़ के हैं, यानी मख़्सूस दिनों में औरतों को ख़ून आना, यानी इसके दौरान एहतिराज़ करो। इस्मे ज़र्फ़ हो तो ज़र्फ़ ज़मानी की हैसियत से मानी होंगे हैज़ का ज़माना। मफ़्हूम ये होगा कि हैज़ के दिनों में बीवियों के साथ जिन्सी मुक़ारबत मम्नूअ है। ज़र्फ़े मकान की हैसियत से महीज़ से मुराद वो जगह होगी जहाँ से हैज़ का ख़ून निकलता है। ज़र्फ़े मकान मुराद लेते हुए लिसानुल अरब में इस आयत का मफ़्हूम ये बयान किया गया है, 'इस आयत में महीज़ से औरत (के जिस्म) का वो हिस्सा मुराद है जहाँ मुजामिअत की जाती है क्योंकि यही हैज़ (के निकलने) की (भी) जगह है। गोया ये फ़रमाया, हैज़ (के निकलने) की जगह में औरतों (के साथ मुबाशिरत) से दूर रहो, इस जगह उनके साथ जिमाअ न करो।' (लिसानुल अरब, माद्दह, हैज़)

महीज़ का जो भी मानी लें मफ़्हूम यही है कि उन दिनों में बीवियों से जिस्मानी ताल्लुक़ात से परहेज़ किया जाये लेकिन इस बाब की अहादीस़ से ज़ाहिर होता है कि उनको साथ रखा जाये, उनकी तरफ़ इल्तिफ़ात और तवज्जह को बरक़रार रखा जाये।

कुरआन ने औरतों की इस फ़ितरी हालत के बारे में तमाम जाहिलाना अफ़्कार की तर्दीद कर दी। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इसके फ़ितरी मामला होने के बारे में ये इरशाद फ़रमाया, 'ये ऐसी चीज़ है कि आदम की बेटियों के बारे में अल्लाह ने इसका फ़ैसला फ़रमाया है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल हैज़, बाब कैफ़ा काना बदउल हैज़ : 294)

कुरआन के अल्फ़ाज़ हुवा अज़न के मानी हैं ये अदना अज़ियत (कम दर्जे की तकलीफ़ का ज़माना है। औरत को ये अज़ियत जिस्मानी तब्दीलियों, नफ़्सयाती कैफ़ियत, नापाक ख़ून और उसकी बदबू की वजह से पहुँचती है। इस्लाम ने इस फ़ितरी तकलीफ़ के ज़माने में औरतों को सहूलत देते हुए नमाज़ माफ़ कर दी और रमज़ान के रोज़े के लिये वही सहूलत दी जो मरीज़ को दी जाती है, यानी इन दिनों में वो रोज़ा न रखे और बाद में अपने रोज़े पूरे कर ले।

मौजूदा मेडिकल साइंस ने भी अब इसी बात की शहादत मुहैया कर दी है कि इन दिनों में ख़्वातीन बेआरामी, इज़्तिराब और हल्की तकलीफ़ का शिकार रहती हैं। सन्जीदा क़िस्म के फ़राइज़ अदा करने में उन्हें दिक़्क़त पेश आती है, इसलिये जहाँ वो मुलाज़िमत करती हैं उन इदारों का फ़र्ज़ है कि इन दिनों में औरतों के फ़राइज़ की अदायगी में सहूलत मुहैया करें। वो सहूलत क्या हो? रोशन ख़्याली और हुक़ूक़े निसवाँ का लिहाज़ करने के दावों के बावजूद मग़रिबी तहज़ीब अभी तक ऐसी किसी सहूलत के बारे में सोचने से मअज़ूर है जबकि इस्लाम ने, जो दीने फ़ितरत है, पहले ही उनके फ़राइज़ में कमी कर दी।

तकलीफ़ और इज़्तिराब की इस हालत में घर के दूसरे अफ़राद बिल्ख़ुसूस ख़ाविन्द की तरफ़ से कराहत और नफ़रत का इज़हार नफ़्सयाती तौर पर औरत के लिये शदीद तकलीफ़ और परेशानी का बाइस़ बन जाता है, इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने औरतों के ख़िलाफ़ यहूदियों और दीगर जाहिल मुआशरों के ज़ालिमाना रवैये का इज़ाला किया और ये एहतिमाम फ़रमाया कि ख़ाविन्द के साथ उसके जिन्सी ताल्लुक़ात तो मुन्क़तअ हो (कट) जायें, क्योंकि वो औरत के लिये मज़ीद तकलीफ़ का सबब बन सकते हैं, लेकिन औरत इस दौरान में बाकी मामलात में घर वालों बिल्ख़ुसूस ख़ाविन्द की भरपूर तवज्जह और मुहब्बत का मर्कज़ रहे। सहीह मुस्लिम की किताबुल हैज़ के आग़ाज़ के अबवाब में इस एहतिमाम का तफ़्सीलात मज़्कूर हैं।

आगे के अबवाब में मर्दों और औरतों के निजी ज़िन्दगी के अलग-अलग हालात के दौरान में इबादत के मसाइल बयान हुए हैं। औरतों के ख़ुसूसी दिनों के साथ मुत्तसिल या मिलती-जुलती बीमारियों और विलादत के अर्से के दौरान में तहारत के मसाइल भी किताबुल हैज़ का हिस्सा हैं।

3. किताबुल हैज़
(हैज़ का बयान)

बाब 1 : तहबंद के ऊपर हाइज़ा औरत से मुबाशरत

باب مُبَاشَرَةِ الْحَائِضِ فَوْقَ الإِزَارِ

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ إِحْدَانَا إِذَا كَانَتْ حَائِضًا أَمَرَهَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَتَأْتَزِرُ بِإِزَارٍ ثُمَّ يُبَاشِرُهَا .

(679) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि हममें से किसी एक को हैज़ आ जाता तो रसूलुल्लाह (ﷺ) चादर बांधने का हुक्म देते, वो चादर बांध लेती तो फिर आपके साथ लेट जाती।

(सहीह बुख़ारी : 300, 2031, अबू दाऊद : 268, तिर्मिज़ी : 132,नसाई : 1/151, 1/189, इब्ने माजह : 636)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) ता-तज़िरु : चादर बांध लेती, क्योंकि इज़ार तहबंद को कहते हैं। **(2) युबाशिर :** जिस्म का जिस्म के साथ मिला लेना, किसी के साथ लेट जाना।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنِ الشَّيْبَانِيِّ، ح وَحَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الأَسْوَدِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ إِحْدَانَا إِذَا كَانَتْ حَائِضًا أَمَرَهَا رَسُولُ اللَّهِ

(680) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि हममें से कोई एक जब हाइज़ा होती तो आप उसे हैज़ के जोश व कस़रत के दिनों में तहबंद बांधने का हुक्म देते। फिर उसके साथ लेट जाते और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़रमाया, 'तुममें से कौन है जो अपनी ज़रूरत व ख़्वाहिश पर इस क़द्र ज़ब्त और कंटोल्ल

ﷺ أَنْ تَأْتَزِرَ فِي فَوْرِ حَيْضَتِهَا ثُمَّ يُبَاشِرُهَا . قَالَتْ وَأَيُّكُمْ يَمْلِكُ إِرْبَهُ كَمَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَمْلِكُ إِرْبَهُ .

रखता हो जिस क़द्र रसूलुल्लाह(ﷺ) अपने अज़्व(जज़्बात) पर क़ाबू और कुदरत रखते थे।
(सहीह बुख़ारी : 302, अबू दाऊद : 273, इब्ने माजह : 635)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) इरब : अगर हम्ज़ह पर ज़ेर और रा साकिन हो तो मानी अज़्वे तनासुल होगा और अगर हम्ज़ह और रा दोनों पर ज़बर हो तो मानी ख़्वाहिश और शहवत होगा। **(2) फ़ौर :** जोश व कस़रत, जब ख़ून ज़्यादा आ रहा हो।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ الشَّيْبَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَدَّادٍ، عَنْ مَيْمُونَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُبَاشِرُ نِسَاءَهُ فَوْقَ الإِزَارِ وَهُنَّ حُيَّضٌ .

(681) हज़रत मैमूना (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी बीवियों से, जबकि वो हाइज़ा होतीं, तहबंद बांधने की सूरत में मुबाशरत करते।
(सहीह बुख़ारी : 303, अबू दाऊद : 2167)

फ़वाइद : (1) हैज़ का असल मानी सैलान यानी बहना है। कहते हैं, हाज़ल वादी, वादी बह पड़ी और शरई तौर पर हैज़ वो ख़ून है, जो औरत के बालिग़ा होने पर रहम छोड़ता है और ये मालूम व मुतअय्यन दिनों में आम तौर पर 6 या 7 दिन आता है। लेकिन मौसम, हालात ख़ूराक और मिज़ाज व तबीयत के इख़्तिलाफ़ की बिना पर कुछ औरतों को कम या ज़्यादा भी आ जाता है। जब औरत हामिला हो जाती है तो अल्लाह के हुक्म से यही ख़ून बच्चे की ग़िज़ा का काम देता है और औरत को इस सूरत में हैज़ नहीं आता, इल्ला माशाअल्लाह जब वज़अे हमल हो जाता है तो अल्लाह तआला की हिक्मते बालिग़ा के तहत यही ख़ून, दूध की शक्ल में बच्चे की ग़िज़ा बनता है। इसलिये आम तौर पर दूध पिलाने के दिनों में हैज़ नहीं आता, मगर हैज़ आना शुरू हो जाये तो फिर जल्द हमल ठहर जाता है। **(2)** हैज़ के दिनों में औरत से जिमाअ करना, कुरआन व हदीस़ की रू से नाजाइज़ है, हाँ! इसके अलावा साथ लेटना या बोस व किनार जाइज़ है। अगर कोई जहालत और नादानी की बिना पर ये हरकत कर बैठा है तो उस पर कोई कफ़्फ़ारा नहीं है, वो तौबा व इस्तिग़फ़ार करे। अगर जान-बूझकर ये हरकत करता है, लेकिन इस हरकत को नाजाइज़ ही तसव्वुर करता है, हलाल नहीं समझता तो उसके कफ़्फ़ारे के बारे में इख़्तिलाफ़ है। लेकिन उसके गुनाहे कबीरा होने में कोई शक नहीं है, उसके लिये तौबा व इस्तिग़फ़ार ज़रूरी है। सुनन नसाई की रिवायत, पेज नम्बर 370 में दीनार और निस्फ़ दीनार सदक़ा करने का ज़िक्र है। अगर इंसान को साथ लेटने से ये ख़तरा हो कि वो अपने ऊपर क़ाबू नहीं पा सकेगा और मामला ताल्लुक़ात के क़ियाम तक पहुँच जायेगा, तो फिर उसे मुबाशरत यानी इकट्ठे लेटने या बोस व किनार से परहेज़ करना चाहिये।

बाब 2 : हाइज़ा के साथ एक लिहाफ़ में लेटना

باب الاِضْطِجَاعِ مَعَ الْحَائِضِ فِي لِحَافٍ وَاحِدٍ

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ مَخْرَمَةَ، ح وَحَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ عِيسَى، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي مَخْرَمَةُ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ كُرَيْبٍ، مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ سَمِعْتُ مَيْمُونَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَضْطَجِعُ مَعِي وَأَنَا حَائِضٌ وَبَيْنِي وَبَيْنَهُ ثَوْبٌ .

(682) हज़रत मैमूना (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे साथ, जबकि मैं हाइज़ा होती तो लेट जाते, मेरे और आपके दरम्यान कपड़ा हाइल होता था।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ زَيْنَبَ بِنْتَ أُمِّ سَلَمَةَ، حَدَّثَتْهُ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ حَدَّثَتْهَا قَالَتْ، بَيْنَمَا أَنَا مُضْطَجِعَةٌ، مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي الْخَمِيلَةِ إِذْ حِضْتُ فَانْسَلَلْتُ فَأَخَذْتُ ثِيَابَ حَيْضَتِي فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَنُفِسْتِ " . قُلْتُ نَعَمْ . فَدَعَانِي فَاضْطَجَعْتُ مَعَهُ فِي الْخَمِيلَةِ . قَالَتْ وَكَانَتْ هِيَ وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَغْتَسِلاَنِ فِي الإِنَاءِ الْوَاحِدِ مِنَ الْجَنَابَةِ .

(683) हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) बयान करती हैं कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चादर में लेटी हुई थी, इस दौरान में मुझे हैज़ आ गया और मैं खिसक गई और मैंने अपने हालते हैज़ वाले कपड़े ले लिये, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे फ़रमाया, 'क्या तुम्हें हैज़ आना शुरू हो गया है।' मैंने कहा, जी हाँ! आपने मुझे बुलाया और मैं आपके साथ चादर में लेट गई। उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बताया मैं और रसूलुल्लाह (ﷺ) इकट्ठे एक बर्तन से ग़ुस्ले जनाबत कर लेते थे।

(सहीह बुख़ारी : 298, 322, 232, 1929, नसाई : 1/149-150, 282, 1/188)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) ख़मीलह : डोरों वाला कपड़ा, चादर। **(2) हीज़ह :** हालते हैज़। **(3) नफ़िस्ति :** नफ़िस ख़ून को कहते हैं। इसलिये ये लफ़्ज़ हैज़ और विलादत दोनों के ख़ून के लिये इस्तेमाल हो जाता है। यहाँ हैज़ मुराद है, विलादत के लिये नुफ़िसत नून के ज़म्मा और हैज़ के लिये नून के फ़तहा से।

फ़ायदा : हाइज़ा औरत के साथ एक कपड़े में लेटना या सोना जाइज़ है। सिर्फ़ ख़ास ताल्लुक़ात क़ायम करना मना है।

باب جَوَازِ غَسلِ الْحَائِضِ رَأْسَ زَوْجِهَا وَتَرْجِيلِهِ وَطَهَارَةِ سُؤْرِهَا وَالاِتِّكَاءِ فِي حِجْرِهَا وَقِرَاءَةِ الْقُرْآنِ فِيهِ

बाब 3 : हाइज़ा औरत के लिये जाइज़ है कि वो अपने ख़ाविन्द का सर धोये, उसे कंघी करे और उसका झूठा पाक है, उसकी गोद में सर रखना और क़ुरआन पढ़ना दुरुस्त है

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَمْرَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم إِذَا اعْتَكَفَ يُدْنِي إِلَىَّ رَأْسَهُ فَأُرَجِّلُهُ وَكَانَ لاَ يَدْخُلُ الْبَيْتَ إِلاَّ لِحَاجَةِ الإِنْسَانِ .

(684) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ऐतकाफ़ बैठते तो अपना सर मेरे क़रीब कर देते, मैं उसमें कंघी कर देती और आप घर में सिवाय क़ज़ाए हाजत के, तशरीफ़ नहीं लाते थे।

(अबू दाऊद : 2467, 2468)

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، وَعَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ عَائِشَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ إِنْ كُنْتُ لأَدْخُلُ الْبَيْتَ لِلْحَاجَةِ وَالْمَرِيضُ فِيهِ فَمَا أَسْأَلُ عَنْهُ إِلاَّ وَأَنَا مَارَّةٌ وَإِنْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَيُدْخِلُ عَلَىَّ رَأْسَهُ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ فَأُرَجِّلُهُ وَكَانَ لاَ يَدْخُلُ الْبَيْتَ إِلاَّ لِحَاجَةٍ إِذَا كَانَ مُعْتَكِفًا . وَقَالَ ابْنُ رُمْحٍ إِذَا كَانُوا مُعْتَكِفِينَ .

(685) उरवह और अम्र बिन अब्दुर्रहमान बयान करते हैं कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़रमाया कि मैं क़ज़ाए हाजत के लिये घर में दाख़िल होती, उसमें बीमार मौजूद होता तो मैं उससे गुज़रते-गुज़रते पूछ लेती और रसूलुल्लाह (ﷺ) मस्जिद से मेरे पास (हुज्रे) में सर दाख़िल फ़रमाते, मैं उसमें कंघी कर देती और आप जब ऐतकाफ़ बैठते तो घर में सिर्फ़ क़ज़ाए हाजत के लिये आते। इब्ने रुमह ने इज़ा काना मुअतकिफ़ा (जब आप ऐतकाफ़ बैठते) की बजाए इज़ा कानू मुअतकिफ़ीन, जब सहाबा के साथ ऐतकाफ़ बैठते, कहा।

(सहीह बुख़ारी : 2029, अबू दाऊद : 2468, तिर्मिज़ी : 804, इब्ने माजह : 1776)

(686) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हालते ऐतकाफ़ में मस्जिद से मेरी तरफ़ सर निकालते तो मैं हैज़ की हालत में उसको धो देती।
(नसाई : 275)

وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ نَوْفَلٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُخْرِجُ إِلَىَّ رَأْسَهُ مِنَ الْمَسْجِدِ وَهُوَ مُجَاوِرٌ فَأَغْسِلُهُ وَأَنَا حَائِضٌ .

(687) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे क़रीब अपना सर कर देते थे जबकि मैं अपने हुजरे में होती थी और मैं हैज़ की हालत में आपके सर में कंघी कर देती थी।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ، عَنْ هِشَامٍ، أَخْبَرَنَا عُرْوَةُ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُدْنِي إِلَىَّ رَأْسَهُ وَأَنَا فِي حُجْرَتِي فَأُرَجِّلُ رَأْسَهُ وَأَنَا حَائِضٌ .

(688) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि मैं हालते हैज़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) का सर धो देती थी।
(सहीह बुख़ारी: 301, 2031, नसाई : 274, 234)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ، عَنْ زَائِدَةَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كُنْتُ أَغْسِلُ رَأْسَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَأَنَا حَائِضٌ .

(689) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे फ़रमाया जबकि आप मस्जिद में थे, 'मुझे जाए नमाज़ पकड़ा दो।' मैंने अर्ज़ किया, मैं हाइज़ा हूँ। आपने फ़रमाया, 'तेरा हैज़ तेरे हाथ में नहीं है।'
(अबूदाऊद:261,तिर्मिज़ी:134,नसाई :1/146)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ ثَابِتِ بْنِ عُبَيْدٍ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " نَاوِلِينِي الْخُمْرَةَ مِنَ الْمَسْجِدِ ". قَالَتْ فَقُلْتُ إِنِّي حَائِضٌ. فَقَالَ " إِنَّ حَيْضَتَكِ لَيْسَتْ فِي يَدِكِ " .

(690) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मस्जिद से हुक्म दिया कि आपको जाए नमाज़ पकड़ाऊँ। मैंने

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ حَجَّاجٍ، وَابْنِ أَبِي غَنِيَّةَ، عَنْ ثَابِتِ بْنِ عُبَيْدٍ،

عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ أَمَرَنِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ أُنَاوِلَهُ الْخُمْرَةَ مِنَ الْمَسْجِدِ . فَقُلْتُ إِنِّي حَائِضٌ . فَقَالَ " تَنَاوَلِيهَا فَإِنَّ الْحَيْضَةَ لَيْسَتْ فِي يَدِكِ " .

अर्ज़ किया, मैं हाइज़ा हूँ। आपने फ़रमाया, 'उसे ले आ! हैज़ तेरे हाथ में नहीं है।'

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَبُو كَامِلٍ وَمُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ كُلُّهُمْ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، - قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى، - عَنْ يَزِيدَ بْنِ كَيْسَانَ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ بَيْنَمَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ " يَا عَائِشَةُ نَاوِلِينِي الثَّوْبَ " . فَقَالَتْ إِنِّي حَائِضٌ . فَقَالَ " إِنَّ حَيْضَتَكِ لَيْسَتْ فِي يَدِكِ " فَنَاوَلَتْهُ .

(691) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मस्जिद में मौजूद थे। इस दौरान में आपने फ़रमाया, 'ऐ आइशा! मुझे कपड़ा पकड़ाओ।' तो मैंने कहा, मैं हाइज़ा हूँ। आपने फ़रमाया, 'तेरा हैज़ तेरे हाथ में नहीं है।' तो मैंने आपको कपड़ा पकड़ा दिया। (नसाई : 1/192)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ مِسْعَرٍ، وَسُفْيَانَ، عَنِ الْمِقْدَامِ بْنِ شُرَيْحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كُنْتُ أَشْرَبُ وَأَنَا حَائِضٌ، ثُمَّ أُنَاوِلُهُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَيَضَعُ فَاهُ عَلَى مَوْضِعِ فِيَّ فَيَشْرَبُ وَأَتَعَرَّقُ الْعَرْقَ وَأَنَا حَائِضٌ ثُمَّ أُنَاوِلُهُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَيَضَعُ فَاهُ عَلَى مَوْضِعِ فِيَّ . وَلَمْ يَذْكُرْ زُهَيْرٌ فَيَشْرَبُ .

(692) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि मैं हैज़ की हालत में पानी पी कर नबी (ﷺ) को पकड़ा देती, तो आप अपना मुँह मेरे मुँह की जगह पर रखकर पानी पीते और मैं हड्डी से गोश्त चूंडती जबकि मैं हाइज़ा होती, फिर उसे नबी (ﷺ) को दे देती, तो आप मेरे मुँह वाली जगह पर अपना मुँह रखते। ज़ुहैर ने फ़यशरबु का लफ़्ज़ नहीं बयान किया।
(अबू दाऊद : 259, नसाई : 1/56, 1/190, 1/178, इब्ने माजह : 643)

मुफ़रदातुल हदीस़ : अर्क़ : हड्डी, जिस पर कुछ गोश्त हो।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا دَاوُدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَكِّيُّ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أُمِّهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَتَّكِئُ فِي حِجْرِي وَأَنَا حَائِضٌ فَيَقْرَأُ الْقُرْآنَ .

(693) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरी गोद में टेक लगाते, जबकि मैं हाइज़ा होती और आप क़ुरआन पढ़ते।
(सहीह बुख़ारी : 287, 7549, अबू दाऊद : 260, नसाई : 1/147, 1/149, इब्ने माजह : 634)

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ الْيَهُودَ، كَانُوا إِذَا حَاضَتِ الْمَرْأَةُ فِيهِمْ لَمْ يُؤَاكِلُوهَا وَلَمْ يُجَامِعُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ فَسَأَلَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى { وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ قُلْ هُوَ أَذًى فَاعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ} إِلَى آخِرِ الآيَةِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اصْنَعُوا كُلَّ شَىْءٍ إِلاَّ النِّكَاحَ " . فَبَلَغَ ذَلِكَ الْيَهُودَ فَقَالُوا مَا يُرِيدُ هَذَا الرَّجُلُ أَنْ يَدَعَ مِنْ أَمْرِنَا شَيْئًا إِلاَّ خَالَفَنَا فِيهِ فَجَاءَ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ وَعَبَّادُ بْنُ بِشْرٍ فَقَالاَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ الْيَهُودَ تَقُولُ كَذَا وَكَذَا . فَلاَ نُجَامِعُهُنَّ فَتَغَيَّرَ وَجْهُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى ظَنَنَّا أَنْ قَدْ وَجَدَ عَلَيْهِمَا فَخَرَجَا فَاسْتَقْبَلَهُمَا هَدِيَّةٌ مِنْ لَبَنٍ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَأَرْسَلَ فِي آثَارِهِمَا فَسَقَاهُمَا فَعَرَفَا أَنْ لَمْ يَجِدْ عَلَيْهِمَا .

(694) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि यहूदी जब उनकी कोई औरत हाइज़ा होती तो वो न उसके साथ खाना खाते और न उनके साथ घरों में इकट्ठे रहते। तो नबी (ﷺ) के सहाबा ने आपसे इसके बारे में पूछा, इस पर अल्लाह तआला ने आयत उतारी, 'ये आपसे हैज़ के बारे में सवाल करते हैं, आप फ़रमा दीजिये! हैज़ पलीदी है, तो हैज़ के दिनों में उनसे अलग रहो..।' (आख़िर तक) (सूरह बक़रा : 222) तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिमाअ के सिवा (हर चीज़) सब कुछ करो।' यहूदियों तक ये बात पहुँची तो कहने लगे, ये शख़्स हर बात में हमारी मुख़ालिफ़त करना चाहता है। (ये सुनकर) उसैद बिन हुज़ैर और अब्बाद बिन बिश्र (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! यहूद ऐसा-ऐसा कहते हैं, तो क्या हम उनसे जिमाअ भी न करें? इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के चेहरे का रंग बदल गया, यहाँ तक कि हमने समझा कि आप दोनों पर नाराज़ हो गये हैं। तो वो दोनों निकल गये, आगे से रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये दूध का तोहफ़ा आ रहा था। आपने उनके पीछे बुलावा भेजा (और उनको बुलवाकर) दोनों को दूध पिलाया, तो वो समझ गये। आप उन पर नाराज़ नहीं हैं।

(अबूदाऊद: 258, 2165, तिर्मिज़ी : 2977,2978 नसाई : 1/152, 1/187, इब्ने माजह : 644)

फ़वाइद : (1) मुअतकिफ़ मस्जिद से ज़रूरत के तहत हाथ, पैर या सर निकाल सकता है। (2) अगर मस्जिद में क़ज़ाए हाजत का इन्तिज़ाम न हो और बाहर दूर जाना पड़ता हो, घर क़रीब हो तो क़ज़ाए हाजत के लिये घर जा सकता है। (3) रास्ते से गुज़रते-गुज़रते बीमार की बीमारपुर्सी कर सकता है। (4) औरत का हैज़ की हालत में सारा जिस्म पलीद नहीं हो जाता, इसलिये वो घर का काम-काज कर सकती है। ख़ाविन्द का सर धोकर उसमें कंघी कर सकती है, मस्जिद से बाहर खड़े होकर, मस्जिद में खड़े हुए महरम को कोई चीज़ पकड़ा सकती है। (5) हाइज़ा की गोद में सर रखकर क़ुरआन मजीद की तिलावत और ज़िक्र व अज़कार करने में कोई हर्ज नहीं है। (6) बीवी से मुहब्बत व प्यार के इज़हार के लिये उसके खाने पीने की जगह से खाया पिया जा सकता है और उसका हैज़ की सूरत में मुँह पलीद नहीं होता। (7) ख़ास ताल्लुक़ात के सिवा, मियाँ-बीवी के बाक़ी मामलात हैज़ से मुतास्सिर नहीं होते। (8) अहले किताब की मुख़ालिफ़त शरई हुदूद के अंदर रहते हुए होगी, मुख़ालिफ़त के जोश में शरई हुदूद से तजावुज़ नहीं किया जायेगा।

फ़अ्तज़िलुन्निसाअ : का मक़सद ताल्लुक़ाते ज़न व शौहर (हम बिस्तरी) से बचना है। उनसे बिल्कुल अलग-थलग हो जाना मुराद नहीं है कि इंसान बीवी के साथ उठ-बैठ भी न सके और न उसके हाथ का पका हुआ खाना खा सके और कमरे अलग-अलग हो जायें।

बाब 4 : मज़ी का हुक्म

باب الْمَذْىِ

(695) हज़रत अ़ली (रज़ि.) से रिवायत है कि मुझे बहुत मज़ी आती थी और मैं आपकी लख़्ते जिगर के अपनी बीवी होने के बाइस़, आपसे बराहे रास्त पूछने से शरमाता था। तो मैंने मिक़्दाद बिन अस्वद को कहा, उसने आपसे पूछा, तो आपने फ़रमाया, '(इसमें मुब्तला आदमी) अपना अ़ज़्वे मख़्सूस (शर्मगाह) धो ले और वुज़ू कर ले।'

(सहीह बुख़ारी : 132, 178, नसाई : 1/197)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، وَأَبُو مُعَاوِيَةَ وَهُشَيْمٌ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُنْذِرِ بْنِ يَعْلَى، - وَيُكْنَى أَبَا يَعْلَى - عَنِ ابْنِ الْحَنَفِيَّةِ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ كُنْتُ رَجُلاً مَذَّاءً وَكُنْتُ أَسْتَحْيِي أَنْ أَسْأَلَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم لِمَكَانِ ابْنَتِهِ فَأَمَرْتُ الْمِقْدَادَ بْنَ الأَسْوَدِ فَسَأَلَهُ فَقَالَ " يَغْسِلُ ذَكَرَهُ وَيَتَوَضَّأُ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : मज़ी : वो सफ़ेद और बारीक (पतला) माद्दा जो बीवी से मुलाअ़बत हँसी-मज़ाक़ करते वक़्त कई बार ग़ैर शऊरी तौर पर ही निकल जाता है।

(696) हज़रत अली (रज़ि.) की रिवायत है कि मैंने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के बाइस नबी (ﷺ) से मज़ी के बारे में पूछने से शर्म महसूस की तो मैंने मिक़्दाद को कहा, उसने आपसे पूछा। आपने फ़रमाया, 'उससे वुज़ू करना होगा।'

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ - حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ، قَالَ سَمِعْتُ مُنْذِرًا، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ، عَنْ عَلِيٍّ، أَنَّهُ قَالَ اسْتَحْيَيْتُ أَنْ أَسْأَلَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم عَنِ الْمَذْىِ مِنْ أَجْلِ فَاطِمَةَ فَأَمَرْتُ الْمِقْدَادَ فَسَأَلَهُ فَقَالَ " مِنْهُ الْوُضُوءُ " .

(697) हज़रत अली (रज़ि.) बयान करते हैं कि हमने मिक़्दाद बिन अस्वद को रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में भेजा, तो उसने आपसे इंसान से निकलने वाली मज़ी के बारे में पूछा कि वो उसका क्या करे? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'वुज़ू कर और शर्मगाह को धो ले।'
(नसाई : 1/214-215)

وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ عِيسَى، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي مَخْرَمَةُ بْنُ بُكَيْرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ قَالَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ أَرْسَلْنَا الْمِقْدَادَ بْنَ الأَسْوَدِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَسَأَلَهُ عَنِ الْمَذْىِ يَخْرُجُ مِنَ الإِنْسَانِ كَيْفَ يَفْعَلُ بِهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " تَوَضَّأْ وَانْضَحْ فَرْجَكَ " .

फ़वाइद : (1) ससुराल वालों से बीवी से इस्तिम्ताअ की बातें करना मुनासिब नहीं है और जब बराहे रास्त बातचीत करने में कोई मानेअ (रुकावट) मौजूद हो तो बात बिल्वास्ता हो सकती है और दूसरों के ज़रिये फ़तवा या मसला पूछा जा सकता है। **(2)** मज़ी से वुज़ू टूट जाता है और मज़ी निकलने की सूरत में अज़्वे मख़्सूस (शर्मगाह) को धो लेना काफ़ी है, उसके लिये गुस्ल करने की ज़रूरत नहीं है, बोल व बराज़ से इस्तिन्जा के लिये पत्थर या ढेला काफ़ी है। लेकिन मज़ी निकलने की सूरत में पानी का इस्तेमाल ज़रूरी है।

باب غَسْلِ الْوَجْهِ وَالْيَدَيْنِ إِذَا اسْتَيْقَظَ مِنَ النَّوْمِ

बाब 5 : नींद से बेदार होकर चेहरा और दोनों हाथ धोना

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْلٍ، عَنْ كُرَيْبٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَامَ مِنَ اللَّيْلِ فَقَضَى حَاجَتَهُ ثُمَّ غَسَلَ وَجْهَهُ وَيَدَيْهِ ثُمَّ نَامَ .

(698) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) रात को उठे और क़ज़ाए हाजत की, फिर अपना चेहरा और दोनों हाथ धोये, फिर सो गये।

(सहीह बुख़ारी : 6316, अबू दाऊद : 5043, नसाई : 1/218, इब्ने माजह : 508)

फ़ायदा : रात को इंसान अगर बहुत जल्द बेदार हो जाये तो वो दोबारा सो सकता है। जिन हज़रात ने इसको मक्रूह क़रार दिया है उनका मक़सद ये है कि दोबारा सो जाने की सूरत में ये ख़तरा होता है कि वो अपने रात के मामूलात और सुबह की नमाज़ से महरूम हो सकता है, इसलिये उसको नहीं सोना चाहिये, अगर ये अन्देशा न हो तो फिर सो सकता है।

باب جَوَازِ نَوْمِ الْجُنُبِ وَاسْتِحْبَابِ الْوُضُوءِ لَهُ وَغَسْلِ الْفَرْجِ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَأْكُلَ أَوْ يَشْرَبَ أَوْ يَنَامَ أَوْ يُجَامِعَ

बाब 6 : जुन्बी के लिये सोना जाइज़ है लेकिन अगर वो खाना, पीना, सोना या दोबारा ताल्लुक़ात क़ायम करना चाहता है तो बेहतर ये है कि वो शर्मगाह को धोकर वुज़ू कर ले

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَنَامَ وَهُوَ جُنُبٌ تَوَضَّأَ وُضُوءَهُ لِلصَّلاَةِ قَبْلَ أَنْ يَنَامَ .

(699) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब जनाबत की हालत में सोना चाहते, तो सोने से पहले नमाज़ वाला वुज़ू फ़रमा लेते।

(अबू दाऊद : 222,223, नसाई : 1/139, इब्ने माजह : 593, 574)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ، وَوَكِيعٌ، وَغُنْدَرٌ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا كَانَ جُنُبًا فَأَرَادَ أَنْ يَأْكُلَ أَوْ يَنَامَ تَوَضَّأَ وُضُوءَهُ لِلصَّلاَةِ .

(700) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब जुनुबी होते और खाने या सोने का इरादा फ़रमाते तो नमाज़ वाला वुज़ू फ़रमाते।

(अबू दाऊद : 224, नसाई : 1/139, इब्ने माजह : 591, 467)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، ح وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى فِي حَدِيثِهِ حَدَّثَنَا الْحَكَمُ، سَمِعْتُ إِبْرَاهِيمَ، يُحَدِّثُ .

(701) इमाम साहब मज़्कूरा बाला (ऊपर वाली) रिवायत अपने अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، - وَهُوَ ابْنُ سَعِيدٍ - عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ - وَاللَّفْظُ لَهُمَا - قَالَ ابْنُ نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا أَبِي وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، - قَالاَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ عُمَرَ، قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيَرْقُدُ أَحَدُنَا وَهُوَ جُنُبٌ قَالَ " نَعَمْ إِذَا تَوَضَّأَ " .

(702) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हममें से कोई जनाबत की हालत में सो सकता है? आपने फ़रमाया, 'हाँ! जब वो वुज़ू कर ले।'

(नसाई : 1/139, तिर्मिज़ी : 120)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي نَافِعٌ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ عُمَرَ، اسْتَفْتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ هَلْ يَنَامُ أَحَدُنَا وَهُوَ جُنُبٌ قَالَ " نَعَمْ لِيَتَوَضَّأْ ثُمَّ لْيَنَمْ حَتَّى يَغْتَسِلَ إِذَا شَاءَ " .

(703) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है आपने फ़रमाया, 'हाँ! वो वुज़ू कर ले, फिर सो जाये ताकि फिर उठकर जब चाहे ग़ुस्ल कर ले।'

(704) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि उमर (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को बताया कि वो रात को जनाबत से दोचार हो जाते हैं, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें फ़रमाया, 'अपना अज़्वे मख़सूस (शर्मगाह) धोकर वुज़ू करके सो जाओ।'
(सहीह बुख़ारी:290, अबू दाऊद:221, नसाई:1-139)

وَحَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ ذَكَرَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ تُصِيبُهُ جَنَابَةٌ مِنَ اللَّيْلِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " تَوَضَّأْ وَاغْسِلْ ذَكَرَكَ ثُمَّ نَمْ " .

(705) अब्दुल्लाह बिन अबी क़ैस बयान करते हैं कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) के वित्र के बारे में पूछा, उसके बारे में हदीस़ बयान की। फिर मैंने पूछा, जनाबत की सूरत में क्या करते थे? क्या सोने से पहले गुस्ल फ़रमाते थे या गुस्ल से पहले सो जाते थे? उन्होंने जवाब दिया, दोनों तरह कर लेते थे। कई बार नहाकर सोते और कई बार वुज़ू फ़रमाकर सो जाते। मैंने कहा, अल्लाह तआला का शुक्र है जिसने दीन में वुस्अत रखी है।
(अबू दाऊद : 1437, तिर्मिज़ी : 449, 2294)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَيْسٍ، قَالَ سَأَلْتُ عَائِشَةَ عَنْ وِتْرِ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ الْحَدِيثَ قُلْتُ كَيْفَ كَانَ يَصْنَعُ فِي الْجَنَابَةِ أَكَانَ يَغْتَسِلُ قَبْلَ أَنْ يَنَامَ أَمْ يَنَامُ قَبْلَ أَنْ يَغْتَسِلَ قَالَتْ كُلُّ ذَلِكَ قَدْ كَانَ يَفْعَلُ رُبَّمَا اغْتَسَلَ فَنَامَ وَرُبَّمَا تَوَضَّأَ فَنَامَ . قُلْتُ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي جَعَلَ فِي الأَمْرِ سَعَةً .

(706) इमाम साहब मज़्कूरा रिवायत एक और सनद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِيهِ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، ح وَحَدَّثَنِيهِ هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، جَمِيعًا عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ صَالِحٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(707) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से किसी ने बीवी से ताल्लुक़ात क़ायम कर लिये, फिर दोबारा ताल्लुक़ात

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ، ح وَحَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَابْنُ،

نُمَيْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ الْفَزَارِيُّ، كُلُّهُمْ عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي الْمُتَوَكِّلِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا أَتَى أَحَدُكُمْ أَهْلَهُ ثُمَّ أَرَادَ أَنْ يَعُودَ فَلْيَتَوَضَّأْ " . زَادَ أَبُو بَكْرٍ فِي حَدِيثِهِ بَيْنَهُمَا وُضُوءًا وَقَالَ ثُمَّ أَرَادَ أَنْ يُعَاوِدَ .

क़ायम करना चाहे तो वो वुज़ू कर ले।' अबू बक्र ने अपनी हदीस में ये इज़ाफ़ा किया, 'उनके दरम्यान वुज़ू कर ले।' और कहा, फिर दोबारा यही इरादा किया (दूसरों ने यऊदु कहा और उसने युआविदु कहा)।

(अबू दाऊद : 220, तिर्मिज़ी : 141, नसाई : 1/140, इब्ने माजह : 587, 1640)

وَحَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ أَحْمَدَ بْنِ أَبِي شُعَيْبٍ الْحَرَّانِيُّ، حَدَّثَنَا مِسْكِينٌ، - يَعْنِي ابْنَ بُكَيْرٍ الْحَذَّاءَ - عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَطُوفُ عَلَى نِسَائِهِ بِغُسْلٍ وَاحِدٍ .

(708) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) अपनी तमाम बीवियों के पास जाते और आख़िर में एक ग़ुस्ल फ़रमा लेते।

फ़वाइद : (1) मज़्कूरा बाला (ऊपर वाली) अहादीस़ से मालूम हुआ कि जनाबत की सूरत में फ़ौरी तौर पर ग़ुस्ल करना ज़रूरी नहीं है। खाना-पीना, सोना और ताल्लुक़ात क़ायम करना, ग़ुस्ल से पहले दुरुस्त है। अइम्मए अरबआ और जुम्हूर के नज़दीक उमूरे मज़्कूरा से पहले वुज़ू कर लेना बेहतर है और वुज़ू के बग़ैर ख़िलाफ़े अदब व तहज़ीब यानी मकरूहे तन्ज़ीही है। लेकिन इब्ने हबीब मालिकी और दाऊद ज़ाहिरी के नज़दीक वुज़ू करना लाज़िम है। **(2)** एक से ज़्यादा बीवियों की सूरत में अगर इंसान किसी रात एक से ज़्यादा बीवियों के पास यके बाद दीगरे जाये, तो दरम्यान में नहाना ज़रूरी नहीं है। इसी तरह एक बीवी के पास दोबारा जाने के लिये नहाना ज़रूरी नहीं है, दरम्यान में वुज़ू कर लेना बेहतर है।

باب وُجُوبِ الْغُسْلِ عَلَى الْمَرْأَةِ بِخُرُوجِ الْمَنِيِّ مِنْهَا

बाब 7 : औरत की मनी (एहतिलाम) निकलने की सूरत में उस पर नहाना लाज़िम है

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ الْحَنَفِيُّ، حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ، قَالَ قَالَ إِسْحَاقُ بْنُ أَبِي طَلْحَةَ حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، قَالَ جَاءَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ - وَهِيَ جَدَّةُ إِسْحَاقَ - إِلَى

(709) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि उम्मे सुलैम (जो इस्हाक़ की दादी हैं) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और हज़रत आइशा (रज़ि.) की मौजूदगी में आपसे पूछा, ऐ अल्लाह के

رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ لَهُ وَعَائِشَةُ عِنْدَهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ الْمَرْأَةُ تَرَى مَا يَرَى الرَّجُلُ فِي الْمَنَامِ فَتَرَى مِنْ نَفْسِهَا مَا يَرَى الرَّجُلُ مِنْ نَفْسِهِ . فَقَالَتْ عَائِشَةُ يَا أُمَّ سُلَيْمٍ فَضَحْتِ النِّسَاءَ تَرِبَتْ يَمِينُكِ . فَقَالَ لِعَائِشَةَ " بَلْ أَنْتِ فَتَرِبَتْ يَمِينُكِ نَعَمْ فَلْتَغْتَسِلْ يَا أُمَّ سُلَيْمٍ إِذَا رَأَتْ ذَاكِ " .

रसूल! औरत नींद में वही चीज़ देखती है जो मर्द अपने बारे में देखता है (तो वो क्या करे?) तो हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा, ऐ उम्मे सुलैम! तूने औरतों को रुस्वा कर दिया, तेरा दायाँ हाथ ख़ाक आलूद हो। तो आपने आइशा से फ़रमाया, 'बल्कि तेरा हाथ ख़ाक आलूद हो! हाँ ऐ उम्मे सुलैम! जब वो ये मन्ज़र देखे तो ग़ुस्ल करे।'

मुफ़रदातुल हदीस : (1) फ़ज़हतिन्निसाअ : (तूने ऐसी बात करके जिसके इज़हार में शर्म महसूस की जाती है) उन्हें रुस्वा कर दिया है। क्योंकि इससे ये साबित होता है उनके अंदर, मर्द के पास जाने की शदीद ख़्वाहिश है। **(2) तरिबत यमीनुकि :** अरबी मुहावरे की रू से ये कलिमा ऐसे वक़्त बोलते हैं जब किसी की बात पसंद न हो या उस पर नाराज़ हो और नागवारी का इज़हार करना मक़सूद हो या उस बात का इंकार और उस पर ज़जर व तौबीख़ करनी हो या हैरत व तअज्जुब का इज़हार मक़सूद हो। लफ़्ज़ी मानी या बद्दुआ मक़सूद नहीं होती। इसलिये आपने हज़रत आइशा (रज़ि.) के लिये उन्हीं अल्फ़ाज़ को इस्तेमाल फ़रमाया कि तेरी बात क़ाबिले इंकार है। उसने तो एक ऐसा दीनी मसला पूछा है जो पूछना ही चाहिये था।

फ़ायदा : जिस तरह एहतिलाम की सूरत में मर्द के लिये ग़ुस्ल लाज़िम है अगर कभी औरत को एहतिलाम हो जाये तो उसे भी नहाना पड़ेगा। सिर्फ़ मख़्सूस जगह के धोने और वुज़ू करने पर किफ़ायत नहीं कर सकेगी।

حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، حَدَّثَهُمْ أَنَّ أُمَّ سُلَيْمٍ حَدَّثَتْ أَنَّهَا، سَأَلَتْ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنِ الْمَرْأَةِ تَرَى فِي مَنَامِهَا مَا يَرَى الرَّجُلُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا رَأَتْ ذَلِكِ الْمَرْأَةُ فَلْتَغْتَسِلْ " . فَقَالَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ وَاسْتَحْيَيْتُ مِنْ

(710) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि उम्मे सुलैम ने बताया, उसने नबी (ﷺ) से ऐसी औरत के बारे में पूछा जो नींद में वही चीज़ देखती है जो मर्द देखता है। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब वो ये सूरत देखे तो ग़ुस्ल करे।' उम्मे सुलैम ने बताया, मैं इस पर शर्मा गई। पूछा, क्या ऐसा हो सकता है? नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हाँ! तो मुशाबिहत कैसे पैदा हो जाती है, मर्द का

ذَلِكَ قَالَتْ وَهَلْ يَكُونُ هَذَا فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " نَعَمْ فَمِنْ أَيْنَ يَكُونُ الشَّبَهُ إِنَّ مَاءَ الرَّجُلِ غَلِيظٌ أَبْيَضُ وَمَاءَ الْمَرْأَةِ رَقِيقٌ أَصْفَرُ فَمِنْ أَيِّهِمَا عَلاَ أَوْ سَبَقَ يَكُونُ مِنْهُ الشَّبَهُ " .

पानी गाढ़ा सफ़ेद होता है और औरत का पानी पतला और ज़र्द होता है। तो जिसका भी ग़ालिब आ जाये या रहम में पहले चला जाये, बच्चा उसके मुशाबेह (हम शक्ल) होता है।'
(नसाई : 1/112, 1/115-116, इब्ने माजह : 601)

حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ رُشَيْدٍ، حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا أَبُو مَالِكٍ الأَشْجَعِيُّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ سَأَلَتِ امْرَأَةٌ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنِ الْمَرْأَةِ تَرَى فِي مَنَامِهَا مَا يَرَى الرَّجُلُ فِي مَنَامِهِ فَقَالَ " إِذَا كَانَ مِنْهَا مَا يَكُونُ مِنَ الرَّجُلِ فَلْتَغْتَسِلْ " .

(711) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि एक औरत ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से उस औरत के बारे में पूछा, जो नींद में वही चीज़ देखती है जो मर्द अपनी नींद में देखता है तो आपने फ़रमाया, 'जब उसको वो सूरत पेश आये जो मर्द को पेश आती है तो वो ग़ुस्ल करे।'

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ جَاءَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لاَ يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ فَهَلْ عَلَى الْمَرْأَةِ مِنْ غُسْلٍ إِذَا احْتَلَمَتْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " نَعَمْ إِذَا رَأَتِ الْمَاءَ " . فَقَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَتَحْتَلِمُ الْمَرْأَةُ فَقَالَ " تَرِبَتْ يَدَاكِ فَبِمَ يُشْبِهُهَا وَلَدُهَا " .

(712) हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) से रिवायत है कि उम्मे सुलैम (रज़ि.) नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह तआला हक़ के बयान करने में हया महसूस नहीं करता, तो क्या जब औरत को एहतिलाम हो जाये तो वो नहायेगी? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हाँ! जब मनी का पानी देखे।' तो उम्मे सलमा (रज़ि.) ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! औरत को भी एहतिलाम हो जाता है? आपने फ़रमाया, 'तेरा दायाँ हाथ ख़ाक आलूद हो उसका बच्चा उसके मुशाबेह (हम शक्ल) कैसे हो जाता है।'
(सहीह बुख़ारी : 130, 282, 3328, 6091, 6121, तिर्मिज़ी : 122, इब्ने माजह : 600)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، جَمِيعًا عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَ مَعْنَاهُ وَزَادَ قَالَتْ قُلْتُ فَضَحْتِ النِّسَاءَ .

(713) इमाम साहब एक और सनद से रिवायत करते हैं, इसमें ये इज़ाफ़ा है, उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कहा, तूने औरतों को रुस्वा कर दिया।

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، حَدَّثَنِي عُقَيْلُ بْنُ خَالِدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّهُ قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ عَائِشَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَخْبَرَتْهُ أَنَّ أُمَّ سُلَيْمٍ أُمَّ بَنِي أَبِي طَلْحَةَ دَخَلَتْ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . بِمَعْنَى حَدِيثِ هِشَامٍ غَيْرَ أَنَّ فِيهِ قَالَ قَالَتْ عَائِشَةُ فَقُلْتُ لَهَا أُفٍّ لَكِ أَتَرَى الْمَرْأَةُ ذَلِكِ

(714) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि उम्मे सुलैम (अबू तलहा की औलाद की माँ) रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आई, आगे हिशाम की रिवायत जैसी रिवायत सुनाई। हाँ! इतना फ़र्क़ है कि उरवह ने कहा, हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा, तुझ पर अफ़सोस, क्या औरत को भी ये नज़र आता है?
(अबू दाऊद : 237, नसाई : 1/112)

حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، وَسَهْلُ بْنُ عُثْمَانَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ - وَاللَّفْظُ لأَبِي كُرَيْبٍ - قَالَ سَهْلٌ حَدَّثَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ شَيْبَةَ، عَنْ مُسَافِعِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ امْرَأَةً، قَالَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم هَلْ تَغْتَسِلُ الْمَرْأَةُ إِذَا احْتَلَمَتْ وَأَبْصَرَتِ الْمَاءَ فَقَالَ " نَعَمْ " . فَقَالَتْ لَهَا عَائِشَةُ تَرِبَتْ يَدَاكِ وَأُلَّتْ . قَالَتْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " دَعِيهَا وَهَلْ يَكُونُ الشَّبَهُ إِلاَّ مِنْ قِبَلِ ذَلِكِ إِذَا عَلاَ مَاؤُهَا مَاءَ الرَّجُلِ أَشْبَهَ الْوَلَدُ أَخْوَالَهُ وَإِذَا عَلاَ مَاءُ الرَّجُلِ مَاءَهَا أَشْبَهَ أَعْمَامَهُ " .

(715) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि एक औरत ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा, क्या औरत को जब एहतिलाम हो जाये और वो मनी देखे तो ग़ुस्ल करे? आपने फ़रमाया, हाँ! आइशा (रज़ि.) ने उस औरत से कहा, तेरे हाथ ख़ाक आलूद हों और उन्हें ज़ख़्म पहुँचे। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, हाँ! इस औरत से कहो, उसे छोड़, मुशाबिहत तो इस बिना पर होती है जब उसका पानी मर्द के पानी पर ग़ालिब आ जाता है तो बच्चा अपने मामू के मुशाबेह होता है और जब मर्द का पानी ग़ालिब आता है तो बच्चा अपने चाचाओं के मुशाबेह होता है।

मुफ़रदातुल हदीस : उल्लत : इसे उल्लत यानी नेज़ा लगे, ज़ख़्मी हो।

फ़ायदा : बच्चा मर्द और औरत दोनों के नुत्फ़े के इम्तिज़ाज (मिलने) से पैदा होता है और मुशाबिहत

का दारो-मदार कसरत व ग़ल्बे पर है। जिसका माद्दा ग़ालिब होगा दूसरे को अपने अंदर दबायेगा, बच्चा उसके मुशाबेह होगा।

باب بَيَانِ صِفَةِ مَنِيِّ الرَّجُلِ وَالْمَرْأَةِ وَأَنَّ الْوَلَدَ مَخْلُوقٌ مِنْ مَائِهِمَا

बाब 8 : मर्द और औरत की मनी की कैफ़ियत है और ये कि बच्चा दोनों के पानी के मिलाप से पैदा होता है

حَدَّثَنِي الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو تَوْبَةَ، - وَهُوَ الرَّبِيعُ بْنُ نَافِعٍ - حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ، - يَعْنِي ابْنَ سَلاَّمٍ - عَنْ زَيْدٍ، - يَعْنِي أَخَاهُ - أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَلاَّمٍ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو أَسْمَاءَ الرَّحَبِيُّ، أَنَّ ثَوْبَانَ، مَوْلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَدَّثَهُ قَالَ كُنْتُ قَائِمًا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَجَاءَ حَبْرٌ مِنْ أَحْبَارِ الْيَهُودِ فَقَالَ السَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدُ . فَدَفَعْتُهُ دَفْعَةً كَادَ يُصْرَعُ مِنْهَا فَقَالَ لِمَ تَدْفَعُنِي فَقُلْتُ أَلاَ تَقُولُ يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَقَالَ الْيَهُودِيُّ إِنَّمَا نَدْعُوهُ بِاسْمِهِ الَّذِي سَمَّاهُ بِهِ أَهْلُهُ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ اسْمِي مُحَمَّدٌ الَّذِي سَمَّانِي بِهِ أَهْلِي " . فَقَالَ الْيَهُودِيُّ جِئْتُ أَسْأَلُكَ . فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَيَنْفَعُكَ

(716) नबी (ﷺ) के मौला सौबान (रज़ि.) से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास खड़ा हुआ था तो एक यहूदी आलिम आपके पास आया और कहा, अस्सलामु अलैक! ऐ मुहम्मद! मैंने इसको इस क़द्र ज़ोर से धक्का दिया कि वो गिरते-गिरते बचा। तो उसने कहा, मुझे धक्का क्यों देते हो? मैंने कहा, तू ऐ अल्लाह के रसूल! क्यों नहीं कहता? यहूदी ने कहा, हम तो आपको उस नाम से पुकारते हैं, जो उसका उसके घर वालों ने रखा है। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरा नाम मुहम्मद है, जो मेरे घर वालों ने रखा है।' यहूदी बोला, मैं आपसे पूछने आया हूँ। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे फ़रमाया, 'क्या अगर मैं तुम्हें कुछ बताऊँ तो तुझे उससे फ़ायदा होगा?' तो उसने कहा, मैं अपने दोनों कानों से सुनूँगा (यानी तवज्जह से सुनूँगा)। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक छड़ी से जो आपके पास थी, ज़मीन पर लकीर खींची और फ़रमाया, पूछ। यहूदी ने कहा, जब ज़मीन व आसमान दूसरी ज़मीन और आसमानों से बदल दिये जायेंगे तो लोग उस वक़्त कहाँ होंगे? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने

شَىْءٌ إِنْ حَدَّثْتُكَ " . قَالَ أَسْمَعُ بِأُذُنَىَّ فَنَكَتَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِعُودٍ مَعَهُ . فَقَالَ " سَلْ " . فَقَالَ الْيَهُودِيُّ أَيْنَ يَكُونُ النَّاسُ يَوْمَ تُبَدَّلُ الأَرْضُ غَيْرَ الأَرْضِ وَالسَّمَوَاتُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " هُمْ فِي الظُّلْمَةِ دُونَ الْجِسْرِ " . قَالَ فَمَنْ أَوَّلُ النَّاسِ إِجَازَةً قَالَ " فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِينَ " . قَالَ الْيَهُودِيُّ فَمَا تُحْفَتُهُمْ حِينَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ قَالَ " زِيَادَةُ كَبِدِ النُّونِ " قَالَ فَمَا غِذَاؤُهُمْ عَلَى إِثْرِهَا قَالَ " يُنْحَرُ لَهُمْ ثَوْرُ الْجَنَّةِ الَّذِي كَانَ يَأْكُلُ مِنْ أَطْرَافِهَا " . قَالَ فَمَا شَرَابُهُمْ عَلَيْهِ قَالَ " مِنْ عَيْنٍ فِيهَا تُسَمَّى سَلْسَبِيلاً " . قَالَ صَدَقْتَ . قَالَ وَجِئْتُ أَسْأَلُكَ عَنْ شَىْءٍ لاَ يَعْلَمُهُ أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ الأَرْضِ إِلاَّ نَبِيٌّ أَوْ رَجُلٌ أَوْ رَجُلاَنِ . قَالَ " يَنْفَعُكَ إِنْ حَدَّثْتُكَ " . قَالَ أَسْمَعُ بِأُذُنَىَّ . قَالَ جِئْتُ أَسْأَلُكَ عَنِ الْوَلَدِ قَالَ " مَاءُ الرَّجُلِ أَبْيَضُ وَمَاءُ الْمَرْأَةِ أَصْفَرُ فَإِذَا اجْتَمَعَا فَعَلاَ مَنِيُّ الرَّجُلِ مَنِيَّ الْمَرْأَةِ أَذْكَرَا بِإِذْنِ اللَّهِ وَإِذَا عَلاَ مَنِيُّ الْمَرْأَةِ مَنِيَّ الرَّجُلِ آنَثَا بِإِذْنِ اللَّهِ " . قَالَ الْيَهُودِيُّ لَقَدْ صَدَقْتَ وَإِنَّكَ لَنَبِيٌّ ثُمَّ انْصَرَفَ

फ़रमाया, 'वो पुल सिरात से क़रीब अन्धेरे में होंगे।' उसने कहा, सबसे पहले कौन लोग गुज़रेंगे? आपने कहा, 'फ़क़ीर मुहाजिरीन।' यहूदी ने कहा, उनको क्या तोहफ़ा मिलेगा जब वो जन्नत में दाख़िल होंगे? आपने फ़रमाया, 'मछली के जिगर का टुकड़ा।' उसने कहा, उसके बाद उनकी ख़ुराक क्या होगी? आपने फ़रमाया, 'उनके लिये जन्नत का वो बैल ज़िब्ह किया जायेगा जो उसके अतराफ़ में चरता था।' उसने कहा, उसके बाद उनका मशरूब क्या होगा? आपने फ़रमाया, 'जन्नत का चश्मा, जिसका नाम सल्सबील है (से पियेंगे)।' उसने कहा, आपने सच फ़रमाया। फिर कहा, मैं आपसे एक ऐसी चीज़ के बारे में पूछने आया हूँ, जिसे अहले ज़मीन से नबी या एक दो आदमियों के सिवा कोई नहीं जानता। आपने फ़रमाया, 'अगर मैंने तुम्हें बता दिया तो तुझे फ़ायदा होगा?' उसने कहा, ग़ौर से सुनूँगा। उसने कहा, मैं आपसे औलाद के बारे में पूछने आया हूँ? आपने फ़रमाया, 'मर्द का पानी (मनी) सफ़ेद होता है और औरत का पानी ज़र्द, जब दोनों मिल जाते हैं और मर्द का पानी औरत की मनी पर ग़ालिब आ जाता है तो वो अल्लाह के हुक्म से मुज़क्कर (लड़का) पैदा होता है और जब औरत की मनी, मर्द की मनी पर ग़ालिब आती है तो वो अल्लाह के हुक्म से मुअन्नस (लड़की) बनती है।' यहूदी ने कहा, आपने वाक़ेई सहीह फ़रमाया और आप नबी हैं फिर वापस पलटकर चला गया, तो

فَذَهَبَ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَقَدْ سَأَلَنِي هَذَا عَنِ الَّذِي سَأَلَنِي عَنْهُ وَمَا لِي عِلْمٌ بِشَىْءٍ مِنْهُ حَتَّى أَتَانِيَ اللَّهُ بِهِ " .

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उसने मुझसे ऐसी चीज़ के बारे में सवाल किया कि मैं सवाल के वक़्त उसके बारे में कुछ नहीं जानता था। यहाँ तक कि अल्लाह ने मुझे उसके बारे में बताया।'

وَحَدَّثَنِيهِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ سَلاَّمٍ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ كُنْتُ قَاعِدًا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَقَالَ زَائِدَةُ كَبِدِ النُّونِ . وَقَالَ أَذْكَرَ وَآنَثَ . وَلَمْ يَقُلْ أَذْكَرَا وَآنَثَا .

(717) यही रिवायत मुझे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान ने यहया बिन हस्सान के वास्ते से मुआविया बिन सलाम की मज़्कूरा बाला सनद से इसी तरह सुनाई। सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि ऊपर वाली रिवायत में क़ाइमन (खड़ा था) है और इसमें क़ाइदन (बैठा था) ऊपर लफ़्ज़ (ज़्यादा) और यहाँ ज़ाइद है और यहाँ अज़्कर और आनसा की जगह ज़कर व आनस़ है। मानी एक ही है। अज़्करा, अज़्कर मुज़क्कर होना। आनसा, आनस़, मुअन्नस़ होना।

फ़वाइद : (1) अगर साइल की निय्यत मसले की हक़ीक़त को समझना हो, सिर्फ़ सवाल बराए सवाल या मक़सद पूरा होने के लिये न हो तो बात समझने में कोई दिक़्क़त पेश नहीं आती। जैसाकि यहूदी सवालात के नतीजे में असल हक़ीक़त को समझ गया। लेकिन अगर निय्यत में फ़ुतूर हो तो फिर बात समझ नहीं आती, कोई न कोई राहे फ़रार तलाश कर ली जाती है। जैसाकि इस हदीस़ में सरीह अल्फ़ाज़ में है कि मा ली इल्मुन बिशैइम् मिन्हु, हत्ता आतानियल्लाहु बिही मुझे सवालात के वक़्त, उनके जवाबात मालूम नहीं थे, अल्लाह तआ़ला ने बता दिये। जिससे मालूम हुआ आपको इल्मे ग़ैब नहीं है। हाँ! ज़रूरत की हर चीज़ से मौक़े और महल पर अल्लाह तआ़ला आगाह फ़रमाता है। लेकिन कुछ फ़ुज़ला इसका मानी ये करते हैं, मैं उनकी तरफ़ मुतवज्जह नहीं था, फिर अल्लाह तआ़ला ने मुझे उन चीज़ों की तरफ़ मुतवज्जह कर दिया। अगर मक़सद समझना हो तो इस मानवी तारीफ़ की ज़रूरत ही नहीं है। (2) हिसाबो-किताब के वक़्त मौजूदा आसमान व ज़मीन बदल जायेंगे और उनकी जगह नये आसमान व ज़मीन का ज़ुहूर होगा और उस वक़्त लोग पुल सिरात के क़रीब खड़े होंगे। इसलिये क़ुर्ब की बिना पर कुछ हदीस़ों में अ़ला जिस्रे जहन्नम या अ़ला मतनि जहन्नम के अल्फ़ाज़ आये हैं। (3) पानी का रहम में पहले भेजना, तज़्कीर व तानीस़ का सबब बनता है और ग़ल्बा व कस़रते मुशाबिहत का। (4) फ़ुक़रा व मुहाजिरीन को जन्नत में पहले जाने का शर्फ़ हासिल होगा। हालांकि उ़समान और अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़

जैसे मालदार दर्जे और मर्तबे में उनसे बुलंद व बाला और अफ़ज़ल हैं। मक़सद सिर्फ़ ये है कि जिन दीनदार और मोमिन लोगों के पास माल व दौलत कम है, उनके हिसाबो-किताब पर वक़्त कम लगेगा और उससे जल्द फ़ारिग़ हो जायेंगे।

बाब 9 : गुस्ले जनाबत की कैफ़ियत

باب صِفَةِ غُسْلِ الْجَنَابَةِ

(718) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) गुस्ले जनाबत फ़रमाते तो पहले अपने हाथ धोते। फिर दायें हाथ से पानी डालकर बायें हाथ से शर्मगाह धोते। फिर नमाज़ वाला वुज़ू फ़रमाते। फिर पानी लेकर उंगलियों को बालों की जड़ों में दाख़िल करके उनको धोते, जब आप समझते कि बाल तर (गीले) हो गये हैं तो अपने सर पर दोनों हाथों से तीन चुल्लू डालते। फिर सारे जिस्म पर पानी बहाते। फिर अपने दोनों पाँव धो लेते।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا اغْتَسَلَ مِنَ الْجَنَابَةِ يَبْدَأُ فَيَغْسِلُ يَدَيْهِ ثُمَّ يُفْرِغُ بِيَمِينِهِ عَلَى شِمَالِهِ فَيَغْسِلُ فَرْجَهُ ثُمَّ يَتَوَضَّأُ وُضُوءَهُ لِلصَّلاَةِ ثُمَّ يَأْخُذُ الْمَاءَ فَيُدْخِلُ أَصَابِعَهُ فِي أُصُولِ الشَّعْرِ حَتَّى إِذَا رَأَى أَنْ قَدِ اسْتَبْرَأَ حَفَنَ عَلَى رَأْسِهِ ثَلاَثَ حَفَنَاتٍ ثُمَّ أَفَاضَ عَلَى سَائِرِ جَسَدِهِ ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَيْهِ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) इस्तबरअ : तमाम बालों को तर कर दिया। **(2) हफ़न :** दोनों हाथों से पानी लिया। **(3) हफ़नातिन :** हफ़नह की जमा है, लप।

(719) इमाम साहब मज़्कूरा बाला (ऊपर वाली) हदीस़ अपने अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं, लेकिन उनकी रिवायत में पाँव धोने का ज़िक्र नहीं है।

وَحَدَّثَنَاهُ قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، ح وَحَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، كُلُّهُمْ عَنْ هِشَامٍ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ وَلَيْسَ فِي حَدِيثِهِمْ غَسْلُ الرِّجْلَيْنِ .

(720) हमें अबू बकर बिन अबी शैबा ने वकीअ़ के वास्ते से हिशाम की अपने बाप से हज़रत आइशा (रज़ि.) की रिवायत सुनाई कि

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ

صلى الله عليه وسلم اغْتَسَلَ مِنَ الْجَنَابَةِ فَبَدَأَ فَغَسَلَ كَفَّيْهِ ثَلاثًا ثُمَّ ذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ أَبِي مُعَاوِيَةَ وَلَمْ يَذْكُرْ غَسْلَ الرِّجْلَيْنِ .

नबी (ﷺ) ने ग़ुस्ले जनाबत फ़रमाया। पहले अपनी हथेलियों को तीन बार धोया। फिर अबू मुआविया की तरह हदीस़ बयान की, लेकिन पाँव धोने का तज़्किरा नहीं किया।

وَحَدَّثَنَاهُ عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو، حَدَّثَنَا زَائِدَةُ، عَنْ هِشَامٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا اغْتَسَلَ مِنَ الْجَنَابَةِ بَدَأَ فَغَسَلَ يَدَيْهِ قَبْلَ أَنْ يُدْخِلَ يَدَهُ فِي الإِنَاءِ ثُمَّ تَوَضَّأَ مِثْلَ وُضُوئِهِ لِلصَّلاَةِ .

(721) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब ग़ुस्ले जनाबत फ़रमाते, बर्तन में दाख़िल करने से पहले अपने दोनों हाथ धोते, फिर अपने नमाज़ के वुज़ू की तरह वुज़ू फ़रमाते।

وَحَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، حَدَّثَنِي عِيسَى بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ، عَنْ كُرَيْبٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ حَدَّثَتْنِي خَالَتِي، مَيْمُونَةُ قَالَتْ أَدْنَيْتُ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم غُسْلَهُ مِنَ الْجَنَابَةِ فَغَسَلَ كَفَّيْهِ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاثًا ثُمَّ أَدْخَلَ يَدَهُ فِي الإِنَاءِ ثُمَّ أَفْرَغَ بِهِ عَلَى فَرْجِهِ وَغَسَلَهُ بِشِمَالِهِ ثُمَّ ضَرَبَ بِشِمَالِهِ الأَرْضَ فَدَلَكَهَا دَلْكًا شَدِيدًا ثُمَّ تَوَضَّأَ وُضُوءَهُ لِلصَّلاَةِ ثُمَّ أَفْرَغَ عَلَى رَأْسِهِ ثَلاَثَ حَفَنَاتٍ مِلْءَ كَفِّهِ ثُمَّ غَسَلَ سَائِرَ جَسَدِهِ ثُمَّ تَنَحَّى عَنْ مَقَامِهِ ذَلِكَ فَغَسَلَ رِجْلَيْهِ ثُمَّ أَتَيْتُهُ بِالْمِنْدِيلِ فَرَدَّهُ .

(722) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि मुझे मेरी ख़ाला मैमूना (रज़ि.) ने बताया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के ग़ुस्ले जनाबत के लिये पानी आपके क़रीब रखा तो आपने अपनी दोनों हथेलियों को दो या तीन बार धोया। फिर अपना हाथ बर्तन में दाख़िल किया और उसके ज़रिये अपनी शर्मगाह पर पानी डाला और उसे अपने बायें हाथ से धोया। फिर अपने बायें हाथ को ज़मीन पर मारकर अच्छी तरह रगड़ा और अपना नमाज़ वाला वुज़ू फ़रमाया। फिर अपना चुल्लू भर कर सर पर तीन लप पानी डाला। फिर अपने सारे जिस्म को धोया। फिर अपनी उस जगह से हट गये और अपने दोनों पैर धोये। फिर मैं आपके पास तौलिया लाई और आपने उसे वापस कर दिया।

(सहीह बुख़ारी: 260, 249, 257, 259, 265, 266, 274, 276, 281, अबूदाऊद : 245, तिर्मिज़ी : 03, नसाई : 1/137, 138, 1/240, इब्ने माजह : 467)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَأَبُو كُرَيْبٍ وَالأَشَجُّ وَإِسْحَاقُ كُلُّهُمْ عَنْ وَكِيعٍ، ح وَحَدَّثَنَاهُ يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَلَيْسَ فِي حَدِيثِهِمَا إِفْرَاغُ ثَلاَثِ حَفَنَاتٍ عَلَى الرَّأْسِ وَفِي حَدِيثِ وَكِيعٍ وَصْفُ الْوُضُوءِ كُلِّهِ يَذْكُرُ الْمَضْمَضَةَ وَالاِسْتِنْشَاقَ فِيهِ وَلَيْسَ فِي حَدِيثِ أَبِي مُعَاوِيَةَ ذِكْرُ الْمِنْدِيلِ .

(723) (वकीअ़ और अबू मुआ़विया) ने आ़मश की मज़्कूरा बाला सनद से हदीस़ सुनाई। लेकिन उन दोनों की हदीस़ में सर पर तीन लप डालने का ज़िक्र नहीं है और वकीअ़ की हदीस़ में पूरे वुज़ू की कैफ़ियत का बयान है और उसमें कुल्ली और नाक में पानी डालने का ज़िक्र है और अबू मुआ़विया की हदीस़ में तोलिये का ज़िक्र नहीं है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ كُرَيْبٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ مَيْمُونَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم أُتِيَ بِمِنْدِيلٍ فَلَمْ يَمَسَّهُ وَجَعَلَ يَقُولُ بِالْمَاءِ هَكَذَا يَعْنِي يَنْفُضُهُ .

(724) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने हज़रत मैमूना (रज़ि.) की रिवायत सुनाई कि नबी (ﷺ) के पास तोलिया लाया गया, तो आपने नहीं लिया और इस तरह पानी को झाड़ने लगे, यक़ूल यफ़अ़लु के मानी में है यन्फ़ुज़ुहू का मानी है। आपने उसे झाड़ा।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى الْعَنَزِيُّ، حَدَّثَنِي أَبُو عَاصِمٍ، عَنْ حَنْظَلَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ، عَنِ الْقَاسِمِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا اغْتَسَلَ مِنَ الْجَنَابَةِ دَعَا بِشَىْءٍ نَحْوَ الْحِلاَبِ فَأَخَذَ بِكَفِّهِ بَدَأَ بِشِقِّ رَأْسِهِ الأَيْمَنِ ثُمَّ الأَيْسَرِ ثُمَّ أَخَذَ بِكَفَّيْهِ فَقَالَ بِهِمَا عَلَى رَأْسِهِ .

(725) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब ग़ुस्ले जनाबत फ़रमाते तो दूध दुहने जितना बर्तन मंगवाते, चुल्लू से पानी लेते और सर के दायें हिस्से से आग़ाज़ फ़रमाते। फिर बायें तरफ़ पानी डालते, फिर लप भरकर दोनों हाथों से सर पर पानी डालते।

(सहीह बुख़ारी : 258, अबू दाऊद : 240, नसाई : 1/206-207)

फ़ायदा : अहादीस़े मज़्कूरा बाला (पिछली हदीस़ों) की रोशनी में ग़ुस्ले जनाबत का तरीक़ा अगर पानी बर्तन में हो और उसमें हाथ डालने की ज़रूरत हो तो फिर बर्तन में हाथ डालने से पहले उन्हें तीन बार धोया जायेगा। फिर बदन के जिस हिस्से पर मनी लगी हो उसे धोया जायेगा। पानी दायें हाथ से

डालेंगे और शर्मगाह को धोने के लिये बायाँ हाथ इस्तेमाल करेंगे। फिर बायें हाथ को मिट्टी पर अच्छी तरह रगड़कर साफ़ करेंगे या साबुन से धो लेंगे। फिर नमाज़ वाला मुकम्मल वुज़ू करेंगे। पाँव वुज़ू के साथ धो लेंगे। फिर आख़िर में ज़रूरत के तहत दोबारा धो लेंगे या उनका धोना मुअख़्ख़र (ताख़ीर) कर लेंगे। फिर तीन लप पानी सर पर डालेंगे। एक दायें जानिब, दूसरी बायें जानिब और तीसरा सर पर और बालों को उंगलियों के ज़रिये अच्छी तरह तर करेंगे। (और उसके साथ दाढ़ी के बाल भी अच्छी तरह तर करने चाहिये) और फिर पूरे जिस्म को अच्छी तरह धोयेंगे। गुस्ल से फ़रागत के बाद जिस्म से पानी को झाड़ा जायेगा और इससे मालूम होता है तोलिये के इस्तेमाल में भी कोई हर्ज नहीं है। लेकिन इस्तेमाल ज़रूरी नहीं है।

बाब 10 : गुस्ले जनाबत के लिये पानी की मुस्तहब मिक़्दार (मात्रा) मर्द व औरत का एक बर्तन से इकट्ठे गुस्ल करना और मियाँ-बीवी का एक-दूसरे के बचे हुए पानी से नहाना

باب الْقَدْرِ الْمُسْتَحَبِّ مِنَ الْمَاءِ فِي غُسْلِ الْجَنَابَةِ وَغُسْلِ الرَّجُلِ وَالْمَرْأَةِ فِي إِنَاءٍ وَاحِدٍ فِي حَالَةٍ وَاحِدَةٍ وَغُسْلِ أَحَدِهِمَا بِفَضْلِ الآخَرِ

(726) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक फ़रक़ के बर्तन से गुस्ले जनाबत फ़रमाया करते थे।
(अबू दाऊद : 238)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَغْتَسِلُ مِنْ إِنَاءٍ هُوَ الْفَرَقُ مِنَ الْجَنَابَةِ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : फ़रक़ : तीन साअ।

(727) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक प्याले से जो एक फ़रक़ की मिक़्दार का था गुस्ल फ़रमाते, मैं और आप एक बर्तन से गुस्ल करते थे। सुफ़ियान की हदीस़ में अल इनाउल वाहिद की बजाय इनाउन वाहिद है। क़ुतैबा ने कहा,

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَعَمْرٌو النَّاقِدُ وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، كِلاَهُمَا

عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَغْتَسِلُ فِي الْقَدَحِ وَهُوَ الْفَرَقُ وَكُنْتُ أَغْتَسِلُ أَنَا وَهُوَ فِي الإِنَاءِ الْوَاحِدِ . وَفِي حَدِيثِ سُفْيَانَ مِنْ إِنَاءٍ وَاحِدٍ . قَالَ قُتَيْبَةُ قَالَ سُفْيَانُ وَالْفَرَقُ ثَلاَثَةُ آصُعٍ .

सुफ़ियान ने बताया, फ़रक़ तीन साअ का होता है। साअ में पानी की मिक़्दार ज़्यादा होती है और ग़ल्ले की कम। इसलिये कुछ ने पानी के तीन साअ की मिक़्दार साढ़े तेरह लीटर निकाली है। ग़ल्ले की मिक़्दार एक साअ 5 रत्ल और सुलुस रत्ल और पानी की मिक़्दार 8 रत्ल है।

(इब्ने माजह : 376)

وَحَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ حَفْصٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ دَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ أَنَا وَأَخُوهَا، مِنَ الرَّضَاعَةِ فَسَأَلَهَا عَنْ غُسْلِ النَّبِيِّ، صلى الله عليه وسلم مِنَ الْجَنَابَةِ فَدَعَتْ بِإِنَاءٍ قَدْرِ الصَّاعِ فَاغْتَسَلَتْ وَبَيْنَنَا وَبَيْنَهَا سِتْرٌ وَأَفْرَغَتْ عَلَى رَأْسِهَا ثَلاَثًا . قَالَ وَكَانَ أَزْوَاجُ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم يَأْخُذْنَ مِنْ رُءُوسِهِنَّ حَتَّى تَكُونَ كَالْوَفْرَةِ .

(728) हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान से रिवायत है कि मैं और हज़रत आइशा (रज़ि.) का रज़ाई भाई उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उसने उनसे नबी (ﷺ) के गुस्ले जनाबत के बारे में सवाल किया, तो उन्होंने एक साअ के बक़द्र बर्तन मँगवाया और उससे गुस्ल किया। हमारे और उनके दरम्यान पर्दा हाइल था और अपने सर पर तीन बार पानी डाला। अबू सलमा ने बताया कि नबी (ﷺ) की बीवियाँ अपने सर के बालों को वफ़रह की तरह बना लेती थीं।

(सहीह बुख़ारी : 251, नसाई : 1/208)

मुफ़रदातुल हदीस : (1) यअख़ुज़्न रुऊसहुन्न : अपने सर के बाल वफ़रह की तरह बना लेतीं। औरतें जब गुस्ल करती हैं अगर उनके बाल खुले हों तो वो उनको इकट्ठा करके, सर या गुद्दी पर रख लेती हैं। ताकि जिस्म पर पानी बहाना आसान हो जाये। अगर बाल खुले हों और पुश्त पर पड़ रहे हों तो उनके नीचे से जिस्म को धोना दिक़्क़त और कुल्फ़त का बाइस बनता है, इसलिये अख़ज़ का मानी पकड़ना है, काटना नहीं है। **(2) वफ़रह :** आम अहले लुग़त के नज़दीक कानों तक के बाल और इमाम अस्मई के नज़दीक कन्धों पर पड़ने वाले बाल को कहते हैं।

फ़ायदा : हज़रत आइशा (रज़ि.) ने अपने रज़ाई भाई अब्दुल्लाह बिन यज़ीद और रज़ाई भान्जे अबू सलमा को गुस्ल करके दिखाया ताकि उन्हें गुस्ल के लिये पानी की मिक़्दार और गुस्ल की कैफ़ियत

दोनों का इल्म हो सके। नीज़ इससे ये भी मालूम हुआ कि महरम के लिये औरत के बदन का ऊपर वाला हिस्सा देखना जाइज़ है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने सर के धोने का तरीक़ा दिखलाया था और बाक़ी बदन मस्तूर था। अबू सलमा को हज़रत आइशा (रज़ि.) की बहन उम्मे कुल्सूम ने दूध पिलाया। (फ़तहुल मुल्हिम, जिल्द 1, पेज नम्बर : 472)

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي مَخْرَمَةُ بْنُ بُكَيْرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ قَالَتْ عَائِشَةُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا اغْتَسَلَ بَدَأَ بِيَمِينِهِ فَصَبَّ عَلَيْهَا مِنَ الْمَاءِ فَغَسَلَهَا ثُمَّ صَبَّ الْمَاءَ عَلَى الأَذَى الَّذِي بِهِ بِيَمِينِهِ وَغَسَلَ عَنْهُ بِشِمَالِهِ حَتَّى إِذَا فَرَغَ مِنْ ذَلِكَ صَبَّ عَلَى رَأْسِهِ . قَالَتْ عَائِشَةُ كُنْتُ أَغْتَسِلُ أَنَا وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنْ إِنَاءٍ وَاحِدٍ وَنَحْنُ جُنُبَانِ .

(729) अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान से रिवायत है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बताया, जब रसूलुल्लाह (ﷺ) गुस्ल फ़रमाते तो दायें हाथ से आग़ाज़ फ़रमाते। उस पर पानी डालकर उसे धोते, फिर जहाँ मनी लगी होती उसे दायें हाथ से पानी डालकर, बायें हाथ से धोते। जब इससे फ़ारिग़ हो जाते तो सर पर पानी डालते। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बताया कि मैं और रसूलुल्लाह (ﷺ) एक बर्तन से नहाते, जबकि हम दोनों जुम्बी होते।

फ़ायदा : मियाँ-बीवी का एक बर्तन से इकट्ठे नहाना बिल्इत्तिफ़ाक़ जाइज़ है, गुस्ल का मुकम्मल तरीक़ा ऊपर गुज़र चुका है।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ يَزِيدَ، عَنْ عِرَاكٍ، عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ، - وَكَانَتْ تَحْتَ الْمُنْذِرِ بْنِ الزُّبَيْرِ - أَنَّ عَائِشَةَ، أَخْبَرَتْهَا أَنَّهَا، كَانَتْ تَغْتَسِلُ هِيَ وَالنَّبِيُّ ﷺ فِي إِنَاءٍ وَاحِدٍ يَسَعُ ثَلاَثَةَ أَمْدَادٍ أَوْ قَرِيبًا مِنْ ذَلِكَ .

(730) हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बताया कि वो (आइशा) और नबी (ﷺ) एक बर्तन से गुस्ल करते, जिसमें तीन मुद्द या उसके क़रीब पानी आता था।

फ़ायदा : एक मुद्द में पानी दो रत्ल आता है, जो एक साअ का चौथाई है। इस तरह पानी एक लीटर से कुछ ज़्यादा होगा और तीन मुद्द में साढ़े तीन लीटर से कम पानी होगा। इससे मालूम हुआ कि आपने कुछ बार तीन साअ़ की बजाय तीन मुद्द पानी पर गुज़ारा फ़रमाया है या उस सूरत में इकट्ठे गुस्ल नहीं फ़रमाया होगा, बल्कि बर्तन के छोटा होने की वजह से यके बाद दीगरे गुस्ल किया होगा और बक़ौल कुछ मुद्द यहाँ साअ़ के मानी में है।

(731) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि मैं और रसूलुल्लाह (ﷺ) गुस्ले जनाबत एक बर्तन से करते और उससे हमारे हाथ बारी-बारी पानी लेते।
(सहीह बुख़ारी : 261)

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، قَالَ حَدَّثَنَا أَفْلَحُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كُنْتُ أَغْتَسِلُ أَنَا وَرَسُولُ اللَّهِ، صلى الله عليه وسلم مِنْ إِنَاءٍ وَاحِدٍ تَخْتَلِفُ أَيْدِينَا فِيهِ مِنَ الْجَنَابَةِ .

(732) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि मैं और रसूलुल्लाह (ﷺ) एक बर्तन से गुस्ल करते जो मेरे और आपके दरम्यान होता, आप मुझसे पहले पानी लेते यहाँ तक कि मैं अर्ज़ करती, मेरे लिये छोड़िये, मेरे लिये छोड़िये और हम दोनों जुन्बी होते थे।
(नसाई : 1/128, 1/202)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ، عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ، عَنْ مُعَاذَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كُنْتُ أَغْتَسِلُ أَنَا وَرَسُولُ اللَّهِ، ﷺ مِنْ إِنَاءٍ - بَيْنِي وَبَيْنَهُ - وَاحِدٍ فَيُبَادِرُنِي حَتَّى أَقُولَ دَعْ لِي دَعْ لِي . قَالَتْ وَهُمَا جُنُبَانِ .

(733) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) हज़रत मैमूना (रज़ि.) से नक़ल करते हैं कि वो और नबी (ﷺ) एक बर्तन से नहाते थे।
(तिर्मिज़ी : 62, नसाई : 1/129, इब्ने माजह : 377)

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، قَالَ قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي الشَّعْثَاءِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ أَخْبَرَتْنِي مَيْمُونَةُ، أَنَّهَا كَانَتْ تَغْتَسِلُ هِيَ وَالنَّبِيُّ ﷺ فِي إِنَاءٍ وَاحِدٍ .

(734) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मैमूना (रज़ि.) के बचे हुए पानी से नहाते थे।
(सहीह बुख़ारी : 253)

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، قَالَ أَكْبَرُ عِلْمِي وَالَّذِي يَخْطُرُ عَلَى بَالِي أَنَّ أَبَا الشَّعْثَاءِ أَخْبَرَنِي أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَغْتَسِلُ بِفَضْلِ مَيْمُونَةَ .

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है कि मर्द, औरत के गुस्ल से बचे हुए पानी से गुस्ल कर सकता है। इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई और जुम्हूर उलमा (रह.) का यही नज़रिया है।

इमाम अहमद और दाऊद ज़ाहिरी के नज़दीक औरत के बचे हुए पानी से जबकि उसने अकेले गुस्ल किया हो, मर्द के लिये गुस्ल करना दुरुस्त नहीं है। इमाम अहमद का एक क़ौल, दूसरे अइम्मा के मुवाफ़िक़ है। सहीह अहादीस़ का तक़ाज़ा यही है कि गुस्ल करना दुरुस्त है। मगर ये कि औरत गुस्ल करते वक़्त हज़म व एहतियात से काम न लेती हो और इस्तेमाल किया हुआ पानी बर्तन में गिराती हो तो ऐसी सूरत में इंसान तबई तौर पर ऐसे पानी के इस्तेमाल से कराहत महसूस करता है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ زَيْنَبَ بِنْتَ أُمِّ سَلَمَةَ، حَدَّثَتْهُ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ حَدَّثَتْهَا قَالَتْ، كَانَتْ هِيَ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَغْتَسِلاَنِ فِي الإِنَاءِ الْوَاحِدِ مِنَ الْجَنَابَةِ .

(735) हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) बयान करती हैं कि वो और रसूलुल्लाह (ﷺ) एक बर्तन से गुस्ले जनाबत करते थे।

(सहीह बुख़ारी : 322, 1929, इब्ने माजह : 380)

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، - يَعْنِي ابْنَ مَهْدِيٍّ - قَالاَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جَبْرٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسًا، يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَغْتَسِلُ بِخَمْسِ مَكَاكِيكَ وَيَتَوَضَّأُ بِمَكُّوكٍ . وَقَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى بِخَمْسِ مَكَاكِيَّ . وَقَالَ ابْنُ مُعَاذٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ وَلَمْ يَذْكُرِ ابْنَ جَبْرٍ .

(736) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) 5 मकूक से गुस्ल फ़रमाते और एक मकूक से वुज़ू फ़रमाते। इब्ने मुसन्ना ने मकाकीक की जगह मकाकी लफ़्ज़ बोला, मकूक का वज़न एक मुद्द से ज़्यादा है।

(सहीह बुख़ारी : 201, अबू दाऊद : 95, तिर्मिज़ी : 609, नसाई : 1/127, 344)

फ़ायदा : अलग-अलग रिवायतों में नहाने के पानी और वुज़ू के पानी के लिये अलग-अलग वक़्तों में, अलग-अलग बर्तनों का ज़िक्र आया है। जिससे मालूम होता है ज़रूरत और अहवाल व ज़ुरूफ़ के मुताबिक़ पानी में कमी-बेशी हो सकती है। बिला ज़रूरत पानी का ज़्यादा इस्तेमाल दुरुस्त नहीं है। इमाम नववी ने मकूक से मुराद मुद्द लिया है। क्योंकि अगली रिवायत में ये आ रहा है कि आप मुद्द से वुज़ू करते और एक साअ से पाँच मुद्द तक गुस्ल फ़रमाते।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ مِسْعَرٍ، عَنِ ابْنِ جَبْرٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَتَوَضَّأُ بِالْمُدِّ وَيَغْتَسِلُ بِالصَّاعِ إِلَى خَمْسَةِ أَمْدَادٍ .

(737) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) एक मुद्द से वुज़ू करते और एक साअ से पाँच मुद्द तक से गुस्ल करते।

وَحَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، وَعَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، كِلاَهُمَا عَنْ بِشْرِ بْنِ الْمُفَضَّلِ، - قَالَ أَبُو كَامِلٍ حَدَّثَنَا بِشْرٌ، - حَدَّثَنَا أَبُو رَيْحَانَةَ، عَنْ سَفِينَةَ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُغَسِّلُهُ الصَّاعُ مِنَ الْمَاءِ مِنَ الْجَنَابَةِ وَيُوَضِّؤُهُ الْمُدُّ .

(738) हज़रत सफ़ीना (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक साअ पानी से गुस्ल फ़रमा लेते और एक मुद्द से वुज़ू कर लेते।
(तिर्मिज़ी : 56, इब्ने माजह : 267)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ، ح وَحَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ أَبِي رَيْحَانَةَ، عَنْ سَفِينَةَ، - قَالَ أَبُو بَكْرٍ - صَاحِبُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَغْتَسِلُ بِالصَّاعِ وَيَتَطَهَّرُ بِالْمُدِّ . وَفِي حَدِيثِ ابْنِ حُجْرٍ أَوْ قَالَ وَيُطَهِّرُهُ الْمُدُّ . وَقَالَ وَقَدْ كَانَ كَبِرَ وَمَا كُنْتُ أَثِقُ بِحَدِيثِهِ .

(739) हज़रत सफ़ीना (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक साअ पानी से गुस्ल फ़रमाते और एक मुद्द पानी से वुज़ू फ़रमा लेते। इब्ने हुज्र (रह.) ने कहा, यततहहरु बिल्मुद्दि कहा या युतह्हिरुहूल् मुद्दु कहा। अबू रेहाना ने कहा, सफ़ीना (रज़ि.) उम्र रसीदा हो गये थे इसलिये मुझे उनकी हदीस़ पर ऐतमाद व वसूक़ नहीं है।

باب اسْتِحْبَابِ إِفَاضَةِ الْمَاءِ عَلَى الرَّأْسِ وَغَيْرِهِ ثَلاَثًا

बाब 11 : सर और जिस्म के दूसरे हिस्से पर तीन बार पानी बहाना पसन्दीदा अमल है

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ صُرَدٍ، عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، قَالَ

(740) हज़रत जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) से रिवायत है कि सहाबा किराम (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने गुस्ल के बारे में झगड़ा किया। कुछ ने कहा, मैं तो बस इतनी-इतनी बार सर धो लेता हूँ। तो रसूलुल्लाह

تَمَارَوْا فِي الْغُسْلِ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ أَمَّا أَنَا فَإِنِّي أَغْسِلُ رَأْسِي كَذَا وَكَذَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " أَمَّا أَنَا فَإِنِّي أُفِيضُ عَلَى رَأْسِي ثَلاَثَ أَكُفٍّ " .

(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं तो सर पर तीन चुल्लू डालता हूँ।'
(बुख़ारी : 254, अबू दाऊद : 239, नसाई : 1/135, 1/207, 1/279, इब्ने माजह : 570)

मुफ़रदातुल हदीस़ : तमारौ : आपस में इख़्तिलाफ़ और झगड़ा किया। अकुफ़्फ़, कफ़ की जमा है, हथेली को कहते हैं और यहाँ मुराद चुल्लू है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ صُرَدٍ، عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ ذُكِرَ عِنْدَهُ الْغُسْلُ مِنَ الْجَنَابَةِ فَقَالَ " أَمَّا أَنَا فَأُفْرِغُ عَلَى رَأْسِي ثَلاَثًا " .

(741) हज़रत जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं कि आपके सामने ग़ुस्ले जनाबत का ज़िक्र किया गया तो आपने फ़रमाया, 'मैं तो सर पर तीन बार पानी डालता हूँ।'

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَإِسْمَاعِيلُ بْنُ سَالِمٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ وَفْدَ، ثَقِيفٍ سَأَلُوا النَّبِيَّ ﷺ فَقَالُوا إِنَّ أَرْضَنَا أَرْضٌ بَارِدَةٌ فَكَيْفَ بِالْغُسْلِ فَقَالَ " أَمَّا أَنَا فَأُفْرِغُ عَلَى رَأْسِي ثَلاَثًا " . قَالَ ابْنُ سَالِمٍ فِي رِوَايَتِهِ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا أَبُو بِشْرٍ وَقَالَ إِنَّ وَفْدَ ثَقِيفٍ قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ .

(742) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि स़क़ीफ़ के आने वाले लोगों ने नबी (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि हमारा इलाक़ा बहुत ठण्डी जगह है तो हम ग़ुस्ल कैसे करें? तो आपने फ़रमाया, 'मैं तो सर पर तीन बार पानी डालता हूँ।' इब्ने सालिम की हुशैम की रिवायत में है, स़क़ीफ़ के वफ़्द ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، - يَعْنِي الثَّقَفِيَّ - حَدَّثَنَا جَعْفَرٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا اغْتَسَلَ مِنْ

(743) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब ग़ुस्ले जनाबत करते सर पर पानी के तीन चुल्लू डालते तो हसन बिन मुहम्मद ने जाबिर से कहा, मेरे बाल तो बहुत ज़्यादा हैं। जाबिर

جَنَابَةٍ صَبَّ عَلَى رَأْسِهِ ثَلاَثَ حَفَنَاتٍ مِنْ مَاءٍ . فَقَالَ لَهُ الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ إِنَّ شَعْرِي كَثِيرٌ . قَالَ جَابِرٌ فَقُلْتُ لَهُ يَا ابْنَ أَخِي كَانَ شَعْرُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَكْثَرَ مِنْ شَعْرِكَ وَأَطْيَبَ

ने उससे कहा, ऐ भतीजे! रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाल तुझसे ज़्यादा और पाकीज़ा थे (अगर आपके लिये तीन चुल्लू सर के लिये काफ़ी थे तो तेरे लिये काफ़ी क्यों नहीं?)
(इब्ने माजह : 577)

फ़ायदा : अहादीसे मज़्कूरा बाला (पिछली हदीसों) में सिर्फ़ सर पर तीन चुल्लू डालने का ज़िक्र है। कुछ अइम्मा ने इससे तीन बार धोना मुराद लिया है और सर पर क़ियास करते हुए नीज़ वुज़ू में आज़ा के तीन बार धोने का मल्हूज़ रखते हुए गुस्ल में भी तीन बार पानी बहाना मुस्तहब क़रार दिया है और इमाम नववी ने इस नुक्ते नज़र की बिना पर ये बाब क़ायम किया है।

باب حُكْمِ ضَفَائِرِ الْمُغْتَسِلَةِ

बाब 12 : गुस्ल में सर के गून्दे हुए बालों (चोटी, ज़ुल्फ़) का हुक्म

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، كُلُّهُمْ عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَيُّوبَ بْنِ مُوسَى، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَافِعٍ، مَوْلَى أُمِّ سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي امْرَأَةٌ أَشُدُّ ضَفْرَ رَأْسِي فَأَنْقُضُهُ لِغُسْلِ الْجَنَابَةِ قَالَ " لاَ إِنَّمَا يَكْفِيكِ أَنْ تَحْثِي عَلَى رَأْسِكِ ثَلاَثَ حَثَيَاتٍ ثُمَّ تُفِيضِينَ عَلَيْكِ الْمَاءَ فَتَطْهُرِينَ " .

(744) हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं औरत होने के नाते सर के बाल गूंदती हूँ तो क्या गुस्ले जनाबत के लिये उनको खोलूँ? आपने फ़रमाया, 'नहीं! तेरे लिये बस इतना काफ़ी है कि बस सर पर तीन चुल्लू भर कर पानी डालो, फिर अपने जिस्म पर पानी बहा लो तो तुम पाक हो जाओगी।'
(अबू दाऊद : 251, तिर्मिज़ी : 105, नसाई : 1/131, इब्ने माजह : 603)

फ़ायदा : सर के बालों की जड़ों तक अगर पानी पहुँच जाये तो फिर गून्दे हुए बालों को खोलना ज़रूरी नहीं है। जुम्हूर फ़ुक़्हा का यही मौक़िफ़ है। इमाम नख़ई (रह.) के नज़दीक हर हालत में बाल खोलने होंगे। हसन बसरी और ताऊस के नज़दीक गुस्ले हैज़ के लिये बाल खोलना ज़रूरी हैं, गुस्ले जनाबत के लिये ज़रूरी नहीं।

(745) इमाम साहब एक दूसरी सनद से रिवायत करते हैं और अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ की हदीस़ में है, क्या मैं हैज़ व जनाबत के लिये बालों को खोलूँ? तो आपने फ़रमाया, 'नहीं!' आगे मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत है।

وَحَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالاَ أَخْبَرَنَا الثَّوْرِيُّ، عَنْ أَيُّوبَ بْنِ مُوسَى، فِي هَذَا الإِسْنَادِ وَفِي حَدِيثِ عَبْدِ الرَّزَّاقِ فَأَنْقُضُهُ لِلْحَيْضَةِ وَالْجَنَابَةِ فَقَالَ "لاَ" ثُمَّ ذَكَرَ بِمَعْنَى حَدِيثِ ابْنِ عُيَيْنَةَ .

(746) इमाम साहब एक दूसरी सनद से रिवायत करते हैं कि उम्मे सलमा (रज़ि.) ने पूछा, क्या मैं उन्हें खोलकर ग़ुस्ले जनाबत करूँ? हैज़ का तज़्किरा नहीं किया।

وَحَدَّثَنِيهِ أَحْمَدُ الدَّارِمِيُّ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ عَدِيٍّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، - يَعْنِي ابْنَ زُرَيْعٍ - عَنْ رَوْحِ بْنِ الْقَاسِمِ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ بْنُ مُوسَى، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ أَفَأَحُلُّهُ فَأَغْسِلُهُ مِنَ الْجَنَابَةِ . وَلَمْ يَذْكُرِ الْحَيْضَةَ .

(747) हज़रत आइशा (रज़ि.) को ये बात पहुँची कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) औरतों को ये हुक्म देते हैं कि वो ग़ुस्ल करते वक़्त सर के बाल खोला करें, तो आइशा (रज़ि.) ने कहा, इब्ने उ़मर के इस हुक्म पर तअ़ज्जुब है। वो औरतों को हुक्म देते हैं कि वो जब ग़ुस्ल करें तो सर के बाल खोलें। उन्हें हुक्म क्यों नहीं देते कि वो अपने सर के बाल मुण्डवा लें। मैं और रसूलुल्लाह (ﷺ) एक ही बर्तन से ग़ुस्ल करते थे और मैं उससे ज़्यादा कुछ नहीं करती थी कि अपने सर पर तीन बार पानी डाल लेती।

(नसाई : 1/203, इब्ने माजह : 604)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُلَيَّةَ، قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ، قَالَ بَلَغَ عَائِشَةَ أَنَّ عَبْدَ، اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو يَأْمُرُ النِّسَاءَ إِذَا اغْتَسَلْنَ أَنْ يَنْقُضْنَ رُءُوسَهُنَّ فَقَالَتْ يَا عَجَبًا لاِبْنِ عَمْرٍو هَذَا يَأْمُرُ النِّسَاءَ إِذَا اغْتَسَلْنَ أَنْ يَنْقُضْنَ رُءُوسَهُنَّ أَفَلاَ يَأْمُرُهُنَّ أَنْ يَحْلِقْنَ رُءُوسَهُنَّ لَقَدْ كُنْتُ أَغْتَسِلُ أَنَا وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنْ إِنَاءٍ وَاحِدٍ وَلاَ أَزِيدُ عَلَى أَنْ أُفْرِغَ عَلَى رَأْسِي ثَلاَثَ إِفْرَاغَاتٍ .

फ़ायदा : हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) का ख़्याल था कि बाल खोले बग़ैर, बाल अच्छी तरह नहीं धुलते। जबकि बालों का तर होना ज़रूरी है और उन्हें उम्मे सलमा और हज़रत आइशा (रज़ि.) की हदीस़ का इ़ल्म नहीं था या वो ये हुक्म इस्तिहबाब व एहतियात के तौर पर देते होंगे।

बाब 13 : गुस्ले हैज़ करने वाली औरत के लिये मुस्तहब है कि वो ख़ून की जगह पर ख़ुश्बू में मुअत्तर कपड़ा या रूई इस्तेमाल करे

باب اسْتِحْبَابِ اسْتِعْمَالِ الْمُغْتَسِلَةِ مِنَ الْحَيْضِ فِرْصَةً مِنْ مِسْكٍ فِي مَوْضِعِ الدَّمِ

حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُحَمَّدٍ النَّاقِدُ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، - قَالَ عَمْرٌو حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، - عَنْ مَنْصُورِ ابْنِ صَفِيَّةَ، عَنْ أُمِّهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ سَأَلَتِ امْرَأَةٌ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَيْفَ تَغْتَسِلُ مِنْ حَيْضَتِهَا قَالَ فَذَكَرَتْ أَنَّهُ عَلَّمَهَا كَيْفَ تَغْتَسِلُ ثُمَّ تَأْخُذُ فِرْصَةً مِنْ مِسْكٍ فَتَطَهَّرُ بِهَا . قَالَتْ كَيْفَ أَتَطَهَّرُ بِهَا قَالَ " تَطَهَّرِي بِهَا . سُبْحَانَ اللَّهِ " . وَاسْتَتَرَ - وَأَشَارَ لَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ بِيَدِهِ عَلَى وَجْهِهِ - قَالَ قَالَتْ عَائِشَةُ وَاجْتَذَبْتُهَا إِلَىَّ وَعَرَفْتُ مَا أَرَادَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فَقُلْتُ تَتَبَّعِي بِهَا أَثَرَ الدَّمِ . وَقَالَ ابْنُ أَبِي عُمَرَ فِي رِوَايَتِهِ فَقُلْتُ تَتَبَّعِي بِهَا آثَارَ الدَّمِ .

(748) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं एक औरत ने नबी (ﷺ) से पूछा, वो गुस्ले हैज़ कैसे करे? आइशा (रज़ि.) ने बताया कि आपने उसे गुस्ल का तरीक़ा सिखाया। फिर फ़रमाया, 'गुस्ल के बाद वो एक मुश्क से मुअत्तर कपड़ा ले कर उससे पाकीज़गी हासिल करे।' औरत ने पूछा, मैं उससे कैसे पाकीज़गी हासिल करूँ? आपने फ़रमाया, 'सुब्हानअल्लाह! उससे तहारत हासिल कर' और आपने हया से चेहरा छिपा लिया। (सुफ़ियान ने हमें हाथ के इशारे से मुँह छिपाकर दिखाया) आइशा (रज़ि.) फ़रमाती हैं, मैंने उस औरत को अपनी तरफ़ खींच लिया और मैं नबी (ﷺ) की मुराद को समझ गई थी तो मैंने कहा, उस मुअत्तर कपड़े को ख़ून के निशान पर लगाकर साफ़ कर। इब्ने अबी अम्र की रिवायत में असरद्दम की जगह आसारद्दम है।

(नसाई : 314, 315, 7357, नसाई : 251, 1/135, 136, 137, 425)

फ़ायदा : आपने सुब्हानअल्लाह इसलिये फ़रमाया कि वो एक वाज़ेह और खुली बात को भी समझ नहीं रही थी और आप शर्म व हया की बिना पर शर्मगाह का नाम लेना नहीं चाहते थे।

وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ الدَّارِمِيُّ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ، عَنْ أُمِّهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ امْرَأَةً، سَأَلَتِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَيْفَ أَغْتَسِلُ عِنْدَ الطُّهْرِ فَقَالَ " خُذِي فِرْصَةً مُمَسَّكَةً فَتَوَضَّئِي بِهَا " . ثُمَّ ذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ سُفْيَانَ .

(749) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि एक औरत ने नबी (ﷺ) से पूछा कि मैं पाकीज़गी के हुसूल के वक़्त गुस्ल कैसे करूँ? तो आपने फ़रमाया, '(ख़ुश्बू व कस्तूरी) से मुअत्तर टुकड़ा लेकर उससे तहारत हासिल कर।' फिर सुफ़ियान की तरह रिवायत बयान की।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْمُهَاجِرِ، قَالَ سَمِعْتُ صَفِيَّةَ، تُحَدِّثُ عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ أَسْمَاءَ، سَأَلَتِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم عَنْ غُسْلِ الْمَحِيضِ فَقَالَ " تَأْخُذُ إِحْدَاكُنَّ مَاءَهَا وَسِدْرَتَهَا فَتَطَهَّرُ فَتُحْسِنُ الطُّهُورَ ثُمَّ تَصُبُّ عَلَى رَأْسِهَا فَتَدْلُكُهُ دَلْكًا شَدِيدًا حَتَّى تَبْلُغَ شُئُونَ رَأْسِهَا ثُمَّ تَصُبُّ عَلَيْهَا الْمَاءَ . ثُمَّ تَأْخُذُ فِرْصَةً مُمَسَّكَةً فَتَطَهَّرُ بِهَا " . فَقَالَتْ أَسْمَاءُ وَكَيْفَ تَطَهَّرُ بِهَا فَقَالَ " سُبْحَانَ اللَّهِ تَطَهَّرِينَ بِهَا " . فَقَالَتْ عَائِشَةُ كَأَنَّهَا تُخْفِي ذَلِكَ تَتَبَّعِينَ أَثَرَ الدَّمِ . وَسَأَلَتْهُ عَنْ غُسْلِ الْجَنَابَةِ فَقَالَ " تَأْخُذُ مَاءً فَتَطَهَّرُ فَتُحْسِنُ الطُّهُورَ - أَوْ تُبْلِغُ الطُّهُورَ - ثُمَّ تَصُبُّ عَلَى رَأْسِهَا فَتَدْلُكُهُ حَتَّى تَبْلُغَ شُئُونَ رَأْسِهَا ثُمَّ تُفِيضُ عَلَيْهَا الْمَاءَ " . فَقَالَتْ عَائِشَةُ نِعْمَ

(750) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि असमा (रज़ि.) ने नबी (ﷺ) से गुस्ले हैज़ के बारे में सवाल किया तो आपने फ़रमाया, 'तुम में से हर एक अपना पानी और बेरी के पत्ते लेकर अच्छी तरह तहारत करे (ख़ून को अच्छी तरह साफ़ करे) फिर सर पर पानी डालकर उसको अच्छी तरह मले। यहाँ तक कि पानी बालों की जड़ों तक पहुँच जाये। फिर अपने ऊपर पानी डाले। फिर कस्तूरी से मुअत्तर कपड़े का टुकड़ा लेकर, उससे सफ़ाई करे (ख़ून की जगह पर ख़ुश्बू लगाये) तो असमा (रज़ि.) ने पूछा, उससे पाकीज़गी कैसे हासिल करे? आपने फ़रमाया, 'सुब्हानअल्लाह! उससे पाकीज़गी हासिल कर।' हज़रत आइशा (रज़ि.) ने (आहिस्तगी) से कहा, ख़ून के निशान पर लगाकर और उसने आपसे गुस्ले जनाबत के बारे में पूछा, तो आपने फ़रमाया, 'पानी लेकर उससे अच्छी तरह मुकम्मल तौर पर वुज़ू करे, फिर सर पर पानी डालकर उसे मले। यहाँ तक कि सर के बालों की जड़ों तक पहुँच जाये।

النِّسَاءُ نِسَاءُ الأَنْصَارِ لَمْ يَكُنْ يَمْنَعُهُنَّ الْحَيَاءُ أَنْ يَتَفَقَّهْنَ فِي الدِّينِ .

फिर अपने जिस्म पर पानी डाले तो आइशा (रज़ि.) ने कहा, अन्सार की औरतें किस क़द्र अच्छी हैं कि हया व शर्म उन्हें दीन की सूझ-बूझ हासिल करने से नहीं रोकती।

(अबू दाऊद : 314,315,316, इब्ने माजह : 642)

وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ وَقَالَ قَالَ " سُبْحَانَ اللَّهِ تَطَهَّرِي بِهَا " . وَاسْتَتَرَ .

(751) इमाम साहब एक दूसरी सनद से हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत बयान करते हैं आपने फ़रमाया, 'सुब्हानअल्लाह! उससे पाकीज़गी हासिल कर' और आपने चेहरा छिपा लिया।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ كِلاَهُمَا عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ مُهَاجِرٍ، عَنْ صَفِيَّةَ بِنْتِ شَيْبَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ دَخَلَتْ أَسْمَاءُ بِنْتُ شَكَلٍ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ تَغْتَسِلُ إِحْدَانَا إِذَا طَهُرَتْ مِنَ الْحَيْضِ وَسَاقَ الْحَدِيثَ وَلَمْ يَذْكُرْ فِيهِ غُسْلَ الْجَنَابَةِ .

(752) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि असमा बिन्ते शकल रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! जब हममें से कोई औरत गुस्ले हैज़ करे (हैज़ से पाकीज़गी हासिल करने के लिये) तो कैसे नहाये? और ऊपर वाली हदीस़ बयान की और उसमें गुस्ले जनाबत का तज़्किरा नहीं किया।

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) फ़िरसह : रूई का गाला या कपड़े का टुकड़ा। **(2) मुस्क :** कस्तूरी। **(3) आस़ारहुम :** ख़ून के अस़रात मतलब शर्मगाह है कि कस्तूरी से मुअत्तर रूई का गाला या कपड़ा से मख़्सूस जगह को मुअत्तर कर ले। **(4) मुमस्सकह :** कस्तूरी से मुअत्तर। **(5) शुऊन रअ्सिहा :** सर के बालों की जड़ें।

फ़ायदा : जब औरत हैज़ से फ़राग़त के बाद गुस्ल करे तो पूरी तरह निज़ाफ़त और पाकीज़गी के लिये ख़ून की बू को ख़त्म करने के लिये कस्तूरी इस्तेमाल करे या जो ख़ुश्बू भी मुयस्सर हो उसको इस्तेमाल कर ले और जुम्हूर के नज़दीक निफ़ास का हुक्म भी हैज़ वाला है। नीज़ ख़ुश्बू का इस्तेमाल बेहतर और पसन्दीदा अमल है, फ़र्ज़ व वाजिब नहीं।

बाब 14 : मुस्तहाज़ा का ग़ुस्ल और उसकी नमाज़

باب الْمُسْتَحَاضَةِ وَغُسْلِهَا وَصَلاَتِهَا

(753) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि फ़ातिमा बिन्ते अबी हुबैश नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाजिर हुई और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं एक ऐसी औरत हूँ जिसे इस्तहाज़ा आता है। इसलिये मैं पाक नहीं हो सकती तो क्या मैं नमाज़ छोड़ सकती हूँ? आपने फ़रमाया, 'नहीं! ये तो बस एक रग का ख़ून है, हैज़ नहीं है। लिहाज़ा जब हैज़ शुरू हो तो नमाज़ छोड़ दो और जब बंद हो जाये तो अपने से ख़ून धोकर नमाज़ पढ़ लो।'

(सहीह बुख़ारी : 228, तिर्मिज़ी : 125, नसाई : 1/184, इब्ने माजह : 621)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ جَاءَتْ فَاطِمَةُ بِنْتُ أَبِي حُبَيْشٍ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي امْرَأَةٌ أُسْتَحَاضُ فَلاَ أَطْهُرُ أَفَأَدَعُ الصَّلاَةَ فَقَالَ " لاَ إِنَّمَا ذَلِكِ عِرْقٌ وَلَيْسَ بِالْحَيْضَةِ فَإِذَا أَقْبَلَتِ الْحَيْضَةُ فَدَعِي الصَّلاَةَ وَإِذَا أَدْبَرَتْ فَاغْسِلِي عَنْكِ الدَّمَ وَصَلِّي " .

(754) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) हदीस़ बयान करते हैं जिसमें है, फ़ातिमा बिन्ते अबी हुबैश बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन असद आई जो हमारे ख़ानदान से है। इमाम मुस्लिम (रह.) ने कहा, हम्माद बिन ज़ैद की हदीस़ में एक कलिमा ज़ाइद है, जो हमने छोड़ दिया है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، وَأَبُو مُعَاوِيَةَ ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا خَلَفُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، كُلُّهُمْ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، بِمِثْلِ حَدِيثِ وَكِيعٍ وَإِسْنَادِهِ . وَفِي حَدِيثِ قُتَيْبَةَ عَنْ جَرِيرٍ جَاءَتْ فَاطِمَةُ بِنْتُ أَبِي حُبَيْشِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ بْنِ أَسَدٍ وَهِيَ امْرَأَةٌ مِنَّا . قَالَ وَفِي حَدِيثِ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ زِيَادَةُ حَرْفٍ تَرَكْنَا ذِكْرَهُ .

नोट : सनद में अबू हुबैश का बाप अ़ब्दुल मुत्तलिब बयान किया गया है जबकि वो मुत्तलिब है और जो लफ़्ज़ इमाम मुस्लिम (रह.) ने छोड़ दिया है वो है इग़सिली अ़न्कद्दम के बाद तवज़्ज़ई और इस

लफ़्ज़ में इमाम मुस्लिम (रह.) के ख़्याल में हम्माद मुन्फ़रिद है। इसलिये इमाम साहब ने उसे छोड़ दिया है। हालांकि हम्माद के अलावा दूसरे रावियों ने भी ये लफ़्ज़ हिशाम से बयान किया है इसलिये इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी सहीह में ये लफ़्ज़ हम्माद के अलावा रावी से रिवायत किये हैं।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا قَالَتِ اسْتَفْتَتْ أُمُّ حَبِيبَةَ بِنْتُ جَحْشٍ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ إِنِّي أُسْتَحَاضُ . فَقَالَ " إِنَّمَا ذَلِكِ عِرْقٌ فَاغْتَسِلِي ثُمَّ صَلِّي " . فَكَانَتْ تَغْتَسِلُ عِنْدَ كُلِّ صَلاَةٍ . قَالَ اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ لَمْ يَذْكُرِ ابْنُ شِهَابٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَمَرَ أُمَّ حَبِيبَةَ بِنْتَ جَحْشٍ أَنْ تَغْتَسِلَ عِنْدَ كُلِّ صَلاَةٍ وَلَكِنَّهُ شَىْءٌ فَعَلَتْهُ هِيَ . وَقَالَ ابْنُ رُمْحٍ فِي رِوَايَتِهِ ابْنَةُ جَحْشٍ وَلَمْ يَذْكُرْ أُمَّ حَبِيبَةَ .

(755) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि उम्मे हबीबा बिन्ते जहश (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे इस्तहाज़ा आता रहता है तो आपने फ़रमाया, 'ये तो एक रग का ख़ून है, लिहाज़ा (हैज़ से) नहाकर नमाज़ पढ़।' तो वो हर नमाज़ के लिये गुस्ल करती थीं। लैस बिन सअद ने कहा, इब्ने शिहाब ने ये बयान नहीं किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उम्मे हबीबा बिन्ते जहश को हर नमाज़ के लिये नहाने का हुक्म दिया था। ये काम वो अपने तौर पर करती थीं। इब्ने रुमह की रिवायत में उम्मे हबीबा बिन्ते जहश की जगह सिर्फ़ इब्नतु जहश आया है।

(अबू दाऊद : 290, तिर्मिज़ी : 129, नसाई : 1/116, 1/181)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ الْمُرَادِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، وَعَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَائِشَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّ أُمَّ حَبِيبَةَ بِنْتَ جَحْشٍ - خَتَنَةَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَتَحْتَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ - اسْتُحِيضَتْ سَبْعَ

(756) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि उम्मे हबीबा बिन्ते जहश (जो रसूलुल्लाह (ﷺ) की साली और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि. की बीवी है) को सात साल इस्तहाज़ा आता रहा। उसने रसूलुल्लाह (ﷺ) से उसके बारे में पूछा, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये हैज़ नहीं है, ये तो एक रग का ख़ून है, लिहाज़ा गुस्ल कर और नमाज़ पढ़।' हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बताया, वो अपनी

سِنِينَ فَاسْتَفْتَتْ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي ذَلِكَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ هَذِهِ لَيْسَتْ بِالْحَيْضَةِ وَلَكِنَّ هَذَا عِرْقٌ فَاغْتَسِلِي وَصَلِّي " . قَالَتْ عَائِشَةُ فَكَانَتْ تَغْتَسِلُ فِي مِرْكَنٍ فِي حُجْرَةِ أُخْتِهَا زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ حَتَّى تَعْلُوَ حُمْرَةُ الدَّمِ الْمَاءَ . قَالَ ابْنُ شِهَابٍ فَحَدَّثْتُ بِذَلِكَ أَبَا بَكْرِ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ فَقَالَ يَرْحَمُ اللَّهُ هِنْدًا لَوْ سَمِعَتْ بِهَذِهِ الْفُتْيَا وَاللَّهِ إِنْ كَانَتْ لَتَبْكِي لأَنَّهَا كَانَتْ لاَ تُصَلِّي .

बहन ज़ैनब बिन्ते जहश के कमरे में एक टब में गुस्ल करतीं तो ख़ून की सुर्ख़ी पानी के ऊपर आ जाती। इब्ने शिहाब कहते हैं, मैंने ये हदीस़ अबू बक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन हारिस़ बिन हिशाम को सुनाई तो उसने कहा, अल्लाह तआ़ला हिन्दा पर रहम फ़रमाये, काश वो ये फ़रमान सुन लेती, अल्लाह की क़सम! वो रोया करती थी, क्योंकि वो इस हालत में नमाज़ नहीं पढ़ती थी।

(सहीह बुख़ारी : 327, अबू दाऊद : 285, नसाई : 1/117-118, इब्ने माजह : 262)

وَحَدَّثَنِي أَبُو عِمْرَانَ، مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرِ بْنِ زِيَادٍ أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ، - يَعْنِي ابْنَ سَعْدٍ - عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ جَاءَتْ أُمُّ حَبِيبَةَ بِنْتُ جَحْشٍ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَكَانَتِ اسْتُحِيضَتْ سَبْعَ سِنِينَ بِمِثْلِ حَدِيثِ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ إِلَى قَوْلِهِ تَعْلُوَ حُمْرَةُ الدَّمِ الْمَاءَ . وَلَمْ يَذْكُرْ مَا بَعْدَهُ .

(757) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि उम्मे हबीबा बिन्ते जहश (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आई और उसे सात साल इस्तहाज़ा आता रहा है। ये रिवायत मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत की तरह है और सिर्फ़ ख़ून की सुर्ख़ी पानी के ऊपर आ जाती है तक है। उसके बाद वाला हिस्सा बयान नहीं किया गया।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَمْرَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ ابْنَةَ جَحْشٍ، كَانَتْ تُسْتَحَاضُ سَبْعَ سِنِينَ بِنَحْوِ حَدِيثِهِمْ .

(758) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि इब्नत जहश (जहश की बेटी) को सात साल इस्तहाज़ा आता रहा है आगे मज़्कूरा रिवायत बयान की।

(759) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि उम्मे हबीबा ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ख़ून के बारे में सवाल किया? आइशा (रज़ि.) ने बताया, मैंने उसका टब ख़ून से भरा देखा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे फ़रमाया, 'तुम्हें पहले जिस क़द्र हैज़ आता था, उतने दिन की रह, फिर नहा ले और नमाज़ पढ़।'

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ جَعْفَرٍ، عَنْ عِرَاكٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا قَالَتْ إِنَّ أُمَّ حَبِيبَةَ سَأَلَتْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَنِ الدَّمِ فَقَالَتْ عَائِشَةُ رَأَيْتُ مِرْكَنَهَا مَلآنَ دَمًا فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " امْكُثِي قَدْرَ مَا كَانَتْ تَحْبِسُكِ حَيْضَتُكِ ثُمَّ اغْتَسِلِي وَصَلِّي " .

(760) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि उम्मे हबीबा बिन्ते जहश (जो अब्दुर्रहमान बिन औफ़ की मन्कूहा थी) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ख़ून (इस्तहाज़ा) की शिकायत की तो आपने उसे फ़रमाया, 'तुम जिस क़द्र हैज़ के दिनों में रुकती थी, इतने दिन ठहर, फिर नहा ले तो वो हर नमाज़ के लिये नहाया करती थी।'

(अबू दाऊद : 279, नसाई : 206)

حَدَّثَنِي مُوسَى بْنُ قُرَيْشٍ التَّمِيمِيُّ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ بَكْرِ بْنِ مُضَرَ، حَدَّثَنِي أَبِي، حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ رَبِيعَةَ، عَنْ عِرَاكِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهَا قَالَتْ إِنَّ أُمَّ حَبِيبَةَ بِنْتَ جَحْشٍ الَّتِي كَانَتْ تَحْتَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ شَكَتْ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الدَّمَ فَقَالَ لَهَا " امْكُثِي قَدْرَ مَا كَانَتْ تَحْبِسُكِ حَيْضَتُكِ ثُمَّ اغْتَسِلِي " . فَكَانَتْ تَغْتَسِلُ عِنْدَ كُلِّ صَلاَةٍ .

फ़ायदा : मुस्तहाज़ा औरत का ख़ून चूंकि औक़ाते मख़्सूसा (ख़ास वक़्त) का पाबंद नहीं होता, इसलिये इसका हुक्म हैज़ से अलग है और मुस्तहाज़ा की अलग-अलग क़िस्में हैं (1) वो मुस्तहाज़ा जिसे पहले सिर्फ़ हैज़ आता था। कुछ अरसे के बाद इस्तहाज़ा शुरू हो गया। इसलिये उसको अपने हैज़ के दिनों का पता है कि मुझे इतने दिन हैज़ आता था, उसको मुअतादा कहते हैं। इसका हुक्म ये है कि उसे पहले जितने दिन हैज़ आता था, उतने दिन हैज़ के शुमार होंगे और बाद वाले दिन इस्तहाज़ा के होंगे।

(2) मुब्तदात : जिसको शुरू ही से इस्तहाज़ा आना शुरू हो गया, अगर ये हैज़ और इस्तहाज़ा के ख़ून में इम्तियाज़ (फ़र्क़) कर सकती है क्योंकि हैज़ का ख़ून स्याह और इन्तिहाई बदबूदार होता है। इस्तहाज़ा की ये सूरत नहीं। तो फिर उसको मुमय्यज़ा क़रार दिया जायेगा। जितने दिन वो हैज़ समझे वो हैज़ होगा और बाक़ी इस्तहाज़ा। बशर्तेकि वो कम से कम मुद्दते हैज़ से कम न हो। जो शवाफ़ेअ के नज़दीक एक दिन-रात है और अहनाफ़ के यहाँ तीन दिन-रात और हैज़ की अक्सरे मुद्दत से ज़्यादा न हों। जो अइम्मए

सलासा के नज़दीक पन्द्रह दिन है और इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक दस दिन। (3) अगर मुस्तहाज़ा की आदत भी न हो और वो मुमय्यज़ा भी न हो तो फिर उसको कम से कम मुद्दते हैज़ की पाबंदी करनी होगी। अगर एक औरत मुअतादा भी है और मुमय्यज़ा भी तो उसके बारे में अइम्मा का इख़्तिलाफ़ है। अहनाफ़ के नज़दीक आदत का ऐतबार है और मालिकिया के नज़दीक तमीज़ का। शाफ़ेई और अहमद के नज़दीक दोनों को मल्हूज़ रखना होगा, अगर दोनों में तआरुज़ (टकराव) हो तो शाफ़ेई के नज़दीक तमीज़ का ऐतबार होगा और इमाम अहमद के नज़दीक आदत का।

मुस्तहाज़ा के लिये गुस्ल : इस सिलसिले में जुम्हूर अइम्मा का मौक़िफ़ ये है कि (1) वो हैज़ के ख़ातमे पर गुस्ल करेगी और उसके बाद हर नमाज़ के लिये वुज़ू करेगी। शवाफ़ेअ के नज़दीक नमाज़ के लिये जो वुज़ू नमाज़ के वक़्त में किया गया है उससे सिर्फ़ एक फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ी जा सकेगी वो अदा हो या क़ज़ा फ़र्ज़ के साथ नवाफ़िल पढ़ने पर कोई पाबंदी नहीं। अहनाफ़ के नज़दीक नमाज़ के वक़्त वुज़ू किया जायेगा और उसके साथ फ़र्ज़ नमाज़ के साथ फ़ौतशुदा नमाज़ों की क़ज़ाई भी दी जा सकेगी। इमाम मालिक के नज़दीक वुज़ू करने के बाद सिर्फ़ इस्तहाज़ा के ख़ून से वुज़ू नहीं टूटता। जब तक कोई और सबबे हदस पैदा न हो।

(2) अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) और अता बिन अबी रिबाह के नज़दीक हर नमाज़ के लिये गुस्ल ज़रूरी है।(3) हर रोज़ गुस्ल ज़रूरी है। इब्ने मुसय्यब और हसन बसरी के नज़दीक रोज़ाना ज़ुहर के वक़्त गुस्ल करे।

(4) कुछ हज़रात के नज़दीक दो नमाज़ें इकट्ठी पढ़े और उनके लिये गुस्ल करे।

जुम्हूर का मौक़िफ़ दुरुस्त है। इलाज-मुआल्जे या एहतियात व इस्तिहबाब की सूरत में अगर औरत को मशक़्क़त व कुल्फ़त (परेशानी) न हो तो हर नमाज़ के लिये गुस्ल कर सकती है, हर नमाज़ के लिये गुस्ल लाज़िम नहीं है।

बाब 15 : हाइज़ा (हैज़ वाली औरत) के लिये रोज़े की क़ज़ा है, नमाज़ की नहीं

باب وُجُوبِ قَضَاءِ الصَّوْمِ عَلَى الْحَائِضِ دُونَ الصَّلاَةِ

(761) हज़रत मुआज़ह (रज़ि.) से रिवायत है कि एक औरत ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से सवाल किया कि हमें हैज़ के दिनों की नमाज़ की क़ज़ाई देनी होगी? तो आइशा (रज़ि.) ने कहा, क्या तू हरूरिया से ताल्लुक़ रखती है?

حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ مُعَاذَةَ، ح وَحَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ يَزِيدَ الرِّشْكِ، عَنْ مُعَاذَةَ، أَنَّ امْرَأَةً، سَأَلَتْ عَائِشَةَ فَقَالَتْ أَتَقْضِي إِحْدَانَا

الصَّلاَةَ أَيَّامَ مَحِيضِهَا فَقَالَتْ عَائِشَةُ أَحَرُورِيَّةٌ أَنْتِ قَدْ كَانَتْ إِحْدَانَا تَحِيضُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ لاَ تُؤْمَرُ بِقَضَاءٍ .

हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) के दौर में हैज़ आता था, उसके बावजूद किसी को क़ज़ा का हुक्म नहीं दिया गया।

(सहीह बुख़ारी: 321, अबू दाऊद : 262, 263, तिर्मिज़ी : 130, नसाई : 1/191-192, 4/164, इब्ने माजह : 631)

फ़ायदा : अइम्मए दीन का अहादीस की रोशनी में इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि हैज़ वाली औरत रोज़े की क़ज़ाई देगी और यही हुक्म निफ़ास का है, लेकिन नमाज़ की क़ज़ा नहीं है। सिर्फ़ ख़्वारिज का ये नज़रिया है कि नमाज़ की भी क़ज़ाई देगी। इसलिये हज़रत आइशा (रज़ि.) ने उस औरत से कहा, क्या तू हरूरिय्या से ताल्लुक़ रखती है। ख़ारजियों का ज़ुहूर चूंकि हरूरा नामी बस्ती से हुआ था, जो कूफ़ा से दो मील के फ़ासले पर वाक़ेअ थी। इसलिये ख़ारजियों को हरूरी भी कहते हैं।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ يَزِيدَ، قَالَ سَمِعْتُ مُعَاذَةَ، أَنَّهَا سَأَلَتْ عَائِشَةَ أَتَقْضِي الْحَائِضُ الصَّلاَةَ فَقَالَتْ عَائِشَةُ أَحَرُورِيَّةٌ أَنْتِ قَدْ كُنَّ نِسَاءُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَحِضْنَ أَفَأَمَرَهُنَّ أَنْ يَجْزِينَ قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ تَعْنِي يَقْضِينَ .

(762) मुआज़ह (रज़ि.) ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा, क्या हाइज़ा नमाज़ की क़ज़ाई देगी? तो आइशा (रज़ि.) ने पूछा, क्या तू हरूरिय्या से है? रसूलुल्लाह (ﷺ) की अज़्वाज को हैज़ आता था, क्या आपने उनको क़ज़ाई का हुक्म दिया था? मुहम्मद बिन जाफ़र ने कहा, यजज़ीन का मानी यक़्ज़ीन (क़ज़ाई देना) है।

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ مُعَاذَةَ، قَالَتْ سَأَلْتُ عَائِشَةَ فَقُلْتُ مَا بَالُ الْحَائِضِ تَقْضِي الصَّوْمَ وَلاَ تَقْضِي الصَّلاَةَ فَقَالَتْ أَحَرُورِيَّةٌ أَنْتِ قُلْتُ لَسْتُ بِحَرُورِيَّةٍ وَلَكِنِّي أَسْأَلُ . قَالَتْ كَانَ يُصِيبُنَا ذَلِكَ فَنُؤْمَرُ بِقَضَاءِ الصَّوْمِ وَلاَ نُؤْمَرُ بِقَضَاءِ الصَّلاَةِ .

(763) मुआज़ह बयान करती हैं कि मैंने आइशा (रज़ि.) से सवाल किया कि क्या वजह है हाइज़ा रोज़े की क़ज़ाई देती है और नमाज़ की क़ज़ाई नहीं देती? तो उन्होंने पूछा, क्या तू हरूरिय्या से है? मैंने कहा, मेरा हरूरिय्या से ताल्लुक़ नहीं है, मैं तो सिर्फ़ पूछना चाहती हूँ। तो उन्हों ने जवाब दिया, हमें भी हैज़ आता था तो हमें रोज़े की क़ज़ाई का हुक्म दिया जाता था, नमाज़ की क़ज़ाई का नहीं।

फ़ायदा : किसी मसले का हुक्म क्या है उसका असल दारोमदार क़ुरआन व सुन्नत की दलीलों पर है। उसकी हिक्मत और मस्लिहत या फ़िलॉसफ़ी क्या है, उसका बताना या जानना ज़रूरी नहीं है। क्योंकि उसके बारे में अलग-अलग राय हो सकती हैं। इसलिये हज़रत आइशा (रज़ि.) ने जवाब में सिर्फ़ ये कहा कि हमें रोज़े की क़ज़ा का हुक्म मिला है, नमाज़ की क़ज़ा का हुक्म नहीं मिला। अइम्मए दीन आम तौर पर इस फ़र्क़ की वजह या इल्लत ये बयान करते हैं, नमाज़ें हर रोज़ पढ़नी होती हैं, इसलिये उनकी क़ज़ा व हरज और तंगी का बाइस है। जबकि रोज़े सिर्फ़ एक माह में रखने होते हैं, बाक़ी ग्यारह महीने रोज़े फ़र्ज़ नहीं हैं। इसलिये उनकी क़ज़ाई किसी दिन भी दी जा सकती है। इसलिये ये मशक़्क़त या कुल्फ़त का बाइस नहीं है। अगरचे इस पर ये ऐतराज़ हो सकता है कि नमाज़ अपने पूरे वक़्त का इस्तीआब नहीं करती, इसलिये एक वक़्त में कई नमाज़ें पढ़ी जा सकती हैं और रोज़ा पूरे दिन का रखना होता है, इसलिये एक दिन में एक से ज़्यादा रोज़ा रखना मुम्किन नहीं है। नमाज़ के लिये तहारत ज़रूरी है और हैज़ व निफ़ास में औरत पाकीज़गी हासिल नहीं कर सकती इसलिये उस पर नमाज़ फ़र्ज़ नहीं है तो क़ज़ाई कैसे फ़र्ज़ हो सकती है और रोज़े के लिये तहारत शर्त नहीं है इसलिये हाइज़ा रोज़े फ़र्ज़ से कमी व आसानी के लिये उस पर अदा की बजाय क़ज़ा लाज़िम है।

बाब 16 : गुस्ल करने वाले का कपड़े वग़ैरह से पर्दा करना

باب تَسَتُّرِ الْمُغْتَسِلِ بِثَوْبٍ وَنَحْوِهِ

(764) हज़रत उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब (रज़ि.) बयान करती हैं कि मैं फ़तहे मक्का के साल रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास गई। मैंने आपको गुस्ल करते हुए पाया और आपकी बेटी फ़ातिमा (रज़ि.) आपको एक कपड़े से पर्दा किए हुए थे।

(सहीह बुख़ारी : 280, 357, 3171, 6158, तिर्मिज़ी : 2743, 1579, नसाई : 1/126, इब्ने माजह : 465)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ أَبِي النَّضْرِ، أَنَّ أَبَا مُرَّةَ، مَوْلَى أُمِّ هَانِئٍ بِنْتِ أَبِي طَالِبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ أُمَّ هَانِئٍ بِنْتَ أَبِي طَالِبٍ، تَقُولُ ذَهَبْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَامَ الْفَتْحِ فَوَجَدْتُهُ يَغْتَسِلُ . وَفَاطِمَةُ ابْنَتُهُ تَسْتُرُهُ بِثَوْبٍ .

फ़ायदा : अगर इंसान घर में कपड़ा बांधकर नहा रहा हो तो फिर भी बेहतर है कि दूसरों से औट में नहाये।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحِ بْنِ الْمُهَاجِرِ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، أَنَّ أَبَا مُرَّةَ، مَوْلَى عَقِيلٍ حَدَّثَهُ أَنَّ أُمَّ هَانِئٍ بِنْتَ أَبِي طَالِبٍ حَدَّثَتْهُ أَنَّهُ، لَمَّا كَانَ عَامُ الْفَتْحِ أَتَتْ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ بِأَعْلَى مَكَّةَ . قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلَى غُسْلِهِ فَسَتَرَتْ عَلَيْهِ فَاطِمَةُ ثُمَّ أَخَذَ ثَوْبَهُ فَالْتَحَفَ بِهِ ثُمَّ صَلَّى ثَمَانَ رَكَعَاتٍ سُبْحَةَ الضُّحَى .

(765) हज़रत उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब (रज़ि.) बयान करती हैं कि वो फ़तहे मक्का वाले साल, मक्का के बुलंद हिस्से में रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई। रसूलुल्लाह (ﷺ) नहाने के लिये उठे तो फ़ातिमा (रज़ि.) ने आपको पर्दे की आड़ की। फिर आपने अपना कपड़ा लेकर अपने गिर्द लपेटा, फिर चाश्त के आठ नफ़ल अदा फ़रमाये, सुब्हतुज़्ज़ुहा चाश्त के नफ़ल, चाश्त की नमाज़।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ كَثِيرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ فَسَتَرَتْهُ ابْنَتُهُ فَاطِمَةُ بِثَوْبِهِ فَلَمَّا اغْتَسَلَ أَخَذَهُ فَالْتَحَفَ بِهِ ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى ثَمَانَ سَجَدَاتٍ وَذَلِكَ ضُحًى .

(766) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं जिसमें ये है तो आपकी बेटी फ़ातिमा (रज़ि.) ने आपको कपड़े की औट मुहय्या की। ग़ुस्ल के बाद आपने वो कपड़ा लेकर अपने गिर्द लपेट लिया। फिर नमाज़ के लिये खड़े हुए और आठ रकअतें पढ़ीं और ये चाश्त का वक़्त था।

फ़ायदा : सजदातिन सज्दा रकअत का अहम हिस्सा और जुज़ है। इसलिये रकअत को सज्दे से ताबीर किया गया है।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا مُوسَى الْقَارِئُ، حَدَّثَنَا زَائِدَةُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ، عَنْ كُرَيْبٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ مَيْمُونَةَ، قَالَتْ وَضَعْتُ لِلنَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم مَاءً وَسَتَرْتُهُ فَاغْتَسَلَ .

(767) हज़रत मैमूना (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने नबी (ﷺ) के (ग़ुस्ल के) लिये पानी रखा और आपको पर्दा किया तो आपने ग़ुस्ल फ़रमाया।

बाब 17 : दूसरे की शर्मगाह देखने की मुमानिअत (मनाही)

باب تَحْرِيمِ النَّظَرِ إِلَى الْعَوْرَاتِ

(768) अब्दुर्रहमान बिन अबी सईद अपने बाप से रिवायत बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मर्द किसी मर्द की शर्मगाह को न देखे और औरत किसी औरत की शर्मगाह को न देखे और न कोई मर्द बरहना होकर दूसरे बरहना मर्द के साथ एक कपड़े में लेटे और न कोई नंगी औरत, दूसरी नंगी औरत के साथ एक कपड़े में लेटे।

(अबू दाऊद : 2793, इब्ने माजह : 661)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ الْحُبَابِ، عَنِ الضَّحَّاكِ بْنِ عُثْمَانَ، قَالَ أَخْبَرَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ يَنْظُرُ الرَّجُلُ إِلَى عَوْرَةِ الرَّجُلِ وَلاَ الْمَرْأَةُ إِلَى عَوْرَةِ الْمَرْأَةِ وَلاَ يُفْضِي الرَّجُلُ إِلَى الرَّجُلِ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ وَلاَ تُفْضِي الْمَرْأَةُ إِلَى الْمَرْأَةِ فِي الثَّوْبِ الْوَاحِدِ " .

(769) इमाम साहब मज़्कूरा रिवायत और असातिज़ा से बयान करते हैं दोनों औरह के लफ़्ज़ की जगह उरयतिर्रजुलि औ उरयतिल मरअति कहा।

وَحَدَّثَنِيهِ هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، أَخْبَرَنَا الضَّحَّاكُ بْنُ عُثْمَانَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالاَ - مَكَانَ عَوْرَةِ - عُرْيَةِ الرَّجُلِ وَعُرْيَةِ الْمَرْأَةِ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : उरयह : के ऐन पर पेश और ज़बर दोनों आ सकते हैं और रा साकिन होगी या उसको ऐन के पेश, रा की ज़बर और या मुशद्दद पढ़कर तसग़ीर बनायेंगे। मानी बरहना और नंगा होना है।

फ़ायदा : उम्मते इस्लामिया के नज़दीक बिल्इत्तिफ़ाक़ मर्द का मर्द या अजनबी औरत की शर्मगाह और औरत के लिये औरत और अजनबी मर्द की शर्मगाह देखना हराम है। लेकिन मियाँ-बीवी एक-दूसरे के सामने बरहना हो सकते हैं।

महरम मर्द के लिये औरत का नाफ़ से ऊपर और घुटने से नीचे वाला हिस्सा औरत नहीं और अजनबी मर्द के लिये तमाम बदन औरत है। इस तरह औरत के लिये अजनबी मर्द को देखना दुरुस्त नहीं है। किसी वाक़ेई हाजत व ज़रूरत के वक़्त देखना, जबकि बनज़रे शहवत न हो जाइज़ होगा। इस बिना पर मियाँ-बीवी के सिवा किसी के लिये एक-दूसरे के साथ बरहना लेटना जाइज़ नहीं।

باب جَوَازِ الاِغْتِسَالِ عُرْيَانًا فِي الْخَلْوَةِ

बाब 18: तन्हाई में बरहना नहाना जाइज़ है

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ مُحَمَّدٍ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " كَانَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ يَغْتَسِلُونَ عُرَاةً يَنْظُرُ بَعْضُهُمْ إِلَى سَوْأَةِ بَعْضٍ وَكَانَ مُوسَى - عَلَيْهِ السَّلاَمُ - يَغْتَسِلُ وَحْدَهُ فَقَالُوا وَاللَّهِ مَا يَمْنَعُ مُوسَى أَنْ يَغْتَسِلَ مَعَنَا إِلاَّ أَنَّهُ آدَرُ - قَالَ - فَذَهَبَ مَرَّةً يَغْتَسِلُ فَوَضَعَ ثَوْبَهُ عَلَى حَجَرٍ فَفَرَّ الْحَجَرُ بِثَوْبِهِ - قَالَ - فَجَمَحَ مُوسَى بِإِثْرِهِ يَقُولُ ثَوْبِي حَجَرُ ثَوْبِي حَجَرُ . حَتَّى نَظَرَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ إِلَى سَوْأَةِ مُوسَى قَالُوا وَاللَّهِ مَا بِمُوسَى مِنْ بَأْسٍ . فَقَامَ الْحَجَرُ حَتَّى نُظِرَ إِلَيْهِ - قَالَ - فَأَخَذَ ثَوْبَهُ فَطَفِقَ بِالْحَجَرِ ضَرْبًا " . قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ وَاللَّهِ إِنَّهُ بِالْحَجَرِ نَدَبٌ سِتَّةٌ أَوْ سَبْعَةٌ ضَرْبُ مُوسَى بِالْحَجَرِ .

(770) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) से बयान करते हैं आपने फ़रमाया, 'बनू इस्राईल बरहना नहाते थे, एक-दूसरे की शर्मगाह को देख रहे होते और मूसा (अलै.) अकेले नहाते। इस्राईली कहने लगे, अल्लाह की क़सम! मूसा (अलै.) हमारे साथ सिर्फ़ इस बिना पर नहीं नहाते कि उनको हर्निया की बीमारी है।' आपने फ़रमाया, 'मूसा (अलै.) एक बार नहाने लगे तो अपने कपड़े एक पत्थर पर रख दिये। पत्थर आपके कपड़े लेकर भाग खड़ा हुआ और मूसा (अलै.) उसके पीछे (सरपट) ज़ोर से दौड़ पड़े और फ़रमाने लगे, ऐ पत्थर! मेरे कपड़े दो, ऐ पत्थर! मेरे कपड़े दो। यहाँ तक कि बनू इस्राईल ने मूसा (अलै.) के क़ाबिले सतर हिस्से को देख लिया और कहने लगे, अल्लाह की क़सम! मूसा (अलै.) को तो कोई बीमारी लाहिक नहीं है। जब मूसा (अलै.) को सरापा देख लिया गया तो पत्थर ठहर गया। मूसा (अलै.) ने अपने कपड़े पहने और पत्थर को मारना शुरू कर दिया।' अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह की क़सम! मूसा (अलै.) के पत्थर को मारने से उस पर छः या सात निशान पड़ गये।

(सहीह बुख़ारी : 278)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) सौअह : शर्मगाह। आदर : जिसके ख़ुस्यतैन फूले हों। **(2) जमह़ :** सरपट दौड़ा। **(3) नदबुन :** निशान।

फ़वाइद : (1) इंसान तन्हाई में बरहना होकर ग़ुस्ल कर सकता है। अगरचे बेहतर यही है, कपड़ा

बांधकर नहाये। क्योंकि कोई अचानक आ सकता है। अगर गुस्लख़ाना वग़ैरह हो जहाँ किसी के आने का ख़तरा न हो तो फिर कोई हर्ज नहीं।

(2) अम्बिया (अलै.) अपनी सीरत और सूरत दोनों ऐतबार से कामिल तरीन फ़र्द होते हैं और अल्लाह तआला उनको ऐबों और नुक़्सों से पाक रखता है और अम्बिया (अलै.) बशर होने की बिना पर इंसानी जज़्बात से मुत्तसिफ़ होते हैं। इसलिये मूसा (अलै.) ने गुस्से में आकर पत्थर पर ज़रबें लगाईं और अल्लाह तआला ने अपने नबी की इज़्ज़त व आबरू की बराअत की ख़ातिर पत्थर में ख़ुद-बख़ुद दौड़ने की ताक़त पैदा कर दी। जैसाकि उसके हुक्म से ज़मीन अपने मेहवर पर हरकत कर रही है।

बाब 19 : शर्मगाह की हिफ़ाज़त पर तवज्जह देना

باب الاِعْتِنَاءِ بِحِفْظِ الْعَوْرَةِ

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمِ بْنِ مَيْمُونٍ، جَمِيعًا عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ بَكْرٍ، قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، ح وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَاللَّفْظُ، لَهُمَا - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، - أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يَقُولُ لَمَّا بُنِيَتِ الْكَعْبَةُ ذَهَبَ النَّبِيُّ ﷺ وَعَبَّاسٌ يَنْقُلاَنِ حِجَارَةً فَقَالَ الْعَبَّاسُ لِلنَّبِيِّ ﷺ اجْعَلْ إِزَارَكَ عَلَى عَاتِقِكَ مِنَ الْحِجَارَةِ. فَفَعَلَ فَخَرَّ إِلَى الأَرْضِ وَطَمَحَتْ عَيْنَاهُ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ قَامَ فَقَالَ " إِزَارِي إِزَارِي". فَشَدَّ عَلَيْهِ إِزَارَهُ. قَالَ ابْنُ رَافِعٍ فِي رِوَايَتِهِ عَلَى رَقَبَتِكَ. وَلَمْ يَقُلْ عَلَى عَاتِقِكَ

(771) हज़रत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, जब कअ़बा तामीर किया गया तो अब्बास (रज़ि.) और रसूलुल्लाह (ﷺ) पत्थर लाने लगे तो अब्बास (रज़ि.) ने नबी (ﷺ) से कहा, पत्थरों से हिफ़ाज़त के लिये अपना तहबंद उठाकर कन्धे पर रख लीजिये, तो आपने ऐसा कर लिया। इस पर आप ज़मीन पर गिर गये और आपकी आँखें आसमान की तरफ़ लग गई। फिर आप उठे और कहा, मेरा तहबंद, मेरा तहबंद। तो आपका तहबंद बांध दिया गया या आपने अपना तहबंद बांध लिया। इब्ने राफ़ेअ की रिवायत में अला आतिक़िक (अपने कन्धे पर) के बजाय अला रक़बतिक (अपनी गर्दन पर) के अल्फ़ाज़ हैं।

(सहीह बुख़ारी : 1582, 3829)

फ़ायदा : इंसान को दूसरों के सामने अपना सतर नहीं खोलना चाहिये। नबी (ﷺ) ने नुबूवत से पहले ही अपनी तबई (फ़ितरी) शर्म व हया की बिना पर चाचा के हुक्म से अपना तहबंद खोल तो लिया,

लेकिन फ़ौरन बेहोश होकर गिर पड़े और आपको उस काम से रोक दिया गया। क्योंकि अल्लाह तआला अपने अम्बिया (अलै.) को नुबूवत से पहले ही ग़लत कामों से बचाता है। उस वक़्त आप बक़ौल ज़ोहरी बुलूग़त को नहीं पहुँचे थे। बक़ौल बाज़ उस वक़्त आपकी उम्र पन्द्रह साल, बक़ौल बाज़ पच्चीस और बक़ौल इब्ने इस्हाक़ पैंतीस साल थी।

وَحَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَنْقُلُ مَعَهُمُ الْحِجَارَةَ لِلْكَعْبَةِ وَعَلَيْهِ إِزَارُهُ فَقَالَ لَهُ الْعَبَّاسُ عَمُّهُ يَا ابْنَ أَخِي لَوْ حَلَلْتَ إِزَارَكَ فَجَعَلْتَهُ عَلَى مَنْكِبِكَ دُونَ الْحِجَارَةِ - قَالَ - فَحَلَّهُ فَجَعَلَهُ عَلَى مَنْكِبِهِ فَسَقَطَ مَغْشِيًّا عَلَيْهِ - قَالَ - فَمَا رُؤِيَ بَعْدَ ذَلِكَ الْيَوْمِ عُرْيَانًا .

(772) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) कअबा की तामीर के लिये क़ुरैश के साथ पत्थर नक़ल कर रहे थे (ढ़ो रहे थे) और आप तहबंद बांधे हुए थे तो आपको आपके चाचा अब्बास (रज़ि.) ने कहा, ऐ भतीजे! ऐ काश आप अपना तहबंद खोलकर पत्थरों से बचाव के लिये अपने कन्धे पर रख लें। तो आपने उसे खोलकर अपने कन्धे पर रख लिया। इस पर आप ग़शी खाकर गिर गये। उस दिन के बाद कभी आपको नंगे नहीं देखा गया।

(सहीह बुख़ारी : 364)

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى الأُمَوِيُّ، حَدَّثَنِي أَبِي، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ حَكِيمِ بْنِ عَبَّادِ بْنِ حُنَيْفٍ الأَنْصَارِيُّ، أَخْبَرَنِي أَبُو أُمَامَةَ بْنُ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ، عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ، قَالَ أَقْبَلْتُ بِحَجَرٍ أَحْمِلُهُ ثَقِيلٍ وَعَلَىَّ إِزَارٌ خَفِيفٌ - قَالَ - فَانْحَلَّ إِزَارِي وَمَعِيَ الْحَجَرُ لَمْ أَسْتَطِعْ أَنْ أَضَعَهُ حَتَّى بَلَغْتُ بِهِ إِلَى مَوْضِعِهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " ارْجِعْ إِلَى ثَوْبِكَ فَخُذْهُ وَلاَ تَمْشُوا عُرَاةً " .

(773) हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) से रिवायत है कि मैं भारी पत्थर उठाये हुए आगे बढ़ा और मैं हल्का सा तहबंद बांधे हुए था तो मेरा पत्थर उठाये हुए तहबंद खुल गया और मैं उसको उसकी जगह पर रखे बग़ैर बांध न सका तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अपने कपड़े की तरफ़ लौटकर उसको उठाओ और नंगे न चला करो।'

(अबू दाऊद : 4016)

باب مَا يُسْتَتَرُ بِهِ لِقَضَاءِ الْحَاجَةِ

बाब 20 : क़ज़ाए हाजत के लिये कैसे पर्दा किया जायेगा?

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَسْمَاءَ الضُّبَعِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا مَهْدِيٌّ، - وَهُوَ ابْنُ مَيْمُونٍ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي يَعْقُوبَ، عَنِ الْحَسَنِ بْنِ سَعْدٍ، مَوْلَى الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جَعْفَرٍ، قَالَ أَرْدَفَنِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ يَوْمٍ خَلْفَهُ فَأَسَرَّ إِلَىَّ حَدِيثًا لاَ أُحَدِّثُ بِهِ أَحَدًا مِنَ النَّاسِ وَكَانَ أَحَبَّ مَا اسْتَتَرَ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِحَاجَتِهِ هَدَفٌ أَوْ حَائِشُ نَخْلٍ . قَالَ ابْنُ أَسْمَاءَ فِي حَدِيثِهِ يَعْنِي حَائِطَ نَخْلٍ .

(774) हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र (रज़ि.) से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे अपने पीछे सवार कर लिया और फिर मुझे एक राज़ की बात बताई, जो मैं किसी इंसान को नहीं बताऊँगा और आपको क़ज़ाए हाजत के लिये महबूब तरीन ओट टीला या खजूर का बाग़ था। इब्ने असमा ने अपनी हदीस़ में हाइत नख़िलन का मानी नख़िलस्तान किया। हदफ़ (टीला)।
(अबू दाऊद : 2549, इब्ने माजह : 340)

फ़ायदा : क़ज़ाए हाजत के लिये बापर्दा जगह का इन्तिख़ाब करना चाहिये, ताकि पर्दा हो सके।

باب إِنَّمَا الْمَاءُ مِنَ الْمَاءِ

बाब 21 : पाकिस्तानी नुस्ख़े की रू से तर्जुमा : आग़ाज़े इस्लाम में जब तक मनी न निकलती जिमाअ करने से ग़ुस्ल लाज़िम नहीं था, इस हुक्म के नस्ख़ का बयान और ग़ुस्ल जिमाअ से लाज़िम हो जाता है' अरबी नुस्ख़े में इन अहादीस़ को दो बाबों में तक़सीम कर दिया गया है, पहला बाब है बाब 21 : ग़ुस्ल मनी के निकलने से वाजिब होता है

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَيَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ - قَالَ يَحْيَى بْنُ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرُونَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - وَهُوَ ابْنُ جَعْفَرٍ - عَنْ شَرِيكٍ، - يَعْنِي ابْنَ أَبِي نَمِرٍ - عَنْ

(775) अब्दुर्रहमान बिन अबी सईद ख़ुदरी (रज़ि.) अपने बाप से रिवायत बयान करते हैं कि मैं सोमवार के दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ क़ुबा गया। जब हम बनू सालिम के मुहल्ले में पहुँचे तो रसूलुल्लाह (ﷺ) इतबान

عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ خَرَجْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ الاِثْنَيْنِ إِلَى قُبَاءٍ حَتَّى إِذَا كُنَّا فِي بَنِي سَالِمٍ وَقَفَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى بَابِ عِتْبَانَ فَصَرَخَ بِهِ فَخَرَجَ يَجُرُّ إِزَارَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " أَعْجَلْنَا الرَّجُلَ " . فَقَالَ عِتْبَانُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ الرَّجُلَ يُعْجَلُ عَنِ امْرَأَتِهِ وَلَمْ يُمْنِ مَاذَا عَلَيْهِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " إِنَّمَا الْمَاءُ مِنَ الْمَاءِ " .

के दरवाज़े पर रुक गये और उसे आवाज़ दी। वो अपना तहबंद घसीटते हुए निकले तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हमने इस इंसान को जल्दबाज़ी में मुब्तला किया।' तो इतबान ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! बताइये अगर इंसान बीवी से जल्दी अलग कर दिया जाये और मनी न निकले तो उसे क्या करना चाहिये? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'पानी, पानी से वाजिब होता है, ग़ुस्ल मनी निकलने से वाजिब होता है।'

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَهُ أَنَّ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ " إِنَّمَا الْمَاءُ مِنَ الْمَاءِ " .

(776) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) नबी (ﷺ) से बयान करते हैं कि आपने फ़रमाया, 'पानी, पानी से वाजिब होता है।'
(अबू दाऊद : 217)

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا أَبُو الْعَلاَءِ بْنُ الشِّخِّيرِ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَنْسَخُ حَدِيثُهُ بَعْضُهُ بَعْضًا كَمَا يَنْسَخُ الْقُرْآنُ بَعْضُهُ بَعْضًا .

(777) अबुल अ़ला बिन शख़्ख़ीर बयान करते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की हदीस़ एक-दूसरे को मन्सूख़ करती, जिस तरह क़ुरआन का कुछ हिस्सा कुछ को मन्सूख़ करता है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ ذَكْوَانَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله

(778) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक अन्सारी इंसान के मकान से गुज़रे तो उसे बुलवाया। वो इस हाल में निकला कि उसके सर से पानी गिर रहा था तो आपने फ़रमाया, 'शायद हमने तुझे जल्दी करने पर मजबूर कर दिया।' उसने

عليه وسلم مَرَّ عَلَى رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ فَخَرَجَ وَرَأْسُهُ يَقْطُرُ فَقَالَ " لَعَلَّنَا أَعْجَلْنَاكَ " . قَالَ نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَ " إِذَا أُعْجِلْتَ أَوْ أَقْحَطْتَ فَلاَ غُسْلَ عَلَيْكَ وَعَلَيْكَ الْوُضُوءُ " . وَقَالَ ابْنُ بَشَّارٍ " إِذَا أُعْجِلْتَ أَوْ أُقْحِطْتَ " .

कहा, हाँ ऐ अल्लाह के रसूल! आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुम्हें जल्दी करनी पड़े या इन्ज़ाल न हो सके तो तुम पर गुस्ल लाज़िम नहीं है और वुज़ू ज़रूरी है।'
(सहीह बुख़ारी : 180, इब्ने माजह : 606)

حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ أُبَىِّ بْنِ كَعْبٍ، قَالَ سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنِ الرَّجُلِ يُصِيبُ مِنَ الْمَرْأَةِ ثُمَّ يُكْسِلُ فَقَالَ " يَغْسِلُ مَا أَصَابَهُ مِنَ الْمَرْأَةِ ثُمَّ يَتَوَضَّأُ وَيُصَلِّي " .

(779) हज़रत उबइ बिन कअ़ब (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से उस इंसान के बारे में पूछा, जो अपनी बीवी के पास जाता है, फिर उसे इन्ज़ाल नहीं होता? तो आपने फ़रमाया, 'बीवी से उसे जो कुछ लग जाये, उसको धो ले, फिर वुज़ू करके नमाज़ पढ़ ले।'
(सहीह बुख़ारी : 293)

मुफ़रदातुल हदीस : **इक़्हात** और **इक्साल** दोनों से मुराद अ़दमे इन्ज़ाल है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنِ الْمَلِيِّ، عَنِ الْمَلِيِّ، - يَعْنِي بِقَوْلِهِ الْمَلِيِّ عَنِ الْمَلِيِّ أَبُو أَيُّوبَ، - عَنْ أُبَىِّ بْنِ كَعْبٍ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ فِي الرَّجُلِ يَأْتِي أَهْلَهُ ثُمَّ لاَ يُنْزِلُ قَالَ " يَغْسِلُ ذَكَرَهُ وَيَتَوَضَّأُ " .

(780) हज़रत उबइ बिन कअ़ब (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) से बयान करते हैं कि आपने उस इंसान के बारे में जो अपनी बीवी के पास जाता है इन्ज़ाल नहीं होता, फ़रमाया, 'वो अपने आला (अ़ज़्व/लिंग) को धो ले और वुज़ू करे।' (मली का लफ़्ज़ दोनों हज़रात पर ऐतमाद और वुसूक़ के इज़हार के लिये इस्तेमाल किया गया है)।

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الْوَارِثِ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، عَنِ الْحُسَيْنِ بْنِ ذَكْوَانَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ، أَنَّ عَطَاءَ بْنَ يَسَارٍ، أَخْبَرَهُ أَنَّ زَيْدَ بْنَ خَالِدٍ الْجُهَنِيَّ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ، سَأَلَ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ قَالَ قُلْتُ أَرَأَيْتَ إِذَا جَامَعَ الرَّجُلُ امْرَأَتَهُ وَلَمْ يُمْنِ قَالَ عُثْمَانُ " يَتَوَضَّأُ كَمَا يَتَوَضَّأُ لِلصَّلاَةِ وَيَغْسِلُ ذَكَرَهُ " . قَالَ عُثْمَانُ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(781) हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) जोहनी से रिवायत है कि मैंने उ़समान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) से पूछा, बताइये जब इंसान अपनी बीवी से सोहबत करे और इन्ज़ाल न हो तो क्या करे? उ़समान ने जवाब दिया, नमाज़ के वुज़ू की तरह वुज़ू और अपने अ़ज़्व को धो ले। उ़समान ने बताया, मैंने ये बात रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी है।

(सहीह बुख़ारी : 179, 292)

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، عَنِ الْحُسَيْنِ، قَالَ يَحْيَى وَأَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ، أَنَّ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ، أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا أَيُّوبَ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ ذَلِكَ، مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(782) इमाम साहब मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत (ऊपर की) हज़रत अबू अय्यूब (रज़ि.) से बयान करते हैं।

नोट : हाफ़िज़ इब्ने हजर ने लिखा है, अख़बरनी अबू सलमा का मअ़तूफ़ अ़लैह मुक़द्दर है। यानी अख़बरनी बिकज़ा व अख़बरनी बिकज़ा, गोया ये मसला अबू अय्यूब (रज़ि.) ने हज़रत उबइ बिन कअ़ब (रज़ि.) से सुना और रसूलुल्लाह (ﷺ) से बिल वास्ता भी सुना। तमाम रिवायते मज़्कूरा बाला में अवाइले इस्लाम (शुरू इस्लाम) का हुक्म बयान किया गया है। बाद में सहूलत और तख़्फ़ीफ़ ख़त्म हो गई। आइन्दा बाब में गुस्ल करने की रिवायत आ रही हैं। (फ़तहुल मुल्हिम, जिल्द 1, पेज नम्बर 485)

बाब 22 : पानी, पानी से (ग़ुस्ल, इन्ज़ाल से) मन्सूख़ है और मर्द व औरत का अज़्व मिलने से ग़ुस्ल ज़रूरी हो जाता है

باب نَسْخِ " الْمَاءُ مِنَ الْمَاءِ " وَوُجُوبِ الْغُسْلِ بِالْتِقَاءِ الْخِتَانَيْنِ

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ ح وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالُوا حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، وَمَطَرٍ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا جَلَسَ بَيْنَ شُعَبِهَا الأَرْبَعِ ثُمَّ جَهَدَهَا فَقَدْ وَجَبَ عَلَيْهِ الْغُسْلُ " . وَفِي حَدِيثِ مَطَرٍ " وَإِنْ لَمْ يُنْزِلْ " . قَالَ زُهَيْرٌ مِنْ بَيْنِهِمْ " بَيْنَ أَشْعُبِهَا الأَرْبَعِ " .

(783) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब मर्द औरत की चार शाख़ों के दरम्यान बैठे, फिर उसको थका दे या भरपूर कोशिश व मेहनत करे तो उस पर ग़ुस्ल वाजिब हो जाता है।' मतर की हदीस में ये इज़ाफ़ा है कि 'अगरचे इन्ज़ाल न हो' और ज़ुहैर ने शुअब की जगह अश्अब कहा।
(सहीह बुख़ारी : 291, अबू दाऊद : 216, नसाई : 1/110-112, इब्ने माजह : 610)

मुफ़रदातुल हदीस : (1) शुअब : शुअबह की जमा है। **(2) जलस बैना शुअबिहा :** का मक़सद मर्द के अज़्वे तनासुल का औरत की अन्दाम नहानी (शर्मगाह) में दाख़िल हो जाना है और **(3) जहदहा :** का मक़सद मियाँ-बीवी का ताल्लुक़ात ज़न व शौहर का शुरू कर देना है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَبَّادِ بْنِ جَبَلَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عَدِيٍّ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنِي وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، كِلاَهُمَا عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ غَيْرَ أَنَّ فِي حَدِيثِ شُعْبَةَ " ثُمَّ اجْتَهَدَ " وَلَمْ يَقُلْ " وَإِنْ لَمْ يُنْزِلْ " .

(784) फ़र्क़ ये है कि शोबा की इस रिवायत में सुम्म जह्द रा की जगह सुम्म इज्तहद मेहनत व कोशिश करता है और इल्लम युन्ज़िल (अगरचे इन्ज़ाल न हो) का लफ़्ज़ नहीं है।

(785) हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) बयान करते हैं कि इस मसले में मुहाजिरीन और अन्सार के एक गिरोह का इख़्तिलाफ़ हुआ, अन्सारियों ने कहा, ग़ुस्ल उस सूरत में फ़र्ज़ होता है जब मनी टपक कर निकले या इन्ज़ाल हो और मुहाजिरों ने कहा, जब मर्द, औरत से सोहबत करे तो ग़ुस्ल वाजिब हो जाता है। अबू मूसा ने कहा, मैं इस मसले में तुम्हारी तसल्ली किये देता हूँ तो मैं उठा और हज़रत आइशा (रज़ि.) से बारयाबी की इजाज़त तलब की। मुझे इजाज़त दे दी गई तो मैंने कहा, ऐ अम्मी जान! या ऐ मोमिनों की माँ! मैं आपसे एक मसला पूछना चाहता हूँ और मुझे आपसे शर्म भी आ रही है। तो उन्होंने कहा, जो बात तुम अपनी हक़ीक़ी माँ, जिसके पेट से तुम पैदा हुए हो, से पूछ सकते हो, वो मुझसे पूछने से शर्म न करो। क्योंकि मैं भी तुम्हारी माँ हूँ। मैंने पूछा, ग़ुस्ल किस सूरत में वाजिब होता है? उन्होंने कहा, तूने वाक़िफ़कार से ही पूछा। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब मर्द औरत के चारों कोनों में बैठ जाये और ख़त्ने की जगह, ख़त्ने की जगह से मस कर ले (ज़कर, फ़रज में दाख़िल हो जाये) तो ग़ुस्ल वाजिब हो गया।'

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الأَنْصَارِيُّ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ، حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ هِلاَلٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، - وَهَذَا حَدِيثُهُ - حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ، قَالَ - وَلاَ أَعْلَمُهُ إِلاَّ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، - عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ اخْتَلَفَ فِي ذَلِكَ رَهْطٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالأَنْصَارِ فَقَالَ الأَنْصَارِيُّونَ لاَ يَجِبُ الْغُسْلُ إِلاَّ مِنَ الدَّفْقِ أَوْ مِنَ الْمَاءِ . وَقَالَ الْمُهَاجِرُونَ بَلْ إِذَا خَالَطَ فَقَدْ وَجَبَ الْغُسْلُ . قَالَ قَالَ أَبُو مُوسَى فَأَنَا أَشْفِيكُمْ مِنْ ذَلِكَ . فَقُمْتُ فَاسْتَأْذَنْتُ عَلَى عَائِشَةَ فَأُذِنَ لِي فَقُلْتُ لَهَا يَا أُمَّاهْ - أَوْ يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ - إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أَسْأَلَكِ عَنْ شَىْءٍ وَإِنِّي أَسْتَحْيِيكِ . فَقَالَتْ لاَ تَسْتَحْيِي أَنْ تَسْأَلَنِي عَمَّا كُنْتَ سَائِلاً عَنْهُ أُمَّكَ الَّتِي وَلَدَتْكَ فَإِنَّمَا أَنَا أُمُّكَ . قُلْتُ فَمَا يُوجِبُ الْغُسْلَ قَالَتْ عَلَى الْخَبِيرِ سَقَطْتَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا جَلَسَ بَيْنَ شُعَبِهَا الأَرْبَعِ وَمَسَّ الْخِتَانُ الْخِتَانَ فَقَدْ وَجَبَ الْغُسْلُ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : अलल ख़ैरि सक़तत : मुहावरा है, जिसका मानी होता है, मसला हक़ीक़त से जो आगाह है तूने उससे पूछा। **मस्सल ख़ितानुल ख़ितान :** (किनाया है मियाँ-बीवी की सोहबत और ताल्लुक़ात से, सिर्फ़ छूना मुराद नहीं)।

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مَعْرُوفٍ، وَهَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عِيَاضُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أُمِّ كُلْثُومٍ، عَنْ عَائِشَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ إِنَّ رَجُلاً سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَنِ الرَّجُلِ يُجَامِعُ أَهْلَهُ ثُمَّ يُكْسِلُ هَلْ عَلَيْهِمَا الْغُسْلُ وَعَائِشَةُ جَالِسَةٌ ‏.‏ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " إِنِّي لأَفْعَلُ ذَلِكَ أَنَا وَهَذِهِ ثُمَّ نَغْتَسِلُ "

(786) हज़रत आइशा (रज़ि.) नबी (ﷺ) की बीवी बयान करती हैं कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ऐसे इंसान के बारे में पूछा, जो अपनी बीवी से सोहबत करता है, फिर इन्ज़ाल नहीं होता, क्या उन पर ग़ुस्ल है? और आइशा (रज़ि.) भी वहाँ बैठी हुई थीं, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं और ये (दोनों) ये काम करते हैं, फिर हम दोनों नहाते हैं।'

फ़वाइद : (1) शरई मस्लिहत और ज़रूरत के तहत मसले की वज़ाहत के लिये बीवी की मौजूदगी में या माँ से ऐसी बातचीत और सवाल जाइज़ है जो आम हालात में शर्म व हया और आर का बाइस बनता है। इसलिये ये नहीं कहा जा सकता कि अबू मूसा (रज़ि.) ने आइशा (रज़ि.) से ये सवाल क्यों किया या उस आदमी ने आइशा (रज़ि.) की मौजूदगी में ये सवाल क्यों किया और आपने इस अन्दाज़ से जवाब क्यों दिया। वो वक़्त शरीअते दीन के नुज़ूल और बयान व तौज़ीह का था, अगर इन मसाइल के पूछने में शर्म व हया को हाइल किया जाता तो इन मसाइल का हमें किस तरह इल्म होता? और हम दूसरों को किस तरह बता सकते? और उनकी तसल्ली व तशफ़्फ़ी कर पाते? (2) तमाम उम्मत का इज्माअ है कि मियाँ-बीवी जब आपस में सोहबत करें अगरचे इन्ज़ाल न भी हो तो ग़ुस्ल करना लाज़िमी है। यहाँ तक कि उलमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है अगर कोई इंसान नाजाइज़ हरकत का इर्तिकाब करते हुए, जुर्म व गुनाह का मुर्तकिब हो और किसी जानवर, मर्द, बच्चे, ज़िन्दा हो या मुर्दा, बालिग़ हो या नाबालिग़, अपना अ़ज़्व उसके अ़ज़्व में दाख़िल कर देता है, इन्ज़ाल हो या न, इंसान होने की सूरत में दोनों पर ग़ुस्ल लाज़िम होगा। मासूम, बच्चे, बच्ची को भी नहलाया जायेगा और उसके लिये इंसान के पूरे अ़ज़्व का दाख़िल होना भी शर्त नहीं है। बल्कि हसफ़ा (सुपारी) का दाख़िल होना काफ़ी है। यहाँ तक कि सहीह बात ये है कि कपड़ा लपेटकर, हरकत करे तो तब भी ग़ुस्ल लाज़िम होगा, इस हरकत का जुर्म और क़ाबिले गिरफ़्त व ताज़ीर होना अपनी जगह है।

बाब 23 : आग पर पकी चीज़ (खाने) से वुज़ू करना

باب الْوُضُوءِ مِمَّا مَسَّتِ النَّارُ

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، حَدَّثَنِي عُقَيْلُ بْنُ خَالِدٍ، قَالَ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ، أَنَّ خَارِجَةَ بْنَ زَيْدٍ الأَنْصَارِيَّ، أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَاهُ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " الْوُضُوءُ مِمَّا مَسَّتِ النَّارُ "

(787) हज़रत ज़ैद बिन स़ाबित (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से फ़रमाते हुए सुना, 'आग से पकी चीज़ (खाने के बाद) वुज़ू करो।'
(नसाई : 1/107)

قَالَ ابْنُ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ إِبْرَاهِيمَ بْنِ قَارِظٍ، أَخْبَرَهُ أَنَّهُ، وَجَدَ أَبَا هُرَيْرَةَ يَتَوَضَّأُ عَلَى الْمَسْجِدِ فَقَالَ إِنَّمَا أَتَوَضَّأُ مِنْ أَثْوَارِ أَقِطٍ أَكَلْتُهَا لأَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " تَوَضَّئُوا مِمَّا مَسَّتِ النَّارُ " .

(788) अब्दुल्लाह बिन इब्राहीम बिन क़ारिज़ की रिवायत बयान करते हैं कि मैंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को मस्जिद में वुज़ू करते हुए पाया तो अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बताया, मैं तो पनीर के टुकड़े खाने से वुज़ू कर रहा हूँ क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप फ़रमा रहे थे, 'आग पर पकी चीज़ से वुज़ू करो।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अस़्वार : स़ौर की जमा, टुकड़े। **(2) अक़ित :** पनीर।

قَالَ ابْنُ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ خَالِدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ عُثْمَانَ، وَأَنَا أُحَدِّثُهُ، هَذَا الْحَدِيثَ . أَنَّهُ سَأَلَ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ عَنِ الْوُضُوءِ، مِمَّا مَسَّتِ النَّارُ فَقَالَ عُرْوَةُ سَمِعْتُ عَائِشَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم تَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " تَوَضَّئُوا مِمَّا مَسَّتِ النَّارُ " .

(789) इब्ने शिहाब ने कहा, मुझे सईद बिन ख़ालिद बिन अ़म्र बिन उ़समान ने बताया जबकि मैं उसे ये हदीस़ सुना रहा था कि उसने उ़रवह बिन ज़ुबैर से आग पर पकी चीज़ से वुज़ू करने के बारे में सवाल किया? तो उ़रवह ने कहा, मैंने उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बताया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'आग पर पकी चीज़ से वुज़ू करो।'

बाब 24 : आग पर पकी चीज़ से वुज़ू करना मन्सूख़ हो चुका है (हुक्म उठ चुका है)

باب نَسْخِ " الْوُضُوءِ مِمَّا مَسَّتِ النَّارُ "

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَكَلَ كَتِفَ شَاةٍ ثُمَّ صَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ .

(790) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बकरी के शाने का गोश्त खाया, फिर नमाज़ पढ़ी और वुज़ू नहीं किया।

(इब्ने माजह : 490)

وَحَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، أَخْبَرَنِي وَهْبُ بْنُ كَيْسَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، ح وَحَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَلِيٍّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم أَكَلَ عَرْقًا - أَوْ لَحْمًا - ثُمَّ صَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ وَلَمْ يَمَسَّ مَاءً .

(791) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हड्डी पर लगा गोश्त या सिर्फ़ गोश्त खाया फिर नमाज़ पढ़ी और वुज़ू नहीं किया और न पानी को हाथ लगाया।

(सहीह बुख़ारी : 208 675, 2933, 5408, 5422, 5462, तिर्मिज़ी : 1836, इब्ने माजह : 490)

मुफ़रदातुल हदीस़ : अ़रक़ : हड्डी जिस पर थोड़ा सा गोश्त हो।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ عَمْرِو بْنِ أُمَيَّةَ الضَّمْرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ رَأَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَحْتَزُّ مِنْ كَتِفٍ يَأْكُلُ مِنْهَا ثُمَّ صَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ .

(792) जाफ़र बिन अ़म्र बिन उमैया ज़मरी अपने बाप से रिवायत बयान करते हैं कि उसने रसूलुल्लाह (ﷺ) को दस्ती का गोश्त छुरी से काटकर खाते हुए देखा, फिर आपने नमाज़ पढ़ी और वुज़ू नहीं किया।

मुफ़रदातुल हदीस़ : यहतज़्ज़ु : वो छुरी से काट रहे थे, छुरी को सिक्कीन इसलिये कहते हैं कि वो मज़्बूह चीज़ की हरकत को ख़त्म कर देती है।

حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ عِيسَى، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ عَمْرِو بْنِ أُمَيَّةَ الضَّمْرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَحْتَزُّ مِنْ كَتِفِ شَاةٍ فَأَكَلَ مِنْهَا فَدُعِيَ إِلَى الصَّلاَةِ فَقَامَ وَطَرَحَ السِّكِّينَ وَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ .

(793) जाफ़र बिन अम्र बिन उमैया ज़मरी अपने बाप से रिवायत बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को छुरी से बकरी की दस्ती काटते देखा, आपने उससे खाया, फिर आपको नमाज़ के लिये बुलाया गया, आप उठे, छुरी फेंक दी, नमाज़ पढ़ी और वुज़ू नहीं किया।

قَالَ ابْنُ شِهَابٍ وَحَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ بِذَلِكَ .

(794) इब्ने शिहाब ने कहा, मुझे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने अपने बाप से रसूलुल्लाह (ﷺ) का यही फ़ेअ़ल नक़ल किया।

قَالَ عَمْرٌو وَحَدَّثَنِي بُكَيْرُ بْنُ الأَشَجِّ، عَنْ كُرَيْبٍ، مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ مَيْمُونَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَكَلَ عِنْدَهَا كَتِفًا ثُمَّ صَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ .

(795) नबी (ﷺ) की जौज़ा मैमूना (रज़ि.) बयान करती हैं कि नबी (ﷺ) ने उनके यहाँ दस्ती का गोश्त खाया, फिर नमाज़ पढ़ी और वुज़ू नहीं किया।

قَالَ عَمْرٌو حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ رَبِيعَةَ، عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ الأَشَجِّ، عَنْ كُرَيْبٍ، مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ مَيْمُونَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ بِذَلِكَ .

(796) अ़म्र ने कहा, मुझे जाफ़र बिन रबीआ़ ने याक़ूब बिन अशज से इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के मौला कुरैब से, नबी (ﷺ) की जौज़ा मैमूना (रज़ि.) से मज़्कूरा बाला रिवायत सुनाई।

قَالَ عَمْرٌو حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي هِلاَلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي غَطَفَانَ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، قَالَ أَشْهَدُ لَكُنْتُ أَشْوِي لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ بَطْنَ الشَّاةِ ثُمَّ صَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ

(797) हज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये बकरी की कलेजी वग़ैरह भूनता था (आप उसे खाते) फिर नमाज़ पढ़ते और वुज़ू न करते थे।

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) **अश्वी :** मैं भूनता था। (2) **बतनश्शात :** बकरी के पेट की चीज़(कलेजी, जिगर-ओझड़ी)

(798) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दूध नौश फ़रमाया, फिर पानी तलब किया और कुल्ली की और फ़रमाया, 'इसमें चिकनाहट है।'
(सहीह बुख़ारी : 211, 5609, अबू दाऊद : 196, तिर्मिज़ी : 89, नसाई : 1/109, इब्ने माजह : 498)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم شَرِبَ لَبَنًا ثُمَّ دَعَا بِمَاءٍ فَتَمَضْمَضَ وَقَالَ " إِنَّ لَهُ دَسَمًا " .

(799) इमाम साहब मज़्कूरा बाला रिवायत अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ عِيسَى، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، وَأَخْبَرَنِي عَمْرٌو، ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، ح وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي يُونُسُ، كُلُّهُمْ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، بِإِسْنَادِ عُقَيْلٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ، مِثْلَهُ .

(800) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने कपड़े पहने, फिर नमाज़ के लिये निकले तो आपको रोटी और गोश्त का तोहफ़ा पेश किया गया, आपने तीन लुक़्मे तनावुल फ़रमाये। फिर लोगों को नमाज़ पढ़ाई और पानी को हाथ नहीं लगाया।

وَحَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ حَلْحَلَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم جَمَعَ عَلَيْهِ ثِيَابَهُ ثُمَّ خَرَجَ إِلَى الصَّلاَةِ فَأُتِيَ بِهَدِيَّةٍ خُبْزٍ وَلَحْمٍ فَأَكَلَ ثَلاَثَ لُقَمٍ ثُمَّ صَلَّى بِالنَّاسِ وَمَا مَسَّ مَاءً .

फ़वाइद : (1) इमाम मुस्लिम पहले उन रिवायात को लाये हैं जिनसे साबित होता है कि आग पर पकी हुई चीज़ के खाने से वुज़ू करना पड़ता है। उसके बाद वो हदीसें लाये हैं, जिनसे साबित होता है कि आग पर पकी चीज़ खाने से वुज़ू नहीं टूटता। इस उस्लूब और अन्दाज़ से मालूम होता है कि इमाम मुस्लिम के नज़दीक पहली क़िस्म की रिवायात मन्सूख़ हैं। इसलिये अरबी नुस्ख़े में दोनों क़िस्म की अहादीस़ पर अलग-अलग बाब क़ायम किये गये हैं। अगरचे बर्रे सग़ीर के नुस्ख़ों में दोनों क़िस्म की अहादीस़ पर अल्वुज़ूउ मिम्मा मस्सतिन्नार का बाब क़ायम किया गया है और वुज़ू के हुक्म की सराहत नहीं की गई। **(2)** जुम्हूर सलफ़ व ख़लफ़, सहाबा व ताबेईन और अइम्मए अरबआ का क़ौल यही है कि आग पर पके खाने के इस्तेमाल से वुज़ू नहीं टूटता, लेकिन कुछ ताबेईन, उमर बिन अब्दुल

अ़ज़ीज़, ज़ोहरी, हसन बसरी और अबू क़िलाबा का नज़रिया ये है कि इससे वुज़ू टूट जाता है। सहीह नज़रिया जुम्हूर का है। क्योंकि ख़ुलफ़ाए राशिदीन का अ़मल इसका ताईद करने वाला है और हज़रत जाबिर की हदीस़ नस्ख़ पर सराहतन दलालत करती है। (3) खाने के बाद नमाज़ वाले वुज़ू की ज़रूरत नहीं है। लेकिन हाथ और मुँह की सफ़ाई के लिये बेहतर है कि खाने से पहले और बाद में हाथ-मुँह धो लिये जायें, क्योंकि खाना खाने के बाद हाथ-मुँह खाने से मुतास्सिर होते हैं और आपने दूध की चिकनाहट की बिना पर कुल्ली की है। आज-कल के खाने चिकनाहट से भरपूर होते हैं।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ كَثِيرٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ، قَالَ كُنْتُ مَعَ ابْنِ عَبَّاسٍ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمَعْنَى حَدِيثِ ابْنِ حَلْحَلَةَ وَفِيهِ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ، شَهِدَ ذَلِكَ مِنَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . وَقَالَ صَلَّى وَلَمْ يَقُلْ بِالنَّاسِ .

(801) मुहम्मद बिन अ़म्र बिन अ़ता बयान करते हैं, मैं इब्ने अ़ब्बास के साथ था फिर ऊपर वाली हदीस़ बयान की और उसमें है कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने नबी (ﷺ) को ये काम करते देखा और कहा, आपने नमाज़ पढ़ी। ये नहीं कहा, लोगों को नमाज़ पढ़ाई।

باب الْوُضُوءِ مِنْ لُحُومِ الإِبِلِ

बाब 25 : ऊँट के गोश्त (खाने) से वुज़ू

حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، فُضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ الْجَحْدَرِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَوْهَبٍ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ أَبِي ثَوْرٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، أَنَّ رَجُلاً، سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَأَتَوَضَّأُ مِنْ لُحُومِ الْغَنَمِ قَالَ " إِنْ شِئْتَ فَتَوَضَّأْ وَإِنْ شِئْتَ فَلاَ تَوَضَّأْ " . قَالَ أَتَوَضَّأُ مِنْ لُحُومِ الإِبِلِ قَالَ " نَعَمْ فَتَوَضَّأْ مِنْ لُحُومِ الإِبِلِ " . قَالَ أُصَلِّي فِي مَرَابِضِ الْغَنَمِ قَالَ " نَعَمْ " . قَالَ أُصَلِّي فِي مَبَارِكِ الإِبِلِ قَالَ " لاَ "

(802) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा, क्या मैं बकरी के गोश्त से वुज़ू करूँ? आपने फ़रमाया, 'तेरी मर्ज़ी है, चाहो तो वुज़ू कर लो और चाहो तो वुज़ू न करो।' उसने पूछा, ऊँट के गोश्त से वुज़ू करूँ? आपने फ़रमाया, 'हाँ! ऊँट के गोश्त के खाने के बाद वुज़ू कर।' उसने पूछा, क्या बकरियों के बाड़े में नमाज़ पढ़ लूँ? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हाँ!' उसने पूछा, ऊँटों के बिठाने की जगह पढ़ लूँ? आपने फ़रमाया, 'नहीं।'

(इब्ने माजह : 495)

(803) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو، حَدَّثَنَا زَائِدَةُ، عَنْ سِمَاكٍ، ح وَحَدَّثَنِي الْقَاسِمُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ شَيْبَانَ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَوْهَبٍ، وَأَشْعَثَ بْنِ أَبِي الشَّعْثَاءِ، كُلُّهُمْ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ أَبِي ثَوْرٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِ حَدِيثِ أَبِي كَامِلٍ عَنْ أَبِي عَوَانَةَ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) मराबिज़ : मरबज़ की जमा है, बकरियों का बाड़ा। **(2) मबारिक :** मबरक की जमा है ऊँटों के बैठने की जगह, ऊँटों का बाड़ा।

फ़वाइद : (1) जुम्हूर सहाबा व ताबेईन और अइम्मए सलास़ा के नज़दीक, ऊँट का गोश्त खाने से वुज़ू नहीं टूटता। अहमद बिन हम्बल, इस्हाक़ बिन राहवे, इब्ने ख़ुज़ैमा और मुहद्दिस़ीन के नज़दीक ऊँट के गोश्त से वुज़ू टूट जाता है और यही हक़ है उसके गोश्त की तासीर, दूसरे गोश्तों से अलग है। **(2)** ऊँट एक ज़बरदस्त, ताक़तवर और शरीर जानवर है, जिसके लात मारने का ख़तरा लाहिक़ रहता है। इसलिये ऐसी सूरत में जबकि उससे ख़तरा हो, उसके क़रीब नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिये, उससे फ़ासले पर जहाँ ख़तरा न हो, नमाज़ पढ़ने में कोई हर्ज नहीं है। जैसाकि दूसरी रिवायात से स़ाबित है।

बाब 26 : यक़ीनी तहारत के बाद बेवुज़ू हो जाने के शक की सूरत में पहली यक़ीनी तहारत ही से नमाज़ पढ़ ली जायेगी

باب الدَّلِيلِ عَلَى أَنَّ مَنْ تَيَقَّنَ الطَّهَارَةَ ثُمَّ شَكَّ فِي الْحَدَثِ فَلَهُ أَنْ يُصَلِّيَ بِطَهَارَتِهِ تِلْكَ

(804) सईद और अब्बाद बिन तमीम अपने चाचा से रिवायत सुनाते हैं कि नबी (ﷺ) से एक इंसान की शिकायत की कि उसे नमाज़ में ये ख़याल आता है कि वुज़ू टूट गया है। आपने फ़रमाया, 'उस वक़्त तक नमाज़ न तोड़े, जब तक उसे (हवा निकलने की) आवाज़ सुनाई

وَحَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، قَالَ عَمْرٌو حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ، وَعَبَّادِ بْنِ تَمِيمٍ، عَنْ عَمِّهِ، شُكِيَ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم

الرَّجُلُ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ أَنَّهُ يَجِدُ الشَّىْءَ فِي الصَّلاَةِ قَالَ " لاَ يَنْصَرِفُ حَتَّى يَسْمَعَ صَوْتًا أَوْ يَجِدَ رِيحًا " . قَالَ أَبُو بَكْرٍ وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ فِي رِوَايَتِهِمَا هُوَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ زَيْدٍ .

न दे या उसे बदबू महसूस न हो।' अबू बक्र बिन ज़ुहैर बिन हरब ने अपनी रिवायत में अ़ब्बाद बिन तमीम के चाचा का नाम अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद बताया।

(सहीह बुख़ारी : 137, 177, 256, अबू दाऊद : 176, नसाई : 1/99, इब्ने माजह : 153)

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا وَجَدَ أَحَدُكُمْ فِي بَطْنِهِ شَيْئًا فَأَشْكَلَ عَلَيْهِ أَخَرَجَ مِنْهُ شَىْءٌ أَمْ لاَ فَلاَ يَخْرُجَنَّ مِنَ الْمَسْجِدِ حَتَّى يَسْمَعَ صَوْتًا أَوْ يَجِدَ رِيحًا " .

(805) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से किसी को अपने पेट में गड़बड़ी महसूस हो और उसे शक पैदा हो जाये कि उसके पेट से कुछ निकला है या नहीं तो हर्गिज़ उस वक़्त तक मस्जिद से न निकले, जब तक रीह की आवाज़ या बदबू महसूस न करे।'

फ़ायदा : इस हदीस़ से ये उसूल और ज़ाबता निकलता है कि ला यज़ूलुल यक़ीन बिश्शक्क कि यक़ीन, शक से ज़ाइल (ख़त्म) नहीं होता और हर चीज़ अपने असल पर क़ायम और बरक़रार रहेगी, जब तक उसके ख़िलाफ़ यक़ीन हासिल नहीं होता। इसलिये जुम्हूर अइम्मा का मौक़िफ़ यही है कि वुज़ू उस वक़्त तक नहीं टूटेगा, जब तक उसका यक़ीन हासिल न हो। हाँ! इमाम मालिक (रह.) से दो क़ौल मन्क़ूल हैं (1) शक से हर हालत में (नमाज़ के अंदर और नमाज़ से बाहर) वुज़ू टूट जायेगा। (2) अगर नमाज़ शुरू न की हो तो शक से वुज़ू टूट जायेगा, लेकिन जुम्हूर का मौक़िफ़ हदीस़ के मुताबिक़ है।

باب طَهَارَةِ جُلُودِ الْمَيْتَةِ بِالدِّبَاغِ

बाब 27 : मुर्दार जानवर के चमड़े के रंगने से पाक हो जाना

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَعَمْرٌو النَّاقِدُ وَابْنُ أَبِي عُمَرَ جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ

(806) हमें यहया बिन यहया, अबू बक्र बिन अबी शैबा, अ़म्र नाक़िद और इब्ने अबी उ़मर सबने, इब्ने उ़यय्ना से रिवायत सुनाई, यहया ने कहा, हमें सुफ़ियान बिन उ़यय्ना ने ज़ोहरी से, उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह की इब्ने अ़ब्बास

(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ऐसी बकरी मुर्दा पाई जो हजरत मैमूना की आज़ाद कर्दा लोंडी को सदक़ा में दी गई तो रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुमने उसके चमड़े से फ़ायदा क्यों नहीं उठाया।' उन्होंने कहा, ये मुर्दा है। तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बस उसका खाना हराम है।'

अबू बक्र और इब्ने अबी उ़मर ने अपनी रिवायत में अ़न इब्ने अ़ब्बास, अ़न मैमूना कहा (रिवायत इब्ने अ़ब्बास की बजाय मैमूना की तरफ़ मन्सूब की)।

(सहीह बुख़ारी : 1492, 2221, 5531, अबू दाऊद : 4120, 4121, नसाई : 7/172).

اللَّهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ تُصُدِّقَ عَلَى مَوْلاَةٍ لِمَيْمُونَةَ بِشَاةٍ فَمَاتَتْ فَمَرَّ بِهَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " هَلاَّ أَخَذْتُمْ إِهَابَهَا فَدَبَغْتُمُوهُ فَانْتَفَعْتُمْ بِهِ " . فَقَالُوا إِنَّهَا مَيْتَةٌ . فَقَالَ " إِنَّمَا حَرُمَ أَكْلُهَا " . قَالَ أَبُو بَكْرٍ وَابْنُ أَبِي عُمَرَ فِي حَدِيثِهِمَا عَنْ مَيْمُونَةَ رضى الله عنها .

फ़ायदा: इस हदीस़ से मालूम हुआ, हलाल जानवर अगर मर जाये तो उसका चमड़ा रंगने से पाक हो जाता है।

(807) मुझे अबू ताहिर और हरमला ने इब्ने वहब के वास्ते से यूनुस की इब्ने शिहाब से उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़तबा की इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत सुनाई कि हज़रत मैमूना (रज़ि.) की आज़ाद करदा लौण्डी को एक बकरी सदक़े में मिली थी। वो मर गई, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) उसके पास से गुज़रे तो आपने फ़रमाया, 'तुमने उसका चमड़ा क्यों नहीं उतारा, तो तुम उसे रंग लेते और उससे तुम फ़ायदा उठा लेते।' उन्होंने कहा, वो मुर्दा है। तो आपने फ़रमाया, 'बस उसका खाना हराम है।'

وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، وَحَرْمَلَةُ، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَجَدَ شَاةً مَيْتَةً أُعْطِيَتْهَا مَوْلاَةٌ لِمَيْمُونَةَ مِنَ الصَّدَقَةِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " هَلاَّ انْتَفَعْتُمْ بِجِلْدِهَا " . قَالُوا إِنَّهَا مَيْتَةٌ . فَقَالَ " إِنَّمَا حَرُمَ أَكْلُهَا " .

(808) हसन हुल्वानी और अ़ब्द बिन हुमैद ने याक़ूब बिन इब्राहीम बिन सअ़द से, अपने बाप की सालेह से इब्ने शिहाब की मज़्कूरा

حَدَّثَنَا حَسَنٌ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، جَمِيعًا عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ،

حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ بِنَحْوِ رِوَايَةِ يُونُسَ .

बाला सनद से, यूनुस की हदीस़ के मफ़्हूम वाली रिवायत सुनाई।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الزُّهْرِيُّ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ أَبِي عُمَرَ - قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ عَطَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَرَّ بِشَاةٍ مَطْرُوحَةٍ أُعْطِيَتْهَا مَوْلاَةٌ لِمَيْمُونَةَ مِنَ الصَّدَقَةِ فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " أَلاَّ أَخَذُوا إِهَابَهَا فَدَبَغُوهُ فَانْتَفَعُوا بِهِ " .

(809) हमें इब्ने अबी ड़मर और अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ज़ोहरी ने (अल्फ़ाज़ इब्ने अबी ड़मर के हैं) सुफ़ियान के वास्ते से अ़म्र की अ़ता से इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की रिवायत सुनाई कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक मुर्दा पड़ी हुई बकरी के पास से गुज़रे, जो मैमूना (रज़ि.) की बान्दी को बतौरे सदक़ा दी गई थी। तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उन्होंने उसके चमड़े को क्यों नहीं उतारा? वो उसको रंग लेते और फ़ायदा उठा लेते।'
(नसाई : 7/172-173)

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ النَّوْفَلِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ، مُنْذُ حِينٍ قَالَ أَخْبَرَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ، أَنَّ مَيْمُونَةَ، أَخْبَرَتْهُ أَنَّ دَاجِنَةً كَانَتْ لِبَعْضِ نِسَاءِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَمَاتَتْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَلاَّ أَخَذْتُمْ إِهَابَهَا فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهِ " .

(810) हज़रत मैमूना (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की किसी ज़ौजा की घर में पलने वाली बकरी मर गई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुमने इसका चमड़ा उतार कर इससे फ़ायदा क्यों नहीं उठा लिया?'
(अबू दाऊद : 4120, नसाई, इब्ने माजह : 3610)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحِيمِ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ أَبِي سُلَيْمَانَ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم مَرَّ بِشَاةٍ لِمَوْلاَةٍ لِمَيْمُونَةَ فَقَالَ " أَلاَّ انْتَفَعْتُمْ بِإِهَابِهَا " .

(811) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) मैमूना की बान्दी की (मुर्दा) बकरी के पास से गुज़रे तो आपने फ़रमाया, 'तुमने उसके चमड़े से फ़ायदा क्यों नहीं उठाया?'

(812) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़रमाया, 'जब चमड़े को रंग लिया गया तो वो पाक हो गया।'
(अबू दाऊद : 4123, तिर्मिज़ी : 1728, नसाई : 8/173, 7/173, इब्ने माजह : 3609)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ وَعْلَةَ، أَخْبَرَهُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِذَا دُبِغَ الإِهَابُ فَقَدْ طَهُرَ " .

(813) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، جَمِيعًا عَنْ وَكِيعٍ، عَنْ سُفْيَانَ، كُلُّهُمْ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ وَعْلَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ يَعْنِي حَدِيثَ يَحْيَى بْنِ يَحْيَى .

(814) अबुल ख़ैर से रिवायत है कि मैंने अली बिन वअलह सबाई को एक पोस्तीन (चमड़े का कोट) पहने हुए देखा। मैंने उसको छूआ तो उसने कहा, इसको क्यों छूते हो मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से पूछा था, हम मग़रिब में रहते हैं और हमारे साथ बरबर और मजूसी रहते हैं, हमारे पास मेण्ढा लाया जाता है, जिसे उन्होंने ज़िब्ह किया होता है और हम उनके ज़बीहा किए हुए जानवर नहीं खाते, वो हमारे पास मश्कीज़ा लाते हैं, जिसमें वो चर्बी डालते हैं? तो इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने जवाब दिया, हमने

حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا وَقَالَ ابْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ الرَّبِيعِ، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، أَنَّ أَبَا الْخَيْرِ، حَدَّثَهُ قَالَ رَأَيْتُ عَلَى ابْنِ وَعْلَةَ السَّبَئِيِّ فَرْوًا فَمَسِسْتُهُ فَقَالَ مَا لَكَ تَمَسُّهُ قَدْ سَأَلْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ قُلْتُ إِنَّا نَكُونُ بِالْمَغْرِبِ وَمَعَنَا الْبَرْبَرُ وَالْمَجُوسُ نُؤْتَى بِالْكَبْشِ قَدْ ذَبَحُوهُ وَنَحْنُ لاَ نَأْكُلُ ذَبَائِحَهُمْ وَيَأْتُونَا بِالسِّقَاءِ

يَجْعَلُونَ فِيهِ الْوَدَكَ . فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ قَدْ سَأَلْنَا رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ " دِبَاغُهُ طَهُورُهُ " .

रसूलुल्लाह (ﷺ) से इसके बारे में पूछा, तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उसका रंगना, उसको पाक कर देता है।'

وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ الرَّبِيعِ، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيعَةَ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ، حَدَّثَهُ قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ وَعْلَةَ السَّبَئِيُّ، قَالَ سَأَلْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ قُلْتُ إِنَّا نَكُونُ بِالْمَغْرِبِ فَيَأْتِينَا الْمَجُوسُ بِالأَسْقِيَةِ فِيهَا الْمَاءُ وَالْوَدَكُ فَقَالَ اشْرَبْ . فَقُلْتُ أَرَأْىٌ تَرَاهُ فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " دِبَاغُهُ طَهُورُهُ " .

(815) इब्ने वअलह सबाई से रिवायत है कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से पूछा, हम मग़रिब में रहते हैं तो हमारे पास मजूसी पानी और चर्बी के मश्कीज़े लाते हैं तो उन्होंने कहा, पी लिया करो। मैंने पूछा, क्या आप अपनी राय से बता रहे हैं? इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने जवाब दिया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना, 'उसका रंगना उसको पाक कर देता है।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अस्क़ियह : सिक़ा की जमा है। चमड़े के मश्कीज़े को कहते हैं। **(2) दबाग़त :** हर उस चीज़ से जाइज़ है जो खाल की रुतूबत (तरी) को ख़ुश्क करके, उसकी बदबू को ज़ाइल (ख़त्म) कर दे और खाल सड़ने-गलने से महफ़ूज़ हो जाये।

फ़ायदा : अहादीसे मज़्कूरा बाला में सिर्फ़ जाइज़ हैवानात का या मजूसियों के मश्कीज़ों का तज़्किरा है। हलाल जानवर की खाल के दबाग़त से पाक होने में कोई इख़ितलाफ़ नहीं। हिल्लत व हुरमत से क़तअ़े नज़र, उ़मूमी तौर पर अइम्मा के मुख़्तलिफ़ नज़रियात हैं (1) इमाम शाफ़ेई के नज़दीक, सूअर और कुत्ते के सिवा हर एक मुर्दा जानवर की खाल, अंदर और बाहर से पाक हो जाती हैं, इसलिये उसमें ख़ुश्क और तर हर क़िस्म की चीज़ रखी जा सकती है। (2) इमाम मालिक और इमाम अहमद (रह.) का मशहूर क़ौल ये है दबाग़त से किसी मुर्दा जानवर की खाल पाक नहीं होती। हज़रत उ़मर और हज़रत आइशा (रज़ि.) की तरफ़ यही क़ौल मन्सूब है। (3) इमाम औज़ाई, इब्नुल मुबारक और इस्हाक़ बिन राहवे का नज़रिया ये है कि सिर्फ़ हलाल जानवर की खाल रंगने से पाक हो जाती है। हराम जानवर की खाल पाक नहीं होती। (4) इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के नज़दीक ख़िन्जीर के सिवा हर मुर्दार जानवर की खाल रंगने से पाक हो जाती है। (5) इमाम मालिक का दूसरा क़ौल ये है, रंगने से सब खालें पाक हो जाती हैं, मगर सिर्फ़ बाहर से, अंदर से नहीं। इसलिये उनमें कोई तर चीज़ नहीं डाली जा सकती।

(6) हर जानवर की खाल, अंदर और बाहर से रंगने से पाक हो जाती है। इमाम अबू यूसुफ़ और दाऊद ज़ाहिरी का यही मौक़िफ़ है। (7) बिला रंगे हुए ही मुर्दा जानवर की खाल से फ़ायदा उठाया जा सकता है, इमाम ज़ोहरी और कुछ शाफ़ेइयों का यही नज़रिया है।

बाब 28 : तयम्मुम का बयान

باب التَّيَمُّمِ

(816) हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बताया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ किसी सफ़र में निकले जब हम मक़ामे बैदा या ज़ातल जैश पर पहुँचे तो मेरा हार टूट कर गिर गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) उसकी तलाश की ख़ातिर ठहर गये और सहाबा किराम (रज़ि.) भी आपके साथ रुक गये, उस जगह पानी न था और लोगों के पास भी (पहले से) मौजूद न था। लोग अबू बकर (रज़ि.) के पास आये और कहा, क्या आपको पता नहीं, आइशा (रज़ि.) ने क्या किया? रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपके साथ लोगों को रोके रखा है, न इस जगह पानी है और न ही लोगों के पास पानी मौजूद है। अबू बकर (रज़ि.) इस हालत में तशरीफ़ लाये कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरी रान पर सर रखकर सो चुके थे और कहा, तूने रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपके साथियों को रोके रखा है जबकि यहाँ पानी नहीं है और लोगों के पास भी पानी नहीं। आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, अबू बकर ने मुझे डांटा और जो कुछ अल्लाह को मन्ज़ूर था कहा और अपने हाथ से मेरी कोख में कचोके लगाने लगे और मुझे सिर्फ़ उस चीज़ ने हरकत करने से रोके रखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का सर मेरी

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا قَالَتْ خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالْبَيْدَاءِ - أَوْ بِذَاتِ الْجَيْشِ - انْقَطَعَ عِقْدٌ لِي فَأَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى الْتِمَاسِهِ وَأَقَامَ النَّاسُ مَعَهُ وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ فَأَتَى النَّاسُ إِلَى أَبِي بَكْرٍ فَقَالُوا أَلاَ تَرَى إِلَى مَا صَنَعَتْ عَائِشَةُ أَقَامَتْ بِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَبِالنَّاسِ مَعَهُ وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ . فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَاضِعٌ رَأْسَهُ عَلَى فَخِذِي قَدْ نَامَ فَقَالَ حَبَسْتِ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَالنَّاسَ وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ . قَالَتْ فَعَاتَبَنِي أَبُو بَكْرٍ وَقَالَ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَقُولَ وَجَعَلَ يَطْعُنُ بِيَدِهِ

فِي خَاصِرَتِي فَلاَ يَمْنَعُنِي مِنَ التَّحَرُّكِ إِلاَّ مَكَانُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى فَخِذِي فَنَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى أَصْبَحَ عَلَى غَيْرِ مَاءٍ فَأَنْزَلَ اللَّهُ آيَةَ التَّيَمُّمِ فَتَيَمَّمُوا . فَقَالَ أُسَيْدُ بْنُ الْحُضَيْرِ - وَهُوَ أَحَدُ النُّقَبَاءِ - مَا هِيَ بِأَوَّلِ بَرَكَتِكُمْ يَا آلَ أَبِي بَكْرٍ . فَقَالَتْ عَائِشَةُ فَبَعَثْنَا الْبَعِيرَ الَّذِي كُنْتُ عَلَيْهِ فَوَجَدْنَا الْعِقْدَ تَحْتَهُ .

रान पर रखा हुआ था। रसूलुल्लाह (ﷺ) पानी के बग़ैर ही सुबह तक सोये रहे। इस पर अल्लाह तआला ने तयम्मुम की आयत उतारी तो सहाबा किराम (रज़ि.) ने तयम्मुम किया। उसैद बिन हुज़ैर जो नुक़बा में से है, ने कहा, ऐ अबू बकर की औलाद! ये आप की पहली बरकत नहीं है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा, हमने उस ऊँट को, जिस पर मैं सवार थी उठाया तो हमें उसके नीचे से हार मिल गया।
(सहीह बुख़ारी : 334, 3672, 4607, 6844, 5250)

मुफ़रदातुल हदीस : (1) **नुक़बा :** नक़ीब की जमा है, ज़िम्मेदार, निगरान व मुहाफ़िज़। (2) **इक़्द :** हार।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، وَابْنُ، بِشْرٍ عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا اسْتَعَارَتْ مِنْ أَسْمَاءَ قِلاَدَةً فَهَلَكَتْ فَأَرْسَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم نَاسًا مِنْ أَصْحَابِهِ فِي طَلَبِهَا فَأَدْرَكَتْهُمُ الصَّلاَةُ فَصَلَّوْا بِغَيْرِ وُضُوءٍ فَلَمَّا أَتَوُا النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم شَكَوْا ذَلِكَ إِلَيْهِ فَنَزَلَتْ آيَةُ التَّيَمُّمِ . فَقَالَ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ جَزَاكِ اللَّهُ خَيْرًا فَوَاللَّهِ مَا نَزَلَ بِكِ أَمْرٌ قَطُّ إِلاَّ جَعَلَ اللَّهُ لَكِ مِنْهُ مَخْرَجًا وَجَعَلَ لِلْمُسْلِمِينَ فِيهِ بَرَكَةً .

(817) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि उसने असमा (रज़ि.) से आरियतन हार लिया और वो ज़ाया हो गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने कुछ साथियों को उसकी तलाश की ख़ातिर भेजा। उन्हें नमाज़ के वक़्त ने आ लिया, तो उन्होंने बग़ैर वुज़ू के नमाज़ पढ़ ली और जब नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो इस बात की शिकायत की। इस पर तयम्मुम की आयत उतरी तो उसैद बिन हुज़ैर ने कहा, (ऐ आइशा!) अल्लाह आपको बेहतरीन जज़ा दे, अल्लाह की क़सम! आप किसी परेशानी में मुब्तला होती हैं तो अल्लाह तआला आपके लिये उससे निकलने की सबील (राह) पैदा कर देता है और वो चीज़ मुसलमानों के लिये बाइसे बरकत बनती है।
(सहीह बुख़ारी : 5164, 3773, इब्ने माजह : 568)

फ़वाइद : (1) इस हदीस से साबित हुआ अगर किसी इंसान को पानी और मिट्टी दोनों मुयस्सर न हों तो वो बिला वुज़ू नमाज़ पढ़ ले और इस मसले में अइम्मा का इख़्तिलाफ़ है। इमाम अहमद, इमाम शाफ़ेई और अक्सर मुहद्दिसीन का ख़्याल ये है कि बिला वुज़ू नमाज़ पढ़ ले, फिर जब पानी मिल जाये तो इमाम शाफ़ेई (रह.) के नज़दीक नमाज़ दोबारा पढ़नी होगी। इमाम अहमद, मुज़नी, सहनून और इब्ने मुन्ज़िर के नज़दीक नमाज़ दोबारा पढ़ने की ज़रूरत नहीं। इमाम बुख़ारी का रुझान भी इसी तरफ़ है और हदीस का तक़ाज़ा भी यही है क्योंकि आपने सहाबा किराम (रज़ि.) को इआदा करने (लौटाने) का हुक्म नहीं दिया। (2) इमाम मालिक और इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक नमाज़ पढ़ना ज़रूरी है (बक़ौल शौकानी) फिर इमाम मालिक के नज़दीक इआदा (लौटाना) नहीं है और अबू हनीफ़ा के नज़दीक इआदा ज़रूरी है लेकिन बक़ौल मौलाना शब्बीर अहमद उसमानी इमाम मालिक के नज़दीक नमाज़ नहीं पढ़ेगा और क़ज़ाई भी नहीं देगा। जैसाकि हाइज़ा का हुक्म है और इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक नमाज़ नहीं पढ़ेगा, लेकिन क़ज़ाई ज़रूरी है और साहिबैन के नज़दीक नमाज़ नहीं पढ़ेगा, सिर्फ़ नमाज़ियों की मुशाबिहत इख़्तियार करेगा, फिर क़ज़ाई ज़रूरी होगी। (3) बिला वुज़ू वक़्त पर नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है और बाद में क़ज़ाई लाज़िम भी है। सहाबा किराम (रज़ि.) को फ़ाक़िदुत्तुहूरैन इसलिये क़रार दिया गया है कि पानी मौजूद नहीं था और तयम्मुम का हुक्म अभी नाज़िल नहीं हुआ था। इसलिये उन्होंने बिला वुज़ू नमाज़ पढ़ ली और बाद में आकर आपको बता दिया। **(2)** आपने उसैद बिन हुज़ैर को हार की तलाश के लिये भेजा, हार न मिला तो वो वापस आ गये, जब सुबह कूच के लिये ऊँट उठाया तो उन्हें वहाँ से हार मिल गया। **(3)** सफ़र में पानी न मिले तो तयम्मुम करना जाइज़ है।

(818) शक़ीक़ से रिवायत है कि मैं अब्दुल्लाह और अबू मूसा की ख़िदमत में हाज़िर था। अबू मूसा (रज़ि.) ने अबू अब्दुर्रहमान से पूछा, बताइये अगर इंसान जुन्बी हो जाये और एक माह तक उसे पानी न मिले तो वो तयम्मुम न करे? तो नमाज़ का क्या करे? इस पर अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने जवाब दिया, वो तयम्मुम न करे, अगरचे उसे एक माह तक पानी न मिले तो इस पर अबू मूसा ने कहा, तो सूरह माइदा की इस आयत का क्या मतलब, 'अगर तुम पानी न पाओ तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो।' इस पर

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَابْنُ نُمَيْرٍ جَمِيعًا عَنْ أَبِي مُعَاوِيَةَ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقٍ، قَالَ كُنْتُ جَالِسًا مَعَ عَبْدِ اللَّهِ وَأَبِي مُوسَى فَقَالَ أَبُو مُوسَى يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَرَأَيْتَ لَوْ أَنَّ رَجُلاً أَجْنَبَ فَلَمْ يَجِدِ الْمَاءَ شَهْرًا كَيْفَ يَصْنَعُ بِالصَّلاَةِ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ لاَ يَتَيَمَّمُ وَإِنْ لَمْ يَجِدِ الْمَاءَ شَهْرًا . فَقَالَ أَبُو مُوسَى فَكَيْفَ بِهَذِهِ الآيَةِ

فِي سُورَةِ الْمَائِدَةِ { فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا} فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ لَوْ رُخِّصَ لَهُمْ فِي هَذِهِ الآيَةِ - لأَوْشَكَ إِذَا بَرَدَ عَلَيْهِمُ الْمَاءُ أَنْ يَتَيَمَّمُوا بِالصَّعِيدِ . فَقَالَ أَبُو مُوسَى لِعَبْدِ اللَّهِ أَلَمْ تَسْمَعْ قَوْلَ عَمَّارٍ بَعَثَنِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي حَاجَةٍ فَأَجْنَبْتُ فَلَمْ أَجِدِ الْمَاءَ فَتَمَرَّغْتُ فِي الصَّعِيدِ كَمَا تَمَرَّغُ الدَّابَّةُ ثُمَّ أَتَيْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ " إِنَّمَا كَانَ يَكْفِيكَ أَنْ تَقُولَ بِيَدَيْكَ هَكَذَا " . ثُمَّ ضَرَبَ بِيَدَيْهِ الأَرْضَ ضَرْبَةً وَاحِدَةً ثُمَّ مَسَحَ الشِّمَالَ عَلَى الْيَمِينِ وَظَاهِرَ كَفَّيْهِ وَوَجْهَهُ . فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ أَوَلَمْ تَرَ عُمَرَ لَمْ يَقْنَعْ بِقَوْلِ عَمَّارٍ

अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने जवाब दिया, अगर उन्हें इस आयत की बिना पर रुख़सत दे दी जाये तो ख़तरा है। जब उन्हें पानी ठण्डा महसूस होगा तो वो मिट्टी से तयम्मुम कर लेंगे। तो अबू मूसा (रज़ि.) ने अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से कहा, क्या आपने अ़म्मार (रज़ि.) की ये बात नहीं सुनी कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक ज़रूरत के लिये भेजा। मैं जुन्बी हो गया और मुझे पानी न मिला तो मैं चौपाये की तरह ज़मीन पर लोट-पोट हुआ (और नमाज़ पढ़ ली) फिर मैं नबी (ﷺ) के पास आया और आपसे इसका तज़्किरा किया तो आपने फ़रमाया, 'तेरे लिये बस अपने दोनों हाथों से इस तरह करना काफ़ी था।' फिर अपने दोनों हाथ एक ही बार ज़मीन पर मारे, फिर बायें हाथ को दायें पर और अपनी दोनों हथेलियों की पुश्त पर और अपने चेहरे पर मला। तो अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने जवाब दिया, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि उ़मर (रज़ि.) ने अ़म्मार के क़ौल पर क़नाअ़त व इत्मीनान का इज़हार नहीं किया।

(सहीह बुख़ारी : 345, 346,347, अबू दाऊद : 321, नसाई : 1/170-171)

फ़वाइद : (1) इस हदीस़ से मालूम हुआ अगर पानी न मिले तो ग़ुस्ले जनाबत की जगह वही तयम्मुम काफ़ी होगा, जो वुज़ू के क़ायम मक़ाम होता है और वो ये है कि दोनों हाथों को एक बार मिट्टी पर मारा जायेगा और अगर उन पर तिनके लग जायें या मिट्टी ज़्यादा लग जाये तो उन पर फूंक मार कर मुँह और दोनों हाथों पर कलाई तक मसह कर लेंगे और उससे नमाज़ पढ़ लेंगे। **(2)** हज़रत उ़मर (रज़ि.) के हज़रत अ़म्मार (रज़ि.) के क़ौल पर क़नाअ़त न करने की वजह ये है कि हज़रत अ़म्मार (रज़ि.) ने कहा था, आप भी उस सफ़र में मेरे साथ थे और आपके सामने ये वाक़िया पेश आया था। लेकिन हज़रत उ़मर (रज़ि.) को ये वाक़िया याद नहीं था, इसलिये उन्होंने हज़रत अ़म्मार (रज़ि.) को

हदीस़ बयान करने से नहीं रोका। सिर्फ़ अपनी मौजूदगी का इंकार किया। इमाम अहमद, इमाम इस्हाक़ और मुहद्दिसीन का मौक़िफ़ इसी रिवायत के मुताबिक़ है और यही सहीह और मुख़्तार है। (3) जनाबत की सूरत में अगर पानी न मिलेंगे तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ने पर उम्मत का इज्माअ है। हज़रत उ़मर और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) इस ज़रिये को रोकने के तौर पर जनाबत की सूरत में तयम्मुम की इजाज़त नहीं देते ताकि लोग इस रुख़्सत से ग़लत फ़ायदा न उठायें, वरना हज़रत उ़मर, हज़रत अ़म्मार (रज़ि.) और दूसरे सहाबा (रज़ि.) को इन अहादीस़ के बयान करने से रोक देते।

(819) शक़ीक़ से रिवायत है कि अबू मूसा (रज़ि.) ने अ़ब्दुल्लाह से पूछा, फिर ऊपर वाली हदीस़ वाक़िये समेत बयान की इतना फ़र्क़ है, उसमें है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तेरे लिये इस तरह करना ही काफ़ी था और दोनों हाथ ज़मीन पर मारे और अपने दोनों हाथ झाड़े और अपने चेहरे और हथेलियों पर मसह किया।'

وَحَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ شَقِيقٍ، قَالَ قَالَ أَبُو مُوسَى لِعَبْدِ اللَّهِ وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِقِصَّتِهِ نَحْوَ حَدِيثِ أَبِي مُعَاوِيَةَ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّمَا كَانَ يَكْفِيكَ أَنْ تَقُولَ هَكَذَا " . وَضَرَبَ بِيَدَيْهِ إِلَى الأَرْضِ فَنَفَضَ يَدَيْهِ فَمَسَحَ وَجْهَهُ وَكَفَّيْهِ .

(820) सईद बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन अबज़ा अपने बाप से बयान करते हैं कि एक आदमी हज़रत उ़मर (रज़ि.) के पास आया और पूछा, मैं जुन्बी हो गया और पानी न मिला तो उन्होंने जवाब दिया, नमाज़ न पढ़। तो अ़म्मार (रज़ि.) ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! क्या आपको याद नहीं, जब मैं और आप एक जंगी लश्कर के साथ थे तो हम जुन्बी हो गये और हमें पानी न मिला तो आपने नमाज़ न पढ़ी और मैं मिट्टी में लोट-पोट हो गया और नमाज़ पढ़ ली। तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तेरे लिये बस इतना ही काफ़ी था कि तुम अपने दोनों हाथ ज़मीन पर मारते, फिर उनमें फूंक मारकर

حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ هَاشِمٍ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، - يَعْنِي ابْنَ سَعِيدٍ الْقَطَّانَ - عَنْ شُعْبَةَ، قَالَ حَدَّثَنِي الْحَكَمُ، عَنْ ذَرٍّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبْزَى، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَجُلاً، أَتَى عُمَرَ فَقَالَ إِنِّي أَجْنَبْتُ فَلَمْ أَجِدْ مَاءً . فَقَالَ لاَ تُصَلِّ . فَقَالَ عَمَّارٌ أَمَا تَذْكُرُ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ أَنَا وَأَنْتَ فِي سَرِيَّةٍ فَأَجْنَبْنَا فَلَمْ نَجِدْ مَاءً فَأَمَّا أَنْتَ فَلَمْ تُصَلِّ وَأَمَّا أَنَا فَتَمَعَّكْتُ فِي التُّرَابِ وَصَلَّيْتُ . فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " إِنَّمَا كَانَ يَكْفِيكَ أَنْ

تَضْرِبَ بِيَدَيْكَ الأَرْضَ ثُمَّ تَنْفُخَ ثُمَّ تَمْسَحَ بِهِمَا وَجْهَكَ وَكَفَّيْكَ " . فَقَالَ عُمَرُ اتَّقِ اللَّهَ يَا عَمَّارُ . قَالَ إِنْ شِئْتَ لَمْ أُحَدِّثْ بِهِ . قَالَ الْحَكَمُ وَحَدَّثَنِيهِ ابْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبْزَى عَنْ أَبِيهِ مِثْلَ حَدِيثِ ذَرٍّ قَالَ وَحَدَّثَنِي سَلَمَةُ عَنْ ذَرٍّ فِي هَذَا الإِسْنَادِ الَّذِي ذَكَرَ الْحَكَمُ فَقَالَ عُمَرُ نُوَلِّيكَ مَا تَوَلَّيْتَ .

उन दोनों से अपने चेहरे और अपनी हथेलियों का मसह कर लेते।' हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, ऐ अम्मार! अल्लाह से डर। अम्मार (रज़ि.) ने जवाब दिया, अगर आप चाहते हैं तो मैं ये वाक़िया बयान ही न करूँ। हकम ने कहा यही रिवायत मुझे इब्ने अब्दुर्रहमान बिन अबज़ा ने अपने बाप से ज़र की हदीस़ की तरह सुनाई। रावी ने कहा और मुझे सलमा ने ज़र से हकम वाली सनद से बताया कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, आप जिस चीज़ के वाली (ज़िम्मेदार) बनते हैं, हम उसको तेरे सुपुर्द करते हैं (तुम अपने ऐतिमाद पर ये रिवायत बयान कर सकते हो)।

(सहीह बुख़ारी : 338, 339, 340, 341, 342, 343, अबू दाऊद : 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, तिर्मिज़ी : 144, नसाई : 1/68,1/169, इब्ने माजह : 569)

وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، قَالَ سَمِعْتُ ذَرًّا، عَنِ ابْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبْزَى، قَالَ قَالَ الْحَكَمُ وَقَدْ سَمِعْتُهُ مِنِ ابْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبْزَى، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَجُلاً، أَتَى عُمَرَ فَقَالَ إِنِّي أَجْنَبْتُ فَلَمْ أَجِدْ مَاءً . وَسَاقَ الْحَدِيثَ وَزَادَ فِيهِ قَالَ عَمَّارٌ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ إِنْ شِئْتَ لِمَا جَعَلَ اللَّهُ عَلَىَّ مِنْ حَقِّكَ لاَ أُحَدِّثُ بِهِ أَحَدًا وَلَمْ يَذْكُرْ حَدَّثَنِي سَلَمَةُ عَنْ ذَرٍّ .

(821) इब्ने अब्दुर्रहमान बिन अबज़ा अपने बाप से रिवायत बयान करते हैं कि एक आदमी हज़रत उमर (रज़ि.) के पास आया और पूछा, मैं जुन्बी हो गया और मुझे पानी न मिला और मज़्कूरा वाला हदीस़ बयान की और उसमें ये इज़ाफ़ा किया, अम्मार (रज़ि.) ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! अगर आप चाहें क्योंकि अल्लाह ने मुझ पर आपका हक़ रखा है, मैं ये हदीस़ किसी को न सुनाऊँगा, लेकिन इसमें मुझे सलमा ने ज़र से सुनाया, वाला टुकड़ा नहीं बयान किया।

قَالَ مُسْلِمٌ وَرَوَى اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيعَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزَ، عَنْ عُمَيْرٍ، مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ أَقْبَلْتُ أَنَا وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ يَسَارٍ، مَوْلَى مَيْمُونَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم حَتَّى دَخَلْنَا عَلَى أَبِي الْجَهْمِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ الصِّمَّةِ الأَنْصَارِيِّ فَقَالَ أَبُو الْجَهْمِ أَقْبَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنْ نَحْوِ بِئْرِ جَمَلٍ فَلَقِيَهُ رَجُلٌ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَيْهِ حَتَّى أَقْبَلَ عَلَى الْجِدَارِ فَمَسَحَ وَجْهَهُ وَيَدَيْهِ ثُمَّ رَدَّ عَلَيْهِ السَّلاَمَ .

(822) इब्ने अब्बास (रज़ि.) के आज़ाद करदा गुलाम बयान करते हैं कि मैं और अब्दुर्रहमान बिन यसार जो नबी (ﷺ) की ज़ौजा मैमूना (रज़ि.) के मौला हैं, अबुल जहम बिन हारिस बिन सिम्मा अन्सारी के पास पहुँचे तो अबू जहम ने बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बिअ्रे जमल नामी जगह से तशरीफ़ लाये तो आपको एक आदमी मिला, उसने आपको सलाम कहा, तो आपने उसके सलाम का जवाब न दिया यहाँ तक कि आप एक दीवार की तरफ़ बढ़े और आपने अपने चेहरे और दोनों हाथों पर मसह किया, फिर उसके सलाम का जवाब दिया।

(सहीह बुख़ारी : 337, अबू दाऊद : 329, नसाई : 1/164)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الضَّحَّاكِ بْنِ عُثْمَانَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَجُلاً، مَرَّ وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَبُولُ فَسَلَّمَ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ .

(823) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि एक शख़्स गुज़रा, जबकि रसूलुल्लाह (ﷺ) पेशाब कर रहे थे तो उसने सलाम कहा, आपने उसे सलाम का जवाब न दिया।

(अबू दाऊद : 16, तिर्मिज़ी : 90 हसन सहीह, नसाई : 1/35-36, इब्ने माजह : 353)

फ़ायदा : दूसरी रिवायतों से मालूम होता है कि उसने पेशाब से फ़राग़त के बाद सलाम कहा था, लेकिन आपने अदमे तहारत की बिना पर जवाब नहीं दिया, बोल व बराज़ की हालत में सलाम कहना और उसका जवाब देना, आदाब व अख़्लाक़ के मुनाफ़ी है। इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक मुअज़्ज़िन, नमाज़ी, क़ारी और ख़तीब सलाम के जवाब देने का पाबंद नहीं, दिल में जवाब दे ले। इमाम मुहम्मद के नज़दीक फ़राग़त के बाद जवाब दे और इमाम अबू यूसुफ़ के नज़दीक जवाब नहीं देगा।

बाब 29 : मुसलमान के पलीद (नापाक) न होने की दलील

باب الدَّلِيلِ عَلَى أَنَّ الْمُسْلِمَ لاَ يَنْجُسُ

(824) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि उसे जनाबत की हालत में रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना के रास्तों में से किसी रास्ते पर मिले और वो खिसक कर चले गये और गुस्ल किया। तो नबी (ﷺ) ने उसे तलाश किया, जब वो आपकी ख़िदमत में आये तो आपने फ़रमाया, 'ऐ अबू हुरैरह! तुम कहाँ थे?' अबू हुरैरह (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! जब आपसे मेरी मुलाक़ात हुई तो मैं जनाबत की हालत में था, इसलिये गुस्ल किये बग़ैर आपके पास बैठना मैंने नापसंद किया। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सुब्हानअल्लाह! मोमिन नजिस पलीद नहीं होता।'

(सहीह बुख़ारी : 283, 285, अबू दाऊद : 231, तिर्मिज़ी : 121, नसाई : 1/145,146, इब्ने माजह : 534)

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، - يَعْنِي ابْنَ سَعِيدٍ - قَالَ حُمَيْدٌ حَدَّثَنَا ح، وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، عَنْ حُمَيْدٍ الطَّوِيلِ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ لَقِيَهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فِي طَرِيقٍ مِنْ طُرُقِ الْمَدِينَةِ وَهُوَ جُنُبٌ فَانْسَلَّ فَذَهَبَ فَاغْتَسَلَ فَتَفَقَّدَهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فَلَمَّا جَاءَهُ قَالَ " أَيْنَ كُنْتَ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ " . قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ لَقِيتَنِي وَأَنَا جُنُبٌ فَكَرِهْتُ أَنْ أُجَالِسَكَ حَتَّى أَغْتَسِلَ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " سُبْحَانَ اللَّهِ إِنَّ الْمُؤْمِنَ لاَ يَنْجُسُ " .

(825) हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उसे मिले, जबकि वो जुन्बी था। वो आपसे अलग हो गया और गुस्ल किया। फिर आकर अ़र्ज़ किया, मैं जुन्बी था। आपने फ़रमाया, 'मुसलमान पलीद नहीं होता।'

(अबू दाऊद:230, नसाई: 1/128, इब्ने माजह : 535)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ وَاصِلٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَقِيَهُ وَهُوَ جُنُبٌ فَحَادَ عَنْهُ فَاغْتَسَلَ ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ كُنْتُ جُنُبًا . قَالَ " إِنَّ الْمُسْلِمَ لاَ يَنْجُسُ " .

फ़ायदा : जनाबत, एक हुक्मी नजासत है, हक़ीक़ी नजासत नहीं है। इसलिये जनाबत की सूरत में इंसान का जिस्म पलीद नहीं होता। काफ़िर की नजासत भी ऐतक़ादी और बातिनी नजासत है, ज़ाहिरी तौर पर वो नजिस नहीं होता।

باب ذِكْرِ اللَّهِ تَعَالَى فِي حَالِ الْجَنَابَةِ وَغَيْرِهَا

बाब 30 : जनाबत वग़ैरह की सूरत में अल्लाह का ज़िक्र करना

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ وَإِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ خَالِدِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنِ الْبَهِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يَذْكُرُ اللَّهَ عَلَى كُلِّ أَحْيَانِهِ .

(826) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तमाम औक़ात में अल्लाह तआला का ज़िक्र करते थे।

(अबू दाऊद : 18, तिर्मिज़ी : 3384, इब्ने माजह : 302)

फ़ायदा : इस हदीस़ से साबित होता है कि आप ज़िन्दगी के तमाम हालात में अल्लाह को याद फ़रमाते थे। खाते-पीते, सोते-जागते, मस्जिद में दाख़िल होते और निकलते होते, बैतुल ख़ला में दाख़िल होते और निकलते, इस तरह हर हालत में अल्लाह को याद फ़रमाते। इस हदीस़ से ये भी इस्तिदलाल किया गया है कि आप ज़रूरत के वक़्त बेवुज़ू भी अल्लाह का ज़िक्र फ़रमाते। लेकिन जिस तरह बैतुल ख़ला में बैठकर या जिमाअ की हालत में ज़िक्र व अज़कार दुरुस्त नहीं है या उन हालात में क़ुरआन मजीद की तिलावत नहीं हो सकती, उसी तरह जनाबत और हैज़ की हालत में क़ुरआन की तिलावत दुरुस्त नहीं है। जुम्हूर अइम्मा का यही मौक़िफ़ है और यही दुरुस्त है। वरना अगर कुल्ला अह्यान के उमूम की रू से हैज़ और जनाबत में क़ुरआन पढ़ना दुरुस्त है तो फिर बैतुल ख़ला और जिमाअ़ की हालत में भी जाइज़ होना चाहिये। वो भी कुल्ला अह्यान में दाख़िल होते हैं। जबकि हदीस़ का असल मक़सद ज़िन्दगी के हर मरहले और हर मोड़ पर अल्लाह तआला को याद करना मक़सूद है। हर हालत और हर वक़्त मुराद नहीं है, अगर हर हालत और हर वक़्त मुराद है तो आपने पेशाब करने के बाद सलाम का जवाब क्यों न दिया?

باب جَوَازِ أَكْلِ الْمُحْدِثِ الطَّعَامَ وَأَنَّهُ لاَ كَرَاهَةَ فِي ذَلِكَ وَأَنَّ الْوُضُوءَ لَيْسَ عَلَى الْفَوْرِ

बाब 31 : बेवुज़ू खाना खाना बिला कराहत जाइज़ है और वुज़ू का फ़ौरी तौर पर करना लाज़िम नहीं है

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، وَأَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، وَقَالَ أَبُو الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ مِنَ الْخَلاَءِ فَأُتِيَ بِطَعَامٍ فَذَكَرُوا لَهُ الْوُضُوءَ فَقَالَ" أُرِيدُ أَنْ أُصَلِّيَ فَأَتَوَضَّأَ "

(827) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) बैतुल ख़ला से निकले तो आपके सामने खाना पेश किया गया, लोगों ने आपसे वुज़ू का तज़्किरा किया। आपने फ़रमाया, 'क्या मैं नमाज़ पढ़ना चाहता हूँ कि वुज़ू करूँ?'

फ़ायदा : बिल्इत्तिफ़ाक़ वुज़ू के बग़ैर खाना-पीना और ज़िक्र व अज़कार करना और तिलावत करना जाइज़ है। यही हदीस़ इस की दलील है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ، سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ، يَقُولُ كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَجَاءَ مِنَ الْغَائِطِ وَأُتِيَ بِطَعَامٍ فَقِيلَ لَهُ أَلاَ تَوَضَّأُ فَقَالَ " لِمَ أَأُصَلِّي فَأَتَوَضَّأَ " .

(828) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि हम लोग नबी (ﷺ) के पास थे। आप क़ज़ाए हाजत के बाद आये और आपको खाना पेश किया गया और आपसे पूछा गया, आप वुज़ू नहीं फ़रमायेंगे? तो आपने फ़रमाया, 'क्यों? क्या मैं नमाज़ पढ़ने लगा हूँ कि वुज़ू करूँ?'

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمٍ الطَّائِفِيُّ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ، مَوْلَى آلِ السَّائِبِ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ، قَالَ ذَهَبَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلَى الْغَائِطِ فَلَمَّا

(829) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) क़ज़ाए हाजत के लिये तशरीफ़ ले गये तो जब वापस आये आपके हुज़ूर खाना पेश किया गया और कहा गया, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आप वुज़ू नहीं फ़रमायेंगे? आपने जवाब

दिया, 'किस वजह से? क्या नमाज़ के लिये?'

جَاءَ قُدِّمَ لَهُ طَعَامٌ فَقِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلاَ تَوَضَّأُ . قَالَ " لِمَ أَلِلصَّلاَةِ " .

(830) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने बैतुल ख़ला वाली ज़रूरत पूरी की तो आपके क़रीब खाना लाया गया। आपने खाना तनावुल फ़रमाया और पानी को हाथ तक नहीं लगाया और इब्ने जुरैह का क़ौल है कि मुझे अम्र बिन दीनार ने सईद बिन हुवैरिस़ से ये चीज़ ज़ाइद बताई कि नबी (ﷺ) से अर्ज़ किया गया, आपने वुज़ू नहीं फ़रमाया? आपने जवाब दिया, मैंने नमाज़ पढ़ने का इरादा नहीं किया कि वुज़ू करूँ।' और अम्र का क़ौल है उसने सईद बिन हुवैरिस़ से सुना है।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَبَّادِ بْنِ جَبَلَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ حُوَيْرِثٍ، أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ، يَقُولُ إِنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَضَى حَاجَتَهُ مِنَ الْخَلاَءِ فَقُرِّبَ إِلَيْهِ طَعَامٌ فَأَكَلَ وَلَمْ يَمَسَّ مَاءً . قَالَ وَزَادَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قِيلَ لَهُ إِنَّكَ لَمْ تَوَضَّأْ قَالَ " مَا أَرَدْتُ صَلاَةً فَأَتَوَضَّأَ " . وَزَعَمَ عَمْرٌو أَنَّهُ سَمِعَ مِنْ سَعِيدِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ .

बाब 32 : जब बैतुल ख़ला में जाने का इरादा हो तो इंसान कौनसी दुआ पढ़ेगा?

باب مَا يَقُولُ إِذَا أَرَادَ دُخُولَ الْخَلاَءِ

(831) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है हम्माद के अल्फ़ाज़ हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) जब बैतुल ख़ला में दाख़िल होते, और हुशैम के अल्फ़ाज़ हैं, बेशक रसूलुल्लाह (ﷺ) जब बैतुल ख़ला में दाख़िल होते थे तो फ़रमाते, 'अल्लाहुम्-म इन्नी अऊज़ुबिक मिनल ख़ुबुसि वल्ख़बाइस़ (ऐ अल्लाह! मैं मुज़क्कर (नर) और मुअन्नस़ (मादा) जिन्नात से तेरी पनाह में आता हूँ।)'

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، وَقَالَ، يَحْيَى أَيْضًا أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، كِلاَهُمَا عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ، عَنْ أَنَسٍ، - فِي حَدِيثِ حَمَّادٍ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا دَخَلَ الْخَلاَءَ وَفِي حَدِيثِ هُشَيْمٍ - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا دَخَلَ الْكَنِيفَ قَالَ " اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبْثِ وَالْخَبَائِثِ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) **कनीफ़ :** टॉयलेट, लेटीन। **ख़ुबुस़ :** ख़बीस़ की जमा है, जिन्न, शैतान या गन्दी और नजिस हरकत, क़ौल हो या फ़ैअल। (2) ख़बाइस़ : ख़बीस़ा की जमा है, मुअन्नस़ शैतान, इससे मुराद मआसी और अफ़आले मज़्मूमा (बुरे काम) भी होते हैं।

फ़ायदा : पेशाब व पाख़ाना की जगहें, नापाक और नजिस होती हैं। इसलिये मुज़क्कर व मुअन्नस़ शयातीन उन जगहों में आते-जाते रहते हैं। इसलिये क़ज़ाए हाजत से पहले ये दुआ पढ़ लेनी चाहिये ताकि इंसान इस तकलीफ़देह मख़्लूक़ से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रहे। हदीस़ का असल मक़सद यही है अगरचे लफ़्ज़ के उ़मूम के ऐतबार से नजासतों और मआसी से पनाह माँगना भी ज़िमनी तौर पर उसमें दाख़िल हो सकता है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - وَهُوَ ابْنُ عُلَيَّةَ - عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ " أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الْخُبْثِ وَالْخَبَائِثِ " .

(832) हमें अबू बकर बिन अबी शैबा और ज़ुहैर बिन हरब दोनों ने इस्माईल (जो उ़लय्या का बेटा है) के वास्ते से अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ से ऊपर वाली सनद से रिवायत बयान की और दुआ के ये अल्फ़ाज़ बयान किये, 'अऊज़ुबिल्लाहि मिनल ख़ुबुस़ि वल्ख़बाइस़।'
(नसाई : 1/20, इब्ने माजह : 298)

باب الدَّلِيلِ عَلَى أَنَّ نَوْمَ الْجَالِسِ لاَ يَنْقُضُ الْوُضُوءَ

बाब 33 : बैठे-बैठे सोने वाले की नींद से वुज़ू नहीं टूटता

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، ح وَحَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، كِلاَهُمَا عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم نَجِيٌّ لِرَجُلٍ - وَفِي حَدِيثِ عَبْدِ الْوَارِثِ وَنَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُنَاجِي الرَّجُلَ - فَمَا قَامَ إِلَى الصَّلاَةِ حَتَّى نَامَ الْقَوْمُ .

(833) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि नमाज़ के लिये तकबीर कह दी गई और रसूलुल्लाह (ﷺ) एक इंसान से सरगोशी में मसरूफ़ थे और अ़ब्दुल वारिस़ की रिवायत में नजिय्युन लिरजुलिन की बजाए युनाजिर्रजुल है। एक इंसान से आहिस्ता-आहिस्ता बातचीत फ़रमा रहे थे तो आप नमाज़ के लिये तशरीफ़ नहीं लाये यहाँ तक कि लोग सो गये।
(नसाई : 2/175)

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا

(834) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि नमाज़ के लिये तकबीर कह दी गई

أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ، سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، قَالَ أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ وَالنَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يُنَاجِي رَجُلاً فَلَمْ يَزَلْ يُنَاجِيهِ حَتَّى نَامَ أَصْحَابُهُ ثُمَّ جَاءَ فَصَلَّى بِهِمْ .

जबकि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक आदमी से सरगोशी फ़रमा रहे थे और आप सरगोशी फ़रमाते रहे, यहाँ तक कि आपके साथी सो गये। फिर आपने आकर नमाज़ पढ़ाई।
(सहीह बुख़ारी : 6192)

फ़ायदा : नमाज़ के इन्तिज़ार में अगर इंसान बैठा-बैठा सो जाये और नींद इस क़द्र गहरी न हो कि इंसान को वुज़ू टूटने का पता ही न चले, उनका इदराक बदस्तूर क़ायम हो, जिससे हवा ख़ारिज होने का पता चल जाये तो फिर वुज़ू नहीं टूटेगा, अगर हवास मुअत्तल हो जायें और गहरी नींद की बिना पर इदराक व शऊर क़ायम न रहे तो नींद मुज़िन्ना (गुमान दिलाने वाला) है वुज़ू टूटने का, इसलिये यूँ समझा जायेगा कि वुज़ू टूट गया है।

وَحَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - وَهُوَ ابْنُ الْحَارِثِ - حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسًا، يَقُولُ كَانَ أَصْحَابُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَنَامُونَ ثُمَّ يُصَلُّونَ وَلاَ يَتَوَضَّئُونَ قَالَ قُلْتُ سَمِعْتَهُ مِنْ أَنَسٍ قَالَ إِي وَاللَّهِ .

(835) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबा सो जाते थे। फिर वुज़ू किये बग़ैर नमाज़ पढ़ लेते। मैंने क़तादा से पूछा, आपने ये हदीस़ अनस (रज़ि.) से सुनी है? उसने कहा, हाँ अल्लाह की क़सम! (तिर्मिज़ी : 78)

حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدِ بْنِ صَخْرٍ الدَّارِمِيُّ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّهُ قَالَ أُقِيمَتْ صَلاَةُ الْعِشَاءِ فَقَالَ رَجُلٌ لِي حَاجَةٌ . فَقَامَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يُنَاجِيهِ حَتَّى نَامَ الْقَوْمُ - أَوْ بَعْضُ الْقَوْمِ - ثُمَّ صَلَّوْا .

(836) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि इशा की नमाज़ के लिये इक़ामत कह दी गई तो एक आदमी ने (रसूलुल्लाह (ﷺ) से) कहा, मुझे एक ज़रूरत है, आप खड़े होकर उससे सरगोशी करने लगे यहाँ तक कि लोग सो गये या कुछ लोग सो गये। फिर सबने नमाज़ पढ़ी। (अबू दाऊद : 201)

फ़ायदा : अहादीस़ का मक़सद ये है कि नींद से वुज़ू नहीं टूटता, लेकिन नींद अगर गहरी हो तो हवा के ख़ारिज हो जाने का एहतिमाल है। इसलिये नींद वुज़ू टूटने का महल और मौक़ा है। इसलिये इसका इन्हिसार (दारोमदार) इंसान के हवास पर है। अगर ये ख़तरा और अन्देशा हो कि हवा ख़ारिज हो गई है लेकिन गहरी नींद होने की बिना पर पता नहीं चला तो वुज़ू टूट जायेगा। अगर ये ख़तरा न हो, बिला सबब व क़रीना महज़ शक व शुब्हा हो तो वुज़ू नहीं टूटेगा।

इस किताब के कुल 52 बाब और 324 हदीसें हैं।

كتاب الصلاة

किताबुस्सलात
(नमाज़ का बयान)

हदीस नम्बर 837 से 1160 तक

नमाज़ की अहमियत, फ़ज़ीलत व फ़र्ज़िय्यत

इंसान अशरफ़ुल मख़्लूक़ात है, अगर अब तक मुयस्सर साइन्सी मालूमात को बुनियाद बनाया जाये तो इंसान ही सबसे अक़्लमन्द मख़्लूक़ है जिसने अनासिरे क़ुदरत से काम लेकर अपने लिये क़ुव्वत व ताक़त के बहुत से इन्तिज़ामात कर लिये हैं। उसके बावजूद ये बहुत ही कमज़ोर, बार-बार मुश्किलात में घिर कर बेबस हो जाने वाली मख़्लूक़ है जो अपनी ज़िन्दगी के अक्सर मामलात में दूसरों की मदद की मोहताज है, दूसरों पर इन्हिसार करती है, अपने मुस्तक़बिल के हवाले से हर वक़्त ख़दशात का शिकार और ख़ौफ़ज़दा रहती है।

इनमें से जो इंसान एक क़ादिरे मुत्लक़ पर ईमान से महरूम हैं, उनमें से अक्सर दूसरी ऐसी मख़्लूक़ात का सहारा लेते और उनको अपना मुहाफ़िज़, अपना राज़िक़ और ख़ालिक़ समझते हैं और उनसे मदद की दरख़्वास्त करते हैं जो उनकी पहुँच से दूर हों या जिनकी अपनी कमज़ोरियों से इंसान बेख़बर हों। मज़ाहिरे फ़ितरत की पूजा, बुतों की पूजा, देवताओं और देवियों की परस्तिश यहाँ तक हाथियों, बन्दरों और साँपों की इबादत कमज़ोर इंसान की ख़ौफ़ज़दगी और उसकी मोहताजगी की दलील है।

अल्लाह के भेजे हुए दीन ने इंसान को ये सिखाया कि जिन्हें तुम पूजते हो वो भी तुम्हारी तरह बल्कि तुमसे बढ़कर कमज़ोर और मोहताज हैं। वो सिर्फ़ एक ही ज़ात है जिसके साथ किसी की कोई शराकत दारी नहीं और वही हर चीज़ पर क़ादिर है, हर क़ुव्वत उसी के पास है, हर नेमत के ख़ज़ानों का मालिक वही है, उसने सभी को पैदा किया, वो कभी पैदा होने का या किसी भी और चीज़ का मोहताज था न आइन्दा कभी होगा। वो हमारी इबादत का भी मोहताज नहीं बल्कि हम ही उसके क़ुर्ब, उसकी रहमत, उसकी मेहरबानी और उसकी सख़ावत के मोहताज हैं। उसकी रज़ा और उसका क़ुर्ब हासिल हो जाने से हमारी कमज़ोरी ताक़त में, हमारी एहतियाज फ़रावानी में बदल सकते हैं और हमारा ख़ौफ़ मुकम्मल सलामती के एहसास में तब्दील हो जाता है।

तमाम अम्बिया का मिशन यही था कि इंसान इस अब्दी हक़ीक़त को समझ ले और उस क़ादिरे मुत्लक़ का क़ुर्ब हासिल करने के लिये इबादत का सहीह तरीक़ा अपना ले। इस वक़्त जितने आसमानी दीन मौजूद हैं उनमें सबसे मुकम्मल, सबसे ख़ूबसूरत और सबसे आसान तरीक़-ए-इबादत वो है जो इस्लाम ने सिखाया है। इन इस्लामी इबादात में से अहम तरीन इबादत नमाज़ है। नमाज़ का इरादा करते ही ख़ैर, बरकत और कसबे आमाले सालेहा का सिलसिला शुरू हो जाता है। तहारत और वुज़ू से इंसान ज़ाहिरी और बातिनी कसाफ़त और मैल-कुचेल से साफ़ हो जाता है और नमाज़ में दाख़िल होने के साथ ही वो अल्लाह के हुज़ूर बारयाब (हाज़िर) हो जाता है।

इस इबादत में बन्दा कभी अपने जैसे बहुत से इबादत गुज़ारों के साथ मिलकर जज़्ब व सरमस्ती में अल्लाह को पुकारता, उससे हाले दिल कहता और उसके सामने गिरया व ज़ारी करता है और कभी तन्हाई के आलम में अपने रब के सामने होता है और उसके साथ सरगोशी और मुनाजात करता है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब अन्नह्यु अनिस्सब्बाक़ फ़िल्मस्जिद : 1230 (551)

इबादत का ये मुकम्मल और सबसे ख़ूबसूरत तरीक़ा ख़ुद अल्लाह तबारक व तआला ने कायनात के अफ़ज़ल तरीन इबादत गुज़ार (बन्दा) मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) को सिखाया और उन्होंने इंसानियत को इसकी तालीम दी।

आपकी नमाज़ की कैफ़ियतें क्या थीं? उनकी तफ़्सील सहीह मुस्लिम की किताबुस्सलात, किताबुल मसाजिद, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन और माबअद के अबवाब में तफ़्सील के साथ मज़्कूर है।

जिन ख़ुशनसीब लोगों ने इस इबादत का तरीक़ा बराहे रास्त रसूलुल्लाह (ﷺ) से सीखा, वो उसकी लज़्ज़तों से सहीह तौर पर आश्ना थे, जैसे हज़रत अनस (रज़ि.) उन्हें याद करके बेइख़्तियार कहते थे, 'मैंने कभी किसी इमाम के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ी जिसकी नमाज़ रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ से ज़्यादा हल्की और मुकम्मल तरीन हो।' (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब अम्रुल अइम्मति बितख़्फ़ीफ़िस्सलात फ़ी तमाम : 1054 (469)

ये नमाज़ बाजमाअत की कैफ़ियत थी। रात की तन्हाइयों में आपकी नमाज़ कैसी थी, हज़रत आइशा (रज़ि.) बताना भी चाहती हैं और उससे ज़्यादा कह भी नहीं सकतीं, 'आप चार रकअतें पढ़ते और मत पूछो कि उनकी ख़ूबसूरती क्या थी और तवालत (लम्बाई) कितनी थी, फिर आप चार रकअतें अदा फ़रमाते, न पूछो कि उनका जमाल कैसा था, कितनी लम्बी होती थीं।' (सहीह मुस्लिम, सलातुल मुसाफ़िरीन व क़सरिहा, बाब सलातुल्लैल : 1723 (738)

ये लज़्ज़तें महसूस की जा सकती थीं लेकिन ज़बान उनके बयान से क़ासिर थी। क़ुरआन मजीद ने इस इबादत का तज़्किरा इस तरह किया कि उसका मुशाहिदा करने वाले उसकी तरफ़ खिंचे चले आते थे और उसमें मुस्तग़रक़ हो जाते, 'और जब अल्लाह का बन्दा उसको पुकारने खड़ा हुआ, तो वो उस पर गिरोह दर गिरोह इकट्ठे होने लगे।' (सूरह जिन्न 72 : 19)

मुहद्दिसीन ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ के हवाले से वो सारी तफ़्सीलात इन्तिहाई जांफ़िशानी से जमा करके यकजा कर दीं जो सहाब-ए-किराम ने बयान की थीं। आज अगर ज़ौक़ व शौक़ की कैफ़ियतों में डूबकर उनका मुतालआ किया जाये तो पूरा मन्ज़र सामने आ जाता है, जो हुस्नो-जमाल का बेमिसाल मुरक़्क़अ है।

रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात के बाद फ़ित्नों का दौर आया। बेशुमार इंसानों के अक़ाइद और आमाल उसकी ज़द में आये, मनअे ज़कात, इर्तिदाद, ख़्वारिज वग़ैरह के बातिल अक़ाइद इसी फ़ित्ने की

तबाहकारियों के चंद पहलू हैं । उस दौर का मुतालआ किया जाये तो इबादात और आमाल में सहल अंगेज़ी, ग़फ़लत और लापरवाही यहाँ तक कि जहालत की ऐसी कैफ़ियतें सामने आती हैं कि इंसान हैरान रह जाता है । बनू उमय्या के दौर में नमाज़ जैसे इस्लाम के बुनियादी रुक्न की कैफ़ियत ऐसी हो गई थी कि हज़रत अनस (रज़ि.) इसके सबब से बाक़ाइदा गिरया में मुब्तला हो जाते थे । लोगों और उनके हुक्मरानों ने उस दौर में औक़ाते नमाज़ तक ज़ाया कर दिये थे । इमाम ज़ोहरी कहते हैं, मैं दमिश्क़ में हज़रत अनस (रज़ि.) के यहाँ हाज़िर हुआ तो आप रो रहे थे । मैंने पूछा, क्या बात है जो आपको रुला रही है? फ़रमाया, मैंने अहदे रिसालत मआब (ﷺ) में जो कुछ देखा था उसमें नमाज़ ही रह गई थी, अब ये नमाज़ भी ज़ाया कर दी गई है। (सहीह बुख़ारी, मवाक़ीतुस्सलात, बाब फ़ी तज़यीइस्सलात अन वक़्तिहा : 530)

आपसे नमाज़ के बारे में ये अल्फ़ाज़ भी मन्क़ूल हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में जो कुछ होता था उनमें से कोई चीज़ नहीं जो मैं पहचान सकूँ (सब कुछ बदल गया है) कहा गया, नमाज़ (तो है) फ़रमाया, क्या इसमें भी तुमने वो सब कुछ नहीं कर दिया जो कर दिया है । (सहीह बुख़ारी, मवाक़ीतुस्सलात, बाब फ़ी तज़्यीइस्सलात अन वक़्तिहा : 529)

जामेअ तिर्मिज़ी की रिवायत के अल्फ़ाज़ हैं, तुमने अपनी नमाज़ों में वो सब कुछ नहीं कर डाला जिसका तुम्हीं को पता है। (जामेअ तिर्मिज़ी, सिफ़तुल क़ियामत, बाब हदीस़ इज़ाअतुन्नास अस्सलात: 2447)

एक और रिवायत में है, स़ाबित बिनानी कहते हैं, हम हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) के साथ थे कि हज्जाज ने नमाज़ में ताख़ीर कर दी, हज़रत अनस (रज़ि.) खड़े हुए, वो उससे बात करना चाहते थे, उनके साथियों ने हज्जाज से ख़तरा महसूस करते हुए उन्हें रोक दिया तो आप वहाँ से निकले, सवारी पर बैठे और रास्ते में कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने की कोई चीज़ बाक़ी नहीं रही सिवाय ला इला-ह इल्लल्लाह की शहादत के । एक आदमी ने कहा, अबू हम्ज़ह! नमाज़? तो फ़रमाया, तुमने ज़ुहर की नमाज़ मग़रिब में पहुँचा दी। क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ यही थी । (फ़तहुल बारी, मवाक़ीतुस्सलात, बाब तज़्यीइस्सलात अन वक़्तिहा : 529)

हुक्मरानों की जहालत की वजह से ख़राबी का ये सिलसिला बढ़ता गया और सिवाय चंद अहले इल्म के बाक़ी लोग इसी नाक़िस और बिगाड़ी हुई नमाज़ के आदी हो गये । हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) ने इमाम अब्दुर्रज़्ज़ाक़ के हवाले से मशहूर ताबेई का वाक़िया नक़ल किया है । वो कहते हैं, वलीद बिन अब्दुल मलिक ने जुम्अे में ताख़ीर की यहाँ तक कि शाम हो गई, मैं आया और बैठने से पहले ज़ुहर अदा कर ली, फिर उसके ख़ुत्बे के दौरान में बैठे हुए इशारे से अ़सर पढ़ी । इशारे से इसलिये कि अ़ता को ख़ौफ़ था कि अगर उन्होंने खड़े होकर नमाज़ पढ़ी तो उन्हें क़त्ल कर दिया जायेगा । (फ़तहुल बारी, मवाक़ीतुस्सलात, बाब तज़्यीइस्सलात अन वक़्तिहा : 529)

अक्स़र लोग हुक्मरानों के इस अमल ही को इस्लाम समझते थे, उनको इस बात का एहसास

तक न था कि ये सब रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुन्नत के ख़िलाफ़ है। आम लोगों की तो बात ही क्या है हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) जैसे आलिम को भी मदीना का गवर्नर मुक़र्रर होने तक असल औक़ाते नमाज़ का इल्म न था। वो मदीना के गवर्नर होकर आये तो एक दिन उन्होंने असर की नमाज़ में ताख़ीर कर दी। उरवह बिन ज़ुबैर (रह.) उनके पास आये और उन्हें बताया कि हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा (रज़ि.) ने, जब वो इराक़ में गवर्नर थे, एक दिन नमाज़ में ताख़ीर कर दी तो हज़रत अबू मसऊद अन्सारी (बद्री) (रज़ि.) आपके पास आये और फ़रमाया, मुग़ीरह ये क्या है? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि जिब्रईल (अलै.) ने नाज़िल होकर नमाज़ पढ़ाई। (पाँचों नमाज़ें, एक दिन हर नमाज़ का वक़्त शुरू होने पर और दूसरे दिन हर नमाज़ के वक़्ते आख़िर में पढ़ाईं) इस पर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने उरवह से कहा, देख लो क्या कह रहे हो? क्या वाक़ेई जिब्रईल (अलै.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये नमाज़ के वक़्त की निशानदेही की? उरवह ने जवाब दिया, बशीर बिन अबी मसऊद अपने वालिद (बद्री सहाबी अबू मसऊद अन्सारी रजि.) से इसी तरह बयान करते थे। (फ़तहुल बारी, मवाक़ीतुस्सलात व फ़ज़्लिहा : 521) नमाज़ के तरीक़े में भी इसी तरह की तब्दीलियाँ पैदा हो गईं।

सहाब-ए-किराम (रज़ि.) और उनके शागिर्दों ने इस सूरते हाल की इस्लाह के लिये जिहाद शुरू किया, फिर मुहद्दिसीन ने जो इल्मे हदीस में उन ही के जानशीन थे, इस जिहाद को पाया-ए-तक्मील तक पहुँचाया। उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ की तमाम तफ़्सीलात पूरी तहक़ीक़ और जुस्तजू के बाद उम्मत के सामने पेश कर दीं और उम्मत को रसूलुल्लाह (ﷺ) के इस फ़रमाने मुबारक पर कमाहक़्क़ुहू अमल का मौक़ा फ़राहम किया कि 'तुम उसी तरह नमाज़ अदा करो जिस तरह तुमने मुझे नमाज़ पढ़ते देखा है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब अल्अज़ानु लिल्मुसाफ़िरीन : 631)

ये एक फ़ितरी बात है कि इंसान जिस सूरत में जिस अमल का आदी होता है हमेशा उसी को दुरुस्त समझता है और हर सूरत में उसके दिफ़ाअ की कोशिश करता है। मुहद्दिसीन के सामने बहुत बड़ा और कठिन मिशन था, उन्होंने नादान हुक्मरानों की सरपरस्ती में रासिख़शुदा आदात के ख़िलाफ़ इतना मुअस्सिर जिहाद किया कि अब उन लोगों के सामने, जो आदत की बिना पर इसरार और ज़िद्द का शिकार नहीं, रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुन्नते मुबारका और आपका मुनव्वर तरीक़-ए-अमल रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह है।

इमाम मुस्लिम ने किताबुस्सलात, किताबुल मसाजिद, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन और बाद के अबवाब में ख़ूबसूरत तर्तीब से सहीह इस्नाद के साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ की मुकम्मल तफ़्सीलात जमा कर दी हैं। मुहद्दिसीन के अज़ीमुश्शान काम के बाद उम्मत के फ़ुक़हा और उलमा के इस्तिम्बातात, चाहे वो जिस मक्तबे फ़िक्र से तअल्लुक़ रखते हों, मुहद्दिसीन की बयान करदा इन्ही अहादीस के आस-पास घूमते हैं। तमाम फ़िक़्ही इख़्तिलाफ़ात के हवाले से भी आख़िरी और हतमी फ़ैसला सिर्फ़ और सिर्फ़ वही हो सकता है जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सादिर फ़रमा दिया और जिसे मुहद्दिसीन ने पूरी अमानतदारी से उम्मत तक पहुँचा दिया है।

4. किताबुस्सलात

(नमाज़ का बयान)

बाब 1 : अज़ान की शुरूआत

باب بَدْءِ الأَذَانِ

(837) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से रिवायत है, उन्होंने बताया कि जब मुसलमान मदीना आये तो वो इकट्ठे हो जाते और नमाज़ों के वक़्त का अन्दाज़ा कर लेते, उसके लिये कोई पुकारता नहीं था। एक दिन उन्होंने इसके बारे में बातचीत की तो कुछ ने कहा, ईसाईयों के नाक़ूस जैसा एक नाक़ूस बना लो और कुछ ने कहा, यहूद के क़र्न जैसा क़र्न बना लो। तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, तुम एक आदमी ही क्यों मुक़र्रर नहीं कर लेते जो नमाज़ के लिये मुनादी करे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ बिलाल! उठो और नमाज़ के लिये बुलाओ।'

(सहीह बुख़ारी : 604, तिर्मिज़ी : 190, 2/143,144)

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، ح وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - قَالَ حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ، مَوْلَى ابْنِ عُمَرَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّهُ قَالَ كَانَ الْمُسْلِمُونَ حِينَ قَدِمُوا الْمَدِينَةَ يَجْتَمِعُونَ فَيَتَحَيَّنُونَ الصَّلَوَاتِ وَلَيْسَ يُنَادِي بِهَا أَحَدٌ فَتَكَلَّمُوا يَوْمًا فِي ذَلِكَ فَقَالَ بَعْضُهُمُ اتَّخِذُوا نَاقُوسًا مِثْلَ نَاقُوسِ النَّصَارَى وَقَالَ بَعْضُهُمْ قَرْنًا مِثْلَ قَرْنِ الْيَهُودِ فَقَالَ عُمَرُ أَوَلاَ تَبْعَثُونَ رَجُلاً يُنَادِي بِالصَّلاَةِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ "يَا بِلاَلُ قُمْ فَنَادِ بِالصَّلاَةِ" .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अज़ान : आगाह करना, इत्तिलाअ देना। **यतहय्यनून :** वक़्त का अन्दाज़ा लगाते। **(2) अस्सलात :** (1) अक्सर अहले इल्म (अहले अरबियत हों या फ़ुक़्हा) के नज़दीक इसका मानी दुआ है। क्योंकि नमाज़ दुआ पर मुश्तमिल है। (2) कलिमए शहादत के बाद दीन में नमाज़ का दूसरा दर्जा है, गोया दीन में दूसरे नम्बर पर है। इसलिये इसको सलात का नाम दिया गया है जैसाकि घोड़दौड़ में दूसरे नम्बर पर आने वाले घोड़े को मुसल्ली कहते हैं। (3) ये सलवैन से माख़ूज़ है, ये वो दो हड्डियाँ हैं (सुरीन में) जो रुकूअ व सुजूद में हरकत करती हैं। (4) सलात का मानी रहमत है, क्योंकि इंसान की पूरी

तवज्जह अल्लाह तआला की तरफ़ मब्ज़ूल होती है। **(3) नाक़ूस :** ईसाई बड़ी लकड़ी पर छोटी लकड़ी मारकर, नमाज़ का ऐलान करते थे। **(4) क़र्न :** नरसिंघा, जो यहूदी बजाते थे।

फ़ायदा : इस हदीस में अज़ान की सिर्फ़ शुरूआती सूरत बयान की गई है कि हज़रत उमर (रज़ि.) के मशवरे से नमाज़ के लिये अस्सलातु जामिआ के अल्फ़ाज़ से इत्तिलाअ दी जाती थी। बाद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन अब्दे रब्बा को ख़्वाब में मौजूदा अज़ान सिखाई गई। हज़रत उमर (रज़ि.) को भी इसी क़िस्म का ख़्वाब नज़र आया और हुज़ूर की ख़िदमत में पेश किया गया। हज़रत बिलाल की आवाज़ बुलंद थी, इसलिये उनको मुअज़्ज़िन मुक़र्रर कर दिया गया। कुछ हज़रात ने ज़ईफ़ अहादीस के सहारे पर ये दावा किया है कि आपको आसमानों पर ले जाकर अज़ान के कलिमात सुनवाये गये या शबे मेअराज में आपको अज़ान की वह्य की गई और आपने हज़रत बिलाल को अज़ान सिखा दी। मगर सवाल ये है कि मेअराज का वाक़िया तो मक्का मुकर्रमा में पेश आ चुका था, अगर उस वक़्त आपने बिलाल (रज़ि.) को अज़ान सिखा दी थी तो फिर हिज्रत के बाद आपसी मशवरे की ज़रूरत क्यों पेश आई? और शुरूआती शक्ल में हज़रत उमर (रज़ि.) के मशवरे से ऐलान करने पर अमल क्यों हुआ?

बाब 2 : अज़ान के कलिमात दो-दो मर्तबा और तकबीर इकहरी कहने का हुक्म

باب الأَمْرِ بِشَفْعِ الأَذَانِ وَإِيتَارِ الإِقَامَةِ

حَدَّثَنَا خَلَفُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، جَمِيعًا عَنْ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ أُمِرَ بِلاَلٌ أَنْ يَشْفَعَ، الأَذَانَ وَيُوتِرَ الإِقَامَةَ . زَادَ يَحْيَى فِي حَدِيثِهِ عَنِ ابْنِ عُلَيَّةَ فَحَدَّثْتُ بِهِ أَيُّوبَ فَقَالَ إِلاَّ الإِقَامَةَ .

(838) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि बिलाल को हुक्म दिया गया कि वो अज़ान के कलिमात दो-दो बार कहें और इक़ामत (तकबीर) में एक-एक बार। यहया ने अपनी रिवायत में, इब्ने अतिय्या से ये इज़ाफ़ा बयान किया कि मैंने ये रिवायत अय्यूब को सुनाई तो उसने कहा, क़द क़ामतिस्सलात के सिवा (क्योंकि ये अल्फ़ाज़ दो बार कहने होते हैं)।

(सहीह बुख़ारी : 603, 605-607, 3457, अबू दाऊद : 508,509, तिर्मिज़ी: 193, नसाई : 3/2, इब्ने माजह : 729,730)

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ ذَكَرُوا أَنْ يُعْلِمُوا، وَقْتَ الصَّلاَةِ بِشَىْءٍ يَعْرِفُونَهُ فَذَكَرُوا أَنْ يُنَوِّرُوا نَارًا أَوْ يَضْرِبُوا نَاقُوسًا فَأُمِرَ بِلاَلٌ أَنْ يَشْفَعَ الأَذَانَ وَيُوتِرَ الإِقَامَةَ .

(839) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि जब नमाज़ियों की तादाद बढ़ गई तो उन्होंने आपस में इस मसले पर बातचीत की कि किसी ऐसी चीज़ के ज़रिये नमाज़ के वक़्त का ऐलान करें जिसको लोग पहचान लिया करें (ताकि नमाज़ के लिये बरवक़्त आ सकें) तो उन्होंने इस चीज़ का भी ज़िक्र किया कि आग रोशन करें या नाक़ूस बजायें। आख़िरकार बिलाल को हुक्म दिया गया कि वो अज़ान में कलिमात दो-दो बार कहें और इक़ामत में एक-एक बार।

फ़ायदा : इस हदीस़ में इन्तिहाई इख़्तिसार से काम लिया गया है। क्योंकि मुख़ातब वाक़िये की पूरी तफ़्सील से आगाह थे, बिलाल को ये हुक्म अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन अ़ब्दे रब्बा के ख़्वाब के बाद दिया गया है और हज़रत अनस (रज़ि.) की तमाम रिवायात में अज़ान के कलिमात में दो-दो बार और इक़ामत में एक-एक बार कहने का हुक्म दिया गया है और अहले हदीस़ का इस पर अ़मल है।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ لَمَّا كَثُرَ النَّاسُ ذَكَرُوا أَنْ يُعْلِمُوا . بِمِثْلِ حَدِيثِ الثَّقَفِيِّ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ أَنْ يُورُوا نَارًا .

(840) इमाम साहब और एक सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं कि जब नमाज़ियों की तादाद बढ़ गई तो उन्होंने आपसी ऐलान के बारे में बातचीत की, फ़र्क़ सिर्फ़ इस क़द्र है कि इस रिवायत में युनव्विरु नारा (आग रोशन करें) की जगह अय्युरू नारा (आग जलायें) है।

وَحَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ بْنُ سَعِيدٍ، وَعَبْدُ الْوَهَّابِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيدِ، قَالاَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ أُمِرَ بِلاَلٌ أَنْ يَشْفَعَ، الأَذَانَ وَيُوتِرَ الإِقَامَةَ .

(841) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि बिलाल (रज़ि.) को हुक्म दिया गया कि अज़ान में कलिमात दो-दो बार कहे और इक़ामत में एक-एक बार।

फ़ायदा : कलिमाते तकबीर के बारे में जुम्हूर उलमा, इमाम शाफ़ेई, इमाम अहमद और मुहद्दिसीन का क़ौल यही है कि तकबीर के कलिमात ग्यारह हैं अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर, अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह, अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह, हय्य अलस्सलाह, हय्य अलल फ़लाह, क़द क़ामतिस्सलाह, क़द क़ामतिस्सलाह, अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर ला इला-ह इल्लल्लाह। इमाम मालिक के नज़दीक तकबीर के कलिमात दस हैं क्योंकि वो क़द क़ामतिस्सलाह को भी एक ही बार क़रार देते हैं। इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक तकबीर भी अज़ान ही की तरह है और इसमें क़द क़ामतिस्सलाह का दो बार इज़ाफ़ा है। इसलिये कलिमाते तकबीर 17 हैं और इमाम नववी ने इसको शाज़ मज़हब क़रार दिया है।

बाब 3 : अज़ान की हैयत व कैफ़ियत

باب صِفَةِ الأَذَانِ

(842) हज़रत अबू महज़ूरा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने मुझे ये अज़ान सिखाई, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह, अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह, अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह, अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह फिर लौटकर मुअज़्ज़िन दोबारा कहे अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह, अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह, अशहदु अन्न मुहम्मदर्- रसूलुल्लाह, अशहदु अन्न मुहम्मद्-रसूलुल्लाह, हय्य अलस्सलाह दो बार, हय्य अलल फ़लाह दो बार। नमाज़ की तरफ़ आओ कामयाबी व कामरानी की तरफ़ आओ। इस्हाक़ ने इज़ाफ़ा किया अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर, ला इला-ह इल्लल्लाह।

(अबू दाऊद : 500,501,503,505, तिर्मिज़ी : 191, 192, नसाई : 2/3,4, 2/4, 1/5, 1/7, इब्ने माजह : 708, 709)

حَدَّثَنِي أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ، مَالِكُ بْنُ عَبْدِ الْوَاحِدِ وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ أَبُو غَسَّانَ حَدَّثَنَا مُعَاذٌ، وَقَالَ، إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، صَاحِبِ الدَّسْتَوَائِيِّ وَحَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ عَامِرٍ الأَحْوَلِ، عَنْ مَكْحُولٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُحَيْرِيزٍ، عَنْ أَبِي مَحْذُورَةَ، أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَّمَهُ هَذَا الأَذَانَ " اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ - ثُمَّ يَعُودُ فَيَقُولُ - أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ حَىَّ عَلَى الصَّلاَةِ - مَرَّتَيْنِ - حَىَّ عَلَى الْفَلاَحِ - مَرَّتَيْنِ " . زَادَ إِسْحَاقُ " اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) हय्य : आओ, हाज़िर हो। **(2) अल्फ़लाह :** निजात व कामयाबी या बक़ा व दवाम।

फ़ायदा : अबू महज़ूरा की रिवायत में अज़ान में तरजीअ है कि कलिमाते शहादत पहले दो-दो बार आहिस्ता कहेंगे फिर उनका इआदा करते (लौटाते) हुए बुलंद आवाज़ से कहेंगे। इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई, इमाम अहमद और मुहद्दिसीन (रह.) का यही मौक़िफ़ है और ये रिवायत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद की अज़ान के बहुत बाद 3 हिजरी में सिखाई गई। इसलिये हरमैन में इस पर अमल है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) तरजीअ के क़ाइल नहीं। मुस्लिम की इस हदीस़ में अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर दो बार आया है। इसलिये इमाम मालिक (रह.) अज़ान के शुरू में अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर दो बार कहने के ही क़ाइल हैं। लेकिन बक़ौल क़ाज़ी अयाज़ सहीह मुस्लिम के कुछ नुस्ख़ों में अल्लाहु अकबर चार मर्तबा कहना लिखा हुआ है। कुछ दूसरी किताबों में भी अबू महज़ूरा (रज़ि.) की रिवायत में अल्लाहु अकबर चार बार आया है। इसलिये इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद और मुहद्दिसीन का मस्लक ये है कि अज़ान के शुरू में अल्लाहु अकबर चार बार कहा जायेगा। अगरचे इमाम ख़त्ताबी ने ये तावील की है कि अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर दोनों को मिलाकर एक ही साँस में कहेंगे। इसलिये ये एक कलिमा हुआ तो अल्लाहु अकबर भी इस तरह दो बार हुआ। अहनाफ़ ने अबू महज़ूरा की अज़ान की तावील की है। चूंकि वो काफ़िर थे, इसलिये उनके दिल में कलिमाते शहादत रासिख़ करने के लिये उनसे ये कलिमात तकरार के साथ कहलाये गये। लेकिन सवाल ये है कि वो मक्का मुकर्रमा में हमेशा तरजीअ के साथ अज़ान देते रहे। आपने उनको मना क्यों नहीं फ़रमाया। नीज़ किसी सहाबी को भी ये पता न चल सका कि आपने ये कलिमात, कलिमाते शहादत के रासिख़ करने के लिये दोबारा कहलवाये थे। ये अज़ान का हिस्सा नहीं हैं। वो आख़िर तक इसी तरह अज़ान कहते रहे। किसी सहाबी ने भी उनको इसकी तरफ़ तवज्जह नहीं दिलाई। बाक़ी रही ये बात कि हज़रत बिलाल (रज़ि.) मदीना में बिला तरजीअ अज़ान देते थे। इसकी वजह ये है कि इस तरह अज़ान भी दुरुस्त है। इसलिये इस पर ऐतराज़ क्यों किया जाता और उनकी तकबीर भी इकहरी थी। जैसाकि सहीह रिवायत से साबित है। उनकी तकबीर को क्यों नज़र अन्दाज़ किया जाता है और हज़रत अनस (रज़ि.) की रिवायात में तो इकहरी तकबीर कहने का हुक्म मौजूद है और ये हुक्म रसूलुल्लाह (ﷺ) ही ने दिया था।

باب اسْتِحْبَابِ اتِّخَاذِ مُؤَذِّنَيْنِ لِلْمَسْجِدِ الْوَاحِدِ

बाब 4 : एक मस्जिद के लिये दो मुअज़्ज़िन रखना पसन्दीदा है

حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ كَانَ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مُؤَذِّنَانِ بِلاَلٌ وَابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ الأَعْمَى .

(843) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के दो मुअज़्ज़िन थे, बिलाल और नाबीना उम्मे मक्तूम का बेटा।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، حَدَّثَنَا الْقَاسِمُ، عَنْ عَائِشَةَ، مِثْلَهُ .

(844) इमाम साहब मज़्कूरा बाला रिवायत हज़रत आइशा (रज़ि.) से बयान करते हैं।

(सहीह बुख़ारी : 622,623, 1918, 1919, नसाई)

باب جَوَازِ أَذَانِ الأَعْمَى إِذَا كَانَ مَعَهُ بَصِيرٌ

बाब 5 : अन्धे के साथ जब बीना हो तो उसका अज़ान देना जाइज़ है

حَدَّثَنِي أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ الْهَمْدَانِيُّ حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ مَخْلَدٍ - عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ يُؤَذِّنُ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ أَعْمَى .

(845) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि उम्मे मक्तूम का बेटा रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये अज़ान देता था और वो नाबीना था।

(अबू दाऊद : 535)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ الْمُرَادِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، وَسَعِيدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ هِشَامٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(846) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

फ़ायदा : अज़ान के लिये औक़ात मुक़र्रर होते हैं और नाबीना अपने तौर पर मालूम नहीं कर सकता। इसलिये अगर उसको कोई वक़्त बताने वाला मौजूद हो या आज-कल अन्धों के लिये घड़ियाँ निकल चुकी हैं उनको वो सुन सकता हो तो वो अज़ान कह सकता है।

باب الإِمْسَاكِ عَنِ الإِغَارَةِ، عَلَى قَوْمٍ فِي دَارِ الْكُفْرِ إِذَا سُمِعَ فِيهِمُ الأَذَانُ

बाब 6 : दारुल कुफ़्र के लोगों से अज़ान सुनने की सूरत में हमला करने से रुक जाना

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، - يَعْنِي ابْنَ سَعِيدٍ - عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُغِيرُ إِذَا طَلَعَ الْفَجْرُ وَكَانَ يَسْتَمِعُ الأَذَانَ فَإِنْ سَمِعَ أَذَانًا أَمْسَكَ وَإِلاَّ أَغَارَ فَسَمِعَ رَجُلاً يَقُولُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ ‏.‏ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏"‏ عَلَى الْفِطْرَةِ ‏"‏ ‏.‏ ثُمَّ قَالَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ ‏.‏ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏"‏ خَرَجْتَ مِنَ النَّارِ ‏"‏ ‏.‏ فَنَظَرُوا فَإِذَا هُوَ رَاعِي مِعْزًى ‏.‏

(847) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (दुश्मन पर) तुलूअे फ़ज्र के वक़्त हमला करते थे और अज़ान की आवाज़ पर कान लगाये रखते थे। अगर आप अज़ान सुन लेते तो हमला करने से रुक जाते, वरना हमला कर देते। आपने एक आदमी को कहते हुए सुना, अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर तो आपने फ़रमाया, 'ये फ़ितरते इस्लाम पर है।' फिर उसने कहा, अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह, अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तू आग से आज़ाद हो गया।' सहाबा किराम (रज़ि.) ने उस शख़्स को देखा तो वो बकरियों का चरवाहा था।

(अबू दाऊद : 2634, तिर्मिज़ी : 1618)

फ़ायदा : किसी गाँव या बस्ती से अज़ान की आवाज़ आना, उसके बाशिन्दों के मुसलमान होने की दलील है। इसलिये उस बस्ती पर हमला नहीं किया जायेगा। चरवाहे का अल्लाह की वहदानियत की गवाही देना, उसके मुसलमान होने की दलील है। इस गवाही पर आपने उसको आग से निजात पाने की ख़बर दी। इसका आपके आलिमुल ग़ैब होने से कोई ताल्लुक़ नहीं है।

बाब 7 : अज़ान सुनकर, अज़ान देने वाले के कलिमात ही कहना मुस्तहब है, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) पर दरूद पढ़ेगा, फिर आपके लिये वसीले की दरख़्वास्त करेगा

باب اسْتِحْبَابِ الْقَوْلِ مِثْلَ قَوْلِ الْمُؤَذِّنِ لِمَنْ سَمِعَهُ ثُمَّ يُصَلِّي عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ يَسْأَلُ اللَّهَ لَهُ الْوَسِيلَةَ

(848) अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुम अज़ान सुनो तो जो कलिमात मुअज़्ज़िन कहता है वही तुम कहो।'

(सहीह बुख़ारी : 611, अबू दाऊद : 522, तिर्मिज़ी : 208, नसाई : 2/23, इब्ने माजह : 720)

حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ اللَّيْثِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا سَمِعْتُمُ النِّدَاءَ فَقُولُوا مِثْلَ مَا يَقُولُ الْمُؤَذِّنُ " .

(849) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) से रिवायत है कि उन्होंने नबी (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना, 'जब तुम मुअज़्ज़िन से अज़ाान सुनो तो मुअज़्ज़िन के कलिमात को तुम भी कहो। फिर मुझ पर दरूद भेजो, क्योंकि जो मुझ पर एक बार दरूद भेजता है अल्लाह तआ़ला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। फिर अल्लाह तआ़ला से मेरे बुलंद मक़ाम की दरख़्वास्त करो। क्योंकि वो जन्नत का एक ऐसा बुलंद मक़ाम है जो अल्लाह के बन्दों में से सिर्फ़ एक बन्दे को ही मिल सकेगा और मुझे उम्मीद है वो मैं हूँगा। तो जिसने मेरे लिये वसीले की दुआ़ की, उसको मेरी सिफ़ारिश हासिल होगी।

(अबू दाऊद: 523, तिर्मिज़ी : 3614, नसाई : 3/225)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ الْمُرَادِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، عَنْ حَيْوَةَ، وَسَعِيدِ بْنِ أَبِي أَيُّوبَ، وَغَيْرِهِمَا، عَنْ كَعْبِ بْنِ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِذَا سَمِعْتُمُ الْمُؤَذِّنَ فَقُولُوا مِثْلَ مَا يَقُولُ ثُمَّ صَلُّوا عَلَىَّ فَإِنَّهُ مَنْ صَلَّى عَلَىَّ صَلاَةً صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا ثُمَّ سَلُوا اللَّهَ لِيَ الْوَسِيلَةَ فَإِنَّهَا مَنْزِلَةٌ فِي الْجَنَّةِ لاَ تَنْبَغِي إِلاَّ لِعَبْدٍ مِنْ عِبَادِ اللَّهِ وَأَرْجُو أَنْ أَكُونَ أَنَا هُوَ فَمَنْ سَأَلَ لِيَ الْوَسِيلَةَ حَلَّتْ لَهُ الشَّفَاعَةُ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) सल्लू अलय्य : मेरे लिये अल्लाह के हुज़ूर दुआ करो और उसके कलिमात वही हैं जो आपने सिखाये हैं। **(2) अल्वसीलह :** किसी तक पहुँचने का ज़रिया-वास्ता, जिस चीज़ से अल्लाह का तक़र्रुब हासिल हो, उस मक़ाम तक पहुँचने वाले को अल्लाह का इन्तिहाई क़ुर्ब हासिल होगा, इसलिये इस आला और बुलंद मक़ाम को वसीले का नाम दिया गया है। **(3) हल्लत लहुश्शफ़ाअह :** वो सिफ़ारिश का हक़दार होगा, उसके लिये सिफ़ारिश स़ाबित हो गई।

حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو جَعْفَرٍ، مُحَمَّدُ بْنُ جَهْضَمٍ الثَّقَفِيُّ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ غَزِيَّةَ، عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ إِسَافٍ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا قَالَ الْمُؤَذِّنُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ . فَقَالَ أَحَدُكُمُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ . ثُمَّ قَالَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ . قَالَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ ثُمَّ قَالَ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ . قَالَ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ . ثُمَّ قَالَ حَىَّ عَلَى الصَّلاَةِ . قَالَ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ . ثُمَّ قَالَ حَىَّ عَلَى الْفَلاَحِ . قَالَ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ . ثُمَّ قَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ . قَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ . ثُمَّ قَالَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ . قَالَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ . مِنْ قَلْبِهِ دَخَلَ الْجَنَّةَ " .

(850) हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब मुअज़्ज़िन अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर कहे तो तुममें से कोई एक अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर कहे। फिर मुअज़्ज़िन अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह कहे तो वो भी अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह कहे। फिर मुअज़्ज़िन अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह कहे तो वो भी अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह कहे। फिर मुअज़्ज़िन हय्य अलस्सलाह कहे तो वो ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह कहे। फिर मुअज़्ज़िन हय्य अलल फ़लाह कहे तो वो ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह कहे। फिर मुअज़्ज़िन अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर कहे तो वो अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर कहे। फिर मुअज़्ज़िन ला इला-ह इल्लल्लाह कहे तो वो ला इला-ह इल्लल्लाह कहे। और ये कहना दिल से हो तो वो जन्नत में दाख़िल होगा।'

(अबू दाऊद : 527)

फ़वाइद : (1) अज़ान के दो पहलू हैं। एक हैसियत से वो नमाज़ बाजमाअत का ऐलान और बुलावा है। इस हैसियत से हर मुसलमान का फ़रीज़ा है कि वो अज़ान सुनते ही नमाज़ में शिरकत की तैयारी और एहतिमाम करे और बरवक़्त मस्जिद में पहुँचकर जमाअत में शरीक हो। अज़ान की दूसरी हैसियत ये है कि वो ईमान की दावत व पुकार और दीने हक़ का मन्शूर है और इस हैसियत का तक़ाज़ा ये है कि हर मुसलमान अज़ान सुनते ही इस ईमानी दावत के हर जुज़ और हर बोल की और दीने हक़ की इस मन्शूर की हर बार की अपने दिल की गहराई और ज़बान से तस्दीक़ करे और मुअज़्ज़िन के साथ इन कलिमात को कहे। इस तरह मुसलमान आबादी हर अज़ान के वक़्त अपने ईमानी अ़हद व मीस़ाक़ और दीने हक़ के मन्शूर पर अ़मलपैरा होने के अ़हद की तज्दीद करे। (2) इन अहादीस़ से स़ाबित होता है कि सुनने वाला, अज़ान सुनकर मुअज़्ज़िन वाले कलिमात भी दोहरा सकता है और हय्य अ़लस्सलाह, हय्य अ़लल फ़लाह के जवाब में ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह भी कह सकता है। दोनों तरह जवाब देना दुरुस्त है और बक़ौल कुछ दोनों को जमा भी किया जा सकता है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنِ الْحُكَيْمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قَيْسٍ الْقُرَشِيِّ، ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنِ الْحُكَيْمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " مَنْ قَالَ حِينَ يَسْمَعُ الْمُؤَذِّنَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ رَضِيتُ بِاللَّهِ رَبًّا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولاً وَبِالإِسْلاَمِ دِينًا . غُفِرَ لَهُ ذَنْبُهُ " . قَالَ ابْنُ رُمْحٍ فِي رِوَايَتِهِ " مَنْ قَالَ حِينَ يَسْمَعُ الْمُؤَذِّنَ وَأَنَا أَشْهَدُ " . وَلَمْ يَذْكُرْ قُتَيْبَةُ قَوْلَهُ وَأَنَا .

(851) हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से रिवायत सुनाई कि आपने फ़रमाया, 'जिसने मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनने के वक़्त कहा, अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह वह्दहू ला शरीक लहू मैं गवाही देता हूँ अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वो यगाना है, उसका कोई शरीक नहीं। व अशहदु अन्न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू और मैं शहादत देता हूँ कि मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं। रज़ीतु बिल्लाहि रब्बंव्-व बिमुहम्मदिन रसूलन व बिल्इस्लाम दीना मैं अल्लाह को रब मानकर और मुहम्मद को रसूल मानकर और इस्लाम को दस्तूरे ज़िन्दगी मानकर राज़ी और मुत्मइन हूँ। तो उसके गुनाह बख़्श दिये जायेंगे।' इब्ने रुम्ह ने अपनी रिवायत में कहा, जिसने मुअज़्ज़िन से अज़ान सुनते वक़्त कहा, व अना अशहदु मैं

भी शहादत देता हूँ और कुतैबा ने सुनने वाले के लिये व अन्ना का लफ़्ज़ बयान नहीं किया।

(अबू दाऊद : 525, तिर्मिज़ी : 210, नसाई : 3/26, इब्ने माजह : 721)

फ़ायदा : अज़ान के साथ, अज़ान के कलिमात कहे जायेंगे ये और दूसरी दुआ अज़ान के बाद पढ़ी जायेगी और इब्ने रुम्ह के अल्फ़ाज़ व अना अशहदु से मालूम होता है कि कलिमाते शहादत के साथ इसको पढ़ा जा सकता है। एक इस्तिदलाल और उसका जवाब, अहादीस़ में अज़ान सुनकर, मुअज़्ज़िन के कलिमात कहने का ज़िक्र है। या हय्य अलस्सलाह और हय्य अलल फ़लाह की जगह ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह का और फिर सामेअ (सुनने वाले) का हुक्म है कि वो अज़ान के बाद नबी (ﷺ) पर दरूद भेजे। लेकिन कुछ हज़रात ने फ़िक़्ही किताबों के हवाले से लिखा है कि पहली मर्तबा अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह सुनकर कुर्रत ऐनी बिक या रसूलल्लाह कहना मुस्तहब है। अल्लामा शामी ने रद्दुल मुख़्तार : 1/293 (मक्तबा माजिदिया कोयटा) में इसकी ताईद में एक हदीस़ नक़ल की है जो अल्मक़ासिदुल हसना लिस्सख़ावी के हवाले से है और फिर जर्राही के हवाले से नक़ल किया है कि जब हदीस़ ही सहीह नहीं तो ताईद कैसे होगी और अल्मक़ासिदुल हसना दारुल कुतुबिल अरबी पेज नम्बर 450 में एक और हदीस़ है। अल्लामा इब्ने आबिदीन वाली रिवायत मौजूद ही नहीं है और मुल्ला अली क़ारी ने जो बात सख़ावी की इबारत के बाद कही है वो दुरुस्त नहीं है।

एक असबियत रखने वाला हन्फ़ी फ़ाज़िल अब्दुल फ़त्ताह अबू ग़दा मुल्ला अली क़ारी (रह.) की एक दूसरी किताब अल्मस्नूअ फ़ी मअरिफ़तिल हदीसिल मौज़ूअ मक्तबा अल्मत्बूआतुल इस्लामिया बहल्ब पेज नम्बर 169 हाशिया नम्बर 2 पर अल्लामा क़ारी की इबारत पर इन्तिहाई तअज्जुब करते हुए लिखते हैं कि इस तआक़ुब की ग़लती के सिवा कोई हैसियत नहीं है। क्योंकि अबू बक्र की तरफ़ उसकी निस्बत ही सहीह नहीं है और अबू ग़दा ने तहावी के इस्तिदलाल के बारे में लिखा है, हुवा कलामुन मरदूद बिमा क़ालहुल हुफ़्फ़ाज़ और मुल्ला अली क़ारी के बारे में लिखा है, यतीबु लहु फ़ी कसीरिम्मिनत्तअक़्क़ुबाति हुब्बु इस्तिदराक व लौ बितअवीलिन बईदिन ला यक़ूमु अलैहि दलील कि वो सिर्फ़ इस्तिदराक के शौक़ में बिला दलील, तावीले बईद से काम लेते हैं। (पेज नम्बर 170) और अल्लामा सुबाग़ ने अल्मौज़ूआतुल कुबरा के हाशिये 316 पर लिखा है, मुअल्लिफ़ ने जबकि साबित है कैसे कह दिया, हालांकि वो थोड़ा सा पहले ख़ुद कह चुके हैं ये सहीह नहीं है और बक़ौल इमाम इब्ने तैमिया (रह.) किताबुल फ़िरदौस में, अहादीसे मौज़ूआत यानी मनघढ़त अहादीस़ बहुत हैं। (मिन्हाजुस्सुन्नह : 3/17)

और हदीस़ में सुनने वाले को दरूद पढ़ने का हुक्म है और वो भी अज़ान के जवाब के बाद और ज़ाहिर है सुनने वाला अज़ान का जवाब आहिस्ता देता है और दरूद भी आहिस्ता पढ़ता है। लेकिन कुछ हज़रात ने इस हुक्म में मुअज़्ज़िन को भी शामिल कर लिया है और फिर मुअज़्ज़िन के लिये अज़ान से पहले और अज़ान के बाद बुलंद आवाज़ से दरूद पढ़ना स़ाबित किया है।

और तरफ़ा तमाशा ये है कि इस हक़ीक़त का ऐतराफ़ किया है अ़ल्लामा सख़ावी और अ़ल्लामा अ़लाई की इबारत से ये वाज़ेह हो गया कि अज़ान के बाद सलात व सलाम आठवीं सदी में सुल्तान सलाहुद्दीन अबुल मुज़फ़्फ़र के हुक्म से पढ़ना शुरू किया गया और चौधवीं सदी के आख़िर से पाँचों नमाज़ों की अज़ान से पहले या बाद में सलात व सलाम पढ़ा जाता है। (शरह सहीह मुस्लिम उर्दू : 1/1093, अ़ल्लामा गुलाम रसूल सईदी)

सवाल ये है कि अगर ये ख़ैर का काम है जैसाकि अल्लाह के कलाम वफ़्अलुल ख़ैर से इसको स़ाबित किया गया है तो इस ख़ैर का पता 781 हिजरी तक किसी सहाबी, ताबेई या मुहद्दिस़ व इमाम को क्यों न चल सका और फिर इसका इल्म भी हुआ तो एक बादशाह को। दरूद व सलाम एक अ़मले मत्लूब है और रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुहब्बत व अ़क़ीदत का एक तक़ाज़ा और अ़लामत है। सवाल उस मख़्सूस कैफ़ियत व हैयत का है, जिसका सुबूत दीन में नहीं और इसके बारे में क़ौले फ़ैसल, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) का फ़रमान है, जिसको ख़ुद अ़ल्लामा सईद ने नक़ल किया है कि हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) के पहलू में बैठे हुए आदमी को छींक आई तो उसने कहा, अल्हम्दुलिल्लाह वस्सलातु अ़ला रसूलिल्लाह तो इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कहा, मैं भी कहता हूँ, शुक्र का हक़दार अल्लाह है और सलामती रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये है। लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने छींक के जवाब में इस तरह तालीम नहीं दी। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें तालीम दी है कि हम कहें अल्हम्दुलिल्लाह अ़ला कुल्लि हाल।

उसके बाद अ़ल्लामा सईदी लिखते हैं, उस शख़्स ने जो छींक के बाद अल्हम्दुलिल्लाहि वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाह कहा तो उसकी वजह ये नहीं थी कि वो हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से ज़्यादा रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुहब्बत करता था और न ये बात थी कि हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) से बुग़्ज़ की बिना पर उसको छींक के बाद दरूद शरीफ़ पढ़ने से मना कर रहे थे। उनका मतलब सिर्फ़ इतना था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जो इबादात जिस तरह मशरूअ़ और मुक़र्रर फ़रमाई हैं उनको किसी तरमीम और इज़ाफ़े के बग़ैर अदा करना इत्तिबाअ़े रसूल और जमाअ़ते सहाबा (रज़ि.) के साथ वाबस्तगी है और अपनी राय से उनमें किसी साबिक़ा और लाहिक़ा का इज़ाफ़ा करना बहरहाइल लायक़े सताइश नहीं। (शरह सहीह मुस्लिम उर्दू : 1/1095)

और इससे पहले ये तस्लीम कर चुके हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने मदीना मुनव्वरा में दस साल अज़ान दी जाती रही। ख़ुलफ़ाए राशिदीन के दौर में तीस साल अज़ान दी जाती रही और सौ साल तक अहदे सहाबा व ताबेईन में अज़ान दी जाती रही और किसी दौर में भी अज़ान से पहले या बाद फ़सल करके जहरन दरूद शरीफ़ नहीं पढ़ा गया और आठ सदियों तक मुसलमान इस तरीक़े से अज़ान देते रहे। (1/1094)

सवाल ये है कि अब इसमें तरमीम व इज़ाफ़े की क्यों ज़रूरत पेश आ गई है अगर इसी तरह नेकी के नाम से दीन में इज़ाफ़े की इजाज़त दे दी जाये तो ये काम कहीं रुकने का नाम नहीं लेगा और कुल्लु बिदअतिन ज़लालह का मानी मतलब ही ख़त्म हो जायेगा। क्योंकि हर बिदअत नेकी के नाम से ईजाद की जाती है कोई कह सकता है अज़ान कहना दीन का शिआर है और दीन के मन्शूर का ऐलान है। नमाज़े जुम्आ के लिये इज्तिमाअ की ख़ातिर अज़ान दी जाती है और ईदैन में उससे बड़ा इज्तिमाअ होता है। लिहाज़ा उसके लिये अज़ान कहने में क्या हर्ज है? क़ुरआन पढ़ना नेकी का अमल है, लिहाज़ा सिर्री नमाज़ों में बुलंद क़िरअत करने में क्या हर्ज है? दरूद शरीफ़ पढ़ना पसन्दीदा काम है तो इसको नमाज़ के क़ियाम या रुकूअ या सज्दे में पढ़ने में क्या हर्ज है? नमाज़ दीन का सुतून है और बहुत अफ़ज़ल अमल है, लिहाज़ा शाम की रकआत चार और फ़ज्र की भी चार करने में क्या हर्ज है? आपने कब कहा, मग़रिब की चार रकआत न बनाना या फ़ज्र में इज़ाफ़ा न करना। इस तरह नेकी के नाम से जो चाहो इज़ाफ़ा करते जाओ और बतौरे दलील कह दो अल्लाह का फ़रमान है, वफ़अलुल ख़ैर नेकी के काम करो। ख़ुलासए कलाम ये है कि दीन इसका नाम है जो काम आपने जैसे किया है उसको वैसे ही किया जाये उसमें अपनी तरफ़ से कमी व बेशी न की जाये या किसी अमल के लिये अपनी तरफ़ से कोई मख़्सूस कैफ़ियत व शक्ल ईजाद न की जाये।

बाब 8 : अज़ान की फ़ज़ीलत और शैतान का अज़ान सुनकर भाग खड़े होना

باب فَضْلِ الأَذَانِ وَهَرَبِ الشَّيْطَانِ عِنْدَ سَمَاعِهِ

(852) तलहा बिन यहया अपने चाचा से नक़ल करते हैं कि मैं मुआविया बिन अबी सुफ़ियान (रज़ि.) के पास था। उनके पास मुअज़्ज़िन आया और उनको नमाज़ के लिये बुलाया तो मुआविया (रज़ि.) ने कहा, मैंने

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ يَحْيَى، عَنْ عَمِّهِ، قَالَ كُنْتُ عِنْدَ مُعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ فَجَاءَهُ الْمُؤَذِّنُ يَدْعُوهُ إِلَى الصَّلاَةِ فَقَالَ مُعَاوِيَةُ

रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना, 'क़यामत के दिन मुअज़्ज़िनों की गर्दनें सब लोगों से लम्बी होंगी।'
(इब्ने माजह : 725)

سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " الْمُؤَذِّنُونَ أَطْوَلُ النَّاسِ أَعْنَاقًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ " .

फ़ायदा : मुअज़्ज़िन को अज़ान के लिये बहुत मुस्तइद और चौकस होना पड़ता है और सब लोग अज़ान सुनकर ही नमाज़ का एहतिमाम करते हैं, इसलिये क़यमत को उसे ये शर्फ़ और ऐज़ाज़ हासिल होगा कि वो सबसे मुम्ताज़ और मुन्फ़रिद नज़र आयेगा या कसरते अज्र व सवाब की बिना पर उसकी गर्दन बुलंद होगी, ताकि मैदाने हश्र के पसीने से उसका चेहरा महफ़ूज़ रहे।

(853) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِيهِ إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو عَامِرٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ يَحْيَى، عَنْ عِيسَى بْنِ طَلْحَةَ، قَالَ سَمِعْتُ مُعَاوِيَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(854) हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना, 'शैतान जब नमाज़ के लिये अज़ान सुनता है तो मक़ामे रौहा तक भाग जाता है।' सुलैमान (आमश) कहते हैं, मैंने अपने उस्ताद से रौहा के बारे में पूछा? तो उन्होंने बताया, ये मदीना से छत्तीस मील के फ़ास्ले पर है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَعُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ الشَّيْطَانَ إِذَا سَمِعَ النِّدَاءَ بِالصَّلاَةِ ذَهَبَ حَتَّى يَكُونَ مَكَانَ الرَّوْحَاءِ " . قَالَ سُلَيْمَانُ فَسَأَلْتُهُ عَنِ الرَّوْحَاءِ . فَقَالَ هِيَ مِنَ الْمَدِينَةِ سِتَّةٌ وَثَلاَثُونَ مِيلاً .

(855) हमें यही रिवायत अबू बक्र बिन अबी शैबा और अबू कुरैब दोनों ने अबू मुआविया के वास्ते से आमश की मज़्कूरा बाला सनद से सुनाई।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(856) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ،

وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - وَاللَّفْظُ لِقُتَيْبَةَ - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ الشَّيْطَانَ إِذَا سَمِعَ النِّدَاءَ بِالصَّلاَةِ أَحَالَ لَهُ ضُرَاطٌ حَتَّى لاَ يَسْمَعَ صَوْتَهُ فَإِذَا سَكَتَ رَجَعَ فَوَسْوَسَ فَإِذَا سَمِعَ الإِقَامَةَ ذَهَبَ حَتَّى لاَ يَسْمَعَ صَوْتَهُ فَإِذَا سَكَتَ رَجَعَ فَوَسْوَسَ " .

है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'शैतान जब नमाज़ के लिये पुकार सुनता है तो ज़ोर से हवा ख़ारिज करता हुआ भागता है, ताकि मुअज़्ज़िन की आवाज़ न सुनाई दे। जब मुअज़्ज़िन चुप हो जाता है तो वापस आ जाता है और (नमाज़ियों के दिलों में) वस्वसा पैदा करता है। तो जब तकबीर सुनता है तो फिर भागता है ताकि उसकी आवाज़ सुनाई न दे। जब वो ख़ामोश हो जाता है वापस आ जाता है और लोगों के दिलों में वस्वसा पैदा करता है।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अहाल : भाग खड़ा होता है। **(2) ज़ुरातन :** गोज़, बुलंद आवाज़ से दुबुर से हवा ख़ारिज करना है।

फ़ायदा : अज़ान चूंकि दीने हक़ का ख़ुलासा और निचोड़ है। इसलिये इसको आपने दावत नामा (मुकम्मल दावत) का नाम दिया है और शैतान को दीने हक़ से चिढ़ और दुश्मनी है। इसलिये इसका सुनना नागवारी का बाइस़ है इसलिये वो तकबीर और अज़ान दोनों के सुनने का रवादार नहीं और उसके लिये उनका सुनना इन्तिहाई परेशानी और इज़्तिराब का बाइस़ है। इस परेशानी के आलम में भाग खड़ा होता है और दूर तक चला जाता है।

حَدَّثَنِي عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ بَيَانٍ الْوَاسِطِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ اللَّهِ - عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا أَذَّنَ الْمُؤَذِّنُ أَدْبَرَ الشَّيْطَانُ وَلَهُ حُصَاصٌ " .

(857) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब मुअज़्ज़िन अज़ान देता है, शैतान पीठ फेरकर सरपट दौड़ता है या गोज़ मारता हुआ जाता है।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : हुसासुन : गोज़ मारना या तेज़ भागना।

حَدَّثَنِي أُمَيَّةُ بْنُ بِسْطَامَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، - يَعْنِي ابْنَ زُرَيْعٍ - حَدَّثَنَا رَوْحٌ، عَنْ سُهَيْلٍ، قَالَ أَرْسَلَنِي أَبِي إِلَى بَنِي حَارِثَةَ - قَالَ - وَمَعِي غُلاَمٌ لَنَا - أَوْ صَاحِبٌ لَنَا - فَنَادَاهُ مُنَادٍ مِنْ

(858) हज़रत सुहैल से रिवायत है कि मुझे मेरे बाप ने बनू हारिसा की तरफ़ भेजा और मेरे साथ हमारा एक लड़का भी था या हमारा दोस्त था। उसको किसी आवाज़ देने वाले ने बाग़ के एहाते से उसका नाम लेकर आवाज़

حَائِطٍ بِاسْمِهِ - قَالَ - وَأَشْرَفَ الَّذِي مَعِي عَلَى الْحَائِطِ فَلَمْ يَرَ شَيْئًا فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لأَبِي فَقَالَ لَوْ شَعَرْتُ أَنَّكَ تَلْقَى هَذَا لَمْ أُرْسِلْكَ وَلَكِنْ إِذَا سَمِعْتَ صَوْتًا فَنَادِ بِالصَّلاَةِ فَإِنِّي سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " إِنَّ الشَّيْطَانَ إِذَا نُودِيَ بِالصَّلاَةِ وَلَّى وَلَهُ حُصَاصٌ " .

दी और मेरे साथी ने एहाते के अंदर झांका तो उसे कुछ नज़र न आया। मैंने ये वाक़िया अपने वालिद को बताया तो उसने कहा, अगर मुझे मालूम होता तुम इस वाक़िये से दोचार होगे तो मैं तुम्हें न भेजता। लेकिन आइन्दा तुम अगर ऐसी आवाज़ सुनो तो नमाज़ वाली अज़ान देना क्योंकि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) की हदीस़ सुनी है, आपने फ़रमाया, 'जब नमाज़ के लिये पुकारा जाता है तो शैतान गोज़ मारता हुआ, पीठ फेरकर भाग खड़ा होता है।'

फ़ायदा : अबू सालेह ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से ये इस्तिदलाल किया है कि अगर किसी को जिन्न की आवाज़ सुनाई दे तो वो अज़ान दे। इससे कुछ हज़रात ने ये निकाला है, अगर किसी घर वाले को जिन्न तंग करें तो वो अज़ान दें, बहरहाल ये इस्तिम्बात है कोई मसनून चीज़ नहीं है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، - يَعْنِي الْحِزَامِيَّ - عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا نُودِيَ لِلصَّلاَةِ أَدْبَرَ الشَّيْطَانُ لَهُ ضُرَاطٌ حَتَّى لاَ يَسْمَعَ التَّأْذِينَ فَإِذَا قُضِيَ التَّأْذِينُ أَقْبَلَ حَتَّى إِذَا ثُوِّبَ بِالصَّلاَةِ أَدْبَرَ حَتَّى إِذَا قُضِيَ التَّثْوِيبُ أَقْبَلَ حَتَّى يَخْطِرَ بَيْنَ الْمَرْءِ وَنَفْسِهِ يَقُولُ لَهُ اذْكُرْ كَذَا وَاذْكُرْ كَذَا لِمَا لَمْ يَكُنْ يَذْكُرُ مِنْ قَبْلُ حَتَّى يَظَلَّ الرَّجُلُ مَا يَدْرِي كَمْ صَلَّى " .

(859) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब नमाज़ के लिये अज़ान दी जाती है शैतान गोज़ मारता हुआ, पीठ फेरकर भाग खड़ा होता है, ताकि अज़ान सुनाई न दे तो जब अज़ान पूरी हो जाती है, आ जाता है। यहाँ तक कि जब नमाज़ के लिये तकबीर कही जाती है भाग जाता है, फिर जब तकबीर ख़त्म हो जाती है, फिर आ जाता है। यहाँ तक कि इंसान और उसके दिल के दरम्यान गुज़रता है और उसे कहता है फ़लाँ चीज़ याद कर, फ़लाँ चीज़ याद कर। हालांकि वो चीज़ें उसे पहले याद नहीं होतीं, यहाँ तक कि आदमी की ये हालत हो जाती है उसको पता नहीं चलता उसने कितनी रकअतें पढ़ीं?'

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) सुव्विब : तस़्वीब का मक़सद इक़ामत है, क्योंकि स़ाब का मानी लौटना

होता है। **(2) मुअज़्ज़िन :** अज़ान के बाद दोबारा नमाज़ की तरफ़ बुलाता है। इसलिये तकबीर को तस्वीब कहते हैं। **(3) यख़्तुरु :** अगर ता पर ज़ेर पढ़ें तो मानी होगा वस्वसा डालना अगर ता पर पेश पढ़ें तो मानी होगा, गुज़रना। यानी इंसान और उसके दिल के दरम्यान हाइल होता है। ताकि उसको असल मक़सूद से दूसरी चीज़ में मशग़ूल कर दे।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " حَتَّى يَظَلَّ الرَّجُلُ إِنْ يَدْرِي كَيْفَ صَلَّى " .

(860) इमाम साहब ने एक और सनद से अबू हुरैरह (रज़ि.) की नबी (ﷺ) से मज़्कूरा बाला रिवायत नक़ल की है। सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि उसमें मा यदरी कम सल्ला? की बजाए इंय्यदरी कैफ़ा सल्ला है कि वो नहीं जानता कैसे नमाज़ पढ़े।

फ़ायदा : जब इमाम नमाज़ के लिये आ जाये तो उसको देखकर खड़े होना चाहिये ताकि तकबीर की तक्मील तक सफ़ें दुरुस्त हो जायें।

باب اسْتِحْبَابِ رَفْعِ الْيَدَيْنِ حَذْوَ الْمَنْكِبَيْنِ مَعَ تَكْبِيرَةِ الإِحْرَامِ وَالرُّكُوعِ وَفِي الرَّفْعِ مِنَ الرُّكُوعِ وَأَنَّهُ لاَ يَفْعَلُهُ إِذَا رَفَعَ مِنَ السُّجُودِ

बाब 9 : तकबीरे तहरीमा, रुकूअ में जाते और रुकूअ से उठते वक़्त कन्धों के बराबर हाथ उठाना मुस्तहब है और सज्दा से उठते वक़्त हाथ नहीं उठाये जायेंगे

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، وَسَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَعَمْرٌو النَّاقِدُ وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ وَابْنُ نُمَيْرٍ كُلُّهُمْ عَنْ سُفْيَانَ بْنِ عُيَيْنَةَ، - وَاللَّفْظُ لِيَحْيَى قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، - عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا

(861) हज़रत सालिम अपने बाप से रिवायत बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा जब आप नमाज़ की शुरूआत फ़रमाते अपने दोनों हाथ कन्धों के बराबर तक और रुकूअ से पहले भी और जब रुकूअ से सर उठाते और सज्दों के दरम्यान हाथ नहीं उठाते थे। (अबू दाऊद : 721, तिर्मिज़ी : 255, नसाई : 2/1182, इब्ने माजह : 858)

افْتَتَحَ الصَّلاَةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ وَقَبْلَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوعِ وَلاَ يَرْفَعُهُمَا بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ .

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ ابْنَ عُمَرَ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا قَامَ لِلصَّلاَةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى تَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ كَبَّرَ فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ وَإِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ وَلاَ يَفْعَلُهُ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ .

(862) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब नमाज़ के लिये खड़े होते, अपने दोनों हाथों को अपने कन्धों के बराबर तक उठाते, फिर अल्लाहु अकबर कहते, तो जब रुकूअ करना चाहते फिर ऐसा ही करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो ऐसा ही करते और सज्दे से अपना सर उठाते वक़्त ऐसा नहीं करते।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا حُجَيْنٌ، - وَهُوَ ابْنُ الْمُثَنَّى - حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قُهْزَاذَ، حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ، كِلاَهُمَا عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ كَمَا قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا قَامَ لِلصَّلاَةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى تَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ كَبَّرَ .

(863) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से बयान करते हैं कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ के लिये खड़े होते तो अपने दोनों हाथ अपने दोनों कन्धों के बराबर उठाते और फिर तकबीर कहते।

(सहीह बुख़ारी : 736, नसाई : 1/121-122)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، أَنَّهُ رَأَى

(864) अबू क़िलाबा से रिवायत है कि उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस़ (रज़ि.) को देखा, जब वो नमाज़ शुरू करते, अल्लाहु अकबर कहते फिर अपने दोनों हाथ उठाते

مَالِكَ بْنَ الْحُوَيْرِثِ إِذَا صَلَّى كَبَّرَ ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَحَدَّثَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَفْعَلُ هَكَذَا .

और जब रुकूअ करना चाहते, अपने दोनों हाथ उठाते और जब रुकूअ से अपना सर उठाते अपने दोनों हाथ उठाते और बताते रसूलुल्लाह (ﷺ) ऐसा ही किया करते थे।

(सहीह बुख़ारी : 737)

حَدَّثَنِي أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا كَبَّرَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا أُذُنَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا أُذُنَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَقَالَ " سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ " . فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ .

(865) हज़रत मालिक बिन हुवैरिस़ (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब अल्लाहु अकबर कहते अपने दोनों हाथों को कानों के बराबर तक उठाते और जब रुकूअ करते अपने दोनों हाथों को अपने दोनों कानों के बराबर तक उठाते और जब रुकूअ से अपना सर उठाते तो समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहते और ऐसा ही करते।

(अबूदाऊद:745, नसाई:2/123,2/182, 2/194 2/205-206, 1142, इब्ने माजह : 809)

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ أَنَّهُ رَأَى نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَقَالَ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا فُرُوعَ أُذُنَيْهِ .

(866) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं कि उन्होंने नबी (ﷺ) को देखा और बताया यहाँ तक कि दोनों हाथ अपने दोनों कानों की लौ तक उठाते।

फ़वाइद : (1) तकबीरे तहरीमा के साथ रफ़अ यदैन की तीनों सूरतें जाइज़ हैं, पहले उठाये, बाद में अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर पहले कहे फिर रफ़अ यदैन करे, दोनों काम इकट्ठे करे। **(2)** जुम्हूर अइम्मा इमाम शाफ़ेई, इमाम मुहम्मद और एक क़ौल की रू से इमाम मालिक और तमाम मुहद्दिसीन के नज़दीक इन तीन मक़ामात पर रफ़अ यदैन सुन्नत है।

बाब 10 : नमाज़ में झुकते और उठते वक़्त हर जगह तकबीर कही जायेगी, मगर रुकूअ से उठते वक़्त समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहा जायेगा

باب إِثْبَاتِ التَّكْبِيرِ فِي كُلِّ خَفْضٍ وَرَفْعٍ فِي الصَّلاَةِ إِلاَّ رَفْعَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَيَقُولُ فِيهِ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، كَانَ يُصَلِّي لَهُمْ فَيُكَبِّرُ كُلَّمَا خَفَضَ وَرَفَعَ فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ وَاللَّهِ إِنِّي لأَشْبَهُكُمْ صَلاَةً بِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(867) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) हमें नमाज़ पढ़ाते, हर बार जब झुकते और उठते तो अल्लाहु अकबर कहते। जब उन्होंने नमाज़ से फ़राग़त हासिल की तो उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! मेरी नमाज़ तुम सबसे ज़्यादा रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ से मुशाबिहत रखती है।

(सहीह बुख़ारी : 785, नसाई : 2/235)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلاَةِ يُكَبِّرُ حِينَ يَقُومُ ثُمَّ يُكَبِّرُ حِينَ يَرْكَعُ ثُمَّ يَقُولُ " سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ " . حِينَ يَرْفَعُ صُلْبَهُ مِنَ الرُّكُوعِ ثُمَّ يَقُولُ وَهُوَ قَائِمٌ " رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ " . ثُمَّ يُكَبِّرُ حِينَ يَهْوِي سَاجِدًا ثُمَّ يُكَبِّرُ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ ثُمَّ يُكَبِّرُ حِينَ يَسْجُدُ ثُمَّ يُكَبِّرُ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ ثُمَّ يَفْعَلُ مِثْلَ ذَلِكَ فِي الصَّلاَةِ كُلِّهَا حَتَّى يَقْضِيَهَا

(868) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो खड़े होते वक़्त तकबीर कहते। फिर रुकूअ करते वक़्त तकबीर कहते। फिर जब रुकूअ से पुश्त उठाते तो उस वक़्त समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहते। फिर खड़े होने की हालत में रब्बना व लकल हम्द कहते। फिर जब सज्दे के लिये झुकते तो तकबीर कहते। फिर जब (सज्दे) से अपना सर उठाते तो तकबीर कहते। फिर दूसरा सज्दा करते वक़्त तकबीर कहते। फिर जब सज्दे से अपना सर उठाते तो तकबीर कहते। फिर पूरी नमाज़ में इसी तरह करते, यहाँ तक कि उसको अदा कर लेते। फिर जब दूसरी रकअत के

लिये बैठने के बाद उठते तो तकबीर कहते। फिर अबू हुरैरह (रज़ि.) कहते, मेरी नमाज़ तुम सबसे ज़्यादा रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ के मुशाबेह है।

(सहीह बुख़ारी : 789, अबू दाऊद : 738, नसाई : 2/233)

وَيُكَبِّرُ حِينَ يَقُومُ مِنَ الْمَثْنَى بَعْدَ الْجُلُوسِ ثُمَّ يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ إِنِّي لأَشْبَهُكُمْ صَلاَةً بِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(869) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब नमाज़ के लिये खड़े होते तकबीर कहते। इब्ने जुरैज की हदीस की तरह बयान किया और अबू हुरैरह (रज़ि.) का ये क़ौल कि मेरी नमाज़ तुम सबसे ज़्यादा रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ के मुशाबेह है, बयान नहीं किया।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا حُجَيْنٌ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلاَةِ يُكَبِّرُ حِينَ يَقُومُ بِمِثْلِ حَدِيثِ ابْنِ جُرَيْجٍ وَلَمْ يَذْكُرْ قَوْلَ أَبِي هُرَيْرَةَ . إِنِّي أَشْبَهُكُمْ صَلاَةً بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ

(870) अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान बयान करते हैं कि अबू हुरैरह (रज़ि.) को जब मरवान अपना जाँनशीन बनाकर जाता तो जब वो फ़र्ज़ नमाज़ के लिये खड़े होते तकबीर कहते, जब वो नमाज़ अदा कर लेते और सलाम फेरते तो अहले मस्जिद की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाते, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! मैं तुम सबसे ज़्यादा रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुशाबेह नमाज़ पढ़ता हूँ।

(नसाई : 2/181-182)

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، كَانَ - حِينَ يَسْتَخْلِفُهُ مَرْوَانُ عَلَى الْمَدِينَةِ - إِذَا قَامَ لِلصَّلاَةِ الْمَكْتُوبَةِ كَبَّرَ . فَذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ ابْنِ جُرَيْجٍ وَفِي حَدِيثِهِ فَإِذَا قَضَاهَا وَسَلَّمَ أَقْبَلَ عَلَى أَهْلِ الْمَسْجِدِ قَالَ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنِّي لأَشْبَهُكُمْ صَلاَةً بِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(871) अबू सलमा से रिवायत है कि अबू हुरैरह (रज़ि.) नमाज़ में जब भी उठते और

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِهْرَانَ الرَّازِيُّ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ

झुकते तकबीर कहते। हमने अबू हुरैरह (रज़ि.) से पूछा, ये तकबीर कैसी है? उन्होंने जवाब दिया, ये यक़ीनन रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ है।

أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، كَانَ يُكَبِّرُ فِي الصَّلاَةِ كُلَّمَا رَفَعَ وَوَضَعَ . فَقُلْنَا يَا أَبَا هُرَيْرَةَ مَا هَذَا التَّكْبِيرُ قَالَ إِنَّهَا لَصَلاَةُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(872) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) जब भी (नमाज़ में) झुकते और उठते तकबीर कहते और बताते रसूलुल्लाह (ﷺ) ऐसा ही करते थे।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ - عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ كَانَ يُكَبِّرُ كُلَّمَا خَفَضَ وَرَفَعَ وَيُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَفْعَلُ ذَلِكَ .

(873) हज़रत मुतर्रिफ़ बयान करते हैं कि मैंने और इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी। जब वो सज्दा करते अल्लाहु अकबर कहते और जब अपना सर उठाते अल्लाहु अकबर कहते और जब दूसरी रकअत से खड़े होते तकबीर कहते, जब हम नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो इमरान (रज़ि.) ने मेरा हाथ पकड़कर कहा, इन्होंने हमें मुहम्मद (ﷺ) वाली नमाज़ पढ़ाई है या ये कहा उन्होंने मुझे मुहम्मद (ﷺ) वाली नमाज़ याद करा दी है।

(सहीह बुख़ारी : 786, 826, अबू दाऊद : 835, नसाई : 2/204-205, 3/12)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَخَلَفُ بْنُ هِشَامٍ، جَمِيعًا عَنْ حَمَّادٍ، - قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، - عَنْ غَيْلاَنَ، عَنْ مُطَرِّفٍ، قَالَ صَلَّيْتُ أَنَا وَعِمْرَانُ بْنُ حُصَيْنٍ، خَلْفَ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ فَكَانَ إِذَا سَجَدَ كَبَّرَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ كَبَّرَ وَإِذَا نَهَضَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ كَبَّرَ فَلَمَّا انْصَرَفْنَا مِنَ الصَّلاَةِ - قَالَ - أَخَذَ عِمْرَانُ بِيَدِي ثُمَّ قَالَ لَقَدْ صَلَّى بِنَا هَذَا صَلاَةَ مُحَمَّدٍ صلى الله عليه وسلم . أَوْ قَالَ قَدْ ذَكَّرَنِي هَذَا صَلاَةَ مُحَمَّدٍ صلى الله عليه وسلم .

फ़वाइद : (1) इमाम मालिक, अबू हनीफ़ा, शाफ़ेई और अहमद के नज़दीक तकबीरे तहरीमा वाजिब, फ़र्ज़ है और बाक़ी तकबीरें भी उनके नज़दीक वाजिब (फ़र्ज़) हैं और बाक़ी के नज़दीक सुन्नत और इमाम औज़ाई और हसन बसरी (रह.) के नज़दीक सब तकबीर सुन्नत हैं। सहीह अहादीस़ का तक़ाज़ा तो यही है कि सब तकबीरात को वाजिब कहा जाये। (2) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की

हदीस़ 28 से स़ाबित होता है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह के बाद क़ोमा में दुआ़ पढ़ते थे और उसको मुन्फ़रिदन (तन्हा) नमाज़ पढ़ने पर महमूल करना, तावीले बईद है। इसलिये इमाम शाफ़ेई का मौक़िफ़ सहीह है कि इमाम हो या मुन्फ़रिद या मुक़्तदी, तस्मीअ़ के बाद दुआ़इया कलिमात पढ़ेगा, ये मौक़िफ़ दुरुस्त नहीं है कि इमाम सिर्फ़ समिअ़ल्लाह कहेगा और मुक़्तदी सिर्फ़ दुआ़इया कलिमात कहेगा और उसके लिये इज़ा क़ालल इमाम समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह फ़क़ूलू रब्बना लकल हम्द से इस्तिदलाल दुरुस्त नहीं है। इसका मक़सद तो ये है कि दुआ़इया कलिमात, तस्मीअ़ के बाद कहे जायेंगे। इस्तिदलाल की ज़रूरत तो वहाँ होती है जहाँ सराहत न हो। अबू हुरैरह (रज़ि.) की रिवायत में सराहत है, ये तो ऐसे ही है कोई कहे इज़ा क़ालल इमाम ग़ैरिल मग़ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ॉल्लीन फ़क़ूलू आमीन कि इमाम आमीन नहीं कहेगा।

बाब 11 : हर रकअ़त में सूरह फ़ातिहा पढ़ना फ़र्ज़ है और अगर सूरह फ़ातिहा अच्छी तरह न पढ़ सकता हो और न ही उसके लिये उसका सीखना मुम्किन हो तो सूरह फ़ातिहा के सिवा जो पढ़ना मुम्किन हो, पढ़ ले

باب وُجُوبِ قِرَاءَةِ الْفَاتِحَةِ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ وَإِنَّهُ إِذَا لَمْ يُحْسِنِ الْفَاتِحَةَ وَلاَ أَمْكَنَهُ تَعَلُّمُهَا قَرَأَ مَا تَيَسَّرَ لَهُ مِنْ غَيْرِهَا

(874) हज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उस शख़्स की कोई नमाज़ नहीं होती, जिसने फ़ातिहतुल किताब न पढ़ी।'

(सहीह बुख़ारी : 756, अबू दाऊद : 822, तिर्मिज़ी : 247, नसाई : 2/138, इब्ने माजह : 837)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، جَمِيعًا عَنْ سُفْيَانَ، - قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، - عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ مَحْمُودِ بْنِ الرَّبِيعِ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم " لاَ صَلاَةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ " .

फ़ायदा : ये रिवायत इस बात की सरीह दलील है कि फ़ातिहा के बग़ैर किसी की इमाम हो या मुन्फ़रिद या मुक़्तदी की कोई नमाज़ सिर्री हो या जहरी, फ़र्ज़ हो या नफ़ल, नहीं होती और हर रकअ़त नमाज़ है। इसलिये नमाज़ की तमाम रकआत में सूरह फ़ातिहा पढ़ना ज़रूरी है।

(875) इबादा बिन सामित (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने उम्मुल क़ुरआन न पढ़ी उसकी कोई नमाज़ नहीं।'

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، ح وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي مَحْمُودُ بْنُ الرَّبِيعِ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ صَلاَةَ لِمَنْ لَمْ يَقْتَرِئْ بِأُمِّ الْقُرْآنِ " .

(876) हज़रत महमूद बिन रबीअ (रज़ि.) जिसके चेहरे पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनके कुएँ से कुल्ली की थी, ने इसे इबादा बिन सामित (रज़ि.) से बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने उम्मुल क़ुरआन न पढ़ी उसकी कोई नमाज़ नहीं।'

حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّ مَحْمُودَ بْنَ الرَّبِيعِ الَّذِي، مَجَّ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي وَجْهِهِ مِنْ بِئْرِهِمْ أَخْبَرَهُ أَنَّ عُبَادَةَ بْنَ الصَّامِتِ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ صَلاَةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِأُمِّ الْقُرْآنِ " .

(877) इमाम साहब ने मज़्कूरा बाला रिवायत एक और सनद से बयान की और उसमें इतना इज़ाफ़ा किया, पस इससे ज़ाइद।

وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ وَزَادَ فَصَاعِدًا .

फ़ायदा : मुक़्तदी जहरी क़िरअत के वक़्त सिर्फ़ फ़ातिहा पढ़ेगा और इमाम व मुन्फ़रिद ज़ाइद पढ़ेंगे और जिन रकअतों में क़िरअत बुलंद नहीं और सिर्री नमाज़ें, उनमें मुक़्तदी भी ज़ाइद क़िरअत कर सकेगा।

(878) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने कोई नमाज़ पढ़ी और उसमें उम्मुल क़ुरआन न पढ़ी तो वो अधूरी और नाक़िस है कामिल नहीं है।' तीन

وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله

عليه وسلم قَالَ " مَنْ صَلَّى صَلاَةً لَمْ يَقْرَأْ فِيهَا بِأُمِّ الْقُرْآنِ فَهْىَ خِدَاجٌ - ثَلاَثًا - غَيْرُ تَمَامٍ " . فَقِيلَ لأَبِي هُرَيْرَةَ إِنَّا نَكُونُ وَرَاءَ الإِمَامِ . فَقَالَ اقْرَأْ بِهَا فِي نَفْسِكَ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " قَالَ اللَّهُ تَعَالَى قَسَمْتُ الصَّلاَةَ بَيْنِي وَبَيْنَ عَبْدِي نِصْفَيْنِ وَلِعَبْدِي مَا سَأَلَ فَإِذَا قَالَ الْعَبْدُ { الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ} . قَالَ اللَّهُ تَعَالَى حَمِدَنِي عَبْدِي وَإِذَا قَالَ { الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ} . قَالَ اللَّهُ تَعَالَى أَثْنَى عَلَىَّ عَبْدِي . وَإِذَا قَالَ { مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ} . قَالَ مَجَّدَنِي عَبْدِي - وَقَالَ مَرَّةً فَوَّضَ إِلَىَّ عَبْدِي - فَإِذَا قَالَ { إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ} . قَالَ هَذَا بَيْنِي وَبَيْنَ عَبْدِي وَلِعَبْدِي مَا سَأَلَ . فَإِذَا قَالَ { اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ * صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّالِّينَ} . قَالَ هَذَا لِعَبْدِي وَلِعَبْدِي مَا سَأَلَ " . قَالَ سُفْيَانُ حَدَّثَنِي بِهِ الْعَلاَءُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَعْقُوبَ دَخَلْتُ عَلَيْهِ وَهُوَ مَرِيضٌ فِي بَيْتِهِ فَسَأَلْتُهُ أَنَا عَنْهُ .

मर्तबा फ़रमाया। अबू हुरैरह (रज़ि.) से पूछा गया, हम इमाम के पीछे होते हैं? तो उन्होंने जवाब दिया, उसको आहिस्ता पढ़ लो, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ये फ़रमाते हुए सुना, अल्लाह का फ़रमान है, 'मैंने नमाज़ अपने और अपने बन्दे के दरम्यान आधी-आधी तक़सीम की है और मेरा बन्दा जो माँगेगा उसको मिलेगा। जब इंसान अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन (शुक्र व स़ना का हक़दार कायनात का आक़ा है) कहता है, अल्लाह तआला फ़रमाता है, 'मेरे बन्दे ने मेरी तारीफ़ और शुक्रिया अदा किया। और जब वो अर्रहमानिर्रहीम (इन्तिहाई मेहरबान, बार-बार रहम करने वाला) कहता है, अल्लाह तआला फ़रमाता है, 'मेरे बन्दे ने मेरी स़ना बयान की।' जब वो मालिकि यौमिद्दीन (हिसाबो-किताब का मालिक) कहता है, अल्लाह फ़रमाता है, 'मेरे बन्दे ने मेरी बुज़ुर्गी बयान की।' और कुछ बार (रावी ने कहा,) 'बन्दे ने मामलात मेरे सुपुर्द कर दिये या अपने आपको मेरे हवाले किया।' जब इंसान कहता है, इय्या-क नअ्बुदु व इय्या-क नस्तईन (हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं) अल्लाह तआला फ़रमाता है, 'ये मेरे और मेरे बन्दे के दरम्यान है और मेरे बन्दे को जो उसने माँगा, मिलेगा।' और जब वो कहता है, इह्दिनस्सिरॉतल मुस्तक़ीम, सिरॉतल्लज़ी-न अन्अम्ता अलैहिम, ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ॉल्लीन (हमें राहे रास्त पर चलाये रख, उन लोगों की राह जिन पर तूने इनाम फ़रमाया,

जो उनमें से नहीं जिन पर ग़ज़ब हुआ और न वो गुमराह हैं) अल्लाह फ़रमाता है, 'ये मेरे बन्दे के लिये है और मेरे बन्दे को मिलेगा, जो उसने माँगा।' सुफ़ियान कहते हैं, मुझे ये रिवायत अ़ला बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन याक़ूब ने सुनाई। वो अपने घर में बीमार थे, मैं उनके पास गया और मैंने उनसे इस हदीस़ के बारे में दरख़्वास्त की।

फ़ायदा : सूरह फ़ातिहा पूरे क़ुरआन मजीद का निचोड़ और ख़ुलासा है। बल्कि इसकी असल और बुनियाद है। इस बिना पर इसको नमाज़ की हर रकअ़त में मुक़र्रर किया गया है और इसको सलात (नमाज़) के नाम से ताबीर किया गया है। इसके बग़ैर नमाज़ अधूरी और नाक़िस है और उस बच्चे की तरह है जो अपने असल वक़्त से पहले ही पैदा हो जाये कहते हैं, ख़दजलतिद्दाब्बह ख़िदाजा, जानवर ने अधूरा बच्चा गिरा दिया और अक्सर अइम्मए लुग़त ने ख़िदाज का मानी नुक़सान किया है।

(879) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने कोई नमाज़ पढ़ी और उसमें उम्मुल क़ुरआन न पढ़ी.....।' आगे मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की। दोनों की रिवायत में है, अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है, 'मैंने नमाज़ अपने और अपने बन्दे के दरम्यान आधी-आधी तक़सीम कर ली है, इसका आधा हिस्सा मेरे लिये है और आधा मेरे बन्दे के लिये।'

(अबू दाऊद : 821, तिर्मिज़ी : 2953, नसाई : 2/135-136, इब्ने माजह : 2/103)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنِ الْعَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا السَّائِبِ، مَوْلَى هِشَامِ بْنِ زُهْرَةَ يَقُولُ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم

(880) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने नमाज़ पढ़ी और उसमें उम्मुल क़ुरआन न पढ़ी..।' आगे सुफ़ियान की हदीस़ की तरह है। और दोनों की हदीस़ में है,

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي الْعَلاَءُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَعْقُوبَ، أَنَّ أَبَا السَّائِبِ، مَوْلَى بَنِي عَبْدِ اللَّهِ بْنِ هِشَامِ بْنِ زُهْرَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ،

سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " مَنْ صَلَّى صَلاَةً فَلَمْ يَقْرَأْ فِيهَا بِأُمِّ الْقُرْآنِ " . بِمِثْلِ حَدِيثِ سُفْيَانَ وَفِي حَدِيثِهِمَا " قَالَ اللَّهُ تَعَالَى قَسَمْتُ الصَّلاَةَ بَيْنِي وَبَيْنَ عَبْدِي نِصْفَيْنِ فَنِصْفُهَا لِي وَنِصْفُهَا لِعَبْدِي " .

अल्लाह तआला का फ़रमान है, 'मैंने नमाज़ अपने और बन्दे के दरम्यान आधी-आधी तक़सीम कर दी है। इसका आधा हिस्सा मेरे लिये और आधा हिस्सा मेरे बन्दे के लिये।'

حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ جَعْفَرٍ الْمَعْقِرِيُّ، حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُوَيْسٍ، أَخْبَرَنِي الْعَلاَءُ، قَالَ سَمِعْتُ مِنْ أَبِي وَمِنْ أَبِي السَّائِبِ، وَكَانَا، جَلِيسَىْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالاَ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ صَلَّى صَلاَةً لَمْ يَقْرَأْ فِيهَا بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ فَهْىَ خِدَاجٌ " . يَقُولُهَا ثَلاَثًا بِمِثْلِ حَدِيثِهِمْ .

(881) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) रिवायत बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने कोई नमाज़ फ़ातिहतुल किताब के बग़ैर पढ़ी तो वो नामुकम्मल है।' आपने तीन बार ये जुम्ला फ़रमाया। (फ़हिया ख़िदाजुन) मज़्कूरा बाला हदीस़ की तरह है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ الشَّهِيدِ، قَالَ سَمِعْتُ عَطَاءً، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ صَلاَةَ إِلاَّ بِقِرَاءَةٍ " . قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ فَمَا أَعْلَنَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَعْلَنَّاهُ لَكُمْ وَمَا أَخْفَاهُ أَخْفَيْنَاهُ لَكُمْ .

(882) अला और अबू साइब जो हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के हमनशीन थे अबू हुरैरह से बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क़िरअत के बग़ैर कोई नमाज़ नहीं है।' अबू हुरैरह (रजि.) ने कहा, जिस नमाज़ को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बुलंद क़िरअत से पढ़ा हम ने भी इसमें क़िरअत बुलंद पढ़ी और जो नमाज़ आपने आहिस्ता क़िरअत से पढ़ी, हमने भी तुम्हारे लिये उसकी क़िरअत आहिस्ता की (क़िरअत को मख़्फ़ी रखा)।

फ़ायदा : हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के क़ौल से मालूम होता है, फ़ातिहा पढ़े बग़ैर चारा नहीं है और इससे ज़्यादा पढ़ना अज्र व स़वाब और फ़ज़ीलत का बाइस़ है, अगरचे नमाज़ सिर्फ़ फ़ातिहा ही से हो जायेगी।

(883) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि हर नमाज़ में क़िरअत है तो जो क़िरअत नबी (ﷺ) ने हमें सुनाई, हम तुम्हें सुनाते हैं और जो हमसे पोशीदा रखी, हम उसे तुमसे छिपाते हैं। एक आदमी ने सवाल किया, अगर मैं उम्मुल किताब से ज़्यादा न पढ़ूँ तो उन्होंने जवाब दिया, (यानी आहिस्ता पढ़ते हैं) और जिसने उम्मुल किताब पढ़ ली तो वो उसके लिये काफ़ी है और जिसने उससे ज़्यादा पढ़ा तो वो बेहतर है।

(सहीह बुख़ारी : 772, नसाई : 2/163)

حَدَّثَنَا عَمْرُو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، - وَاللَّفْظُ لِعَمْرٍو - قَالاَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، عَنْ عَطَاءٍ، قَالَ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ فِي كُلِّ الصَّلاَةِ يَقْرَأُ فَمَا أَسْمَعَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَسْمَعْنَاكُمْ وَمَا أَخْفَى مِنَّا أَخْفَيْنَا مِنْكُمْ . فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ إِنْ لَمْ أَزِدْ عَلَى أُمِّ الْقُرْآنِ فَقَالَ إِنْ زِدْتَ عَلَيْهَا فَهُوَ خَيْرٌ وَإِنِ انْتَهَيْتَ إِلَيْهَا أَجْزَأَتْ عَنْكَ .

(884) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि हर नमाज़ के लिये क़िरअत है जो नबी (ﷺ) ने हमको सुनाया हमने तुमको सुनाया जो हमसे पोशीदा रखा हमने उसको तुमसे छिपाया और जिसने उम्मुल किताब पढ़ ली तो वो उसके लिये काफ़ी होगी और जिसने इज़ाफ़ा किया तो वो बेहतर है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا يَزِيدُ، - يَعْنِي ابْنَ زُرَيْعٍ - عَنْ حَبِيبٍ الْمُعَلِّمِ، عَنْ عَطَاءٍ، قَالَ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ فِي كُلِّ صَلاَةٍ قِرَاءَةٌ فَمَا أَسْمَعَنَا النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم أَسْمَعْنَاكُمْ وَمَا أَخْفَى مِنَّا أَخْفَيْنَاهُ مِنْكُمْ وَمَنْ قَرَأَ بِأُمِّ الْكِتَابِ فَقَدْ أَجْزَأَتْ عَنْهُ وَمَنْ زَادَ فَهُوَ أَفْضَلُ .

(885) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मस्जिद में तशरीफ़ लाये, तो एक आदमी दाख़िल हुआ और नमाज़ पढ़ी, फिर आकर आपको सलाम अ़र्ज़ किया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसके सलाम का जवाब दिया और फ़रमाया, 'वापस जाकर नमाज़ पढ़, क्योंकि तेरी नमाज़ नहीं हुई।' उस आदमी ने वापस जाकर नमाज़ पढ़ी जैसे पहले पढ़ी थी। फिर नबी (ﷺ) के पास आकर सलाम अ़र्ज़ किया तो आपने फ़रमाया, 'व

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، قَالَ حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَدَخَلَ رَجُلٌ فَصَلَّى ثُمَّ جَاءَ فَسَلَّمَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَرَدَّ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم السَّلاَمَ قَالَ " ارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ " . فَرَجَعَ

الرَّجُلُ فَصَلَّى كَمَا كَانَ صَلَّى ثُمَّ جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَسَلَّمَ عَلَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " وَعَلَيْكَ السَّلاَمُ " . ثُمَّ قَالَ " ارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ " . حَتَّى فَعَلَ ذَلِكَ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ فَقَالَ الرَّجُلُ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا أُحْسِنُ غَيْرَ هَذَا عَلِّمْنِي . قَالَ " إِذَا قُمْتَ إِلَى الصَّلاَةِ فَكَبِّرْ ثُمَّ اقْرَأْ مَا تَيَسَّرَ مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ ثُمَّ ارْكَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ رَاكِعًا ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَعْتَدِلَ قَائِمًا ثُمَّ اسْجُدْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ جَالِسًا ثُمَّ افْعَلْ ذَلِكَ فِي صَلاَتِكَ كُلِّهَا " .

अलैकस्सलाम' फिर फ़रमाया, 'वापस जाकर नमाज़ पढ़, क्योंकि तूने नमाज़ नहीं पढ़ी। इस तरह आपने तीन बार किया, तो उस आदमी ने अर्ज़ किया, उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ देकर भेजा है! मैं इससे बेहतर नहीं पढ़ सकता, आप सिखा दीजिये। आपने फ़रमाया, 'जब नमाज़ के लिये खड़े हो तो अल्लाहु अकबर कहो, फिर जो कुरआन आसानी से पढ़ सकते हो उसको पढ़ो, फिर अच्छी तरह इत्मीनान के साथ रुकूअ करो, फिर रुकूअ से सीधे अच्छी तरह उठो, फिर अच्छी तरह इत्मीनान से सज्दा करो, फिर सज्दे से उठकर इत्मीनान से बैठ जाओ, फिर अपनी पूरी नमाज़ में इसी तरह करो।'

(सहीह बुख़ारी : 757, 6252, 793, अबू दाऊद : 856, तिर्मिज़ी:303, नसाई : 2/124-125, 883)

फ़वाइद : (1) आपने नमाज़ में कोताही करने वाले को फ़रमाया, कुरआन का जो हिस्सा तुम आसानी से पढ़ सकते हो पढ़ लो और सूरह फ़ातिहा कुरआन मजीद का सबसे आसान हिस्सा है। जो आम तौर पर हर नमाज़ी को याद होता है और हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) ने इस रिवायत के तहत तसरीह की है कि इमाम अहमद और इब्ने हिब्बान ने इसकी जगह सुम्म इक़रअ बिउम्मिल कुरआन सुम्म इक़रअ बिमा शिअ्त (फिर उम्मुल कुरआन पढ़ फिर जो चाहे पढ़) के अल्फ़ाज़ बयान किये हैं। जो इस बात की सरीह दलील है कि मा तयस्सर से मुराद सूरह फ़ातिहा है। **(2)** इस हदीस़ से मालूम होता है कि नमाज़ के तमाम अरकान, ठहर-ठहरकर, इत्मीनान के साथ अदा करना लाज़िम है। इसको तअ़दीले अरकान कहते हैं जो तमाम अइम्मा के नज़दीक फ़र्ज़ है। इमाम अबू यूसुफ़ भी इसके क़ाइल हैं।

लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद (रह.) के नज़दीक तअ़दीले अरकान वाजिब है। जो फ़र्ज़ से कम दर्जा है। लेकिन ये बात हदीस़ के ख़िलाफ़ है।

असल बात ये है कि आप (ﷺ) के हुक्म को फ़र्ज़ या वाजिब का इस्तिलाही नाम जो भी दें, वो ऐसा लाज़िम है कि उसकी मुख़ालिफ़त या उसका वज़न कम करने के लिये हल्की इस्तिलाह घड़ने

से उसकी हैसियत दीने इस्लाम में कम नहीं हो सकती। बल्कि उसी तरह ज़रूरी है जिस तरह के कुरआन का हुक्म ज़रूरी होता है। क्योंकि कुरआन और हदीस़ का हुक्म वह्ये इलाही है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي قَالاَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَجُلاً، دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَصَلَّى وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي نَاحِيَةٍ وَسَاقَا الْحَدِيثَ بِمِثْلِ هَذِهِ الْقِصَّةِ وَزَادَا فِيهِ " إِذَا قُمْتَ إِلَى الصَّلاَةِ فَأَسْبِغِ الْوُضُوءَ ثُمَّ اسْتَقْبِلِ الْقِبْلَةَ فَكَبِّرْ " .

(886) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि एक आदमी ने मस्जिद में दाख़िल होकर नमाज़ पढ़ी और रसूलुल्लाह (ﷺ) एक गोशे में तशरीफ़ फ़रमा थे। फिर ऊपर वाले वाक़िये के साथ हदीस़ बयान की और उसमें ये इज़ाफ़ा किया, 'जब तुम नमाज़ के लिये खड़े हो तो मुकम्मल वुज़ू करो फिर क़िब्ला रुख़ होकर तकबीर कहो।'

(सहीह बुख़ारी : 6251, 6667, अबू दाऊद : 865, तिर्मिज़ी : 2692, इब्ने माजह : 1060, 2692, 3695)

باب نَهْىِ الْمَأْمُومِ عَنْ جَهْرِهِ، بِالْقِرَاءَةِ خَلْفَ إِمَامِهِ

बाब 12 : मुक़्तदी को इमाम के पीछे बुलंद आवाज़ से क़िरअत करने की मुमानिअ़त

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، كِلاَهُمَا عَنْ أَبِي عَوَانَةَ، قَالَ سَعِيدٌ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ زُرَارَةَ بْنِ أَوْفَى، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ صَلاَةَ الظُّهْرِ - أَوِ الْعَصْرِ - فَقَالَ " أَيُّكُمْ قَرَأَ خَلْفِي بِسَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الأَعْلَى " . فَقَالَ رَجُلٌ أَنَا وَلَمْ أُرِدْ بِهَا إِلاَّ الْخَيْرَ . قَالَ " قَدْ عَلِمْتُ أَنَّ بَعْضَكُمْ خَالَجَنِيهَا " .

(887) हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) से रिवायत है कि हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ुहर या अ़सर की नमाज़ पढ़ाई और पूछा, 'तुममें से किसने मेरे पीछे सूरह सब्बिहिस्म रब्बिकल अअ़्ला पढ़ी?' तो एक आदमी ने जवाब दिया, मैंने! और इससे मेरा मक़सद सिर्फ़ ख़ैर ही था। आपने फ़रमाया, 'मैंने जाना, तुममें से कोई मेरे साथ क़िरअत में उलझ रहा है।'

(अबू दाऊद : 828-829, नसाई : 2/140)

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि मुक़्तदी को इमाम के पीछे बुलंद आवाज़ से क़िरअत नहीं करनी चाहिये। क्योंकि इस तरह इमाम के लिये क़िरअत करने में दिक़्क़त पैदा होती है और कुछ सिर्री नमाज़ों (ज़ुहर, अ़सर) में भी आपके पीछे फ़ातिहा के बाद कोई सूरत बुलंद आवाज़ में पढ़ लेते थे। इसलिये आपने फ़ातिहा के बाद वाली क़िरअत पर ऐतराज़ किया और आहिस्ता पढ़ने का हुक्म दिया। जिससे मालूम हुआ सिर्री नमाज़ों में फ़ातिहा के बाद भी कोई सूरत आहिस्ता पढ़ी जायेगी। जहरी नमाज़ों की (रकअ़तों) में फ़ातिहा के सिवा कोई क़िरअत नहीं है। इल्ला ये कि मुक़्तदी, इमाम से इस क़द्र फ़ासले पर हो कि वहाँ तक क़िरअत की आवाज़ न पहुँच रही हो तो फिर वो फ़ातिहा के बाद भी क़िरअत करेगा, लेकिन ये क़िरअत आहिस्ता होगी।

(888) हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई। एक आदमी ने आपके पीछे सब्बिहिस्म रब्बिकल अअ़्ला पढ़नी शुरू कर दी। जब आपने सलाम फेरा तो फ़रमाया, 'तुममें से किसी ने पढ़ा?' या 'तुममें से क़िरअत करने वाला कौन है?' एक आदमी ने कहा, मैं हूँ। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं समझ रहा था तुममें से कोई मेरे साथ उलझ रहा है।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ سَمِعْتُ زُرَارَةَ بْنَ أَوْفَى، يُحَدِّثُ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم صَلَّى الظُّهْرَ فَجَعَلَ رَجُلٌ يَقْرَأُ خَلْفَهُ بِسَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الأَعْلَى فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ " أَيُّكُمْ قَرَأَ " أَوْ " أَيُّكُمُ الْقَارِئُ " فَقَالَ رَجُلٌ أَنَا . فَقَالَ " قَدْ ظَنَنْتُ أَنَّ بَعْضَكُمْ خَالَجَنِيهَا " .

(889) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई और फ़रमाया, 'मैंने जान लिया तुममें से कोई मेरे साथ क़िरअत में उलझ रहा है।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم صَلَّى الظُّهْرَ وَقَالَ " قَدْ عَلِمْتُ أَنَّ بَعْضَكُمْ خَالَجَنِيهَا " .

फ़ायदा : इमाम के पीछे अगर क़िरअत बुलंद आवाज़ से की जाये तो क़िरअतों का आपस में टकराव होगा और इमाम की क़िरअत में ख़लल पैदा होगा। अगर क़िरअत आहिस्ता हो तो उलझाव और टकराव की सूरत पैदा नहीं होती। इसलिये मुक़्तदी तमाम नमाज़ों में क़िरअत आहिस्ता करेगा। इमाम

की जहरी क़िरअत के वक़्त सिर्फ़ फ़ातिहा पढ़ेगा और जब इमाम बुलंद क़िरअत न कर रहा हो तो जितना क़ुरआन पढ़ना मुम्किन हो पढ़ लेगा।

बाब 13 : उन लोगों की दलील जो कहते हैं बिस्मिल्लाह बुलंद आवाज़ से नहीं पढ़ी जायेगी

باب حُجَّةِ مَنْ قَالَ لاَ يَجْهَرُ بِالْبَسْمَلَةِ

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ كِلاَهُمَا عَنْ غُنْدَرٍ، قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ قَتَادَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَنَسٍ، قَالَ صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ وَعُثْمَانَ فَلَمْ أَسْمَعْ أَحَدًا مِنْهُمْ يَقْرَأُ { بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ} .

(890) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) अबू बकर, उमर और उसमान (रज़ि.) के साथ नमाज़ पढ़ी, मैंने उनमें से किसी से बुलंद आवाज़ में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम की क़िरअत नहीं सुनी।

(सहीह बुख़ारी : 473, नसाई : 2/135)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) और ख़ुलफ़ाए राशिदीन, आम तौर पर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम आहिस्ता आवाज़ से पढ़ते थे। शवाफ़िअ ने इस हदीस़ के अलग-अलग मआनी बयान किये हैं। इसलिये इमाम नववी ने लिखा है कि इमाम शाफ़ेई और जुम्हूर सलफ़ के नज़दीक बिस्मिल्लाह सूरह फ़ातिहा का जुज़ है। इसलिये जब सूरह फ़ातिहा बुलंद आवाज़ से पढ़ी जाती है तो इसको भी बुलंद आवाज से पढ़ना चाहिये और सुनन दारे क़ुतनी और सुनन बैहक़ी की रिवायत है, क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) इज़ा क़रअतुम अल्हम्दुलिल्लाहि फ़क़रऊ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम (अल्हदीस़) लेकिन इस रिवायत में बिस्मिल्लाह का फ़ातिहा का जुज़ होना स़ाबित होता है और बुलंद आवाज़ से क़िरअत करना स़ाबित नहीं होता। इसलिये सहीह बात यही है कि इसको दोनों तरह पढ़ना सहीह है। (इस मुख़्तसर में दलाइल देने की गुंजाइश नहीं है) तफ़्सील के लिये मौलाना मीर सियालकोटी की वाज़ेहुल बयान देखिये।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ . وَزَادَ قَالَ شُعْبَةُ فَقُلْتُ لِقَتَادَةَ أَسَمِعْتَهُ مِنْ أَنَسٍ قَالَ نَعَمْ نَحْنُ سَأَلْنَاهُ عَنْهُ .

(891) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं, उसमें ये इज़ाफ़ा है कि शोबा ने कहा, मैंने क़तादा से पूछा, क्या आपने ये रिवायत अनस (रज़ि.) से सुनी है? उसने कहा, हाँ! हमने उनसे इसके बारे में पूछा था।

फ़ायदा : क़तादा चूंकि मुदल्लिस रावी है। इसलिये शुब्हा पैदा हुआ कि शायद उसने हज़रत अनस (रज़ि.) से बराहे रास्त ये रिवायत न सुनी हो। सिमाअ़ की तसरीह के बाद ये शुब्हा दूर हो गया।

(892) हज़रत अ़बदा से रिवायत है कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ये कलिमात बुलंद आवाज़ से पढ़ते थे। सुब्हान-कल्लाहुम्म वबिहम्दि-क व तबारकस्मु-क व तआ़ला जद्दु-क वला इला-ह ग़ैरुक (ऐ अल्लाह! तू अपनी हम्द व तौसीफ़ के साथ, पाकीज़गी व तक़दीस से मुत्तसिफ़ है, तेरा नाम ही बाबरकत है और तेरी अ़ज़मत व बुज़ुर्गी बुलंद व बाला है, तेरे सिवा कोई मुस्तहिक़े इबादत नहीं)।

हज़रत अनस (रज़ि.) ने क़तादा को बताया कि मैंने नबी (ﷺ), अबू बकर, उ़मर और उ़समान (रज़ि.) के पीछे नमाज़ पढ़ी है। वो नमाज़ का आग़ाज़ अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन से करते थे। वो क़िरअत के शुरू में और न ही आख़िर में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ते थे।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِهْرَانَ الرَّازِيُّ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، عَنْ عَبْدَةَ، أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ، كَانَ يَجْهَرُ بِهَؤُلاَءِ الْكَلِمَاتِ يَقُولُ سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ تَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلاَ إِلَهَ غَيْرُكَ . وَعَنْ قَتَادَةَ أَنَّهُ كَتَبَ إِلَيْهِ يُخْبِرُهُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّهُ حَدَّثَهُ قَالَ صَلَّيْتُ خَلْفَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ وَعُثْمَانَ فَكَانُوا يَسْتَفْتِحُونَ بِـ { الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ} لاَ يَذْكُرُونَ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ فِي أَوَّلِ قِرَاءَةٍ وَلاَ فِي آخِرِهَا .

फ़ायदा : अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन सूरह फ़ातिहा का नाम है तो मक़सद ये हुआ कि वो क़िरअत का आग़ाज़ सूरह फ़ातिहा से करते थे और बिस्मिल्लाह सूरह फ़ातिहा का जुज़ है। रावी ने चूंकि अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन को सूरह का नाम की बजाए आयत समझ लिया। इसलिये ये कह दिया कि वो बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहीं पढ़ते थे (तफ़्सील के लिये मौलाना मीर सियालकोटी (रह.) की वाज़ेहुल बयान देखिये)।

(893) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला हज़रत अनस (रज़ि.) की रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِهْرَانَ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، أَخْبَرَنِي إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَذْكُرُ ذَلِكَ .

बाब 14 : उन लोगों की दलील जिनके नज़दीक बिस्मिल्लाह सूरह बराअत के सिवा हर सूरह का जुज़ (हिस्सा) है

باب حُجَّةِ مَنْ قَالَ الْبَسْمَلَةُ آيَةٌ مِنْ أَوَّلِ كُلِّ سُورَةٍ سِوَى بَرَاءَةَ

حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، أَخْبَرَنَا الْمُخْتَارُ بْنُ فُلْفُلٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنِ الْمُخْتَارِ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ بَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ يَوْمٍ بَيْنَ أَظْهُرِنَا إِذْ أَغْفَى إِغْفَاءَةً ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ مُتَبَسِّمًا فَقُلْنَا مَا أَضْحَكَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " أُنْزِلَتْ عَلَىَّ آنِفًا سُورَةٌ " . فَقَرَأَ " بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ { إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ * فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ * إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الأَبْتَرُ} " . ثُمَّ قَالَ " أَتَدْرُونَ مَا الْكَوْثَرُ " . فَقُلْنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ . قَالَ " فَإِنَّهُ نَهْرٌ وَعَدَنِيهِ رَبِّي عَزَّ وَجَلَّ عَلَيْهِ خَيْرٌ كَثِيرٌ هُوَ حَوْضٌ تَرِدُ عَلَيْهِ أُمَّتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ آنِيَتُهُ عَدَدُ النُّجُومِ فَيُخْتَلَجُ الْعَبْدُ مِنْهُمْ فَأَقُولُ رَبِّ إِنَّهُ مِنْ أُمَّتِي . فَيَقُولُ مَا تَدْرِي مَا أَحْدَثَتْ بَعْدَكَ " . زَادَ ابْنُ حُجْرٍ فِي حَدِيثِهِ بَيْنَ أَظْهُرِنَا فِي الْمَسْجِدِ . وَقَالَ " مَا أَحْدَثَ بَعْدَكَ " .

(894) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि इस बीच में कि एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे दरम्यान थे। आप पर अचानक एक झपकी तारी हुई। फिर आपने मुस्कुराते हुए अपना सर उठाया तो हमने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! आप क्यों मुस्कुरा रहे हैं? आपने फ़रमाया, 'अभी मुझ पर एक सूरत नाज़िल की गई है।' और आपने पढ़ा, 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, इन्ना अअ़्तैना-कल्कौसर, फ़सल्लि लिरब्बिक वन्हर, इन्न शानिअ-क हुवल अब्तर (अल्लाह के नाम से जो इन्तिहाई मेहरबान और हमेशा रहम करने वाला है, बिला शुब्हा हमने आपको कौसर अ़ता किया, लिहाज़ा अपने रब के लिये नमाज़ पढ़िये और क़ुर्बानी कीजिये, यक़ीनन आपका दुश्मन ही दुम बुरीदा (नामुराद) है।' फिर आपने पूछा, 'क्या तुम जानते हो कौसर क्या है?' तो हमने अ़र्ज़ किया, अल्लाह और उसका रसूल ही बेहतर जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'वो एक नहर है जिसका मेरे रब्ब अ़ज़्ज़ व जल्ल ने मुझसे वादा फ़रमाया है, उसमें बहुत ही ख़ैर है और वो एक हौज़ है, जिस पर क़ियामत के दिन मेरी उम्मत पानी पीने के लिये आयेगी, उसके

बर्तन सितारों की तादाद के बराबर हैं। तो उनमें से एक शख़्स को उचक लिया जायेगा। तो मैं अर्ज़ करूँगा, ऐ मेरे आक़ा! ये मेरी उम्मत का फ़र्द है। तो मुझे जवाब दिया जायेगा, आप नहीं जानते इन लोगों ने आपके बाद क्या नये काम निकाले थे।' इब्ने हुज्र (रह.) ने अपनी हदीस़ में इतना इज़ाफ़ा किया, आप मस्जिद में हमारे दरम्यान थे और अह्दस़ बअ्दक की जगह अहदस़ बअ़दक कहा।

(अबू दाऊद : 784, 4747, नसाई : 2/133-134)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) बैन अज़्हुरिना : हमारे अंदर, हममें। **(2) अग़्फ़ा इग़्फ़ाअह :** झपकी और ऊँघ का तारी होना। **(3) शानिअक :** तेरा दुश्मन, तुझसे बुग़्ज़ व इनाद रखने वाला। **(4) अल्अबतर :** दुम कटा, जिसकी नसल न चले। हर ख़ैर व बरकत से महरूम। **(5) युख़्तलज :** छीना जायेगा, अलग किया जायेगा। **(6) अहदस़ :** दीन में नई बात निकालना, कोई वाक़िया या जुर्म कर गुज़रना।

फ़वाइद : (1) इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि बिस्मिल्लाह हर सूरत का हिस्सा और जुज़ है। जिसे आप हर सूरत से पहले पढ़ते थे और सूरह बराअत का इस्तिस़ना एक अलग दलील की बिना पर है और इसी बिना पर हर सूरत के शुरू में इसको मुस्हफ़ में लिखा गया है और सूरह इक़रअ की शुरू की आयतें जो सबसे पहली वह्य हैं, उनमें यही तालीम दी गई कि इक़रअ् बिस्मि रब्बिक अपने रब के नाम से क़िरअत का आग़ाज़ कीजिये और उसके शुरू में बिस्मिल्लाह मौजूद है। इसलिये ये कहना कि अगर बिस्मिल्लाह हर सूरत का जुज़ होती तो इक़रअ के शुरू में नाज़िल होती, दुरुस्त नहीं है क्योंकि अगर ये इससे पहले नाज़िल नहीं हुई थी तो इससे पहले लिख कैसे दी गई? **(2)** इस हदीस़ से इल्मे ग़ैब का रसूलुल्लाह के लिये इस्बात (स़ाबित करना), बिला महल है। नीज़ एक हक़ीक़त को तस्लीम करके हेर-फेर से दूसरी बात कहना, इल्म के मुनाफ़ी बात है। जब ये तस्लीम है कि मुतलक़न आ़लिमुल ग़ैब सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की ज़ात है। हर चंद कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को अ़ताए इलाही से इल्मे ग़ैब हासिल है लेकिन मुतलक़न ये नहीं कहना चाहिये कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को ग़ैब का इल्म है। बल्कि यूँ कहना चाहिये कि आप ग़ैब पर मुत्तलअ हैं या आप पर ग़ैब ज़ाहिर किया गया है या आपको इल्मे ग़ैब अ़ता किया गया है। (शरह सहीह मुस्लिम, सईदी साहब : 1/1160) बल्कि इससे ऊपर यहाँ तक लिखा गया है आ़म मुसलमानों, औलियाअल्लाह, सहाबा किराम (रज़ि.) में से हर शख़्स को उसके

ज़र्फ़ (हैसियत) के मुताबिक़ ग़ैब का इल्म है और रसूलुल्लाह (ﷺ) को तमाम मख़्लूक़ात से ज़्यादा ग़ैब का इल्म है तो उम्मत को इस बहस व मसले में क्यों उलझाया जाता है कि आपको आलिमुल ग़ैब न मानने वाला गुस्ताख़ व बेअदब है और काफ़िर है। उम्मत का कौनसा फ़र्द है, जो इसका इंकार करता है कि अल्लाह तआला ने अपने रसूल को जिस चीज़ का इल्म दिया वो आपको हासिल हो गया। जिस चीज़ से आगाह न किया, आप ख़ुद आगाह न हो सके। जिसकी सरीह दलील इस हदीस़ के अंदर इन्नक ला तदरी मा अहदसू बअ्दक की सूरत में मौजूद है।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ أَخْبَرَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ مُخْتَارِ بْنِ فُلْفُلٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ أَغْفَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِغْفَاءَةً . بِنَحْوِ حَدِيثِ ابْنِ مُسْهِرٍ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " نَهْرٌ وَعَدَنِيهِ رَبِّي عَزَّ وَجَلَّ فِي الْجَنَّةِ عَلَيْهِ حَوْضٌ " . وَلَمْ يَذْكُرْ " آنِيَتُهُ عَدَدُ النُّجُومِ " .

(895) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर कुछ ऊँघ तारी हुई। जैसाकि इब्ने मुस्हिर की रिवायत में गुज़र चुका है और उसमें ये भी है एक नहर है जिसका मेरे रब ने मेरे साथ वादा किया है। ये जन्नत में है और इस पर हौज़ है, उसमें बर्तनों के सितारों की तादाद में होने का ज़िक्र नहीं है।

باب وَضْعِ يَدِهِ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى بَعْدَ تَكْبِيرَةِ الإِحْرَامِ تَحْتَ صَدْرِهِ فَوْقَ سُرَّتِهِ وَوَضْعِهِمَا فِي السُّجُودِ عَلَى الأَرْضِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ

बाब 15 : तकबीरे तहरीमा के बाद दायाँ हाथ बायें पर सीने के नीचे और नाफ़ के ऊपर रखा जायेगा और (सज्दे में) दोनों हाथ ज़मीन पर कन्धों के बराबर होंगे

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جُحَادَةَ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الْجَبَّارِ بْنُ وَائِلٍ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَائِلٍ، وَمَوْلًى، لَهُمْ أَنَّهُمَا حَدَّثَاهُ عَنْ أَبِيهِ، وَائِلِ بْنِ

(896) हज़रत वाइल बिन हुज्र (रज़ि.) से रिवायत है कि उसने नबी (ﷺ) को देखा, आपने नमाज़ में दाख़िल होते वक़्त अपने दोनों हाथ बुलंद किये तकबीर कही (हम्माम ने बयान किया, कानों के बराबर तक बुलंद किये) फिर अपना कपड़ा ओढ़ लिया फिर

حُجْرٍ، أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم رَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ دَخَلَ فِي الصَّلاَةِ كَبَّرَ - وَصَفَ هَمَّامٌ حِيَالَ أُذُنَيْهِ - ثُمَّ الْتَحَفَ بِثَوْبِهِ ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ أَخْرَجَ يَدَيْهِ مِنَ الثَّوْبِ ثُمَّ رَفَعَهُمَا ثُمَّ كَبَّرَ فَرَكَعَ فَلَمَّا قَالَ " سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ " . رَفَعَ يَدَيْهِ فَلَمَّا سَجَدَ سَجَدَ بَيْنَ كَفَّيْهِ .

अपना दायाँ हाथ बायें पर रखा तो जब रुकूअ करना चाहा, अपने दोनों हाथ कपड़े से निकाले फिर उनको बुलंद किया, फिर तकबीर कही और रुकूअ किया, जब समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहा, अपने हाथ बुलंद किये और जब सज्दा किया, अपनी दोनों हथेलियों के दरम्यान सज्दा किया।

फ़ायदा : इस हदीस़ से दायें हाथ का बायें पर रखना, यानी हाथ बांधना स़ाबित होता है और हाथ कहाँ रखे, ये सराहतन स़ाबित नहीं होता। अगर हाथ कोहनियों के बराबर बांधे जायें तो फिर सीने के नीचे और नाफ़ से बहुत ऊपर आते हैं और ये गोया एक तबई और फ़ितरी तरीक़ा है और इमाम नववी ने इसके मुताबिक़ बाब बांधा है। शवाफ़िअ का यही मौक़िफ़ है, मालिकी आम तौर पर मोत्ता की रिवायत के बरअक्स हाथ नहीं बांधते और अहनाफ़ हज़रत अली (रज़ि.) की जिस रिवायत से ज़ेरे नाफ़ हाथ बांधने का इस्तिदलाल करते हैं वो मुहद्दिसीन के नज़दीक ज़ईफ़ है और हज़रत अली (रज़ि.) फ़सल्लि लिरब्बिक वन्हर की जो तफ़्सीर की है, इसके ख़िलाफ़ है। अगरचे ये क़ौल भी ज़ईफ़ है। हज़रत वाइल बिन हुज्र (रज़ि.) और हज़रत ताऊस की मुरसल रिवायत और मुख़्तलिफ़ सहाबा के तफ़्सीरी अक़्वाल को सामने रखा जाये तो सहीह बात ये है कि हाथ सीने के ऊपर बांधे जायेंगे। हज़रत वाइल बिन हुज्र की इब्ने ख़ुज़ैमा से वज़अ यदहुल युम्ना अला यदिहिल युस्रा अला सदरिही और मुस्नद अहमद में हज़रत क़बीसा बिन हलब की रिवायत है रसूलुल्लाह (ﷺ) यज़उ यदहू अला सदरिही और वाइल बिन हुज्र आप (ﷺ) की ज़िंदगी के आख़िरी दौर में मुसलमान हुए हैं।

باب التَّشَهُّدِ فِي الصَّلاَةِ

बाब 16 : नमाज़ में तशह्हुद

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ كُنَّا نَقُولُ فِي الصَّلاَةِ

(897) हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि हम नमाज़ में नबी (ﷺ) के पीछे ये कहते थे, अस्सलामु अलल्लाह अल्लाह पर सलामती हो। अस्सलामु अला फुलानिन, फ़लाँ पर सलामती हो तो हमें

خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم السَّلاَمُ عَلَى اللَّهِ السَّلاَمُ عَلَى فُلاَنٍ . فَقَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ يَوْمٍ " إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّلاَمُ فَإِذَا قَعَدَ أَحَدُكُمْ فِي الصَّلاَةِ فَلْيَقُلِ التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلاَمُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ فَإِذَا قَالَهَا أَصَابَتْ كُلَّ عَبْدٍ لِلَّهِ صَالِحٍ فِي السَّمَاءِ وَالأَرْضِ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ ثُمَّ يَتَخَيَّرُ مِنَ الْمَسْأَلَةِ مَا شَاءَ " .

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक दिन फ़रमाया, 'अल्लाह ख़ुद सलामती है। (हर ऐब व कमज़ोरी से पाक) लिहाज़ा जब तुममें से कोई नमाज़ में तशह्हुद के लिये बैठे तो यूँ कहे, अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अ़लैक अय्युहन्नबिय्यु व रह्मतुल्लाहि व बरकातुहू, अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल्लाहिस्सालिहीन जब ये कलिमात कहेगा तो हर नेक बन्दे को ये दुआ पहुँचेगी, आसमान में हो या ज़मीन में (फिर कहे) अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू फिर जो चाहे दुआ करे।'
(सहीह बुख़ारी : 6338, नसाई : 2/240, 3/40, इब्ने माजह : 899)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अत्तहिय्यात : तहिय्या की जमा है, इसके मुख़्तलिफ़ मआनी आते हैं, बादशाही, बक़ा व दवाम, ज़िंदगी और अ़ज़मत व बुज़ुर्गी। **(2) सलवात :** नमाज़ें, दुआयें, रहमत। **(3) तय्यिबात :** पाकीज़ा बोल, गोया इन तमाम चीज़ों का हक़दार और सज़ावार अल्लाह तआला है और इसके लायक़ हैं। इस तरह तशह्हुद के कलिमात का मानी ये होगा, हर क़िस्म की क़ौली, बदनी और माली इबादतें, अल्लाह के लिये मख़्सूस हैं। ऐ नबी! आप पर अल्लाह की तरफ़ से सलामती, रहमत और बरकात नाज़िल हों, हमें और अल्लाह के नेक बन्दों को सलामती हासिल हो, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत और बन्दगी के लायक़ नहीं और मैं शहादत देता हूँ कि मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ وَلَمْ يَذْكُرْ " ثُمَّ يَتَخَيَّرُ مِنَ الْمَسْأَلَةِ مَا شَاءَ " .

(898) इमाम साहब ने एक और सनद, ऊपर वाली रिवायत की बयान की और आख़िरी कलिमात, 'उसके बाद जो चाहे दुआ माँगे' बयान नहीं किये।

(899) इमाम साहब ने एक और सनद से मज़्कूरा रिवायत बयान की और आख़िरी कलाम में मा शाअ की जगह मा शाअ मा अहब्ब बयान किया।

حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ الْجُعْفِيُّ، عَنْ زَائِدَةَ، عَنْ مَنْصُورٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَ حَدِيثِهِمَا وَذَكَرَ فِي الْحَدِيثِ " ثُمَّ لْيَتَخَيَّرْ بَعْدُ مِنَ الْمَسْأَلَةِ مَا شَاءَ أَوْ مَا أَحَبَّ " .

(900) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से रिवायत है कि जब हम नमाज़ में नबी (ﷺ) के साथ बैठते, आगे मन्सूर की रिवायत की तरह बयान किया और आख़िर में कहा, सुम्म यतख़य्यरु बअ़दु मिनद्दुआइ बाद में दुआ का इन्तिख़ाब कर ले।

(सहीह बुख़ारी : 831, 853, 6230, 6328, 7381, अबू दाऊद : 968, नसाई : 2/239, 3/40, 3/41, 3/150-151, इब्ने माजह : 899)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ كُنَّا إِذَا جَلَسْنَا مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فِي الصَّلاَةِ . بِمِثْلِ حَدِيثِ مَنْصُورٍ وَقَالَ " ثُمَّ يَتَخَيَّرُ بَعْدُ مِنَ الدُّعَاءِ " .

(901) हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे तशह्हुद इस सूरत में सिखाया कि मेरी हथेली आपकी दोनों हथेलियों के दरम्यान थी। जैसाकि आप मुझे क़ुरआनी सूरत की तालीम देते थे और तशह्हुद मज़्कूरा रावियों की तरह बयान किया।

(सहीह बुख़ारी : 6265, नसाई : 2/241)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سَيْفُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ سَمِعْتُ مُجَاهِدًا، يَقُولُ حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَخْبَرَةَ، قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ مَسْعُودٍ، يَقُولُ عَلَّمَنِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم التَّشَهُّدَ كَفِّي بَيْنَ كَفَّيْهِ كَمَا يُعَلِّمُنِي السُّورَةَ مِنَ الْقُرْآنِ . وَاقْتَصَّ التَّشَهُّدَ بِمِثْلِ مَا اقْتَصُّوا .

(902) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमें तशह्हुद इस तरह सिखाते थे जैसे हमें क़ुरआन की कोई सूरत सिखाते थे। आप फ़रमाते थे, अत्तहिय्यातुल मुबारकातुस्सलवातुत्-तय्यिबातु लिल्लाहि अस्सलामु अ़लैक

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحِ بْنِ الْمُهَاجِرِ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، وَعَنْ طَاوُسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّهُ قَالَ كَانَ رَسُولُ

अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह अदब व तअ़ज़ीम के सारे ख़ैर व बरकत वाले कलिमात अल्लाह के लिये मख़सूस हैं या वही इनका हक़दार है तमाम इबादात, तमाम सदक़ात अल्लाह ही के वास्ते हैं, तुम पर सलामती हो ऐ नबी! और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें, सलाम हो हम पर और अल्लाह के सब नेक बन्दों पर, मैं गवाही देता हूँ अल्लाह के सिवा कोई इबादत और बन्दगी के लायक़ नहीं और मैं गवाही देता हूँ मुहम्मद उसके रसूल हैं और इब्ने रुम्ह की हदीस में युअ़ल्लिमुना सूरतम मिनल कुरआन की बजाए कमा युअ़ल्लिमुनल कुरआन है।

(अबू दाऊद : 974, तिर्मिज़ी : 290, नसाई : 2/242, इब्ने माजह : 900)

اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُعَلِّمُنَا التَّشَهُّدَ كَمَا يُعَلِّمُنَا السُّورَةَ مِنَ الْقُرْآنِ فَكَانَ يَقُولُ " التَّحِيَّاتُ الْمُبَارَكَاتُ الصَّلَوَاتُ الطَّيِّبَاتُ لِلَّهِ السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلاَمُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ " . وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ رُمْحٍ كَمَا يُعَلِّمُنَا الْقُرْآنَ .

(903) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमें तशह्हुद कुरआन की सूरत की तरह ही सिखाते थे।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، عَنْ طَاوُسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُعَلِّمُنَا التَّشَهُّدَ كَمَا يُعَلِّمُنَا السُّورَةَ مِنَ الْقُرْآنِ .

(904) हित्तान बिन अ़ब्दुल्लाह रक़ाशी बयान करते हैं कि मैंने एक नमाज़ अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) के साथ पढ़ी। तो जब बैठने

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ

الْمَلِكِ الأُمَوِيُّ - وَاللَّفْظُ لأَبِي كَامِلٍ - قَالُوا حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ يُونُسَ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ حِطَّانَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الرَّقَاشِيِّ قَالَ صَلَّيْتُ مَعَ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ صَلاَةً فَلَمَّا كَانَ عِنْدَ الْقَعْدَةِ قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ أُقِرَّتِ الصَّلاَةُ بِالْبِرِّ وَالزَّكَاةِ - قَالَ - فَلَمَّا قَضَى أَبُو مُوسَى الصَّلاَةَ وَسَلَّمَ انْصَرَفَ فَقَالَ أَيُّكُمُ الْقَائِلُ كَلِمَةَ كَذَا وَكَذَا قَالَ فَأَرَمَّ الْقَوْمُ ثُمَّ قَالَ أَيُّكُمُ الْقَائِلُ كَلِمَةَ كَذَا وَكَذَا فَأَرَمَّ الْقَوْمُ فَقَالَ لَعَلَّكَ يَا حِطَّانُ قُلْتَهَا قَالَ مَا قُلْتُهَا وَلَقَدْ رَهِبْتُ أَنْ تَبْكَعَنِي بِهَا . فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ أَنَا قُلْتُهَا وَلَمْ أُرِدْ بِهَا إِلاَّ الْخَيْرَ . فَقَالَ أَبُو مُوسَى أَمَا تَعْلَمُونَ كَيْفَ تَقُولُونَ فِي صَلاَتِكُمْ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم خَطَبَنَا فَبَيَّنَ لَنَا سُنَّتَنَا وَعَلَّمَنَا صَلاَتَنَا فَقَالَ " إِذَا صَلَّيْتُمْ فَأَقِيمُوا صُفُوفَكُمْ ثُمَّ لْيَؤُمَّكُمْ أَحَدُكُمْ فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوا وَإِذَا قَالَ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّالِّينَ فَقُولُوا آمِينَ . يُجِبْكُمُ اللَّهُ فَإِذَا كَبَّرَ وَرَكَعَ فَكَبِّرُوا وَارْكَعُوا فَإِنَّ الإِمَامَ يَرْكَعُ قَبْلَكُمْ وَيَرْفَعُ قَبْلَكُمْ " . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه

का वक़्त आया, एक शख़्स ने कहा, नमाज़ नेकी और ज़कात के साथ मिलाई गई है। जब अबू मूसा (रज़ि.) ने नमाज़ पूरी कर ली और सलाम फेरकर मुँह मोड़ा तो पूछा, ये ये कलिमा तुममें किसने कहा? सब लोग चुप रहे। उन्होंने फिर पूछा, तुममें से किसने ये ये बात कही? तो लोग फिर चुप रहे। तो उन्होंने कहा, ऐ हित्तान! शायद तूने ये कलिमा कहा है? मैंने कहा, मैंने नहीं कहा। मुझे ख़ौफ़ था कि आप मुझे इसके सबब सरज़निश करेंगे तो लोगों में से एक आदमी ने कहा, मैंने ये कलिमा कहा है और मैंने इससे सिर्फ़ ख़ैर का ही इरादा किया है। तो अबू मूसा (रज़ि.) ने कहा, क्या तुम जानते नहीं हो, तुम्हें अपनी नमाज़ में क्या कहना चाहिये? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें ख़ुत्बा दिया और हमारे, हमारा तरीक़ा वाज़ेह किया और हमें हमारी नमाज़ सिखाई। आपने फ़रमाया, 'जब तुम नमाज़ के लिये खड़े हो तो अपनी सफ़ों को सीधा करो, फिर तुममें से एक तुम्हारी इमामत कराये, जब वो तकबीर कह चुके तो तुम तकबीर कहो और जब वो ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ॉल्लीन कहे तो तुम आमीन कहो, अल्लाह तुम्हारी दुआ क़ुबूल फ़रमायेगा, वो तुम्हें शर्फ़े क़ुबूलियत बख़्शेगा और जब वो तकबीर कहे और रुकूअ करे तो तुम तकबीर कहकर रुकूअ करो और इमाम तुमसे पहले रुकूअ में जाता है और तुमसे पहले उठता है।' और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये तक़दीम व ताख़ीर से बराबर हो गया और

जब इमाम समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहे तो तुम अल्लाहुम्-म रब्बना लकल हम्द कहो, ऐ अल्लाह! हमारे रब तू ही हम्द का हक़दार है। अल्लाह तुम्हारी दुआ सुनेगा, क्योंकि अल्लाह तआला ने अपने नबी (ﷺ) की ज़बान से फ़रमाया है, 'अल्लाह तआला ने जिसने उसकी हम्द व तारीफ़ की सुन ली और जब इमाम अल्लाहु अकबर कहकर सज्दा करे तो तुम अल्लाहु अकबर कहो और सज्दा करो। क्योंकि इमाम तुमसे पहले सज्दे में जाता है और तुमसे पहले सज्दे से उठता है और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क़ब्ल व बअद (तक़्दीम व ताख़ीर) से काम बराबर हो गया (इमाम ने सज्दा पहले किया, पहले उठा, तुमने सज्दा बाद में किया, बाद में उठे) और जब बैठने का वक़्त आये तो तुम इससे आग़ाज़ करो।' क़ौली, बदनी और माली इबादतें अल्लाह ही के लिये हैं, सलामती हो ऐ नबी! आप पर और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें, सलाम हो हम पर और अल्लाह के सब नेक बन्दों पर, मैं शहादत देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत और बन्दगी के लायक़ नहीं और मैं इसकी भी शहादत देता हूँ कि मुहम्मद उसके बन्दे और पैग़म्बर (फ़रिस्तादह) हैं।'

(अबू दाऊद : 972, 973, नसाई : 2/197, 2/242, 3/42, 2/96-97, इब्ने माजह : 901, 847)

وسلم " فَتِلْكَ بِتِلْكَ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ . فَقُولُوا اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ . يَسْمَعُ اللَّهُ لَكُمْ فَإِنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَالَ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ صلى الله عليه وسلم سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ . وَإِذَا كَبَّرَ وَسَجَدَ فَكَبِّرُوا وَاسْجُدُوا فَإِنَّ الإِمَامَ يَسْجُدُ قَبْلَكُمْ وَيَرْفَعُ قَبْلَكُمْ " . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " فَتِلْكَ بِتِلْكَ . وَإِذَا كَانَ عِنْدَ الْقَعْدَةِ فَلْيَكُنْ مِنْ أَوَّلِ قَوْلِ أَحَدِكُمُ التَّحِيَّاتُ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوَاتُ لِلَّهِ السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلاَمُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ " .

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، كُلُّ هَؤُلاَءِ عَنْ قَتَادَةَ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ بِمِثْلِهِ . وَفِي حَدِيثِ جَرِيرٍ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ قَتَادَةَ مِنَ الزِّيَادَةِ " وَإِذَا قَرَأَ فَأَنْصِتُوا " . وَلَيْسَ فِي حَدِيثِ أَحَدٍ مِنْهُمْ " فَإِنَّ اللَّهَ قَالَ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ صلى الله عليه وسلم سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ " . إِلاَّ فِي رِوَايَةِ أَبِي كَامِلٍ وَحْدَهُ عَنْ أَبِي عَوَانَةَ . قَالَ أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ أَبُو بَكْرٍ ابْنُ أُخْتِ أَبِي النَّضْرِ فِي هَذَا الْحَدِيثِ فَقَالَ مُسْلِمٌ تُرِيدُ أَحْفَظَ مِنْ سُلَيْمَانَ فَقَالَ لَهُ أَبُو بَكْرٍ فَحَدِيثُ أَبِي هُرَيْرَةَ فَقَالَ هُوَ صَحِيحٌ يَعْنِي وَإِذَا قَرَأَ فَأَنْصِتُوا . فَقَالَ هُوَ عِنْدِي صَحِيحٌ . فَقَالَ لِمَ لَمْ تَضَعْهُ هَا هُنَا قَالَ لَيْسَ كُلُّ شَيْءٍ عِنْدِي صَحِيحٍ وَضَعْتُهُ هَا هُنَا . إِنَّمَا وَضَعْتُ هَا هُنَا مَا أَجْمَعُوا عَلَيْهِ .

(905) इमाम साहब ने अलग-अलग उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की और उसमें ये इज़ाफ़ा बयान किया कि जब इमाम पढ़े तो तुम ख़ामोश रहो और उनमें से किसी की हदीस़ में ये अल्फ़ाज़ नहीं हैं कि अल्लाह तआला ने अपने नबी (ﷺ) की ज़बान से कहलवाया है समिअल्लाहु लिमन हमिदह सिर्फ़ अबू कामिल अकेला ही अबू इवाना से ये अल्फ़ाज़ नक़ल करता है। अबू इस्हाक़ कहते हैं, अबू नज़र के भान्जे अबू बकर ने इस हदीस़ पर बहस़ की तो इमाम मुस्लिम ने जवाब दिया आपको सुलैमान से ज़्यादा हाफ़िज़ मतलूब है (यानी सुलैमान हिफ़्ज़ व ज़ब्त में पुख़्ता है इसलिये इसका इज़ाफ़ा मक़्बूल है) तो अबू बकर ने इमाम मुस्लिम से पूछा, अबू हुरैरह (रज़ि.) की हदीस़ इज़ा क़रअ फ़अन्सितू जब इमाम क़िरअत करे तुम ख़ामोश रहो, कैसी है? इमाम साहब ने जवाब दिया, वो सहीह है और मैं इसको सहीह समझता हूँ तो अबू बकर ने पूछा, तो आपने उसे अपनी किताब में क्यों नहीं बयान किया? इमाम साहब ने जवाब दिया, हर वो हदीस़ जो मेरे नज़दीक सहीह है, मैंने उसको यहाँ नक़ल नहीं किया, यहाँ तो मैंने उन ही अहादीस़ को बयान किया है, जिनकी सेहत पर सब का इत्तिफ़ाक़ है।

फ़वाइद : (1) इज़ा क़रअ फ़अन्सितू जब इमाम पढ़े तुम ख़ामोश रहो, का ताल्लुक़ सूरह फ़ातिहा के बाद वाली क़िरअत से है क्योंकि सूरह फ़ातिहा के बग़ैर तो नमाज़ नहीं होती, इस तरह दोनों हदीस़ों पर

अमल हो जाता है कि मुक़्तदी जहरी नमाज़ों में जब इमाम क़िरअत करता है तो उसके पीछे सिर्फ़ फ़ातिहा चुपके-चुपके पढ़ेगा और बाद वाली क़िरअत पूरी तवज्जह से सुनेगा, ख़ुद नहीं पढ़ेगा और सिर्री नमाज़ों में चूंकि क़िरअत बुलंद नहीं होती, इसलिये इमाम की क़िरअत सुनने का एहतिमाल नहीं होता, इसलिये वहाँ मुक़्तदी अपनी क़िरअत करेगा। **(2)** इमाम मुस्लिम ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की हदीस़ इज़ा क़रअ फ़अन्सितू को सहीह तस्लीम किया है, लेकिन चूंकि इसकी सेहत पर इत्तिफ़ाक़ नहीं। इसलिये इसको सहीह मुस्लिम में दर्ज नहीं किया। जिससे मालूम हुआ, इमाम मुस्लिम अपनी सहीह में सिर्फ़ उन रिवायात को बयान करते हैं जो तमाम अइम्मा मुहद्दिस़ीन के मुसल्लमा क़वाइद व ज़वाबित के मुताबिक़ सहीह हैं और इस लिहाज़ से उन सब की सेहत पर सबका इत्तिफ़ाक़ होना चाहिये। **(3)** हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के अल्फ़ाज़ इज़ा क़रअ फ़अन्सितू और इसी तरह सुलैमान की हदीस़ के इन अल्फ़ाज़ की सेहत के बारे में अइम्मए हदीस़ में इख़्तिलाफ़ है। इमाम अबू दाऊद सजिस्तानी, यहया बिन मईन, अबू हातिम राज़ी, दारे क़ुतनी और अबू अली नीशापूरी इन अल्फ़ाज़ को दुरुस्त क़रार नहीं देते। इनके नज़दीक (हाज़िही लफ़्ज़तु ग़ैरि मह्फ़ूज़ह) क़तादा के तमाम शागिर्द इन अल्फ़ाज़ में, सुलैमान तैमी की मुख़ालिफ़त करते हैं। **(4)** तशह्हुद के कलिमात अलग-अलग सहाबा किराम (रज़ि.) ने मामूली से लफ़्ज़ी इख़्तिलाफ़ के साथ बयान किये हैं। इमाम मुस्लिम ने इब्ने मसऊद, इब्ने अब्बास और अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) से तशह्हुद नक़ल किया है, हज़रत आइशा (रज़ि.) के अल्फ़ाज़ नक़ल नहीं किये। अपनी जगह तमाम ही सहीह हैं और किसी को भी पढ़ा जा सकता है। अफ़ज़ल के बारे में अइम्मा में इख़्तिलाफ़ है। इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम अहमद और अहले हदीस़ और जुम्हूर फ़ुक़्हा के नज़दीक इब्ने मसऊद वाला तशह्हुद अफ़ज़ल है क्योंकि सबसे ज़्यादा सहीह है। इमाम शाफ़ेई (रह.) और कुछ मालिकियों के नज़दीक, इब्ने अब्बास (रज़ि.) वाला तशह्हुद अफ़ज़ल है और इमाम मालिक के नज़दीक हज़रत उमर (रज़ि.) पर मौक़ूफ़ तशह्हुद अफ़ज़ल है क्योंकि उन्होंने ये तशह्हुद मिम्बर पर सिखाया था। लेकिन ज़ाहिर है मौक़ूफ़ को मरफ़ूअ पर तरजीह नहीं दी जा सकती।

इमाम शाफ़ेई (रह.) के नज़दीक पहले क़अदे में तशह्हुद पढ़ना सुन्नत है और सलाम वाला तशह्हुद वाजिब है। जुम्हूर मुहद्दिस़ीन के नज़दीक दोनों ही वाजिब हैं। इमाम अहमद पहले को वाजिब और दूसरे को फ़र्ज़ क़रार देते हैं। इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मालिक और जुम्हूर फ़ुक़्हा (रह.) के नज़दीक दोनों सुन्नत हैं।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ قَتَادَةَ، بِهَذَا

(906) इमाम साहब ने एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की है और उसके ये अल्फ़ाज़ बयान किये हैं,

الإِسْنَادِ وَقَالَ فِي الْحَدِيثِ " فَإِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ قَضَى عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ صلى الله عليه وسلم سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ " .

फ़इन्नल्लाह अज़्ज़ व जल्ल क़ज़ा अला लिसानि नबिय्यिही (ऊपर की रिवायत में क़ज़ा की बजाए क़ाल का लफ़्ज़ गुज़रा है)।

तम्बीह : कुछ हज़रात ने अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यु से ये साबित करने की कोशिश की है कि आप सलात व सलाम दूर व नज़दीक से सुनते हैं और उसके लिये अलग-अलग उलमा व फ़ुक़्हा के अक़्वाल नक़ल किये हैं। जिनसे ये साबित नहीं होता कि आप ये कलिमात सुनते हैं, उनका सिर्फ़ ये मक़सद है कि इंसान को पूरी तरह हुज़ूरे क़ल्ब और तवज्जह से ये कलिमात कहने चाहिये, कअन्नहु यहयल्लाहु व युसल्लिमु अलन्नबिय्यि गोया कि वो अल्लाह तआला की बारगाह में इबादत का हदिया पेश कर रहा है और नबी (ﷺ) के हुज़ूर सलाम अर्ज़ कर रहा है। इस्तिदलाल करते वक़्त फ़ुक़्हा के क़ौल कअन्न (गोया कि) को नज़र अन्दाज़ कर दिया गया है और न ही किसी ने ये कहा है कि आप इन कलिमात को सुनते हैं। इसलिये ये कहना रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये अस्सलातु वस्सलामु अलैक या रसूलल्लाह कहना जाइज़ है रसूलुल्लाह (ﷺ) दूर व नज़दीक से सलाम पढ़ने वालों का सलाम बराबर सुनते हैं। नाराए रिसालत या रसूलल्लाह लगाना जाइज़ है, महज़ सीना ज़ोरी है जिसकी कोई असास व बुनियाद या दलील नहीं है।

यहाँ ये बात भी क़ाबिले ज़िक्र है ख़ुद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) जिनको आपने तशह्हुद के ये कलिमात सिखाये थे, वो फ़रमाते हैं तशह्हुद में अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यु हम नबी (ﷺ) की हयाते तय्यिबा में उस वक़्त कहा करते थे, जब आप बैना अज़्हुरिना हमारे दरम्यान होते थे, फ़लम्मा क़ुबिज़ा जब आप क़ब्ज़ कर लिये गये (हमसे जुदा हो गये) अगर आपकी ज़िन्दगी और वफ़ात के बाद कोई फ़र्क़ नहीं था तो सहाबा किराम (रज़ि.) ने 'या' को क्यों हज़फ़ कर दिया था। इसके अलावा ये तो दुआइया कलिमात हैं जो हम आपके लिये, अपने लिये और अल्लाह के सब नेक बन्दों के लिये अल्लाह के हुज़ूर दरख़्वास्त पेश करते हैं। क्या सब बन्दे हमारी ये दुआ सुनते हैं? और आपने चूंकि ये कलिमात ख़ुद सिखाये हैं और बड़े एहतिमाम से सिखाये हैं, इसलिये हम आपके सिखाये हुए कलिमात की पाबंदी करते हैं क्योंकि आपके दुआइया कलिमात में जो तासीर और बरकत है, उसका तक़ाज़ा यही है कि आपके कलिमात को जूँ का तूँ ही रखा जाये। इसलिये हम 'या' को हज़फ़ नहीं करते, अगरचे इब्ने मसऊद की हदीस की रोशनी में हज़फ़ करना जाइज़ है।

बाब 17 : तशह्हुद के बाद नबी (ﷺ) पर दरूद भेजना

باب الصَّلاَةِ عَلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بَعْدَ التَّشَهُّدِ

(907) हज़रत मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी (रज़ि.) (अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी वही हैं जिनको नमाज़ के लिये अज़ान ख़्वाब में दिखाई गई) अबू मसऊ़द अन्सारी (रज़ि.) से रिवायत बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाये, जबकि हम सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) की मज्लिस में बैठे हुए थे। आपसे बशीर बिन सअ़द (रज़ि.) ने पूछा, अल्लाह तआ़ला ने हमें आप पर दरूद भेजने का हुक्म दिया है, ऐ अल्लाह के रसूल! तो हम आप पर कैसे दरूद भेजें? इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ामोशी इख़्तियार की यहाँ तक कि हमने तमन्ना की, ऐ काश! इसने आपसे ये सवाल न किया होता। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'यूँ कहो, अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लै-त अ़ला आलि इब्राही-म व बारिक अ़ला मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारक्-त अ़ला आलि इब्राही-म फ़िल्आ़लमीन इन्न-क हमीदुम्-मजीद। (ऐ अल्लाह! अपनी रहमत और इनायत फ़रमा, मुहम्मद और आप के घर वालों पर जैसे कि तूने इनायत और रहमत फ़रमाई इब्राहीम के घर वालों पर और मुहम्मद और मुहम्मद के घर वालों पर बरकत नाज़िल फ़रमा

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ نُعَيْمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْمُجْمِرِ، أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدٍ الأَنْصَارِيَّ، - وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ زَيْدٍ هُوَ الَّذِي كَانَ أُرِيَ النِّدَاءَ بِالصَّلاَةِ - أَخْبَرَهُ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ قَالَ أَتَانَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَنَحْنُ فِي مَجْلِسِ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ فَقَالَ لَهُ بَشِيرُ بْنُ سَعْدٍ أَمَرَنَا اللَّهُ تَعَالَى أَنْ نُصَلِّيَ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَكَيْفَ نُصَلِّي عَلَيْكَ قَالَ فَسَكَتَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى تَمَنَّيْنَا أَنَّهُ لَمْ يَسْأَلْهُ ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قُولُوا " اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ

عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ فِي الْعَالَمِينَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ . وَالسَّلاَمُ كَمَا قَدْ عَلِمْتُمْ " .

जैसाकि तूने इब्राहीम के घर वालों पर, तमाम जहानों में बरकत नाज़िल फ़रमाई, बेशक तू हम्द व सताइश के लायक़ और अ़ज़मत व बुज़ुर्गी वाला है।) और सलाम को तो तुम जान ही चुके हो।'

(अबू दाऊद:980-981, तिर्मिज़ी:3220,नसाई: 3/45

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي لَيْلَى، قَالَ لَقِيَنِي كَعْبُ بْنُ عُجْرَةَ فَقَالَ أَلاَ أُهْدِي لَكَ هَدِيَّةً خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقُلْنَا قَدْ عَرَفْنَا كَيْفَ نُسَلِّمُ عَلَيْكَ فَكَيْفَ نُصَلِّي عَلَيْكَ قَالَ " قُولُوا اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ " .

(908) इब्ने अबी लैला से रिवायत है कि मुझे हज़रत कअ़ब बिन उ़ज्रह (रज़ि.) मिले और कहने लगे, क्या मैं तुम्हें एक तोहफ़ा न दूँ? रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाये तो हमने अ़र्ज़ किया, ये तो हमने जान लिया, हम आप पर सलाम कैसे भेजें तो हम आप पर दरूद कैसे भेजें? आपने फ़रमाया, 'यूँ कहा करो, 'अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्-मजीद अल्लाहुम्-म बारिक अ़ला मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारक्-त अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्-मजीद (ऐ अल्लाह! अपनी ख़ास इनायत और रहमत फ़रमा, मुहम्मद पर मुहम्मद के घर वालों पर जैसे कि तूने इनायत व रहमत फ़रमाई इब्राहीम के घर वालों पर तू हम्द व सताइश के सज़ावार और अ़ज़मत व बुज़ुर्गी वाला है। ऐ अल्लाह! ख़ास बरकतें नाज़िल फ़रमा, हज़रत मुहम्मद पर और आपके घर वालों पर जैसे कि तूने बरकतें नाज़िल फ़रमाई इब्राहीम के घर वालों पर, तू हम्द व सताइश के लायक़ और बुज़ुर्गी वाला है।'

(सहीह बुख़ारी: 3370, 4797, 6357, अबू दाऊद: 976-977, तिर्मिज़ी: 483, नसाई: 3/47-48, इब्ने माजह: 904)

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ شُعْبَةَ، وَمِسْعَرٍ، عَنِ الْحَكَمِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ . وَلَيْسَ فِي حَدِيثِ مِسْعَرٍ أَلاَ أُهْدِي لَكَ هَدِيَّةً.

(909) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं लेकिन उसमें एक रावी की हदीस़ में ये जुम्ला नहीं है, क्या मैं तुम्हें एक तोहफ़ा न दूँ।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكَّارٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، عَنِ الأَعْمَشِ، وَعَنْ مِسْعَرٍ، وَعَنْ مَالِكِ بْنِ مِغْوَلٍ، كُلُّهُمْ عَنِ الْحَكَمِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ " . وَلَمْ يَقُلِ اللَّهُمَّ .

(910) इमाम साहब ने एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की है, सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है, उसमें बारिक अ़ला मुहम्मद है अल्लाहुम्-म नहीं है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا رَوْحٌ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ نَافِعٍ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - قَالَ أَخْبَرَنَا رَوْحٌ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ سُلَيْمٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو حُمَيْدٍ السَّاعِدِيُّ، أَنَّهُمْ قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ نُصَلِّي عَلَيْكَ قَالَ " قُولُوا اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى أَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى أَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ " .

(911) हज़रत अबू हुमैद साइदी (रज़ि.) से रिवायत है कि सहाबा (रज़ि.) ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! हम आप पर सलात कैसे भेजें? आपने फ़रमाया, 'यूँ कहो, अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्-व अ़ला अज़्वाजिही व ज़ुर्रिय्यतिही कमा सल्लै-त अ़ला आलि इब्राही-म व बारिक अ़ला मुहम्मदिंव्-व अ़ला अज़्वाजिही व ज़ुर्रिय्यतिही कमा बारक्-त अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्-मजीद। (ऐ अल्लाह! रहमत व इनायत फ़रमा मुहम्मद, आपकी बीवियों और आपकी औलाद पर जैसे कि तूने रहमत व इनायत फ़रमाई, इब्राहीम के घराने पर और बरकतें नाज़िल फ़रमा मुहम्मद पर और आपकी बीवियों और आपकी औलाद पर जैसे कि तूने बरकतें

नाज़िल फ़रमाई हैं इब्राहीम के घर वालों पर, बेशक तू हम्द के लायक़ और बुज़ुर्ग है।'

(सहीह बुख़ारी : 3369, 6360, अबू दाऊद : 979, नसाई : 2/135)

(912) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो शख़्स मुझ पर एक बार दरूद भेजेगा, अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमायेगा।'

(अबू दाऊद : 1530, तिर्मिज़ी : 485, नसाई : 3/50)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - وَهُوَ ابْنُ جَعْفَرٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ صَلَّى عَلَىَّ وَاحِدَةً صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ عَشْرًا " .

फ़वाइद : (1) नबी (ﷺ) के ज़रिये उम्मते मुहम्मदिया को ईमान की दौलत मिली और कामिल ज़ाब्तए हयात नसीब हुआ तो जिस तरह अल्लाह तआला ख़ालिक़ व मालिक और कायनात का मुदब्बिर व मुन्तज़िम होने की बिना पर, इबादत और हम्द व तस्बीह का हक़दार है। उसी तरह आपका हम पर हक़ है कि हम आप पर दरूद व सलाम भेजकर, आपके लिये अल्लाह तआला की मज़ीद रहमत व राफ़्त और रफ़ओ दर्जात (दर्जात की बुलन्दी) की दुआयें करें और ये दरहक़ीक़त आपकी बारगाह में अक़ीदत व मुहब्बत का हदिया, वफ़ादारी व नियाज़ कीशीका नज़्राना और मम्नूनियत व सिपास गुज़ारी का ऐतराफ़ है। वरना ज़ाहिर है, आपको हमारी उन दुआओं की क्या ज़रूरत है और हम जैसे फ़क़ीरों और मिस्कीनों के हदियों और तोहफ़ों की क्या ज़रूरत है बल्कि इस दुआगोई और इज़्हारे इताअत का सबसे बड़ा फ़ायदा तो ख़ुद हमको पहुँचता है। एक तरफ़ हमारा ईमानी राब्ता मुस्तहकम होता है तो दूसरी तरफ़ हमें एक बार के मुख़्लिसाना दरूद के सिले में, अल्लाह तआला की कम से कम दस रहमतें हासिल होती हैं और हमें अपनी औक़ात मालूम होती है कि अगर आप जैसी मोहतरम हस्ती अल्लाह की रहमत की मोहताज है और आपका हक़ और मक़ामे आली बस यही है कि आपके वास्ते रहमत व सलामती की दुआयें की जायें, रहमत व सलामती आपके हाथ में नहीं है और जब आपके हाथ में नहीं, तो फिर किसी और मख़्लूक़ या इंसान के हाथ में भी नहीं है। क्योंकि सारी मख़्लूक़ में आपका मक़ाम सबसे बाला और बरतर है, हर इंसान अल्लाह की रहमत व सलामती का मोहताज है और उसके बग़ैर किसी हस्ती और मख़्लूक़ से ये हासिल नहीं हो सकती, इसलिये कोई उसका शरीक व सहीम भी नहीं है। **(2)** आल का मफ़्हूम : अरबी ज़बान और क़ुरआन व हदीस के मुहावरे की रू से किसी शख़्स के आल उनको कहा जाता है, जो उसके साथ ख़ुसूसी ताल्लुक़ व रब्त रखते हों। चाहे ये ताल्लुक़ नसब और रिश्ते का हो या रिफ़ाक़त,

मईयत और अक़ीदत व मुहब्बत का या उसकी इत्तिबाअ व इताअत का, क़ुरआन मजीद में आले इब्राहीम, आले इमरान और आले फ़िरऔन से इसका इज़हार होता है। (3) क़ुरआन मजीद में हमें आप (ﷺ) पर दरूद व सलाम भेजने का हुक्म दिया गया है। लेकिन इसमें नमाज़ या ग़ैर नमाज़ का तज़्किरा नहीं है। जैसाकि क़ुरआन मजीद में अल्लाह की हम्द व तस्बीह का हुक्म है, लेकिन नमाज़ या ग़ैर नमाज़ का तज़्किरा नहीं है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नूरे नुबूवत की रोशनी में हम्द व तस्बीह का ख़ास महल नमाज़ में बयान फ़रमाया है। इस तरह सलात व सलाम के हुक्म की तामील का ख़ास महल व मौक़ा नमाज़ के तशह्हुद व क़ुऊद को क़रार दिया है। लेकिन जैसाकि तस्बीह व तहमीद, नमाज़ के साथ ख़ास नहीं है, उसी तरह दरूद व सलाम भी नमाज़ के साथ ख़ास नहीं है आगे-पीछे भी मत्लूब है। (4) आख़िरी क़अदे में दरूद शरीफ़ के पढ़ने के बारे में अइम्मा का इख़्तिलाफ़ है। हज़रत उमर, इब्ने उमर, इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद के नज़दीक दरूद पढ़ना फ़र्ज़ है, इसके बग़ैर नमाज़ नहीं होगी। इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक और जुम्हूर उलमा के नज़दीक दरूद पढ़ना सुन्नत है, अगर किसी ने न पढ़ा तो नमाज़ हो जायेगी चूंकि सूरह अहज़ाब में आपके लिये सलात व सलाम भेजने का हुक्म है और उसका ख़ास मौक़ा व महल नमाज़ है, इसलिये कम से कम नमाज़ में तो फ़र्ज़ होना चाहिये। (5) आप पर दरूद को हज़रत इब्राहीम (अलै.) पर दरूद भेजने से तश्बीह दी गई है। इस पर ऐतराज़ किया जाता है कि अदना को आला से तश्बीह दी जाती है। इससे मालूम हुआ कि इब्राहीम (अलै.) और आले इब्राहीम पर दरूद, आप और आपकी आल पर दरूद से क़वी है। उलमा ने इसके अलग-अलग जवाब दिये हैं। आसान जवाब ये है कि तश्बीह सिर्फ़ नुज़ूले रहमत में है, इसकी कैफ़ियत का लिहाज़ नहीं है। एक चीज़ में एक सिफ़त मअरूफ़ और मशहूर होती है तो दूसरी चीज़ को अरगचे, उसमें ये सिफ़त ज़ाइद और क़वी हो, पहली चीज़ से तश्बीह दे दी जाती है। हालांकि उस पर ये सिफ़त कम होती है, जैसाकि कोई इंसान सिफ़ते जूदो-सख़ा में किसी क़द्र बढ़ जाये, उसको तश्बीह हातिम के साथ ही देंगे। इस तरह अल्लाह के नूर को क़ुरआन मजीद में एक ख़ुसूसी क़िस्म के चिराग़ के साथ दी गई है। हालांकि चे निस्बत ख़ाक रा बआलमे पाक, लेकिन चूंकि इंसानों में इस क़िस्म के चिराग़ की रोशनी मअरूफ़ व मशहूर थी। इसलिये उसके साथ तश्बीह दे दी गई और कमा में कैफ़ियत का लिहाज़ नहीं होता है जैसाकि क़ुरआन मजीद में है कुति-ब अलैकुमुस्सियामु कमा कुति-ब अलल्लज़ीन मिन क़ब्लिकुम तो क्या हमारे रोज़ों और पहली उम्मतों के रोज़ों की कैफ़ियत में यकसानियत है? (6) इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई और जुम्हूर फ़ुक़्हा (रह.) का क़ौल ये है कि ग़ैर अम्बिया (अलै.) पर इस्तिक़लालन दरूद भेजना दुरुस्त नहीं है। जैसे अबू बकर (अलै.) या उमर (अलै.) कहना दुरुस्त नहीं और इमाम जुवेनी का ख़्याल है, सलाम का भी यही हुक्म है और उसके जवाज़ के लिये सूरह तौबा की आयत सल्लु अलैहिम इन्ना सलात-क सकनुल्लहुम, या हुवल्लज़ी युसल्ली अलैकुम व मलाइकतिही से इस्तिदलाल करना दुरुस्त नहीं है। क्योंकि इन आयतों में ये लफ़्ज़ लुग़्वी मअना में इस्तेमाल हुआ है और किसी के नाम के साथ इस्तेमाल

की सूरत में, ये इस्तिलाही मानी में होगा और इस्तिलाही रू से ये अम्बिया के साथ ख़ास है। इस तरह मुलाक़ात के सलाम से (अलै.) के जवाज़ के लिये इस्तिदलाल करना दुरुस्त नहीं है। वरना अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन के तहत और हुवल्लज़ी युसल्ली अलैकुम की रू से सलात व सलाम हर इंसान के लिये आम अल्फ़ाज़ को हासिल है। इसलिये सलात व सलाम का लफ़्ज़ अम्बिया के लिये (रज़ि.) का लफ़्ज़ सहाबा किराम (रज़ि.) के लिये इस्तेमाल करना चाहिये। अगर लुग़वी मानी को मल्हूज़ रखें तो फिर उनका इस्तेमाल हर नेक इंसान के लिये आम हो जायेगा और उनकी मअन्वियत ही ख़त्म हो जायेगी। हाँ बित्तबअ उनका इस्तेमाल जाइज़ होगा। जैसे अल्लाहुम्-म सल्लि व सल्लिम अला मुहम्मदिंव्-व आलि मुहम्मदिंव्-व अस्हाबिही व अज़्वाजिही व ज़ुर्रिय्यातिही इन्न-क हमीदुम्-मजीद।

बाब 18 : समिअल्लाहु लिमन हमिदह रब्बना लकल हम्द और आमीन कहना

باب التَّسْمِيعِ وَالتَّحْمِيدِ وَالتَّأْمِينِ

(913) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब इमाम समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहे तो तुम अल्लाहुम्-म रब्बना लकल् हम्द (ऐ अल्लाह, हमारे आक़ा! तू ही हम्द व तौसीफ़ का हक़दार है) कहो, क्योंकि जिसका क़ौल फ़रिश्तों के क़ौल के मुवाफ़िक़ हो गया, उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे।'

(सहीह बुख़ारी : 796, 3228, अबू दाऊद : 848, तिर्मिज़ी : 267, नसाई : 2/196)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ سُمَىٍّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا قَالَ الإِمَامُ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ‏.‏ فَقُولُوا اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ ‏.‏ فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلاَئِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ " ‏.‏

फ़ायदा : नमाज़ बाजमाअत की सूरत में रुकूअ से उठते वक़्त, जब इमाम समिअल्लाहु लिमन हमिदह (अल्लाह ने सुनी उस बन्दे की जिसने उसकी हम्द की) कहता है तो अल्लाह के फ़रिश्ते अल्लाहुम्-म रब्बना लकल हम्द फ़रिश्ते भी ये कलिमात कहते हैं। इसलिये मुक़्तदियों को भी इस मौक़े पर यही कलिमा कहने का हुक्म दिया है और फ़रमाया है कि जिन लोगों का ये कलिमा फ़रिश्तों के कलिमे के मुताबिक़ होगा, इस कलिमे की बरकत से उसके पिछले छोटे गुनाह माफ़ हो जायेंगे। मुवाफ़िक़ और मुताबिक़ होने का मक़सद ये मालूम होता है रुकूअ से उठने के फ़ौरन बाद ये कलिमात कहे जायेंगे, ताकि फ़रिश्तों के बिल्कुल साथ हों, आगे पीछे न हों।

(914) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ - عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمَعْنَى حَدِيثِ سُمَىٍّ ‏.‏

(915) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिस वक़्त इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो, क्योंकि जिसकी आमीन फ़रिश्तों की आमीन के मुवाफ़िक़ होगी उसके पिछले क़ुसूर माफ़ कर दिये जायेंगे।' इब्ने शिहाब ने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) भी आमीन कहते थे।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، وَأَبِي، سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُمَا أَخْبَرَاهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ ‏"‏ إِذَا أَمَّنَ الإِمَامُ فَأَمِّنُوا فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ تَأْمِينُهُ تَأْمِينَ الْمَلاَئِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ ‏"‏ ‏.‏ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ ‏"‏ آمِينَ ‏"‏ ‏.‏

फ़ायदा : जब इमाम सूरह फ़ातिहा ख़त्म करके आमीन कहे तो मुक़्तदियों को भी उस वक़्त आमीन कहनी चाहिये, क्योंकि अल्लाह के फ़रिश्ते भी उस वक़्त आमीन कहते हैं और अल्लाह तआला का फ़ैसला ये है कि जो बन्दे आमीन में फ़रिश्ते की मुवाफ़िक़त करेंगे उनके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे।

(916) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, मालिक की रिवायत की तरह हदीस़ बयान की और इब्ने शिहाब का क़ौल बयान नहीं किया।

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي ابْنُ الْمُسَيَّبِ، وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏.‏ بِمِثْلِ حَدِيثِ مَالِكٍ وَلَمْ يَذْكُرْ قَوْلَ ابْنِ شِهَابٍ ‏.‏

(917) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुमसे कोई नमाज़ में आमीन कहता है तो

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، أَنَّ أَبَا يُونُسَ، حَدَّثَهُ عَنْ أَبِي

هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا قَالَ أَحَدُكُمْ فِي الصَّلاَةِ آمِينَ . وَالْمَلاَئِكَةُ فِي السَّمَاءِ آمِينَ . فَوَافَقَ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ " .

फ़रिश्ते आसमान पर आमीन कहते हैं और अगर एक दूसरे के आमीन मुवाफ़िक़ होती है तो उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं।' (सहीह बुख़ारी : 780, अबू दाऊद : 936, तिर्मिज़ी : 250, नसाई : 1/144)

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا قَالَ أَحَدُكُمْ آمِينَ . وَالْمَلاَئِكَةُ فِي السَّمَاءِ آمِينَ . فَوَافَقَتْ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ " .

(918) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुम में से कोई आमीन कहता है और फ़रिश्ते आसमान में आमीन कहते हैं और एक आमीन दूसरी के मुवाफ़िक़ होती है तो उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ .

(919) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ - عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " إِذَا قَالَ الْقَارِئُ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّالِّينَ . فَقَالَ مَنْ خَلْفَهُ آمِينَ . فَوَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ أَهْلِ السَّمَاءِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ " .

(920) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब क़ारी (पढ़ने वाला, इमाम) ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ॉल्लीन पढ़ता है और मुक़्तदी आमीन कहता है और उसका कहना आसमान वालों के कहने के मुवाफ़िक़ होता है तो उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं।'

फ़ायदा : इमाम जब सूरह फ़ातिहा ख़त्म करता है, यानी ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ॉल्लीन कह लेता है तो उस वक़्त इमाम और फ़रिश्ते आमीन कहते हैं और मुक़्तदी को भी बग़ैर रुके उस वक़्त आमीन कहनी चाहिये। सिर्री नमाज़ में बिल्इत्तिफ़ाक़ इमाम, मुक़्तदी और मुन्फ़रिद को आहिस्ता आमीन कहना चाहिये और जहरी नमाज़ों में आमीन इमाम और मुक़्तदी दोनों को बुलंद आवाज़ से

कहना चाहिये। इमाम शाफ़ेई, इमाम अहमद और मुहद्दिसीन का यही मौक़िफ़ है और यही हक़ है। इमाम मालिक के नज़दीक इमाम जहरी नमाज़ में आमीन नहीं कहेगा, इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक इमाम और मुक़्तदी दोनों आमीन आहिस्ता कहेंगे, इमाम मालिक का एक क़ौल यही है।

باب ائْتِمَامِ الْمَأْمُومِ بِالإِمَامِ

बाब 19 : मुक़्तदी का इमाम की इक़्तिदा करना

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَعَمْرٌو النَّاقِدُ وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ وَأَبُو كُرَيْبٍ جَمِيعًا عَنْ سُفْيَانَ، - قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، - عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ سَقَطَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم عَنْ فَرَسٍ فَجُحِشَ شِقُّهُ الأَيْمَنُ فَدَخَلْنَا عَلَيْهِ نَعُودُهُ فَحَضَرَتِ الصَّلاَةُ فَصَلَّى بِنَا قَاعِدًا فَصَلَّيْنَا وَرَاءَهُ قُعُودًا فَلَمَّا قَضَى الصَّلاَةَ قَالَ " إِنَّمَا جُعِلَ الإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوا وَإِذَا سَجَدَ فَاسْجُدُوا وَإِذَا رَفَعَ فَارْفَعُوا وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ . فَقُولُوا رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ . وَإِذَا صَلَّى قَاعِدًا فَصَلُّوا قُعُودًا أَجْمَعُونَ " .

(921) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) घोड़े से गिर गये तो आपका दायाँ पहलू छिल गया। हम आपकी इयादत के लिये आपके पास हाज़िर हुए तो नमाज़ का वक़्त हो गया। आपने हमें बैठकर नमाज़ पढ़ाई और हमने भी आपके पीछे बैठकर नमाज़ अदा की। जब आपने नमाज़ पूरी पढ़ा दी तो फ़रमाया, 'इमाम इसलिये मुक़र्रर किया गया है ताकि उसकी इक़्तिदा (पैरवी) की जाये तो जब वो तकबीर कह ले तो तुम तकबीर कहो और जब वो सज्दा करे तो तुम भी सज्दा करो और जब वो उठे तो तुम भी उठो और जब वो समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहे तो तुम रब्बना व लकल हम्द कहो और जब वो बैठकर नमाज़ पढ़ाये तो तुम सब बैठकर नमाज़ पढ़ो।'

(सहीह बुख़ारी : 805, नसाई : 2/82-83, इब्ने माजह : 1238)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ خَرَّ رَسُولُ

(922) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) घोड़े से गिर गये तो छिल गये और हमें बैठकर नमाज़ पढ़ाई। आगे पिछली हदीस है।

اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ فَرَسٍ فَجُحِشَ فَصَلَّى لَنَا قَاعِدًا . ثُمَّ ذَكَرَ نَحْوَهُ .

(सहीह बुख़ारी : 733, तिर्मिज़ी : 361)

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم صُرِعَ عَنْ فَرَسٍ فَجُحِشَ شِقُّهُ الأَيْمَنُ بِنَحْوِ حَدِيثِهِمَا وَزَادَ " فَإِذَا صَلَّى قَائِمًا فَصَلُّوا قِيَامًا " .

(923) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) घोड़े से गिर पड़े तो आपका दायाँ पहलू छिल गया। आगे मज़्कूरा बाला रिवायत है और उसमें इतना इज़ाफ़ा है, 'जब इमाम खड़ा होकर नमाज़ पढ़ाये तो तुम भी खड़े होकर नमाज़ पढ़ो।'

(सहीह बुख़ारी : 1114)

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا مَعْنُ بْنُ عِيسَى، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم رَكِبَ فَرَسًا فَصُرِعَ عَنْهُ فَجُحِشَ شِقُّهُ الأَيْمَنُ . بِنَحْوِ حَدِيثِهِمْ وَفِيهِ " إِذَا صَلَّى قَائِمًا فَصَلُّوا قِيَامًا " .

(924) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) घोड़े पर सवार हुए और उससे गिर पड़े, उससे आपका दायाँ पहलू छिल गया। आगे मज़्कूरा बाला रिवायत है और ये भी है, 'जब वो खड़े होकर नमाज़ पढ़ाये तो तुम भी खड़े होकर नमाज़ पढ़ो।'

(सहीह बुख़ारी : 689, अबू दाऊद : 601, नसाई : 2/98)

حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي أَنَسٌ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم سَقَطَ مِنْ فَرَسِهِ فَجُحِشَ شِقُّهُ الأَيْمَنُ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ وَلَيْسَ فِيهِ زِيَادَةُ يُونُسَ وَمَالِكٍ .

(925) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) अपने घोड़े से गिर पड़े, जिससे आपकी दायें जानिब छिल गई। आगे पिछली हदीस़ बयान की। उसमें यूनुस और मालिक वाला इज़ाफ़ा नहीं है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ،

(926) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बीमार पड़ गये। आपके कुछ साथी आपकी बीमारपुर्सी के लिये

قَالَتِ اشْتَكَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَدَخَلَ عَلَيْهِ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِهِ يَعُودُونَهُ فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم جَالِسًا فَصَلَّوْا بِصَلاَتِهِ قِيَامًا فَأَشَارَ إِلَيْهِمْ أَنِ اجْلِسُوا . فَجَلَسُوا فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ " إِنَّمَا جُعِلَ الإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ فَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا وَإِذَا رَفَعَ فَارْفَعُوا وَإِذَا صَلَّى جَالِسًا فَصَلُّوا جُلُوسًا " .

हाज़िर हुए। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बैठकर नमाज़ शुरू की और उन्होंने आपकी इक़्तिदा में खड़े होकर नमाज़ पढ़नी शुरू की। आपने उन्हें बैठने का इशारा किया तो वो बैठ गये। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हो गये तो आपने फ़रमाया, 'इमाम इसीलिये बनाया जाता है कि उसकी इक़्तिदा (पैरवी) की जाये, जब वो रुकूअ करे तो तुम भी रुकूअ करो और जब वो रुकूअ से उठे तो तुम भी उठो और जब वो बैठकर नमाज़ पढ़ाये तो तुम भी बैठकर नमाज़ पढ़ो।'

(इब्ने माजह : 1237)

حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي جَمِيعًا، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(927) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से मज़्कूरा बाला हदीस़ बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ اشْتَكَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَصَلَّيْنَا وَرَاءَهُ وَهُوَ قَاعِدٌ وَأَبُو بَكْرٍ يُسْمِعُ النَّاسَ تَكْبِيرَهُ فَالْتَفَتَ إِلَيْنَا فَرَآنَا قِيَامًا فَأَشَارَ إِلَيْنَا فَقَعَدْنَا فَصَلَّيْنَا بِصَلاَتِهِ قُعُودًا فَلَمَّا سَلَّمَ قَالَ " إِنْ كِدْتُمْ آنِفًا لَتَفْعَلُونَ فِعْلَ فَارِسَ وَالرُّومِ يَقُومُونَ عَلَى

(928) हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बीमार पड़ गये और हमने आपकी इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी और आप बैठे हुए थे और अबू बकर (रज़ि.) आपकी तकबीर लोगों को सुना रहे थे। आपने हमारी तरफ़ तवज्जह फ़रमाई और हमें खड़े हुए देखा तो आपने हमें इशारा फ़रमाया। जिससे हम बैठ गये और हमने आपकी इक़्तिदा में बैठकर नमाज़ पढ़ी। जब आपने सलाम फ़ेरा फ़रमाया, 'तुम अभी वो काम

करना चाहते थे जो फ़ारसी और रोमी करते हैं, वो अपने बादशाहों के हुज़ूर उनके बैठे होने की सूरत में खड़े होते हैं। ऐसा न किया करो, अपने अइम्मा की इक़्तिदा करो, अगर वो खड़ा होकर नमाज़ पढ़ायें तो तुम भी खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर वो बैठकर नमाज़ पढ़े तो तुम भी बैठकर नमाज़ पढ़ो।'

(अबू दाऊद : 606, नसाई : 3/9, इब्ने माजह : 1240)

مُلُوكِهِمْ وَهُمْ قُعُودٌ فَلاَ تَفْعَلُوا ائْتَمُّوا بِأَئِمَّتِكُمْ إِنْ صَلَّى قَائِمًا فَصَلُّوا قِيَامًا وَإِنْ صَلَّى قَاعِدًا فَصَلُّوا قُعُودًا " .

(929) हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें जमाअत करवाई और अबू बकर आपके पीछे थे, जब रसूलुल्लाह (ﷺ) तकबीर कहते अबू बकर भी (बतौरे मुकब्बिर) तकबीर कहते। ताकि हमें सुनायें। आगे मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की।

(सहीह बुख़ारी : 797)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الرُّؤَاسِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَبُو بَكْرٍ خَلْفَهُ فَإِذَا كَبَّرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَبَّرَ أَبُو بَكْرٍ لِيُسْمِعَنَا . ثُمَّ ذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ اللَّيْثِ .

(930) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इमाम तो इक़्तिदा के लिये है, इसलिये उसकी मुख़ालिफ़त न करो, लिहाज़ा जब वो तकबीर कहे तो तुम भी तकबीर कहो और जब वो रुकूअ करे तो तुम भी रुकूअ करो और जब वो समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहे तो फिर तुम अल्लाहुम्-म रब्बना लकल हम्द कहो और जब वो सज्दा करे तो तुम भी सज्दा करो और जब वो बैठकर नमाज़ पढ़े तो तुम सब भी बैठकर नमाज़ पढ़ो।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، - يَعْنِي الْحِزَامِيَّ - عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّمَا الإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ فَلاَ تَخْتَلِفُوا عَلَيْهِ فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوا وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ . فَقُولُوا اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ . وَإِذَا سَجَدَ فَاسْجُدُوا وَإِذَا صَلَّى جَالِسًا فَصَلُّوا جُلُوسًا أَجْمَعُونَ " .

(931) इमाम एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।
(सहीह बुख़ारी : 722)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

फ़वाइद : **(1)** रुकूअ़ के बाद क़ौमा में रब्बना लकल हम्द और रब्बना व लकल हम्द दोनों तरह कहना सहीह है। क्योंकि आपसे दोनों तरह साबित है। **(2)** इमाम की इक़्तिदा (पैरवी) मुक़्तदी के लिये लाज़िम है। नमाज़ के तमाम अरकान अजज़ा, तकबीर, रुकूअ़, क़ौमा, सज्दा, क़अ़दा और सलाम में मुक़्तदियों को इमाम के पीछे रहना चाहिये। किसी चीज़ में भी सबक़त करना जाइज़ नहीं है, अगर इमाम से सलाम में सबक़त (पहल) करेगा (जान-बूझकर) तो नमाज़ नहीं होगी। **(3)** इमाम की पैरवी या इक़्तिदा का ताल्लुक़ ज़ाहिरी अरकान से है। जैसाकि आपने ला तख़्तलिफ़ू (उसकी मुख़ालिफ़त न करो) की वज़ाहत करते हुए फ़रमाया, 'जब वो तकबीर कहे तो तुम भी तकबीर कहो और जब वो रुकूअ़ करे तो तुम भी रुकूअ़ करो।' नियत के इख़्तिलाफ़ का इससे कोई ताल्लुक़ नहीं है क्योंकि वो महसूस होने वाली चीज़ नहीं है। इसलिये फ़र्ज़ नमाज़, नफ़ल पढ़ने वाले के पीछे जाइज़ है। जैसे नफ़ल, फ़र्ज़ पढ़ने वाले के पीछे जाइज़ है। इस तरह अ़सर पढ़ने वाले के पीछे ज़ुहर पढ़ना जाइज़ है। **(4)** बीमार और उज़्र की सूरत में बैठकर नमाज़ पढ़ना जाइज़ है और किसी ज़रूरत के तहत नमाज़ में इशारा करना भी दुरुस्त है। **(5)** इमाम अगर बैठकर नमाज़ पढ़ाये तो मुक़्तदियों को क्या करना चाहिये, इसके बारे में इख़्तिलाफ़ है। इमाम मालिक और इमाम मुहम्मद के नज़दीक जालिस को इमाम नहीं बनाया जा सकता। ये नबी (ﷺ) के साथ ख़ास है कि आप बैठकर भी इमाम बन सकते थे। बाक़ी अइम्मा के नज़दीक बैठने वाला इमाम बन सकता है। इमाम शाफ़ेई, इमाम अबू हनीफ़ा, अबू यूसुफ़ और औज़ाई के नज़दीक मुक़्तदी खड़े होकर नमाज़ पढ़ेंगे। क्योंकि आपका आख़िरी तर्ज़े अ़मल यही था। सहाबा किराम (रज़ि.) ने आपकी इक़्तिदा में खड़े होकर नमाज़ पढ़ी थी जबकि आप बैठे थे। इमाम अहमद के नज़दीक इमाम अगर नमाज़ की शुरूआत बैठकर करे तो मुक़्तदी भी बैठकर नमाज़ पढ़ेंगे और अगर वो नमाज़ की शुरूआत खड़े होकर करे तो नमाज़ खड़े होकर पढ़ी जायेगी। अगरचे बाद में इमाम बैठ ही जाये। मर्ज़ुल मौत की नमाज़ का आग़ाज़, अबू बकर ने किया था और वो खड़े थे, बाद में आप तशरीफ़ लाये इसलिये मुक़्तदी खड़े होकर ही नमाज़ पढ़ते रहे। इब्नुल मुन्ज़िर, इब्ने ख़ुज़ैमा और इब्ने हिब्बान का मौक़िफ़ भी यही है।

बाब 20 : तकबीर वग़ैरह में इमाम से सबक़त ले जाना नाजाइज़ है

باب النَّهْيِ عَنْ مُبَادَرَةِ الإِمَامِ، بِالتَّكْبِيرِ وَغَيْرِهِ

(932) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमें तालीम देते थे कि 'इमाम से सबक़त (जल्दी) न करो, जब वो तकबीर कहे तो तुम तकबीर कहो और जब वो वलज़्ज़ॉल्लीन कहे तो तुम आमीन कहो और जब वो रुकूअ करे तो तुम रुकूअ करो और जब वो समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहे तो तुम अल्लाहुम्-म रब्बना लकल हम्द कहो।'

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَابْنُ، خَشْرَمٍ قَالاَ أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُعَلِّمُنَا يَقُولُ " لاَ تُبَادِرُوا الإِمَامَ إِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوا وَإِذَا قَالَ وَلاَ الضَّالِّينَ . فَقُولُوا آمِينَ . وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ . فَقُولُوا اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ " .

(933) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं मगर ये क़ौल कि 'जब वो वलज़्ज़ॉल्लीन कहे तो तुम आमीन कहो' बयान नहीं किया और इतना इज़ाफ़ा किया, 'और उससे पहले सर न उठाओ।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي الدَّرَاوَرْدِيَّ - عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِنَحْوِهِ إِلاَّ قَوْلَهُ " وَلاَ الضَّالِّينَ . فَقُولُوا آمِينَ " . وَزَادَ " وَلاَ تَرْفَعُوا قَبْلَهُ " .

फ़ायदा : चारों इमामों के नज़दीक बिल्इत्तिफ़ाक़ तकबीरे तहरीमा में अगर मुक़्तदी, इमाम से सबक़त करेगा तो उसकी नमाज़ नहीं होगी। नीज़ अइम्मए सलासा और साहिबैन के नज़दीक मुक़ारिनत भी दुरुस्त नहीं है और इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक मुक़ारिनत जाइज़ है। इमाम की इक़्तिदा का तक़ाज़ा ये है कि मुक़्तदी तमाम हालाते नमाज़ में इमाम की मुताबिअत करे, उसके पीछे-पीछे रहे। किसी हालत और काम में भी इमाम के साथ मुक़ारिनत (साथ-साथ रहना) या उससे मुबादरत व मुसाबिक़त (सबक़त और जल्दी करना) और उसकी मुख़ालिफ़त न करे।

(934) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इमाम

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، ح وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ

مُعَاذٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ يَعْلَى، - وَهُوَ ابْنُ عَطَاءٍ - سَمِعَ أَبَا عَلْقَمَةَ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّمَا الإِمَامُ جُنَّةٌ فَإِذَا صَلَّى قَاعِدًا فَصَلُّوا قُعُودًا وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ . فَقُولُوا اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ . فَإِذَا وَافَقَ قَوْلُ أَهْلِ الأَرْضِ قَوْلَ أَهْلِ السَّمَاءِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ " .

तो बस ढाल है, लिहाज़ा जब वो बैठकर नमाज़ पढ़े तो तुम भी बैठकर नमाज़ पढ़ो, और जब वो समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहे तो तुम अल्लाहुम्-म रब्बना लकल हम्द कहो। क्योंकि जब ज़मीन वालों का बोल, आसमान वालों के बोल के मुवाफ़िक़ होगा तो उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे।'

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ حَيْوَةَ، أَنَّ أَبَا يُونُسَ، مَوْلَى أَبِي هُرَيْرَةَ حَدَّثَهُ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " إِنَّمَا جُعِلَ الإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوا وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ . فَقُولُوا اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ . وَإِذَا صَلَّى قَائِمًا فَصَلُّوا قِيَامًا وَإِذَا صَلَّى قَاعِدًا فَصَلُّوا قُعُودًا أَجْمَعُونَ " .

(935) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इमाम सिर्फ़ इसलिये मुक़र्रर किया गया है कि उसकी इक़्तिदा (पैरवी) की जाये तो जब वो तकबीर कहे तो तुम तकबीर कहो और जब वो समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहे तो तुम अल्लाहुम्-म रब्बना लकल हम्द कहो और जब वो खड़े होकर नमाज़ पढ़े तो तुम खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और जब वो बैठकर नमाज़ पढ़े तो तुम सब बैठकर नमाज़ पढ़ो।'

बाब 21 : जब मर्ज़, सफ़र या किसी और वजह से इमाम को उ़ज़्र पेश आ जाये तो उसका लोगों को नमाज़ पढ़ाने के लिये किसी को अपना जाँनशीन (ख़लीफ़ा) बनाना और जो इमाम के क़ियाम से आजिज़ होने की बिना पर उसकी बैठने की सूरत में उसकी इक़्तिदा करेगा, वो खड़ा होकर नमाज़ पढ़ेगा, और बैठकर नमाज़ पढ़ाने वाले के पीछे खड़े होकर नमाज़ पढ़ने की ताक़त रखने वाले के लिये बैठकर नमाज़ पढ़ना मन्सूख़ है

باب اسْتِخْلاَفِ الإِمَامِ إِذَا عَرَضَ لَهُ عُذْرٌ مِنْ مَرَضٍ وَسَفَرٍ وَغَيْرِهِمَا مَنْ يُصَلِّي بِالنَّاسِ وَأَنَّ مَنْ صَلَّى خَلْفَ إِمَامٍ جَالِسٍ لِعَجْزِهِ عَنِ الْقِيَامِ لَزِمَهُ الْقِيَامُ إِذَا قَدَرَ عَلَيْهِ وَنَسْخِ الْقُعُودِ خَلْفَ الْقَاعِدِ فِي حَقِّ مَنْ قَدَرَ عَلَى الْقِيَامِ

(936) उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह से रिवायत है कि मैं आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूछा, क्या आप मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) की बीमारी के बारे में नहीं बतायेंगी? उन्होंने जवाब दिया, क्यों नहीं। नबी (ﷺ) बीमार हो गये तो आपने पूछा, क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली है? हमने अ़र्ज़ किया, नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल! वो आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं। आपने फ़रमाया, 'मेरे लिये लगन (टब) में पानी रखो।' हमने पानी रखा तो आपने गुस्ल फ़रमा लिया। फिर उठने लगे, तो आप पर बेहोशी तारी हो गई। फिर आप होश में आये तो आपने पूछा, 'क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली?' हमने कहा, नहीं, ऐ

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زَائِدَةُ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ أَبِي عَائِشَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ دَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ فَقُلْتُ لَهَا أَلاَ تُحَدِّثِينِي عَنْ مَرَضِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ بَلَى ثَقُلَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " أَصَلَّى النَّاسُ " . قُلْنَا لاَ وَهُمْ يَنْتَظِرُونَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَ " ضَعُوا لِي مَاءً فِي الْمِخْضَبِ " . فَفَعَلْنَا فَاغْتَسَلَ ثُمَّ ذَهَبَ لِيَنُوءَ فَأُغْمِيَ عَلَيْهِ ثُمَّ أَفَاقَ فَقَالَ " أَصَلَّى

النَّاسُ " . قُلْنَا لاَ وَهُمْ يَنْتَظِرُونَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَقَالَ " ضَعُوا لِي مَاءً فِي الْمِخْضَبِ " . فَفَعَلْنَا فَاغْتَسَلَ ثُمَّ ذَهَبَ لِيَنُوءَ فَأُغْمِيَ عَلَيْهِ ثُمَّ أَفَاقَ فَقَالَ " أَصَلَّى النَّاسُ " . قُلْنَا لاَ وَهُمْ يَنْتَظِرُونَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَقَالَ " ضَعُوا لِي مَاءً فِي الْمِخْضَبِ " . فَفَعَلْنَا فَاغْتَسَلَ ثُمَّ ذَهَبَ لِيَنُوءَ فَأُغْمِيَ عَلَيْهِ ثُمَّ أَفَاقَ فَقَالَ " أَصَلَّى النَّاسُ " . فَقُلْنَا لاَ وَهُمْ يَنْتَظِرُونَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَتْ وَالنَّاسُ عُكُوفٌ فِي الْمَسْجِدِ يَنْتَظِرُونَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِصَلاَةِ الْعِشَاءِ الآخِرَةِ - قَالَتْ - فَأَرْسَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلَى أَبِي بَكْرٍ أَنْ يُصَلِّيَ بِالنَّاسِ فَأَتَاهُ الرَّسُولُ فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَأْمُرُكَ أَنْ تُصَلِّيَ بِالنَّاسِ . فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ وَكَانَ رَجُلاً رَقِيقًا يَا عُمَرُ صَلِّ بِالنَّاسِ . قَالَ فَقَالَ عُمَرُ أَنْتَ أَحَقُّ بِذَلِكَ . قَالَتْ فَصَلَّى بِهِمْ أَبُو بَكْرٍ تِلْكَ الأَيَّامَ ثُمَّ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَجَدَ مِنْ نَفْسِهِ خِفَّةً فَخَرَجَ بَيْنَ رَجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا الْعَبَّاسُ لِصَلاَةِ الظُّهْرِ وَأَبُو

अल्लाह के रसूल! वो आपके मुन्तज़िर हैं। तो आपने फ़रमाया, 'मेरे लिये पानी का टब रखो।' हमने पानी रखा तो आपने ग़ुस्ल फ़रमाया। फिर आप उठने लगे तो आप पर ग़शी तारी हो गई। फिर होश में आये तो पूछा, 'क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली है?' हमने कहा, नहीं। वो आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं। तो आपने फ़रमाया, 'मेरे लिये पानी का टब रखो।' हमने ऐसा किया तो आपने ग़ुस्ल फ़रमाया। फिर उठने लगे तो बेहोश हो गये। फिर होश में आये तो पूछा, 'क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली?' तो हमने कहा, नहीं, वो ऐ अल्लाह के रसूल! आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं। आइशा (रज़ि.) ने बताया, लोग मस्जिद में बैठे हुए इशा की नमाज़ के लिये आपका इन्तिज़ार कर रहे थे। आइशा (रज़ि.) ने बताया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अबू बकर (रज़ि.) की तरफ़ पैग़ाम भेजा कि वो लोगों को नमाज़ पढ़ायें। पैग़ाम्बर (ख़बर देने वाला) उनके पास आकर कहने लगा, रसूलुल्लाह (ﷺ) आपको हुक्म दे रहे हैं, आप लोगों को नमाज़ पढ़ायें। तो अबू बकर ने कहा क्योंकि वो बहुत नर्म दिल थे, ऐ उमर! लोगों को नमाज़ पढ़ाओ। तो उमर ने जवाब दिया, आप ही इसके ज़्यादा हक़दार हैं। आइशा (रज़ि.) ने बताया, इस पर अबू बकर ने उन दिनों जमाअत कराई। फिर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कुछ इफ़ाक़ा महसूस किया (मिज़ाज में आसानी पाई) तो दो मर्दों का सहारा लेकर

بَكْرٍ يُصَلِّي بِالنَّاسِ فَلَمَّا رَآهُ أَبُو بَكْرٍ ذَهَبَ لِيَتَأَخَّرَ فَأَوْمَأَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم أَنْ لاَ يَتَأَخَّرَ وَقَالَ لَهُمَا " أَجْلِسَانِي إِلَى جَنْبِهِ " . فَأَجْلَسَاهُ إِلَى جَنْبِ أَبِي بَكْرٍ وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ يُصَلِّي وَهُوَ قَائِمٌ بِصَلاَةِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَالنَّاسُ يُصَلُّونَ بِصَلاَةِ أَبِي بَكْرٍ وَالنَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم قَاعِدٌ . قَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ فَدَخَلْتُ عَلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ فَقُلْتُ لَهُ أَلاَ أَعْرِضُ عَلَيْكَ مَا حَدَّثَتْنِي عَائِشَةُ عَنْ مَرَضِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ هَاتِ . فَعَرَضْتُ حَدِيثَهَا عَلَيْهِ فَمَا أَنْكَرَ مِنْهُ شَيْئًا غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ أَسَمَّتْ لَكَ الرَّجُلَ الَّذِي كَانَ مَعَ الْعَبَّاسِ قُلْتُ لاَ . قَالَ هُوَ عَلِيٌّ .

जिनमें एक अ़ब्बास (रज़ि.) थे, नमाज़े ज़ुहर के लिये निकले और अबू बकर (रज़ि.) नमाज़ पढ़ा रहे थे। तो जब अबू बकर (रज़ि.) ने आपको देखा, पीछे हटने लगे तो उन्हें नबी (ﷺ) ने इशारा किया कि पीछे न हटो। आपने उन दोनों से फ़रमाया, 'मुझे इनके पहलू में बिठा दो।' तो उन दोनों ने आपको अबू बकर (रज़ि.) के पहलू में बिठा दिया। रावी ने कहा, अबू बकर (रज़ि.) नबी की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ने लगे और लोग अबू बकर की नमाज़ की इक़्तिदा कर रहे थे और नबी (ﷺ) बैठे हुए थे। उ़बैदुल्लाह ने बताया, फिर मैं हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उनसे अ़र्ज़ किया, क्या मैं आपको वो हदीस़ न सुनाऊँ जो मुझे हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने नबी (ﷺ) की बीमारी के बारे में सुनाई है? उन्होंने कहा, सुनाओ! तो मैंने उन पर आ़इशा (रज़ि.) की हदीस़ पेश की। उन्होंने उसमें किसी चीज़ पर ऐतराज़ नहीं किया या किसी बात का इंकार नहीं किया। हाँ! इतना कहा, क्या आ़इशा (रज़ि.) ने तुम्हें उस आदमी का नाम बताया जो अ़ब्बास (रज़ि.) के साथ थे? मैंने कहा, नहीं। तो उन्होंने कहा, वो अ़ली (रज़ि.) थे।

(सहीह बुख़ारी : 687, नसाई : 2/101)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) मिख़ज़ब : लगन, टब। **(2) लियनूअ :** ताकि उठें, खड़े हों। **(3) उग़मिया अ़लैहि :** आप पर ग़शी तारी हो गई। **(4) उ़कूफ़ :** आ़किफ़ की जमा है, ठहरे हुए, रुके हुए। यानी बैठे हुए थे।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، - وَاللَّفْظُ لِابْنِ رَافِعٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، قَالَ قَالَ الزُّهْرِيُّ وَأَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ، أَنَّ عَائِشَةَ، أَخْبَرَتْهُ قَالَتْ، أَوَّلُ مَا اشْتَكَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي بَيْتِ مَيْمُونَةَ فَاسْتَأْذَنَ أَزْوَاجَهُ أَنْ يُمَرَّضَ فِي بَيْتِهَا وَأَذِنَّ لَهُ - قَالَتْ - فَخَرَجَ وَيَدٌ لَهُ عَلَى الْفَضْلِ بْنِ عَبَّاسٍ وَيَدٌ لَهُ عَلَى رَجُلٍ آخَرَ وَهُوَ يَخُطُّ بِرِجْلَيْهِ فِي الأَرْضِ . فَقَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ فَحَدَّثْتُ بِهِ ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ أَتَدْرِي مَنِ الرَّجُلُ الَّذِي لَمْ تُسَمِّ عَائِشَةُ هُوَ عَلِيٌّ .

(937) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की बीमारी का आग़ाज़ मैमूना (रज़ि.) के घर से हुआ और आपने अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात से मेरे घर में तीमारदारी करवाने की इजाज़त तलब की (मेरे घर में अय्यामे मर्ज़ गुज़ारने की इजाज़त चाही) और अज़्वाज ने इजाज़त दे दी। हज़रत आइशा (रज़ि.) बताती हैं, आप इस हाल में घर से निकले कि आपका एक हाथ फ़ज़्ल बिन अब्बास पर और दूसरा एक दूसरे आदमी पर था और आपके पाँव ज़मीन पर ख़त (लकीर) खींच रहे थे (पैर ज़मीन पर घसीट रहे थे) उबैदुल्लाह बयान करते हैं कि मैंने ये हदीस इब्ने अब्बास (रज़ि.) को सुनाई तो उन्होंने पूछा, क्या तुम जानते हो वो आदमी जिसका आइशा (रज़ि.) ने नाम नहीं लिया, कौन था? वो अली (रज़ि.) थे।

(सहीह बुख़ारी : 198, 665, 2588, 3099, 4442, 22, 5714, इब्ने माजह : 1618)

حَدَّثَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، قَالَ حَدَّثَنِي عُقَيْلُ بْنُ خَالِدٍ، قَالَ ابْنُ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ، أَنَّ عَائِشَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ لَمَّا ثَقُلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَاشْتَدَّ بِهِ وَجَعُهُ اسْتَأْذَنَ أَزْوَاجَهُ أَنْ يُمَرَّضَ فِي بَيْتِي فَأَذِنَّ لَهُ فَخَرَجَ بَيْنَ

(938) हज़रत आइशा (रज़ि.) नबी (ﷺ) की बीवी से रिवायत है कि जब नबी (ﷺ) बीमार हो गये और आपकी बीमारी शिद्दत इख़्तियार कर गई तो आपने अपनी बीवियों से मेरे घर में बीमारी के दिन गुज़ारने की इजाज़त तलब की। उन्होंने इजाज़त दे दी तो आप दो आदमियों के सहारे इस हाल में निकले कि आपके दोनों पैर ज़मीन से रगड़ खा रहे थे। आप (ﷺ) अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और एक दूसरे आदमी के दरम्यान थे। हदीस के

رَجُلَيْنِ تَخُطُّ رِجْلَاهُ فِي الأَرْضِ بَيْنَ عَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ وَبَيْنَ رَجُلٍ آخَرَ . قَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ فَأَخْبَرْتُ عَبْدَ اللَّهِ بِالَّذِي قَالَتْ عَائِشَةُ فَقَالَ لِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبَّاسٍ هَلْ تَدْرِي مَنِ الرَّجُلُ الآخَرُ الَّذِي لَمْ تُسَمِّ عَائِشَةُ قَالَ قُلْتُ لاَ . قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ هُوَ عَلِيٌّ .

रावी उ़बैदुल्लाह कहते हैं, आइशा (रज़ि.) ने जो कुछ बताया था, मैंने उसका तज़्किरा इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से किया तो उन्होंने पूछा, क्या तुम उस आदमी को जानते हो, जिसका नाम आइशा (रज़ि.) ने नहीं लिया? मैंने कहा, नहीं। उन्होंने बताया, वो अ़ली बिन अबी तालिब (रज़ि.) थे।

फ़वाइद : (1) हदीस़ में आपके पे-दरपे बेहोश हो जाने का तज़्किरा है। जिसका सबब दर्द व मर्ज़ की शिद्दत था। जैसाकि पिछली हदीस़ में है कि इश्तद्दा बिही वज्उ़हू आपका दर्द शदीद हो गया और बीमारी नुबूवत के मुनाफ़ी नहीं है। हाँ अम्बिया (अ़लै.) को ऐसे मर्ज़ लाहिक़ नहीं होते जो उनकी शान के मुनाफ़ी हों। जैसे जुनून व दिवानगी, आप अख़ीर उ़म्र में दर्दे सर और बेहोशी के मर्ज़ में मुब्तला हुए और इसी बीमारी के दौरान अपने ख़ालिक़ व मालिक से जा मिले। जिसका मक़सद आपके अज्र व स़वाब और दर्जा व मर्तबा को बढ़ाना था और ये बताना था कि सेहत व तन्दुरुस्ती और शिफ़ायाबी अल्लाह तआ़ला के इख़्तियार में है, रसूल के क़ब्ज़े में नहीं है। जिसकी दुआ़ और लुआ़बे दहन से हज़रत अबू बकर की ज़हर आलूद ऐड़ी को शिफ़ा मिली। हज़रत अ़ली (रज़ि.) का आशोबे चश्म (आँख का दर्द) ठीक हुआ। हज़रत क़तादा बिन नोमान की आँख का डीला रोशन हुआ। अल्लाह तआ़ला की रज़ा और मशिय्यत के बग़ैर अपना मर्ज़ दूर न कर सका, क्योंकि आपके इख़्तियार में न थी। **(2)** सहाबा किराम (रज़ि.) ने बीमारी की शिद्दत के बावजूद आपका इन्तिज़ार किया और आपने बार-बार ग़ुस्ल करके मस्जिद में जाने की ख़्वाहिश का इज़हार फ़रमाया जिससे स़ाबित हुआ अगर मरीज़ मस्जिद में आ सकता हो तो उसे जमाअ़त में शरीक होना चाहिये और इमाम के आने की उम्मीद हो तो उसका इन्तिज़ार करना चाहिये और उ़ज़्र की सूरत में किसी दूसरे को इमाम बनाया जा सकता है। **(3)** हज़रत अबू बकर (रज़ि.) ने रक़ीकुल क़ल्ब होने की बिना पर हज़रत उ़मर को इमामत के लिये कहा, लेकिन हज़रत उ़मर ने कहा, आप ही इमामत के ज़्यादा हक़दार हैं। आपकी फ़ज़ीलत व बरतरी की बिना पर ही नबी (ﷺ) ने अबू बकर का इन्तिख़ाब किया था। जिससे मालूम हुआ आप (रज़ि.) तमाम सहाबा से अफ़ज़ल हैं। उ़मर (रज़ि.) ने इस वजह से इमामत नहीं कराई और इस बिना पर अबू बकर (रज़ि.) नबी (ﷺ) के बाद ख़लीफ़ा चुन लिये गये। **(4)** नबी (ﷺ) की आमद पर हज़रत अबू बकर आपके एहतिराम व तौक़ीर की ख़ातिर पीछे हटने लगे तो आपने इशारे से रोक दिया। जिससे मालूम हुआ अगर असल इमाम आ जाये तो तकबीरे तहरीमा से पहले दूसरा इमाम मुसल्ले से पीछे हट सकता है। लेकिन इस हदीस़ से ये इस्तिदलाल दुरुस्त नहीं है कि नमाज़ में आपके ख़्याल में मुस्तग़रक़

हो जाना दुरुस्त है। इमामत के लिये आपको आगे करना और चीज़ है और आपका तसव्वुर व ख़्याल नमाज़ में बांधना अलग चीज़ है। (5) हज़रत आइशा (रज़ि.) ने हज़रत अली का नाम इसलिये नहीं लिया कि हज़रत अब्बास (रज़ि.) के साथ वाला आदमी बदलता रहा है कभी फ़ज़्ल बिन अब्बास ने सहारा दिया। कभी उसामा बिन ज़ैद ने और कभी ज़ैद ने और कभी हज़रत अली ने। ये कहना दुरुस्त नहीं है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) हज़रत अली का नाम लेना नहीं चाहती थी या उनका ज़िक्रे ख़ैर करने से बचना चाहती थीं। पीछे ये बात गुज़र चुकी है कि एक साइल को मसला पूछने के लिये हज़रत आइशा (रज़ि.) ने हज़रत अली (रज़ि.) के पास अली का नाम लेकर भेजा था कि वो ये मसला बेहतर बता सकते हैं। मसला बताने की अहलियत रखना ख़ैर नहीं है? (6) आपके लिये बारी के मुताबिक़ हर बीवी के पास रहना लाज़िम नहीं था। उसके बावजूद आपने बारी का ख़्याल रखा और उसकी पाबंदी की यहाँ तक कि बीमारी की हालत में भी एक जगह रहने के लिये उनसे इजाज़त चाही।

(939) नबी (ﷺ) की ज़ौजा आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने इस मामले (बीमारी के दिनों में अबू बकर को इमाम बनाने के मामले) में रसूलुल्लाह (ﷺ) से (बार-बार पूछा) और मैं बार-बार आपसे सिर्फ़ इस बिना पर पूछ रही थी क्योंकि मेरा दिल ये नहीं मानता था कि लोग कभी उस शख़्स से मुहब्बत करेंगे जो आपका क़ायम मक़ाम होगा, आपकी जगह पर खड़ा होगा। क्योंकि मेरा ख़्याल ये था कि जो शख़्स आपकी जगह पर खड़ा होगा लोग उससे बदशगूनी लेंगे। इसलिये मैं चाहती थी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इमामत को अबू बकर से फेर दें (किसी और को इमाम मुक़र्रर करें)।

(सहीह बुख़ारी : 4445)

حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، حَدَّثَنِي عُقَيْلُ بْنُ خَالِدٍ، قَالَ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ، أَنَّ عَائِشَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ لَقَدْ رَاجَعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي ذَلِكَ وَمَا حَمَلَنِي عَلَى كَثْرَةِ مُرَاجَعَتِهِ إِلاَّ أَنَّهُ لَمْ يَقَعْ فِي قَلْبِي أَنْ يُحِبَّ النَّاسُ بَعْدَهُ رَجُلاً قَامَ مَقَامَهُ أَبَدًا وَإِلاَّ أَنِّي كُنْتُ أَرَى أَنَّهُ لَنْ يَقُومَ مَقَامَهُ أَحَدٌ إِلاَّ تَشَاءَمَ النَّاسُ بِهِ فَأَرَدْتُ أَنْ يَعْدِلَ ذَلِكَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ أَبِي بَكْرٍ .

(940) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे घर तशरीफ़ ले आये। आपने फ़रमाया, 'अबू बकर से कहो

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ رَافِعٍ - قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، - أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، قَالَ

الزُّهْرِيُّ وَأَخْبَرَنِي حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ لَمَّا دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَيْتِي قَالَ " مُرُوا أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ " . قَالَتْ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَبَا بَكْرٍ رَجُلٌ رَقِيقٌ إِذَا قَرَأَ الْقُرْآنَ لاَ يَمْلِكُ دَمْعَهُ فَلَوْ أَمَرْتَ غَيْرَ أَبِي بَكْرٍ . قَالَتْ وَاللَّهِ مَا بِي إِلاَّ كَرَاهِيَةُ أَنْ يَتَشَاءَمَ النَّاسُ بِأَوَّلِ مَنْ يَقُومُ فِي مَقَامِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ فَرَاجَعْتُهُ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا فَقَالَ " لِيُصَلِّ بِالنَّاسِ أَبُو بَكْرٍ فَإِنَّكُنَّ صَوَاحِبُ يُوسُفَ " .

कि वो लोगों को नमाज़ पढ़ायें।' तो मैंने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! अबू बकर नर्म दिल हैं। जब वो क़ुरआन पढ़ते हैं तो अपने आँसूओं पर क़ाबू नहीं पा सकते। ऐ काश! आप अबू बकर के सिवा किसी और को हुक्म फ़रमायें। आ़इशा (रज़ि.) फ़रमाती हैं, अल्लाह की क़सम! मेरा इससे सिर्फ़ ये मक़सद था कि लोग जो शख़्स सबसे पहले आपकी जगह खड़ा होगा उससे बदफ़ाली पकड़ते हुए उसको नापसंद करेंगे। (इसलिये अबू बकर इससे बच जायें) इसलिये मैंने दो या तीन बार अपनी बात पेश की तो आपने फ़रमाया, 'अबू बकर ही लोगों को नमाज़ पढ़ायें, तुम तो यूसुफ़ (अ़लै.) के साथ मामला करने वाली औ़रतें हो।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، وَوَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، - وَاللَّفْظُ لَهُ - قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ لَمَّا ثَقُلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم جَاءَ بِلاَلٌ يُؤْذِنُهُ بِالصَّلاَةِ فَقَالَ " مُرُوا أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ " . قَالَتْ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَبَا بَكْرٍ رَجُلٌ أَسِيفٌ إِنَّهُ مَتَى يَقُمْ مَقَامَكَ لاَ يُسْمِعِ النَّاسَ فَلَوْ أَمَرْتَ عُمَرَ . فَقَالَ " مُرُوا أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ " . قَالَتْ فَقُلْتُ لِحَفْصَةَ قُولِي لَهُ إِنَّ أَبَا بَكْرٍ رَجُلٌ

(941) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की तबीअ़त बोझल हो गई (आप बीमार हो गये) तो बिलाल (रज़ि.) आपको नमाज़ की इत्तिलाअ़ देने के लिये हाज़िर हुए तो आपने फ़रमाया, 'अबू बकर को कहो वो नमाज़ पढ़ायें।' मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! अबू बकर ग़मगीन इंसान हैं और वो जब आपकी जगह पर खड़े होंगे, लोगों को क़िरअत नहीं सुना सकेंगे, ऐ काश! आप उ़मर को हुक्म दें। तो आपने फ़रमाया, 'अबू बकर को कहो लोगों को नमाज़ पढ़ायें।' तो मैंने हफ़्सा (रज़ि.) से कहा, तुम नबी (ﷺ) को कहो,

أَسِيفٌ وَإِنَّهُ مَتَى يَقُمْ مَقَامَكَ لاَ يُسْمِعِ النَّاسَ فَلَوْ أَمَرْتَ عُمَرَ . فَقَالَتْ لَهُ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّكُنَّ لأَنْتُنَّ صَوَاحِبُ يُوسُفَ . مُرُوا أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ " . قَالَتْ فَأَمَرُوا أَبَا بَكْرٍ يُصَلِّي بِالنَّاسِ - قَالَتْ - فَلَمَّا دَخَلَ فِي الصَّلاَةِ وَجَدَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنْ نَفْسِهِ خِفَّةً فَقَامَ يُهَادَى بَيْنَ رَجُلَيْنِ وَرِجْلاَهُ تَخُطَّانِ فِي الأَرْضِ - قَالَتْ - فَلَمَّا دَخَلَ الْمَسْجِدَ سَمِعَ أَبُو بَكْرٍ حِسَّهُ ذَهَبَ يَتَأَخَّرُ فَأَوْمَأَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قُمْ مَكَانَكَ . فَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى جَلَسَ عَنْ يَسَارِ أَبِي بَكْرٍ - قَالَتْ - فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي بِالنَّاسِ جَالِسًا وَأَبُو بَكْرٍ قَائِمًا يَقْتَدِي أَبُو بَكْرٍ بِصَلاَةِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَيَقْتَدِي النَّاسُ بِصَلاَةِ أَبِي بَكْرٍ .

अबू बकर ग़मगीन इंसान है और जब वो आपकी जगह पर खड़ा होंगे, लोगों को क़िरअत नहीं सुना सकेंगे। तो अगर आप उमर को हुक्म दें तो बेहतर होगा? आपने फ़रमाया, 'तुम यूसुफ़ (अलै.) से मामला करने वाली औरतों की तरह हो। अबू बकर को कहो लोगों को नमाज़ पढ़ायें।' जब अबू बकर नमाज़ पढ़ाने लगे तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मर्ज़ में कुछ तख़फ़ीफ़ महसूस की तो आप उठे, दो आदमी आपको सहारा दे रहे थे और आपके पांव ज़मीन पर निशान बना रहे थे। इसी तरह आप मस्जिद में दाख़िल हो गये। जब अबू बकर ने आपकी आहट महसूस की, अबू बकर पीछे हटने लगे। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें इशारे से रोका। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) आगे बढ़े और अबू बकर की बायें जानिब बैठ गये। तो अबू बकर खड़े होकर नमाज़ पढ़ते रहे और रसूलुल्लाह (ﷺ) बैठकर नमाज़ पढ़ाते रहे। अबू बकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ की इक़्तिदा कर रहे थे और लोग अबू बकर (रज़ि.) के मुक़्तदी थे।

(सहीह बुख़ारी : 664, 712-713, इब्ने माजह : 1232)

फ़वाइद : (1) अबू बकर (रज़ि.) ने आपकी बीमारी के दिनों में 17 नमाज़ों में इमामत की है और बक़ौल अल्लामा अैनी, आपने तीन बार अबू बकर की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी है और सुनन व मसानीद की रिवायत के मुताबिक़ आपने आख़िरी नमाज़ (सोमवार की फ़ज्र) अबू बकर की इक़्तिदा में अदा की। आप दूसरी रकअत में शरीक हुए और एक रकअत बाद में अदा की। लेकिन ये रिवायात मुत्तफ़क़ अलैह रिवायत के मुनाफ़ी हैं। हज़रत अनस (रज़ि.) की रिवायत जो आगे आ रही है वो इस बात की

सरीह दलील है कि नबी (ﷺ) ने आख़िरी नमाज़ अबू बकर की इक़्तिदा में अदा नहीं की। **(2)** आप (ﷺ) का अबू बकर (रज़ि.) की बायें जानिब बैठना इस बात की दलील है कि आप इमाम थे। ये हफ़्ता या इतवार की ज़ुहर की नमाज़ थी। इससे मालूम होता है नमाज़ में मुकब्बिर बनाना जाइज़ है। **(3)** अन्तुन्न सवाहिबे यूसुफ़ : अन्तुन्न से अगर सिर्फ़ आइशा (रज़ि.) मुराद हों तो फिर सवाहिब से मुराद मशहूर क़ौल के मुताबिक़ ज़ुलैख़ा होगी और मक़सद ये होगा, जिस तरह ज़ुलैख़ा ने बज़ाहिर औरतों की दावत, उनके इक्राम व तौक़ीर के लिये की थी और असल मक़सद ये था कि वो यूसुफ़ (अलै.) का नज़ारा कर लें और इश्क़ व मुहब्बत में उसे मअज़ूर समझें। इसी तरह आइशा (रज़ि.) ने इज़हार तो इस बात का किया कि अबू बकर रन्जीदा व ग़मगीन और नर्म दिल हैं। कसरते बुका की बिना पर मुक़्तदियों को क़िरअत नहीं सुना सकेंगे और असल मक़सद ये था कि वो आपकी जगह खड़े होकर बदशगूनी और नहूसत का निशाना बनकर लोगों की नज़रों से गिर न जायें।

और अगर अन्तुन्न से मुराद हफ़्सा (रज़ि.) और आइशा (रज़ि.) हों तो सवाहिब से मुराद वो औरतें होंगी जिनको ज़ुलैख़ा ने दावत पर बुलाया था, जिनके बारे में हज़रत यूसुफ़ ने फ़रमाया था, 'अगर तू उनके चरित्र को मुझसे दूर न कर देगा तो मैं उनकी बात की तरफ़ माइल हो जाऊँगा।'

कि बक़ौल इब्ने अब्दुस्सलाम, औरतें बज़ाहिर इम्रअतुल अज़ीज़ को ज़ज्रो-तौबीख़ कर रही थी और दरहक़ीक़त वो ख़ुद उन पर फ़रेफ़्ता हो चुकी थीं और उनको अपनी तरफ़ माइल करना चाहती थीं। गोया ज़ाहिर व बातिन में फ़र्क़ था। क्योंकि हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) ने भी बज़ाहिर हज़रत आइशा (रज़ि.) के अल्फ़ाज़ दोहराये थे लेकिन उनका असली मक़सद ये था कि इसी तरह मेरे बाप को आपकी जाँनशीनी का शर्फ़ व इम्तियाज़ हासिल होगा और वो इस तक़द्दुम व फ़ज़ीलत की बिना पर, इमामे कुबरा के भी हक़दार ठहरेंगे। जो आपका इमामते नमाज़ में जाँनशीन होगा, वही इमामते हुक्मरानी में भी आपकी जगह लेगा और ये मक़सद भी हो सकता है कि तुम उन औरतों की तरह इसरार कर रही हो और मुझे मेरे इस इरादे से हटाना चाहती हो कि इमाम अबू बकर बनें।

حَدَّثَنَا مِنْجَابُ بْنُ الْحَارِثِ التَّمِيمِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ مُسْهِرٍ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ وَفِي حَدِيثِهِمَا لَمَّا مَرِضَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَرَضَهُ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ . وَفِي حَدِيثِ ابْنِ

(942) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मौत की बीमारी में मुब्तला हुए। इब्ने मुस्हिर कहते हैं तो रसूलुल्लाह (ﷺ) को लाया गया यहाँ तक कि अबू बकर (रज़ि.) के पहलू में बिठा दिया गया। रसूलुल्लाह (ﷺ) लोगों को जमाअत कराने लगे और अबू बकर (रज़ि.) उनको तकबीर

مُسْهِرٍ فَأُتِيَ بِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى أُجْلِسَ إِلَى جَنْبِهِ وَكَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي بِالنَّاسِ وَأَبُو بَكْرٍ يُسْمِعُهُمُ التَّكْبِيرَ . وَفِي حَدِيثِ عِيسَى فَجَلَسَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي وَأَبُو بَكْرٍ إِلَى جَنْبِهِ وَأَبُو بَكْرٍ يُسْمِعُ النَّاسَ .

सुनाने लगे और ईसा की रिवायत में है। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) बैठकर नमाज़ पढ़ाने लगे और अबू बकर आपके पहलू में थे और लोगों को तकबीर सुना रहे थे।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، عَنْ هِشَامٍ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، - وَأَلْفَاظُهُمْ مُتَقَارِبَةٌ - قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَبَا بَكْرٍ أَنْ يُصَلِّيَ بِالنَّاسِ فِي مَرَضِهِ فَكَانَ يُصَلِّي بِهِمْ . قَالَ عُرْوَةُ فَوَجَدَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنْ نَفْسِهِ خِفَّةً فَخَرَجَ وَإِذَا أَبُو بَكْرٍ يَؤُمُّ النَّاسَ فَلَمَّا رَآهُ أَبُو بَكْرٍ اسْتَأْخَرَ فَأَشَارَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَىْ كَمَا أَنْتَ فَجَلَسَ رَسُولُ اللَّهِ حِذَاءَ أَبِي بَكْرٍ إِلَى جَنْبِهِ . فَكَانَ أَبُو بَكْرٍ يُصَلِّي بِصَلاَةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَالنَّاسُ يُصَلُّونَ بِصَلاَةِ أَبِي بَكْرٍ .

(943) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी बीमारी में अबू बकर (रज़ि.) को हुक्म दिया कि वो लोगों को नमाज़ पढ़ायें तो वो उनको जमाअत कराने लगे। उरवह बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने आपको आराम में महसूस किया तो आप बाहर तशरीफ़ लाये। अबू बकर उस वक़्त जमाअत करवा रहे थे। अबू बकर ने आपको देखा तो पीछे हटने लगे तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें इशारा फ़रमाया। अपनी हालत पर रहो। रसूलुल्लाह (ﷺ) अबू बकर के बराबर उनके पहलू में बैठ गये तो अबू बकर नमाज़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) की इक़्तिदा करने लगे और लोग अबू बकर की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ रहे थे।

(सहीह बुख़ारी : 683, इब्ने माजह : 1233)

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَحَسَنٌ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، - قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنِي وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - وَهُوَ ابْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ -

(944) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की बीमारी में जिसमें आपने वफ़ात पाई, अबू बकर जमाअत कराते थे। यहाँ तक कि जब

وَحَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ أَبَا بَكْرٍ، كَانَ يُصَلِّي لَهُمْ فِي وَجَعِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ حَتَّى إِذَا كَانَ يَوْمُ الاِثْنَيْنِ - وَهُمْ صُفُوفٌ فِي الصَّلاَةِ - كَشَفَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ سِتْرَ الْحُجْرَةِ فَنَظَرَ إِلَيْنَا وَهُوَ قَائِمٌ كَأَنَّ وَجْهَهُ وَرَقَةُ مُصْحَفٍ . ثُمَّ تَبَسَّمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ضَاحِكًا - قَالَ - فَبُهِتْنَا وَنَحْنُ فِي الصَّلاَةِ مِنْ فَرَحٍ بِخُرُوجِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَنَكَصَ أَبُو بَكْرٍ عَلَى عَقِبَيْهِ لِيَصِلَ الصَّفَّ وَظَنَّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ خَارِجٌ لِلصَّلاَةِ فَأَشَارَ إِلَيْهِمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِيَدِهِ أَنْ أَتِمُّوا صَلاَتَكُمْ - قَالَ - ثُمَّ دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَأَرْخَى السِّتْرَ - قَالَ - فَتُوُفِّيَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنْ يَوْمِهِ ذَلِكَ .

सोमवार का दिन आ पहुँचा और सहाबा किराम (रज़ि.) सफ़ों में नमाज़ पढ़ रहे थे, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हुज्रे का पर्दा उठाया। फिर खड़े होकर हमारी तरफ़ देखा गोया कि आपका रुख़े अनवर (हुस्नो-जमाल और सफ़ाई में) मुस्हफ़ का वरक़ था। फिर आप मुस्कुरा कर हँसने लगे। हम नबी (ﷺ) के निकलने की ख़ुशी में मब्हूत हो गये, हालांकि हम नमाज़ में थे। अबू बकर (रज़ि.) उलटे पाँव लौटकर सफ़ में शरीक होना चाहते थे, उन्होंने ख़याल किया कि नबी (ﷺ) नमाज़ के लिये तशरीफ़ ला रहे हैं तो नबी (ﷺ) ने अपने हाथ के इशारे से, सहाबा किराम को अपनी नमाज़ मुकम्मल करने के लिये कहा। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) वापस हुज्रे में दाख़िल हो गये और पर्दा लटका दिया और उसी दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) वफ़ात पा गये।

وَحَدَّثَنِيهِ عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ آخِرُ نَظْرَةٍ نَظَرْتُهَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ كَشَفَ السِّتَارَةَ يَوْمَ الاِثْنَيْنِ بِهَذِهِ الْقِصَّةِ وَحَدِيثُ صَالِحٍ أَتَمُّ وَأَشْبَعُ .

(945) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि आख़िरी बार जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ देखा, सोमवार के दिन आपने हुज्रे का पर्दा उठाया ऊपर वाला वाक़िया बयान किया। सालेह की हदीस़ कामिल और सियर हासिल है।

(नसाई : 3/1830, इब्ने माजह : 1624)

फ़ायदा : हज़रत अनस (रज़ि.) ने नबी (ﷺ) की तरफ़ नमाज़ में तवज्जह और मशग़ूलियत को बुहित्ना से ताबीर किया है और बुख़ारी शरीफ़ में इसकी जगह फ़हिम्ना अन नफ़तित्रा मिनल फ़रहि बिरुयतिन्नबी (ﷺ) के अल्फ़ाज़ हैं कि हमें इतनी ख़ुशी हुई कि ख़तरा पैदा हो गया कि कहीं हम सब

आपको देखते ही मशग़ूल न हो जायें और नमाज़ की तरफ़ तवज्जह न रहे। आपके दीदार और रूयत में मशग़ूल होकर नमाज़ की तरफ़ तवज्जह के हट जाने को फ़ित्ने से ताबीर किया है। तो अगर सिराते मुस्तक़ीम जो शाह इस्माईल शहीद की नहीं है बल्कि इमाम अहमद शहीद के मल्फ़ूज़ात हैं, में अगर आपके तसव्वुर को या किसी शैख़ के तसव्वुर को लाने से, इस बिना पर रोका गया है कि उससे नमाज़ से तवज्जह हट जाती है और गावख़र से कोई अक़ीदत व मुहब्बत का रिश्ता नहीं होता कि इंसान उनमें महव होकर नमाज़ से ग़ाफ़िल हो जाये। इसलिये ये क्योंकर क़ाबिले ऐतराज़ हो सकता है। हालांकि उन हज़रात का अपना मौक़िफ़ ये है, अगर नमाज़ में क़ुरआन देख कर पढ़े तो नमाज़ फ़ासिद हो जायेगी, लेकिन अगर औरत की शर्मगाह जिन्सी जज़्बे के साथ देखे तो नमाज़ फ़ासिद नहीं होगी। (अल्इश्बाह वन्नज़ाइर इब्ने नजीम)

अगर क़ुरआन देखने से ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ मुतास्सिर होता है और नमाज़ फ़ासिद हो जाती है तो क्या आपके तसव्वुर से नमाज़ पर असर नहीं पड़ेगा? और शायद औरत की शर्मगाह जिन्सी जज़्बे से देखना, उन हज़रात के नज़दीक इंसान को मुतास्सिर करता और अगर गावख़र के साथ आपका तज़्किरा नामुनासिब है तो क़ुरआन के साथ फ़र्जे मिरअत (औरत की शर्मगाह) का तज़्किरा तौहीन आमेज़ क्यों नहीं?

(946) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، جَمِيعًا عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، قَالَ لَمَّا كَانَ يَوْمُ الاِثْنَيْنِ . بِنَحْوِ حَدِيثِهِمَا .

(947) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) (बीमारी के दिनों में) तीन दिन हमारे पास तशरीफ़ नहीं लाये (उन ही दिनों में) एक दिन नमाज़ खड़ी की गई, अबू बकर (रज़ि.) आगे बढ़ने लगे, नबी (ﷺ) ने (हुज्रे मुबारक का) पर्दा उठाया। जब हमारे सामने नबी (ﷺ) का रुख़े अनवर ज़ाहिर हुआ। आपके रूए (चेहरे) मुबारक से ज़्यादा हसीन व पसन्दीदा मन्ज़र हमने कभी नहीं देखा था।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَهَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، قَالَ سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ، قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ لَمْ يَخْرُجْ إِلَيْنَا نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثَلاَثًا فَأُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَذَهَبَ أَبُو بَكْرٍ يَتَقَدَّمُ فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِالْحِجَابِ فَرَفَعَهُ فَلَمَّا وَضَحَ لَنَا وَجْهُ نَبِيِّ اللَّهِ

صلى الله عليه وسلم مَا نَظَرْنَا مَنْظَرًا قَطُّ كَانَ أَعْجَبَ إِلَيْنَا مِنْ وَجْهِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم حِينَ وَضَحَ لَنَا - قَالَ - فَأَوْمَأَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِيَدِهِ إِلَى أَبِي بَكْرٍ أَنْ يَتَقَدَّمَ وَأَرْخَى نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الْحِجَابَ فَلَمْ نَقْدِرْ عَلَيْهِ حَتَّى مَاتَ .

फिर आपने अबू बकर (रज़ि.) को हाथ के इशारे से आगे बढ़ने के लिये फ़रमाया और आपने पर्दा गिरा दिया। फिर आपकी वफ़ात तक हम आपको न देख सके।

(सहीह बुख़ारी : 681)

फ़ायदा : इस हदीस़ से साबित होता है कि आपने सोमवार की सुबह की नमाज़ अबू बकर के पीछे नहीं पढ़ी। अगर आप दूसरी रकअ़त बाद में अदा फ़रमाते तो यक़ीनन हज़रत अनस (रज़ि.) आपको देख लेते और ये न कहते, लम नक़्दिर अ़लैहि हत्ता मात, हम आपको मौत तक न देख सके और इससे ये भी साबित हुआ आप वफ़ात पा चुके हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ، عَنْ زَائِدَةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ مَرِضَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَاشْتَدَّ مَرَضُهُ فَقَالَ " مُرُوا أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ " . فَقَالَتْ عَائِشَةُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَبَا بَكْرٍ رَجُلٌ رَقِيقٌ مَتَى يَقُمْ مَقَامَكَ لاَ يَسْتَطِعْ أَنْ يُصَلِّيَ بِالنَّاسِ فَقَالَ " مُرِي أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ فَإِنَّكُنَّ صَوَاحِبُ يُوسُفَ " . قَالَ فَصَلَّى بِهِمْ أَبُو بَكْرٍ حَيَاةَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(948) हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बीमार पड़ गये और आपकी बीमारी ने शिद्दत इख़्तियार कर ली तो आपने फ़रमाया, 'अबू बकर से कहो कि वो लोगों को नमाज़ पढ़ाये।' इस पर आइशा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, वो नर्म दिल हैं। जब आपकी जगह खड़े होंगे तो वो लोगों को नमाज़ नहीं पढ़ा सकेंगे। आपने फ़रमाया, 'अबू बकर को कहो, वो लोगों को नमाज़ पढ़ाये। तुम तो यूसुफ़ (अ़लै.) के साथ मामला करने वालियों की तरह हो।' तो अबू बकर (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िन्दगी में लोगों को नमाज़ पढ़ाते रहे।

(सहीह बुख़ारी : 3385,678)

باب تَقْدِيمِ الْجَمَاعَةِ مَنْ يُصَلِّي بِهِمْ إِذَا تَأَخَّرَ الإِمَامُ وَلَمْ يَخَافُوا مَفْسَدَةً بِالتَّقْدِيمِ

बाब 22 : जब इमाम की आमद में ताख़ीर हो जाये और किसी को आगे करने में फ़ित्ना व फ़साद का ख़ौफ़ न हो तो लोगों का किसी को जमाअत के लिये आगे कर देना जाइज़ है

حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ذَهَبَ إِلَى بَنِي عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ لِيُصْلِحَ بَيْنَهُمْ فَحَانَتِ الصَّلاَةُ فَجَاءَ الْمُؤَذِّنُ إِلَى أَبِي بَكْرٍ فَقَالَ أَتُصَلِّي بِالنَّاسِ فَأُقِيمُ قَالَ نَعَمْ . قَالَ فَصَلَّى أَبُو بَكْرٍ فَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَالنَّاسُ فِي الصَّلاَةِ فَتَخَلَّصَ حَتَّى وَقَفَ فِي الصَّفِّ فَصَفَّقَ النَّاسُ - وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ لاَ يَلْتَفِتُ فِي الصَّلاَةِ - فَلَمَّا أَكْثَرَ النَّاسُ التَّصْفِيقَ الْتَفَتَ فَرَأَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأَشَارَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنِ امْكُثْ مَكَانَكَ فَرَفَعَ أَبُو بَكْرٍ يَدَيْهِ فَحَمِدَ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ عَلَى مَا أَمَرَهُ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنْ ذَلِكَ ثُمَّ اسْتَأْخَرَ أَبُو بَكْرٍ حَتَّى اسْتَوَى فِي الصَّفِّ وَتَقَدَّمَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فَصَلَّى ثُمَّ

(949) हज़रत सहल बिन सअ़द साइदी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बनू अ़म्र बिन औफ़ के यहाँ उनके दरम्यान सुलह करवाने के लिये तशरीफ़ ले गये। तो नमाज़ का वक़्त हो गया। इस पर मुअज़्ज़िन अबू बकर (रज़ि.) के पास आया और कहा, क्या आप जमाअ़त करवायेंगे, तो मैं तकबीर कहूँ? अबू बकर ने कहा, हाँ! चुनाँचे अबू बकर (रज़ि.) ने नमाज़ शुरू कर दी। इतने में रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ ले आये और लोग नमाज़ पढ़ रहे थे। आप सफ़ों से गुज़र कर पहली सफ़ में पहुँचे। इस पर लोगों ने एक हाथ दूसरे पर मारना शुरू किया और अबू बकर अपनी नमाज़ में किसी तरफ़ तवज्जह नहीं देते थे। जब लोगों ने मुसलसल ताली बजाई तो वो मुतवज्जह हुए और रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें इशारे से अपनी जगह खड़ा रहने के लिये कहा। इस पर अबू बकर (रज़ि.) ने अपने दोनों हाथ उठाकर इस बात पर अल्लाह का शुक्रिया अदा किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनको इमामत का

انْصَرَفَ فَقَالَ " يَا أَبَا بَكْرٍ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَثْبُتَ إِذْ أَمَرْتُكَ " . قَالَ أَبُو بَكْرٍ مَا كَانَ لاِبْنِ أَبِي قُحَافَةَ أَنْ يُصَلِّيَ بَيْنَ يَدَىْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا لِي رَأَيْتُكُمْ أَكْثَرْتُمُ التَّصْفِيقَ مَنْ نَابَهُ شَىْءٌ فِي صَلاَتِهِ فَلْيُسَبِّحْ فَإِنَّهُ إِذَا سَبَّحَ الْتُفِتَ إِلَيْهِ وَإِنَّمَا التَّصْفِيحُ لِلنِّسَاءِ " .

ऐज़ाज़ बख़्शा। फिर पीछे हटकर सफ़ में सीधे खड़े हो गये और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आगे बढ़कर नमाज़ पढ़ाई। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया, 'ऐ अबू बकर! मेरे हुक्म देने के बाद अपनी जगह टिके रहने से किस चीज़ ने रोक दिया तुम्हें?' अबू बकर (रज़ि.) ने जवाब दिया, 'अबू क़हाफ़ा के बेटे के लिये ज़ेबा न था कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने (मौजूदगी में) जमाअत कराये। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सहाबा किराम (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, 'अजीब बात हैं! मैंने देखा कि तुम लोग बकसरत तालियाँ बजा रहे थे (याद रखो!) जब नमाज़ में कोई बात पेश आ जाये तो सुब्हानअल्लाह कहो। जब वो सुब्हानअल्लाह कहेगा तो उसकी तरफ़ तवज्जह की जायेगी और हाथ पर हाथ मारना तो औरतों के लिये है।'

(सहीह बुख़ारी : 684)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) तख़ल्लस : निजात पाना, मुन्तक़िल होना, यहाँ मुराद है गुज़रकर आगे पहुँचना।

(2) सफ़्फ़क़ तस्फ़ीक़ा : एक हाथ को दूसरे हाथ पर मारना, ताली बजाना, औरतें एक हाथ दूसरे हाथ की पुश्त पर मारेंगी। **(3) नाबहू :** नाब यनूब नौबन पेश आना। **(4) नाबहू अम्रुन :** कोई अम्र पेश आ गया। **(6) अत्तस्फ़ीह :** ये तस्फ़ीक़ ताली बजाना के हम मानी है।

फ़वाइद : (1) अगर किसी वजह से इमाम न आ सके तो उसकी जगह किसी और क़ाबिले एहतिराम शख़्सियत को इमाम बनाया जा सकता है। **(2)** नमाज़ में अगर कोई क़ाबिले तवज्जह या लायक़े इल्तिफ़ात बात पेश आ जाये तो इमाम को मुतवज्जह करने के लिये सुब्हानअल्लाह कहा जायेगा। **(3)** रसूलुल्लाह (ﷺ) की आमद पर सहाबा किराम (रज़ि.) ने हज़रत अबू बकर (रज़ि.) को मुतवज्जह किया और आपके एहतिराम व तौक़ीर की ख़ातिर, अबू बकर (रज़ि.) पीछे हट गये तो

इससे ये इस्तिदलाल करना कि जब नमाज़ में आपका ज़िक्र या नाम आये तो आपका तसव्वुर तौक़ीर से करना लाज़िम है। क़ियास मअ़ल फ़ारिक़ है अगर आपका नमाज़ में तसव्वुर तौक़ीर के लिये लाज़िम होता तो हज़रत अनस (रज़ि.) नमाज़ में आपकी तरफ़ तवज्जह और इश्तिग़ाल को इफ़्तिनान से ताबीर न करते और सहाबा किराम (रज़ि.) इसका एहतिमाम फ़रमाते।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ أَبِي حَازِمٍ - وَقَالَ قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - وَهُوَ ابْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقَارِيُّ - كِلاَهُمَا عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، بِمِثْلِ حَدِيثِ مَالِكٍ . وَفِي حَدِيثِهِمَا فَرَفَعَ أَبُو بَكْرٍ يَدَيْهِ فَحَمِدَ اللَّهَ وَرَجَعَ الْقَهْقَرَى وَرَاءَهُ حَتَّى قَامَ فِي الصَّفِّ .

(950) अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ और याक़ूब दोनों अबू हाज़िम की सहल बिन सईद (रज़ि.) से रिवायत बयान करते हैं और उनकी हदीस़ में ये है कि अबू बकर ने अपने दोनों हाथ बुलंद किये। अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा किया और वापस उलटे पाँव लौटकर सफ़ में खड़े हो गये।

(सहीह बुख़ारी : 1234, नसाई : 2/78-79)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بَزِيعٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ، قَالَ ذَهَبَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصْلِحُ بَيْنَ بَنِي عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ . بِمِثْلِ حَدِيثِهِمْ وَزَادَ فَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَخَرَقَ الصُّفُوفَ حَتَّى قَامَ عِنْدَ الصَّفِّ الْمُقَدَّمِ . وَفِيهِ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَجَعَ الْقَهْقَرَى .

(951) हज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) बनू अ़म्र बिन औ़फ़ के दरम्यान सुलह करवाने तशरीफ़ ले गये जबकि मज़्कूरा बाला रावियों ने बयान किया है और उसमें ये इज़ाफ़ा है, रसूलुल्लाह (ﷺ) आये और सफ़ों को चीरकर पहली सफ़ में शरीक हो गये और अबू बकर (रज़ि.) उलटे पाँव पीछे लौट आये।

(नसाई : 3/3-4)

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، جَمِيعًا عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ، قَالَ ابْنُ رَافِعٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ حَدِيثِ، عَبَّادِ بْنِ زِيَادٍ أَنَّ عُرْوَةَ بْنَ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ

(952) हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा (रज़ि.) से रिवायत है कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ग़ज़्वए तबूक में शरीक हुए और रसूलुल्लाह (ﷺ) क़ज़ाए हाजत के लिये बाहर निकले और मैं सुबह की नमाज़ से पहले आपके साथ पानी का बर्तन उठाकर चला। जब रसूलुल्लाह

(ﷺ) मेरे पास लौटे तो मैं बर्तन (लोटा) से आपके हाथों पर पानी डालने लगा। आपने अपने दोनों हाथ तीन बार धोये। फिर अपना चेहरा धोया। उसके बाद अपने बाज़ूओं से जुब्बा उतारने लगे, आस्तीनें तंग निकलीं तो आपने अपने हाथ जुब्बे के अंदर कर लिये यहाँ तक कि अपने बाज़ू जुब्बे के नीचे से निकाल लिये और उनको कोहनियों समेत धोया। फिर मोज़ों के ऊपर मसह किया। फिर आप चल पड़े और मैं भी आपके साथ चल पड़ा। (हमने पहुँचकर) लोगों को इस हाल में पाया कि वो अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) को आगे कर चुके थे। उन्होंने नमाज़ पढ़ाई और आपको एक रकअ़त मिली। आपने दूसरी रकअ़त लोगों के साथ अदा की। तो जब अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने सलाम फेरा, रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी नमाज़ मुकम्मल करने के लिये खड़े हो गये। मुसलमान इससे घबरा गये (परेशान हो गये) और उन्होंने कस़रत से सुब्हानअल्लाह कहना शुरू कर दिया। जब नबी (ﷺ) ने अपनी नमाज़ पूरी कर ली तो उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, 'तुमने अच्छा किया।' या फ़रमाया, 'तुमने ठीक किया।' आपने उनके वक़्त पर नमाज़ पढ़ने को क़ाबिले रश्क क़रार दिया।

(953) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं उसमें है

الْمُغِيرَةَ بْنَ شُعْبَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ، غَزَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم تَبُوكَ - قَالَ الْمُغِيرَةُ - فَتَبَرَّزَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قِبَلَ الْغَائِطِ فَحَمَلْتُ مَعَهُ إِدَاوَةً قَبْلَ صَلاَةِ الْفَجْرِ فَلَمَّا رَجَعَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلَىَّ أَخَذْتُ أُهَرِيقُ عَلَى يَدَيْهِ مِنَ الإِدَاوَةِ وَغَسَلَ يَدَيْهِ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ غَسَلَ وَجْهَهُ ثُمَّ ذَهَبَ يُخْرِجُ جُبَّتَهُ عَنْ ذِرَاعَيْهِ فَضَاقَ كُمَّا جُبَّتِهِ فَأَدْخَلَ يَدَيْهِ فِي الْجُبَّةِ حَتَّى أَخْرَجَ ذِرَاعَيْهِ مِنْ أَسْفَلِ الْجُبَّةِ . وَغَسَلَ ذِرَاعَيْهِ إِلَى الْمِرْفَقَيْنِ ثُمَّ تَوَضَّأَ عَلَى خُفَّيْهِ ثُمَّ أَقْبَلَ - قَالَ الْمُغِيرَةُ - فَأَقْبَلْتُ مَعَهُ حَتَّى نَجِدُ النَّاسَ قَدْ قَدَّمُوا عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ فَصَلَّى لَهُمْ فَأَدْرَكَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِحْدَى الرَّكْعَتَيْنِ فَصَلَّى مَعَ النَّاسِ الرَّكْعَةَ الآخِرَةَ فَلَمَّا سَلَّمَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُتِمُّ صَلاَتَهُ فَأَفْزَعَ ذَلِكَ الْمُسْلِمِينَ فَأَكْثَرُوا التَّسْبِيحَ فَلَمَّا قَضَى النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم صَلاَتَهُ أَقْبَلَ عَلَيْهِمْ ثُمَّ قَالَ " أَحْسَنْتُمْ " . أَوْ قَالَ " قَدْ أَصَبْتُمْ " . يَغْبِطُهُمْ أَنْ صَلَّوُا الصَّلاَةَ لِوَقْتِهَا .

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَالْحُلْوَانِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، حَدَّثَنِي ابْنُ

شِهَابٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ حَمْزَةَ بْنِ الْمُغِيرَةِ، نَحْوَ حَدِيثِ عَبَّادٍ قَالَ الْمُغِيرَةُ فَأَرَدْتُ تَأْخِيرَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " دَعْهُ " .

कि हज़रत मुग़ीरह (रज़ि.) ने कहा, मैंने अब्दुर्रहमान को पीछे हटाना चाहा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इसे छोड़ो।' (नमाज़ पढ़ाने दो)।

मुफ़रदातुल हदीस़ : यग़्बितुहुम : अगर सलास़ी मुजर्रद से हो तो मानी होगा आपने वक़्त पर नमाज़ पढ़ने को अच्छा जाना और अगर सलास़ी मज़ीद फ़ीह से हो तो मानी होगा, उनके काम को क़ाबिले रश्क क़रार दिया।

फ़ायदा : अगर इमामे रातिब (प्रमानेन्ट इमाम) किसी वजह से लेट हो जाये और उसकी आमद का पता न हो तो फिर उसकी जगह दूसरे आदमी को इमामत के लिये खड़ा किया जा सकता है। नमाज़े फ़ज्र की चूंकि एक रकअत हो चुकी थी, इसलिये आप नमाज़ के लिये आगे नहीं बढ़े और हज़रत मुग़ीरह को अब्दुर्रहमान के पीछे हटाने से मना कर दिया और अबू बकर ने चूंकि अभी नमाज़ की शुरूआत की थी, इसलिये आप सफ़ों को चीर कर आगे तशरीफ़ ले गये और अबू बकर (रज़ि.) के पीछे हट जाने पर नमाज़ पढ़ाई।

باب تَسْبِيحِ الرَّجُلِ وَتَصْفِيقِ الْمَرْأَةِ إِذَا نَابَهُمَا شَىْءٌ فِي الصَّلاَةِ

बाब 23 : नमाज़ में अगर कोई बात पेश आ जाये तो मर्द सुब्हानअल्लाह कहें और औरत हाथ की पुश्त पर हाथ मारे

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم ح وَحَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مَعْرُوفٍ، وَحَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، وَأَبُو

(954) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मर्दों को सुब्हान अल्लाह कहना चाहिये और औरतों को हाथ पर हाथ मार कर इमाम को मुतनब्बह करना चाहिये।' हरमलह ने अपनी रिवायत में ये इज़ाफ़ा किया कि इब्ने शिहाब ने कहा, मैंने अहले इल्म को देखा, वो तस्बीह कहते थे और इशारा करते थे।

سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُمَا سَمِعَا أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " التَّسْبِيحُ لِلرِّجَالِ وَالتَّصْفِيقُ لِلنِّسَاءِ " . زَادَ حَرْمَلَةُ فِي رِوَايَتِهِ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ وَقَدْ رَأَيْتُ رِجَالاً مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ يُسَبِّحُونَ وَيُشِيرُونَ .

(सहीह बुख़ारी : 1203, अबू दाऊद : 939, इब्ने माजह : 1034, नसाई : 3/11)

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ يَعْنِي ابْنَ عِيَاضٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ .

(955) इमाम साहब अलग-अलग उस्तादों से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ . بِمِثْلِهِ وَزَادَ " فِي الصَّلاَةِ " .

(956) हम्माम से अबू हुरैरह (रज़ि.) की नबी (ﷺ) से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की है और उसमें फ़िस्सलात (नमाज़ में) का इज़ाफ़ा किया।

फ़ायदा : अगर नमाज़ में इमाम से कहीं भूल-चूक हो जाये तो उसको आगाह करने के लिये मर्द सुब्हानअल्लाह कहेंगे और अगर औरत को ये काम करना पड़े तो आवाज़ बुलंद नहीं कर सकती। इसलिये दायें हाथ की हथेली को बायें हाथ की पुश्त पर मारकर इशारा करेगी।

باب الأَمْرِ بِتَحْسِينِ الصَّلاَةِ وَإِتْمَامِهَا وَالْخُشُوعِ فِيهَا

बाब 24 : नमाज़ को अच्छी तरह मुकम्मल और ख़ुशूअ (आजिज़ी) से पढ़ने का हुक्म

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ الْهَمْدَانِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنِ الْوَلِيدِ، - يَعْنِي ابْنَ كَثِيرٍ - حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيُّ،

(957) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें नमाज़ पढ़ाई। फिर सलाम फेरकर फ़रमाया, 'ऐ फ़लाँ! तुम

عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَوْمًا ثُمَّ انْصَرَفَ فَقَالَ " يَا فُلاَنُ أَلاَ تُحْسِنُ صَلاَتَكَ أَلاَ يَنْظُرُ الْمُصَلِّي إِذَا صَلَّى كَيْفَ يُصَلِّي فَإِنَّمَا يُصَلِّي لِنَفْسِهِ إِنِّي وَاللَّهِ لأُبْصِرُ مَنْ وَرَائِي كَمَا أُبْصِرُ مَنْ بَيْنَ يَدَىَّ " .

नमाज़ अच्छी तरह क्यों नहीं पढ़ते? क्या नमाज़ी नमाज़ पढ़ते वक़्त ये नहीं देखता कि वो नमाज़ कैसे पढ़ता है? वो अपने लिये ही नमाज़ पढ़ता है। अल्लाह की क़सम! मैं पीछे से भी ऐसे ही देखता हूँ जैसे मैं अपने आगे से देखता हूँ।'

(नसाई : 2/118)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " هَلْ تَرَوْنَ قِبْلَتِي هَا هُنَا فَوَاللَّهِ مَا يَخْفَى عَلَىَّ رُكُوعُكُمْ وَلاَ سُجُودُكُمْ إِنِّي لأَرَاكُمْ وَرَاءَ ظَهْرِي " .

(958) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या तुम्हारा ख़्याल है, मेरा रुख़ इधर ही है? अल्लाह की क़सम! मुझ पर न तुम्हारा रुकूअ मख़्फ़ी है और न तुम्हारा सज्दा। यक़ीनन मैं तुम्हें अपने पीछे (पुश्त) से भी देखता हूँ।'

(सहीह बुख़ारी : 418,741)

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ قَتَادَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَقِيمُوا الرُّكُوعَ وَالسُّجُودَ فَوَاللَّهِ إِنِّي لأَرَاكُمْ مِنْ بَعْدِي - وَرُبَّمَا قَالَ مِنْ بَعْدِ ظَهْرِي - إِذَا رَكَعْتُمْ وَسَجَدْتُمْ " .

(959) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'रुकूअ और सज्दा पूरी तरह किया करो। अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हें अपने पीछे से देखता हूँ।' और कई बार ये कहा, 'जब तुम रुकूअ और सज्दा करते हो मैं तुम्हें अपनी पुश्त के पीछे से देखता हूँ।'

(सहीह बुख़ारी : 742)

حَدَّثَنِي أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ، حَدَّثَنَا مُعَاذٌ، - يَعْنِي ابْنَ هِشَامٍ - حَدَّثَنِي أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ سَعِيدٍ، كِلاَهُمَا عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ نَبِيَّ

(960) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'रुकूअ और सुजूद कामिल तरीक़े से किया करो, अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हें अपनी पुश्त के पीछे से देखता हूँ। जब तुम रुकूअ करते हो

اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَتِمُّوا الرُّكُوعَ وَالسُّجُودَ فَوَاللَّهِ إِنِّي لأَرَاكُمْ مِنْ بَعْدِ ظَهْرِي إِذَا مَا رَكَعْتُمْ وَإِذَا مَا سَجَدْتُمْ " . وَفِي حَدِيثِ سَعِيدٍ " إِذَا رَكَعْتُمْ وَإِذَا سَجَدْتُمْ " .

और जब तुम सज्दा करते हो।' और सईद की हदीस़ में इज़ा के बाद दोनों जगह 'मा' का लफ़्ज़ नहीं है।

फ़ायदा : अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को नमाज़ पढ़ाते वक़्त पीछे से देखने की ताक़त इस तरह इनायत फ़रमाई थी जिस तरह आम इंसानों को सामने से देखने की क़ुव्वत बख़्शी है और ये देखना हक़ीक़तन था। इसमें किसी तावील की ज़रूरत नहीं है। लेकिन इस रिवायत से ये इस्तिदलाल करना कि आप हर वक़्त हर छः जानिब में देखते थे और अब भी देख रहे हैं, ग़लत है। क्योंकि इन अहादीस़ का तअल्लुक़ सिर्फ़ नमाज़ से है। आगे-पीछे से नहीं और जमाअत आप दुनियवी ज़िन्दगी में करवाते थे, अब आपका इस दुनिया से तअल्लुक़ ख़त्म हो चुका है। बरज़ख़ी ज़िन्दगी हासिल है कि उसके लिये आपके 'शहीद' होने की दलील बनाना कि आप क़यामत के दिन उम्मत के बारे में गवाही देंगे, सहीह नहीं है। क्योंकि गवाही तो आपकी उम्मत भी देगी, तो क्या वो भी देख रही है? 'रसूल तुम पर गवाह होंगे' से पहले फ़रमाया, 'ताकि तुम लोगों पर गवाह हो' और मुनाफ़िक़ों को ख़िताब करके फ़रमाया, 'और फ़रमा दीजिये! तुम अमल करो, अल्लाह, उसका रसूल और मोमिन तुम्हारा अमल देख लेंगे।' (सूरह तौबा) तो क्या मोमिन भी मुनाफ़िक़ों के ज़ाहिर व बातिन को देख रहे हैं? और अल्लाह ने मोमिनों को देखने की ये नेमत दी है और वो नेमत देकर छीनता नहीं है। उसकी नेमत दाइमी होती है तो फिर मोमिन भी हर जगह देख रहे हैं। सूरह हज में फ़रमाया, 'ताकि रसूल तुम पर गवाह बने और तुम सब लोगों पर गवाह बनो।' आपकी गवाही तो आपकी उम्मत के लिये है और उम्मत की गवाही सबके लिये है तो क्या उम्मत सब लोगों के आमाल को देख रही है।

असल हक़ीक़त वही है जिसको अल्लामा सईदी ने बिला वजह फ़ल्सफ़ा बघारने के बाद, शैख़ अब्दुल हक़ से नक़ल किया है, जिसका आख़िरी जुम्ला ये है कि पस आँहज़रत (ﷺ) 'नमी या बद मगर आँचे दरिया बान्द वीरा परवरदिगार तबारक व तआला ख़्वाह दर नमाज़ बाशद या दर ग़ैर आँ' पस हालत नमाज़ हो या ग़ैर नमाज़ अल्लाह तआला के बतलाये बग़ैर रसूलुल्लाह (ﷺ) को किसी चीज़ का इल्म नहीं होता। (शरह सहीह मुस्लिम, उर्दू अल्लामा सईदी : 1/1226)

फिर ला अदरी मा युफ़अलु बी वला बिकुम का जवाब भी अजीबो-ग़रीब दिया है कि इस हदीस़ में दिरायत की नफ़ी है। इल्म और बसर की नफ़ी नहीं है दिरायत का मानी है, अपनी अक़्ल से अज़ ख़ुद जानना। रसूलुल्लाह (ﷺ) उमूरे ग़ैबिया को अल्लाह तआला की तालीम से जानते हैं, अज़ ख़ुद नहीं जानते। (शरह सहीह मुस्लिम : 1/1225)

जो चीज़ अल्लाह तआला ने आपको बता दी उसके जानने का कौनसा इंसान जो आप पर ईमान रखता है, इंकार कर सकता है। असल चीज़ तो ये साबित करना है कि हर चीज़ का इल्म अल्लाह तआला ने आपको दे दिया है और उसके लिये हन्फ़ी उसूले फ़िक़्ह के मुताबिक़ क़तई दलील की ज़रूरत है। कुरआन मजीद में मुश्रिकों को ख़िताब करके फ़रमाया, 'अगर अल्लाह चाहता तो मैं तुम्हें न सुनाता और न वो तुम्हें उससे आगाह करता।' तो क्या मुश्रिक अपनी अक़्लों से ख़ुद जान लेते?

बाब 25 : इमाम से पहले रुकूअ और सज्दा वग़ैरह करना मना है

باب النَّهْىِ عَنْ سَبْقِ الإِمَامِ، بِرُكُوعٍ أَوْ سُجُودٍ وَنَحْوِهِمَا

(961) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें नमाज़ पढ़ाई तो नमाज़ से फ़राग़त के बाद हमारी तरफ़ मुँह करके फ़रमाया, 'ऐ लोगो! मैं तुम्हारा इमाम हूँ। तुम रुकूअ-सुजूद, क़ियाम और सलाम फेरने में मुझसे सबक़त (पहल) न किया करो। क्योंकि मैं अपने सामने और अपने पीछे से देखता हूँ।' फिर आपने फ़रमाया, 'उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है! अगर तुम उन तमाम हक़ाइक़ का मुशाहिदा कर लो जिनको मैं देखता हूँ, तो तुम हँसो कम और रोओ ज़्यादा।' सहाबा किराम (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! आपने क्या देखा? आपने फ़रमाया, 'मैंने जन्नत और दोज़ख़ को देखा।'

(नसाई : 3/83)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، وَاللَّفْظُ، لأَبِي بَكْرٍ قَالَ ابْنُ حُجْرٍ أَخْبَرَنَا وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنِ الْمُخْتَارِ بْنِ فُلْفُلٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ يَوْمٍ فَلَمَّا قَضَى الصَّلاَةَ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ فَقَالَ " أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي إِمَامُكُمْ فَلاَ تَسْبِقُونِي بِالرُّكُوعِ وَلاَ بِالسُّجُودِ وَلاَ بِالْقِيَامِ وَلاَ بِالاِنْصِرَافِ فَإِنِّي أَرَاكُمْ أَمَامِي وَمِنْ خَلْفِي - ثُمَّ قَالَ - وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَوْ رَأَيْتُمْ مَا رَأَيْتُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلاً وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا " . قَالُوا وَمَا رَأَيْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " رَأَيْتُ الْجَنَّةَ وَالنَّارَ " .

(962) जरीर, इब्ने फ़ुज़ैल दोनों ने मुख़्तार से अनस (रज़ि.) की मज़्कूरा बाला मरफ़ूअ

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ ابْنِ فُضَيْلٍ، جَمِيعًا

عَنِ الْمُخْتَارِ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا الْحَدِيثِ وَلَيْسَ فِي حَدِيثِ جَرِيرٍ " وَلاَ بِالاِنْصِرَافِ "

रिवायत सुनाई। जरीर की हदीस़ में सलाम फेरने का तज़्किरा नहीं है।

حَدَّثَنَا خَلَفُ بْنُ هِشَامٍ، وَأَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، كُلُّهُمْ عَنْ حَمَّادٍ، - قَالَ خَلَفٌ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، - عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ، حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ مُحَمَّدٌ ﷺ " أَمَا يَخْشَى الَّذِي يَرْفَعُ رَأْسَهُ قَبْلَ الإِمَامِ أَنْ يُحَوِّلَ اللَّهُ رَأْسَهُ رَأْسَ حِمَارٍ " .

(963) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि मुहम्मद (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या वो इंसान जो इमाम से पहले रुकूअ से सर उठाता है इस बात से नहीं डरता कि अल्लाह तआला उसके सर को गधे के सर की तरह बना दे।'
(तिर्मिज़ी : 582, नसाई :2/94, इब्ने माजह : 961)

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ يُونُسَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " مَا يَأْمَنُ الَّذِي يَرْفَعُ رَأْسَهُ فِي صَلاَتِهِ قَبْلَ الإِمَامِ أَنْ يُحَوِّلَ اللَّهُ صُورَتَهُ فِي صُورَةِ حِمَارٍ " .

(964) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो इंसान अपनी नमाज़ में अपना सर इमाम से पहले उठाता है, वो इस बात से बेख़ौफ़ नहीं हो सकता कि अल्लाह तआला उसकी सूरत (शक्ल) गधे की सूरत में बदल दे।'

حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سَلاَّمٍ الْجُمَحِيُّ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الرَّبِيعِ بْنِ مُسْلِمٍ، جَمِيعًا عَنِ الرَّبِيعِ بْنِ مُسْلِمٍ، ح وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، كُلُّهُمْ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا غَيْرَ أَنَّ فِي حَدِيثِ الرَّبِيعِ بْنِ مُسْلِمٍ " أَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ وَجْهَهُ وَجْهَ حِمَارٍ " .

(965) इमाम साहब अलग-अलग रावियों से मज़्कूरा बाला हदीस़ नक़ल करते हैं।

इनमें रबीअ बिन मुस्लिम की हदीस़ में है, युहव्विलुल्लाहु सूरतहू के बजाय अंय्यज्अलल्लाहु वजहहू वजह हिमार अल्लाह तआला उसके चेहरे को गधे के चेहरे सा बना दे, के अल्फ़ाज़ हैं।

फ़ायदा : इमाम से किसी रुक्न में पहल करना, बेवक़ूफ़ी और हिमाक़त की दलील और अलामत है और इस वस्फ़ में गधा मअरूफ़ है और सज़ा जिन्से फ़ैअल के मुताबिक़ हो, के उसूल के मुताबिक़ ऐसे इंसान की शक्ल व सूरत बिगाड़कर अल्लाह गधे की सूरत की सी बना सकता है और ये काम उसके

लिये कोई मुश्किल नहीं है। इसलिये नमाज़ी को किसी रुक्न में इमाम से पहल नहीं करना चाहिये। क्या मालूम अल्लाह तआला का ग़ज़ब जोश में हो और ऐसे इंसान की सूरत मस्ख़ हो जाये। ये एक वईद और उसका वक़ूअ अल्लाह तआला की मशिय्यत पर मौक़ूफ़ है। इसलिये वक़ूअ लाज़िमी नहीं है और मुल्ला अली क़ारी ने एक मुहद्दिस का वाक़िया नक़ल किया है कि उसने इस वईद के वक़ूअ को बईद अज़ अक़्ल समझा और नमाज़ में इमाम से सबक़त ले जाने की हरकत कर डाली। तो अल्लाह तआला ने उसके चेहरे को गधे के चेहरे की तरह कर दिया। इसलिये वो लोगों को पर्दे की ओट से अहादीस़ सुनाता था। (फ़तहुल मुल्हिम : 2/64)

बाब 26 : नमाज़ में आसमान की तरफ़ देखने की मुमानिअ़त (मनाही)

باب النَّهْىِ عَنْ رَفْعِ الْبَصَرِ، إِلَى السَّمَاءِ فِي الصَّلاَةِ

(966) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो लोग नमाज़ में अपनी नज़रें आसमान की तरफ़ उठाते हैं, वो अपनी इस हरकत से बाज़ आ जायें वरना उनकी नज़र (बीनाई) उनकी तरफ़ नहीं लौटेगी (बीनाई सल्ब/छीन ली जायेगी)।

(इब्ने माजह : 1045)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ تَمِيمِ بْنِ طَرَفَةَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَيَنْتَهِيَنَّ أَقْوَامٌ يَرْفَعُونَ أَبْصَارَهُمْ إِلَى السَّمَاءِ فِي الصَّلاَةِ أَوْ لاَ تَرْجِعُ إِلَيْهِمْ " .

(967) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'लोग नमाज़ में दुआ के वक़्त अपनी नज़रें आसमान की तरफ़ बुलंद करने से बाज़ आ जायें, वरना उनकी नज़रें उचक ली जायेंगी (नज़रें छीन ली जायेंगी)।'

(नसाई : 3/39-40)

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، وَعَمْرُو بْنُ سَوَّادٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيعَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَيَنْتَهِيَنَّ أَقْوَامٌ عَنْ رَفْعِهِمْ أَبْصَارَهُمْ عِنْدَ الدُّعَاءِ فِي الصَّلاَةِ إِلَى السَّمَاءِ أَوْ لَتُخْطَفَنَّ أَبْصَارُهُمْ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) लयन्तहियन्ना : वो ज़रूर बाज़ आ जायें, या रुक जायें। यानी नमाज़ में

आसमान की तरफ़ हर्गिज़ नज़र न उठायें। **(2) इन्तहा** : रोकना, बाज़ रहना से माख़ूज़ है। **(3) ला तरजिइ इलैहिम** : उनकी तरफ़ (उनकी नज़रें) वापस नहीं लौटेंगी, बीनाई सल्ब (छीन) कर ली जायेगी। रुजूअ : लौटना, वापस आना से माख़ूज़ है। **(4) लतुख़्तफ़न्न** : ख़तफ़ से माख़ूज़ है, जल्दी से सल्ब कर लेना, उचक लेना।

फ़ायदा : नमाज़ की हालत में अगरचे इंसान दुआइय्या कलिमात पढ़ रहा हो, फिर भी आसमान की तरफ़ देखना नाजाइज़ है और उस पर ये वईद सुनाई गई है कि अल्लाह तआला उनकी बीनाई सल्ब कर सकता है। हाँ नमाज़ के अलावा दुआ के दौरान क़ल्बी तवज्जह के साथ-साथ, आसमान की तरफ़ नज़र उठाना जाइज़ है। क्योंकि अल्लाह मुस्तविए अर्श है। इसलिये जिस तरह नमाज़ के लिये क़िब्ला कअबा मुअज़्ज़मा है, उसी तरह दुआ के लिये क़िब्ला ऊपर है। इसलिये हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर दुआ माँगी जाती है। जुम्हूर उलमा का यही मौक़िफ़ है अगरचे क़ाज़ी शुरैह वग़ैरह ने इसको भी मक्रूह क़रार दिया है।

बाब 27 : नमाज़ में सुकून इख़्तियार करने का हुक्म और सलाम के वक़्त हाथ से इशारा करने और उसके उठाने की मुमानिअत और पहली सफ़ों को मुकम्मल करना और उनमें आपस में मिलकर खड़े होने और इकट्ठे खड़े होने का हुक्म

باب الأَمْرِ بَالسُّكُونِ فِي الصَّلاَةِ وَالنَّهْيِ عَنِ الإِشَارَةِ بِالْيَدِ وَرَفْعِهَا عِنْدَ السَّلاَمِ وَإِتْمَامِ الصُّفُوفِ الأُوَلِ وَالتَّرَاصِّ فِيهَا وَالأَمْرِ بِالاِجْتِمَاعِ

(968) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाये और फ़रमाया, 'क्या वजह है मैं तुम्हें नमाज़ में इस तरह हाथ उठाते देख रहा हूँ गोया कि वो सरकश घोड़ों की दुमें हैं? नमाज़ में सुकून इख़्तियार किया करो (नमाज़ सुकून के साथ पढ़ा करो) फिर एक और मर्तबा तशरीफ़ लाये और हमें अलग-अलग हल्क़ों

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنِ الْمُسَيَّبِ بْنِ رَافِعٍ، عَنْ تَمِيمِ بْنِ طَرَفَةَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " مَا لِي أَرَاكُمْ رَافِعِي أَيْدِيكُمْ كَأَنَّهَا أَذْنَابُ خَيْلٍ شُمْسٍ

اسْكُنُوا فِي الصَّلاَةِ " . قَالَ ثُمَّ خَرَجَ عَلَيْنَا فَرَآنَا حَلَقًا فَقَالَ " مَا لِي أَرَاكُمْ عِزِينَ " . قَالَ ثُمَّ خَرَجَ عَلَيْنَا فَقَالَ " أَلاَ تَصُفُّونَ كَمَا تَصُفُّ الْمَلاَئِكَةُ عِنْدَ رَبِّهَا " . فَقُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ وَكَيْفَ تَصُفُّ الْمَلاَئِكَةُ عِنْدَ رَبِّهَا قَالَ " يُتِمُّونَ الصُّفُوفَ الأُوَلَ وَيَتَرَاصُّونَ فِي الصَّفِّ " .

में बैठे देखा तो फ़रमाया, 'क्या वजह है मैं तुम्हें अलग-अलग हल्क़ों में बैठा देख रहा हूँ?' फिर एक और मर्तबा तशरीफ़ लाये तो फ़रमाया, 'तुम इस तरह सफ़ बन्दी क्यों नहीं करते, जिस तरह बारगाहे इलाही में फ़रिश्ते सफ़बस्ता होते हैं?' हमने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! फ़रिश्ते अल्लाह तआला की बारगाह में किस तरह सफ़ बन्दी करते हैं? आपने फ़रमाया, 'पहली सफ़ों को मुकम्मल करते हैं और सफ़ में एक-दूसरे के साथ जुड़कर खड़े होते हैं।'

(अबू दाऊद : 661, नसाई : 1/815, इब्ने माजह : 992)

وَحَدَّثَنِي أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، قَالاَ جَمِيعًا حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(969) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) शुम्सुन : शमूस की जमा है वो घोड़े जो टिककर, सुकून के साथ खड़े नहीं होते बल्कि अपनी दुमों और पाँव को हिलाते रहते हैं। **(2) हलक़ा :** हल्क़ह की जमा है, गिरोह, टोली, लोगों का दायरा हा पर ज़ेर और ज़बर दोनों आ सकते हैं। **(3) इज़ीन :** इज़ह की जमा है अलग-अलग या मुतफ़र्रिक़ गिरोह या मुतफ़र्रिक़ जमाअतें। **(4) यतरासौन :** आपस में मिलकर और जुड़कर खड़े हों। अरसुश्शैइ का मानी होता है एक को दूसरे से मिलाना, चिमटाना।

फ़वाइद : (1) इस हदीस़ से साबित होता है पहले अगली सफ़ों को पूरा करना ज़रूरी है, जब तक अगली सफ़ मुकम्मल न हो दूसरी में खड़ा होना दुरुस्त नहीं, गोया ख़ाली जगह आख़िरी सफ़ में होगी। (2) सफ़ों में सीसा पिलाई इमारत की तरह जुड़कर खड़ा होना चाहिये, दो आदमियों के दरम्यान कोई जगह ख़ाली न रहे। (3) नमाज़ में घोड़ों की दुमों की तरह हाथ को दायें-बायें नहीं उठाना चाहिये। इससे मुराद, रुकूअ में जाते और रुकूअ से उठते वक़्त रफ़अ यदैन से रोकना मक़सूद नहीं है। क्योंकि रफ़अ

यदैन में घोड़ों की दुमों की तरह हाथ दायें-बायें की तरफ़ नहीं उठाये जाते, अगर बिल्फ़र्ज़ इससे रफ़उल यदैन मुराद है तो फिर नमाज़ के शुरू में तकबीरे तहरीमा के साथ रफ़अ यदैन करना क्योंकर जाइज़ हो सकता है। नीज़ अल्हदीसु युफ़स्सिरू बअ्ज़ुहू बअ्ज़ा एक हदीस़ दूसरी हदीस़ की वज़ाहत करती है के उसूल की रू से अगली हदीस़ जो जाबिर (रज़ि.) की ही है। इस जुम्ले की वज़ाहत व तफ़्सीर कर रही है, उसको छोड़कर इससे रफ़अ यदैन मुराद लेना महज़ सीना ज़ोरी और हटधर्मी है। जो जाइज़ नहीं है और न इसको तस्लीम किया जा सकता है। (4) मस्जिद में अज़ान के बाद नमाज़ से पहले अलग-अलग हल्क़ों में बैठना सहीह नहीं है बल्कि सफ़ें बनाकर बैठना चाहिये और पहली सफ़ मुकम्मल होने पर दूसरी सफ़ बनानी चाहिये। हाँ नमाज़ के अ़लावा अलग-अलग इल्मी हल्क़े बनाकर बैठना दुरुस्त है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ مِسْعَرٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ مِسْعَرٍ، حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ ابْنُ الْقِبْطِيَّةِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ كُنَّا إِذَا صَلَّيْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قُلْنَا السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ . وَأَشَارَ بِيَدِهِ إِلَى الْجَانِبَيْنِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " عَلاَمَ تُومِئُونَ بِأَيْدِيكُمْ كَأَنَّهَا أَذْنَابُ خَيْلٍ شُمُسٍ إِنَّمَا يَكْفِي أَحَدَكُمْ أَنْ يَضَعَ يَدَهُ عَلَى فَخِذِهِ ثُمَّ يُسَلِّمُ عَلَى أَخِيهِ مَنْ عَلَى يَمِينِهِ وَشِمَالِهِ " .

(970) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से रिवायत है कि जब हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ते (तो हम सलाम फेरते वक़्त) अस्सलामु अ़लैकुम व रह्मतुल्लाह, अस्सलामु अ़लैकुम व रह्मतुल्लाह कहते और दोनों जानिब हाथ से इशारा करते। इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अपने हाथों से इस तरह इशारा क्यों करते गोया कि वो सरकश घोड़ों की दुमें हैं तुम्हारे लिये यही काफ़ी है कि अपना हाथ अपनी रान पर रखो। फिर अपने दायें और बायें वाले भाई को सलाम कहो।'

(अबू दाऊद : 998-999, नसाई : 3/5,3/61,3/64)

وَحَدَّثَنَا الْقَاسِمُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ فُرَاتٍ، - يَعْنِي الْقَزَّازَ - عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَكُنَّا إِذَا سَلَّمْنَا قُلْنَا بِأَيْدِينَا السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ السَّلاَمُ

(971) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी। जब हम सलाम फेरते, हाथों के इशारों से अस्सलामु अ़लैकुम, अस्सलामु अ़लैकुम कहते। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमारी तरफ़ देखकर फ़रमाया, 'क्या वजह है कि तुम

عَلَيْكُمْ فَنَظَرَ إِلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " مَا شَأْنُكُمْ تُشِيرُونَ بِأَيْدِيكُمْ كَأَنَّهَا أَذْنَابُ خَيْلٍ شُمْسٍ إِذَا سَلَّمَ أَحَدُكُمْ فَلْيَلْتَفِتْ إِلَى صَاحِبِهِ وَلاَ يُومِئْ بِيَدِهِ " .

सरकश घोड़ों की दुमों की तरह हाथों से इशारा करते हो? जब तुम सलाम फेरो तो अपने साथी की तरफ़ मुतवज्जह हो और हाथ से इशारा न करो।'

फ़ायदा : ये आख़िरी रिवायत इस बात की सरीह दलील है कि हाथों के जिस इशारे को सरकश घोड़ों की दुमों से तश्बीह दी गई है, उससे मुराद वो इशारा है जो सलाम फेरते वक़्त करते थे। उसका रुकूअ के रफ़अ यदैन से कोई तअल्लुक़ नहीं है। सईद साइब ने ख़ुद तर्जुमा ये किया है, जब हम सलाम फेरते तो हाथों के इशारे से अस्सलामु अलैकुम, अस्सलामु अलैकुम कहते। (शरह मुस्लिम : 1/1229) जब तुममें से किसी शख़्स को सलाम फेरना हो तो अपने साथी की तरफ़ मुतवज्जह हो और हाथ से इशारा न करे। ये फ़यन्ज़ुरु इलैना रसूलुल्लाह (ﷺ) नतीजा और तफ़्सील है। उसके बावजूद बड़ी जुरअत से ये कह दिया है कि इस हदीस़ में अहनाफ़ के मस्लक पर वाज़ेह दलील है कि नमाज़ में रुकूअ से पहले और उसके बाद रफ़अ यदैन का हुक्म शुरूआती अम्र था। बाद में इसको रसूलुल्लाह ने मन्सूख़ कर दिया। (शरह सहीह मुस्लिम : 1/1230, तकबीरे तहरीमा के साथ रफ़अ यदैन मन्सूख़ होने से क्यों बच रहा?

باب تَسْوِيَةِ الصُّفُوفِ وَإِقَامَتِهَا وَفَضْلِ الأَوَّلِ فَالأَوَّلِ مِنْهَا وَالاِزْدِحَامِ عَلَى الصَّفِّ الأَوَّلِ وَالْمُسَابَقَةِ إِلَيْهَا وَتَقْدِيمِ أُولِي الْفَضْلِ وَتَقْرِيبِهِمْ مِنَ الإِمَامِ

बाब 28 : सफ़ों को बराबर और सीधा करना और सफ़ों को बतर्तीब पहली फिर उसके बाद वाली की फ़ज़ीलत और पहली सफ़ में शिरकत के लिये मुसाबिक़त करना, अस्हाबे फ़ज़्ल को मुक़द्दम करके उनको इमाम के क़रीब करना

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ، وَأَبُو مُعَاوِيَةَ وَوَكِيعٌ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ عُمَيْرٍ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ،

(972) हज़रत अबू मसऊद (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ में (जमाअत के खड़े होने के वक़्त) हमें बराबर करने के लिये हमारे कन्धों पर हाथ फेरते और फ़रमाते, 'बराबर-बराबर हो जाओ और

عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَمْسَحُ مَنَاكِبَنَا فِي الصَّلاَةِ وَيَقُولُ " اسْتَوُوا وَلاَ تَخْتَلِفُوا فَتَخْتَلِفَ قُلُوبُكُمْ لِيَلِنِي مِنْكُمْ أُولُو الأَحْلاَمِ وَالنُّهَى ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ " . قَالَ أَبُو مَسْعُودٍ فَأَنْتُمُ الْيَوْمَ أَشَدُّ اخْتِلاَفًا .

अलग-अलग (आगे-पीछे) न हो (वरना उसकी सज़ा में) तुम्हारे दिल आपस में अलग-अलग हो जायेंगे। तुममें से जो दानिशमन्द और समझदार हैं, वो मेरे क़रीब हों, उनके बाद वो लोग हों जिनका नम्बर इस सिफ़त में उनके क़रीब हो और उनके बाद वो लोग जिनका दर्जा उनसे क़रीब हो।' अबू मसऊद (रज़ि.) ने फ़रमाया, आज तो तुम लोगों में बहुत इख़्तिलाफ़ हो गया है।

(अबू दाऊद : 674, नसाई : 2/87, 1/8000, इब्ने माजह : 976)

मुफ़रदातुल हदीस़ : अल्अहलाम : हिल्म की जमा है, सब्र, आहिस्तगी, बुर्दबारी, कभी जहालत व बेवक़ूफ़ी के मुक़ाबले में आ जाता है, इस सूरत में मानी अ़क़्ल व दानिश होता है। क़ुरआन मजीद में है। अम तअ्मुरुहुम अह्लामुहुम बिहाज़ा। क्या उनकी अ़क़्लें उन्हें ये हुक्म देती है? (तूर) अगर इसको हुल्म की जमा बनायें तो फिर बुलूग़त के मानी में होगा। इस सूरत में मानी में एक नया मफ़्हूम पैदा हो जायेगा क्योंकि नुहा भी नह्यह की जमा है इसका मानी भी अ़क़्ल है क्योंकि वो बुराइयों से रोकती है।

फ़वाइद : (1) इस हदीस़ से स़ाबित है कि इमाम के क़रीब वो लोग खड़े हों जिनको अल्लाह तआ़ला ने फ़हम व दानिश से नवाज़ा है। उनके बाद इस सिफ़त में दूसरे दर्जा वाले। उनके बाद तीसरे दर्जा वाले। ये तर्तीब बिल्कुल फ़ितरी भी है और तालीम व तर्बियत की मस्लिहत का तक़ाज़ा भी यही है ताकि इमाम से अगर भूल-चूक हो जाये तो उसकी इस्लाह कर सकें और वक़्ते ज़रूरत इमाम की नियाबत भी कर सकें। इसलिये हज़रत उ़मर, ज़र बिन हुबैश और अबू वाइल (रज़ि.) बच्चे को सफ़ से निकाल देते थे। **(2)** हज़रत अबू मसऊद (रज़ि.) के क़ौल का मुख़ातब वो लोग थे जो फ़ित्ना व फ़साद बर्पा कर रहे थे और उसका सबब यही था कि वो सफ़बन्दी में ऐतदाल और तस्विया (बराबरी) की पाबंदी नहीं करते।

وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا ابْنُ خَشْرَمٍ، أَخْبَرَنَا عِيسَى يَعْنِي ابْنَ يُونُسَ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(973) इमाम साहब एक और सनद से मज़्कूरा वाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं।

(974) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से मेरे क़रीब बालिग़ और अक़्लमन्द खड़े हों, फिर जो इस सिफ़त में उनके क़रीब हों (इस तरह तीन बार फ़रमाया) और तुम बाज़ारों के इख़्तिलात और शोर व शग़ब से बचो।'

(अबू दाऊद : 674, तिर्मिज़ी : 228)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، وَصَالِحُ بْنُ حَاتِمِ بْنِ وَرْدَانَ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنِي خَالِدٌ الْحَذَّاءُ، عَنْ أَبِي مَعْشَرٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لِيَلِنِي مِنْكُمْ أُولُو الأَحْلاَمِ وَالنُّهَى ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ - ثَلاَثًا - وَإِيَّاكُمْ وَهَيْشَاتِ الأَسْوَاقِ " .

मुफ़रदातुल हदीस : हैशातिल अस्वाक़ : बाज़ारों का जैसा इख़्तिलाफ़ और झगड़ा और शोर व शग़ब क्योंकि हशूशह फ़ित्ना व इख़्तिलात को कहते हैं। लियलिनी : क़रीब होना, मिला हुआ होना।

(975) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नमाज़ में अपनी सफ़ों को बराबर करो क्योंकि सफ़ों का सीधा और बराबर करना नमाज़ की तक्मील में से है।'

(सहीह बुख़ारी : 723, अबू दाऊद : 668, इब्ने माजह : 993)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ قَتَادَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " سَوُّوا صُفُوفَكُمْ فَإِنَّ تَسْوِيَةَ الصَّفِّ مِنْ تَمَامِ الصَّلاَةِ " .

फ़ायदा : क़ुरआन मजीद में जगह-जगह अक़ीमुस्सलात की सूरत में इक़ामते सलात का हुक्म दिया है जो मुसलमानों का फ़र्ज़े अव्वलीन है और इसकी कामिल और सहीह अदायगी के लिये ये शर्त है कि जमाअत की सफ़ें बिल्कुल सीधी और बराबर हों। सहीह बुख़ारी के अल्फ़ाज़ मिन इक़ामतिस्सलाह हैं।

(976) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सफ़ों को पूरा करो, मैं तुम्हें अपनी पुश्त के पीछे से देख रहा हूँ।'

(सहीह बुख़ारी : 718)

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، - وَهُوَ ابْنُ صُهَيْبٍ - عَنْ أَنَسٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَتِمُّوا الصُّفُوفَ فَإِنِّي أَرَاكُمْ خَلْفَ ظَهْرِي " .

फ़ायदा : मालूम होता है इत्माम, इक़ामत के मानी में है क्योंकि सहीह बुख़ारी में अतिम्मू की जगह अक़ीमु है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ " أَقِيمُوا الصَّفَّ فِي الصَّلاَةِ فَإِنَّ إِقَامَةَ الصَّفِّ مِنْ حُسْنِ الصَّلاَةِ " .

(977) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़रमाया, 'नमाज़ में सफ़ को सीधा और बराबर करो क्योंकि सफ़ की दुरुस्तगी नमाज़ के हुस्न का हिस्सा है।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، قَالَ سَمِعْتُ سَالِمَ بْنَ أَبِي الْجَعْدِ الْغَطَفَانِيَّ، قَالَ سَمِعْتُ النُّعْمَانَ بْنَ بَشِيرٍ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " لَتُسَوُّنَّ صُفُوفَكُمْ أَوْ لَيُخَالِفَنَّ اللَّهُ بَيْنَ وُجُوهِكُمْ " .

(978) हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अपनी सफ़ों को बिल्कुल बराबर और सीधा करो वरना अल्लाह तआला तुम्हारे रुख़ एक-दूसरे के मुख़ालिफ़ कर देगा।'

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، قَالَ سَمِعْتُ النُّعْمَانَ بْنَ بَشِيرٍ، يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُسَوِّي صُفُوفَنَا حَتَّى كَأَنَّمَا يُسَوِّي بِهَا الْقِدَاحَ حَتَّى رَأَى أَنَّا قَدْ عَقَلْنَا عَنْهُ ثُمَّ خَرَجَ يَوْمًا فَقَامَ حَتَّى كَادَ يُكَبِّرُ فَرَأَى رَجُلاً بَادِيًا صَدْرُهُ مِنَ الصَّفِّ فَقَالَ " عِبَادَ اللَّهِ لَتُسَوُّنَّ

(979) हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारी सफ़ों को इस क़द्र सीधा और बराबर कराते थे गोया कि आप उनके ज़रिये तीरों को सीधा करेंगे। यहाँ तक कि आपको ख़याल हो गया कि हमने आपसे समझ लिया है (कि हम को किस तरह सीधा खड़ा होना चाहिये) उसके बाद एक दिन आप तशरीफ़ लाये और नमाज़ पढ़ाने की जगह खड़े हो गये, यहाँ तक कि क़रीब था आप तकबीर कह कर नमाज़ शुरू फ़रमा दें तो आपने एक आदमी को देखा उसका सीना सफ़

صُفُوفَكُمْ أَوْ لَيُخَالِفَنَّ اللَّهُ بَيْنَ وُجُوهِكُمْ " .

से कुछ आगे निकला हुआ था। इस पर आपने फ़रमाया, 'अल्लाह के बन्दों! अपनी सफ़ों को सीधा और बराबर रखा करो, वरना अल्लाह तुम्हारे दरम्यान फूट डाल देगा।'

(अबू दाऊद : 663,665, तिर्मिज़ी : 227, नसाई : 2/89, इब्ने माजह : 994)

मुफ़रदातुल हदीस़ : क़िदाह : क़िदह की जमा है, अहले अ़रब शिकार या जंग में इस्तेमाल के लिये जो तीर लकड़ी से तराशते थे उनको बिल्कुल सीधा और बराबर रखने का बड़ा एहतिमाम और कोशिश करते थे। इसलिये किसी चीज़ की बराबरी और सीधेपन की तारीफ़ में मुबाल्ग़े के लिये कहते हैं, वो चीज़ ऐसी बराबर और इस क़द्र सीधी है कि वो तीरों के सीधा करने के लिये मैयार और पैमाना का काम दे सकती है।

फ़ायदा : रसूलुल्लाह (ﷺ) सफ़ों को इस क़द्र सीधा और बराबर फ़रमाते थे कि कोई आदमी बिल्कुल आगे या पीछे न होता। तवील मुद्दत की मुसलसल कोशिश और तर्बियत के बाद जब आपको इत्मीनान हो गया कि अब लोगों को सफ़ों के सीधा करने की अहमियत और तरीक़ा समझ आ गया है तो आपने उस एहतिमाम को छोड़ दिया। लेकिन उसके बाद एक दिन आपने इस मामले में एक आदमी की कोताही देखी तो बड़े जलाल के अन्दाज़ में फ़रमाया, 'अल्लाह के बन्दों! मैं तुमको आगाह करता हूँ, अगर तुम सफ़ों को बराबर और सीधा करने में बेपरवाही और कोताही रवा रखोगे तो अल्लाह तआ़ला उसकी सज़ा में तुम्हारे चेहरे मस्ख़ कर देगा और तुम्हारी सूरतें बदल जायेंगी। या तुम्हारी वहदत और इज्तिमाइयत पारा-पारा कर दी जायेगी और तुममें फूट और इख़्तिलाफ़ पैदा हो जायेगा। जो उम्मतों और क़ौमों के लिये इस दुनिया में सौ अ़ज़ाबों का एक अ़ज़ाब है। सफ़ों को बराबर और सीधा करने में कोताही और ग़फ़लत इस वक़्त आ़म हो चुकी है और सज़ा के तौर पर उम्मत में इन्तिशार व इख़्तिलाफ़ और फूट भी उरूज पर है।

حَدَّثَنَا حَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(980) इमाम साहब और उस्तादों से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ سُمَىٍّ، مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي

(981) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर लोगों को मालूम हो जाये कि अज़ान देने और

صَالِحٍ السَّمَّانِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا فِي النِّدَاءِ وَالصَّفِّ الأَوَّلِ ثُمَّ لَمْ يَجِدُوا إِلاَّ أَنْ يَسْتَهِمُوا عَلَيْهِ لاَسْتَهَمُوا وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِي التَّهْجِيرِ لاَسْتَبَقُوا إِلَيْهِ وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِي الْعَتَمَةِ وَالصُّبْحِ لأَتَوْهُمَا وَلَوْ حَبْوًا " .

पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने में (किस क़द्र ख़ैर व बरकत और अज्र व सवाब है) फिर उनके लिये उसकी ख़ातिर क़ुरआ अन्दाज़ी करने के सिवा कोई चारह बाक़ी न रहे, तो वो उसके लिये क़ुरआ अन्दाज़ी करें और अगर वो जान लें नमाज़ के लिये जल्दी आने में कितना अज्र व सवाब मिलता है तो उसके लिये एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करें और अगर उन्हें मालूम हो जाये कि इशा और सुबह की नमाज़ का कितना सवाब मिलता है तो उन्हें घुटनों और हाथों के बल भी आना पड़े तो आयें।'
(सहीह बुख़ारी : 615, 654, 721, 2689, तिर्मिज़ी : 225, नसाई : 2/23)

मुफ़रदातुल हदीस : (1) इस्तहमू अलैह : (इस अज्र व सवाब के हुसूल के लिये) क़ुरआ अन्दाज़ी करें। यानी सब लोग ये काम करने की कोशिश करें और सब एक ही वक़्त में पहुँचने की बिना पर बराबर के हक़दार ठहरें और सबके लिये गुंजाइश न होने की बिना पर तरजीह के लिये क़ुरआ अन्दाज़ी की ज़रूरत पेश आये। **(2) अत्तहजीर :** सख़्त दोपहर के वक़्त आना या जल्दी से काम लेना और हर नमाज़ के लिये पहले आना। **(3) इस्तबक़ू इलैहि :** एक-दूसरे से सबक़त ले जाने और आगे बढ़ने की कोशिश करें। **(4) अल्अतमह :** रात की शुरूआती तारीकी या देर और ताख़ीर करना। यहाँ मुराद इशा की नमाज़ है। **(5) हबवन :** हबवन हाथों और घुटनों के बल चलना या सुरीन के बल घिसटना।

फ़ायदा : इस हदीस में इशा और सुबह की नमाज़ को ख़ुसूसी अहमियत दी गई है और उनके अज़ीम अज्र व सवाब और ख़ैर व बरकत को बयान किया गया है। क्योंकि इन नमाज़ों के लिये नींद और आराम को छोड़ना पड़ता है। जो ख़ास तौर पर मुश्किल और वक़्त तलब काम है और इस वजह से ये दोनों नमाज़ें मुनाफ़िक़ों के लिये दुश्वार थीं।

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَشْهَبِ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ الْعَبْدِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ

(982) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने साथियों

الْخُدْرِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَأَى فِي أَصْحَابِهِ تَأَخُّرًا فَقَالَ لَهُمْ " تَقَدَّمُوا فَأْتَمُّوا بِي وَلْيَأْتَمَّ بِكُمْ مَنْ بَعْدَكُمْ لاَ يَزَالُ قَوْمٌ يَتَأَخَّرُونَ حَتَّى يُؤَخِّرَهُمُ اللَّهُ " .

को पीछे रहते महसूस किया तो आपने उन्हें फ़रमाया, 'आगे बढ़ो और मेरी इक़्तिदा करो और तुम्हारे पिछले तुम्हारी इक़्तिदा करें, कुछ लोग पीछे रहते रहेंगे यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला उनको (अपने फ़ज़्ल व रहमत से) मुअख़्ख़र (पीछे) कर देगा।'

(अबू दाऊद : 680, नसाई : 2/83, इब्ने माजह : 978)

फ़ायदा : इअ्तम्मू बी : मेरी पैरवी और इक़्तिदा करो। पहली सफ़ वाले, इमाम के अफ़आ़ल की इक़्तिदा करेंगे और दूसरी सफ़ वाले पहली सफ़ वालों के अफ़आ़ल से इमाम के अफ़आ़ल को मालूम करेंगे। इसलिये हर बाद वाली सफ़ अपने से अगली सफ़ की पैरवी करेगी और ये मानी भी हो सकता है कि सहाबा (रज़ि.) से बाद आने वाले रसूलुल्लाह (ﷺ) का तरीक़ा तर्ज़े अमल और रवैया सहाबा किराम (रज़ि.) से सीखेंगे। इस तरह अमली तसलसुल क़ायम रहेगा।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الرَّقَاشِيُّ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مَنْصُورٍ، عَنِ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ رَأَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَوْمًا فِي مُؤَخَّرِ الْمَسْجِدِ . فَذَكَرَ مِثْلَهُ .

(983) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कुछ लोगों को मस्जिद के पिछले हिस्से में देखा, आगे मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की।

(नसाई : 2/83)

حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ دِينَارٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ الْوَاسِطِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ الْهَيْثَمِ أَبُو قَطَنٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ خِلاَسٍ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ " لَوْ تَعْلَمُونَ - أَوْ يَعْلَمُونَ - مَا فِي الصَّفِّ الْمُقَدَّمِ لَكَانَتْ قُرْعَةً " . وَقَالَ ابْنُ حَرْبٍ " الصَّفِّ الأَوَّلِ مَا كَانَتْ إِلاَّ قُرْعَةً " .

(984) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर तुम या लोग पहली सफ़ की ख़ैर व बरकत को जान लें तो उस पर क़ुरआ अन्दाज़ी हो।' इब्ने हरब ने मा फ़िस्सफ़्फ़िल मुक़द्दम लकानत क़ुरअह की बजाय मा फ़िस्सफ़्फ़िल अव्वल मा कानत इल्ला क़ुरअह कहा। मानी एक ही है।

(इब्ने माजह : 998)

(985) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मर्दों की बेहतरीन सफ़ पहली है और बदतरीन आख़िरी है और औरतों की बेहतरीन सफ़ आख़िरी है और बदतरीन सफ़ पहली है।'
(नसाई : 1/819)

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " خَيْرُ صُفُوفِ الرِّجَالِ أَوَّلُهَا وَشَرُّهَا آخِرُهَا وَخَيْرُ صُفُوفِ النِّسَاءِ آخِرُهَا وَشَرُّهَا أَوَّلُهَا " .

(986) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं। (तिर्मिज़ी : 224, इब्ने माजह : 1000)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي الدَّرَاوَرْدِيَّ - عَنْ سُهَيْلٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

फ़ायदा : इस हदीस का तअ़ल्लुक़ उस जमाअ़त से है जो औरतें मर्दों के साथ पढ़ती हैं और उनकी नज़र मर्दों पर पड़ती है और उनकी तवज्जह मर्दों की हरकात व सकनात की तरफ़ मब्ज़ूल हो जाती है क्योंकि दरम्यान में पर्दा नहीं होता था।

बाब 29 : मर्दों के पीछे नमाज़ पढ़ने वाली औरतों को हुक्म है कि वो सज्दे से उस वक़्त तक अपना सर न उठायें, जब तक मर्द सर न उठा लें

باب أَمْرِ النِّسَاءِ الْمُصَلِّيَاتِ وَرَاءَ الرِّجَالِ أَنْ لاَ يَرْفَعْنَ رُءُوسَهُنَّ مِنَ السُّجُودِ حَتَّى يَرْفَعَ الرِّجَالُ

(987) हज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने मर्दों को बच्चों की तरह अपनी गर्दनों में अपनी चादरें तंग होने की बिना पर बान्धे हुए देखा। वो नबी (ﷺ) के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे तो इस पर किसी शख़्स ने कहा, ऐ औरतों की जमाअ़त! तुम मर्दों के उठने तक अपने सरों को (सज्दे से) न उठाना।
(सहीह बुख़ारी : 362, 814, 1215, अबू दाऊद : 630, नसाई : 2/71)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ لَقَدْ رَأَيْتُ الرِّجَالَ عَاقِدِي أُزُرِهِمْ فِي أَعْنَاقِهِمْ مِثْلَ الصِّبْيَانِ مِنْ ضِيقِ الأُزُرِ خَلْفَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ قَائِلٌ يَا مَعْشَرَ النِّسَاءِ لاَ تَرْفَعْنَ رُءُوسَكُنَّ حَتَّى يَرْفَعَ الرِّجَالُ .

फ़ायदा : इंसान के लिये सतरे औरत (छिपाने की जगह का छिपाना) ज़रूरी है। कपड़ों की तंगी की वजह से औरतों को मर्दों से पहले सज्दे से सर उठाने से मना कर दिया गया कि कहीं ऐसा न हो कि सज्दे में मर्द का सतर खुला हो और उस पर औरत की नज़र पड़ जाये।

باب خُرُوجِ النِّسَاءِ إِلَى الْمَسَاجِدِ إِذَا لَمْ يَتَرَتَّبْ عَلَيْهِ فِتْنَةٌ وَأَنَّهَا لاَ تَخْرُجُ مُطَيَّبَةً

बाब 30 : अगर फ़ित्ने का अन्देशा या ख़तरा न हो तो औरतें मसाजिद में जा सकती हैं लेकिन वो ख़ुश्बू लगाकर न निकलेंगी

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، - قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، - عَنِ الزُّهْرِيِّ، سَمِعَ سَالِمًا، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ، يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا اسْتَأْذَنَتْ أَحَدَكُمُ امْرَأَتُهُ إِلَى الْمَسْجِدِ فَلاَ يَمْنَعْهَا " .

(988) हज़रत सालिम (रह.) अपने बाप से मरफ़ूअ रिवायत बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से किसी की बीवी मस्जिद में (नमाज़ पढ़ने के लिये) जाने की इजाज़त माँगे तो वो उसे न रोके।'

(सहीह बुख़ारी : 5238, नसाई : 2/42)

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " لاَ تَمْنَعُوا نِسَاءَكُمُ الْمَسَاجِدَ إِذَا اسْتَأْذَنَّكُمْ إِلَيْهَا " . قَالَ فَقَالَ بِلاَلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ وَاللَّهِ لَنَمْنَعُهُنَّ . قَالَ فَأَقْبَلَ عَلَيْهِ عَبْدُ اللَّهِ فَسَبَّهُ سَبًّا سَيِّئًا مَا سَمِعْتُهُ سَبَّهُ مِثْلَهُ قَطُّ وَقَالَ أُخْبِرُكَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَتَقُولُ وَاللَّهِ لَنَمْنَعُهُنَّ .

(989) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे, 'अपनी औरतों को मसाजिद में जाने से न रोको, जब वो तुमसे उनमें जाने की इजाज़त तलब करें।' इस पर बिलाल बिन अ़ब्दुल्लाह ने कहा, अल्लाह की क़सम! हम तो उनको ज़रूर रोकेंगे। तो अ़ब्दुल्लाह उसकी तरफ़ मुतवज्जह हुए और उसे सख़्त बुरा-भला कहा, इतना मैंने कभी किसी और को नहीं बुरा-भला कहते सुना और कहा, मैं तुम्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़रमान बताता हूँ और तू कहता है, अल्लाह की क़सम! हम उन्हें रोकेंगे।'

फ़ायदा : हज़रत बिलाल बिन अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमाने नबवी के मुक़ाबले में अपनी ज़ाती राय को पेश किया तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उसे सख़्त सरज़निश व तादीब की और बुरा-भला कहा। बल्कि कुछ रिवायात में आया है, मौत तक उससे बातचीत नहीं की। इससे साबित होता है जो इंसान हदीसे नबवी के मुक़ाबले में अपनी या किसी की राय और क़ियास पेश करे वो सरज़निश व तादीब का मुस्तहिक़ है अगरचे कितना ही बड़ा क्यों न हो।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي وَابْنُ، إِدْرِيسَ قَالاَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَمْنَعُوا إِمَاءَ اللَّهِ مَسَاجِدَ اللَّهِ " .

(990) हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह की बान्दियों को अल्लाह की मसाजिद से न रोको।'

حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا حَنْظَلَةُ، قَالَ سَمِعْتُ سَالِمًا، يَقُولُ سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ، يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِذَا اسْتَأْذَنَكُمْ نِسَاؤُكُمْ إِلَى الْمَسَاجِدِ فَأْذَنُوا لَهُنَّ " .

(991) हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना, 'जब तुम्हारी बीवियाँ तुमसे मसाजिद में (नमाज़ के लिये) जाने की इजाज़त माँगें तो उन्हें इजाज़त दे दो।'

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ تَمْنَعُوا النِّسَاءَ مِنَ الْخُرُوجِ إِلَى الْمَسَاجِدِ بِاللَّيْلِ " . فَقَالَ ابْنٌ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ لاَ نَدَعُهُنَّ يَخْرُجْنَ فَيَتَّخِذْنَهُ دَغَلاً . قَالَ فَزَجَرَهُ ابْنُ عُمَرَ وَقَالَ أَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَتَقُولُ لاَ نَدَعُهُنَّ .

(992) हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'रात को औ़रतों को मस्जिदों में जाने से न रोको।' तो उनके एक बेटे ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से कहा, हम उनको जाने नहीं देंगे कि वो उसको ख़राबी और बिगाड़ का ज़रिया बना लें। रावी ने कहा, इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने उसे ख़ूब डांटा और कहा, मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़रमान बताता हूँ और तू कहता है हम उन्हें जाने नहीं देंगे।

(सहीह बुख़ारी : 899, अबू दाऊद : 568, तिर्मिज़ी : 571)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) दग़ल : फ़साद, व बिगाड़, ख़यानत, धोखा। **(2) ज़जरह :** झिड़का, डांट पिलाई।

फ़ायदा : उस दौर में रात का वक़्त तारीकी और ज़ुल्मत का मौक़ा व महल था, जिसमें ख़राबी और बिगाड़ का अन्देशा ज़्यादा होता है तो अगर रात को जाने की इजाज़त दी जायेगी तो दिन को तो बिल औला जाने की इजाज़त होगी।

حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ .

(993) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، وَابْنُ، رَافِعٍ قَالاَ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، حَدَّثَنِي وَرْقَاءُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " ائْذَنُوا لِلنِّسَاءِ بِاللَّيْلِ إِلَى الْمَسَاجِدِ " . فَقَالَ ابْنٌ لَهُ يُقَالُ لَهُ وَاقِدٌ إِذًا يَتَّخِذْنَهُ دَغَلاً . قَالَ فَضَرَبَ فِي صَدْرِهِ وَقَالَ أُحَدِّثُكَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَتَقُولُ لاَ .

(994) हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'औरतों को रात को मस्जिदों की तरफ़ निकलने की इजाज़त दो।' तो उनके बेटे ने कहा, जिसको वाक़िद कहा जाता है, तब वो इसको ख़यानत व फ़साद का ज़रिया बना लेंगी। रावी ने बताया ये सुनकर इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने उसके सीने पर मारा और कहा, मैं तुम्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़रमान बता रहा हूँ और तू कहता है नहीं।

फ़ायदा : इंकार का आग़ाज़ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) के बेटे बिलाल ने किया और वाक़िद ने उसकी ताईद की और दलील के तौर पर अपनी बात को पुख़्ता करने के लिये कहा, इस इजाज़त को वो ख़राबी और फ़साद का ज़रिया बना लेंगी।

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِئُ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، - يَعْنِي ابْنَ أَبِي أَيُّوبَ - حَدَّثَنَا كَعْبُ بْنُ عَلْقَمَةَ، عَنْ بِلاَلِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " لاَ تَمْنَعُوا النِّسَاءَ حُظُوظَهُنَّ مِنَ

(995) हज़रत बिलाल बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर अपने बाप से रिवायत बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम औरतों को जब वो तुमसे इजाज़त तलब करें तो उनको मस्जिद के हिस्से से महरूम न करो।' तो बिलाल ने कहा, अल्लाह की क़सम! हम तो उनको ज़रूर रोकेंगे। तो अ़ब्दुल्लाह बिन

الْمَسَاجِدِ إِذَا اسْتَأْذَنُوكُمْ " فَقَالَ بِلاَلٌ وَاللَّهِ لَنَمْنَعُهُنَّ . فَقَالَ لَهُ عَبْدُ اللَّهِ أَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَتَقُولُ أَنْتَ لَنَمْنَعُهُنَّ .

उमर (रज़ि.) ने उसे कहा, मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़रमान बयान कर रहा हूँ और तू कहता है हम ज़रूर रोकेंगे।

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي مَخْرَمَةُ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، أَنَّ زَيْنَبَ الثَّقَفِيَّةَ، كَانَتْ تُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " إِذَا شَهِدَتْ إِحْدَاكُنَّ الْعِشَاءَ فَلاَ تَطَيَّبْ تِلْكَ اللَّيْلَةَ " .

(996) हज़रत ज़ैनब सक़फ़िय्या (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से किसी को इशा की नमाज़ के लिये (मस्जिद) जाना हो तो वो उस रात ख़ुश्बू न लगाये।'

(नसाई : 8/154-155)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الْقَطَّانُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَجْلاَنَ، حَدَّثَنِي بُكَيْرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الأَشَجِّ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ زَيْنَبَ، امْرَأَةِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَتْ قَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا شَهِدَتْ إِحْدَاكُنَّ الْمَسْجِدَ فَلاَ تَمَسَّ طِيبًا " .

(997) हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) की बीवी ज़ैनब (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें फ़रमाया, 'तुम में से जिनको मस्जिद जाना हो वो ख़ुश्बू इस्तेमाल न करे।'

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي فَرْوَةَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ خُصَيْفَةَ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَيُّمَا امْرَأَةٍ أَصَابَتْ بَخُورًا فَلاَ تَشْهَدْ مَعَنَا الْعِشَاءَ الآخِرَةَ " .

(998) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिस औरत ने ख़ुश्बू लगाई हो वो हमारे साथ इशा की नमाज़ में शरीक न हो।'

(अबू दाऊद : 4175, नसाई : 8/154)

फ़ायदा : औरत चिराग़े ख़ाना है, शम्अे महफ़िल नहीं है। इसलिये वो इजाज़त के बग़ैर अपने घर से नहीं निकल सकती और उसको मस्जिद में भी जाना हो तो इजाज़त से जायेगी और कोई ऐसी चीज़ इस्तेमाल नहीं कर सकेगी, जिससे महक फूटती हो, लेकिन अफ़सोस का मक़ाम है कि आज औरत

ख़ूब मेकअप करके या ब्यूटीपार्लरों से करवा के हर जगह बेपर्दा हो कर आ जा रही है और उसको कोई रोकने-टोकने वाला नहीं है लेकिन मसाजिद से रोकने वाले मौजूद हैं।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، - يَعْنِي ابْنَ بِلاَلٍ - عَنْ يَحْيَى، - وَهُوَ ابْنُ سَعِيدٍ - عَنْ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهَا سَمِعَتْ عَائِشَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم تَقُولُ لَوْ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَأَى مَا أَحْدَثَ النِّسَاءُ لَمَنَعَهُنَّ الْمَسْجِدَ كَمَا مُنِعَتْ نِسَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ . قَالَ فَقُلْتُ لِعَمْرَةَ أَنِسَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ مُنِعْنَ الْمَسْجِدَ قَالَتْ نَعَمْ .

(999) नबी (ﷺ) की बीवी आइशा (रज़ि.) फ़रमाती थीं, आज औरतों ने जो नये अन्दाज़ (बनाव-श्रृंगार के लिये) निकाल लिये हैं, अगर रसूलुल्लाह (ﷺ) इन्हें देख लेते तो इन्हें मस्जिद में आने से रोक देते। जैसाकि बनू इस्राईल की औरतों को रोक दिया गया था। तो मैंने अम्रह से पूछा, क्या बनू इस्राईल की औरतों को मस्जिद में आने से रोक दिया गया था? उसने कहा, हाँ!

(सहीह बुख़ारी : 869, अबू दाऊद : 569)

फ़ायदा : हज़रत आइशा (रज़ि.) ने औरतों के चाल-चलन, उनके ज़ैबो-ज़ीनत और बनाव-सिंघार को देख कर फ़रमाया था, अगर नबी (ﷺ) औरतों की इस हालत को देख लेते तो औरतों को मस्जिदों में हाज़िर होने से रोक देते। ये बात ख़ैरुल कुरून के दौर की है। अगर आज के हालात आइशा (रज़ि.) देख लेतीं तो उन पर क्या गुज़रती। अगर ऐसी सूरते हाल में मस्जिदों में जाना दुरुस्त नहीं है तो क्या क्लबों, शॉपिंग सेंटरों, हवाईजहाजों, टेनों, मख़्लूत तालीम की क्लासों, होटलों, बैंकों, अस्पतालों, ऑफिसों और तफ़रीहगाहों में जाना जाइज़ होगा? लेकिन अफ़सोस हज़रत आइशा (रज़ि.) का ये क़ौल सिर्फ़ मस्जिदों में हाज़िरी के वक़्त याद आता है और किसी जगह इसको याद करने की ज़रूरत महसूस नहीं की जाती। जबकि असल सूरते हाल ये है कि अगरचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये हालात नहीं देखे लेकिन अल्लाह तआला जो अल्लामुल गुयूब है उसको तो इन हालात का पता था, उसने अपने रसूल को क्यों ये हुक्म न दिया कि इस क़िस्म के हालात पैदा हो जायेंगे, इसलिये तुम औरतों को मस्जिदों से रोक दो।

इसके अलावा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़ुद भी नहीं रोका। क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये ज़माना न पाया और न मना फ़रमाया और शरीअत के अहकाम किसी की राय और क़ियास से नहीं बदल सकते। इसलिये औरतों को मस्जिदों से रोकने की बजाय, दूसरी फ़साद की जगहों से रोका जाये और मस्जिदों में आने के लिये शरई आदाब की तल्क़ीन की जाये। इसके अलावा बनाव-सिंघार और मेकअप, सब औरतें तो नहीं करतीं, सबको क्यों रोका जाता है और इस्राईली औरतों को शरीअत के ज़रिये रोका गया था न कि किसी शख़्स की राय और क़ियास से। नीज़ इस हदीस से साबित हुआ हज़रत आइशा (रज़ि.) आपको आलिमुल ग़ैब नहीं समझती थीं, वरना ये न फ़रमातीं, अगर देख लेते।

(1000) हमें मुहम्मद बिन मुसन्ना ने अब्दुल वह्हाब (सक़फ़ी) से नीज़ हमें अम्र नाक़िद ने सुफ़ियान बिन उयय्ना से नीज़ हमें अबू बक्र बिन शैबा ने अबू ख़ालिद अहमर से नीज़ हमें इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने ईसा बिन यूनुस से और उन सबने यहया बिन सईद की इसी सनद से यही हदीस सुनाई।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ يَعْنِي الثَّقَفِيَّ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، كُلُّهُمْ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ .

बाब 31 : जहरी नमाज़ों में जब बुलंद क़िरअत से फ़साद का अन्देशा हो तो क़िरअत जहरन और आहिस्ता के दरम्यान यानी दरम्यानी आवाज़ से की जायेगी

باب التَّوَسُّطِ فِي الْقِرَاءَةِ فِي الصَّلاَةِ الْجَهْرِيَّةِ بَيْنَ الْجَهْرِ وَالإِسْرَارِ إِذَا خَافَ مِنَ الْجَهْرِ مَفْسَدَةً

(1001) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से अल्लाह तआला के फ़रमान, ला तज्हर बिसलातिक वला तुख़ाफ़ित बिहा (सूरह बनी इस्राईल : 110) के बारे में रिवायत है कि ये आयत उस वक़्त उतरी जबकि रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्का में छिपकर इबादत करते थे। जब आप अपने साथियों को जमाअत कराते तो क़िरअत बुलंद आवाज़ से करते थे। मुश्रिक जब ये क़िरअत सुनते तो क़ुरआन को, क़ुरआन मजीद नाज़िल करने वाले को और उसको लाने वाले को बुरा-भला कहते। इस पर अल्लाह तआला ने अपने नबी को हिदायत की कि अपनी नमाज़ में क़िरअत को

حَدَّثَنَا أَبُو جَعْفَرٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ وَعَمْرٌو النَّاقِدُ جَمِيعًا عَنْ هُشَيْمٍ، - قَالَ ابْنُ الصَّبَّاحِ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، - أَخْبَرَنَا أَبُو بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، فِي قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ { وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا} قَالَ نَزَلَتْ وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مُتَوَارٍ بِمَكَّةَ فَكَانَ إِذَا صَلَّى بِأَصْحَابِهِ رَفَعَ صَوْتَهُ بِالْقُرْآنِ فَإِذَا سَمِعَ ذَلِكَ الْمُشْرِكُونَ سَبُّوا الْقُرْآنَ وَمَنْ أَنْزَلَهُ وَمَنْ جَاءَ

بِهِ فَقَالَ اللَّهُ تَعَالَى لِنَبِيِّهِ صلى الله عليه وسلم { وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ} فَيَسْمَعَ الْمُشْرِكُونَ قِرَاءَتَكَ { وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا} عَنْ أَصْحَابِكَ أَسْمِعْهُمُ الْقُرْآنَ وَلاَ تَجْهَرْ ذَلِكَ الْجَهْرَ وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلاً يَقُولُ بَيْنَ الْجَهْرِ وَالْمُخَافَتَةِ .

न इस क़द्र बुलंद करो कि आपकी क़िरअत मुश्रिकों को सुनाई दे और न इतना आहिस्ता पढ़ें कि आपके साथी भी न सुन सकें। उन्हें क़िरअत सुनाओ लेकिन इस क़द्र बुलंद न करो (कि मुश्रिक सुनें) और उनके दरम्यान की राह इख़्तियार करो। मक़सद ये है कि बुलंद और आहिस्ता के दरम्यान रहो।

(सहीह बुख़ारी : 4722, 7490, 7725, 7547, तिर्मिज़ी : 3145, 3146, नसाई : 2/178, 1/320)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ زَكَرِيَّاءَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، فِي قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ { وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا} قَالَتْ أُنْزِلَ هَذَا فِي الدُّعَاءِ .

(1002) हज़रत आइशा (रज़ि.) से अल्लाह तआला के फ़रमान, 'न अपनी क़िरअत को बुलंद कर और न आहिस्ता' के बारे में रिवायत है कि ये आयत दुआ के बारे में उतरी है।

फ़ायदा : नमाज़ में क़िरअत और दुआ, नमाज़ में हो या नमाज़ से बाहर उनको मौक़ा और महल के मुताबिक़ बुलंद किया जायेगा। जहरी नमाज़ों में क़िरअत और दुआए क़ुनूत बुलंद आवाज़ से होगी। ताकि मुक़्तदियों तक आवाज़ पहुँच सके। इसी तरह ज़रूरत के मौक़े पर इज्तिमाई दुआ में इमाम आवाज़ कुछ न कुछ बुलंद करेगा। लेकिन कहीं भी ऐतदाल व तवस्सुत (दरम्याना पन) को नज़र अन्दाज़ नहीं करेगा।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، وَوَكِيعٌ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، كُلُّهُمْ عَنْ هِشَامٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ .

(1003) इमाम साहब अपने और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

बाब 32 : क़िरअत को बग़ौर सुनना

باب الاِسْتِمَاعِ لِلْقِرَاءَةِ

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ كُلُّهُمْ عَنْ جَرِيرٍ، - قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ عَبْدِ الْحَمِيدِ، - عَنْ مُوسَى بْنِ أَبِي عَائِشَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، فِي قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ { لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ} قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم إِذَا نَزَلَ عَلَيْهِ جِبْرِيلُ بِالْوَحْىِ كَانَ مِمَّا يُحَرِّكُ بِهِ لِسَانَهُ وَشَفَتَيْهِ فَيَشْتَدُّ عَلَيْهِ فَكَانَ ذَلِكَ يُعْرَفُ مِنْهُ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى { لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ} أَخْذَهُ { إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ} إِنَّ عَلَيْنَا أَنْ نَجْمَعَهُ فِي صَدْرِكَ . وَقُرْآنَهُ فَتَقْرَأُهُ { فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ} قَالَ أَنْزَلْنَاهُ فَاسْتَمِعْ لَهُ { إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ} أَنْ نُبَيِّنَهُ بِلِسَانِكَ فَكَانَ إِذَا أَتَاهُ جِبْرِيلُ أَطْرَقَ فَإِذَا ذَهَبَ قَرَأَهُ كَمَا وَعَدَهُ اللَّهُ .

(1004) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से अल्लाह तआ़ला के फ़रमान, 'ला तुहर्रिक बिही लिसानक' (सूरह क़ियामह 16) के बारे में रिवायत है कि जब जिब्रईल (अ़लै.) नबी (ﷺ) के पास वह्य लेकर आते तो आप अपनी ज़बान और होंटों को हिलाया करते थे और आप पर ये बहुत सख़्त गुज़रता और ये आप के चेहरे से मालूम हो जाता। इस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयतें उतारीं, 'आप इसको जल्दी-जल्दी लेने के लिये अपनी ज़बान को न हिलायें, बेशक इसका जमा कर देना और इसका पढ़वाना हमारे ज़िम्मे है।' यानी क़ुरआन आपके सीने में जमा कर देना और इसको पढ़वाना कि आप पढ़ सकें हमारे ज़िम्मे हैं। पस जब हम इसको पढ़ें तो आप उसके पीछे पढ़ें। यानी जब हम इसको नाज़िल करें तो आप इसको ग़ौर से सुनें फिर उसका बयान कर देना भी हमारे ज़िम्मे है। यानी ये भी हमारे ज़िम्मे है कि हम उसे आपकी ज़बान से (लोगों के सामने) बयान करा दें। इसलिये जब जिब्रईल (अ़लै.) वह्य लेकर आते तो आप गर्दन झुका कर बैठ जाते और जब वो चले जाते तो आप अल्लाह के वादे के मुताबिक़ पढ़ना शुरू कर देते।

(सहीह बुख़ारी : 4,5,4927, 4928, 4929, 5044, 7524,तिर्मिज़ी : 3329)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ مُوسَى بْنِ أَبِي عَائِشَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، فِي قَوْلِهِ { لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ} قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يُعَالِجُ مِنَ التَّنْزِيلِ شِدَّةً كَانَ يُحَرِّكُ شَفَتَيْهِ - فَقَالَ لِيَ ابْنُ عَبَّاسٍ أَنَا أُحَرِّكُهُمَا كَمَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُحَرِّكُهُمَا . فَقَالَ سَعِيدٌ أَنَا أُحَرِّكُهُمَا كَمَا كَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ يُحَرِّكُهُمَا . فَحَرَّكَ شَفَتَيْهِ - فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى { لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ * إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ} قَالَ جَمْعَهُ فِي صَدْرِكَ ثُمَّ تَقْرَأُهُ { فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ} قَالَ فَاسْتَمِعْ وَأَنْصِتْ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا أَنْ تَقْرَأَهُ قَالَ فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا أَتَاهُ جِبْرِيلُ اسْتَمَعَ فَإِذَا انْطَلَقَ جِبْرِيلُ قَرَأَهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم كَمَا أَقْرَأَهُ .

(1005) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की अल्लाह के फ़रमान, 'इसको जल्दी-जल्दी लेने के लिये अपनी ज़बान न हिलायें' के बारे में रिवायत है कि नबी (ﷺ) वह्य के नुज़ूल से बहुत मशक़्क़त बर्दाश्त करते थे। आप (वह्य के लेने के लिये) अपने होंट हिलाते थे। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने मुझे कहा, मैं तुम्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरह होंट हिलाकर दिखाता हूँ और सईद ने अपने शागिर्द को कहा, मैं अपने होंटों को इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की तरह तुम्हें हिलाकर दिखाता हूँ। फिर अपने होंट हिलाये। इस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत उतारी, 'इसको जल्दी-जल्दी लेने के लिये अपनी ज़बान न हिलायें, बेशक इसको जमा कर देना और पढ़वा देना हमारे ज़िम्मे है।' यानी इसको आपके सीने में जमा देना और पढ़ा देना हमारे ज़िम्मे है।' फिर जब हम इसको (जिब्रईल की ज़बान से) पढ़ें तो आप इसको उसके पीछे पढ़ें' यानी उसको ग़ौर से सुनें और ख़ामोश रहें। फिर उसको आपको पढ़ाना हमारे ज़िम्मे है। (उसके बाद) जब आपके पास जिब्रईल (अ़लै.) वह्य लेकर आते आप ग़ौर से सुनते और जब जिब्रईल (अ़लै.) चले जाते तो आप उसकी क़िरअत के मुताबिक़ पढ़ते।

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) मिम्मा युहर्रिक बिही : मिम्मा कसीरुम्मा, बहुत के मानी में है या ये मक़सद है कि ज़बान को हरकत देना, आपका मामूल और आ़दत बन गया था। **(2) युअ़रफ़ु ज़ालिक मिन्हु :** वह्य की शिद्दत के आसार आपके चेहरे पर नुमायाँ हो जाते थे और आपकी

मशक़्क़त महसूस हो जाती थी। **(3) युआलिजु मिनत्तन्ज़ीलि शिद्दतन :** वह्य के नुज़ूल से आपको सख़्ती झेलनी पड़ती और आप उसकी मशक़्क़त बर्दाश्त करते। **(4) इस्तमिअ व अन्सित :** कान लगाओ ग़ौर से सुनो और सुकूत (ख़ामोशी) इख़्तियार करो।

फ़ायदा : जिस तरह रसूलुल्लाह (ﷺ) को कुरआन मजीद सुनने की हिदायत व तल्क़ीन फ़रमाई गई है, उसी तरह आपकी उम्मत को भी यही तल्क़ीन की गई है कि वो कुरआन मजीद को बग़ौर सुने। इसलिये क़िरअते क़ुरआन की मजालिस में पूरी यकसूई से दिल लगाकर कुरआन मजीद सुनना चाहिये और जहाँ लोग अपने कारोबार में मसरूफ़ हों और क़िरअत की तरफ़ तवज्जह न कर सकते हों, वहाँ स्पीकर लगाकर बुलंद आवाज़ से क़िरअत करने से बचना चाहिये।

बाब 33 : सुबह की नमाज़ में बुलंद आवाज़ से क़िरअत करना और जिन्नों को कुरआन सुनाना

باب الْجَهْرِ بِالْقِرَاءَةِ فِي الصُّبْحِ وَالْقِرَاءَةِ عَلَى الْجِنِّ

(1006) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने न जिन्नों को कुरआन सुनाया और न उनको देखा (असल वाक़िया ये है) कि एक मर्तबा अपने कुछ साथियों के साथ उकाज़ के बाज़ार की तरफ़ गये। उन दिनों आसमानी ख़बर और शैतानों के दरम्यान रुकावट पैदा हो चुकी थी (शैतान आसमानी ख़बरें नहीं सुन सकते थे) और उन पर अंगारे (शिहाबुन स़ाक़िब) फेंके जाने लगे थे। तो शयातीन अपनी क़ौम के पास वापस आये। उन्होंने पूछा, क्या बात हुई? उन्होंने कहा, हमें आसमान की ख़बर लेने से रोक दिया गया है और हम पर अंगारे फेंके जाते हैं। उन्होंने कहा, तुम्हारे और आसमानी ख़बर के दरम्यान कोई नई चीज़ हाइल हुई है। इसलिये

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ مَا قَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى الْجِنِّ وَمَا رَآهُمُ انْطَلَقَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي طَائِفَةٍ مِنْ أَصْحَابِهِ عَامِدِينَ إِلَى سُوقِ عُكَاظٍ وَقَدْ حِيلَ بَيْنَ الشَّيَاطِينِ وَبَيْنَ خَبَرِ السَّمَاءِ وَأُرْسِلَتْ عَلَيْهِمُ الشُّهُبُ فَرَجَعَتِ الشَّيَاطِينُ إِلَى قَوْمِهِمْ فَقَالُوا مَا لَكُمْ قَالُوا حِيلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَ خَبَرِ السَّمَاءِ وَأُرْسِلَتْ

عَلَيْنَا الشُّهُبُ . قَالُوا مَا ذَاكَ إِلاَّ مِنْ شَيْءٍ حَدَثَ فَاضْرِبُوا مَشَارِقَ الأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا فَانْظُرُوا مَا هَذَا الَّذِي حَالَ بَيْنَنَا وَبَيْنَ خَبَرِ السَّمَاءِ . فَانْطَلَقُوا يَضْرِبُونَ مَشَارِقَ الأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا فَمَرَّ النَّفَرُ الَّذِينَ أَخَذُوا نَحْوَ تِهَامَةَ - وَهُوَ بِنَخْلٍ - عَامِدِينَ إِلَى سُوقِ عُكَاظٍ وَهُوَ يُصَلِّي بِأَصْحَابِهِ صَلاَةَ الْفَجْرِ فَلَمَّا سَمِعُوا الْقُرْآنَ اسْتَمَعُوا لَهُ وَقَالُوا هَذَا الَّذِي حَالَ بَيْنَنَا وَبَيْنَ خَبَرِ السَّمَاءِ . فَرَجَعُوا إِلَى قَوْمِهِمْ فَقَالُوا يَا قَوْمَنَا { إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا * يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَنْ نُشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا} فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ عَلَى نَبِيِّهِ مُحَمَّدٍ صلى الله عليه وسلم { قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِنَ الْجِنِّ} .

तुम ज़मीन के मश्रिक़ और मग़्रिब में फैल जाओ और देखो ये हमारे और आसमानी ख़बर के दरम्यान हाइल होने वाली चीज़ क्या है? (किस सबब और वजह से हमें आसमानी ख़बरें सुनने से रोक दिया गया है) इस पर वो निकलकर ज़मीन के मश्रिक़ और मग़्रिब में फैल गये। तो जिस गिरोह ने तिहामा का रुख़ किया था वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास से गुज़रे और आप नख़्ल नामी जगह में उकाज़ के बाज़ार की तरफ़ जाते हुए अपने साथियों को सुबह की नमाज़ पढ़ा रहे थे। तो जब जिन्नों ने क़ुरआन सुना, उस पर कान लगा दिये और कहने लगे, यही वो चीज़ है जो हमारे और आसमानी ख़बरों के दरम्यान हाइल हो चुकी है। उसके बाद वो अपनी क़ौम के पास वापस आ गये और कहने लगे, ऐ हमारी क़ौम! हमने हैरत अंगेज़ क़ुरआन सुना है, जो सीधी राह की तरफ़ रहनुमाई करता है। इसलिये हम उस पर ईमान ले आये हैं और हम अपने रब के साथ हर्गिज़ किसी को शरीक नहीं ठहराते। उस वक़्त अल्लाह तआला ने अपने नबी मुहम्मद (ﷺ) पर ये आयत उतारी, 'फ़रमा दीजिये! मुझ पर वह्य उतारी गई है, वाक़िया ये है कि जिन्नों की एक जमाअत ने क़ुरआन सुना।' (सूरह जिन्न 4)
(सहीह बुख़ारी : 773, 492, तिर्मिज़ी : 3323)

तम्बीह : मुस्लिम की हदीस़ में जगह का नाम नख़्ल आया है और बुख़ारी में नख़्ला और सहीह नख़्ला ही है और सूक़े उकाज़ (उकाज़ बाज़ार), नख़्ला और ताइफ़ के दरम्यान था। जो ज़िल्क़अदा के आग़ाज़ में बीस दिन तक एक मैले की सूरत में लगता था।

(1007) हज़रत आमिर (रह.) से रिवायत है कि मैंने अल्क़मा से पूछा, क्या लैलतुल जिन्न (जिन्नों से मुलाक़ात की रात) अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे? तो अल्क़मा ने जवाब दिया, मैंने ख़ुद इब्ने मसऊद (रज़ि.) से पूछा कि क्या तुममें से कोई एक लैलतुल जिन्न रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हाज़िर था? उन्होंने कहा, नहीं। लेकिन एक रात हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे तो आप हम से गुम हो गये। तो हमने आपको पहाड़ी वादियों और दर्रों (घाटियों) में तलाश किया। (आप न मिले) तो हम ने समझा कि आपको जिन्न उड़ा ले गये हैं या आपको चुपके से पोशीदा तौर पर क़त्ल कर दिया गया है। तो हमने इन्तिहाई परेशानी के साथ बदतरीन रात गुज़ारी। जो कोई क़ौम बेचैनी के साथ गुज़ारती है। जब सुबह हुई तो हमने अचानक देखा कि आप ग़ारे हिरा की तरफ़ से तशरीफ़ ला रहे हैं। तो हम ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! हमने आपको गुम पाया तो तलाश शुरू कर दी, लेकिन आप न मिले तो हमने रात इन्तिहाई बेचैनी और परेशानी के साथ गुज़ारी है। जो कोई क़ौम सख़्त कर्ब के साथ गुज़ारती है। इस पर आपने फ़रमाया, 'मेरे पास जिन्नों की तरफ़ से दावत देने वाला आया। तो मैं उसके साथ चला गया और मैंने उनको क़ुरआन सुनाया।' और आप हमें लेकर गये और हमें उनके क़दमों के निशान और उनकी आग के निशानात

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، عَنْ دَاوُدَ، عَنْ عَامِرٍ، قَالَ سَأَلْتُ عَلْقَمَةَ هَلْ كَانَ ابْنُ مَسْعُودٍ شَهِدَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَيْلَةَ الْجِنِّ قَالَ فَقَالَ عَلْقَمَةُ أَنَا سَأَلْتُ ابْنَ مَسْعُودٍ فَقُلْتُ هَلْ شَهِدَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَيْلَةَ الْجِنِّ قَالَ لاَ وَلَكِنَّا كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ لَيْلَةٍ فَفَقَدْنَاهُ فَالْتَمَسْنَاهُ فِي الأَوْدِيَةِ وَالشِّعَابِ فَقُلْنَا اسْتُطِيرَ أَوِ اغْتِيلَ - قَالَ - فَبِتْنَا بِشَرِّ لَيْلَةٍ بَاتَ بِهَا قَوْمٌ فَلَمَّا أَصْبَحْنَا إِذَا هُوَ جَاءٍ مِنْ قِبَلِ حِرَاءٍ - قَالَ - فَقُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَدْنَاكَ فَطَلَبْنَاكَ فَلَمْ نَجِدْكَ فَبِتْنَا بِشَرِّ لَيْلَةٍ بَاتَ بِهَا قَوْمٌ . فَقَالَ " أَتَانِي دَاعِي الْجِنِّ فَذَهَبْتُ مَعَهُ فَقَرَأْتُ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنَ " . قَالَ فَانْطَلَقَ بِنَا فَأَرَانَا آثَارَهُمْ وَآثَارَ نِيرَانِهِمْ وَسَأَلُوهُ الزَّادَ فَقَالَ " لَكُمْ كُلُّ عَظْمٍ ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ يَقَعُ فِي أَيْدِيكُمْ

أَوْفَرَ مَا يَكُونُ لَحْمًا وَكُلُّ بَعَرَةٍ عَلَفٌ لِدَوَابِّكُمْ " . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " فَلاَ تَسْتَنْجُوا بِهِمَا فَإِنَّهُمَا طَعَامُ إِخْوَانِكُمْ " .

दिखाये। जिन्नों ने आपसे ज़ाद (ख़ूराक) की दरख़्वास्त की तो आपने फ़रमाया, 'हर वो जानवर जिसको अल्लाह के नाम से ज़िब्ह किया गया होगा उसकी जो हड्डी तुम्हें मिलेगी उस पर वाफ़िर गोश्त होगा और ऊँट की हर मींगनी तुम्हारे जानवरों का चारह यानी ख़ूराक होगी।' फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इन दोनों चीज़ों से इस्तिन्जा न करना क्योंकि ये दोनों तुम्हारे भाइयों का खाना हैं।'

(अबू दाऊद : 85, तिर्मिज़ी : 3258)

وَحَدَّثَنِيهِ عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ دَاوُدَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ إِلَى قَوْلِهِ وَآثَارَ نِيرَانِهِمْ . قَالَ الشَّعْبِيُّ وَسَأَلُوهُ الزَّادَ وَكَانُوا مِنْ جِنِّ الْجَزِيرَةِ . إِلَى آخِرِ الْحَدِيثِ مِنْ قَوْلِ الشَّعْبِيِّ مُفَصَّلاً مِنْ حَدِيثِ عَبْدِ اللَّهِ .

(1008) इमाम साहब ने मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत एक और सनद से बयान की और कहा, शअ़बी ने बताया, जिन्नों ने आपसे ख़ूराक का सवाल किया और वो जज़ीरह के इलाक़े के थे। आगे हदीस़ के आख़िर तक शअ़बी का क़ौल है। जो अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) की हदीस़ से अलग है।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ، عَنْ دَاوُدَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى قَوْلِهِ وَآثَارَ نِيرَانِهِمْ . وَلَمْ يَذْكُرْ مَا بَعْدَهُ .

(1009) इमाम साहब ने मज़्कूरा बाला रिवायत एक और सनद से हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से मरफ़ूअ़न आस़ार नीरानिहिम तक नक़ल की और बाद वाला हिस्सा बयान नहीं किया।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي مَعْشَرٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ لَمْ أَكُنْ لَيْلَةَ الْجِنِّ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَوَدِدْتُ أَنِّي كُنْتُ مَعَهُ .

(1010) हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि मैं लैलतुल जिन्न रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ न था और मेरी ख़्वाहिश है, ऐ काश! मैं आपके साथ होता।

(सहीह बुख़ारी : 3859)

(1011) मअ़्न से रिवायत है कि मैंने अपने बाप से सुना कि मसरूक़ से पूछा, जिस तरह जिन्नों ने क़ुरआन कान लगाकर सुना, उसकी इत्तिलाअ़ नबी (ﷺ) को किसने दी? उसने बताया कि मुझे तुम्हारे बाप (इब्ने मसऊ़द) ने बताया कि आपको जिन्नों (के सुनने) की इत्तिलाअ़ दरख़्त ने दी थी।

(सहीह बुख़ारी : 759, 762, 776, 778, 779, अबू दाऊद : 798, 799, 800,नसाई : 2/164, 974, 975, 829)

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجَرْمِيُّ، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ مَعْنٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَبِي قَالَ، سَأَلْتُ مَسْرُوقًا مَنْ آذَنَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم بِالْجِنِّ لَيْلَةَ اسْتَمَعُوا الْقُرْآنَ فَقَالَ حَدَّثَنِي أَبُوكَ - يَعْنِي ابْنَ مَسْعُودٍ - أَنَّهُ آذَنَتْهُ بِهِمْ شَجَرَةٌ .

तम्बीह : अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) की रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जिन्नों को न क़ुरआन सुनाया और न देखा। ये तो इब्तिदाई दौर का वाक़िया है, जिसमें जिन्न ख़ुद आकर क़ुरआन सुन कर चले गये और अपनी क़ौम को जा कर सूरते हाल से आगाह किया और अपने ईमान व अ़क़ीदे का भी इज़हार किया। जिसकी इत्तिलाअ़ आपको वह्य के ज़रिये दी गई और अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की हदीस़ का वाक़िया बाद का है। जब इस्लाम फैल गया था और जिन्न ख़ुद आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और क़ुरआन सुनने की ख़्वाहिश का इज़हार किया और आप साथियों को बताये बग़ैर चले गये। जिसकी वजह से सहाबा किराम (रज़ि.) सख़्त बेचैनी और इज़्तिराब का शिकार हो गये और लैलतुल जिन्न क़ुरआन के इस्तिमाअ़ की ख़बर दरख़्त ने भी दे दी। जिससे स़ाबित होता है कि अल्लाह तआ़ला कभी नबातात को भी क़ुव्वते तमीज़ इनायत फ़रमाता है और उनको क़ुव्वते गोयाई देता है जिसको अल्लाह तआ़ला जैसे चाहे समझा देता है और वो नबातात व जमादात की बात को समझ लेता है।

बाब 34 : ज़ुहर और अ़सर में क़िरअत

باب الْقِرَاءَةِ فِي الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ

(1012) हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमें नमाज़ पढ़ाते तो ज़ुहर और अ़सर की पहली दो रकअ़तों में सूरह फ़ातिहा और हर रकअ़त में कोई एक सूरत पढ़ते और कभी-कभी हमें भी कोई आयत सुना देते और ज़ुहर की पहली

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى الْعَنَزِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنِ الْحَجَّاجِ، - يَعْنِي الصَّوَّافَ - عَنْ يَحْيَى، - وَهُوَ ابْنُ أَبِي كَثِيرٍ - عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ، وَأَبِي، سَلَمَةَ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه

وسلم يُصَلِّي بِنَا فَيَقْرَأُ فِي الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الأُولَيَيْنِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَسُورَتَيْنِ وَيُسْمِعُنَا الآيَةَ أَحْيَانًا وَكَانَ يُطَوِّلُ الرَّكْعَةَ الأُولَى مِنَ الظُّهْرِ وَيُقَصِّرُ الثَّانِيَةَ وَكَذَلِكَ فِي الصُّبْحِ .

रकअ़त लम्बी करते और दूसरी रकअ़त छोटी करते और सुबह की नमाज़ में भी ऐसा ही करते।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا هَمَّامٌ، وَأَبَانُ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَقْرَأُ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الأُولَيَيْنِ مِنَ الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَسُورَةٍ وَيُسْمِعُنَا الآيَةَ أَحْيَانًا وَيَقْرَأُ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الأُخْرَيَيْنِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ .

(1013) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा की अपने बाप से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ज़ुहर और अ़सर की पहली दो रकअ़तों में हर रकअ़त में फ़ातिहा और एक सूरत पढ़ते थे और कभी-कभार बुलंद आवाज़ से पढ़ते थे कि हम भी सुन लेते थे और आख़िरी दो रकअ़तों में सूरह फ़ातिहा पढ़ा करते थे।

(अबू दाऊद : 804, नसाई : 1/237)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ جَمِيعًا عَنْ هُشَيْمٍ، - قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، - عَنْ مَنْصُورٍ، عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ مُسْلِمٍ، عَنْ أَبِي الصِّدِّيقِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ كُنَّا نَحْزِرُ قِيَامَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ فَحَزَرْنَا قِيَامَهُ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الأُولَيَيْنِ مِنَ الظُّهْرِ قَدْرَ قِرَاءَةِ الم تَنْزِيلُ السَّجْدَةِ وَحَزَرْنَا قِيَامَهُ فِي الأُخْرَيَيْنِ قَدْرَ النِّصْفِ مِنْ ذَلِكَ وَحَزَرْنَا قِيَامَهُ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الأُولَيَيْنِ مِنَ الْعَصْرِ عَلَى قَدْرِ قِيَامِهِ فِي الأُخْرَيَيْنِ مِنَ الظُّهْرِ وَفِي الأُخْرَيَيْنِ مِنَ الْعَصْرِ

(1014) अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि हम ज़ुहर और अ़सर में रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़ियाम का अन्दाज़ा लगाते थे तो हमने ज़ुहर की पहली दो रकअ़तों में क़ियाम का अन्दाज़ा अलिफ़-लाम्-मीम तन्ज़ील अस्सजदा की क़िरअत के बक़द्र लगाया और उसकी आख़िरी दो रकअ़तों के क़ियाम का अन्दाज़ा इससे आधा के बक़द्र किया और हमने अ़सर की पहली दो रकअ़तों के क़ियाम का अन्दाज़ा लगाया कि वो ज़ुहर की आख़िरी दो रकअ़तों के बराबर था और अ़सर की आख़िरी दो रकअ़तों का क़ियाम उससे आधा था। अबू बक्र ने अपनी रिवायत में अलिफ़-लाम्-मीम तन्ज़ील का नाम नहीं

عَلَى النِّصْفِ مِنْ ذَلِكَ . وَلَمْ يَذْكُرْ أَبُو بَكْرٍ فِي رِوَايَتِهِ الم تَنْزِيلُ وَقَالَ قَدْرَ ثَلاَثِينَ آيَةً .

लिया और कहा, तीस आयतों के बक़द्र।

मुफ़रदातुल हदीस़ : नहरिज़ु : अन्दाज़ा या तख़्मीना लगाते थे।

फ़वाइद : (1) क़ियाम और रुकूअ व सुजूद की तरह क़ुरआन मजीद की क़िरअत भी नमाज़ का एक बुनियादी रुक्न है और उसका क़ियाम का मौक़ा व महल है। क़िरअत की तर्तीब ये है कि तकबीरे तहरीमा के बाद अल्लाह तआला की हम्दो-सना और तस्बीह व तक़दीस के ज़रिये अपनी अबदियत और बन्दगी का ऐतराफ़ व इज़हार किया जाता है। उसके बाद क़ुरआन मजीद की सबसे पहली सूरत जो पूरे क़ुरआन का ख़ुलासा और निचोड़ है यानी सूरह फ़ातिहा पढ़ी जाती है। जिसमें अल्लाह तआला की हम्द के साथ उसकी सिफ़ात का इन्तिहाई जामेअ और मुअस्सिर बयान भी है और हर क़िस्म के शिर्क की नफ़ी के साथ उसकी तौहीद का इस्बात और इक़रार भी और अपनी अबदियत व मोहताजगी के इज़हार के साथ, उससे सिराते मुस्तक़ीम का सवाल भी और उस राह से हटने और भटकने वालों के अन्जाम से पनाह भी और अपनी इस जामिइयत और ख़ास अज़मत व अहमियत की बिना पर उसका हर रकअत में पढ़ना ज़रूरी है और इसके बग़ैर नमाज़ नहीं होती। इसके बाद नमाज़ी को इजाज़त है कि वो क़ुरआन मजीद की कोई भी बड़ी या छोटी सूरत या किसी सूरत का कोई भी हिस्सा पढ़ सकता है। **(2)** नबी (ﷺ) की आदते मुबारका ये थी कि पहली रकअतों में क़िरअत लम्बी करते थे ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग पूरी नमाज़ में शरीक हो सकें और आख़िरी रकअतों में क़िरअत हल्की या कम फ़रमाते थे। आख़िरी रकअतों में आपने कई बार सिर्फ़ सूरह फ़ातिहा पर भी इक्तिफ़ा फ़रमाया है और सूरह फ़ातिहा के साथ और क़िरअत भी फ़रमाई है। जैसाकि अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) की हदीस से साबित होता है और आपने ये बताने के लिये कि दिन की नमाज़ों में भी क़िरअत है कई बार किसी आयत को बुलंद आवाज़ से भी पढ़ा है। **(3)** हर रकअत में मुस्तक़िल सूरत पढ़ना बेहतर है। इससे बेहतर है कि किसी लम्बी सूरत में से कोई रुकूअ पढ़ा जाये और आख़िरी रकअतों में फ़ातिहा पढ़ना लाज़िम है और किसी सूरत को मिलाना बेहतर है, मगर ये लाज़िम नहीं है।

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنِ الْوَلِيدِ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ أَبِي الصِّدِّيقِ النَّاجِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَقْرَأُ فِي صَلاَةِ الظُّهْرِ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الأُولَيَيْنِ فِي كُلِّ

(1015) अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ज़ुहर की नमाज़ में पहली दो रकअतों में से हर रकअत में तीस आयातों के बक़द्र क़िरअत फ़रमाते थे और आख़िरी दो में पन्द्रह आयतों के बक़द्र या ये कहा कि पहली दो से आधी और असर की

पहली दो रकअतों में हर रकअत में पन्द्रह आयतों के बराबर और आख़िरी दो में उससे आधी।

(सहीह बुख़ारी : 75, 758, 770, अबू दाऊद : 803, नसाई : 1001,1002)

رَكْعَةٍ قَدْرَ ثَلاَثِينَ آيَةً وَفِي الأُخْرَيَيْنِ قَدْرَ خَمْسَ عَشْرَةَ آيَةً أَوْ قَالَ نِصْفَ ذَلِكَ وَفِي الْعَصْرِ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الأُولَيَيْنِ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ قَدْرَ قِرَاءَةِ خَمْسَ عَشْرَةَ آيَةً وَفِي الأُخْرَيَيْنِ قَدْرَ نِصْفِ ذَلِكَ .

फ़ायदा : ज़ुहर की क़िरअत फ़ज्र की क़िरअत की तरह लम्बी है और असर की क़िरअत ज़ुहर से कम है और जिन हदीसों में आया है कि आप ज़ुहर की पहली रकअत और फ़ज्र की पहली रकअत लम्बी करते थे उसकी वजह ये है कि पहली रकअत में क़िरअत से पहले दुआए इस्तिफ़्ताह है इस वजह से वो लम्बी हो जाती है अगरचे क़िरअत दोनों में बराबर है।

(1016) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से रिवायत है कि कूफ़ा वालों ने हज़रत उमर (रज़ि.) से सअद की शिकायत की और उनकी नमाज़ पर ऐतराज़ किया। हज़रत उमर ने उन्हें बुलवाया तो वो आये। हज़रत उमर ने कूफ़ा वालों का जिन्होंने नमाज़ की शिकायत की थी, उसका तज़्किरा किया। तो उन्होंने (सअद) ने कहा, मैं उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरह नमाज़ पढ़ाता हूँ। मैं उसमें कमी नहीं करता। मैं उन्हें पहली दो रकअतें लम्बी पढ़ाता हूँ और आख़िरी दो में कमी करता हूँ। इस पर उमर (रज़ि.) ने फ़रमाया, ऐ अबू इस्हाक़! तुमसे यही उम्मीद थी (तुम्हारे बारे में यही गुमान था)।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، أَنَّ أَهْلَ الْكُوفَةِ، شَكَوْا سَعْدًا إِلَى عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ فَذَكَرُوا مِنْ صَلاَتِهِ فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ عُمَرُ فَقَدِمَ عَلَيْهِ فَذَكَرَ لَهُ مَا عَابُوهُ بِهِ مِنْ أَمْرِ الصَّلاَةِ فَقَالَ إِنِّي لأُصَلِّي بِهِمْ صَلاَةَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَا أَخْرِمُ عَنْهَا إِنِّي لأَرْكُدُ بِهِمْ فِي الأُولَيَيْنِ وَأَحْذِفُ فِي الأُخْرَيَيْنِ . فَقَالَ ذَاكَ الظَّنُّ بِكَ أَبَا إِسْحَاقَ .

मुफ़रदातुल हदीस : (1) ज़करू मिन सलातिही : उनकी नमाज़ की शिकायत की, उस पर ऐतराज़ किया या उसमें ऐब निकाला। **(2) मा अख़िरमु :** ख़रम शिगाफ़ डालने या सूराख़ निकालने को कहते हैं। मुराद है मैं कमी नहीं करता। **(3) अरकुदु :** रुकूद, ठहरने और रुकने को कहते हैं। मुराद

है पहली दो रकअतें लम्बी करता हूँ। (4) अहज़िफु : हल्की करता हूँ और उनमें क़िरअत कम करता हूँ। अबू इस्हाक़ हज़रत सअद (रज़ि.) की कुन्नियत है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ جَرِيرٍ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(1017) इमाम साहब मज़्कूरा बाला रिवायत एक और सनद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي عَوْنٍ، قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ سَمُرَةَ، قَالَ عُمَرُ لِسَعْدٍ قَدْ شَكَوْكَ فِي كُلِّ شَىْءٍ حَتَّى فِي الصَّلاَةِ . قَالَ أَمَّا أَنَا فَأَمُدُّ فِي الأُولَيَيْنِ وَأَحْذِفُ فِي الأُخْرَيَيْنِ وَمَا آلُو مَا اقْتَدَيْتُ بِهِ مِنْ صَلاَةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَقَالَ ذَاكَ الظَّنُّ بِكَ . أَوْ ذَاكَ ظَنِّي بِكَ .

(1018) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने हज़रत सअ़द (रज़ि.) से कहा कि लोगों ने तेरी हर चीज़ यहाँ तक कि नमाज़ पढ़ाने की भी शिकायत की है। हज़रत सअ़द (रज़ि.) ने कहा, रहा मैं तो मैं पहली दो रकअ़तों में क़ियाम लम्बा करता हूँ और आख़िरी दो रकअ़तों में थोड़ा क़ियाम करता हूँ और जिस तरह मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी थी। उसमें कोताही नहीं करता। तो उ़मर (रज़ि.) ने कहा, आपके बारे में यही गुमान था या आपके बारे में मेरा ज़न्न यही था।

मुफ़रदातुल हदीस़ : मा आलू : मैं कमी या कोताही नहीं करता। अला अल्वाअ उलुव्वन कमी या कोताही करना।

وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ بِشْرٍ، عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ، وَأَبِي، عَوْنٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، بِمَعْنَى حَدِيثِهِمْ وَزَادَ فَقَالَ تُعَلِّمُنِي الأَعْرَابُ بِالصَّلاَةِ

(1019) इमाम साहब एक और उस्ताद की सनद से हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) की मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं और उसमें इतना इज़ाफ़ा है कि सअ़द (रज़ि.) ने कहा, ये बदवी मुझे नमाज़ सिखाते हैं।

(नसाई : 972, 21/164, इब्ने माजह : 825)

حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ رُشَيْدٍ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، - يَعْنِي

(1020) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि ज़ुहर की नमाज़ खड़ी की जाती

ابْنَ مُسْلِمٍ - عَنْ سَعِيدٍ، - وَهُوَ ابْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ - عَنْ عَطِيَّةَ بْنِ قَيْسٍ، عَنْ قَزَعَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ لَقَدْ كَانَتْ صَلاَةُ الظُّهْرِ تُقَامُ فَيَذْهَبُ الذَّاهِبُ إِلَى الْبَقِيعِ فَيَقْضِي حَاجَتَهُ ثُمَّ يَتَوَضَّأُ ثُمَّ يَأْتِي وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي الرَّكْعَةِ الأُولَى مِمَّا يُطَوِّلُهَا .

तो कोई जाने वाला बक़ीअ जाता और अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ होकर वुज़ू करता। फिर मस्जिद में आता और रसूलुल्लाह (ﷺ) पहली रकअत के क़ियाम के तवील होने की बिना पर अभी पहली रकअत में ही होते।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ رَبِيعَةَ، قَالَ حَدَّثَنِي قَزَعَةُ، قَالَ أَتَيْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ وَهُوَ مَكْثُورٌ عَلَيْهِ فَلَمَّا تَفَرَّقَ النَّاسُ عَنْهُ قُلْتُ إِنِّي لاَ أَسْأَلُكَ عَمَّا يَسْأَلُكَ هَؤُلاَءِ عَنْهُ - قُلْتُ - أَسْأَلُكَ عَنْ صَلاَةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَقَالَ مَا لَكَ فِي ذَاكَ مِنْ خَيْرٍ . فَأَعَادَهَا عَلَيْهِ فَقَالَ كَانَتْ صَلاَةُ الظُّهْرِ تُقَامُ فَيَنْطَلِقُ أَحَدُنَا إِلَى الْبَقِيعِ فَيَقْضِي حَاجَتَهُ ثُمَّ يَأْتِي أَهْلَهُ فَيَتَوَضَّأُ ثُمَّ يَرْجِعُ إِلَى الْمَسْجِدِ وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي الرَّكْعَةِ الأُولَى .

(1021) हज़रत क़ज़आ बयान करते हैं कि मैं अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उनके पास (इस्तिफ़ादे के लिये) बहुत से लोग मौजूद थे। तो जब लोग मुन्तशिर हो गये (चले गये) मैंने अर्ज़ किया, मैं आपसे उन चीज़ों के बारे में सवाल नहीं करूँगा जिनके बारे में ये लोग आपसे सवाल कर रहे थे। मैंने कहा, मैं आपसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ के बारे में पूछता हूँ। तो उन्होंने कहा, इस सवाल में तेरे लिये बेहतरी या भलाई नहीं है (क्योंकि तुम ऐसी नमाज़ हमेशा पढ़ नहीं सकोगे) उसने दोबारा यही सवाल किया तो उन्होंने कहा, ज़ुहर की नमाज़ खड़ी की जाती और हममें से कोई बक़ीअ की तरफ़ जाता और अपनी ज़रूरत पूरी करता। फिर अपने घर आकर वुज़ू करता, फिर वापस मस्जिद में आता और रसूलुल्लाह (ﷺ) अभी पहली रकअत ही में होते।

(सहीह बुख़ारी : 774, अबू दाऊद : 649, नसाई : 2/186, इब्ने माजह : 820)

फ़ायदा : बक़ीअ का फ़ासला आपके दौर में आपकी मस्जिद से तक़रबीन एक एकड़ था।

बाब 35 : सुबह की नमाज़ में क़िरअत

باب الْقِرَاءَةِ فِي الصُّبْحِ

(1022) हज़रत अब्दुल्लाह बिन साइब (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें मक्का में सुबह की नमाज़ पढ़ाई और सूरह मोमिनून की क़िरअत शुरू कर दी। जब मूसा और हारून (अलै.) का ज़िक्र आया या ईसा (अलै.) का (मुहम्मद बिन अब्बाद को शक है या रावियों का इसमें इख़्तिलाफ़ है) रसूलुल्लाह (ﷺ) को खाँसी आने लगी। तो आप रुकूअ में चले गये। अब्दुल्लाह बिन साइब (रज़ि.) भी उस वक़्त मौजूद थे। अब्दुर्रज़्ज़ाक़ की रिवायत में है, आपने क़िरअत बंद कर दी और रुकूअ में चले गये और उसकी हदीस में रावी का नाम अब्दुल्लाह बिन अम्र है। आगे इब्ने आस नहीं है।

وَحَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، - وَتَقَارَبَا فِي اللَّفْظِ - حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، قَالَ سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ عَبَّادِ بْنِ جَعْفَرٍ، يَقُولُ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ سُفْيَانَ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُسَيَّبِ الْعَابِدِيُّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ السَّائِبِ، قَالَ صَلَّى لَنَا النَّبِيُّ ﷺ الصُّبْحَ بِمَكَّةَ فَاسْتَفْتَحَ سُورَةَ الْمُؤْمِنِينَ حَتَّى جَاءَ ذِكْرُ مُوسَى وَهَارُونَ أَوْ ذِكْرُ عِيسَى - مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ يَشُكُّ أَوِ اخْتَلَفُوا عَلَيْهِ - أَخَذَتِ النَّبِيَّ ﷺ سَعْلَةٌ فَرَكَعَ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ السَّائِبِ حَاضِرٌ ذَلِكَ . وَفِي حَدِيثِ عَبْدِ الرَّزَّاقِ فَحَذَفَ فَرَكَعَ . وَفِي حَدِيثِهِ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو . وَلَمْ يَقُلِ ابْنِ الْعَاصِ .

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है कि ज़रूरत के तहत क़िरअत को दरम्यान में बंद करना जाइज़ है और सूरत की तक्मील ज़रूरी नहीं है। बक़ौल इमाम नववी बिला ज़रूरत सूरत को मुकम्मल न करना जुम्हूर के नज़दीक जाइज़ है। लेकिन ख़िलाफ़े औला है यानी बेहतर यही है कि मुकम्मल सूरत पढ़ी जाये। इमाम मालिक का मशहूर क़ौल ये है कि दरम्यान में क़िरअत मौक़ूफ़ कर देना मक्रूह है।

तम्बीह : इस रिवायत में अब्दुल्लाह बिन अम्र को इब्ने आस क़रार देना दुरुस्त नहीं है क्योंकि ये अब्दुल्लाह बिन अम्र हिजाज़ी है और मशहूर सहाबी अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस और हैं।

(1023) मुझे ज़ुहैर बिन हरब ने यहया बिन सईद से नीज़ हमें अबू बक्र बिन अबी शैबा ने

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ

سَعِيدٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو كُرَيْبٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - أَخْبَرَنَا ابْنُ بِشْرٍ، عَنْ مِسْعَرٍ، قَالَ حَدَّثَنِي الْوَلِيدُ بْنُ سَرِيعٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ حُرَيْثٍ، أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقْرَأُ فِي الْفَجْرِ { وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ}

वकीअ से नीज़ मुझे अबू कुरैब ने (अल्फ़ाज़ इसके हैं) इब्ने बिश्र के वास्ते से मिस्अर की वलीद बिन सरीअ से हज़रत अम्र बिन हुरैस (रज़ि.) से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़ज्र की नमाज़ में वल्लैलि इज़ा अस्अस (यानी सूरह तकवीर) पढ़ते हुए सुना।
(तिर्मिज़ी : 306, नसाई : 2/157, इब्ने माजह : 816)

حَدَّثَنِي أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، فُضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ زِيَادِ بْنِ عِلاَقَةَ، عَنْ قُطْبَةَ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ صَلَّيْتُ وَصَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَرَأَ { ق وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ} حَتَّى قَرَأَ { وَالنَّخْلَ بَاسِقَاتٍ} قَالَ فَجَعَلْتُ أُرَدِّدُهَا وَلاَ أَدْرِي مَا قَالَ .

(1024) कुतबा बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने नमाज़ पढ़ी और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जमाअत कराई। आपने क़ॉफ़ वल्कुरआनिल मजीद शुरू की। यहाँ तक कि आपने वन्नख़्ल बासिक़ातिल्लहा पढ़ा तो मैं इस आयत को बार-बार पढ़ने लगा। लेकिन इसका मतलब व मानी नहीं समझ सका।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، وَابْنُ، عُيَيْنَةَ ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ زِيَادِ بْنِ عِلاَقَةَ، عَنْ قُطْبَةَ بْنِ مَالِكٍ، سَمِعَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقْرَأُ فِي الْفَجْرِ { وَالنَّخْلَ بَاسِقَاتٍ لَهَا طَلْعٌ نَضِيدٌ}

(1025) हज़रत कुतबा बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने फ़ज्र की नमाज़ में नबी (ﷺ) को वन्नख़्ल बासिक़ातिल्लहा तल्उन्-नज़ीद और खजूर के बुलंद व बाला दरख़्त जिनके ख़ोशे तह-ब-तह (घने) हैं पढ़ते सुना।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ زِيَادِ بْنِ عِلاَقَةَ، عَنْ عَمِّهِ، أَنَّهُ صَلَّى مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم الصُّبْحَ فَقَرَأَ فِي أَوَّلِ رَكْعَةٍ { وَالنَّخْلَ بَاسِقَاتٍ لَهَا طَلْعٌ نَضِيدٌ} وَرُبَّمَا قَالَ { ق} .

(1026) हज़रत ज़ियाद बिन इलाक़ा अपने चाचा से रिवायत बयान करते हैं कि उसने नबी (ﷺ) के साथ सुबह की नमाज़ पढ़ी तो आपने पहली रकअत में वन्नख़्ल बासिक़ातिल्-लहा तल्उन्-नज़ीद पढ़ा और कुछ बार कहा, सूरह क़ॉफ़ पढ़ी।

(1027) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) फ़ज्र की नमाज़ में क़ॉफ़ वल्कुरआनिल मजीद पढ़ा करते थे और बाद में आपकी नमाज़ हल्की होती थी या उसके बावजूद आपकी नमाज़ हल्की थी।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ، عَنْ زَائِدَةَ، حَدَّثَنَا سِمَاكُ بْنُ حَرْبٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ إِنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَقْرَأُ فِي الْفَجْرِ بِـ { ق وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ} وَكَانَ صَلاَتُهُ بَعْدُ تَخْفِيفًا .

फ़ायदा : व का-न सलातुहू बअ़्दहू तख़्फ़ीफ़ा इस जुम्ले के उलमा ने अलग-अलग मानी बयान किये हैं। (1) सूरह क़ॉफ़ पढ़ने के बावजूद आपकी नमाज़ हल्की थी, इसलिये आपने इस तख़्फ़ीफ़ को बरक़रार रखा और हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) अगली रिवायत में सूरह क़ॉफ़ की क़िरअत को तख़्फ़ीफ़ क़रार दे रहे हैं। (2) फ़ज्र के बाद वाली नमाज़ें, यानी ज़ुहर, असर, मग़्रिब और इशा ये सब फ़ज्र की बनिस्बत हल्की होती थीं और इनमें बनिस्बत फ़ज्र के आप क़िरअत कम करते थे। (3) शुरूआती दौर में जब सहाबा किराम (रज़ि.) की तादाद कम थी और आपके पीछे नमाज़ पढ़ने वाले साबिक़ूनल अव्वलून थे जो ईमान व अमल में बुलंद तरीन दर्जे पर फ़ाइज़ थे। आपकी नमाज़ें उमूमन लम्बी होती थीं। बाद के दौर में जब आपके साथ नमाज़ पढ़ने वालों की तादाद बढ़ गई और वो ताजिर पेशा या ज़राअत पेशा लोग थे और इनमें ऐसे लोग भी थे जो ईमान व अमल में पहलों के मुक़ाबले में कमतर थे और नमाज़ियों की तादाद ज़्यादा होने की बिना पर उनमें मरीज़, कमज़ोर और बूढ़ों की तादाद भी बढ़ गई थी। तो आप पहले की बनिस्बत नमाज़ हल्की पढ़ने लगे। (4) आप पहली रकअ़त में हमेशा सूरह क़ॉफ़ पढ़ते थे। जैसाकि ज़ियाद बिन इलाक़ा ने अपने चाचा से बयान किया है और दूसरी रकअ़त में आप तख़्फ़ीफ़ करते थे। आपकी आदते मुबारका यही थी कि पहली रकअ़त लम्बी पढ़ते थे।

(1028) हज़रत सिमाक (रह.) से रिवायत है कि मैंने जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से नबी (ﷺ) की नमाज़ के बारे में पूछा तो उन्होंने जवाब दिया आप हल्की नमाज़ पढ़ाते थे और इन लोगों की तरह लम्बी-लम्बी सूरतों के साथ नमाज़ नहीं पढ़ाते थे और उन्होंने मुझे बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की नमाज़ में क़ॉफ़ वल्कुरआन और इस जैसी सूरतें पढ़ा करते थे।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ رَافِعٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، عَنْ سِمَاكٍ، قَالَ سَأَلْتُ جَابِرَ بْنَ سَمُرَةَ عَنْ صَلاَةِ النَّبِيِّ، ﷺ فَقَالَ كَانَ يُخَفِّفُ الصَّلاَةَ وَلاَ يُصَلِّي صَلاَةَ هَؤُلاَءِ . قَالَ وَأَنْبَأَنِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَقْرَأُ فِي الْفَجْرِ بِـ { ق وَالْقُرْآنِ} وَنَحْوِهَا .

फ़ायदा : हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर (रज़ि.) कई बार बड़ी-बड़ी सूरतें पढ़ दिया करते थे क्योंकि लोग इस पर राज़ी और मुतमइन थे। इसलिये जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) क़ॉफ़ की क़िरअत को तख़्फ़ीफ़ ही क़रार दे रहे हैं।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الظُّهْرِ بِـ { اللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى} وَفِي الْعَصْرِ نَحْوَ ذَلِكَ وَفِي الصُّبْحِ أَطْوَلَ مِنْ ذَلِكَ .

(1029) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) नबी (ﷺ) की नमाज़ के बारे में बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ज़ुहर की नमाज़ में वल्लैलि इज़ा यग़शा पढ़ते और असर में भी ऐसी ही सूरत पढ़ते और फ़ज्र की नमाज़ में इससे लम्बी क़िरअत करते थे।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، . أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقْرَأُ فِي الظُّهْرِ بِـ { سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الأَعْلَى} وَفِي الصُّبْحِ بِأَطْوَلَ مِنْ ذَلِكَ .

(1030) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ज़ुहर की नमाज़ में सब्बिहिस्म रब्बिकल अअ्ला पढ़ते और सुबह की नमाज़ में इससे लम्बी क़िरअत करते थे।
(नसाई, इब्ने माजह : 818)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، عَنِ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِي الْمِنْهَالِ، عَنْ أَبِي بَرْزَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَقْرَأُ فِي صَلاَةِ الْغَدَاةِ مِنَ السِّتِّينَ إِلَى الْمِائَةِ .

(1031) हज़रत अबू बरज़ह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की नमाज़ में साठ से सौ आयात तक पढ़ा करते थे।

وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ، عَنْ أَبِي الْمِنْهَالِ، عَنْ أَبِي بَرْزَةَ الأَسْلَمِيِّ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقْرَأُ فِي الْفَجْرِ مَا بَيْنَ السِّتِّينَ إِلَى الْمِائَةِ آيَةً .

(1032) हज़रत अबू बरज़ह अस्लमी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की नमाज़ में साठ से सौ आयतों तक पढ़ा करते थे।
(सहीह बुख़ारी : 763, 4429, अबू दाऊद : 810, तिर्मिज़ी : 308, नसाई : 2/168, इब्ने माजह : 838)

फ़ायदा : हुज़ूर (ﷺ) सौ आयतों तक कभी एक रकअत में पढ़ते और कभी दोनों में और कई बार आपने मौक़ा व महल की मुनासिबत से इससे कम क़िरअत भी की है और ज़्यादा भी।

बाब 36 : कुछ नुस्ख़ों में यहाँ मग़्रिब की नमाज़ में क़िरअत का ड़न्वान मौजूद है और होना चाहिये

بَابُ الْقِرَاءَةِ فِى الْمَغْرِبِ

(1033) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि उम्मुल फ़ज़ल (रज़ि.) ने मुझे वल्मुरसलाति ड़रफ़ा पढ़ते हुए सुना तो कहने लगीं, ऐ बेटे! तूने ये सूरत पढ़कर आपकी क़िरअत याद दिला दी है। मैंने आख़िरी मर्तबा रसूलुल्लाह (ﷺ) से मग़्रिब की नमाज़ में ये सूरत सुनी थी।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ إِنَّ أُمَّ الْفَضْلِ بِنْتَ الْحَارِثِ سَمِعَتْهُ وَهُوَ، يَقْرَأُ { وَالْمُرْسَلاَتِ عُرْفًا} فَقَالَتْ يَا بُنَىَّ لَقَدْ ذَكَّرْتَنِي بِقِرَاءَتِكَ هَذِهِ السُّورَةَ إِنَّهَا لآخِرُ مَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقْرَأُ بِهَا فِي الْمَغْرِبِ .

(1034) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं। सालेह की हदीस में ये इज़ाफ़ा है, फिर आपने उसके बाद वफ़ात तक नमाज़ नहीं पढ़ाई।

(सहीह बुख़ारी : 765, 3050, 12, 4023, 4845, अबू दाऊद : 811, नसाई : 6/169, इब्ने माजह : 832)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، كُلُّهُمْ عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَزَادَ فِي حَدِيثِ صَالِحٍ ثُمَّ مَا صَلَّى بَعْدُ حَتَّى قَبَضَهُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ .

फ़ायदा : आपकी ये आख़िरी जमाअत आपकी इक़्तिदा में आपके घर अदा की गई है। मस्जिद की आख़िरी नमाज़ ज़ुहर थी।

(1035) मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुत्इम (रह.) से वह अपने बाप से रिवायत बयान करते हैं कि मैंने मग़रिब की नमाज़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) से सूरह तूर सुनी।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقْرَأُ بِالطُّورِ فِي الْمَغْرِبِ .

(1036) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं।

(सहीह बुख़ारी : 767, 769, 4952, 7546, अबू दाऊद : 1221, तिर्मिज़ी : 310, नसाई : 2/273, इब्ने माजह : 834, 835)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، كُلُّهُمْ عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ .

बाब 37 : इशा की नमाज़ में क़िरअत

باب الْقِرَاءَةِ فِي الْعِشَاءِ

(1037) हज़रत बराअ (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) सफ़र में थे। आपने इशा की नमाज़ पढ़ाई तो उसकी एक रकअत में वत्तीनि वज़्ज़ैतून पढ़ी।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَدِيٍّ، قَالَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ، يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ كَانَ فِي سَفَرٍ فَصَلَّى الْعِشَاءَ الآخِرَةَ فَقَرَأَ فِي إِحْدَى الرَّكْعَتَيْنِ { وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ}

(1038) हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ इशा की नमाज़ पढ़ी, आपने वत्तीनि वज़्ज़ैतून की क़िरअत की।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ يَحْيَى، - وَهُوَ ابْنُ سَعِيدٍ - عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، أَنَّهُ قَالَ صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ الْعِشَاءَ فَقَرَأَ بِالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ .

(1039) हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इशा की नमाज़ में वत्तीनि वज़्ज़ैतून सुनी। मैंने किसी को आपसे ज़्यादा अच्छी आवाज़ में पढ़ते नहीं सुना।

(अबू दाऊद : 600, 790, नसाई : 2/102)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، قَالَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ، قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ قَرَأَ فِي الْعِشَاءِ بِالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ . فَمَا سَمِعْتُ أَحَدًا أَحْسَنَ صَوْتًا مِنْهُ .

(1040) हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि मुआ़ज़ (रज़ि.) नबी (ﷺ) के साथ (इशा) की नमाज़ पढ़ा करते थे। फिर आकर अपने क़बीले की मस्जिद में इमामत करवाते थे। एक रात उन्होंने इशा की नमाज़ रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ पढ़ी। फिर अपनी क़ौम के पास आये और उनकी इमामत की और (सूरह फ़ातिहा के बाद) सूरह बक़रा पढ़नी शुरू कर दी। एक शख़्स नमाज़ से सलाम फेरकर अलग हो गया। फिर अकेला नमाज़ पढ़कर चला गया। (उसके बिला जमाअ़त, अकेले नमाज़ पढ़ने की बिना पर) लोगों ने उससे पूछा, ऐ फ़लाँ! तू मुनाफ़िक़ हो गया है? उसने जवाब दिया, अल्लाह की क़सम, नहीं! और मैं ज़रूर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपको इस मामले से आगाह कर दूँगा। चुनाँचे वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! हमारा काम ऊँटों के ज़रिये पानी सींचना है। हम लोग दिन भर मेहनत-मशक़्क़त (काम-काज) करते हैं (और गुज़िश्ता रात) मुआ़ज़ (रज़ि.) ने इशा की नमाज़ आपके साथ पढ़ी। फिर (अपने क़बीले की मस्जिद

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ كَانَ مُعَاذٌ يُصَلِّي مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ يَأْتِي فَيَؤُمُّ قَوْمَهُ فَصَلَّى لَيْلَةً مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم الْعِشَاءَ ثُمَّ أَتَى قَوْمَهُ فَأَمَّهُمْ فَافْتَتَحَ بِسُورَةِ الْبَقَرَةِ فَانْحَرَفَ رَجُلٌ فَسَلَّمَ ثُمَّ صَلَّى وَحْدَهُ وَانْصَرَفَ فَقَالُوا لَهُ أَنَافَقْتَ يَا فُلاَنُ قَالَ لاَ وَاللَّهِ وَلآتِيَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَلأُخْبِرَنَّهُ . فَأَتَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا أَصْحَابُ نَوَاضِحَ نَعْمَلُ بِالنَّهَارِ وَإِنَّ مُعَاذًا صَلَّى مَعَكَ الْعِشَاءَ ثُمَّ أَتَى فَافْتَتَحَ بِسُورَةِ الْبَقَرَةِ . فَأَقْبَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى مُعَاذٍ فَقَالَ " يَا مُعَاذُ

أَفَتَّانٌ أَنْتَ اقْرَأْ بِكَذَا وَاقْرَأْ بِكَذَا " . قَالَ سُفْيَانُ فَقُلْتُ لِعَمْرٍو إِنَّ أَبَا الزُّبَيْرِ حَدَّثَنَا عَنْ جَابِرٍ أَنَّهُ قَالَ " اقْرَأْ وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا . وَالضُّحَى . وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى . وَسَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الأَعْلَى " . فَقَالَ عَمْرٌو نَحْوَ هَذَا .

में) आकर सूरह बक़रा शुरू कर दी। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (ये सुनकर) हज़रत मुआज़ की तरफ़ रुख़ फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया, 'ऐ मुआज़! क्या लोगों को फ़ित्ने में मुब्तला करना चाहते हो? ये-ये सूरत पढ़ा करो।' सुफ़ियान ने कहा, मैंने अ़म्र से पूछा, अबू ज़ुबैर ने हमें जाबिर (रज़ि.) से सुनाया कि आपने फ़रमाया, वश्शम्सि व ज़ुहाहा और वज़्ज़ुहा और वल्लैलि इज़ा यग़शा और सब्बिहिस्म रब्बिकल् अअ्ला पढ़ा करो। अ़म्र ने कहा, ऐसे ही है।

(नसाई : 2/173, इब्ने माजह : 986)

मुफ़रदातुल हदीस़ : फ़त्तान : फ़ित्नापरवर, इब्तिला व आज़माइश में डालने वाला। यानी ये चीज़ लोगों के लिये नमाज़ से पीछे रहने का सबब बन सकती है। हालांकि जमाअ़त का एहतिमाम ज़रूरी है (सहाबा किराम ने अलग नमाज़ पढ़ने वाले को मुनाफ़िक़ कहा)।

फ़वाइद : (1) इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि नफ़ल नमाज़ पढ़ने वाले के पीछे फ़र्ज़ नमाज़ हो सकती है। क्योंकि बात वाज़ेह है कि हज़रत मुआज़ मस्जिदे नबवी में जहाँ नमाज़ पढ़ने का सवाब दूसरी मस्जिदों से ज़्यादा है और आपकी इक़्तिदा में जहाँ नमाज़ पढ़ने में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ और तमानियत व तस्कीन ज़्यादा है, फ़र्ज़ नमाज़ ही पढ़ते थे। क्योंकि पहले उन्होंने नमाज़ नहीं पढ़ी हुई होती कि ये नमाज़ नफ़ली हो जाती। इसके अ़लावा रिवायात में ये तसरीह मौजूद है कि उनकी नमाज़ क़ौम के साथ नफ़ली होती थी। हिय लहू ततव्वुअ़ वहिय लहुम फ़रीज़ह ये नमाज़ मुआज़ की नफ़ल और क़ौम की फ़र्ज़ होती थी। इसलिये अहनाफ़ और इमाम मालिक का ये नज़रिया दुरुस्त नहीं है कि मुतनफ़्फ़िल के पीछे मुफ़र्रिज़ की नमाज़ नहीं होती (नफ़ल नमाज़ पढ़ने वाले के पीछे फ़र्ज़ नमाज़ नहीं होती)। **(2)** इमाम को चाहिये कि वो नमाज़ इतनी लम्बी न पढ़े जो मुक़्तदियों के लिये मशक़्क़त का बाइस़ हो। ख़ास कर जबकि उसके मुक़्तदी ज़ईफ़, बूढ़े और मेहनत पेशा लोग हों। **(3)** एक वाज़ेह और खुली बात की मुख़ालिफ़त करने वालों को सख़्त अल्फ़ाज़ में तम्बीह की जा सकती है। हज़रत मुआज़ (रज़ि.) आपकी इक़्तिदा में नमाज़ पढ़कर जाते थे इस तरह उन्हें आपकी क़िरअत का पता चलता रहता था। उसके बावजूद उन्होंने इसको नज़र अन्दाज़ किया और अपने पीछे मेहनत व मशक़्क़त करने वाले नमाज़ियों का ख़्याल न रखा। तो आपने सख़्त अल्फ़ाज़ में तम्बीह फ़रमाई।

(1041) हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि मुआज़ बिन जबल अन्सारी (रज़ि.) ने अपने लोगों को इशा की नमाज़ पढ़ाई और उसमें लम्बी क़िरअत की। हममें से एक आदमी ने सलाम फेरकर अलग नमाज़ पढ़ ली। मुआज़ को उसके बारे में बताया गया तो उन्होंने कहा, वो मुनाफ़िक़ है। जब उस आदमी तक ये बात पहुँची तो वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मुआज़ की बात बताई। इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुआज़ (रज़ि.) से फ़रमाया, 'ऐ मुआज़! क्या तुम आज़माइश में डालने वाला बनना चाहते हो? जब लोगों की इमामत कराओ तो वश्शम्सि व ज़ुहाहा, सब्बिहिस्म रब्बिकल अअ्ला, इक़्रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़ और वल्लैलि इज़ा यग़शा पढ़ा करो।' (इन आयतों से पूरी सूरत पढ़ने की तरफ़ इशारा किया गया है)।

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا ابْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّهُ قَالَ صَلَّى مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ الأَنْصَارِيُّ لأَصْحَابِهِ الْعِشَاءَ فَطَوَّلَ عَلَيْهِمْ فَانْصَرَفَ رَجُلٌ مِنَّا فَصَلَّى فَأُخْبِرَ مُعَاذٌ عَنْهُ فَقَالَ إِنَّهُ مُنَافِقٌ . فَلَمَّا بَلَغَ ذَلِكَ الرَّجُلَ دَخَلَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأَخْبَرَهُ مَا قَالَ مُعَاذٌ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " أَتُرِيدُ أَنْ تَكُونَ فَتَّانًا يَا مُعَاذُ إِذَا أَمَمْتَ النَّاسَ فَاقْرَأْ بِالشَّمْسِ وَضُحَاهَا . وَسَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الأَعْلَى . وَاقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ . وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى " .

(1042) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ इशा की नमाज़ पढ़ा करते थे। फिर अपनी क़ौम में आकर यही नमाज़ उनको पढ़ाते थे।

(सहीह बुख़ारी : 711)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ، كَانَ يُصَلِّي مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ الْعِشَاءَ الآخِرَةَ ثُمَّ يَرْجِعُ إِلَى قَوْمِهِ فَيُصَلِّي بِهِمْ تِلْكَ الصَّلاَةَ .

(1043) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि मुआज़ (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ इशा की नमाज़ पढ़ा करते थे फिर अपनी क़ौम की मस्जिद में आकर उनको नमाज़ पढ़ाते थे।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، قَالَ أَبُو الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ كَانَ مُعَاذٌ يُصَلِّي مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ الْعِشَاءَ

ثُمَّ يَأْتِي مَسْجِدَ قَوْمِهِ فَيُصَلِّي بِهِمْ .

(सहीह बुख़ारी : 90, 702, 704, 6110, 7159, इब्ने माजह : 984)

باب أَمْرِ الأَئِمَّةِ بِتَخْفِيفِ الصَّلاَةِ فِي تَمَامٍ

बाब 38 : इमामों को नमाज़ पूरी और हल्की पढ़ाने का हुक्म

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قَيْسٍ، عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ، قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ إِنِّي لأَتَأَخَّرُ عَنْ صَلاَةِ الصُّبْحِ مِنْ أَجْلِ فُلاَنٍ مِمَّا يُطِيلُ بِنَا . فَمَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم غَضِبَ فِي مَوْعِظَةٍ قَطُّ أَشَدَّ مِمَّا غَضِبَ يَوْمَئِذٍ فَقَالَ " يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ مِنْكُمْ مُنَفِّرِينَ فَأَيُّكُمْ أَمَّ النَّاسَ فَلْيُوجِزْ فَإِنَّ مِنْ وَرَائِهِ الْكَبِيرَ وَالضَّعِيفَ وَذَا الْحَاجَةِ " .

(1044) हज़रत अबू मसऊद अन्सारी (रज़ि.) से रिवायत है कि एक आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया और अर्ज़ किया, मैं फ़लाँ आदमी की वजह से सुबह की नमाज़ से पीछे रहता हूँ। क्योंकि वो हमें बहुत लम्बी नमाज़ पढ़ाता है। अबू मसऊद बयान करते हैं, मैंने आपको पन्द व नसीहत करते वक़्त उस दिन से ज़्यादा ग़ज़बनाक कभी नहीं देखा। आपने फ़रमाया, 'ऐ लोगो! तुममें से कुछ लोग लोगों को (दीन, नमाज़) से मुतनफ़्फ़िर करने वाले (फेरने वाले) हैं। तुममें से जो भी लोगों का इमाम बने वो तख़फ़ीफ़ (कमी, हल्की) करे। क्योंकि उसके पीछे बूढ़े, कमज़ोर और हाजतमन्द लोग होते हैं।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، وَوَكِيعٌ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، كُلُّهُمْ عَنْ إِسْمَاعِيلَ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ بِمِثْلِ حَدِيثِ هُشَيْمٍ .

(1045) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

(तिर्मिज़ी : 236)

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، - وَهُوَ ابْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحِزَامِيُّ - عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله

(1046) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई लोगों को नमाज़ पढ़ाये (उनका इमाम बने) तो वो हल्की नमाज़ पढ़ाये।

क्योंकि नमाज़ियों में बच्चे, बूढ़े, कमज़ोर और बीमार भी होते हैं और जब अकेला पढ़े तो जैसे चाहे पढ़े।'

عليه وسلم قَالَ " إِذَا أَمَّ أَحَدُكُمُ النَّاسَ فَلْيُخَفِّفْ فَإِنَّ فِيهِمُ الصَّغِيرَ وَالْكَبِيرَ وَالضَّعِيفَ وَالْمَرِيضَ فَإِذَا صَلَّى وَحْدَهُ فَلْيُصَلِّ كَيْفَ شَاءَ " .

(1047) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई लोगों का इमाम बने तो वो नमाज़ में तख़्फ़ीफ़ करे। क्योंकि लोगों में बूढ़े और ज़ईफ़ (कमज़ोर) भी होते हैं और जब अकेला पढ़े तो अपनी नमाज़ जितनी चाहे लम्बी कर ले।'

حَدَّثَنَا ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ مُحَمَّدٍ، رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " إِذَا مَا قَامَ أَحَدُكُمْ لِلنَّاسِ فَلْيُخَفِّفِ الصَّلاَةَ فَإِنَّ فِيهِمُ الْكَبِيرَ وَفِيهِمُ الضَّعِيفَ وَإِذَا قَامَ وَحْدَهُ فَلْيُطِلْ صَلاَتَهُ مَا شَاءَ " .

(1048) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई लोगों को नमाज़ पढ़ाये तो वो तख़्फ़ीफ़ करे, क्योंकि लोगों में कमज़ोर, बीमार और ज़रूरतमन्द भी होते हैं।'

وَحَدَّثَنَا حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ لِلنَّاسِ فَلْيُخَفِّفْ فَإِنَّ فِي النَّاسِ الضَّعِيفَ وَالسَّقِيمَ وَذَا الْحَاجَةِ " .

(1049) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं। हाँ इतना फ़र्क़ है कि यहाँ रावी ने सक़ीम (बीमार) की जगह कबीर (बूढ़ा) कहा।

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، حَدَّثَنِي أَبِي، حَدَّثَنِي اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، حَدَّثَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ . بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ - بَدَلَ السَّقِيمِ - الْكَبِيرَ

(1050) हज़रत उ़समान बिन अबी आ़स स़क़फ़ी (रज़ि.) से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अपनी क़ौम

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عُثْمَانَ، حَدَّثَنَا مُوسَى

بْنُ طَلْحَةَ، حَدَّثَنِي عُثْمَانُ بْنُ أَبِي الْعَاصِ الثَّقَفِيُّ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ لَهُ " أُمَّ قَوْمَكَ " . قَالَ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَجِدُ فِي نَفْسِي شَيْئًا . قَالَ " ادْنُهْ " . فَجَلَّسَنِي بَيْنَ يَدَيْهِ ثُمَّ وَضَعَ كَفَّهُ فِي صَدْرِي بَيْنَ ثَدْيَىَّ ثُمَّ قَالَ " تَحَوَّلْ " . فَوَضَعَهَا فِي ظَهْرِي بَيْنَ كَتِفَىَّ ثُمَّ قَالَ " أُمَّ قَوْمَكَ فَمَنْ أَمَّ قَوْمًا فَلْيُخَفِّفْ فَإِنَّ فِيهِمُ الْكَبِيرَ وَإِنَّ فِيهِمُ الْمَرِيضَ وَإِنَّ فِيهِمُ الضَّعِيفَ وَإِنَّ فِيهِمْ ذَا الْحَاجَةِ وَإِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ وَحْدَهُ فَلْيُصَلِّ كَيْفَ شَاءَ " .

की इमामत कराओ।' मैंने अर्ज़ किया, मुझे कुछ झिझक महसूस होती है। आपने फ़रमाया, 'क़रीब हो जा।' आपने मुझे अपने सामने बिठा लिया। फिर अपनी हथेली मेरे सीने पर मेरे पिस्तानों के दरम्यान रखी। फिर फ़रमाया, 'फिर जा।' फिरने के बाद आपने हथेली मेरी पुश्त पर मेरे कन्धों के दरम्यान रखी। फिर फ़रमाया, 'अपनी क़ौम की इमामत कराओ और जो लोगों का इमाम बने वो तख़्फ़ीफ़ करे। क्योंकि उनमें बूढ़े भी होते हैं, उनमें बीमार भी होते हैं, उनमें कमज़ोर भी होते हैं और उनमें ज़रूरतमन्द भी होते हैं और जब तुममें से कोई अकेला नमाज़ पढ़े तो जैसे चाहे पढ़े।'

(इब्ने माजह : 987)

फ़वाइद : (1) इन्नी अजिदु फ़ी नफ़्सी के उलमा ने अलग-अलग मफ़्हूम मुराद लिये हैं। (1) मैं इमाम बनकर अजब और तकब्बुर में मुब्तला होने से डरता हूँ। (2) मैं शर्म व हया और इस काम की अदायगी में कमज़ोरी महसूस करता हूँ। (3) मैं नमाज़ में वस्वसे में मुब्तला हो जाता हूँ और इसकी ताईद उसमान सक़फ़ी (रज़ि.) की उस रिवायत से होती है जिसमें ये आया है, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! शैतान मेरी नमाज़ में हर्ज डालता है। मुझे क़ुरआन पढ़ते भुला देता है। रसूलुल्लाह (ﷺ) के दस्ते मुबारक की बरकत से उनकी ये ख़राबी दूर हो गई। **(2)** इन अहादीस से मालूम होता है कि नमाज़ में सब लोगों को शरीक होना चाहिये। अपनी कमज़ोरी, बीमारी या ज़रूरत को जमाअत से पीछे रहने का बहाना नहीं बनाना चाहिये और इमाम को भी अपने मुक़्तदियों का लिहाज़ रखना चाहिये।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، قَالَ سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ، قَالَ حَدَّثَ عُثْمَانُ بْنُ أَبِي الْعَاصِ، قَالَ آخِرُ مَا عَهِدَ

(1051) हज़रत उसमान बिन अबी आस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे आख़िरी वसियत व तल्क़ीन ये फ़रमाई थी, 'जब तुम लोगों की इमामत

إِلَىَّ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا أَمَمْتَ قَوْمًا فَأَخِفَّ بِهِمُ الصَّلاَةَ " .

करो तो उसमें तख़फ़ीफ़ का ख़याल रखना (नमाज़ हल्की पढ़ाना)। (इब्ने माजह : 985)

मुफ़रदातुल हदीस़ : अहि-द इलय्य : उसको वसियत व तल्क़ीन की।

وَحَدَّثَنَا خَلَفُ بْنُ هِشَامٍ، وَأَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُوجِزُ فِي الصَّلاَةِ وَيُتِمُّ .

(1052) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) नमाज़ तख़फ़ीफ़ से पढ़ाते और कामिल (ऐतदाल व सुकून के साथ) पढ़ाते।
(सहीह बुख़ारी : 237, नसाई : 2/95)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ، قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ مِنْ أَخَفِّ النَّاسِ صَلاَةً فِي تَمَامٍ .

(1053) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सबसे हल्की और कामिल नमाज़ पढ़ाते थे।
(सहीह बुख़ारी : 708)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَيَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ يَحْيَى بْنُ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرُونَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ - عَنْ شَرِيكِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّهُ قَالَ مَا صَلَّيْتُ وَرَاءَ إِمَامٍ قَطُّ أَخَفَّ صَلاَةً وَلاَ أَتَمَّ صَلاَةً مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ.

(1054) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ज़्यादा हल्की नमाज़ और कामिल ऐतदाल वाली नमाज़ कभी किसी इमाम के पीछे नहीं पढ़ी।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ أَنَسٌ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَسْمَعُ بُكَاءَ الصَّبِيِّ مَعَ أُمِّهِ وَهُوَ فِي الصَّلاَةِ فَيَقْرَأُ بِالسُّورَةِ الْخَفِيفَةِ أَوْ بِالسُّورَةِ الْقَصِيرَةِ .

(1055) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) माँ के साथ वाले बच्चे के रोने की आवाज़ सुनते थे, जबकि आप नमाज़ पढ़ा रहे होते थे। फिर उसके रोने की वजह से हल्की या छोटी सूरत पढ़ते।
(सहीह बुख़ारी : 709, 710, इब्ने माजह : 989)

(1056) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं लम्बी नमाज़ पढ़ने के इरादे से नमाज़ शुरू करता हूँ। फिर बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता हूँ तो उसके रोने की वजह से माँ के शदीद ग़म में मुब्तला होने की वजह (डर) से हल्की नमाज़ पढ़ा देता हूँ।'

(सहीह बुख़ारी : 792, 801, 820, अबू दाऊद : 852, 854, तिर्मिज़ी : 279, 280, नसाई : 2/198, 1147, 1331)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِنْهَالٍ الضَّرِيرُ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنِّي لأَدْخُلُ الصَّلاَةَ أُرِيدُ إِطَالَتَهَا فَأَسْمَعُ بُكَاءَ الصَّبِيِّ فَأُخَفِّفُ مِنْ شِدَّةِ وَجْدِ أُمِّهِ بِهِ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : वज्द : ग़म व हुज़्न।

फ़ायदा : नमाज़ की हालत में किसी तख़्फ़ीफ़ के तालिब काम के पैदा हो जाने से इमाम नमाज़ में तख़्फ़ीफ़ कर सकता है। जबकि वो काम ऐसा हो जो मुक़्तदियों के लिये या उनमें से कुछ के लिये नमाज़ से मशग़ूलियत और ग़फ़लत का सबब बनता हो। आपने बच्चे के रोने को माँ के नमाज़ से मशग़ूल होने के सबब (कि वो उससे मुहब्बत की बिना पर उसके रोने से ग़म व हुज़्न में मुब्तला होकर नमाज़ पर तवज्जह नहीं दे सकती) नमाज़ में तख़्फ़ीफ़ की है। इस पर क़यास करते हुए उलमा ने लिखा है नामालूम नमाज़ियों को रकअत में शरीक करने के लिये क़ियाम को कुछ तवील भी किया जा सकता है।

बाब 39 : नमाज़ के अरकान में ऐतदाल (सुकून व इत्मीनान) और उसके कमाल के साथ नमाज़ में तख़्फ़ीफ़ करना

باب اعْتِدَالِ أَرْكَانِ الصَّلاَةِ وَتَخْفِيفِهَا فِي تَمَامٍ

(1057) हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने मुहम्मद (ﷺ) के साथ नमाज़ पर ग़ौर किया। तो मैंने आपके क़ियाम, रुकूअ, रुकूअ के बाद क़ौमा में ऐतदाल, आपके सज्दे, दोनों सज्दों के दरम्यान के जल्से, दूसरे सज्दे और सलाम फेरने के बाद

وَحَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ عُمَرَ الْبَكْرَاوِيُّ، وَأَبُو كَامِلٍ فُضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ الْجَحْدَرِيُّ كِلاَهُمَا عَنْ أَبِي عَوَانَةَ، - قَالَ حَامِدٌ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، - عَنْ هِلاَلِ بْنِ أَبِي حُمَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، قَالَ رَمَقْتُ

الصَّلاَةَ مَعَ مُحَمَّدٍ ﷺ فَوَجَدْتُ قِيَامَهُ فَرَكْعَتَهُ فَاعْتِدَالَهُ بَعْدَ رُكُوعِهِ فَسَجْدَتَهُ فَجَلْسَتَهُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ فَسَجْدَتَهُ فَجَلْسَتَهُ مَا بَيْنَ التَّسْلِيمِ وَالاِنْصِرَافِ قَرِيبًا مِنَ السَّوَاءِ .

रुख़ फेरने के लिये बैठने को तक़रीबन बराबर पाया।

फ़ायदा : इस हदीस़ में आपकी मुस्तक़िल आदते मुबारका को बयान नहीं किया गया कि आप हमेशा क़ियाम, रुकूअ, क़ौमा, सज्दा, दोनों सज्दों के दरम्यान का जल्सा और सलाम फेरने के बाद मुक़्तदियों की तरफ़ रुख़ करने तक का वक़्फ़ा बराबर रखते थे। बल्कि कई बार आपने ऐसे भी किया है जबकि आपने क़िरअत इन्तिहाई मुख़्तसर की है। जैसे आपने कई बार सुबह की नमाज़ में मुअव्वज़तैन की क़िरअत भी की है। तो ऐसे औक़ात में तमाम अरकाने नमाज़ में फ़र्क़ थोड़ा रह जाता, सब बिल्कुल बराबर नहीं होते। इसलिये सहाबी ने क़रीबम् मिनस्सवाइ कहा। लेकिन जब आप क़िरअत तवील करते थे जैसे आपने सुबह की नमाज़ में सूरह वाक़िया, यासीन, क़ॉफ़ की तिलावत फ़रमाई है। ज़ुहर में अलिफ़-लाम-मीम सज्दा, लुक़मान, ज़ारियात की तिलावत फ़रमाई है और शाम की नमाज़ में आराफ़, दुख़ान, तूर और मुरसलात की क़िरअत फ़रमाई है। तो ऐसे में रुकूअ, सुजूद और क़ौमा व जल्सा क़ियाम के बराबर कैसे हो सकते हैं?

या इस हदीस़ का मक़सद ये लेना होगा, तमाम अरकान में आप तनासुब का लिहाज़ रखते थे कि अगर क़िरअत लम्बी करते तो रुकूअ, सुजूद और क़ौमा व जल्सा भी लम्बा करते थे। ये नहीं कि क़िरअत तो तवील हो और बाक़ी अरकान बहुत मुख़्तसर हों। जैसाकि हज़रत अनस (रज़ि.) फ़रमाते हैं, कानत सलात रसूलिल्लाह मुतक़ारिबह कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ में तनासुब होता था (यानी तमाम अरकान मुतनासिब होते थे। इसलिये कई बार नबी (ﷺ) क़ौमा और जल्से में इतनी देर ठहरे रहते कि मुक़्तदियों को ख़्याल होता शायद आप भूल गये हैं)।

وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، قَالَ غَلَبَ عَلَى الْكُوفَةِ رَجُلٌ - قَدْ سَمَّاهُ - زَمَنَ ابْنِ الأَشْعَثِ فَأَمَرَ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ أَنْ يُصَلِّيَ بِالنَّاسِ فَكَانَ يُصَلِّي

(1058) हज़रत हकम से रिवायत है कि इब्ने अश्अस़ के ज़माने में एक शख़्स कूफ़ा पर ग़ालिब आ गया। (हकम ने उसका नाम लिया था और वो मतर बिन नाजियह था) उसने अबू उबैदा बिन अब्दुल्लाह को लोगों की इमामत करवाने का हुक्म दिया तो वो नमाज़ पढ़ाते थे। जब वो रुकूअ से सर उठाते तो इतनी देर खड़े रहते कि मैं ये दुआ पढ़ लेता, अल्लाहुम्-म रब्बना लकल् हम्दु मिल्अस्समावाति व

فَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ قَامَ قَدْرَ مَا أَقُولُ اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَوَاتِ وَمِلْءَ الأَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ أَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلاَ يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ . قَالَ الْحَكَمُ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى فَقَالَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ يَقُولُ كَانَتْ صَلاَةُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَرُكُوعُهُ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَسُجُودُهُ وَمَا بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ قَرِيبًا مِنَ السَّوَاءِ . قَالَ شُعْبَةُ فَذَكَرْتُهُ لِعَمْرِو بْنِ مُرَّةَ فَقَالَ قَدْ رَأَيْتُ ابْنَ أَبِي لَيْلَى فَلَمْ تَكُنْ صَلاَتُهُ هَكَذَا .

मिल्अलअरज़ि व मिल्अ मा शिअ्त मिन शैइम्-बअ्दु अह्लस्सनाइ वल्मजदि ला मानिअ लिमा अअ्तै-त वला मुअ्ति-य लिमा मनअ्-त वला यन्फ़उ ज़ल्जद्दि मिन्कल् जद्दु (ऐ अल्लाह! तू इस क़द्र हम्द व सताइश का हक़दार है जिससे सब आसमान, ज़मीन और उनके सिवा जो चीज़ तू चाहे भर जाये। ऐ स़ना और मज्द (अज़मत व बुज़ुर्गी) के लायक़! जो तू दे उसको कोई रोक नहीं सकता और जो तू न देना चाहे (रोक ले) वो कोई भी दे नहीं सकता और न किसी मेहनत व कोशिश करने की कोशिश तेरे मुक़ाबले में उसको फ़ायदा दे सकती है या किसी बुज़ुर्गी वाले की बुज़ुर्गी व दौलत तेरे मुक़ाबले में उसको नफ़ा दे सकती है। (जद्द दौलत व तवंगरी) हकम कहते हैं, मैंने ये हदीस़ अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला को सुनाई तो उसने कहा, मैंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) को ये कहते सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ (क़ियाम) आपका रुकूअ और जब आप रुकूअ से सर उठाते, आपका सज्दा और दोनों सज्दों के दरम्यान वाला जल्सा ये सब तक़रीबन बराबर थे। शोबा कहते हैं, मैंने ये हदीस़ अम्र बिन मुर्रह को बताई तो उसने कहा, मैंने अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला को देखा है वो इस कैफ़ियत से नमाज़ नहीं पढ़ते थे।

फ़ायदा : बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) की हदीस़ से बज़ाहिर ये स़ाबित होता है कि आपका क़ियाम भी नमाज़ के दूसरे अरकान व अफ़आल के तक़रीबन बराबर था और अम्र बिन मुर्रह ने यही ज़ाहिरी मानी लिया। इसलिये कहा कि अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला की नमाज़ इस कैफ़ियत के मुताबिक़ नहीं है। क्योंकि उनका क़ियाम और तशह्हुद के लिये क़ुऊद लम्बा होता था और आपकी नमाज़ में आम

तौर पर ये दोनों रुक्न लम्बे होते थे। इसलिये बराअ की कुछ रिवायात में मा ख़लल क़ियाम वल्क़ुऊद का इस्तिसना मौजूद है। (बुख़ारी शरीफ़) और मुस्लिम की इन रिवायतों में तशह्हुद के लिये क़ुऊद (बैठना) का तज़्किरा नहीं है।

(1059) हज़रत हकम (रह.) से रिवायत है कि जब मतर बिन नाजियह कूफ़ा पर ग़ालिब आया, उसने अबू उबैदा को लोगों की इमामत का हुक्म दिया और मज़कूरा हदीस बयान की।

(सहीह बुख़ारी : 821)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، أَنَّ مَطَرَ بْنَ نَاجِيَةَ، لَمَّا ظَهَرَ عَلَى الْكُوفَةِ أَمَرَ أَبَا عُبَيْدَةَ أَنْ يُصَلِّيَ، بِالنَّاسِ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ .

(1060) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है उन्होंने कहा, मैं तुम्हें ऐसी नमाज़ पढ़ाने में कोताही नहीं करता, जैसी मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को हमें पढ़ाते देखा। साबित ने कहा, अनस (रज़ि.) एक ऐसा काम किया करते थे जो मैं तुम्हें करते हुए नहीं देखता। जब वो रुकूअ से अपना सर उठाते, सीधे खड़े हो जाते, यहाँ तक कि गुमान करने वाला ये समझता कि वो भूल गये हैं और जब वो सज्दे से अपना सर उठाते, ठहरे रहते यहाँ तक कि कहने वाला कहता वो भूल गये हैं।

(अबू दाऊद : 853)

حَدَّثَنَا خَلَفُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ إِنِّي لاَ آلُو أَنْ أُصَلِّيَ بِكُمْ كَمَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي بِنَا . قَالَ فَكَانَ أَنَسٌ يَصْنَعُ شَيْئًا لاَ أَرَاكُمْ تَصْنَعُونَهُ كَانَ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ انْتَصَبَ قَائِمًا حَتَّى يَقُولَ الْقَائِلُ قَدْ نَسِيَ . وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ السَّجْدَةِ مَكَثَ حَتَّى يَقُولَ الْقَائِلُ قَدْ نَسِيَ .

(1061) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने किसी के पीछे नबी (ﷺ) से ज़्यादा हल्की और कामिल नमाज़ नहीं पढ़ी। रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ (के तमाम अरकान) मुतनासिब (क़रीब-क़रीब) होते थे और अबू बकर (रज़ि.) की नमाज़ भी मुतनासिब क़रीब-क़रीब बराबर होती थीं। जब उमर (रज़ि.) का दौर आया तो उन्होंने नमाज़े

وَحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، أَخْبَرَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ مَا صَلَّيْتُ خَلْفَ أَحَدٍ أَوْجَزَ صَلاَةً مِنْ صَلاَةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي تَمَامٍ كَانَتْ صَلاَةُ رَسُولِ

اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مُتَقَارِبَةً وَكَانَتْ صَلاَةُ أَبِي بَكْرٍ مُتَقَارِبَةً فَلَمَّا كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ مَدَّ فِي صَلاَةِ الْفَجْرِ وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا قَالَ " سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ " . قَامَ حَتَّى نَقُولَ قَدْ أَوْهَمَ . ثُمَّ يَسْجُدُ وَيَقْعُدُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ حَتَّى نَقُولَ قَدْ أَوْهَمَ .

फ़ज्र (की क़िरअत) लम्बी कर दी और रसूलुल्लाह (ﷺ) जब समिअल्लाहु लिमन हमिदह् कहते, ठहरे रहते यहाँ तक कि हम कहते शायद आप भूल गये हैं (बाद की नमाज़ का ख़्याल ही नहीं रहा) फिर सज्दा करते और दो सज्दों के दरम्यान बैठे रहते यहाँ तक कि हम ख़्याल करते शायद आप भूल गये हैं।

(सहीह बुख़ारी : 690, 747, 811, अबू दाऊद : 620, तिर्मिज़ी : 281, नसाई : 2/96)

باب مُتَابَعَةِ الإِمَامِ وَالْعَمَلِ بَعْدَهُ

बाब 40 : इमाम की मुताबिअत (पैरवी) और हर काम इमाम के बाद करना

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَزِيدَ، قَالَ حَدَّثَنِي الْبَرَاءُ، وَهُوَ غَيْرُ كَذُوبٍ أَنَّهُمْ كَانُوا يُصَلُّونَ خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ لَمْ أَرَ أَحَدًا يَحْنِي ظَهْرَهُ حَتَّى يَضَعَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم جَبْهَتَهُ عَلَى الأَرْضِ ثُمَّ يَخِرُّ مَنْ وَرَاءَهُ سُجَّدًا .

(1062) हज़रत बराअ (रज़ि.) (वो झूठे न थे) से रिवायत है कि सहाबा किराम (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ते थे। जब आप रुकूअ से अपना सर उठा लेते तो मैं किसी को उस वक़्त तक अपनी पुश्त झुकाते न देखता जब तक रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी पेशानी ज़मीन पर न रख देते। फिर आपके पीछे वाले सज्दे में जाते।

وَحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ خَلاَّدٍ الْبَاهِلِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، - يَعْنِي ابْنَ سَعِيدٍ - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنِي أَبُو إِسْحَاقَ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ،

(1063) हज़रत बराअ (रज़ि.) (वो झूठे न थे) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब समिअल्लाहु लिमन हमिदह् कहते (रुकूअ से

सर उठाकर खड़े हो जाते) तो हममें से कोई एक भी उस वक़्त तक अपनी पुश्त न झुकाता, जब तक रसूलुल्लाह (ﷺ) सज्दे में न चले जाते। फिर हम आपके बाद सज्दा करते या सज्दे में गिरते।

(अबू दाऊद : 620)

(1064) हज़रत मुहारिब बिन दिसार (रह.) से रिवायत है कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद को मिम्बर पर बयान करते हुए सुना कि हमें बराअ (रज़ि.) ने बताया कि सहाबा किराम (रज़ि.) नबी (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ते थे। जब आप रुकूअ में चले जाते तो वो रुकूअ करते और जब आप अपना सर रुकूअ से उठाते तो समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह् कहते और हम खड़े रहते यहाँ तक कि हम आपको देखते कि आपने अपना माथा (पेशानी) ज़मीन पर रख दिया। फिर हम आपकी पैरवी करते (सज्दे में चले जाते)।

(अबू दाऊद : 620)

(1065) हज़रत बराअ (रज़ि.) से रिवायत है कि हम (नमाज़ में) नबी (ﷺ) के साथ होते, हममें से कोई उस वक़्त तक अपनी पुश्त न झुकाता, यहाँ तक कि हम आपको देख लेते कि आप सज्दे में जा चुके हैं। ज़ुहैर ने कहा, हमें सुफ़ियान ने बताया कि हमें कुफ़िय्यून अबान वग़ैरह ने हदीस़ सुनाई और उसने नराहु क़द सजद की जगह नराहु यस्जुदु कहा।

حَدَّثَنِي الْبَرَاءُ، - وَهُوَ غَيْرُ كَذُوبٍ - قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا قَالَ " سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ " . لَمْ يَحْنِ أَحَدٌ مِنَّا ظَهْرَهُ حَتَّى يَقَعَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم سَاجِدًا ثُمَّ نَقَعُ سُجُودًا بَعْدَهُ .

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَهْمٍ الأَنْطَاكِيُّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَبُو إِسْحَاقَ الْفَزَارِيُّ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ الشَّيْبَانِيِّ، عَنْ مُحَارِبِ بْنِ دِثَارٍ، قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ يَزِيدَ، يَقُولُ عَلَى الْمِنْبَرِ حَدَّثَنَا الْبَرَاءُ، أَنَّهُمْ كَانُوا يُصَلُّونَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَإِذَا رَكَعَ رَكَعُوا وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَقَالَ " سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ " . لَمْ نَزَلْ قِيَامًا حَتَّى نَرَاهُ قَدْ وَضَعَ وَجْهَهُ فِي الأَرْضِ ثُمَّ نَتَّبِعُهُ .

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، حَدَّثَنَا أَبَانٌ، وَغَيْرُهُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنِ الْبَرَاءِ، قَالَ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم لاَ يَحْنُو أَحَدٌ مِنَّا ظَهْرَهُ حَتَّى نَرَاهُ قَدْ سَجَدَ . فَقَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا الْكُوفِيُّونَ أَبَانٌ وَغَيْرُهُ قَالَ حَتَّى نَرَاهُ يَسْجُدُ .

(1066) हज़रत अम्र बिन हुरैस (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने नबी (ﷺ) के पीछे फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी तो मैंने आपको फ़ला उक़्सिमु बिल्ख़ुन्नसिल जवारिल कुन्नस (सूरह तकवीर) पढ़ते सुना और हममें से कोई आदमी अपनी पुश्त नहीं झुकाता था यहाँ तक कि आप पूरी तरह सज्दे में चले जाते।

बाब 41 : रुकूअ से सर उठाकर नमाज़ी क्या कहेगा

(1067) हज़रत इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब रुकूअ से अपनी पुश्त उठाते तो 'समिअल्लाहु लिमन हमिदह् अल्लाहुम्-म रब्बना लकल् हम्दु मिल्अस्समावाति व मिल्अल् अरज़ि मा शिअ्त मिन शैइम्-बअ्दु' कहते। ऐ अल्लाह! हमारे आक़ा व मालिक तेरे लिये ही तारीफ़ व तौसीफ़ है। आसमानों की पूराई और ज़मीन की पूराई और जिस चीज़ की भराई तू उनके सिवा चाहे।

(1068) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ये दुआ किया करते थे, अल्लाहुम्-म रब्बना लकल् हम्दु मिल्अस्समावाति व मिल्अल् अरज़ि व मिल्अ मा शिअ्त मिन शैइम्-बअ्दु। ऐ अल्लाह! हमारे आक़ा तेरी

حَدَّثَنَا مُحْرِزُ بْنُ عَوْنِ بْنِ أَبِي عَوْنٍ، حَدَّثَنَا خَلَفُ بْنُ خَلِيفَةَ الأَشْجَعِيُّ أَبُو أَحْمَدَ، عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ سَرِيعٍ، مَوْلَى آلِ عَمْرِو بْنِ حُرَيْثٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ حُرَيْثٍ، قَالَ صَلَّيْتُ خَلْفَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم الْفَجْرَ فَسَمِعْتُهُ يَقْرَأُ { فَلاَ أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ * الْجَوَارِ الْكُنَّسِ} وَكَانَ لاَ يَحْنِي رَجُلٌ مِنَّا ظَهْرَهُ حَتَّى يَسْتَتِمَّ سَاجِدًا .

باب مَا يَقُولُ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، وَوَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ الْحَسَنِ، عَنِ ابْنِ أَبِي أَوْفَى، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا رَفَعَ ظَهْرَهُ مِنَ الرُّكُوعِ قَالَ " سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَوَاتِ وَمِلْءَ الأَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَىْءٍ بَعْدُ " .

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ الْحَسَنِ، قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَدْعُو بِهَذَا الدُّعَاءِ " اللَّهُمَّ رَبَّنَا

ही तारीफ़ आसमान भरकर और ज़मीन भरकर और उनके सिवा जो चीज़ तू चाहे वो भर कर। (नसाई : 1/198, 19199)

لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَوَاتِ وَمِلْءَ الأَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَىْءٍ بَعْدُ " .

(1069) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) नबी (ﷺ) से बयान करते हैं कि आप फ़रमाया करते थे, अल्लाहुम्-म लकल हम्दु मिल्अस्समावाति व मिल्अल् अरज़ि व मिल्अ मा शिअ्त मिन शैइम्-बअ्दु अल्लाहुम्-म तह्हिरनी बिस्सल्जि वल्बरदि वल्माइल बारिदि अल्लाहुम्-म तह्हिरनी मिनज़्ज़ुनूबि वल्ख़ताया कमा युनक़्क़स्सौबुल अब्यज़ुम्-मिनल्-वसख़। ऐ अल्लाह हमारे आक़ा! तेरे लिये वो हम्द सज़ावार है जिससे आसमान भर जायें, ज़मीन भर जायें और उनके सिवा जो ज़र्फ़ तू चाहे वो भर जाये। ऐ अल्लाह! मुझे बर्फ, औलों और ठण्डे पानी से पाक-साफ़ कर दे। ऐ अल्लाह! मुझे गुनाहों और ख़ताओं से इस तरह पाक-साफ़ कर दे जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल-कुचैल से साफ़ किया जाता है।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَجْزَأَةَ بْنِ زَاهِرٍ، قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى، يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ " اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَاءِ وَمِلْءَ الأَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَىْءٍ بَعْدُ اللَّهُمَّ طَهِّرْنِي بِالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَالْمَاءِ الْبَارِدِ اللَّهُمَّ طَهِّرْنِي مِنَ الذُّنُوبِ وَالْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الأَبْيَضُ مِنَ الْوَسَخِ " .

(1070) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं। मुआ़ज़ की रिवायत में वसख़ की जगह दरनुन और यज़ीद की रिवायत में दनसुन है। (अबू दाऊद : 847, नसाई : 2/198)

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، قَالَ وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، كِلاَهُمَا عَنْ شُعْبَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ فِي رِوَايَةِ مُعَاذٍ " كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الأَبْيَضُ مِنَ الدَّرَنِ " . وَفِي رِوَايَةِ يَزِيدَ " مِنَ الدَّنَسِ " .

(1071) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब रुकूअ से

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ

الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ الدِّمَشْقِيُّ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ عَطِيَّةَ بْنِ قَيْسٍ، عَنْ قَزْعَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ قَالَ " رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَىْءٍ بَعْدُ أَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ أَحَقُّ مَا قَالَ الْعَبْدُ وَكُلُّنَا لَكَ عَبْدٌ اللَّهُمَّ لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلاَ يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ " .

अपना सर उठाते तो फ़रमाते, रब्बना लकल् हम्दु मिल्अस्समावाति वल्अरज़ि व मिल्अ मा शिअ्त मिन शैइम्-बअ्दु अहलस्सनाइ वल्मजदि अहक़्क़ु मा क़ालल् अब्दु व कुल्लुना लक अब्दुन अल्लाहुम्-म ला मानिअ लिमा अअ्तै-त वला मुअ्ति-य लिमा मनअ्-त वला यन्फ़उ ज़ल्जद्दि मिन्कल जद्दु। 'ऐ हमारे आक़ा! तेरे ही लिये तारीफ़ है, आसमान व ज़मीन भरकर और उनके सिवा जिस ज़र्फ़ की पूराई तू चाहे। ऐ सना और अज़मत के हक़दार! सहीह तरीन जो बात बन्दा कहता है और हम सब तेरे ही बन्दे हैं (वो ये है) ऐ अल्लाह! जो चीज़ तू इनायत फ़रमाना चाहे उसको कोई रोक नहीं सकता और जिस चीज़ से तू महरूम कर दे वो कोई दे नहीं सकता और किसी बुज़ुर्गी वाले की दौलत व तवंगरी तेरे मुक़ाबले में सूदमंद नहीं है।'

(नसाई : 2/198)

मुफ़रदातुल हदीस : (1) सना : तारीफ़ व तौसीफ़। **(2) मज्द :** अज़मत व बुज़ुर्गी, शर्फ़ व रिफ़अत। **(3) जद नसीबह :** ख़ुश क़िस्मती, इक़्तिदार अज़मत व बुज़ुर्गी, दौलत व तवंगरी। अगर जद्द जद्दा से मस्दर मुराद लें तो मानी होगा मेहनत व कोशिश करना। **(4) अहलस्सनाइ वल्मज्दि :** निदा या मदह की बिना पर मन्सूब है और हक़ मा क़ालल अब्द मुब्तदा है और अल्लाहुम्-म ला मानिअ आख़िर तक ख़बर है। और कुल्लुना लक अब्दुन जुम्ला मुअतरिज़ा है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمُ بْنُ بَشِيرٍ، أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ، عَنْ قَيْسِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ عَطَاءٍ،

(1072) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) जब रुकूअ से सर उठाते तो ये दुआ पढ़ते, अल्लाहुम्-म रब्बना लकल हम्दु मिल्अस्समावाति व मिल्अल् अरज़ि वमा बैनहुमा व मिल्अ मा शिअ्त मिन

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ قَالَ " اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَوَاتِ وَمِلْءَ الأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَىْءٍ بَعْدُ أَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلاَ يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ " .

शैइम्-बअ़्दु अहलस्सनाइ वल्मज्दि ला मानिअ़ लिमा अअ़्तै-त वला मुअ़्ति-य लिमा मनअ़्-त वला यन्फ़उ ज़ल्जद्दि मिन्कल् जद्दु। 'ऐ अल्लाह हमारे आक़ा! तेरे ही लिये तारीफ़ है आसमानों को भरकर, ज़मीन भरकर और उनके दरम्यान का ख़ला भरकर और उनके सिवा जो चीज़ तू चाहे वो भर कर। ऐ तारीफ़ व तौसीफ़ और बुज़ुर्गी के हक़दार जो चीज़ तू इनायत फ़रमाये उसको कोई छीन नहीं सकता और जिससे तू महरूम कर दे वो कोई दे नहीं सकता और किसी साहिबे इक़्तिदार और सल्तनत के लिये उसका इक़्तिदार तेरे मुक़ाबले में सूदमंद नहीं है।'

तम्बीह : मिल्अस्समावाति को अगर हम्द की सिफ़त बनायें तो मरफ़ूअ़ होगा। अगर हर्फ़े जर महज़ूफ़ मानें तो मजरूर होगा और अगर मस्दर महज़ूफ़ की सिफ़त मानें तो मन्सूब होगा और आम तौर पर इसको मन्सूब ही पढ़ते हैं।

حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا حَفْصٌ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ، حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم إِلَى قَوْلِهِ " وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَىْءٍ بَعْدُ " . وَلَمْ يَذْكُرْ مَا بَعْدَهُ .

(1073) इमाम साहब इसे एक और उस्ताद से इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरफ़ूअ़ रिवायत बयान करते हैं और दुआ़ सिर्फ़ मिल्अ मा शिअ्त मिन शैइम्बअ़्दु तक नक़ल करते हैं। बाद वाले दुआइया कलिमात बयान नहीं करते।

(अबू दाऊद : 876, नसाई : 2/217, 2/189-190, इब्ने माजह : 3899)

फ़ायदा : अल्लाहुम्-म ला मानिअ़ लिमा अअ़्तै-त वला मुअ़्ति-य लिमा मनअ़्-त वला यन्फ़उ ज़ल्जद्दि मिन्कल जद्दु को सहीह तरीन बात क़रार दिया गया है क्योंकि इसमें इंसान अपने तमाम मामलात अल्लाह तआ़ला के सुपुर्द करता है और इस बात को तस्लीम करता है कि अल्लाह तआ़ला की मशिय्यत के बग़ैर इंसान को समझ नहीं हासिल हो सकता। इंसान को जो चीज़ अल्लाह तआ़ला न

देना चाहे दुनिया की कोई ताक़त उसको दे नहीं सकती और जो वो देना चाहे दुनिया की कोई ताक़त उसको उससे महरूम नहीं कर सकती। इसलिये इंसान को नाजाइज़ तदाबीर और ज़राए (जरीयों) को इख़्तियार नहीं करना चाहिये और इन हदीसों से साबित होता है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रुकूअ के बाद दुआ पढ़ते थे, कभी छोटी और कभी बड़ी। इसलिये मुक़्तदी की तरह इमाम को भी रुकूअ के बाद दुआ पढ़नी चाहिये और इन हदीसों से ये भी मालूम हुआ कि अल्लाह तआला लामहदूद हम्द व सना का हक़दार है। आसमानों, ज़मीन और ख़ला की पूराई का मक़सद यही है क्योंकि इंसानी पैमानों के ऐतबार से ये चीज़ें मापनी मुम्किन नहीं हैं।

باب النَّهْىِ عَنْ قِرَاءَةِ الْقُرْآنِ، فِي الرُّكُوعِ وَالسُّجُودِ

बाब 42 : रुकूअ और सज्दे में क़िरअते क़ुरआन (क़ुरआन पढ़ना) मम्नूअ है

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ سُحَيْمٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَعْبَدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ كَشَفَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم السِّتَارَةَ وَالنَّاسُ صُفُوفٌ خَلْفَ أَبِي بَكْرٍ فَقَالَ " أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّهُ لَمْ يَبْقَ مِنْ مُبَشِّرَاتِ النُّبُوَّةِ إِلاَّ الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ يَرَاهَا الْمُسْلِمُ أَوْ تُرَى لَهُ أَلاَ وَإِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَقْرَأَ الْقُرْآنَ رَاكِعًا أَوْ سَاجِدًا فَأَمَّا الرُّكُوعُ فَعَظِّمُوا فِيهِ الرَّبَّ عَزَّ وَجَلَّ وَأَمَّا السُّجُودُ فَاجْتَهِدُوا فِي الدُّعَاءِ فَقَمِنٌ أَنْ يُسْتَجَابَ لَكُمْ " .قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ سُلَيْمَانَ،

(1074) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दरवाज़े का पर्दा उठाया और लोग अबू बकर के पीछे सफ़ों में खड़े थे। तो आपने फ़रमाया, 'ऐ लोगो! नुबूवत की बशारतों से अब सिर्फ़ अच्छे ख़्वाब बाक़ी रह गये हैं, जो ख़ुद मुसलमान देखेगा या उसके बारे में दूसरे को दिखाया जायेगा। ख़बरदार! मुझे रुकूअ और सज्दे की हालत में क़ुरआन पढ़ने से रोक दिया गया है। रहा रुकूअ तो उसमें अपने रब की अज़मत व किब्रियाई बयान करो और रहा सज्दा तो उसमें ख़ूब दुआ करो। वो इस लायक़ है कि उसको तुम्हारे हक़ में क़ुबूल कर लिया जाये।' फ़क़मिनुन लायक़ है क़ाबिल है।

फ़वाइद : (1) इस हदीस़ में इस बात की तरफ़ इशारा किया गया है कि आपकी वफ़ात का वक़्त क़रीब आ गया है और आपके बाद चूंकि कोई और नबी नहीं आना, आप पर नुबूवत व रिसालत ख़त्म हो चुकी है इसलिये वह्य की आमद का सिलसिला भी मुन्क़तअ (कट) हो जायेगा। सिर्फ़ अच्छे ख़्वाब रह जायेंगे जो किसी को अपने या दूसरे के हक़ में नज़र आ सकेंगे। (2) क़िरअत का मौक़ा और महल क़ियाम है और रुकूअ व सुजूद, जो आजिज़ी और फ़रौतनी पर दलालत करते हैं, उनमें अल्लाह के हुज़ूर अपनी बेबसी व नियाज़ का इज़हार किया जायेगा (उनके विर्द और वज़ाइफ़ अगले बाब में आ रहे हैं) इसलिये उनमें क़ुरआन नहीं पढ़ा जायेगा।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ سُحَيْمٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَعْبَدِ بْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ كَشَفَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم السِّتْرَ وَرَأْسُهُ مَعْصُوبٌ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ فَقَالَ " اللَّهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ " . ثَلاَثَ مَرَّاتٍ " إِنَّهُ لَمْ يَبْقَ مِنْ مُبَشِّرَاتِ النُّبُوَّةِ إِلاَّ الرُّؤْيَا يَرَاهَا الْعَبْدُ الصَّالِحُ أَوْ تُرَى لَهُ " . ثُمَّ ذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ سُفْيَانَ .

(1075) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पर्दा उठाया और मर्ज़ुल मौत में आपका सर पट्टी से बांधा हुआ था। आपने फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह! क्या मैंने तेरा पैग़ाम पहुँचा दिया।' तीन बार फ़रमाया। 'नुबूवत की बशारतों से सिर्फ़ ख़्वाब बाक़ी रह गये हैं, जिसे नेक इंसान देखेगा या उसके हक़ में दूसरे को दिखाया जायेगा।' उसके बाद सुफ़ियान की तरह हदीस़ बयान की।

(अबू दाऊद : 4044, 4045, 4046, तिर्मिज़ी : 264, 1737, नसाई : 2/189, 2/217, 8/167-168, 8/163, 8/169, 8/191, 8/192, 8/204, 8/168, तिर्मिज़ी : 1725, इब्ने माजह : 3602, 3642)

तम्बीह : बेरूत के नुस्ख़े में क़ाल अबू बकर हद्दसना सुफ़ियान अन सुलैमान को हदीस़ 1075 की सनद में मिला दिया गया है। लेकिन ये ग़लत है। इसका तअ़ल्लुक़ ऊपर वाली हदीस़ से है और हदीस़ 1075 की सनद हद्दसना यह्या बिन अय्यूब से शुरू होती है। नीज़ इस नुस्ख़े में अर्रूअ्या के बाद अस्सालिहा का लफ़्ज़ नहीं है और पाकिस्तानी नुस्ख़ों में अस्सालिहा का लफ़्ज़ मौजूद है।

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، وَحَرْمَلَةُ، قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ حَدَّثَنِي

(1076) हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रुकूअ और सज्दे में क़ुरआन पढ़ने से मना फ़रमाया।

إِبْرَاهِيمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُنَيْنٍ، أَنَّ أَبَاهُ، حَدَّثَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ، قَالَ نَهَانِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ أَقْرَأَ رَاكِعًا أَوْ سَاجِدًا .

وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنِ الْوَلِيدِ، - يَعْنِي ابْنَ كَثِيرٍ - حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُنَيْنٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ سَمِعَ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ، يَقُولُ نَهَانِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ قِرَاءَةِ الْقُرْآنِ وَأَنَا رَاكِعٌ أَوْ سَاجِدٌ .

(1077) हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) बयान करते हैं कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रुकूअ और सज्दे की हालत में क़ुरआन पढ़ने से रोका।

وَحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ، أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، أَخْبَرَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُنَيْنٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، أَنَّهُ قَالَ نَهَانِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنِ الْقِرَاءَةِ فِي الرُّكُوعِ وَالسُّجُودِ وَلاَ أَقُولُ نَهَاكُمْ .

(1078) हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रुकूअ और सज्दे में क़िरअत करने से मना किया। मैं ये नहीं कहता, तुम्हें मना किया।

(नसाई : 2/188, 2/217, 8/167, 8/191)

फ़ायदा : हज़रत अली (रज़ि.) का मक़सद ये नहीं है कि तुम रुकूअ व सुजूद में क़िरअत कर सकते हो। क्योंकि ये मुमानिअत तो सबके लिये है, सिर्फ़ इतना बताना मक़सूद है, आपने मुझे ख़िताब करके फ़रमाया था।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ، قَالاَ أَخْبَرَنَا أَبُو عَامِرٍ الْعَقَدِيُّ، حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ قَيْسٍ، حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُنَيْنٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ نَهَانِي حِبِّي ﷺ أَنْ أَقْرَأَ رَاكِعًا أَوْ سَاجِدًا .

(1079) हज़रत अली (रज़ि.) से रिवायत है कि मुझे मेरे महबूब (ﷺ) ने रुकूअ और सज्दे की हालत में क़िरअत करने से मना फ़रमाया।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ، ح وَحَدَّثَنِي عِيسَى بْنُ حَمَّادٍ الْمِصْرِيُّ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، حَدَّثَنَا الضَّحَّاكُ بْنُ عُثْمَانَ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا الْمُقَدَّمِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، - وَهُوَ الْقَطَّانُ - عَنِ ابْنِ عَجْلاَنَ، ح وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ - أَخْبَرَنِي مُحَمَّدٌ، وَهُوَ ابْنُ عَمْرٍو ح قَالَ وَحَدَّثَنِي هَنَّادُ بْنُ السَّرِيِّ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، كُلُّ هَؤُلاَءِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُنَيْنٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَلِيٍّ، - إِلاَّ الضَّحَّاكَ وَابْنَ عَجْلاَنَ فَإِنَّهُمَا زَادَا عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ عَلِيٍّ، - عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم كُلُّهُمْ قَالُوا نَهَانِي عَنْ قِرَاءَةِ الْقُرْآنِ وَأَنَا رَاكِعٌ وَلَمْ يَذْكُرُوا فِي رِوَايَتِهِمُ النَّهْىَ عَنْهَا فِي السُّجُودِ كَمَا ذَكَرَ الزُّهْرِيُّ وَزَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ وَالْوَلِيدُ بْنُ كَثِيرٍ وَدَاوُدُ بْنُ قَيْسٍ .

(1080) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से अलग-अलग राविया़ें से इब्राहीम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जुनैन की अपने बाप से अ़ली (रज़ि.) की नबी (ﷺ) से रिवायत बयान करते हैं। ज़ह्हाक और इब्ने अ़जलान ने अ़ली (रज़ि.) से पहले इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का इज़ाफ़ा किया है। सबने कहा कि आपने मुझे रुकूअ़ की हालत में क़ुरआन की क़िरअत से रोका। उनमें से किसी ने अपनी रिवायत में, ज़ोहरी, ज़ैद बिन अस्लम, वलीद बिन कस़ीर और दाऊद बिन क़ैस की रिवायत की तरह सज्दे में क़िरअत करने से रोकने का तज़्किरा नहीं किया।

وَحَدَّثَنَاهُ قُتَيْبَةُ، عَنْ حَاتِمِ بْنِ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُنَيْنٍ، عَنْ عَلِيٍّ، وَلَمْ يَذْكُرْ فِي السُّجُودِ .

(1081) इमाम साहब अपने एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं। लेकिन सज्दे में क़िरअत का तज़्किरा नहीं किया। या फ़िस्सुजूद नहीं कहा। (नसाई : 8/191)

وَحَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ حَفْصٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُنَيْنٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّهُ قَالَ نُهِيتُ أَنْ أَقْرَأَ، وَأَنَا رَاكِعٌ، ‏.‏ لاَ يَذْكُرُ فِي الإِسْنَادِ عَلِيًّا ‏.‏

(1082) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि उन्होंने कहा, मुझे रुकूअ की हालत में क़िरअत करने से मना किया गया है। इस सनद में हज़रत अली (रज़ि.) का ज़िक्र नहीं है।

(नसाई : 2/226)

باب مَا يُقَالُ فِي الرُّكُوعِ وَالسُّجُودِ

बाब 43 : रुकूअ और सज्दे में क्या कहा जायेगा

وَحَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مَعْرُوفٍ، وَعَمْرُو بْنُ سَوَّادٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ غَزِيَّةَ، عَنْ سُمَىٍّ، مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا صَالِحٍ، ذَكْوَانَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ ‏"‏ أَقْرَبُ مَا يَكُونُ الْعَبْدُ مِنْ رَبِّهِ وَهُوَ سَاجِدٌ فَأَكْثِرُوا الدُّعَاءَ ‏"‏ ‏.‏

(1083) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बन्दा सज्दे की हालत में अपने रब की रहमत के बहुत क़रीब होता है लिहाज़ा उसमें ख़ूब दुआ करो।'

(अबू दाऊद : 878)

फ़ायदा : सज्दा इन्तिहाई फ़रौतनी और आजिज़ी की दलील है। जिसके ज़रिये बन्दा अल्लाह के हुज़ूर अपने फ़क्रो-एहतियाज और मिस्कीनी का इज़हार करता है। इसलिये इस हालत में वो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम और रहमत का महल बनता है और उसे अल्लाह तआला का इन्तिहाई क़ुर्ब हासिल होता है। इसलिये ये दुआ का बेहतरीन महल है और इस क़ुर्ब की बिना पर कुछ उलमा ने क़ियाम की तवालत (लम्बाई) पर सज्दों की कसरत को तरजीह दी है। इसके बारे में उलमा के तीन क़ौल हैं : (1) ज़्यादा सज्दे और रुकूअ करना यानी ज़्यादा नफ़ल पढ़ना, लम्बा क़ियाम से अफ़ज़ल है और इसमें सज्दा लम्बा किया जायेगा। (2) इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम शाफ़ेई के नज़दीक तवील क़ियाम करना अफ़ज़ल है। (3) इमाम अहमद ने इस मसले में तवक़्क़ुफ़ किया है और कुछ ने कहा है, दोनों बराबर हैं और इमाम इस्हाक़ के नज़दीक दिन को रुकूअ व सुजूद की कसरत अफ़ज़ल है और रात

को तवील क़ियाम अफ़ज़ल है। आँहज़रत (ﷺ) के अमल से यही मालूम होता है कि आप रात को ग्यारह रकआत से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे।

وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، وَيُونُسُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ غَزِيَّةَ، عَنْ سُمَىٍّ، مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَقُولُ فِي سُجُودِهِ " اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي كُلَّهُ دِقَّهُ وَجِلَّهُ وَأَوَّلَهُ وَآخِرَهُ وَعَلاَنِيَتَهُ وَسِرَّهُ " .

(1084) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सज्दे में ये दुआ करते थे, अल्लाहुम्मग़्-फ़िरली ज़न्बी कुल्लहू दिक़्क़हू व जिल्लहू व अव्वलहू व आख़िरहू व अलानियतहू व सिर्रहू 'ऐ अल्लाह! मेरे सारे गुनाह बख़्श दे, छोटे भी और बड़े भी, पहले भी और पिछले भी, खुले हुए भी और छिपे हुए भी।'

(सहीह बुख़ारी : 794, 817, 4293, 4967, 4968, अबू दाऊद : 877, नसाई : 2/190, 2/219, ~~27220~~, इब्ने माजह : 889)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) दिक़्क़हू : जो छोटे या थोड़े हों। **(2) जिल्लहू :** बड़े या ज़्यादा हों।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُكْثِرُ أَنْ يَقُولَ فِي رُكُوعِهِ وَسُجُودِهِ " سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي " . يَتَأَوَّلُ الْقُرْآنَ .

(1085) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने रुकूअ और सज्दे में बकस़रत ये कलिमात कहा करते थे, सुब्हान-कल्लाहुम्-म व बिहम्दिक अल्लाहुम्मग़्-फ़िरली। 'ऐ अल्लाह हमारे रब! हम तेरी हम्द के साथ तेरी तस्बीह बयान करते हैं, ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे।' आप (ये कलिमात कहकर) क़ुरआन मजीद के हुक्म की तामील करते थे।

फ़ायदा : सूरह नसर में आपको ये हुक्म दिया गया है, फ़सब्बिह बिहम्दि रब्बिक वस्तग़्फ़िरहू आप अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्बीह करें और उससे मग़्फ़िरत तलब करें। इस हुक्म की तामील आप रुकूअ और सज्दे में ये कलिमात कहकर किया करते थे और आपकी इक़्तिदा और पैरवी में हमें भी ये कलिमात सज्दे और रुकूअ में कहने चाहिये।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُسْلِمٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُكْثِرُ أَنْ يَقُولَ قَبْلَ أَنْ يَمُوتَ " سُبْحَانَكَ وَبِحَمْدِكَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ " . قَالَتْ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا هَذِهِ الْكَلِمَاتُ الَّتِي أَرَاكَ أَحْدَثْتَهَا تَقُولُهَا قَالَ " جُعِلَتْ لِي عَلاَمَةٌ فِي أُمَّتِي إِذَا رَأَيْتُهَا قُلْتُهَا { إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ} " . إِلَى آخِرِ السُّورَةِ .

(1086) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी मौत से पहले बकसरत ये कलिमात कहते थे, सुब्हान-क व बिहम्दिक अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलैक 'तू अपनी हम्द के साथ पाक है, मैं तुझसे माफ़ी का तलबगार हूँ और तेरी तरफ़ रुजूअ करता हूँ (गुनाहों से बाज़ आता हूँ) आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! ये कलिमात जो मैं आपको कहते हुए देखती हूँ, अब क्यों शुरू कर दिये हैं? आपने फ़रमाया, 'मेरे लिये मेरी उम्मत में एक अलामत मुक़र्रर की गई है, जब उसे देखता हूँ तो ये कलिमात कहता हूँ। फिर आपने इज़ा जा-अ नसरुल्लाहि वल्फ़त्हु मुकम्मल सूरत पढ़ी।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا مُفَضَّلٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُسْلِمِ بْنِ صُبَيْحٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم مُنْذُ نَزَلَ عَلَيْهِ { إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ} يُصَلِّي صَلاَةً إِلاَّ دَعَا أَوْ قَالَ فِيهَا " سُبْحَانَكَ رَبِّي وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي " .

(1087) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि जब से रसूलुल्लाह (ﷺ) पर इज़ा जा-अ नसरुल्लाहि वल्फ़त्हु आयत उतरी। उस वक़्त से मैंने हर नमाज़ में आपको ये दुआइया कलिमात कहते देखा, सुब्हान-क रब्बी वबि-हम्दि-क अल्लाहुम्मग़्-फ़िरली। 'ऐ मेरे रब! तू अपनी हम्द के साथ तस्बीह (पाकीज़गी) से मुत्तसिफ़ है, ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे।'

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنِي عَبْدُ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا دَاوُدُ، عَنْ عَامِرٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ

(1088) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बकसरत फ़रमाते, सुब्हानल्लाहि वबि-हम्दिही अस्तग़्फ़िरुल्लाह व अतूबु इलैह 'अल्लाह! तू अपनी हम्द के

اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُكْثِرُ مِنْ قَوْلِ " سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ " . قَالَتْ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَاكَ تُكْثِرُ مِنْ قَوْلِ سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ . فَقَالَ " خَبَّرَنِي رَبِّي أَنِّي سَأَرَى عَلاَمَةً فِي أُمَّتِي فَإِذَا رَأَيْتُهَا أَكْثَرْتُ مِنْ قَوْلِ سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ . فَقَدْ رَأَيْتُهَا { إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ} فَتْحُ مَكَّةَ { وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا * فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا} " .

साथ पाक है, मैं अल्लाह से बख़्शिश का तालिब हूँ और उसकी तरफ़ रुजूअ करता हूँ।' तो मैंने आपसे पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आपको देखती हूँ कि आप बकसरत कहते हैं, सुब्हानल्लाहि वबि-हम्दिही अस्तग़्फ़िरुल्लाह व अतूबु इलैह। तो आपने फ़रमाया, 'मेरे रब ने मुझे ख़बर दी है कि मैं जल्द ही अपनी उम्मत में एक निशानी देखूँगा और जब मैं उसको देख लूँ तो बकसरत कहूँ, सुब्हानल्लाहि वबि-हम्दिही अस्तग़्फ़िरुल्लाह व अतूब तो मैं निशानी देख चुका हूँ। जब अल्लाह की नुसरत और फ़तह आ पहुँचे और आप लोगों को अल्लाह के दीन में जोक़-दर-जोक़ दाख़िल होते हैं ये देख लें तो अपने परवरदिगार की हम्द के साथ उसकी तस्बीह बयान कीजिये और उससे बख़्शिश तलब कीजिये, बिला शुब्हा वो तौबा कुबूल फ़रमाने वाला है।'

फ़ायदा : अल्लाह तआला ने आपको इस्तिग़फ़ार बख़्शिश तलब करने का हुक्म दिया है। क्योंकि इससे अब्दियत का इज़हार होता है और पता चलता है कि हर इंसान बल्कि रसूलुल्लाह भी अल्लाह का मोहताज और बन्दा समझता है कि अब्दियत का हक़ ऐसा है कि हक़ तो ये है कि हक़ अदा नहीं हुआ और इसमें दरहक़ीक़त उम्मत को हुक्म देना है कि वो हर वक़्त अपने आपको अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जह रखें और किसी वक़्त भी उसकी याद से ग़ाफ़िल न हों और कभी ये न समझें कि हमने अल्लाह तआला का हक़्क़े बन्दगी अदा कर दिया है। इंसान के काम में हर सूरत में कमी और कोताही रह जाती है। इसलिये इसको बकसरत इस्तिग़फ़ार और तस्बीह व तहमीद करना चाहिये और फ़तहे मक्का के बाद लोगों का बकसरत मुसलमान होना, यही फ़तह व नुसरत की अलामत थी और आपकी मौत के कुर्ब की तरफ़ भी इशारा था। इसलिये आपको बकसरत तस्बीह व तहमीद और इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया गया है और आप इस हुक्म की तामील में ये काम करने लगे, जो एक तरह

से अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़रीज़ए रिसालत की अदायगी की तौफ़ीक़ और आपके लाये हुए दीन की वुस्अत की नेमत का शुक्राना भी था।

(1089) इब्ने जुरैज से रिवायत है कि मैंने अता से पूछा, आप रुकूअ में क्या कहते हैं? उसने कहा, सुब्हान-क वबि-हम्दि-क ला इला-ह इल्ला अन्-त क्योंकि मुझे इब्ने अबी मुलैका ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत सुनाई। एक रात मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को बिस्तर पर न पाया। मैंने ख़याल किया, शायद आप किसी बीवी के पास चले गये हैं तो मैंने आपको तलाश किया। फिर वापस आई तो आप रुकूअ या सज्दे में थे और फ़रमा रहे थे, सुब्हानक वबि-हम्दिक ला इला-ह इल्ला अन्-त तू अपनी हम्द के साथ पाक है और तेरे सिवा कोई इबादत का हक़दार नहीं है। तो मैंने कहा, मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान मैं क्या समझ रही थी और आप किस हाल में हैं।

(नसाई : 2/223, 7/72)

وَحَدَّثَنِي حَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، قَالَ قُلْتُ لِعَطَاءٍ كَيْفَ تَقُولُ أَنْتَ فِي الرُّكُوعِ قَالَ أَمَّا سُبْحَانَكَ وَبِحَمْدِكَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ فَأَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتِ افْتَقَدْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ لَيْلَةٍ فَظَنَنْتُ أَنَّهُ ذَهَبَ إِلَى بَعْضِ نِسَائِهِ فَتَحَسَّسْتُ ثُمَّ رَجَعْتُ فَإِذَا هُوَ رَاكِعٌ أَوْ سَاجِدٌ يَقُولُ " سُبْحَانَكَ وَبِحَمْدِكَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ " . فَقُلْتُ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي إِنِّي لَفِي شَأْنٍ وَإِنَّكَ لَفِي آخَرَ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) इफ़्तक़त्तु : और फ़क़त्तु फ़ुक़्दान से हैं और दोनों का मानी है मैंने आपको गुम पाया, आप मुझे न मिले। **(2) तहस्ससत :** हिस्स से है, ढूण्ढना, तलाश करना, तहस्ससु का मानी होता है हवास से पता लगाना। **(3) शअ्नुन :** हाल, कहते हैं मा शानिउक तुम्हारा क्या हाल है। यानी मैं ग़ैरत में मुब्तला थी और आप दुनिया से अलग-थलग होकर अल्लाह तआला के साथ राज़ व नियाज़ में मशग़ूल थे।

(1090) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने एक रात रसूलुल्लाह (ﷺ) को बिस्तर पर न पाया तो मैं आपको टटोलने लगी तो मेरा हाथ आपके पाँव के तल्वों पर पड़ा। उस वक़्त आप सज्दे में थे और आपके

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ، عَنِ الأَعْرَجِ،

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ فَقَدْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَيْلَةً مِنَ الْفِرَاشِ فَالْتَمَسْتُهُ فَوَقَعَتْ يَدِي عَلَى بَطْنِ قَدَمَيْهِ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ وَهُمَا مَنْصُوبَتَانِ وَهُوَ يَقُولُ " اللَّهُمَّ أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ لاَ أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ " .

पाँव खड़े थे और आप अल्लाह के हुज़ूर (ﷺ) अ़र्ज़ कर रहे थे, अल्लाहुम्-म अऊज़ु बिरिज़ा-क मिन सख़ति-क वबि-मुआफ़ातिक मिन उ़क़ूबतिक व अऊज़ुबि-क मिन्क ला उह्सी स़नाअन अ़लैक अन्-त कमा अस्नै-त अ़ला नफ़्सिक। 'ऐ अल्लाह! मैं तेरी नाराज़ी से तेरी रज़ामन्दी की पनाह लेता हूँ और तेरी सज़ा से तेरी माफ़ी की पनाह लेता हूँ और तेरी पकड़ से बस तेरी ही पनाह लेता हूँ, मैं तेरी सिफ़त व स़ना पूरी तरह बयान नहीं कर सकता। (बस यही कह सकता हूँ) कि तू वैसा है जैसाकि तूने ख़ुद अपने बारे में बतलाया है।'

(अबू दाऊद : 879, नसाई : 1/102, 6099)

मुफ़रदातुल हदीस़ : रज़ा के मुक़ाबले में सख़त है और मुआफ़ह के मुक़ाबले में उ़क़ूबत है। इसलिये उनको एक दूसरे के मुक़ाबले रखा लेकिन बिक यानी अल्लाह उसका मुक़ाबिल नहीं हो सकता। इसलिये कहना मिन्क ख़ुलासा कलाम यही है तेरी पकड़ से तेरे सिवा कोई पनाह नहीं दे सकता। **मस्जिदा :** जीम पर ज़बर हो तो मस्दर मीमी या ज़र्फ़ होगा और अगर ज़ेर हो तो घर की नमाज़गाह मुराद होगी।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है कि औरत के हाथ लगाने से वुज़ू नहीं टूटता। अगरचे इमाम मालिक शाफ़ेई और इमाम अहमद (रह.) के नज़दीक वुज़ू टूट जाता है। लेकिन ये बात दुरुस्त नहीं है मगर ये कि इससे इंसान का अ़ज़्वे मख़्सूस (शर्मगाह) मुतास्सिर हो।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ مُطَرِّفِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الشِّخِّيرِ، أَنَّ عَائِشَةَ، نَبَّأَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ

(1091) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने रुकूअ़ और सज्दे में ये कलिमात कहते थे, सुब्बूहुन क़ुद्दूसुन रब्बुल मलाइकति वर्रूह निहायत पाक और मुक़द्दस व मुनज़्ज़ा है परवरदिगार, मलाइका का और रूह का।

صلى الله عليه وسلم كَانَ يَقُولُ فِي رُكُوعِهِ وَسُجُودِهِ " سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلاَئِكَةِ وَالرُّوحِ " .

(अबू दाऊद : 872, नसाई : 2/232-224)

फ़ायदा : रूह से मुराद जिब्रईल (अलै.) हैं। कुछ ने कहा, ये कोई और बड़ा फ़रिश्ता है या मुस्तक़िल मख़्लूक़ है, जिसको फ़रिश्ते भी नहीं देख सकते।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنِي قَتَادَةُ، قَالَ سَمِعْتُ مُطَرِّفَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الشِّخِّيرِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ وَحَدَّثَنِي هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ مُطَرِّفٍ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِهَذَا الْحَدِيثِ .

(1092) इमाम साहब अपने और उस्ताद से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं।

फ़ायदा : नबी (ﷺ) रुकूअ और सज्दे में छोटी-बड़ी अलग-अलग दुआयें पढ़ा करते थे। लेकिन मुस्लिम की रिवायात में इनके पढ़ने की तादाद की तअयीन नहीं की गई। कुछ जगह बकसरत कहने का लफ़्ज़ आया है। सुनन की कुछ रिवायात से मालूम होता है कि रुकूअ व सुजूद में अगर तीन बार से कम भी सुब्हानअल्लाह कह लिया जाये तो रुकूअ और सज्दा तो अदा हो जायेगा लेकिन उसमें एक गुना नुक़सान रहेगा। कामिल अदायगी के लिये कम से कम तीन बार तस्बीह कहना ज़रूरी है। क्योंकि इसको ज़ालिक अदनाहु (ये अदना दर्जा है) कहा गया है। इसलिये इससे ज़्यादा मर्तबा कहना चाहिये और कुछ मर्तबा इन अरकान को लम्बा करना चाहिये। क्योंकि हज़रत आइशा (रज़ि.) की रिवायत है कि आप बकसरत रुकूअ व सुजूद में सुब्हानक अल्लाहुम्म रब्बना वबि-हम्दिक अल्लाहुम्मग़्-फ़िरली कहते थे।

باب فَضْلِ السُّجُودِ وَالْحَثِّ عَلَيْهِ

बाब 44 : सज्दे की फ़ज़ीलत और उसकी तरग़ीब

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ سَمِعْتُ الأَوْزَاعِيَّ، قَالَ حَدَّثَنِي الْوَلِيدُ بْنُ هِشَامٍ الْمُعَيْطِيُّ،

(1093) हज़रत मअदान बिन अबी तलहा यअमर से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के आज़ाद करदा गुलाम सौबान (रज़ि.) से मिला तो मैंने उनसे पूछा, मुझे कोई ऐसा अमल बताइये जिसके करने से अल्लाह मुझे जन्नत में

दाख़िल फ़रमा दे या मैंने पूछा, जो अमल अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब हो। उन्होंने ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई (और मेरी बात का कोई जवाब न दिया) फिर मैंने दोबारा उनसे यही सवाल किया, उन्होंने फिर ख़ामोशी इख़्तियार कर ली। फिर मैंने उनसे तीसरी बार यही सवाल किया तो उन्होंने जवाब दिया, मैंने यही सवाल रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया था तो आपने फ़रमाया था, 'तुम अल्लाह के हुज़ूर में सज्दे ज़्यादा किया करो, क्योंकि तुम अल्लाह के लिये जो सज्दा भी करोगे अल्लाह उसके नतीजे में तुम्हारा दर्जा ज़रूर बुलंद करेगा और तुम्हारा कोई न कोई गुनाह उसकी वजह से ज़रूर माफ़ होगा।'

मअदान कहते हैं, उसके बाद मैं अबू दरदा (रज़ि.) को मिला तो उनसे भी यही सवाल किया, उन्होंने भी वही बताया जो मुझे स़ौबान (रज़ि.) ने बताया था।

(तिर्मिज़ी : 388, 389, नसाई : 2/228, इब्ने माजह : 1423, 2112)

حَدَّثَنِي مَعْدَانُ بْنُ أَبِي طَلْحَةَ الْيَعْمَرِيُّ، قَالَ لَقِيتُ ثَوْبَانَ مَوْلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقُلْتُ أَخْبِرْنِي بِعَمَلٍ أَعْمَلُهُ يُدْخِلُنِي اللَّهُ بِهِ الْجَنَّةَ . أَوْ قَالَ قُلْتُ بِأَحَبِّ الأَعْمَالِ إِلَى اللَّهِ . فَسَكَتَ ثُمَّ سَأَلْتُهُ فَسَكَتَ ثُمَّ سَأَلْتُهُ الثَّالِثَةَ فَقَالَ سَأَلْتُ عَنْ ذَلِكَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " عَلَيْكَ بِكَثْرَةِ السُّجُودِ لِلَّهِ فَإِنَّكَ لاَ تَسْجُدُ لِلَّهِ سَجْدَةً إِلاَّ رَفَعَكَ اللَّهُ بِهَا دَرَجَةً وَحَطَّ عَنْكَ بِهَا خَطِيئَةً " . قَالَ مَعْدَانُ ثُمَّ لَقِيتُ أَبَا الدَّرْدَاءِ فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ لِي مِثْلَ مَا قَالَ لِي ثَوْبَانُ .

(1094) हज़रत रबीआ बिन कअब अस्लमी (रज़ि.) से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ रात गुज़ारता था। (जब आप तहज्जुद के लिये उठे) तो मैं वुज़ू का पानी और दूसरी ज़रूरियात लेकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने मुझे फ़रमाया, 'माँगो।' मैंने अर्ज़ किया, मेरी माँग ये है कि जन्नत में आपकी रिफ़ाक़त नसीब हो। आपने

حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ مُوسَى أَبُو صَالِحٍ، حَدَّثَنَا هِقْلُ بْنُ زِيَادٍ، قَالَ سَمِعْتُ الأَوْزَاعِيَّ، قَالَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ، حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ، حَدَّثَنِي رَبِيعَةُ بْنُ كَعْبٍ الأَسْلَمِيُّ، قَالَ كُنْتُ أَبِيتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأَتَيْتُهُ بِوَضُوئِهِ وَحَاجَتِهِ فَقَالَ لِي " سَلْ " .

فَقُلْتُ أَسْأَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِي الْجَنَّةِ . قَالَ " أَوَغَيْرَ ذَلِكَ " . قُلْتُ هُوَ ذَاكَ . قَالَ " فَأَعِنِّي عَلَى نَفْسِكَ بِكَثْرَةِ السُّجُودِ " .

फ़रमाया, 'यही या इसके सिवा कुछ और भी?' मैंने अर्ज़ किया, बस मैं तो यही माँगता हूँ। तो आपने फ़रमाया, 'तुम अपने इस मामले में सज्दों की कसरत के ज़रिये मेरी मदद करो।'
(अबू दाऊद : 1320, तिर्मिज़ी : 3416, नसाई : 2/227, 3/20, इब्ने माजह : 3879)

फ़वाइद : (1) रबीआ बिन कअब अस्लमी (रज़ि.) अस्हाबे सुफ़्फ़ह में से थे और सफ़र व हज़र में आपके ख़ादिम की हैसियत से आपके साथ रहते थे तो किसी रात ये वाक़िया पेश आया। नीज़ सौबान और रबीआ (रज़ि.) की रिवायत में कसरते सुजूद से मुराद नफ़ल नमाज़ों की कसरत है। **(2)** मुक़र्रबीने बारगाहे ख़ुदावन्दी पर कभी-कभी ऐसे हालात आते हैं कि वो महसूस करते हैं, इस वक़्त अल्लाह तआला की इनायात व अफ़ज़ाल मुतवज्जह हैं। जिसकी बिना पर वो समझते हैं कि इस वक़्त अल्लाह से जो कुछ माँगा जायेगा इन्शाअल्लाह मिल जायेगा। किसी रात जब हज़रत रबीआ (रज़ि.) आपकी ख़िदमत में पानी और दूसरी ज़रूरत की चीज़ें लेकर हाज़िर हुए। तो आपने उनकी ख़िदमत से मुतास्सिर होकर मसर्रत व इम्बिसात के आलम में फ़रमाया। रबीआ तुम्हारे दिल में अगर किसी ख़ास चीज़ की चाहत और आरज़ू हो तो इस वक़्त माँग लो। मैं अल्लाह तआला से दुआ करूँगा और उम्मीद है वो तुम्हारी मुराद पूरी फ़रमायेगा। उन्होंने इसके जवाब में, जन्नत में आपकी रिफ़ाक़त (साथ) की ख़्वाहिश की और बार-बार दरयाफ़्त करने पर भी यही कहा, मुझे तो बस यही चाहिये। तो आपने फ़रमाया, तुम जन्नत में मेरी रिफ़ाक़त चाहते हो, ये बहुत बुलंद व बाला मक़ाम है और इस अज़ीम मर्तबे के लिये मैं तुम्हारे हक़ में दुआ करूँगा। लेकिन तुम भी इसका इस्तिहक़ाक़ पैदा करने के लिये अमली कोशिश करो और वो ख़ास अमल, जो इस मंज़िल तक पहुँचाने में मददगार हो सकता है वो अल्लाह के हुज़ूर सज्दों की कसरत है। लिहाज़ा तुम इसका ख़ास एहतिमाम करके अपने इस मामले में मेरी मदद करो। हमारी इस वज़ाहत से इस ग़लत इस्तिदलाल का जवाब मिल जाता है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़रमाना, माँग क्या माँगता है? इस पर दलालत करता है कि अल्लाह तआला ने दुनिया और आख़िरत की तमाम नेमतें आपके मिल्क और इख़्तियार में दे दी थीं कि जिसको चाहें और जितना चाहें (बशर्त मुवाफ़िक़ते तक़दीर) अता कर दीं। अगर सब नेमतें आपके इख़्तियार और मिल्क में दे दी थीं। तो फिर आपको ये कहने की ज़रूरत क्यों पेश आई। फ़अइन्नी अला नफ़्सिक बिकसरतिस्सुजूद और अल्लाह तआला ने ये क्यों फ़रमाया, 'इन्न–क ला तहदी मन अह्बब्ब और कुल्ला अम्लिकु लिनफ़्सी नफ़अंव्-वला ज़र्रा मैं तो अपने नफ़ा और नुक़सान का भी मालिक नहीं हूँ और आपने अपनी फूफी

और बेटी को क्यों फ़रमाया, 'ला अम्लिकु लकुम मिनल्लाहि शैआ और इसके अलावा अल्लाह की इजाज़त से देने को तो इख़्तियार और मिल्कियत से ताबीर नहीं किया जा सकता कि जो कुछ चाहते और जिसको चाहते अपने परवरदिगार के इज़्न (इजाज़त) से अता फ़रमाते जब इज़्न की ज़रूरत है तो फिर हर चे और हर करा कहना कहाँ तक दुरुस्त है।

باب أَعْضَاءِ السُّجُودِ وَالنَّهْيِ عَنْ كَفِّ الشَّعْرِ، وَالثَّوْبِ، وَعَقْصِ الرَّأْسِ، فِي الصَّلاَةِ

बाब 45 : सज्दे के आज़ा, कपड़ों और बालों के इकट्ठा करने और नमाज़ में सर पर जूड़ा बांधने की मुमानिअत (मनाही)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ أَبُو الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ طَاوُسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ أُمِرَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم أَنْ يَسْجُدَ عَلَى سَبْعَةٍ وَنُهِيَ أَنْ يَكُفَّ شَعْرَهُ وَثِيَابَهُ . هَذَا حَدِيثُ يَحْيَى . وَقَالَ أَبُو الرَّبِيعِ عَلَى سَبْعَةِ أَعْظُمٍ وَنُهِيَ أَنْ يَكُفَّ شَعْرَهُ وَثِيَابَهُ الْكَفَّيْنِ وَالرُّكْبَتَيْنِ وَالْقَدَمَيْنِ وَالْجَبْهَةِ .

(1095) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) को सात आज़ा (अंगों) पर सज्दा करने का हुक्म दिया गया और बालों और कपड़ों के समेटने से मना किया। ये यहया की हदीस है। और अबू रबीअ़ ने कहा, सात हड्डियों पर सज्दा करने का हुक्म दिया गया और अपने बालों और अपने कपड़ों को इकट्ठा या जमा करने से मना किया गया। दोनों हथेलियाँ दोनों घुटने, दोनों क़दम और पेशानी पर।

(सहीह बुख़ारी : 809, 810, 815, 816, अबू दाऊद : 889, 890, तिर्मिज़ी : 273, नसाई : 2/208, 2/215, 2/216, इब्ने माजह : 838, 1040)

मुफ़रदातुल हदीस : अंय्यकुफ़्फ़ : कफ़ रोकना या ज़मीन पर गिरने से समेटना और इकट्ठा करना और कफ़्फ़त का मानी भी जमा करना और समेटना है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، - وَهُوَ

(1096) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे

ابْنُ جَعْفَرٍ - حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ طَاوُسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أُمِرْتُ أَنْ أَسْجُدَ عَلَى سَبْعَةِ أَعْظُمٍ وَلاَ أَكُفَّ ثَوْبًا وَلاَ شَعْرًا " .

सात हड्डियों पर सज्दा करने का हुक्म दिया गया है और इस बात का भी कि मैं न कपड़ा ज़मीन पर गिरने से रोकूँ और न बाल।'

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أُمِرَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم أَنْ يَسْجُدَ عَلَى سَبْعٍ وَنُهِيَ أَنْ يَكْفِتَ الشَّعْرَ وَالثِّيَابَ " .

(1097) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) को सात (आज़ा) पर सज्दा करने का हुक्म दिया गया और बालों और कपड़ों को समेटने से रोका गया।
(सहीह बुख़ारी:812, नसाई:2/209, इब्नेमाजह: 884)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ طَاوُسٍ، عَنْ طَاوُسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أُمِرْتُ أَنْ أَسْجُدَ عَلَى سَبْعَةِ أَعْظُمٍ الْجَبْهَةِ - وَأَشَارَ بِيَدِهِ عَلَى أَنْفِهِ - وَالْيَدَيْنِ وَالرِّجْلَيْنِ وَأَطْرَافِ الْقَدَمَيْنِ وَلاَ نَكْفِتَ الثِّيَابَ وَلاَ الشَّعْرَ " .

(1098) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे सात हड्डियों, पेशानी (और आपने अपने हाथ से अपनी नाक की तरफ़ इशारा किया) और दोनों हाथों, दोनों पाँव यानी दोनों घुटनों और दोनों क़दमों के किनारों पर सज्दा करने का हुक्म दिया गया है और ये कि कपड़ों और बालों को न समेटूँ।'

حَدَّثَنَا أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي ابْنُ جُرَيْجٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " أُمِرْتُ أَنْ أَسْجُدَ عَلَى سَبْعٍ وَلاَ أَكْفِتَ الشَّعْرَ وَلاَ الثِّيَابَ الْجَبْهَةِ وَالأَنْفِ وَالْيَدَيْنِ وَالرُّكْبَتَيْنِ وَالْقَدَمَيْنِ " .

(1099) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से रिवायत सुनाई कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे सात (आज़ा) पर सज्दा करने का हुक्म दिया गया है और इसका कि बालों को न समेटूँ और न कपड़ों को, पेशानी और नाक दोनों हाथों, दोनों घुटनों और दोनों क़दमों पर।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا بَكْرٌ، - وَهُوَ ابْنُ مُضَرَ - عَنِ ابْنِ الْهَادِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ،

(1100) हज़रत अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़रमाते सुना, 'जब बन्दा सज्दा करता है तो उसके साथ

عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ، عَنِ الْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِذَا سَجَدَ الْعَبْدُ سَجَدَ مَعَهُ سَبْعَةُ أَطْرَافٍ وَجْهُهُ وَكَفَّاهُ وَرُكْبَتَاهُ وَقَدَمَاهُ " .

सात आज़ा (अंग) उसका चेहरा (नाक समेत पेशानी) उसकी दोनों हथेलियाँ उसके दोनों घुटने और उसके दोनों क़दम सज्दा करते हैं।'
(अबू दाऊद : 891, तिर्मिज़ी : 272, नसाई : 2/208, 1098, इब्ने माजह : 885)

حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ سَوَّادٍ الْعَامِرِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، أَنَّ بُكَيْرًا، حَدَّثَهُ أَنَّ كُرَيْبًا مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ حَدَّثَهُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّهُ رَأَى عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الْحَارِثِ يُصَلِّي وَرَأْسُهُ مَعْقُوصٌ مِنْ وَرَائِهِ فَقَامَ فَجَعَلَ يَحُلُّهُ فَلَمَّا انْصَرَفَ أَقْبَلَ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ فَقَالَ مَا لَكَ وَرَأْسِي فَقَالَ إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّمَا مَثَلُ هَذَا مَثَلُ الَّذِي يُصَلِّي وَهُوَ مَكْتُوفٌ " .

(1101) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने अब्दुल्लाह बिन हारिस को नमाज़ पढ़ते देखा और उसने सर के पीछे बालों का जूड़ा बनाया हुआ था। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) खड़े होकर उसको खोलने लगे। तो जब इब्ने हारिस ने सलाम फेरा तो इब्ने अब्बास (रज़ि.) की तरफ़ रुख़ करके पूछा, मेरे सर के साथ तुम्हारा क्या तअल्लुक़? (यानी मेरे बाल क्यों खोले?) तो उन्होंने जवाब दिया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना, 'इस तरह (जूड़ा बांधकर नमाज़ पढ़ने वाले) की मिसाल उस इंसान की तरह है जो इस हाल में नमाज़ पढ़ता है कि उसकी मश्कें कसी हों।'
(अबू दाऊद : 647, नसाई : 2/215)

मुफ़रदातुल हदीस़ : व रअसुहू मअक़ूस : उसके सर पर बालों का जूड़ा बांधा हुआ था। अक़्सुश्शअ़रि का मानी होता है बालों की चोटी बनाना या गूंधना कहते हैं। अक़सतिल मरअतु शअ़रहा औरत ने अपने बालों का जूड़ा बांधा।

फ़ायदा : इन अहादीस़ में सज्दे के लिये सात आज़ा की तसरीह आई है। नाक पेशानी में दाख़िल है, इससे अलग नहीं है और इन सब आज़ा का ज़मीन पर लगाना ज़रूरी है। अहनाफ़ का पाँव के बारे में इख़्तिलाफ़ है। कुछ पाँव के ज़मीन पर लगाने को फ़र्ज़ कहते हैं, कुछ सुन्नत और कुछ मुस्तहब। इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक नाक का लगाना ज़रूरी नहीं है और साहिबैन के नज़दीक ज़रूरी है। इमाम अहमद (रह.) के नज़दीक पेशानी के साथ नाक का भी ज़मीन पर लगाना ज़रूरी है। इसके बग़ैर नमाज़ नहीं होगी। बाक़ी अइम्मा के नज़दीक नाक का ज़मीन पर लगाना सुन्नत या मुस्तहब है। सल्लू कमा रअयतुमूनी उसल्ली का तो मानी यही है कि सातों आज़ा ज़मीन पर लगाये जायें।

कुछ लोग सज्दे में जाते हुए इस बात की कोशिश करते हैं कि अपने कपड़ों और बालों को ख़ाक आलूद होने से बचायें। ये बात चूंकि सज्दे की रूह और मक़सद के मुनाफ़ी है। इसलिये नमाज़ में बालों का जूड़ा बांधने और कपड़ों को समेटने से मना फ़रमाया। अब्दुल्लाह बिन हारिस़ सर का जूड़ा बांधकर नमाज़ पढ़ रहे थे तो अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने नमाज़ की हालत में उनका जूड़ा खोल दिया। जिससे साबित हुआ कि कपड़े समेटकर या जूड़ा बांधकर नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं है। ये मानी नहीं है कि ये काम नमाज़ के दौरान में न करे अगर नमाज़ से पहले कर ले और बाद में नमाज़ शुरू कर दे तो फिर दुरुस्त है।

باب الاِعْتِدَالِ فِي السُّجُودِ وَوَضْعِ الْكَفَّيْنِ عَلَى الأَرْضِ وَرَفْعِ الْمِرْفَقَيْنِ عَنِ الْجَنْبَيْنِ وَرَفْعِ الْبَطْنِ عَنِ الْفَخِذَيْنِ فِي السُّجُودِ

बाब 46 : सज्दे में ऐतदाल और दोनों हथेलियों को ज़मीन पर रखना और सज्दे में दोनों कोहनियों को दोनों पहलूओं से दूर रखना और पेट को रानों से जुदा रखना

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اعْتَدِلُوا فِي السُّجُودِ وَلاَ يَبْسُطْ أَحَدُكُمْ ذِرَاعَيْهِ انْبِسَاطَ الْكَلْبِ " .

(1102) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सज्दा ऐतदाल के साथ करो और कोई अपनी बाहों को सज्दे में इस तरह न बिछाये जिस तरह कुत्ता बाहें ज़मीन पर बिछा देता है।'

(सहीह बुख़ारी : 822, अबू दाऊद : 897, तिर्मिज़ी : 276, नसाई : 2/213)

फ़ायदा : सज्दे में तमानियत और सुकून इख़्तियार करना चाहिये। यानी सज्दे में हर अंग को इत्मीनान के साथ ज़मीन पर रखना चाहिये। ऐसा न हो कि सर ज़मीन पर रखा और फ़ोरन उठा लिया। इसी तरह सज्दे में कलाइयों को ज़मीन से ऊपर उठा रहना चाहिये और आपने कलाइयों के ज़मीन पर रखने की तश्बीह कुत्ते के फ़ैअ़ल के साथ दी है ताकि इस फ़ैअ़ल की क़बाहत और बुराई अच्छी तरह नमाज़ी के ज़हननशीन हो जाये।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِيهِ يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ

(1103) इमाम साहब मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत अपने अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं। इब्ने जअ़फ़र की रिवायत में ला यब्सुत की जगह वला यतबस्सत का

الْحَارِثِ - قَالاَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَفِي حَدِيثِ ابْنِ جَعْفَرٍ" وَلاَ يَتَبَسَّطْ أَحَدُكُمْ ذِرَاعَيْهِ انْبِسَاطَ الْكَلْبِ "

लफ़्ज़ है। बाक़ी अल्फ़ाज़ यकसाँ हैं मानी एक ही है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ إِيَادٍ، عَنْ إِيَادٍ، عَنِ الْبَرَاءِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا سَجَدْتَ فَضَعْ كَفَّيْكَ وَارْفَعْ مِرْفَقَيْكَ " .

(1104) हज़रत बराअ (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुम सज्दा करो तो अपनी हथेलियाँ ज़मीन पर रखो और अपनी कोहनियाँ ऊपर उठाओ।'

फ़ायदा : नमाज़ में कोहनियाँ ज़मीन से ऊपर उठाई जायेंगी और पहलूओं से भी जुदा होंगी।

باب مَا يَجْمَعُ صِفَةَ الصَّلاَةِ وَمَا يُفْتَتَحُ بِهِ وَيُخْتَمُ بِهِ وَصِفَةَ الرُّكُوعِ وَالاِعْتِدَالِ مِنْهُ وَالسُّجُودِ وَالاِعْتِدَالِ مِنْهُ وَالتَّشَهُّدِ بَعْدَ كُلِّ رَكْعَتَيْنِ مِنَ الرُّبَاعِيَّةِ وَصِفَةَ الْجُلُوسِ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ وَفِي التَّشَهُّدِ الأَوَّلِ

बाब 47 : नमाज़ की जामेअ सिफ़त और जिससे नमाज़ का इफ़्तिताह (शुरूआत) होता है और जिससे इख़्तिताम (ख़त्म) होता है और रुकूअ की कैफ़ियत और उसमें ऐतदाल, सज्दा और उसमें ऐतदाल, चार रकअत वाली नमाज़ में हर दो रकअत के बाद तशह्हुद और दो सज्दों के दरम्यान बैठने और पहले तशह्हुद में बैठने का तरीक़ा व सूरत

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا بَكْرٌ، - وَهُوَ ابْنُ مُضَرَ - عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيعَةَ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَالِكٍ ابْنِ بُحَيْنَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا صَلَّى فَرَّجَ بَيْنَ يَدَيْهِ حَتَّى يَبْدُوَ بَيَاضُ إِبْطَيْهِ .

(1105) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मालिक इब्ने बुहैना (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब नमाज़ पढ़ते अपने हाथों को अच्छी तरह खोल देते यानी अपने पहलूओं से अलग रखते थे। यहाँ तक कि बग़ल की सफ़ेदी नज़र आती थी।

(सहीह बुख़ारी : 390, 807, नसाई : 2/212)

फ़ायदा : मालिक अब्दुल्लाह का बाप है और बुहैना माँ है।

(1106) इमाम साहब अम्र बिन हारिस़ और लैस़ बिन सअद से जअफ़र बिन रबीआ की सनद से हदीस़ बयान करते हैं और अम्र बिन हारिस़ की रिवायत के अल्फ़ाज़ ये हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सज्दा फ़रमाते, सज्दे में अपनी कोहनियों और बाज़ूओं को अपने पहलूओं से दूर रखते। यहाँ तक कि आपकी बग़लों की सफ़ेदी देखी जाती और लैस़ के अल्फ़ाज़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सज्दा करते अपने हाथ बग़लों से जुदा रखते। यहाँ तक कि मैं आपकी बग़लों की सफ़ेदी देख लेता।

حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ سَوَّادٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، وَاللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، كِلاَهُمَا عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيعَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَفِي رِوَايَةِ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا سَجَدَ يُجَنِّحُ فِي سُجُودِهِ حَتَّى يُرَى وَضَحُ إِبْطَيْهِ . وَفِي رِوَايَةِ اللَّيْثِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا سَجَدَ فَرَّجَ يَدَيْهِ عَنْ إِبْطَيْهِ حَتَّى إِنِّي لأَرَى بَيَاضَ إِبْطَيْهِ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) फ़र्रज बैन यदैहि : हाथों को खोलना, कुशादा करना, यानी उनको पहलूओं से अलग और दूर रखना। **(2) युजन्निहु : तफ़रीज, तजनीह** और तख़्वियह तीनों का मानी एक ही है और उन सब का मक़सद है अपने हाथों को अपने पहलूओं से अलग और दूर रखना है। यानी दोनों बाहें इस क़द्र कुशादा हों कि अगर बदन नंगा हो तो बग़लें नज़र आ सकें।

(1107) हज़रत मैमूना (रज़ि.) से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) सज्दा करते तो अगर बकरी का बच्चा आपकी बग़लों के दरम्यान से गुज़रना चाहता तो गुज़र जाता (गुज़र सकता)।

(अबू दाऊद : 898, 2/213, इब्ने माजह : 880)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، جَمِيعًا عَنْ سُفْيَانَ، - قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، - عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الأَصَمِّ، عَنْ عَمِّهِ، يَزِيدَ بْنِ الأَصَمِّ عَنْ مَيْمُونَةَ، قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا سَجَدَ لَوْ شَاءَتْ بَهْمَةٌ أَنْ تَمُرَّ بَيْنَ يَدَيْهِ لَمَرَّتْ .

फ़ायदा : आप अपने हाथों को बग़लों से इस क़द्र दूर रखते थे कि नीचे से बकरी का बच्चा गुज़र सकता था।

(1108) नबी (ﷺ) की ज़ौजा मैमूना (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ)

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ الْفَزَارِيُّ، قَالَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ

اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الأَصَمِّ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ الأَصَمِّ، أَنَّهُ أَخْبَرَهُ عَنْ مَيْمُونَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا سَجَدَ خَوَّى بِيَدَيْهِ - يَعْنِي جَنَّحَ - حَتَّى يُرَى وَضَحُ إِبْطَيْهِ مِنْ وَرَائِهِ وَإِذَا قَعَدَ اطْمَأَنَّ عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى .

जब सज्दा करते तो अपने हाथों को कुशादा करते यानी खोलते। यहाँ तक कि पीछे से आपकी बग़लों की सफ़ेदी देखी जा सकती और जब बैठते तो बायें रान पर बैठते।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - وَاللَّفْظُ لِعَمْرٍو - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرُونَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ بُرْقَانَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ الأَصَمِّ، عَنْ مَيْمُونَةَ بِنْتِ الْحَارِثِ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا سَجَدَ جَافَى حَتَّى يَرَى مَنْ خَلْفَهُ وَضَحَ إِبْطَيْهِ . قَالَ وَكِيعٌ يَعْنِي بَيَاضَهُمَا .

(1109) हज़रत मैमूना बिन्ते हारिस़ (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सज्दा करते दोनों हाथों को पहलूओं से दूर रखते यहाँ तक कि पीछे वाला आपकी बग़लों की सफ़ेदी देख सकता। वकीअ़ कहते हैं, वज़ह से मुराद बग़लों की सफ़ेदी है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ، - يَعْنِي الأَحْمَرَ - عَنْ حُسَيْنٍ الْمُعَلِّمِ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - قَالَ أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ الْمُعَلِّمُ، عَنْ بُدَيْلِ بْنِ مَيْسَرَةَ، عَنْ أَبِي الْجَوْزَاءِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَسْتَفْتِحُ الصَّلاَةَ بِالتَّكْبِيرِ وَالْقِرَاءَةَ بِـ { الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ} وَكَانَ إِذَا رَكَعَ لَمْ يُشْخِصْ رَأْسَهُ وَلَمْ

(1110) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ का आग़ाज़ तकबीर से और क़िरअत का आग़ाज़ अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन से करते और जब रुकूअ़ करते तो अपना सर न (पुश्त) से ऊँचा करते और न उसे नीचा करते, बल्कि दोनों के दरम्यान रखते और जब रुकूअ़ से अपना सर उठाते सज्दे में न जाते यहाँ तक कि सीधे खड़े हो जाते और जब सज्दे से अपना सर उठाते, सज्दा न करते यहाँ तक कि सीधे बैठ जाते और हर दो रकअ़तों के बाद

يُصَوِّبْهُ وَلَكِنْ بَيْنَ ذَلِكَ وَكَانَ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ لَمْ يَسْجُدْ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَائِمًا وَكَانَ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ السَّجْدَةِ لَمْ يَسْجُدْ حَتَّى يَسْتَوِيَ جَالِسًا وَكَانَ يَقُولُ فِي كُلِّ رَكْعَتَيْنِ التَّحِيَّةَ وَكَانَ يَفْرِشُ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَيَنْصِبُ رِجْلَهُ الْيُمْنَى وَكَانَ يَنْهَى عَنْ عُقْبَةِ الشَّيْطَانِ وَيَنْهَى أَنْ يَفْتَرِشَ الرَّجُلُ ذِرَاعَيْهِ افْتِرَاشَ السَّبُعِ وَكَانَ يَخْتِمُ الصَّلَاةَ بِالتَّسْلِيمِ . وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ نُمَيْرٍ عَنْ أَبِي خَالِدٍ وَكَانَ يَنْهَى عَنْ عَقِبِ الشَّيْطَانِ .

अत्तहिय्यात पढ़ते और अपना बायाँ पाँव बिछा लेते और दायाँ पाँव खड़ा रखते और शैतान की बैठक से मना फ़रमाते और इससे भी मना फ़रमाते कि इंसान अपनी बाहें या कलाइयाँ दरिन्दे की तरह बिछा दे और नमाज़ का इख़्तिताम अस्सलामु अलैकुम व रह्मतुल्लाह से करते। और इब्ने नुमैर की अबू ख़ालिद से रिवायत में उक़बतिश्शैतान की जगह अक़िबिश्शैतान है।

(अबू दाऊद : 783, इब्ने माजह : 812, 869, 893)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) लम युश्ख़िस रअ्सहू व लम युसव्विब : इश्ख़ास बुलंद करने और उठाने को कहते हैं और तसवीब बहुत नीचा करने को। मक़सद ये है कि इश्ख़ास और तसवीब में ऐतदाल और तवस्सुत इख़्तियार करते (यानी कमर और सर बिल्कुल बराबर होते)। **(2) उक़बह** और **अक़ब** का मानी है कुत्ते और दरिन्दे की तरह सुरीन ज़मीन पर रख लेना और पिण्डलियाँ खड़ी करके हाथ ज़मीन पर रख लेना।

फ़वाइद : (1) नमाज़ का आग़ाज़ अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन से करने का मक़सद ये है कि क़िरअत का आग़ाज़ सूरह फ़ातिहा से करते। ये मानी नहीं है कि बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ते थे और क़िरअत से भी पहले आप दुआए इस्तिफ़्ताह पढ़ते थे क्योंकि बिस्मिल्लाह तो पढ़नी होती है। इख़्तिलाफ़ तो इसके जहर या सिर्र में है कि बुलंद पढ़ेंगे या आहिस्ता। **(2)** रुकूअ में पुश्त को बिल्कुल हमवार और बराबर रखा जायेगा और सर को भी न ऊँचा किया जायेगा और न नीचा। ऐतदाल और तवस्सुत के साथ पुश्त (पीठ) की सतह पर रखा जायेगा। इस तरह रुकूअ के बाद क़ौमा और दोनों सज्दों के दरम्यान जल्से में सुकून और इत्मीनान के साथ हर अंग और जोड़ को अपनी-अपनी जगह पर आने का मौक़ा दिया जायेगा। तेज़ रफ़्तारी और उज्लत (जल्दबाज़ी) से काम नहीं लिया जायेगा। **(3)** हर दो रकअत के बाद अत्तहिय्यात के लिये बैठेंगे। इमाम अहमद और मुहद्दिसीन के नज़दीक दोनों तशह्हुद ज़रूरी हैं। इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक दोनों वाजिब हैं। जो हनफ़ी इस्तिलाह के मुताबिक़ फ़र्ज़ से कमतर दर्जा है फ़र्ज़ नहीं हैं। मालिकिया के नज़दीक सुन्नत हैं और इमाम शाफ़ेई के नज़दीक पहला तशह्हुद सुन्नत है और दूसरा फ़र्ज़ है। दोनों तशह्हुदों में दायाँ पाँव खड़ा करके बायें पाँव

को बिछाकर उस पर बैठेंगे। इमाम मालिक के नज़दीक दोनों जगह तवर्रुक है। यानी दायाँ पाँव खड़ा करके सुरीन पर बैठेंगे और बायें पाँव को उसके नीचे से निकाल लेंगे। इमाम शाफ़ेई (रह.) के नज़दीक सलाम वाले तशह्हुद में तवर्रुक है और जिसमें सलाम न हो उसमें इफ़्तिराश (बायें पाँव पर बैठना) और मुहद्दिसीन का मौक़िफ़ भी यही है और हनाबिला के नज़दीक जहाँ दो तशह्हुद हैं, वहाँ पहले में इफ़्तिराश और दूसरे में तवर्रुक और जहाँ तशह्हुद एक ही है जैसे सुबह की नमाज़, जुम्आ और ईदैन वहाँ इफ़्तिराश है। ख़ुलासा ये है कि सलाम वाले जल्से के सिवा तमाम जल्सात में इफ़्तिराश है। **(4)** अइम्मए सलास़ा मालिक, शाफ़ेई, अहमद और जुम्हूर सलफ़ के नज़दीक सलाम फ़र्ज़ है और अहनाफ़ के नज़दीक वाजिब है। कुछ हज़रात ने लिखा है कि इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक सलाम की जगह कोई ऐसा काम करना जो नमाज़ के मुनाफ़ी हो, किफ़ायत कर जायेगा। लेकिन अ़ल्लामा करख़ी और उनके हमनवा हज़रात के नज़दीक सलाम ही फेरा जायेगा। वो ख़ुरूज बसन्अ़ा, नमाज़ के मुनाफ़ी हरकत की फ़र्ज़िय्यत को तस्लीम नहीं करते। साहिबे हिदाया और उनके हमनवा ख़ुरूज बसन्अ़ा ही को फ़र्ज़ क़रार देते हैं। तर्के वाजिब से कुछ अहनाफ़ के नज़दीक गुनाह लाज़िम आता है और कुछ के नज़दीक नमाज़ का दोहराना (इआदा)।

باب سُتْرَةِ الْمُصَلِّي

बाब 48 : नमाज़ी के लिये सुतरह

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ مُوسَى بْنِ طَلْحَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا وَضَعَ أَحَدُكُمْ بَيْنَ يَدَيْهِ مِثْلَ مُؤْخِرَةِ الرَّحْلِ فَلْيُصَلِّ وَلاَ يُبَالِ مَنْ مَرَّ وَرَاءَ ذَلِكَ " .

(1111) हज़रत तलहा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई अपने सामने पालान की पिछली लकड़ी के बराबर कोई चीज़ रख ले तो फिर नमाज़ पढ़ता रहे और उससे परे गुज़रने वाले की परवाह न करे।'

(अबू दाऊद : 685, तिर्मिज़ी : 335, इब्ने माजह : 940)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عُبَيْدٍ الطَّنَافِسِيُّ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ مُوسَى بْنِ طَلْحَةَ، عَنْ أَبِيهِ،

(1112) हज़रत तलहा (रज़ि.) से रिवायत है कि हम नमाज़ पढ़ते रहते और चौपाये हमारे सामने से गुज़रते तो हमने इसका तज़्किरा रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया। आपने फ़रमाया, 'अगर पालान की पिछली लकड़ी के बराबर

قَالَ كُنَّا نُصَلِّي وَالدَّوَابُّ تَمُرُّ بَيْنَ أَيْدِينَا فَذَكَرْنَا ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ " مِثْلُ مُؤْخِرَةِ الرَّحْلِ تَكُونُ بَيْنَ يَدَىْ أَحَدِكُمْ ثُمَّ لاَ يَضُرُّهُ مَا مَرَّ بَيْنَ يَدَيْهِ " . وَقَالَ ابْنُ نُمَيْرٍ " فَلاَ يَضُرُّهُ مَنْ مَرَّ بَيْنَ يَدَيْهِ " .

कोई चीज़ तुम्हारे सामने मौजूद हो तो फिर उसे उससे आगे गुज़रने वाली चीज़ मुज़िर (नुक़सानदेह) नहीं है। इब्ने नुमैर ने मा की जगह मन कहा।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ، أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا قَالَتْ سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ سُتْرَةِ الْمُصَلِّي فَقَالَ " مِثْلُ مُؤْخِرَةِ الرَّحْلِ " .

(1113) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से नमाज़ी के सुतरे के बारे में पूछा गया तो आपने फ़रमाया, 'पालान की पिछली लकड़ी के बराबर हो।'
(नसाई : 2/62)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ، أَخْبَرَنَا حَيْوَةُ، عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ، مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ سُئِلَ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ عَنْ سُتْرَةِ الْمُصَلِّي فَقَالَ " كَمُؤْخِرَةِ الرَّحْلِ " .

(1114) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से ग़ज़्वए तबूक के मौक़े पर नमाज़ी के सुतरे के बारे में पूछा गया तो आपने फ़रमाया, 'पालान के पिछले हिस्से की तरह या उसके बराबर हो।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا خَرَجَ يَوْمَ الْعِيدِ أَمَرَ بِالْحَرْبَةِ فَتُوضَعُ بَيْنَ يَدَيْهِ فَيُصَلِّي إِلَيْهَا وَالنَّاسُ وَرَاءَهُ وَكَانَ يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السَّفَرِ فَمِنْ ثَمَّ اتَّخَذَهَا الأُمَرَاءُ .

(1115) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ईद के दिन बाहर निकलते तो नेज़ा अपने आगे गाड़ने का हुक्म देते और उसकी तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ते और लोग आपके पीछे होते, सफ़र में भी आप ऐसा ही करते। इसी बिना पर हुक्काम नेज़ा रखते हैं।
(सहीह बुख़ारी : 494, अबू दाऊद : 687)

फ़ायदा : सुतरे का मक़सद ये है कि नमाज़ी के सामने कोई चीज़ आड़ या रुकावट के लिये रखी जाये ताकि नमाज़ी की नज़र उससे पहले पड़े और उसके परे से गुज़रने वाले से उसकी नमाज़ मुतास्सिर न हो और ये तभी मुम्किन है कि नमाज़ी बिला वजह अपनी नज़र सज्दागाह से हटाये और अगर इंसान जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ रहा हो तो फिर इमाम का सुतरह ही काफ़ी है। हर नमाज़ी को अलग सुतरह रखने की ज़रूरत नहीं होगी और उसकी ज़रूरत मस्जिद से बाहर खुली जगह में पेश आयेगी। जैसाकि आप ईदैन और सफ़र के मौक़े पर आगे नेज़ा नसब करवाते थे। मस्जिद में दीवार ही इमाम के लिये सुतरह है। सुतरे की शक्ल आपने पालान की पिछली लकड़ी के बराबर को क़रार दिया है और ये एक हाथ या उससे कुछ बड़ी होती है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَرْكُزُ - وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ يَغْرِزُ - الْعَنَزَةَ وَيُصَلِّي إِلَيْهَا . زَادَ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ وَهِيَ الْحَرْبَةُ .

(1116) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है नबी (ﷺ) नेज़ा गाड़ते और उसकी तरफ़ नमाज़ पढ़ते। इब्ने नुमैर ने यरकुज़ु और अबू बकर ने यग़्रिज़ु का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया। दोनों का मानी है कि आप गाड़ते थे और इब्ने अबी शैबा की रिवायत में ये इज़ाफ़ा है, उबैदुल्लाह ने कहा, अतरह से मुराद हरबह (बरछा) है।

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَعْرِضُ رَاحِلَتَهُ وَهُوَ يُصَلِّي إِلَيْهَا .

(1117) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) अपनी सवारी को सामने बिठाकर उसकी तरफ़ नमाज़ पढ़ते या उसकी तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ लेते।

(सहीह बुख़ारी : 507)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُصَلِّي إِلَى رَاحِلَتِهِ . وَقَالَ ابْنُ نُمَيْرٍ إِنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم صَلَّى إِلَى بَعِيرٍ .

(1118) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) अपनी सवारी की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ लेते थे और इब्ने नुमैर ने कहा, नबी (ﷺ) ने ऊँट या ऊँटनी की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ी।

(अबू दाऊद : 692, तिर्मिज़ी : 352)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) बईर : इत्लाक़, इंसान की तरह मुअन्नस और मुज़क्कर दोनों के लिये है और जमल रजुल की तरह मुजक्कर के लिये है और **(2) नाक़ह :** मिरअत (औरत) की तरह मुअन्नस़ के लिये है।

(1119) हज़रत औन बिन अबी जुहैफ़ा अपने बाप से बयान करते हैं कि मैं मक्का में नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप अबतह मक़ाम पर सुर्ख़ चमड़े के एक ख़ैमे में थे। तो बिलाल आपके वुज़ू का पानी लेकर निकले। किसी को पानी मिल गया और किसी पर दूसरे ने छिड़क दिया। फिर नबी (ﷺ) सुर्ख़ जोड़ा पहने हुए निकले गोया कि मैं आपकी पिण्डलियों की सफ़ेदी को देख रहा हूँ। आपने वुज़ू किया और बिलाल (रज़ि.) ने अज़ान कही और मैं उनके मुँह के साथ इधर-उधर दायें-बायें मुँह फेरने लगा हय्य अलस्सलाह और हय्य अलल फ़लाह कह रहे थे। फिर आपके लिये नेज़ा गाड़ा गया और आपने आगे बढ़कर ज़ुहर की दो रकअतें पढ़ाई (आप मदीना से तशरीफ़ लाये थे इस बिना पर मुसाफ़िर थे) आपके आगे से गधे और कुत्ते गुज़रते रहे, किसी ने उन्हें रोका नहीं। फिर आपने असर की दो रकअतें पढ़ीं और फिर मदीना वापसी तक दो रकआत ही पढ़ते रहे।

(अबू दाऊद : 520, तिर्मिज़ी : 197, नसाई : 8/200)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، جَمِيعًا عَنْ وَكِيعٍ، - قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا عَوْنُ بْنُ أَبِي جُحَيْفَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم بِمَكَّةَ وَهُوَ بِالأَبْطَحِ فِي قُبَّةٍ لَهُ حَمْرَاءَ مِنْ أَدَمٍ - قَالَ - فَخَرَجَ بِلاَلٌ بِوَضُوئِهِ فَمِنْ نَائِلٍ وَنَاضِحٍ - قَالَ - فَخَرَجَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم عَلَيْهِ حُلَّةٌ حَمْرَاءُ كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى بَيَاضِ سَاقَيْهِ - قَالَ - فَتَوَضَّأَ وَأَذَّنَ بِلاَلٌ - قَالَ - فَجَعَلْتُ أَتَتَبَّعُ فَاهُ هَا هُنَا وَهَا هُنَا - يَقُولُ يَمِينًا وَشِمَالاً - يَقُولُ حَىَّ عَلَى الصَّلاَةِ حَىَّ عَلَى الْفَلاَحِ - قَالَ - ثُمَّ رُكِزَتْ لَهُ عَنَزَةٌ فَتَقَدَّمَ فَصَلَّى الظُّهْرَ رَكْعَتَيْنِ يَمُرُّ بَيْنَ يَدَيْهِ الْحِمَارُ وَالْكَلْبُ لاَ يُمْنَعُ ثُمَّ صَلَّى الْعَصْرَ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ لَمْ يَزَلْ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ حَتَّى رَجَعَ إِلَى الْمَدِينَةِ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) नाइलुन : अख़ज़ करना, लेना। नाल, यनाल से **नाज़िहुन** छिड़कना यानी कुछ तो बराहे रास्त पानी ले रहे थे और कुछ पर पानी लेने वाले छिड़क रहे थे। **(2) हुल्लतुन हम्राउ** : हुल्ला जोड़ा, एक बांधने के लिये तहबंद और दूसरी ओढ़ने की चादर।

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि वुज़ू में इस्तेमाल होने वाला पानी नापाक नहीं है इसलिये सहाबा किराम (रज़ि.) आपके वुज़ू पर झपटते थे और एक दूसरे पर सबक़त ले जाने की कोशिश करते। आपके वुज़ू के बचे हुए पानी से सहाबा किराम (रज़ि.) का तबर्रुक हासिल करना इस बात की दलील नहीं बन सकती कि बुज़ुर्गों के आस़ार से तबर्रुक हासिल करना जाइज़ है। क्योंकि सहाबा किराम

(रज़ि.) ने ये काम रसूलुल्लाह (ﷺ) के सिवा किसी और बड़ी शख़्सियत के लिये नहीं किया। ख़ुलफ़ाए राशिदीन से अफ़ज़ल और बरतर कौनसा बुज़ुर्ग हो सकता है। सहाबा किराम (रज़ि.) ने उनके आसार से तबर्रुक हासिल नहीं किया और आपके फ़ुज़्लात का क्या हुक्म है। अब इस पर बहस की ज़रूरत नहीं है कि वो पाक थे या पलीद तो ये आपकी ज़िन्दगी के दौर का मसला था। आपके लुआबे दहन और वुज़ू के पानी पर तो सहाबा किराम झपटते थे, बोल व बराज़ और ख़ून के सिलसिले में तो ये वाक़िया पेश नहीं आया। तफ़्सील पीछे गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ أَبِي زَائِدَةَ، حَدَّثَنَا عَوْنُ بْنُ أَبِي جُحَيْفَةَ، أَنَّ أَبَاهُ، رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي قُبَّةٍ حَمْرَاءَ مِنْ أَدَمٍ وَرَأَيْتُ بِلاَلاً أَخْرَجَ وَضُوءًا فَرَأَيْتُ النَّاسَ يَبْتَدِرُونَ ذَلِكَ الْوَضُوءَ فَمَنْ أَصَابَ مِنْهُ شَيْئًا تَمَسَّحَ بِهِ وَمَنْ لَمْ يُصِبْ مِنْهُ أَخَذَ مِنْ بَلَلِ يَدِ صَاحِبِهِ ثُمَّ رَأَيْتُ بِلاَلاً أَخْرَجَ عَنَزَةً فَرَكَزَهَا وَخَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي حُلَّةٍ حَمْرَاءَ مُشَمِّرًا فَصَلَّى إِلَى الْعَنَزَةِ بِالنَّاسِ رَكْعَتَيْنِ وَرَأَيْتُ النَّاسَ وَالدَّوَابَّ يَمُرُّونَ بَيْنَ يَدَىِ الْعَنَزَةِ .

(1120) औन बिन अबी जुहैफ़ा से रिवायत है कि उसके बाप ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को चमड़े के सुर्ख़ ख़ैमे में देखा और बिलाल (रज़ि.) को देखा, उसने आपके वुज़ू का पानी बाहर निकाला उसने कहा, तो मैंने लोगों को देखा कि वो उस पानी को लेने के लिये एक-दूसरे से सबक़त ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। जिसको उससे कुछ पानी मिल गया, उसने उसको बदन पर मल लिया और जिसको न मिला उसने अपने साथी के तर हाथ से हाथ तर किया। फिर मैंने बिलाल को देखा उसने एक नेज़ा निकाला और उसको गाड़ा और रसूलुल्लाह (ﷺ) सुर्ख़ जोड़े में उसको ऊपर उठाये हुए निकले या जल्दी से निकले और नेज़े की तरफ़ रुख़ करके लोगों को दो रकअत नमाज़ पढ़ाई और मैंने लोगों और चौपायों को देखा कि वो नेज़े के सामने से गुज़र रहे थे।

(सहीह बुख़ारी : 376, 5786, 5859)

फ़ायदा : अगर इमाम के आगे सुतरह हो तो उसके सामने से गुज़रने की सूरत में नमाज़ मुतास्सिर नहीं होती।

(1121) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से रिवायत बयान करते हैं और एक-दूसरे से ज़्यादा बयान करता है। मालिक बिन मिग़वल की हदीस़ में है जब दोपहर का वक़्त हुआ, बिलाल ने निकलकर नमाज़ के लिये अज़ान दी।
(सहीह बुख़ारी : 633, 3566)

حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو عُمَيْسٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي الْقَاسِمُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ، عَنْ زَائِدَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلٍ، كِلاَهُمَا عَنْ عَوْنِ بْنِ أَبِي جُحَيْفَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِنَحْوِ حَدِيثِ سُفْيَانَ وَعُمَرَ بْنِ أَبِي زَائِدَةَ يَزِيدُ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ وَفِي حَدِيثِ مَالِكِ بْنِ مِغْوَلٍ فَلَمَّا كَانَ بِالْهَاجِرَةِ خَرَجَ بِلاَلٌ فَنَادَى بِالصَّلاَةِ .

(1122) हज़रत अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) से रिवायत है कि दोपहर के वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) बतहा की तरफ़ निकले और वुज़ू करके ज़ुहर और असर की दो-दो रकअतें पढ़ीं और आपके सामने नेज़ा था। शोबा ने कहा, औन ने अपने बाप अबू जुहैफ़ा से ये इज़ाफ़ा किया कि नेज़े के पार से औरतें और गधे गुज़र रहे थे।
(सहीह बुख़ारी : 187, 501, 3553, नसाई : 1/235)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا جُحَيْفَةَ، قَالَ خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِالْهَاجِرَةِ إِلَى الْبَطْحَاءِ فَتَوَضَّأَ فَصَلَّى الظُّهْرَ رَكْعَتَيْنِ وَالْعَصْرَ رَكْعَتَيْنِ وَبَيْنَ يَدَيْهِ عَنَزَةٌ . قَالَ شُعْبَةُ وَزَادَ فِيهِ عَوْنٌ عَنْ أَبِيهِ أَبِي جُحَيْفَةَ وَكَانَ يَمُرُّ مِنْ وَرَائِهَا الْمَرْأَةُ وَالْحِمَارُ .

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित हुआ कि सफ़र में दोनों नमाज़ें इकट्ठी पढ़ी जा सकती हैं (जमा भी तक़दीम है)।

(1123) इमाम साहब अपने और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं जिसमें ये इज़ाफ़ा किया है लोग आपके वुज़ू के बचे हुए बाक़ी मान्दा पानी को हासिल कर रहे थे।

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، بِالإِسْنَادَيْنِ جَمِيعًا مِثْلَهُ . وَزَادَ فِي حَدِيثِ الْحَكَمِ فَجَعَلَ النَّاسُ يَأْخُذُونَ مِنْ فَضْلِ وَضُوئِهِ .

(1124) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैं गधी पर सवार होकर आगे बढ़ा, जबकि मैं बुलूग़त के क़रीब था और आप (ﷺ) लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे थे। तो मैं सफ़ के आगे से गुज़रा फिर मैं गधी से उतरा सफ़ में शरीक हो गया और गधी को चरने के लिये छोड़ दिया। इस पर मुझे किसी ने ऐतराज़ नहीं किया।

(सहीह बुख़ारी : 76, 493, 861, 1857, 4412, अबू दाऊद : 715, तिर्मिज़ी : 337, नसाई : 2/63, इब्ने माजह : 947)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ أَقْبَلْتُ رَاكِبًا عَلَى أَتَانٍ وَأَنَا يَوْمَئِذٍ، قَدْ نَاهَزْتُ الاِحْتِلاَمَ وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي بِالنَّاسِ بِمِنًى فَمَرَرْتُ بَيْنَ يَدَىِ الصَّفِّ فَنَزَلْتُ فَأَرْسَلْتُ الأَتَانَ تَرْتَعُ وَدَخَلْتُ فِي الصَّفِّ فَلَمْ يُنْكِرْ ذَلِكَ عَلَىَّ أَحَدٌ .

(1125) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि वो गधी पर सवार होकर आये और रसूलुल्लाह (ﷺ) हज्जतुल विदाअ़ के मौक़े पर मिना में लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे थे। गधी सफ़ के कुछ हिस्से के आगे से गुज़री। फिर वो उससे उतर कर लोगों के साथ सफ़ में मिल गये।

حَدَّثَنَا حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ، أَخْبَرَهُ أَنَّهُ، أَقْبَلَ يَسِيرُ عَلَى حِمَارٍ وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَائِمٌ يُصَلِّي بِمِنًى فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ يُصَلِّي بِالنَّاسِ - قَالَ - فَسَارَ الْحِمَارُ بَيْنَ يَدَىْ بَعْضِ الصَّفِّ ثُمَّ نَزَلَ عَنْهُ فَصَفَّ مَعَ النَّاسِ .

(1126) इमाम साहब अपने तीन और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं जिसमें ये है कि नबी (ﷺ) अ़रफ़ा में नमाज़ पढ़ा रहे थे।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ قَالَ وَالنَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي بِعَرَفَةَ .

(1127) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं और

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ،

بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَلَمْ يَذْكُرْ فِيهِ مِنًى وَلاَ عَرَفَةَ وَقَالَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ أَوْ يَوْمَ الْفَتْحِ .

उसमें मिना या अरफ़ा का तज़्किरा नहीं किया और कहा हज्जतुल विदाअ या फ़तहे मक्का के मौक़े पर।

باب مَنْعِ الْمَارِّ بَيْنَ يَدَىِ الْمُصَلِّي

बाब 49 : नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाले को रोकना

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا كَانَ أَحَدُكُمْ يُصَلِّي فَلاَ يَدَعْ أَحَدًا يَمُرُّ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلْيَدْرَأْهُ مَا اسْتَطَاعَ فَإِنْ أَبَى فَلْيُقَاتِلْهُ فَإِنَّمَا هُوَ شَيْطَانٌ " .

(1128) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई नमाज़ पढ़ रहा हो तो किसी को आगे से न गुज़रने दे, जहाँ तक मुम्किन हो उसको दफ़अ करे (हटाये) अगर वो न माने (बाज़ न आये) तो उससे लड़े (ज़ोर से धक्का दे) क्योंकि वो शैतान है।'

(अबू दाऊद : 697, 698, नसाई : 2/66, इब्ने माजह : 954)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) वलियदरअहु : उसको (इशारा या हाथ से) दफ़अ करे, रोके या हटाये। **(2) इन्नमा हु-व शैतान :** वो सरकश और बाग़ी है और शैतान के पीछे लगकर अच्छी बात को क़ुबूल नहीं कर रहा।

फ़ायदा : इस हदीस़ से साबित होता है अगर कोई इंसान नमाज़ी के आगे से गुज़रने की कोशिश करे तो उसको रोका जायेगा। अगर वो नर्मी से बाज़ न आये तो फिर ज़ोर और ताक़त से रोका जायेगा। लेकिन ये तभी जाइज़ है जब नमाज़ी ने अपने आगे सुतरह रखा हो और उसके बावजूद वो बिला वजह नमाज़ी के आगे से गुज़रे।

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، حَدَّثَنَا ابْنُ هِلاَلٍ، - يَعْنِي حُمَيْدًا - قَالَ بَيْنَمَا أَنَا وَصَاحِبٌ، لِي نَتَذَاكَرُ حَدِيثًا

(1129) हज़रत इब्ने हिलाल (रह.) (यानी हुमैद) बयान करते हैं कि इसी दौरान मैं और मेरा साथी एक हदीस़ के बारे में बातचीत कर रहे थे कि अबू सालेह सम्मान ने कहा, मैं तुम्हें अबू सईद से सुनी हुई हदीस़ और उनका

إِذْ قَالَ أَبُو صَالِحٍ السَّمَّانُ أَنَا أُحَدِّثُكَ، مَا سَمِعْتُ مِنْ أَبِي سَعِيدٍ، وَرَأَيْتُ، مِنْهُ قَالَ بَيْنَمَا أَنَا مَعَ أَبِي سَعِيدٍ، يُصَلِّي يَوْمَ الْجُمُعَةِ إِلَى شَىْءٍ يَسْتُرُهُ مِنَ النَّاسِ إِذْ جَاءَ رَجُلٌ شَابٌّ مِنْ بَنِي أَبِي مُعَيْطٍ أَرَادَ أَنْ يَجْتَازَ بَيْنَ يَدَيْهِ فَدَفَعَ فِي نَحْرِهِ فَنَظَرَ فَلَمْ يَجِدْ مَسَاغًا إِلاَّ بَيْنَ يَدَىْ أَبِي سَعِيدٍ فَعَادَ فَدَفَعَ فِي نَحْرِهِ أَشَدَّ مِنَ الدَّفْعَةِ الأُولَى فَمَثَلَ قَائِمًا فَنَالَ مِنْ أَبِي سَعِيدٍ ثُمَّ زَاحَمَ النَّاسَ فَخَرَجَ فَدَخَلَ عَلَى مَرْوَانَ فَشَكَا إِلَيْهِ مَا لَقِيَ - قَالَ - وَدَخَلَ أَبُو سَعِيدٍ عَلَى مَرْوَانَ فَقَالَ لَهُ مَرْوَانُ مَا لَكَ وَلاِبْنِ أَخِيكَ جَاءَ يَشْكُوكَ . فَقَالَ أَبُو سَعِيدٍ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ إِلَى شَىْءٍ يَسْتُرُهُ مِنَ النَّاسِ فَأَرَادَ أَحَدٌ أَنْ يَجْتَازَ بَيْنَ يَدَيْهِ فَلْيَدْفَعْ فِي نَحْرِهِ فَإِنْ أَبَى فَلْيُقَاتِلْهُ فَإِنَّمَا هُوَ شَيْطَانٌ " .

अमल बताता हूँ। मैं अबू सईद के साथ था और वो जुम्आ के दिन लोगों से किसी चीज़ की आड़ में नमाज़ पढ़ रहे थे। इतने में अबू मुऐत के ख़ानदान का एक नौजवान आया और उसने उनके आगे से गुज़रना चाहा तो उन्होंने उसके सीने पर मारा। उसने नज़र दौड़ाई तो उसे अबू सईद के सामने के सिवा कोई रास्ता न मिला तो उसने दोबारा गुज़रना चाहा तो उन्होंने पहली बार से ज़्यादा शिद्दत से उसके सीने पर हाथ मारा। यानी ज़ोर से धक्का दिया तो वो सीधा खड़ा हो गया और अबू सईद पर तअ़नो-तश्नीअ़ करने लगा। फिर लोगों की भीड़ में दाख़िल हो गया और निकलकर मरवान के पास गया और अपनी तकलीफ़ की उससे शिकायत की और अबू सईद भी मरवान के पास पहुँच गये। तो उसने उनसे कहा, आपका अपने भतीजे के साथ क्या मामला है? वो आकर आपकी शिकायत कर रहा है तो अबू सईद (रज़ि.) ने जवाब दिया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना, 'जब तुममें से कोई लोगों से किसी चीज़ की औट में नमाज़ पढ़े और कोई उसके आगे से गुज़रना चाहे तो वो उसके सीने पर मारे (धक्का दे) अगर वो न माने (गुज़रने से बाज़ न आये) तो उससे लड़े (ज़ोर और ताक़त इस्तेमाल करे) क्योंकि वो तो शैतान है (यानी सरकश और शरीर है)।'

(सहीह बुख़ारी : 509, 3274, अबू दाऊद : 700)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) **नताज़करु :** किसी मसले पर बातचीत और गुफ़्तगू करना। (2) **मसाग़** : गुज़रगाह, रास्ता। (3) **मस़ल :** स़ा पर ज़बर और पेश दोनों आ सकते हैं, सीधा खड़ा हो गया। (4) **नाला मिन अबी सईद :** अबू सईद को बुरा-भला कहा, उनकी इज़्ज़त व आबरू पर हमला किया।

حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي فُدَيْكٍ، عَنِ الضَّحَّاكِ بْنِ عُثْمَانَ، عَنْ صَدَقَةَ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا كَانَ أَحَدُكُمْ يُصَلِّي فَلاَ يَدَعْ أَحَدًا يَمُرُّ بَيْنَ يَدَيْهِ فَإِنْ أَبَى فَلْيُقَاتِلْهُ فَإِنَّ مَعَهُ الْقَرِينَ " .

(1130) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई नमाज़ पढ़ रहा हो तो किसी को अपने आगे से न गुज़रने दे, अगर वो न माने तो उससे लड़े (ज़ोर आज़माई करे) क्योंकि उसके साथ हमज़ाद है।'
(इब्ने माजह : 955)

حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا أَبُو بَكْرٍ الْحَنَفِيُّ، حَدَّثَنَا الضَّحَّاكُ بْنُ عُثْمَانَ، حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ يَسَارٍ، قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ، يَقُولُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ . بِمِثْلِهِ .

(1131) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ أَبِي النَّضْرِ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، أَنَّ زَيْدَ بْنَ خَالِدٍ الْجُهَنِيَّ، أَرْسَلَهُ إِلَى أَبِي جُهَيْمٍ يَسْأَلُهُ مَاذَا سَمِعَ مِنْ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي الْمَارِّ بَيْنَ يَدَىِ الْمُصَلِّي قَالَ أَبُو جُهَيْمٍ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَوْ يَعْلَمُ الْمَارُّ بَيْنَ يَدَىِ الْمُصَلِّي مَاذَا عَلَيْهِ لَكَانَ أَنْ يَقِفَ أَرْبَعِينَ خَيْرًا لَهُ مِنْ أَنْ يَمُرَّ بَيْنَ يَدَيْهِ " . قَالَ أَبُو النَّضْرِ لاَ أَدْرِي قَالَ أَرْبَعِينَ يَوْمًا أَوْ شَهْرًا أَوْ سَنَةً.

(1132) हज़रत बुस्र बिन सईद (रह.) बयान करते हैं कि ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (रज़ि.) ने उसे अबू जुहैम की ख़िदमत में भेजा कि उनसे पूछूँ कि उसने नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाले के बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) से क्या सुना है? अबू जुहैम ने जवाब दिया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला जान ले (इस्तिहज़ार कर ले) कि उस पर (इस अमल का गुनाह) किस क़द्र है तो उसके लिये चालीस तक ठहरे रहना उसके आगे से गुज़रने से बेहतर हो।'

अबू नज़्र कहते हैं, मुझे मालूम नहीं उन्होंने चालीस दिन कहा या माह या साल कहा।

(सहीह बुख़ारी : 510, अबू दाऊद : 701, तिर्मिज़ी : 336, नसाई : 1/755, इब्ने माजह : 945)

(1133) हमें अब्दुल्लाह बिन हाशिम बिन हय्यान अबदी ने वकीअ के वास्ते से सुफ़ियान की अबू नज़्र से सालिम से बुस्र बिन सईद की रिवायत सुनाई कि ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (रज़ि.) ने उसे अबू जुहैम (रज़ि.) के पास भेजा आपने नबी (ﷺ) को क्या फ़रमाते सुना? फिर मालिक की रिवायत की तरह हदीस़ बयान की।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ هَاشِمِ بْنِ حَيَّانَ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ سَالِمٍ أَبِي النَّضْرِ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، أَنَّ زَيْدَ بْنَ خَالِدٍ الْجُهَنِيَّ، أَرْسَلَ إِلَى أَبِي جُهَيْمٍ الأَنْصَارِيِّ مَا سَمِعْتَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ فَذَكَرَ بِمَعْنَى حَدِيثِ مَالِكٍ .

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित हुआ कि नमाज़ी के आगे से गुज़रना बहुत बड़ा गुनाह है। अगर इंसान इस गुनाह का तसव्वुर कर ले तो फिर वो किसी नमाज़ी के आगे से गुज़रने की जसारत न करे। अगरचे उसे काफ़ी देर तक ही क्यों न रुकना पड़े। अगरचे कुछ रिवायात में चालीस साल और कुछ सौ साल की गिनती आई है।

बाब 50 : नमाज़ी के सुतरह के क़रीब खड़ा होना

باب دُنُوِّ الْمُصَلِّي مِنَ السُّتْرَةِ

(1134) हज़रत सहल बिन साइदी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की सज्दे की जगह और दीवार के दरम्यान बकरी गुज़रने के बराबर फ़ासला था।

(सहीह बुख़ारी : 496, अबू दाऊद : 696)

حَدَّثَنِي يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ، قَالَ كَانَ بَيْنَ مُصَلَّى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَبَيْنَ الْجِدَارِ مَمَرُّ الشَّاةِ .

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि नमाज़ी को सुतरह के क़रीब खड़ा होना चाहिये। सुतरह और नमाज़ी के दरम्यान ज़्यादा फ़ासला नहीं होना चाहिये।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ مَسْعَدَةَ، - عَنْ يَزِيدَ، - يَعْنِي ابْنَ أَبِي عُبَيْدٍ - عَنْ سَلَمَةَ، - وَهُوَ ابْنُ الأَكْوَعِ أَنَّهُ كَانَ يَتَحَرَّى مَوْضِعَ مَكَانِ الْمُصْحَفِ يُسَبِّحُ فِيهِ . وَذَكَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَتَحَرَّى ذَلِكَ الْمَكَانَ وَكَانَ بَيْنَ الْمِنْبَرِ وَالْقِبْلَةِ قَدْرُ مَمَرِّ الشَّاةِ .

(1135) हज़रत सलमा (रज़ि.) (जो अक्वअ का बेटा है) के बारे में रिवायत है कि वो कोशिश करके (मस्जिदे नबवी में) उस जगह नफ़ली नमाज़ पढ़ते जहाँ मुस्हफ़ रखा हुआ था और उन्होंने बताया रसूलुल्लाह (ﷺ) उस जगह को पसंद फ़रमाते थे और मिम्बर और क़िब्ले की दीवार के दरम्यान बकरी गुज़रने के बराबर फ़ासला था।

(सहीह बुख़ारी : 497, अबू दाऊद : 1082)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) यतहर्रा : कोशिश करते, उसका इन्तिख़ाब करते। यानी उस जगह को तरजीह देते। **(2) मकानल मुस्हफ़ :** वो जगह जहाँ मस्जिदे नबवी में हज़रत उ़समान (रज़ि.) ने मुस्हफ़ इमाम के लिये सन्दूक़ में रखवाया था। जहाँ मुहाजिरों के बैठने का सुतून था।

फ़ायदा : दौरे नबवी (ﷺ) से मेहराब न था इसलिये मिम्बर दीवार के क़रीब रखा गया था। मिम्बर और दीवार का फ़ासला बकरी गुज़रने के बक़द्र था और आप मिम्बर के पास खड़े होते थे इसलिये आपकी सज्दागाह और दीवार का फ़ासला बक़द्र ममर्रुश्शाह (बकरी गुजरने के ब राबर) था।

حَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مَكِّيٌّ، قَالَ يَزِيدُ أَخْبَرَنَا قَالَ كَانَ سَلَمَةُ يَتَحَرَّى الصَّلاَةَ عِنْدَ الأُسْطُوَانَةِ الَّتِي عِنْدَ الْمُصْحَفِ فَقُلْتُ لَهُ يَا أَبَا مُسْلِمٍ أَرَاكَ تَتَحَرَّى الصَّلاَةَ عِنْدَ هَذِهِ الأُسْطُوَانَةِ . قَالَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَتَحَرَّى الصَّلاَةَ عِنْدَهَا .

(1136) हज़रत यज़ीद बयान करते हैं कि हज़रत सलमा (रज़ि.) मुस्हफ़ के क़रीब वाले सुतून के पास नमाज़ पढ़ने की कोशिश करते। मैंने उनसे पूछा, ऐ अबू मुस्लिम! मैं आपको इस सुतून के पास नमाज़ पढ़ने का क़सद करते देखता हूँ? उन्होंने जवाब दिया, मैंने नबी (ﷺ) को इसके क़रीब नमाज़ पढ़ने का क़सद करते देखा है (अबू मुस्लिम हज़रत सलमा (रज़ि.) की कुन्नियत है)।

(सहीह बुख़ारी : 502, इब्ने माजह : 1430)

बाब 51 : नमाज़ी के सुतरह की मिक़्दार

باب قَدْرِ مَا يَسْتُرُ الْمُصَلِّيَ

(1137) हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई नमाज़ के लिये खड़ा हो तो उसके लिये सुतरह (आड़) बनेगा, जब उसके सामने पालान की पिछली लकड़ी के बराबर कोई चीज़ हो। अगर उसके सामने पालान की पिछली लकड़ी के बराबर कोई चीज़ न हो तो गधा, औरत और काला कुत्ता उसकी नमाज़ (के ख़ुशूअ) को मुन्क़तअ कर देता है।' मैंने पूछा, ऐ अबू ज़र! काले कुत्ते की तख़सीस क्यों? अगर कुत्ता लाल या ज़र्द हो फिर? उन्होंने कहा, ऐ मेरे भतीजे! मैंने भी रसूलुल्लाह (ﷺ) से यही सवाल किया था जो तूने मुझसे किया है तो आपने फ़रमाया, 'काला कुत्ता शरीर (शैतान) होता है।'
(अबू दाऊद : 702, तिर्मिज़ी : 338, नसाई : 2/63, इब्ने माजह : 952, 3210)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ يُونُسَ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا قَامَ أَحَدُكُمْ يُصَلِّي فَإِنَّهُ يَسْتُرُهُ إِذَا كَانَ بَيْنَ يَدَيْهِ مِثْلُ آخِرَةِ الرَّحْلِ فَإِذَا لَمْ يَكُنْ بَيْنَ يَدَيْهِ مِثْلُ آخِرَةِ الرَّحْلِ فَإِنَّهُ يَقْطَعُ صَلاَتَهُ الْحِمَارُ وَالْمَرْأَةُ وَالْكَلْبُ الأَسْوَدُ " . قُلْتُ يَا أَبَا ذَرٍّ مَا بَالُ الْكَلْبِ الأَسْوَدِ مِنَ الْكَلْبِ الأَحْمَرِ مِنَ الْكَلْبِ الأَصْفَرِ قَالَ يَا ابْنَ أَخِي سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَمَا سَأَلْتَنِي فَقَالَ " الْكَلْبُ الأَسْوَدُ شَيْطَانٌ " .

(1138) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ

إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، قَالَ وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَيْضًا أَخْبَرَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ سَمِعْتُ سَلْمَ بْنَ أَبِي الذَّيَّالِ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي يُوسُفُ بْنُ حَمَّادٍ الْمَعْنِيُّ، حَدَّثَنَا زِيَادٌ الْبَكَّائِيُّ، عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ، كُلُّ هَؤُلاَءِ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ، بِإِسْنَادِ يُونُسَ كَنَحْوِ حَدِيثِهِ .

(1139) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'औरत, गधा और (काला) कुत्ता नमाज़ तोड़ देते हैं और पालान की पिछली लकड़ी के बराबर कोई चीज़ उसकी हिफ़ाज़त करती है।'

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا الْمَخْزُومِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، - وَهُوَ ابْنُ زِيَادٍ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الأَصَمِّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ الأَصَمِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَقْطَعُ الصَّلاَةَ الْمَرْأَةُ وَالْحِمَارُ وَالْكَلْبُ وَيَقِي ذَلِكَ مِثْلُ مُؤْخِرَةِ الرَّحْلِ " .

फ़ायदा : गधा, काला कुत्ता और औरत की तरफ़ देखने से इंसान की सोच व फ़िक्र या ज़हन मुतास्सिर होता है। गधे और कुत्ते से शर और नुक़सान पहुँचने का ख़तरा होता है और औरत जिन्सी कशिश रखती है। इसलिये नमाज़ी का ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ और तवज्जह बरक़रार नहीं रहती और नमाज़ में यही चीज़ें मतलूब हैं। इसलिये इसको नमाज़ के टूटने से ताबीर कर दिया गया है। अगर ये चीज़ें सुतरह से परे या दूर हों तो उनकी तरफ़ तवज्जह नहीं होती इसलिये नमाज़ मुतास्सिर नहीं होती। बहरहाल जुम्हूर के नज़दीक नमाज़ बातिल नहीं होती, उसमें नुक़्स पैदा हो जाता है और अरबी मुहावरे के मुताबिक़ इसको टूटने से ताबीर किया गया है।

باب الاِعْتِرَاضِ بَيْنَ يَدَىِ الْمُصَلِّي

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ وَأَنَا مُعْتَرِضَةٌ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ كَاعْتِرَاضِ الْجِنَازَةِ .

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي صَلاَتَهُ مِنَ اللَّيْلِ كُلَّهَا وَأَنَا مُعْتَرِضَةٌ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يُوتِرَ أَيْقَظَنِي فَأَوْتَرْتُ .

وَحَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ حَفْصٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، قَالَ قَالَتْ عَائِشَةُ مَا يَقْطَعُ الصَّلاَةَ قَالَ فَقُلْنَا الْمَرْأَةُ وَالْحِمَارُ . فَقَالَتْ إِنَّ الْمَرْأَةَ لَدَابَّةُ سَوْءٍ لَقَدْ رَأَيْتُنِي بَيْنَ يَدَىْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مُعْتَرِضَةً كَاعْتِرَاضِ الْجِنَازَةِ وَهُوَ يُصَلِّي .

बाब 52 : नमाज़ी के सामने लेटना

(1140) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) रात को नमाज़ पढ़ते थे और मैं आपके और क़िब्ले के दरम्यान जनाज़े की तरह चौड़ाई में लेटी होती थी।

(इब्ने माजह : 956)

(1141) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ)अपनी पूरी नमाज़ पढ़ते और मैं आपके और आपके क़िब्ले के दरम्यान लेटी होती और जब आप वित्र पढ़ना चाहते तो मुझे जगा देते और मैं भी वित्र पढ़ लेती।

(1142) हज़रत उरवह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) बयान करते हैं हज़रत आइशा (रज़ि.) ने पूछा, मैंने आपको रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने जनाज़े की तरह ज़मीन में लेटे हुए देखा जबकि आप नमाज़ पढ़ रहे थे।

फ़ायदा : हज़रत आइशा (रज़ि.) की अहादीस़ से ये स़ाबित होता है कि अगर नमाज़ी के सामने औरत इस अन्दाज़ से लेटी हो कि उससे नमाज़ी की तवज्जह न बटे और वो उससे मुतास्सिर न हो तो उसकी

नमाज़ पर असर नहीं पड़ता। हज़रत आइशा (रज़ि.) रात को आपके सामने लेटी होती थीं और रात की तारीकी और अन्धेरे की बिना पर क्योंकि उन दिनों जैसाकि हज़रत आइशा (रज़ि.) की रिवायत में आ रहा है घरों में चिराग़ नहीं होते थे, आपकी नज़र आइशा (रज़ि.) पर नहीं पड़ती थी। इसलिये आप उनके सामने होने के बावजूद नमाज़ पढ़ते रहते थे।

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ قَالاَ حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ، . قَالَ الأَعْمَشُ وَحَدَّثَنِي مُسْلِمٌ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، وَذُكِرَ، عِنْدَهَا مَا يَقْطَعُ الصَّلاَةَ الْكَلْبُ وَالْحِمَارُ وَالْمَرْأَةُ . فَقَالَتْ عَائِشَةُ قَدْ شَبَّهْتُمُونَا بِالْحَمِيرِ وَالْكِلاَبِ . وَاللَّهِ لَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي وَإِنِّي عَلَى السَّرِيرِ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ مُضْطَجِعَةً فَتَبْدُو لِي الْحَاجَةُ فَأَكْرَهُ أَنْ أَجْلِسَ فَأُوذِيَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأَنْسَلُّ مِنْ عِنْدِ رِجْلَيْهِ .

(1143) हज़रत मसरूक़ बयान करते हैं कि हज़रत आइशा (रज़ि.) के सामने उन चीज़ों का तज़्किरा किया गया जिनके सामने गुज़रने से नमाज़ टूटती है यानी कुत्ता, गधा और औरत। तो आइशा (रज़ि.) ने फ़रमाया, 'तुमने हमें गधों और कुत्तों के मुशाबेह बना दिया है। अल्लाह की क़सम! मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इस हाल में नमाज़ पढ़ते देखा कि मैं चारपाई पर आपके क़िब्ले के दरम्यान लेटी होती थी, मुझे कोई ज़रूरत पेश आती तो बैठकर रसूलुल्लाह (ﷺ) को तकलीफ़ देना पसंद न करती, इसलिये (चारपाई) के पायों की तरफ़ से खिसक जाती।

(सहीह बुख़ारी : 514, 511, 6276)

फ़ायदा : कुछ हज़रात ने हज़रत आइशा (रज़ि.) के क़ौल 'तुमने हमें गधों और कुत्तों के मुशाबेह कर दिया' से इस्तिदलाल करते हुए सिराते मुसतक़ीम की इबारत को निशाना बनाया है हालांकि इससे इस्तिदलाल बेमहल है क्योंकि ये बात हज़रत आइशा (रज़ि.) ने जज़्बाती अन्दाज़ में फ़रमाई है। वरना यहाँ मुशाबिहत है ही नहीं। हदीस़ का मक़सद तो सिर्फ़ उन चीज़ों का तज़्किरा करना है जिनसे नमाज़ी का ज़हन और दिलो-दिमाग़ मुतास्सिर हो सकते हैं और अगर बिल्फ़र्ज़ यहाँ मुशाबिहत है तो उसमें बयान करने वालों का क्या क़ुसूर ये बात तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाई है और आपकी फ़रमाई हुई बात कैसे क़ाबिले ऐतराज़ हो सकती है। जिस चीज़ को आप (ﷺ) बुरा ख़्याल नहीं करते या उसको तौहीन आमेज़ नहीं समझते, हम उसको बुरा ख़्याल क्यों कर सकते हैं। इसके अलावा अगर औरत के

सामने आने से इंसान मुतास्सिर नहीं होता तो फिर हज़रत आइशा (रज़ि.) आपके सामने बैठने को आपके लिये अज़ियत का बाइस क्यों समझती थीं? और चारपाई के पायों से खिसक कर क्यों निकलती थीं?

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ عَدَلْتُمُونَا بِالْكِلاَبِ وَالْحُمُرِ لَقَدْ رَأَيْتُنِي مُضْطَجِعَةً عَلَى السَّرِيرِ فَيَجِيءُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَيَتَوَسَّطُ السَّرِيرَ فَيُصَلِّي فَأَكْرَهُ أَنْ أَسْنَحَهُ فَأَنْسَلُّ مِنْ قِبَلِ رِجْلَىِ السَّرِيرِ حَتَّى أَنْسَلَّ مِنْ لِحَافِي .

(1144) हज़रत अस्वद बयान करते हैं कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़रमाया, 'तुमने हमें कुत्तों और गधों के बराबर कर दिया है हालांकि मैंने अपने आपको इस हालत में पाया है कि मैं चारपाई पर लेटी होती थी, रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाते और चारपाई के दरम्यान नमाज़ पढ़ते। मैं आपके सामने ज़ाहिर होना नापसंद करती तो मैं चारपाई के पायों से खिसक कर अपने लिहाफ़ से निकल जाती।

(सहीह बुख़ारी : 508, नसाई : 2/65)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ أَبِي النَّضْرِ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كُنْتُ أَنَامُ بَيْنَ يَدَىْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَرِجْلاَىَ فِي قِبْلَتِهِ فَإِذَا سَجَدَ غَمَزَنِي فَقَبَضْتُ رِجْلَىَّ وَإِذَا قَامَ بَسَطْتُهُمَا - قَالَتْ - وَالْبُيُوتُ يَوْمَئِذٍ لَيْسَ فِيهَا مَصَابِيحُ .

(1145) हमें यहया बिन यहया ने बताया कि मैंने इमाम मालिक को अबू नज़्र की अबू सलाम बिन अब्दुर्रहमान से आइशा (रज़ि.) की रिवायत सुनाई कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने सो जाती और मेरे पाँव आपके क़िब्ले में होते जब आप सज्दा करते तो मेरा पाँव दबा देते। तो मैं अपने पाँव सुकेड़ लेती और जब आप खड़े हो जाते तो मैं उनको फैला लेती। उन्होंने (आइशा ने) बताया उन दिनों घरों के अंदर चिराग़ नहीं होते थे।

(सहीह बुख़ारी : 382, 513, 1209, अबू दाऊद : 713, नसाई : 1/101)

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है कि आपके घर में रात को चिराग़ नहीं जलता था। इसलिये हज़रत आइशा (रज़ि.) को देखकर ये पता नहीं चल सकता कि आप सज्दा करना चाहते हैं इसलिये वो अपने तौर पर पाँव नहीं सुकेड़ सकती थीं।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ الْعَوَّامِ، جَمِيعًا عَنِ الشَّيْبَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَدَّادِ بْنِ الْهَادِ، قَالَ حَدَّثَتْنِي مَيْمُونَةُ، زَوْجُ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُصَلِّي وَأَنَا حِذَاءَهُ وَأَنَا حَائِضٌ وَرُبَّمَا أَصَابَنِي ثَوْبُهُ إِذَا سَجَدَ .

(1146) नबी (ﷺ) की ज़ौजा मैमूना (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ पढ़ते और मैं हैज़ की हालत में आपके मुतवाज़ी (बराबर) होती। कई बार जब आप सज्दा करते तो आपका कपड़ा मुझसे लग जाता।

(सहीह बुख़ारी : 333, 379, 517, 518, अबू दाऊद : 656, इब्ने माजह : 1028)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا طَلْحَةُ بْنُ يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ سَمِعْتُهُ عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ وَأَنَا إِلَى جَنْبِهِ وَأَنَا حَائِضٌ وَعَلَىَّ مِرْطٌ وَعَلَيْهِ بَعْضُهُ إِلَى جَنْبِهِ .

(1147) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रात को नमाज़ पढ़ते और मैं हैज़ की हालत में आपके पहलू में होती। मुझ पर चादर होती और आपके पहलू में होने से उसका कुछ हिस्सा आप पर भी होता।

(अबू दाऊद: 370, नसाई : 2/67, इब्ने माजह : 652)

फ़वाइद : (1) इस हदीस़ से साबित होता है कि अगर औरत नमाज़ी के पहलू में खड़ी हो तो उससे नमाज़ बातिल नहीं होती। जुम्हूर का मौक़िफ़ यही है। इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक नमाज़ बातिल हो जायेगी। **(2)** औरत अगर हैज़ की हालत में हो तो उसने जो कपड़ा ओढ़ा हो वो पलीद नहीं होता। इसलिये एक ही कपड़ा अगर उसका कुछ हिस्सा हाइज़ा पर हो और कुछ नमाज़ी पर, तो इसमें कोई क़बाहत नहीं है।

तम्बीह : (1) जब नमाज़ी सुतरह के बग़ैर नमाज़ पढ़ रहा हो तो गुज़रने वाला इतने फ़ासले से गुज़र सकता है जितने फ़ासले से ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ के साथ नमाज़ पढ़ने वाले को वो नज़र न आये और नमाज़ी को नज़र आम तौर पर अपनी सज्दागाह तक महदूद रखनी चाहिये और बैठा हुआ हैवान भी सुतरह का काम देता है। जैसाकि आप ऊँट आगे बिठा लेते थे। (2) पाकिस्तानी नुस्ख़ों में सुतरह के तमाम मबाहिस़ को एक बाब के तहत दर्ज कर दिया गया है जबकि अरबी नुस्ख़ों में सुतरह के मबाहिस़ को आठ अबवाब के तहत बयान किया गया है और हर बाब में अलग-अलग बातों की निशानदेही की गई है।

बाब 53 : एक कपड़े में नमाज़ पढ़ना और उसके पहनने का तरीक़ा

باب الصَّلاَةِ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ وَصِفَةِ لُبْسِهِ

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، . أَنَّ سَائِلاً، سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنِ الصَّلاَةِ فِي الثَّوْبِ الْوَاحِدِ فَقَالَ " أَوَلِكُلِّكُمْ ثَوْبَانِ " .

(1148) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि एक साइल ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से एक कपड़े में नमाज़ पढ़ने के बारे में सवाल किया तो आपने फ़रमाया, 'क्या तुममें से हर एक के पास दो कपड़े हैं?'

(सहीहबुख़ारी:358, अबू दाऊद: 625, नसाई : 2/762

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، وَحَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، قَالَ حَدَّثَنِي عُقَيْلُ بْنُ خَالِدٍ، كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، وَأَبِي، سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ .

(1149) इमाम साहब अपने और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالَ عَمْرٌو حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ نَادَى رَجُلٌ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ أَيُصَلِّي أَحَدُنَا فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ فَقَالَ " أَوَكُلُّكُمْ يَجِدُ ثَوْبَيْنِ " .

(1150) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को पुकार कर पूछा, क्या हममें से कोई एक कपड़े में नमाज़ पढ़ सकता है? तो आपने जवाब दिया, 'क्या तुममें से हर एक के पास दो कपड़े हैं?'

फ़ायदा : अबू हुरैरह (रज़ि.) की हदीस़ से साबित होता है कि जिस दौर में साइल ने आपसे एक कपड़े में नमाज़ पढ़ने के बारे में सवाल किया था, वो इन्तिहाई फ़क़्रो-एहतियाज (ग़रीबी) का दौर था और हर इंसान के पास इतनी सकत न थी कि वो दो कपड़े पहने। इसलिये शरीअ़त ने नमाज़ के लिये कपड़ों की तहदीद नहीं की। इंसान के पास जिस क़द्र वुस्अ़त व गुंजाइश हो या जितने कपड़े वो पहनता हो उन्हीं में नमाज़ पढ़ ले, सतर को छिपाना ज़रूरी है।

(1151) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से कोई शख़्स एक कपड़े में नमाज़ इस तरह न पढ़े कि उसके कन्धों पर कुछ न हो।'
(अबू दाऊद : 626, नसाई : 1/768)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " لاَ يُصَلِّي أَحَدُكُمْ فِي الثَّوْبِ الْوَاحِدِ لَيْسَ عَلَى عَاتِقَيْهِ مِنْهُ شَىْءٌ " .

(1152) हज़रत उमर बिन सलमा (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को उम्मे सलमा (रज़ि.) के घर में एक कपड़े में नमाज़ पढ़ते देखा, आप उसे लपेटे हुए थे और उसके दोनों किनारे आप कन्धों पर रखे हुए थे।
(सहीह बुख़ारी : 354, 355, 356, तिर्मिज़ी : 339, नसाई : 2/70, इब्ने माजह : 1049)

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ عُمَرَ بْنَ أَبِي سَلَمَةَ، أَخْبَرَهُ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ مُشْتَمِلاً بِهِ فِي بَيْتِ أُمِّ سَلَمَةَ وَاضِعًا طَرَفَيْهِ عَلَى عَاتِقَيْهِ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : मुश्तमिल, मुतवश्शिह और (मुख़ालिफ़ बै-न तरफ़ैहि) तीनों हम मानी हैं। जिसका मक़सद ये है कि कपड़े का जो किनारा दायें कन्धे पर डाला है, उसको बायें हाथ के नीचे से ले जाये और जो किनारा बायें कन्धे पर रखना है उसको दायें हाथ के नीचे से ले जाये। फिर दोनों किनारों को सीने पर बांध ले।

(1153) हमें यही रिवायत अबू बक्र बिन अबी शैबा और इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने वकीअ के वास्ते से हिशाम बिन उरवह की मज़्कूरा बाला सनद से सुनाई। हाँ ये फ़र्क़ है कि उसने मुश्तमिलन की जगह मुतवश्शिहन कहा।

حَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ وَكِيعٍ، قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ مُتَوَشِّحًا . وَلَمْ يَقُلْ مُشْتَمِلاً .

(1154) हज़रत उमर बिन अबी सलमा (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को एक कपड़े में नमाज़ पढ़ते देखा।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ، قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله

عليه وسلم يُصَلِّي فِي بَيْتِ أُمِّ سَلَمَةَ فِي ثَوْبٍ قَدْ خَالَفَ بَيْنَ طَرَفَيْهِ .

आपने उसको लपेटा हुआ था और उसके दोनों किनारों में मुख़ालिफ़त की हुई थी।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَعِيسَى بْنُ حَمَّادٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ بْنِ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ، قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يُصَلِّي فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ مُلْتَحِفًا مُخَالِفًا بَيْنَ طَرَفَيْهِ . زَادَ عِيسَى بْنُ حَمَّادٍ فِي رِوَايَتِهِ قَالَ عَلَى مَنْكِبَيْهِ .

(1155) अबू सलमा (रज़ि.) बयान करते हैं मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा आप एक कपड़े को लपेटकर किनारों को उलटा करके नमाज़ पढ़ रहे थे। ईसा बिन हम्माद ने अपनी रिवायत में इज़ाफ़ा किया कि अपने कन्धों पर डाले हुए थे।

(अबू दाऊद : 628)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ مُتَوَشِّحًا بِهِ .

(1156) हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने नबी (ﷺ) को एक कपड़े में नमाज़ पढ़ते देखा, आपने उसको लपेटा हुआ था।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، عَنْ سُفْيَانَ، جَمِيعًا بِهَذَا الإِسْنَادِ وَفِي حَدِيثِ ابْنِ نُمَيْرٍ قَالَ دَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ .

(1157) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से मज़्कूरा बाला (पिछली) रिवायत नक़ल करते हैं।

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، أَنَّ أَبَا الزُّبَيْرِ الْمَكِّيَّ، حَدَّثَهُ أَنَّهُ، رَأَى جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ يُصَلِّي فِي ثَوْبٍ مُتَوَشِّحًا بِهِ وَعِنْدَهُ ثِيَابُهُ . وَقَالَ جَابِرٌ إِنَّهُ رَأَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَصْنَعُ ذَلِكَ .

(1158) हज़रत अबू ज़ुबैर मक्की (रह.) से रिवायत है कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को एक कपड़े में नमाज़ पढ़ते देखा, वो उसको लपेटे हुए थे और उनके पास उनके कपड़े मौजूद थे और जाबिर (रज़ि.) ने बताया कि उसने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ऐसे करते देखा है।

(1159) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं कि वो नबी (ﷺ) के पास गये वो कहते हैं कि मैंने आपको एक चटाई पर नमाज़ पढ़ते देखा। उस पर आप सज्दा करते थे और मैंने आपको एक कपड़े में, उसको लपेट कर नमाज़ पढ़ते देखा।
(तिर्मिज़ी : 332, इब्ने माजह : 1029, 1048)

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - وَاللَّفْظُ لِعَمْرٍو - قَالَ حَدَّثَنِي عِيسَى بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، حَدَّثَنِي أَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ، أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ فَرَأَيْتُهُ يُصَلِّي عَلَى حَصِيرٍ يَسْجُدُ عَلَيْهِ - قَالَ - وَرَأَيْتُهُ يُصَلِّي فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ مُتَوَشِّحًا بِهِ .

(1160) इमाम साहब अपने तीन और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं, अबू कुरैब की रिवायत में है आपने उसके दोनों किनारे अपने कन्धों पर रखे हुए थे और अबू बक्र और सुवैद की रिवायत में है आप उसको लपेटे हुए थे।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِيهِ سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَفِي رِوَايَةِ أَبِي كُرَيْبٍ وَاضِعًا طَرَفَيْهِ عَلَى عَاتِقَيْهِ . وَرِوَايَةُ أَبِي بَكْرٍ وَسُوَيْدٍ مُتَوَشِّحًا بِهِ .

फ़वाइद : (1) इन तमाम रिवायतों से साबित होता है कि एक कपड़े में नमाज़ पढ़ना बिला शक व शुब्हा दुरुस्त है लेकिन इसका कुछ हिस्सा कन्धों पर होना चाहिये। अगर गुंजाइश और मक़्दरत के बावजूद कपड़ा कन्धों पर न डाला तो जुम्हूर अइम्मा के नज़दीक नमाज़ मकरूह होगी। इमाम अहमद (रह.) का एक क़ौल है, ऐसी सूरत में नमाज़ सहीह नहीं होगी अगर कपड़ा तंग हो और कन्धों पर न डाला जा सकता हो तो फिर उसको तहबंद बना लिया जायेगा। अगरचे कन्धे नंगे होंगे नमाज़ में कोई ख़लल पैदा नहीं होगा। (2) नमाज़ के लिये सिर्फ़ सतर फ़र्ज़ है। इसलिये एक कपड़े में नमाज़ पढ़ने में कोई हर्ज नहीं है। लेकिन जब कपड़े ज़्यादा हों और इंसान आम तौर पर सर ढांपे रखता हो तो फिर बिला वजह नंगे सर नमाज़ पढ़ना बेहतर नहीं है। बुख़ारी (रह.) ने हसन बसरी (रह.) का क़ौल नक़ल किया है कि (गर्मी की बिना पर) लोग (सहाबा रज़ि.) पगड़ी और टोपी पर सज्दा करते थे (यानी पगड़ी और टोपी का कुछ हिस्सा पेशानी पर होता) और उनके हाथ आस्तीनों में होते थे और कलीब ने अपने मामू से नक़ल किया है, मैं सर्दियों में रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो वो बरानस (लम्बी टोपी या वो लिबास जो सर को ढांप ले) और चादरों में नमाज़ पढ़ रहे थे और उनके हाथ उनकी चादरों में थे। (मज्मउज़्ज़वाइद)

इस किताब के कुल 55 बाब और 409 हदीसें हैं।

كتاب الْمَسَاجِدِ وَمَوَاضِعِ الصَّلاَةِ

किताबुल मसाजिदि व मवाज़िइस्सलात (किताब मस्जिदों और नमाज़ की जगहों का बयान)

हदीस़ नम्बर 1161 से 1569 तक

किताबुल मसाजिद का तआरुफ़

इमाम मुस्लिम (रह.) किताबुस्सलात में अज़ान, इक़ामत और बुनियादी अरकाने सलात के हवाले से रिवायात लाये हैं। मसाजिद और नमाज़ से मुताल्लिक़ ऐसे मसाइल जो बराहे रास्त अरकाने नमाज़ की अदायगी का हिस्सा नहीं लेकिन नमाज़ से मुताल्लिक़ हैं, उन्हें इमाम मुस्लिम ने किताबुल मसाजिद में ज़िक्र किया है जैसे क़िब्लए अव्वल और उसकी तब्दीली, नमाज़ के दौरान में बच्चों को उठाना, ज़रूरी हरकात जिनकी इजाज़त है, नमाज़ में सज्दे की जगह को साफ़ या बराबर करना, खाने की मौजूदगी में नमाज़ पढ़ना, बदबूदार चीज़ें खाकर आना, वक़ार से चलते हुए नमाज़ के लिये आना, कुछ दुआयें जो मुस्तहब हैं यहाँ तक कि औक़ाते नमाज़ को भी इमाम मुस्लिम (रह.) ने किताबुल मसाजिद में सहीह अहादीस़ के ज़रिये से वाज़ेह किया है। ये एक मुफ़स्सल और जामेअ हिस्सा है जो इन्तिहाई ज़रूरी उन्वानात पर मुश्तमिल है और किताबुस्सलात से ज़्यादा लम्बा है।

5. किताब मस्जिदों और नमाज़ की जगहों का बयान

كتاب الْمَسَاجِدِ وَمَوَاضِعِ الصَّلاَةِ

बाब 1 : मस्जिदें और नमाज़ की जगहें

حَدَّثَنِي أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَىُّ مَسْجِدٍ وُضِعَ فِي الأَرْضِ أَوَّلُ قَالَ " الْمَسْجِدُ الْحَرَامُ " . قُلْتُ ثُمَّ أَىٌّ قَالَ " الْمَسْجِدُ الأَقْصَى " . قُلْتُ كَمْ بَيْنَهُمَا قَالَ " أَرْبَعُونَ سَنَةً وَأَيْنَمَا أَدْرَكَتْكَ الصَّلاَةُ فَصَلِّ فَهُوَ مَسْجِدٌ " . وَفِي حَدِيثِ أَبِي كَامِلٍ " ثُمَّ حَيْثُمَا أَدْرَكَتْكَ الصَّلاَةُ فَصَلِّهْ فَإِنَّهُ مَسْجِدٌ " .

(1161) हज़रत अबू (ﷺ) ज़र (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! सबसे पहले रूए ज़मीन पर कौनसी मस्जिद बनाई गई? आपने फ़रमाया, 'मस्जिदे हराम।' मैंने पूछा, फिर कौनसी? फ़रमाया, 'मस्जिदे अक़सा।' मैंने पूछा, दोनों की तामीर में कितने अरसे का फ़ासला है? आपने फ़रमाया, 'चालीस साल।' फिर फ़रमाया, 'अब जहाँ भी तुझे नमाज़ का वक़्त आये, नमाज़ पढ़ ले वही जगह मस्जिद है।' अबू कामिल की रिवायत में है, 'फिर जहाँ तुम्हें नमाज़ आ ले, उसको पढ़ लो क्योंकि वही जगह मस्जिद है।' (सहीह बुख़ारी : 3366, 3425, नसाई : 2/32, 89, इब्ने माजह : 753)

حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ يَزِيدَ التَّيْمِيِّ، قَالَ كُنْتُ أَقْرَأُ عَلَى أَبِي الْقُرْآنَ فِي السُّدَّةِ فَإِذَا قَرَأْتُ السَّجْدَةَ سَجَدَ فَقُلْتُ لَهُ يَا أَبَتِ أَتَسْجُدُ فِي الطَّرِيقِ قَالَ إِنِّي سَمِعْتُ أَبَا ذَرٍّ يَقُولُ سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ أَوَّلِ مَسْجِدٍ وُضِعَ فِي الأَرْضِ قَالَ "

(1162) हज़रत इब्राहीम बिन यज़ीद तैमी (रह.) से रिवायत है कि मैं सुद्दह में (मस्जिद के बाहर सायबान में) अपने बाप को क़ुरआन मजीद सुनाया करता था। तो जब मैं सज्दे वाली आयत सुनाता तो वो सज्दा कर लेते तो मैंने उनसे पूछा, ऐ अब्बा जान! क्या आप रास्ते में ही सज्दा कर लेते हैं? उन्होंने जवाब दिया, मैंने अबू ज़र (रज़ि.) को ये कहते हुए सुना, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा, रूए

الْمَسْجِدُ الْحَرَامُ " . قُلْتُ ثُمَّ أَىٌّ قَالَ " الْمَسْجِدُ الأَقْصَى " . قُلْتُ كَمْ بَيْنَهُمَا قَالَ " أَرْبَعُونَ عَامًا ثُمَّ الأَرْضُ لَكَ مَسْجِدٌ فَحَيْثُمَا أَدْرَكَتْكَ الصَّلاَةُ فَصَلِّ " .

ज़मीन पर सबसे पहले कौनसी मस्जिद बनाई गई? आपने फ़रमाया, 'मस्जिदे हराम।' मैंने अ़र्ज़ किया, फिर कौनसी? आपने फ़रमाया, 'मस्जिदे अक़्सा।' मैंने पूछा, दोनों की तामीर के दरम्यान कितना अ़रसा है? आपने फ़रमाया, 'चालीस साल।' फिर फ़रमाया, 'सारी ज़मीन तुम्हारे लिये मस्जिद है, जहाँ नमाज़ का वक़्त हो जाये वहीं नमाज़ पढ़ लो।'

फ़वाइद : (1) कअ़बा और मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मक़्दिस) की तामीर का दरम्यानी अ़रसा ये कअ़बा और बैतुल मक़्दिस की तामीर के बारे में मशहूर बात ये है कि बैतुल्लाह की तामीर हज़रत इब्राहीम (अ़लै.) ने की और बैतुल मक़्दिस हज़रत सुलैमान (अ़लै.) ने बनवाया और इनके दरम्यान हज़ार साल से ज़्यादा का अ़रसा बनता है। जबकि हदीस़ में फ़ासला चालीस साल बयान किया गया है। असल बात ये है कि इब्राहीम (अ़लै.) और सुलैमान (अ़लै.) ने इन मस्जिदों की तासीस (बुनियाद रखना) नहीं की, बल्कि तजदीद (नये सिरे से बनाना) की है। असल तामीर तख़्लीक़े आदम (अ़लै.) से पहले फ़रिश्तों ने की है और इस तामीर व तश्कील का दरम्यानी अ़रसा चालीस है या मुराद आदम (अ़लै.) की तामीर है। दोनों मस्जिदों की बुनियाद आदम (अ़लै.) ने रखी और दरम्यानी फ़ासला चालीस साल था और अगर इब्राहीमी तामीर मुराद लेना हो तो ज़ाहिर है जिस तरह एक बेटे इस्माईल और उनकी औलाद के लिये एक इबादतगाह बनाई गई तो दूसरे बेटे इस्हाक़ की औलाद के लिये भी एक इबादतगाह तामीर की होगी। इसलिये बैतुल मक़्दिस की तामीर से यहाँ मुराद हज़रत याक़ूब इब्ने इस्हाक़ (रज़ि.) वाली तामीर है और दोनों की तामीर में चालीस साल का फ़ासला है। **(2)** जिस जगह नमाज़ का वक़्त हो जाये वहीं नमाज़ पढ़ लो से ग़र्ज़ ये है कि जिस जगह शरीअ़त ने नमाज़ पढ़ने से रोका नहीं है वहाँ नमाज़ पढ़ लो। क्योंकि नमाज़ के लिये लिबास और बदन की पाकीज़गी और तहारत की तरह जगह का पाक-साफ़ होना भी ज़रूरी है। शरीअ़त ने क़ब्रिस्तान, हम्माम, मज़्बह (ज़िब्ह करने की जगह) आम रास्ता और नजासत गाह में नमाज़ पढ़ने से मना किया है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ سَيَّارٍ، عَنْ يَزِيدَ الْفَقِيرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الأَنْصَارِيِّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله

(1163) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे पाँच चीज़ें ऐसी दी गई हैं जो मुझसे पहले किसी को नहीं दी गईं,

عليه وسلم " أُعْطِيتُ خَمْسًا لَمْ يُعْطَهُنَّ أَحَدٌ قَبْلِي كَانَ كُلُّ نَبِيٍّ يُبْعَثُ إِلَى قَوْمِهِ خَاصَّةً وَبُعِثْتُ إِلَى كُلِّ أَحْمَرَ وَأَسْوَدَ وَأُحِلَّتْ لِيَ الْغَنَائِمُ وَلَمْ تُحَلَّ لأَحَدٍ قَبْلِي وَجُعِلَتْ لِيَ الأَرْضُ طَيِّبَةً طَهُورًا وَمَسْجِدًا فَأَيُّمَا رَجُلٍ أَدْرَكَتْهُ الصَّلاَةُ صَلَّى حَيْثُ كَانَ وَنُصِرْتُ بِالرُّعْبِ بَيْنَ يَدَىْ مَسِيرَةِ شَهْرٍ وَأُعْطِيتُ الشَّفَاعَةَ " .

हर नबी ख़ास तौर पर अपनी क़ौम ही की तरफ़ भेजा जाता था और मुझे हर सुर्ख़ व स्याह (गोरे व काले) की तरफ़ भेजा गया है। मेरे लिये माले ग़नीमत हलाल क़रार दिया गया है, मुझसे पहले किसी के लिये वो हलाल क़रार नहीं दिया गया। मेरे लिये रूए ज़मीन को पाक, पाक करने वाली और मस्जिद बनाया गया है, लिहाज़ा जिस शख़्स को जहाँ नमाज़ का वक़्त पा ले, वहीं नमाज़ पढ़ ले और मुझे ऐसे रौब के ज़रिये मदद दी गई जो एक माह की मसाफ़त से ही लोगों (दुश्मनों) पर तारी हो जाता है (यानी मेरी धाक व दबदबा एक माह की मसाफ़त पर पड़ जाता है) और मुझे शफ़ाअत दी गई है।'

(सहीह बुख़ारी : 335, 438, 3122, नसाई : 1/209, 2/56)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا سَيَّارٌ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ الْفَقِيرُ، أَخْبَرَنَا جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ . فَذَكَرَ نَحْوَهُ .

(1164) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

फ़ायदा : इस हदीस़ में आपकी पाँच इम्तियाज़ी ख़ुसूसियात का तज़्किरा किया गया है, लेकिन इसका ये मतलब नहीं है कि आपके सिर्फ़ यही पाँच इम्तियाज़ी औसाफ़ हैं क्योंकि मक़सूद हस्र नहीं है और जिस शफ़ाअत को आपका ख़ास्सह क़रार दिया गया है उससे मुराद शफ़ाअते कुबरा है। यानी जिसके नतीजे में इंसानों का महशर में हिसाब-किताब शुरू होगा और उस शफ़ाअत के बाद और अम्बिया (अलै.), मलाइका, अल्लाह तआला के नेक बन्दे, उलमा, शुहदा, अपने से तअल्लुक़ रखने वाले अहले ईमान के हक़ में सिफ़ारिश करेंगे। यहाँ तक कि छोटी उम्र में फ़ौत हो जाने वाले बच्चे भी अपने वालिदैन के लिये सिफ़ारिश करेंगे। इस तरह कुछ आमाले सालेहा भी अपने आमिलों के हक़ में सिफ़ारिश करेंगे और उन

सिफ़ारिशों का तअल्लुक़ आख़िरत से है। बाक़ी रहा दुनिया में सिफ़ारिश, तो इसका इस हदीस़ से कोई तअल्लुक़ नहीं है।

आख़िरत में सिफ़ारिश अल्लाह की इजाज़त और मर्ज़ी से होगी। वही सिफ़ारिश कर सकेगा जिसको सिफ़ारिश करने की इजाज़त मिलेगी। इसलिये फ़रमाया, 'कौन है जो उसकी बारगाह में उसकी इजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश कर सके।' मन का लफ़्ज़ आम है इसलिये किसी नबी और फ़रिश्ते को भी ये मजाल नहीं होगा कि वो अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश कर सके। दूसरी जगह फ़रमाया, मा मिन शफ़ीइन इल्ला मिम्बअ़दि इज़्निही (सूरह यूनुस) 'कोई एक भी उसकी इजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश नहीं करेगा।'

सिफ़ारिश भी उसी के बारे में हो सकेगी जिसके बारे में इजाज़त मिल जाये। फ़रमाया, ला तन्फ़उश्शफ़ाअ़तु इल्ला मन अज़िन लहुर्रहमानु व रज़ि-य लहू क़ौला (सूरह ताहा) 'सिफ़ारिश सिर्फ़ उस शख़्स को नफ़ा देगी जिसके हक़ में रहमान ने इजाज़त दी और उसके लिये कोई बात कहने को पसंद किया।' सूरह अम्बिया में फ़रिश्तों के बारे में फ़रमाया, वला यश्फ़ऊन इल्ला लिमनिर तज़ा 'वो सिर्फ़ उसी के लिये सिफ़ारिश करेंगे जिसके लिये वो पसंद फ़रमायेगा और सिफ़ारिश उतनी ही करेंगे जितनी की इजाज़त हो। जैसाकि व रज़ि-य लहू क़ौला से स़ाबित होता है।

इसलिये ये कहना दुरुस्त नहीं है 'हम हर क़िस्म की शफ़ाअ़त के क़ाइल हैं ख़्वाह ये शफ़ाअ़त बिल्इज़्न हो या लिल वजाहत हो या बिल्मुहब्बत हो' क्योंकि शफ़ाअ़त की इजाज़त ही उन्हें मिलेगी जिनको अल्लाह के यहाँ वजाहत हासिल होगी या वो अल्लाह की मुहब्बत के मुस्तहिक़ होंगे। फिर इसके लिये बिला ज़रूरत तूल बयानी से काम लिया गया है और अ़जीब बात शुरू में ये तस्लीम कर लिया गया है कि उस बख़्शिश में उस पर किसी का इजारह नहीं, किसी का ज़ोर नहीं, वही तन्हा उस मग़्फ़िरत और करमगिरी का मालिक है। लेकिन अल्लाह तआ़ला अपने मक़्बूल और मुक़र्रब बन्दों की इ़ज़्ज़त और वजाहत दिखलाने के लिये अपने महबूब और पसन्दीदा बन्दों की शान ज़ाहिर करने के लिये, अपने अ़ब्बाद व ख़्वास की ख़ुसूसियत जतलाने के लिये, उनको महशर के दिन ये ऐ़ज़ाज़ बख़्शेगा। ये मक़ाम अ़ता फ़रमायेगा, उन्हें इजाज़त देगा, इज़्न मरहमत फ़रमायेगा कि वो उसके गुनाहगार बन्दों की शफ़ाअ़त करें और अल्लाह तआ़ला सिर्फ़ अपने फ़ज़्ल व करम से उनकी शफ़ाअ़त क़ुबूल फ़रमा कर बेहिसाब गुनाहगारों को बख़्श देगा। (शरह सहीह मुस्लिम : 2/38) अज़ अ़ल्लामा ग़ुलाम रसूल सईदी

अब इसके बाद ये कहना सिर्फ़ एक जसारत है कि दुनिया में (वहाबिया) तलबे शफ़ाअ़त के क़ाइल नहीं। (क्या हर वहाबी अल्लाह तआ़ला से मग़्फ़िरत तलब नहीं करता और दूसरों से बख़्शिश की दुआ़ नहीं कराता?) फिर कहना, वहाबिया आख़िरत में शफ़ाअ़त बिल्इज़्न के क़ाइल हैं, शफ़ाअ़त बिल्वजाहत और शफ़ाअ़त बिल्मुहब्बत के क़ाइल नहीं।

(1165) हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हमें लोगों पर तीन वजह से फ़ज़ीलत दी गई है : हमारी सफ़ें फ़रिश्तों की सफ़ों की तरह क़रार दी गई हैं, हमारे लिये तमाम रूए ज़मीन सज्दागाह बना दी गई है और इसकी मिट्टी जब हमें पानी न मिले हमारे लिये पाकीज़गी का ज़रिया (पाक करने वाली) बना दी गई है।' और एक और ख़ुसूसियत भी बयान की (सूरह बक़रह की आख़िरी आयतों का नुज़ूल मुराद है)।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ أَبِي مَالِكٍ الأَشْجَعِيِّ، عَنْ رِبْعِيٍّ، عَنْ حُذَيْفَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " فُضِّلْنَا عَلَى النَّاسِ بِثَلاَثٍ جُعِلَتْ صُفُوفُنَا كَصُفُوفِ الْمَلاَئِكَةِ وَجُعِلَتْ لَنَا الأَرْضُ كُلُّهَا مَسْجِدًا وَجُعِلَتْ تُرْبَتُهَا لَنَا طَهُورًا إِذَا لَمْ نَجِدِ الْمَاءَ " . وَذَكَرَ خَصْلَةً أُخْرَى .

फ़वाइद : (1) पहली उम्मतें सफ़बन्दी नहीं करती थीं और मुसलमानों को फ़रिश्तों की तरह सफ़बन्दी का हुक्म दिया गया है। (2) इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि तयम्मुम के लिये सिर्फ़ मिट्टी ही इस्तेमाल हो सकती है और अरज़ से मुराद तुराब ही है। इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मालिक (रह.) के नज़दीक ज़मीन की जिन्स से जो चीज़ भी हो, ढेला, पत्थर, ईंट, चूना वग़ैरह से तयम्मुम हो सकता है।

(1166) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ سَعْدِ بْنِ طَارِقٍ، حَدَّثَنِي رِبْعِيُّ بْنُ حِرَاشٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . بِمِثْلِهِ .

(1167) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे दूसरे अम्बिया पर छः चीज़ों से फ़ज़ीलत दी गई है : मुझे जामेअ कलिमात अता किये गये हैं, मेरी रौब व दबदबे के ज़रिये मदद की गई है और मेरे लिये ग़नीमतें हलाल कर दी गई हैं और मेरे लिये ज़मीन पाकीज़गी का बाइस

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - وَهُوَ ابْنُ جَعْفَرٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " فُضِّلْتُ عَلَى الأَنْبِيَاءِ بِسِتٍّ أُعْطِيتُ

جَوَامِعَ الْكَلِمِ وَنُصِرْتُ بِالرُّعْبِ وَأُحِلَّتْ لِيَ الْغَنَائِمُ وَجُعِلَتْ لِيَ الأَرْضُ طَهُورًا وَمَسْجِدًا وَأُرْسِلْتُ إِلَى الْخَلْقِ كَافَّةً وَخُتِمَ بِيَ النَّبِيُّونَ " .

बनाई गई है और मस्जिद क़रार दी गई है और मुझे तमाम मख़्लूक़ की तरफ़ भेजा गया है और मुझ पर नबियों को ख़त्म कर दिया गया, मुझे आख़िरी नबी बनाया गया है।'
(सहीह बुख़ारी : 1553, इब्ने माजह : 567)

फ़वाइद : (1) जवामिउल कलिम : इससे मुराद ऐसे कलिमात और इबारात हैं जो इन्तिहाई मुख़्तसर और फ़सीह व बलीग़ हैं लेकिन उनमें मआनी की एक दुनिया पोशीदा है गोया कि दरिया को कूज़े में बंद कर दिया गया है। इससे क़ुरआन मजीद मुराद है। **(2) नुसिर्तु बिर्रुअ़ब :** आप अभी दुश्मन से बहुत दूर के फ़ासले पर होते हैं और उसको आपके हमला करने के इरादे और तैयारी का पता चलता है तो उस पर अल्लाह के फ़ज़्ल से दूर ही से आपका रौब तारी हो जाता था और आपके ख़ौफ़ व ख़तरे से उसका दिल दहल जाता था। **(3) उहिल्लत लिल्ग़नाइम :** पहली उम्मतें और अम्बिया जब अल्लाह तआ़ला की राह में जिहाद के लिये निकलते और दुश्मन पर ग़लबा के बाद उसके माल व मताअ़ पर क़ाबिज़ होते तो उसको अपने इस्तेमाल में नहीं ला सकते थे बल्कि आसमान से आग उतरकर उसको खा जाती थी और अगर उसमें किसी ने ख़यानत की होती तो आग ग़नीमत के माल को नहीं खाती थी। **(4)** आपकी नुबूवत व रिसालत हमेशा और क़यामत तक के लिये है। इसलिये और किसी रसूल की ज़रूरत बाक़ी नहीं रही और आप पर नुबूवत का सिलसिला ख़त्म कर दिया गया है और आप आख़िरी नबी हैं। आपके बाद किसी नबी के आने का इम्कान ही बाक़ी नहीं है। हज़रत ईसा (अ़लै.) क़यामत के क़ुर्ब की अ़लामत व निशानी के तौर पर आयेंगे, लेकिन वो लोगों को अपनी नुबूवत की दावत नहीं देंगे और न ही अपना प्रचार करेंगे। बल्कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की नुबूवत और आपकी शरीअ़त का ही ऐलान करेंगे।

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، وَحَرْمَلَةُ، قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " بُعِثْتُ بِجَوَامِعِ الْكَلِمِ وَنُصِرْتُ بِالرُّعْبِ وَبَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُتِيتُ بِمَفَاتِيحِ خَزَائِنِ الأَرْضِ فَوُضِعَتْ فِي

(1168) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे जामेअ़ कलाम देकर भेजा गया है और रौब के ज़रिये मेरी नुसरत (मदद) की गई है। मैं सोया हुआ था कि इस असना (बीच) में ज़मीन के ख़ज़ानों की कुन्जियाँ मेरे हवाले की गईं और मेरे हाथों में रख दी गईं।' हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) तो

يَدَيَّ " . قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ فَذَهَبَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَنْتُمْ تَنْتَثِلُونَهَا .

अपने रब के पास जा चुके हैं और (उन ख़ज़ानों को) अब तुम निकाल रहे हो।
(नसाई : 4/6)

मुफ़रदातुल हदीस़ : तन्तसि़लूनहा : वो ख़ज़ाने तुम निकाल रहे हो।

फ़ायदा : उतीतु बि-मफ़ातीहि ख़ज़ाइनिल अरज़ इस ख़्वाब के ज़रिये रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये बशारत (खुश खबरी) दी गई थी कि आपकी उम्मत के हाथों दुनिया की बड़ी-बड़ी सल्तनतें ज़मीन बोस होंगी और इनके ख़ज़ाने उनके हाथ लगेंगे और इस ख़्वाब की ताबीर ख़ुलफ़ाए राशिदीन के हाथों मुकम्मल हुई। मुसलमानों ने देखा कि उस दौर की दोनों सुपर पावर मुसलमानों के सामने सर नगूँ हुईं और रोम व ईरान के ख़ज़ाने मुसलमानों के इस्तेमाल में आये। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने इस तरफ़ इशारा किया है।

وَحَدَّثَنَا حَاجِبُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ، عَنِ الزُّبَيْدِيِّ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ . مِثْلَ حَدِيثِ يُونُسَ .

(1169) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।
(नसाई : 4/6)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، وَأَبِي، سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(1170) इमाम साहब दो और उस्तादों से मज़्कूरा रिवायत बयान करते हैं।
(नसाई : 4/6)

وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ أَبِي يُونُسَ، مَوْلَى أَبِي

(1171) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'दुश्मन पर रौब तारी करके मेरी मदद की गई है

هُرَيْرَةَ أَنَّهُ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ عَلَى الْعَدُوِّ وَأُوتِيتُ جَوَامِعَ الْكَلِمِ وَبَيْنَمَا أَنَا نَائِمٌ أُتِيتُ بِمَفَاتِيحِ خَزَائِنِ الأَرْضِ فَوُضِعَتْ فِي يَدَىَّ " .

और मुझे जामेअ़ कलाम से नवाज़ा गया है। मेरे सोये हुए के दौरान मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों की कुन्जियाँ दी गईं और उन्हें मेरे हाथों में रख दिया गया।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ وَأُوتِيتُ جَوَامِعَ الْكَلِمِ " .

(1172) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरी रौब के ज़रिये मदद की गई है और मुझे जामेअ़ कलाम इनायत फ़रमाई गई है।'

باب ابْتِنَاءِ مَسْجِدِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم

बाब 2 : मस्जिदे नबवी की तामीर

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَشَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، كِلاَهُمَا عَنْ عَبْدِ الْوَارِثِ، - قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ الضُّبَعِيِّ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَدِمَ الْمَدِينَةَ فَنَزَلَ فِي عُلْوِ الْمَدِينَةِ فِي حَىٍّ يُقَالُ لَهُمْ بَنُو عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ . فَأَقَامَ فِيهِمْ أَرْبَعَ عَشْرَةَ لَيْلَةً ثُمَّ إِنَّهُ أَرْسَلَ إِلَى مَلإِ بَنِي النَّجَّارِ فَجَاءُوا مُتَقَلِّدِينَ

(1173) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाये तो मदीना के बुलंद हिस्से में बनू अ़म्र बिन अ़ौफ़ नामी क़बीले में फ़रोकश हुए और यहाँ चौदह रातें क़ियाम फ़रमाया। फिर आपने बनू नज्जार के सरदारों को बुलवाया तो वो लोग तलवारें लटकाये हुए आये। गोया मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को आपकी सवारी पर देख रहा हूँ। अबू बकर (रज़ि.) आपके पीछे सवार हैं और बनू नज्जार के लोग आपके चारों तरफ़ हैं। यहाँ तक कि आप अबू अय्यूब के आँगन

بِسُيُوفِهِمْ - قَالَ - فَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى رَاحِلَتِهِ وَأَبُو بَكْرٍ رِدْفُهُ وَمَلأُ بَنِي النَّجَّارِ حَوْلَهُ حَتَّى أَلْقَى بِفِنَاءِ أَبِي أَيُّوبَ - قَالَ - فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي حَيْثُ أَدْرَكَتْهُ الصَّلاَةُ وَيُصَلِّي فِي مَرَابِضِ الْغَنَمِ ثُمَّ إِنَّهُ أَمَرَ بِالْمَسْجِدِ قَالَ فَأَرْسَلَ إِلَى مَلإِ بَنِي النَّجَّارِ فَجَاءُوا فَقَالَ " يَا بَنِي النَّجَّارِ ثَامِنُونِي بِحَائِطِكُمْ هَذَا " . قَالُوا لاَ وَاللَّهِ لاَ نَطْلُبُ ثَمَنَهُ إِلاَّ إِلَى اللَّهِ . قَالَ أَنَسٌ فَكَانَ فِيهِ مَا أَقُولُ كَانَ فِيهِ نَخْلٌ وَقُبُورُ الْمُشْرِكِينَ وَخِرَبٌ . فَأَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِالنَّخْلِ فَقُطِعَ وَبِقُبُورِ الْمُشْرِكِينَ فَنُبِشَتْ وَبِالْخِرَبِ فَسُوِّيَتْ - قَالَ - فَصَفُّوا النَّخْلَ قِبْلَةً وَجَعَلُوا عِضَادَتَيْهِ حِجَارَةً - قَالَ - فَكَانُوا يَرْتَجِزُونَ وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَعَهُمْ وَهُمْ يَقُولُونَ اللَّهُمَّ إِنَّهُ لاَ خَيْرَ إِلاَّ خَيْرُ الآخِرَهْ فَانْصُرِ الأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَهْ

(सामने का सहन) में उतरे। (आपने सवारी का पालान अबू अय्यूब के आँगन में डाल दिया) और आप ये पसंद करते थे कि जहाँ भी नमाज़ का वक़्त आ जाये नमाज़ पढ़ लें और आप बकरियों के बाड़े में भी नमाज़ पढ़ लेते और आपने मस्जिद बनाने का हुक्म दिया। चुनाँचे आपने बनू नज्जार के लोगों को बुलवाया और फ़रमाया, 'अपने इस बाग़ की क़ीमत मुझसे ले लो।' उन्होंने जवाब दिया, नहीं, अल्लाह की क़सम! हम इसकी क़ीमत सिर्फ़ अल्लाह तआला से माँगते हैं।' अनस (रज़ि.) ने बयान किया, उस जगह में जो कुछ था मैं तुम्हें बताता हूँ, उसमें खजूरों के दरख़्त, मुश्रिकों की क़ब्रें और वीरान जगह थी। चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुक्म से खजूर के दरख़्तों को काट दिया गया। मुश्रिकों की क़ब्रों को उखेड़ दिया गया और वीराना (खण्डरात) को हमवार और बराबर कर दिया गया और खजूर को मस्जिद के सामने की जानिब गाड़ दिया गया और दरवाज़े के दोनों जानिब पत्थर लगाये गये और सहाबा रज़ि. रजज़ पढ़ रहे थे और रसूलुल्लाह (ﷺ) भी उनके सामने थे। वो कहते थे, ऐ अल्लाह! बेहतरी और भलाई तो आख़िरत की भलाई और बेहतरी ही है। तू अन्सार और मुहाजिरों की नुसरत फ़रमा।

(सहीह बुख़ारी : 428, 1868, 3932, 2106, 277, 2774, 2779, अबू दाऊद : 453, नसाई : 1/392, इब्ने माजह : 742)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) उलू : ऐन पर पेश और ज़ेर दोनों आ सकते हैं, बुलंदी, ऊँचाई, बनू अम्र बिन औफ़ के लोग कुबा में रहते थे, जो मदीना के बुलंद हिस्से में वाक़ेअ है। मलउन : सरदार व अशराफ़ (रईस लोग), इसका इत्लाक़ जमाअत पर भी होता है। बनू नज्जार, ये ख़ानदान रसूलुल्लाह (ﷺ) के दादा का ननिहाल था। इसलिये उनको अख़वाल (मामू) समझते थे। **मुतक़ल्लिदी सुयूफ़िहिम :** अपनी तलवारों को हमाइल किये हुए ताकि यहूद को पता चल सके कि वो आपकी हिजरत में हर कुर्बानी देने के लिये तैयार हैं। **फ़िना :** घर के सामने का मैदान या खुली जगह। मराबिज़ : मरबज़ की जमा है बाड़ा, जहाँ बकरियाँ बैठकर रात गुज़ारती हैं। **अमर :** मअरूफ़ और मज्हूल दोनों तरह पढ़ा जा सकता है। **(2) स़ामिनूनी :** मेरे साथ स़मन (क़ीमत) तय कर लो। आपने ये क़तआ दस दीनार में ख़रीदा था। क्योंकि यतीम बच्चों का था और क़ीमत अबू बकर (रज़ि.) ने अदा की थी और बक़ौल कुछ अबू अय्यूब अन्सारी (रज़ि.) ने। **(3) ख़रिबुन या ख़िरबुन :** वीराना, खण्डरात। **(4) नुबिशत :** उनको उखाड़ दिया गया। **(5) इज़ादतैहि :** अज़ादह दरवाज़ों के पट या एक जानिब को कहते हैं। **यरतजिज़ून :** वो रजज़ पढ़ते थे। रजज़ ये शेअर की एक क़िस्म है जिसका हर फ़िक़रा अलग होता है। ये कलाम मौज़ूँ होता है या शेअर के वज़न पर होता है। लेकिन कहने वाले की निय्यत शेअर की नहीं होती और इंसान के मुँह से कभी-कभार कलामे मौज़ू सादिर हो जाये तो वो शेअर नहीं होगा और न उसको शाइर कहा जायेगा।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنِي أَبُو التَّيَّاحِ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي فِي مَرَابِضِ الْغَنَمِ قَبْلَ أَنْ يُبْنَى الْمَسْجِدُ .

(1174) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बकरियों के बाड़ों में नमाज़ पढ़ लेते थे। जबकि अभी मस्जिद तामीर नहीं की गई थी।

(सहीह बुख़ारी : 234, 429, तिर्मिज़ी : 350)

وَحَدَّثَنَاهُ يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ - حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسًا، يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِمِثْلِهِ

(1175) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

फ़वाइद : (1) रसूलुल्लाह (ﷺ) हिज्रत करके 8 रबीउल अव्वल बरोज़ सोमवार कुबा में तशरीफ़ फ़रमा हुए थे। **(2)** मस्जिद बनाना, हुकूमत की ज़िम्मेदारी है और इसमें तमाम मुसलमान इज्तिमाई तौर पर तआवुन करेंगे। **(3)** ज़रूरत के तहत फलदार दरख़्त काटना जाइज़ है। **(4)** जगह ख़रीदकर अगर उसमें मुश्रिकों की क़ब्रें हों तो उनको उखेड़ना जाइज़ है और वहाँ मस्जिद बनाई जा सकती है।

अहनाफ और शवाफ़िअ का मौक़िफ़ भी यही है। इमाम औज़ाई (रह.) इसको जाइज़ नहीं समझते। कुछ हज़रात ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की हदीस़ इन मुअज़्ज़बीन पर रोये बग़ैर न गुज़रो और हज़रत अ़ली (रज़ि.) के क़ौल कि वो अरज़े बाबिल में नमाज़ पढ़ने को मक्रूह जानते थे। इस्तिदलाल करते हुए इमाम औज़ाई (रह.) की ताईद की है। क्योंकि मुश्रिकों की क़ब्रों पर अ़ज़ाबे इलाही नाज़िल होता है। ये इस्तिदलाल दुरुस्त नहीं है और न ही रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़ौल और फ़ैअ़ल में तज़ाद है। क्योंकि मुअज़्ज़बीन से वो लोग मुराद हैं जो अ़ज़ाबे इलाही के नतीजे में हलाक हुए और अरज़े बाबिल का ख़सफ़ भी अ़ज़ाबे इलाही के नतीजे में हुआ था।

अगर मुश्रिकों की क़ब्रें उखाड़ कर मस्जिद बनाना जाइज़ है तो मुसलमानों का क़ब्रिस्तान अगर उसके आस़ार मिट जायें या किसी ने अपने घर में क़ब्र बनाई हो और वो उसको फ़रोख़्त कर दे या मस्जिद के लिये वक़्फ़ कर दे तो फिर क़ब्र को उखेड़कर मस्जिद बनाना जाइज़ होना चाहिये। मालिकिया, शाफ़ेइया और हन्फ़िया इसको तौहीने मुस्लिम क़रार देकर नाजाइज़ क़रार देते हैं। हालांकि जब आस़ार मिट गये हैं या एहतियात से उसकी हड्डियाँ निकालकर क़ब्रिस्तान में दफ़न कर दी गई हैं तो इसमें तौहीन का पहलू कौनसा है?

अ़ल्लामा अ़ैनी ने और कुछ दूसरे उ़लमा ने एक मालिकी इमाम का क़ौल नक़ल किया है कि मुसलमानों के पुराने क़ब्रिस्तान की जगह मस्जिद बनाई जा सकती है और इस क़ौल पर नक़्द व तबसरा नहीं किया जिससे मालूम हुआ वो इसको जाइज़ समझते हैं।

बाब 3 : क़िब्ले का बैतुल मक़्दिस की बजाय बैतुल्लाह (कअ़बा) की तरफ़ फिरना

باب تَحْوِيلِ الْقِبْلَةِ مِنَ الْقُدْسِ إِلَى الْكَعْبَةِ

(1176) हज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने नबी (ﷺ) के साथ 16 माह तक बैतुल मक़्दिस की तरफ़ नमाज़ पढ़ी। यहाँ तक कि सूरह बक़रह की ये आयत उतरी, 'और तुम जहाँ कहीं भी हो, अपने रुख़ (नमाज़ में) कअ़बा की तरफ़ करो।' (सूरह बक़रह : 144) ये आयत उस वक़्त उतरी जबकि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ पढ़ चुके थे।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، قَالَ صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم إِلَى بَيْتِ الْمَقْدِسِ سِتَّةَ عَشَرَ شَهْرًا حَتَّى نَزَلَتِ الآيَةُ الَّتِي فِي الْبَقَرَةِ { وَحَيْثُمَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ} فَنَزَلَتْ بَعْدَ مَا صَلَّى

النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فَانْطَلَقَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ فَمَرَّ بِنَاسٍ مِنَ الأَنْصَارِ وَهُمْ يُصَلُّونَ فَحَدَّثَهُمْ فَوَلَّوْا وُجُوهَهُمْ قِبَلَ الْبَيْتِ .

लोगों में से एक आदमी (ये हुक्म सुनकर) चला और अन्सार के कुछ लोगों के पास से गुज़रा वो नमाज़ पढ़ रहे थे तो उसने उन्हें ये हदीस़ सुनाई तो उन्होंने अपने चेहरे बैतुल्लाह की तरफ़ कर लिये।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ خَلاَّدٍ جَمِيعًا عَنْ يَحْيَى، - قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، - عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنِي أَبُو إِسْحَاقَ، قَالَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ، يَقُولُ صَلَّيْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم نَحْوَ بَيْتِ الْمَقْدِسِ سِتَّةَ عَشَرَ شَهْرًا أَوْ سَبْعَةَ عَشَرَ شَهْرًا ثُمَّ صُرِفْنَا نَحْوَ الْكَعْبَةِ .

(1177) हज़रत बराअ (रज़ि.) से रिवायत है कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ 16 या 17 माह नमाज़ बैतुल मक़्दिस की तरफ़ रुख़ करके पढ़ी। फिर हमें कअ़बा की तरफ़ फेर दिया गया।

(सहीह बुख़ारी : 4492, नसाई : 1/242)

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ بَيْنَمَا النَّاسُ فِي صَلاَةِ الصُّبْحِ بِقُبَاءٍ إِذْ جَاءَهُمْ آتٍ فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَدْ أُنْزِلَ عَلَيْهِ اللَّيْلَةَ . وَقَدْ أُمِرَ أَنْ يَسْتَقْبِلَ الْكَعْبَةَ فَاسْتَقْبِلُوهَا . وَكَانَتْ وُجُوهُهُمْ إِلَى الشَّامِ فَاسْتَدَارُوا إِلَى الْكَعْبَةِ .

(1178) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि लोग मस्जिदे क़ुबा में सुबह की नमाज़ पढ़ रहे थे कि इसी अस़ना (बीच) में उनके पास एक आने वाला आया और उनको बताया कि रात रसूलुल्लाह (ﷺ) पर क़ुरआन उतर चुका है और आपको कअ़बा की तरफ़ रुख़ करने का हुक्म दिया जा चुका है। लिहाज़ा तुम भी उसकी तरफ़ रुख़ कर लो, उनके रुख़ शाम की तरफ़ थे तो वो कअ़बा की तरफ़ घूम गये।

(सहीह बुख़ारी : 403, 4491, 7251, नसाई : 1/244, 2/61, 24)

حَدَّثَنِي سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنِي حَفْصُ بْنُ مَيْسَرَةَ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ

(1179) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि इसी अस़ना (बीच) में कि

ابْنِ عُمَرَ، وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ بَيْنَمَا النَّاسُ فِي صَلاَةِ الْغَدَاةِ إِذْ جَاءَهُمْ رَجُلٌ . بِمِثْلِ حَدِيثِ مَالِكٍ .

लोग सुबह की नमाज़ पढ़ रहे थे कि उनके पास एक आदमी आया। आगे मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُصَلِّي نَحْوَ بَيْتِ الْمَقْدِسِ فَنَزَلَتْ { قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ} فَمَرَّ رَجُلٌ مِنْ بَنِي سَلِمَةَ وَهُمْ رُكُوعٌ فِي صَلاَةِ الْفَجْرِ وَقَدْ صَلَّوْا رَكْعَةً فَنَادَى أَلاَ إِنَّ الْقِبْلَةَ قَدْ حُوِّلَتْ . فَمَالُوا كَمَا هُمْ نَحْوَ الْقِبْلَةِ .

(1180) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बैतुल मक़्दिस की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ते थे। फिर ये आयत उतरी, 'हम आपका चेहरा आसमान की तरफ़ फिरता हुआ देख रहे हैं तो हम ज़रूर आपका रुख़ उस क़िब्ले की तरफ़ फेर देंगे, जिसे आप पसंद करते हैं (या वो क़िब्ला आपकी तौलियत में दे देंगे) आप अपना चेहरा मस्जिदे हराम की तरफ़ फेर लीजिये।' (सूरह बक़रा : 144) बनू सलमा का एक आदमी गुज़रा और लोग सुबह की नमाज़ पढ़ रहे थे और वो एक रकअत पढ़ चुके थे तो उसने आवाज़ दी, ख़बरदार! क़िब्ला तब्दील किया जा चुका है। तो वो जिस हालत में थे उसी हालत में क़िब्ले की तरफ़ फिर गये।

(अबू दाऊद : 1045)

फ़वाइद : (1) नबी (ﷺ) हिज्रत से पहले मक्का मुकर्रमा में इस तरह पढ़ा करते थे कि आप का रुख़ बैतुल्लाह और बैतुल मक़्दिस दोनों की तरफ़ होता था। हिज्रत के बाद ये सूरत मुम्किन न रही क्योंकि मदीना मुनव्वरा से बैतुल मक़्दिस शिमाल (उत्तर) की तरफ़ है और मक्का मुकर्रमा जुनूब (दक्षिण) की तरफ़। इसलिये अगर बैतुल मक़्दिस की तरफ़ रुख़ करें तो बैतुल्लाह की तरफ़ पुश्त होगी। यहूद को मानूस और क़रीब करने के लिये रुख़ बैतुल मक़्दिस की तरफ़ रखा गया। लेकिन उन्होंने उसको क़रीब आने के बजाय उल्टा मुख़ालिफ़त का ज़रिया बना लिया कि मुहम्मद हमारी मुख़ालिफ़त करता है। लेकिन नमाज़ में रुख़ हमारे क़िब्ले की तरफ़ करता है और मुश्रिकीने मक्का भी ऐतराज़ करते थे कि मुहम्मद (ﷺ) मिल्लते इब्राहीमी का दावेदार है लेकिन नमाज़ में रुख़ उनके तामीर करदा घर और क़िब्ले की तरफ़ नहीं करता। इसलिये आपकी दिली आरज़ू और ख़्वाहिश यही थी कि आप बैतुल्लाह की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ें। हिज्रत के 16 या 17 माह बाद 15 रजब 2 हिजरी को आपको बैतुल्लाह की तरफ़ रुख़ करने

का हुक्म दिया गया। रबीउल अव्वल 1 और रजब 2 हिजरी को एक शुमार कर लें तो मुद्दत 16 माह होगी। अगर अलग-अलग शुमार कर लें तो मुद्दत 17 माह होगी। **(2)** आप (ﷺ) बिश्र बिन बराअ बिन मअरूर (रज़ि.) की वफ़ात के मौक़े पर उनकी वालिदा के पास तअज़ियत के लिये तशरीफ़ लाये थे। उनका घर बनू सलमा में था। ज़ुहर का वक़्त वहीं हो गया तो आपने बनू सलमा की मस्जिद में ज़ुहर की नमाज़ अदा की। जब आप दो रकअतें अदा कर चुके तो क़िब्ला नमाज़ ही में तब्दील हो गया और आप आगे से सफ़ों के पीछे आ गये और नमाज़ मुकम्मल की। इसलिये बनू सलमा की मस्जिद को मस्जिदे ज़ुल क़िब्लतैन का नाम दिया जाता है क्योंकि उसमें एक ही नमाज़ दो क़िब्लों की तरफ़ रुख़ करके पढ़ी गई है और सबसे पहले मुकम्मल नमाज़ बैतुल्लाह की तरफ़ रुख़ करके मस्जिदे नबवी में अ़सर की नमाज़ पढ़ी गई है। **(3)** हज़रत अ़ब्बाद बिन बिश्र (रज़ि.) अ़सर की नमाज़ आपके साथ बैतुल्लाह की तरफ़ रुख़ करके पढ़कर गये तो रास्ते में बनू हारिसा की मस्जिद से गुज़रे। वो बैतुल मक़्दिस की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ रहे थे। हज़रत अ़ब्बाद (रज़ि.) के बताने पर वो नमाज़ ही में बैतुल्लाह की तरफ़ फिर गये और हज़रत अ़ब्बाद (रज़ि.) या कोई और सहाबी, क़ुबा में अ़म्र बिन औ़फ़ की मस्जिद में सुबह की नमाज़ में एक रकअ़त हो जाने के बाद पहुँचे और उनको क़िब्ले की तब्दीली से आगाह किया तो उन्होंने भी नमाज़ ही में अपना रुख़ तब्दील कर लिया। **(4)** जब तक इंसान को किसी शरई हुक्म का इल्म न हो, वो उसका मुकल्लफ़ नहीं होगा। अहले क़ुबा को क़िब्ले की तब्दीली का इल्म सुबह की नमाज़ में हुआ, इसलिये अ़सर, मग़रिब और इशा की नमाज़ उन्होंने बैतुल मक़्दिस की तरफ़ रुख़ करके पढ़ी और आपने उनको कुछ नहीं कहा। **(5)** एक आदमी अगर क़ाबिले ऐतमाद हो तो उसकी बात पर अ़मल किया जायेगा। बनू हारिसा और बनू अ़म्र बिन औ़फ़ ने सिर्फ़ एक आदमी की ख़बर पर क़तई और यक़ीनी क़िब्ले की तरफ़ से रुख़ दूसरे क़िब्ले की तरफ़ कर लिया। क्योंकि क़िब्ले की तब्दीली की आपकी ख़्वाहिश से वो आगाह थे। इसलिये इस क़रीने की बिना पर एक आदमी की ख़बर ने यक़ीन का फ़ायदा दिया।

बाब 4 : क़ब्रों पर मस्जिदें बनाने और उनमें तस्वीरें रखने और क़ब्रों को सज्दा करने की मुमानिअ़त

باب النَّهْيِ عَنْ بِنَاءِ الْمَسَاجِدِ عَلَى الْقُبُورِ وَاتِّخَاذِ الصُّوَرِ فِيهَا وَالنَّهْيِ عَنِ اتِّخَاذِ الْقُبُورِ مَسَاجِدَ

(1181) हज़रत आइशा (रज़ि.) की रिवायत है कि उम्मे हबीबा (रज़ि.) और उम्मे सलमा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास उस गिर्जे का तज़्किरा किया जो उन्होंने हब्शा

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، أَخْبَرَنِي أَبِي، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ أُمَّ حَبِيبَةَ، وَأُمَّ سَلَمَةَ ذَكَرَتَا كَنِيسَةً

رَأَيْنَهَا بِالْحَبَشَةِ - فِيهَا تَصَاوِيرُ - لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ أُولَئِكِ إِذَا كَانَ فِيهِمُ الرَّجُلُ الصَّالِحُ فَمَاتَ بَنَوْا عَلَى قَبْرِهِ مَسْجِدًا وَصَوَّرُوا فِيهِ تِلْكَ الصُّوَرَ أُولَئِكِ شِرَارُ الْخَلْقِ عِنْدَ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " .

में देखा था, जिसमें तस्वीरें आवेज़ाँ थीं। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'वो लोग जब उनमें कोई नेक आदमी फ़ौत हो जाता तो वो उसकी क़ब्र पर मस्जिद बनाते और उसमें ये तस्वीरें बना देते। ये लोग अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के नज़दीक क़यामत के दिन बदतरीन लोग होंगे।'

(सहीह बुख़ारी : 427, 3873, नसाई : 2/40)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) कनीसा : गिर्जा, ईसाइयों की इबादतगाह। **(2) तसावीर :** तस्वीर की जमा है और सुवर सूरतुन की जमा है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهُمْ تَذَاكَرُوا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي مَرَضِهِ فَذَكَرَتْ أُمُّ سَلَمَةَ وَأُمُّ حَبِيبَةَ كَنِيسَةً . ثُمَّ ذَكَرَ نَحْوَهُ .

(1182) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि लोगों ने नबी (ﷺ) की बीमारी में आपसी बातचीत की तो उम्मे सलमा और उम्मे हबीबा (रज़ि.) ने एक गिर्जे का तज़्किरा किया आगे ऊपर वाली रिवायत की तरह है।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ ذَكَرْنَ أَزْوَاجُ النَّبِيِّ ﷺ كَنِيسَةً رَأَيْنَهَا بِأَرْضِ الْحَبَشَةِ يُقَالُ لَهَا مَارِيَةُ . بِمِثْلِ حَدِيثِهِمْ .

(1183) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) की अज़्वाज ने उस गिर्जे का तज़्किरा किया जो उन्होंने हब्शा की सरज़मीन में देखा था जिसको मारिया कहा जाता था। फिर मज़्कूरा हदीस़ बयान की।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، قَالاَ حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ أَبِي حُمَيْدٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي مَرَضِهِ الَّذِي لَمْ يَقُمْ مِنْهُ "

(1184) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी उस बीमारी में जिससे आप उठ नहीं सके फ़रमाया, 'अल्लाह तआ़ला यहूद और नसारा पर लानत बरसाये, उन्होंने अपने अम्बिया की क़ब्रों को मस्जिदें बना लिया।' आ़इशा (रज़ि.) ने

لَعَنَ اللَّهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ " . قَالَتْ فَلَوْلاَ ذَاكَ أُبْرِزَ قَبْرُهُ غَيْرَ أَنَّهُ خُشِيَ أَنْ يُتَّخَذَ مَسْجِدًا . وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ أَبِي شَيْبَةَ وَلَوْلاَ ذَاكَ لَمْ يَذْكُرْ قَالَتْ .

बताया, अगर आपकी क़ब्र के बारे में इस बात का अन्देशा न होता तो आपकी क़ब्र को ज़ाहिर किया जाता। मगर उसके मस्जिद बनाने का डर पैदा हुआ या आपको उसके क़ब्र बनाने का डर लगा। इब्ने अबी शैबा की रिवायत में फ़लौला की जगह वलौला है और क़ालत का लफ़्ज़ नहीं है।

(सहीह बुख़ारी : 1330, 1390, 4441)

मुफ़रदातुल हदीस़ : ख़ुशि-य : इसको मज्हूल और मअ़रूफ़ दोनों तरह पढ़ा गया है। मज्हूल की सूरत में नाइब सहाबा होंगे और मअ़रूफ़ की सूरत में फ़ाइल आप होंगे, आपके हुक्म से क़ब्र खुली जगह पर नहीं बनाई गई।

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، وَمَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " قَاتَلَ اللَّهُ الْيَهُودَ اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ " .

(1185) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह यहूद व नसारा पर लानत भेजे उन्होंने अपने अम्बिया की क़ब्रों को मस्जिदें बना लिया।'

(सहीह बुख़ारी : 437, अबू दाऊद : 3227)

وَحَدَّثَنِي قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْفَزَارِيُّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ الأَصَمِّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ الأَصَمِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَعَنَ اللَّهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ " .

(1186) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला यहूदो-नसारा पर लानत भेजे उन्होंने अपने अम्बिया की क़ब्रों को मसाजिद बना लिया।'

وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، وَحَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ حَرْمَلَةُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، هَارُونُ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ عَائِشَةَ،

(1187) हज़रत आइशा (रज़ि.) और अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास मलकुल मौत आया तो आप अपनी मुनक़्क़श चादर अपने चेहरे पर डालने लगे

तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि.) जब आप घुटन महसूस फ़रमाते तो उसे चेहरे से हटा देते तो आपने इस हालत में फ़रमाया, 'यहूदो-नसारा पर अल्लाह की लानत, उन्होंने अपने अम्बिया की क़ब्रों को मस्जिदें बना लिया।' आप उनकी हरकत व करतूत से डराते थे (कि कहीं आपकी उम्मत इस काम में मुब्तला न हो जाये)।

(सहीह बुख़ारी : 436, 3454, 4444, 5816, नसाई : 2/40)

(1188) हज़रत जुन्दुब (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने नबी (ﷺ) से आपकी वफ़ात से पाँच दिन पहले ये कहते हुए सुना, 'मैं अल्लाह तआला के हुज़ूर इस चीज़ से बराअत का इज़हार करता हूँ कि तुममें से कोई मेरा ख़लील हो, क्योंकि अल्लाह तआला ने मुझे अपना ख़लील बना लिया है। जैसाकि उसने इब्राहीम (अलै.) को अपना ख़लील बनाया है। अगर मैं अपनी उम्मत में से किसी को अपना ख़लील बनाता तो अबू बकर को ख़लील बनाता। ख़बरदार! तुमसे पहले लोग अपने अम्बिया और नेक लोगों की क़ब्रों को मस्जिदें या सज्दागाह बना लिया करते थे। ख़बरदार! तुम क़ब्रों को मस्जिद न बनाना, बेशक मैं तुमको इससे रोकता हूँ।'

وَعَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ، قَالاَ لَمَّا نَزَلَتْ بِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم طَفِقَ يَطْرَحُ خَمِيصَةً لَهُ عَلَى وَجْهِهِ فَإِذَا اغْتَمَّ كَشَفَهَا عَنْ وَجْهِهِ فَقَالَ وَهُوَ كَذَلِكَ " لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ " . يُحَذِّرُ مِثْلَ مَا صَنَعُوا .

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - وَاللَّفْظُ لأَبِي بَكْرٍ - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ عَدِيٍّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَبِي أُنَيْسَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ النَّجْرَانِيِّ، قَالَ حَدَّثَنِي جُنْدَبٌ، قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ قَبْلَ أَنْ يَمُوتَ بِخَمْسٍ وَهُوَ يَقُولُ " إِنِّي أَبْرَأُ إِلَى اللَّهِ أَنْ يَكُونَ لِي مِنْكُمْ خَلِيلٌ فَإِنَّ اللَّهَ تَعَالَى قَدِ اتَّخَذَنِي خَلِيلاً كَمَا اتَّخَذَ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلاً وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا مِنْ أُمَّتِي خَلِيلاً لاَتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ خَلِيلاً أَلاَ وَإِنَّ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ كَانُوا يَتَّخِذُونَ قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ وَصَالِحِيهِمْ مَسَاجِدَ أَلاَ فَلاَ تَتَّخِذُوا الْقُبُورَ مَسَاجِدَ إِنِّي أَنْهَاكُمْ عَنْ ذَلِكَ " .

फ़वाइद : (1) नबी (ﷺ) ने अहले हब्शा के बारे में फ़रमाया, 'जब उनका कोई नेक आदमी फ़ौत होता, वो उसकी क़ब्र पर मस्जिद बना देते और उसमें उन लोगों की तस्वीरें बना देते।' और ज़ाहिर है उन नेक लोगों की तस्वीरें बनाने से उनका मक़सद ये था कि लोग उन तस्वीरों को देखकर उन नेक लोगों से मानूस हों और उनके अच्छे और पसन्दीदा हालात को याद करें ताकि फिर वो भी उनकी तरह अच्छे कामों को शौक़ व रग़बत और मेहनत व कोशिश से सर अन्जाम दें। लेकिन अन्जामकार उन्हीं तस्वीरों की इबादत और तअ़ज़ीम होने लगी। यानी जो कुछ काम अच्छे और नेक जज़्बे के तहत किया गया था वही गुमराही और शिर्क का बाइस बन गया और ये लोग नबी (ﷺ) के फ़रमान के मुताबिक़ 'सब मख़्लूक़ से बदतर और शरीर' ठहरे। आइशा (रज़ि.) ने बयान फ़रमाया कि आपने मर्ज़ुल मौत में फ़रमाया कि यहूदो-नसारा पर अल्लाह लानत बरसाये। उन्होंने अपने अम्बिया की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया। यानी जिस तरह इंसान मस्जिद में नमाज़ पढ़ता है, ज़िक्र व अज़्कार और दुआ करता है, उनको पाक-साफ़ और मुअ़त्तर करता है, वहाँ रोशनी का इन्तिज़ाम करता है ये सब काम उन्होंने अम्बिया की क़ब्रों पर शुरू कर दिये। आपको अपने बारे में भी ये ख़तरा और अन्देशा महसूस हुआ तो आपने इस हरकत व फ़ैअ़ल से सराहतन रोक दिया। फ़रमाया, 'बेशक मैं तुम्हें इस काम से मना करता हूँ।' और हज़रत आइशा (रज़ि.) के बक़ौल इसी ख़तरे के पेशे नज़र आपकी क़ब्र खुली जगह नहीं बनाई गई। चूंकि पहली उम्मत में ये काम शिर्क के लिये दरवाज़ा साबित हो चुका था। इसलिये आपने उस दरवाज़े को हमेशा के लिये बंद फ़रमा दिया। अब आपकी सरीह मुमानिअ़त के बावजूद कुछ उलमा की इबारतों से किसी सालेह और नेक इंसान की क़ब्र के जवार में, मस्जिद बनाने की गुंजाइश निकालना, उस शिर्क के दरवाज़े को खोलना है, जिसको आप बंद करने का हुक्म फ़रमा चुके हैं। जब ये बात मुसल्लमा है कि क़ब्रों को इबादतन सज्दा करना शिर्क और तअ़ज़ीमन सज्दा करना हराम है और क़ब्र का तवाफ़ करना हराम है। उसके सामने झुकना हराम है। तो फिर इस काम को ही क्यों न बंद किया जाये जो उनका मौजिब और पेश ख़ैमा बनता है? और नेक लोगों की क़ब्रों पर उन चीज़ों का खुले बंद मुशाहिदा किया जा सकता है। सहाबा व ताबेईन के दौर में जब मस्जिदे नबवी को वसीअ़ करने की ज़रूरत पेश आई तो हज़रत आइशा (रज़ि.) के हुज्रे (जिसमें हुज़ूर (ﷺ) अबू बकर और उमर (रज़ि.) की क़ब्रें हैं) उसको इस अन्दाज़ से मस्जिद में दाख़िल किया गया कि लोगों की उन तक रसाई न हो सके। वो न उनको नज़र आयें और न उनके पास या उनकी तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ सकें और अब तक ये सूरते हाल बरक़रार है। अगर नेक लोगों की क़ब्रों के जवार में नमाज़ पढ़ना ख़ैर व बरकत का बाइस है। तो सहाबा (रज़ि.) व ताबेईन (रह.) ने हुज्रे आइशा (रज़ि.) को क्यों मस्तूर किया और उनकी क़ब्रों को क्यों छिपाया? आपने अपनी वफ़ात से पाँच दिन पहले फ़रमाया था कि तुमसे पहले लोग अपने पैग़म्बरों और नेक लोगों की क़ब्रों को सज्दागाह बना लेते, 'ख़बरदार! तुम उन लोगों की क़ब्रों को सज्दागाह न बनाना।' आपके सरीह फ़रमान के बावजूद लोगों के लिये इसका रास्ता

खोलने पर इसरार क्यों है? और ये कहने का क्या मक़सद है कि कअबा से बड़ी दुनिया में कोई मस्जिद नहीं है? और उसके जवार में हज़रत इस्माईल (अलै.) और हज़रत हाजरा (अलै.) की क़ब्रें हैं। (शरह सहीह मुस्लिम : 2/84) क्या उन क़ब्रों का कोई निशान बाक़ी है या लोगों को इसका एहसास है? **(2)** सब अम्बिया पर ईमान लाना ज़रूरी है इसलिये ईसाईयों की तरफ़ अगरचे बराहे रास्त तो ईसा (अलै.) ही आये थे लेकिन पहले अम्बिया को भी तो वो तस्लीम करते थे। इसलिये आपने यहूद के साथ नसारा और के लिये अम्बिया का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया या मज्मूई ऐतबार से दोनों के लिये कहा। **(3)** ख़लील को अगर ख़ुल्लह (ख़ा के पेश के साथ) से लें तो इससे मुराद ऐसी गहरी और सच्ची दोस्ती है जो दिल में सिरायत कर जाये और ये सिर्फ़ किसी एक के साथ हो सकती है दूसरे के लिये गुंजाइश नहीं रहती और अगर इसको ख़ल्लह (ख़ा के ज़बर के साथ) से लें तो इससे मुराद फ़क़्रो-एहतियाज है। यानी मैं अल्लाह तआला के सिवा किसी पर ऐतमाद व भरोसा नहीं करता और मैं अल्लाह के सिवा किसी का मोहताज नहीं हूँ, अगर मैं मख़्लूक़ में से किसी के साथ ऐसी दोस्ती और मुहब्बत कर सकता जिसने मेरे दिल पर क़ब्ज़ा जमा लिया है या किसी पर ऐतमाद व भरोसा करता और उसका मोहताज होता तो उसका अहल और हक़दार अबू बकर होते।

बाब 5 : मस्जिद बनाने की फ़ज़ीलत और उसकी तरग़ीब व तश्वीक़

باب فَضْلِ بِنَاءِ الْمَسَاجِدِ وَالْحَثِّ عَلَيْهَا

(1189) हज़रत उबैदुल्लाह ख़ोलानी (रह.) से रिवायत है कि उसने हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) से उस वक़्त सुना जब उन्होंने मस्जिदे नबवी को नये सिरे से तामीर किया और लोगों ने उन पर तब्सरा किया कि तुम बहुत बातें बनाते हो, हालांकि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना, 'जिसने किसी क़िस्म की मस्जिद अल्लाह के लिये बनाई' बुकैर कहते हैं मेरा ख़याल है उन्होंने ये कहा, 'इससे वो अल्लाह की रज़ा व ख़ुश्नूदी चाहता है तो अल्लाह उसके लिये जन्नत में इस क़िस्म का घर बनायेगा।' इब्ने

حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ عِيسَى، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، أَنَّ بُكَيْرًا، حَدَّثَهُ أَنَّ عَاصِمَ بْنَ عُمَرَ بْنِ قَتَادَةَ حَدَّثَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ عُبَيْدَ اللَّهِ الْخَوْلاَنِيَّ، يَذْكُرُ أَنَّهُ سَمِعَ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ، عِنْدَ قَوْلِ النَّاسِ فِيهِ حِينَ بَنَى مَسْجِدَ الرَّسُولِ صلى الله عليه وسلم . إِنَّكُمْ قَدْ أَكْثَرْتُمْ وَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ " مَنْ بَنَى مَسْجِدًا لِلَّهِ تَعَالَى - قَالَ بُكَيْرٌ حَسِبْتُ أَنَّهُ قَالَ - يَبْتَغِي بِهِ وَجْهَ

اللَّهِ - بَنَى اللَّهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ " . وَقَالَ ابْنُ عِيسَى فِي رِوَايَتِهِ " مِثْلَهُ فِي الْجَنَّةِ " .

ईसा ने अपनी रिवायत में बैतन फ़िल्जन्नत की जगह मिस्लहू फ़िल्जन्नत कहा।
(सहीह बुख़ारी : 450)

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا الضَّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ مَحْمُودِ بْنِ لَبِيدٍ، أَنَّ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ، أَرَادَ بِنَاءَ الْمَسْجِدِ فَكَرِهَ النَّاسُ ذَلِكَ فَأَحَبُّوا أَنْ يَدَعَهُ عَلَى هَيْئَتِهِ فَقَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ " مَنْ بَنَى مَسْجِدًا لِلَّهِ بَنَى اللَّهُ لَهُ فِي الْجَنَّةِ مِثْلَهُ " .

(1190) हज़रत महमूद बिन लबीद (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत उ़समान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) ने मस्जिदे नबवी को नये से तामीर करना चाहा तो लोगों ने इसको पसंद न किया। उनकी ख़्वाहिश थी कि वो उसे उसकी हालत पर रहने दें तो उन्होंने फ़रमाया, 'मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना, 'जिसने अल्लाह की ख़ातिर कोई मस्जिद बनाई, अल्लाह उसके लिये जन्नत में इस क़िस्म का घर तामीर करेगा।'
(तिर्मिज़ी : 318, इब्ने माजह : 736)

फ़ायदा : दौरे नबवी में आपकी मस्जिद इन्तिहाई सादा थी। दीवारों को कच्ची ईंटों से बनाकर उस पर खजूर की छड़ियों की छत डाल दी गई थी और उसके सुतून खजूर की लकड़ी के थे। हज़रत उ़समान (रज़ि.) ने उसको वसीअ़ किया तो उसमें मटेरियल को बदल दिया। दीवारें तराशीदा पत्थरों से चूनागज करके बनाईं और सुतून भी तराशीदा पत्थरों से इस्तवार किये और छत सागवान की उ़म्दा लकड़ी की डाली। सहाबा किराम (रज़ि.) ने सामान की उ़म्दगी और तब्दीली पर ऐतराज़ किया। उनका ख़याल था कि मस्जिद पहले दौर की तरह सादा ही तामीर की जाये। लेकिन हज़रत उ़समान (रज़ि.) ने नये तामीर शुदा मकानात का लिहाज़ रखते हुए आ़ला और उ़म्दा मवाद इस्तेमाल किया और फ़रमाया, मैंने इसलिये इसको इतना आ़ला व उ़म्दा और हसीनो-जमील बनाया है ताकि अल्लाह मुझे क़यामत में मेरे इस ज़ौक़ व शौक़ के मुताबिक़ आ़ला और उ़म्दा घर दे।

बाब 6 : रुकूअ में हाथ घुटनों पर रखना पसन्दीदा है और जोड़कर दोनों घुटनों के दरम्यान रखना मन्सूख़ है

باب النَّدْبِ إِلَى وَضْعِ الأَيْدِي عَلَى الرُّكَبِ فِي الرُّكُوعِ وَنَسْخِ التَّطْبِيقِ

(1191) हज़रत अस्वद और अल्क़मा (रह.) से रिवायत है कि हम अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के घर उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने पूछा, क्या उन लोगों ने जिनको तुम पीछे छोड़ आये हो (हुक्मरान और उनकी इत्तिबाअ करने वाले) नमाज़ पढ़ ली है? हमने अर्ज़ किया, नहीं। उन्होंने कहा, उठो और नमाज़ पढ़ो। तो उन्होंने हमें अज़ान और इक़ामत कहने का हुक्म न दिया और हम उनके पीछे खड़े होने लगे तो उन्होंने हमारे हाथ पकड़कर एक को अपने दायें और दूसरे को अपने बायें कर दिया। जब उन्होंने रुकूअ किया तो हमने अपने हाथ अपने घुटनों पर रखे। उन्होंने हमारे हाथों पर मारा और अपनी हथेलियों को जोड़ा फिर उनको अपनी दोनों रानों के दरम्यान रख लिया। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो कहा, अन्क़रीब तुम्हारे अमीर ऐसे होंगे जो नमाज़ को इस वक़्त से मुअख़्ख़र करेंगे और उनके वक़्त को बहुत तंग कर देंगे। जब तुम उनको देखो कि उन्होंने ऐसा करना शुरू कर दिया है तो तुम नमाज़ उसके वक़्त पर पढ़ लेना और उनके साथ अपनी नमाज़ को नफ़ली बना लेना और जब तुम तीन

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ الْهَمْدَانِيُّ أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، وَعَلْقَمَةَ، قَالاَ أَتَيْنَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ مَسْعُودٍ فِي دَارِهِ فَقَالَ أَصَلَّى هَؤُلاَءِ خَلْفَكُمْ فَقُلْنَا لاَ . قَالَ فَقُومُوا فَصَلُّوا . فَلَمْ يَأْمُرْنَا بِأَذَانٍ وَلاَ إِقَامَةٍ - قَالَ - وَذَهَبْنَا لِنَقُومَ خَلْفَهُ فَأَخَذَ بِأَيْدِينَا فَجَعَلَ أَحَدَنَا عَنْ يَمِينِهِ وَالآخَرَ عَنْ شِمَالِهِ - قَالَ - فَلَمَّا رَكَعَ وَضَعْنَا أَيْدِيَنَا عَلَى رُكَبِنَا - قَالَ - فَضَرَبَ أَيْدِيَنَا وَطَبَّقَ بَيْنَ كَفَّيْهِ ثُمَّ أَدْخَلَهُمَا بَيْنَ فَخِذَيْهِ - قَالَ - فَلَمَّا صَلَّى قَالَ إِنَّهُ سَتَكُونُ عَلَيْكُمْ أُمَرَاءُ يُؤَخِّرُونَ الصَّلاَةَ عَنْ مِيقَاتِهَا وَيَخْنُقُونَهَا إِلَى شَرَقِ الْمَوْتَى فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُمْ قَدْ فَعَلُوا ذَلِكَ فَصَلُّوا الصَّلاَةَ لِمِيقَاتِهَا وَاجْعَلُوا صَلاَتَكُمْ مَعَهُمْ سُبْحَةً وَإِذَا كُنْتُمْ ثَلاَثَةً فَصَلُّوا جَمِيعًا وَإِذَا كُنْتُمْ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ فَلْيَؤُمَّكُمْ أَحَدُكُمْ

وَإِذَا رَكَعَ أَحَدُكُمْ فَلْيَفْرِشْ ذِرَاعَيْهِ عَلَى فَخِذَيْهِ وَلْيَجْنَأْ وَلْيُطَبِّقْ بَيْنَ كَفَّيْهِ فَلَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى اخْتِلاَفِ أَصَابِعِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَأَرَاهُمْ .

आदमी हो तो इकट्ठे खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और जब तुम तीन से ज़्यादा हो तो तुममें से एक इमाम बन जाये और जब तुममें से कोई रुकूअ करे तो अपने बाज़ूओं को अपनी रानों पर फैला दे और झुके और अपनी हथेलियाँ जोड़ ले गोया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की उंगलियों के इख़्तिलाफ़ को देख रहा हूँ और उनको दिखाया।

(नसाई : 2/49, 1028)

मुफ़रदातुल हदीस : (1) यख़्नुक़ूनहा : उसके वक़्त को तंग करेंगे, नमाज़ को ताख़ीर से अदा करेंगे। **(2) इला शरक़िल मौता :** अगर इसको शरक़िश्शम्स से लें तो मानी होगा, उस वक़्त नमाज़ पढ़ेंगे जब सूरज डूबने के क़रीब होगा और अगर उसको शरक़िल मय्यिति बिरीक़िही से लें तो मानी होगा मय्यित का थूक से गला घुट गया, इसलिये वो जल्द ही मर गई। मक़सद दोनों सूरतों में ये होगा कि उस वक़्त नमाज़ पढ़ेंगे जब सूरज के ग़ुरूब होने में थोड़ा सा वक़्त रहता होगा। **(3) सुब्हा :** नफ़ल, यानी जो नमाज़ तुमने अलग अपने वक़्त पर पढ़ी है वो फ़र्ज़ होगी और अमीरों और हाकिमों से बचने के लिये जो आख़िर वक़्त में उनके साथ नमाज़ पढ़ोगे वो नफ़ल होगी। **(4) वल्यज्ना :** झुक जाये, एक नुस्ख़े में लियुहनि है इसका मानी भी अन्हना और झुकना है। यहनु हो तो फिर भी यही मानी होगा। **(5) लियुब्बिक़ बैन कफ़्फ़ैहि :** दोनों हथेलियों को मिला ले और दोनों घुटनों के दरम्यान कर ले।

फ़वाइद : (1) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) एक जलीलुल क़द्र और आ़म औक़ात में बतौरे ख़िदमत गुज़ार आपके साथ रहने वाले सहाबी हैं। लेकिन उसके बावजूद रुकूअ़ के वक़्त तत्बीक़ के क़ाइल थे। हमेशा आपके साथ नमाज़ पढ़ते थे, लेकिन उसके बावजूद उन्हें ये पता न चल सका कि नबी (ﷺ) हाथ जोड़कर घुटनों के दरम्यान नहीं रखते बल्कि हाथों को घुटनों पर रखते हैं। इसलिये उम्मत में से किसी सहाबी, ताबेई या इमाम ने उनके मौक़िफ़ को इख़्तियार नहीं किया तो अगर उन्हें रुकूअ़ में जाते और रुकूअ़ से उठते वक़्त रफ़अ यदैन का पता न चल सका हो तो इसमें अचम्भे की बात क्या है। (2) अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) अगर इमाम के साथ दो आदमी हों तो एक को दायें तरफ़ और दूसरे को बायें तरफ़ खड़ा करने के क़ाइल हैं। इसको भी किसी इमाम ने इख़्तियार नहीं किया। क्योंकि नबी (ﷺ) दो आदमियों को पीछे खड़ा करते थे, बराबर नहीं। (3) अगर इमामे रातिब (नमाज़ों के लिये मुक़र्रर इमाम) ताख़ीर से जमाअ़त कराता हो तो घर में बाजमाअ़त नमाज़ पढ़ लेनी चाहिये और अज़ान कहने की सूरत में इन्तिशार व इफ़्तिराक़ का ख़तरा हो तो अज़ान नहीं कही जायेगी।

इक़ामत बहरहाल कहनी होगी लेकिन हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) अज़ान और इक़ामत किसी के भी क़ाइल नहीं है। अहनाफ़ ने उनके इस मौक़िफ़ को भी क़ुबूल नहीं किया। (4) अगर मस्जिद में नमाज़ बाजमाअत न पढ़ने से किसी क़िस्म का अन्देशा या ख़तरा लाहिक़ हो तो नमाज़ दोबारा बतौरे नफ़ल पढ़ ली जायेगी और हदीस का ज़ाहिरी मफ़्हूम यही है कि ये नमाज़ असर की थी। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ज़रूरत के तहत असर के बाद नफ़ल पढ़ने की इजाज़त दे रहे हैं। लेकिन जिन लोगों का ये दावा है कि हमारी फ़िक़्ह का मदार हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) के अक़्वाल पर है वो इसके भी क़ाइल नहीं हैं। अजीब बात है अगर किसी इमाम के क़ौल को छोड़ दिया जाये तो उसकी गुस्ताख़ी और तौहीन क़रार पाती है लेकिन एक जलीलुल क़द्र सहाबी के क़ौल को छोड़ दिया जाये तो ये तौहीन और गुस्ताख़ी नहीं है? अगर हदीस के ख़िलाफ़ जलीलुल क़द्र सहाबी का क़ौल व फ़ैअल तर्क करना रवा है तो अइम्मा के साथ ये रवैया इख़्तियार करना क्यों जाइज़ नहीं है? (5) अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के क़ौल से साबित हुआ नमाज़ अव्वल वक़्त में पढ़ना चाहिये। नीज़ जो नमाज़ दोबारा पढ़ी जायेगी तो पहली नमाज़ बतौरे फ़र्ज़ होगी और दूसरी बार नफ़ल। इसलिये हज़रत मुआज़ (रज़ि.) जो नमाज़ पहले रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ पढ़ते थे वो फ़र्ज़ होती थी और जो दोबारा पढ़ाते थे वो नफ़ल थी। इसलिये नफ़ल नमाज़ के पीछे फ़र्ज़ पढ़ना दुरुस्त है।

وَحَدَّثَنَا مِنْجَابُ بْنُ الْحَارِثِ التَّمِيمِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ مُسْهِرٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا مُفَضَّلٌ، كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، وَالأَسْوَدِ، أَنَّهُمَا دَخَلاَ عَلَى عَبْدِ اللَّهِ . بِمَعْنَى حَدِيثِ أَبِي مُعَاوِيَةَ . وَفِي حَدِيثِ ابْنِ مُسْهِرٍ وَجَرِيرٍ فَلَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى اخْتِلاَفِ أَصَابِعِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ رَاكِعٌ

(1192) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं हज़रत अल्क़मा और अस्वद से रिवायत है कि हम अब्दुल्लाह (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आगे मज़्कूरा बाला रिवायत है। इब्ने मुस्हिर और जरीर की रिवायत में है गोया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की उंगलियों के इख़्तिलाफ़ (उंगलियों को एक दूसरे में दाख़िल करना) को देख रहा हूँ और आप रुकूअ में हैं।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، وَالأَسْوَدِ، أَنَّهُمَا دَخَلاَ عَلَى عَبْدِ اللَّهِ فَقَالَ

(1193) हज़रत अल्क़मा और अस्वद से रिवायत है कि वो दोनों अब्दुल्लाह (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने पूछा, क्या तुम्हारे पीछे लोग नमाज़ पढ़ चुके हैं? दोनों ने कहा, हाँ। तो वो उनके दरम्यान खड़े हो गये।

एक को अपने दायें कर लिया और दूसरे को बायें। फिर हमने रुकूअ किया और अपने हाथ अपने घुटनों पर रखे तो उन्होंने हमारे हाथों पर मारा और फिर अपने हाथों को जोड़ लिया। फिर उनको अपनी रानों के दरम्यार कर लिया। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इसी तरह किया है।

أَصَلَّى مَنْ خَلْفَكُمْ قَالاَ نَعَمْ . فَقَامَ بَيْنَهُمَا وَجَعَلَ أَحَدَهُمَا عَنْ يَمِينِهِ وَالآخَرَ عَنْ شِمَالِهِ ثُمَّ رَكَعْنَا فَوَضَعْنَا أَيْدِيَنَا عَلَى رُكَبِنَا فَضَرَبَ أَيْدِيَنَا ثُمَّ طَبَّقَ بَيْنَ يَدَيْهِ ثُمَّ جَعَلَهُمَا بَيْنَ فَخِذَيْهِ فَلَمَّا صَلَّى قَالَ هَكَذَا فَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ .

(1194) हज़रत मुस्अब बिन सअद (रह.) से रिवायत है कि मैंने अपने बाप के पहलू में नमाज़ पढ़ी और अपने दोनों हाथ अपने घुटनों के दरम्यान रखे तो मुझे मेरे बाप ने कहा, अपनी हथेलियाँ अपने घुटनों पर रख। वो (मुस्अब) कहते हैं, मैंने दोबारा यही काम किया तो उन्होंने मेरे हाथों पर मारा और कहा, हमें इससे रोक दिया गया है और हमें हुक्म दिया गया है कि हम हथेलियाँ घुटनों पर रखें।

(सहीह बुख़ारी: 790, अबू दाऊद: 867, नसाई : 2/185, 2/85, तिर्मिज़ी: 259, इब्ने माजह: 783)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ - وَاللَّفْظُ لِقُتَيْبَةَ - قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ أَبِي يَعْفُورٍ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ صَلَّيْتُ إِلَى جَنْبِ أَبِي قَالَ وَجَعَلْتُ يَدَىَّ بَيْنَ رُكْبَتَىَّ فَقَالَ لِي أَبِي اضْرِبْ بِكَفَّيْكَ عَلَى رُكْبَتَيْكَ . قَالَ ثُمَّ فَعَلْتُ ذَلِكَ مَرَّةً أُخْرَى فَضَرَبَ يَدَىَّ وَقَالَ إِنَّا نُهِينَا عَنْ هَذَا وَأُمِرْنَا أَنْ نَضْرِبَ بِالأَكُفِّ عَلَى الرُّكَبِ .

(1195) इमाम साहब ने अपने दो उस्तादों से मज़्कूरा बाला सनद से हमें रोक दिया गया है तक रिवायत बयान की और दोनों ने बाद वाला जुम्ला बयान नहीं किया।

حَدَّثَنَا خَلَفُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، كِلاَهُمَا عَنْ أَبِي يَعْفُورٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ إِلَى قَوْلِهِ فَنُهِينَا عَنْهُ . وَلَمْ يَذْكُرَا مَا بَعْدَهُ .

(1196) हमें अबू बक्र बिन अबी शैबा ने वकीअ के वास्ते से इस्माईल बिन अबी ख़ालिद की ज़ुबैर बिन अदी से हज़रत मुस्अब बिन सअद (रह.) से रिवायत बयान की कि मैंने नमाज़ पढ़नी शुरू की और अपने हाथों को

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ عَدِيٍّ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ رَكَعْتُ فَقُلْتُ بِيَدَىَّ هَكَذَا - يَعْنِي طَبَّقَ بِهِمَا وَوَضَعَهُمَا بَيْنَ

فَخِذَيْهِ - فَقَالَ أَبِي قَدْ كُنَّا نَفْعَلُ هَذَا ثُمَّ أُمِرْنَا بِالرُّكَبِ .

इस तरह कर लिया (यानी उनको जोड़कर अपनी रानों के दरम्यान रख लिया) तो मुझे मेरे बाप ने बताया, हम भी ऐसे किया करते थे। फिर हमें घुटनों पर रखने का हुक्म दिया गया।

حَدَّثَنِي الْحَكَمُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ، عَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ عَدِيٍّ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، قَالَ صَلَّيْتُ إِلَى جَنْبِ أَبِي فَلَمَّا رَكَعْتُ شَبَّكْتُ أَصَابِعِي وَجَعَلْتُهُمَا بَيْنَ رُكْبَتَيَّ فَضَرَبَ يَدَىَّ فَلَمَّا صَلَّى قَالَ قَدْ كُنَّا نَفْعَلُ هَذَا ثُمَّ أُمِرْنَا أَنْ نَرْفَعَ إِلَى الرُّكَبِ .

(1197) हज़रत मुस्अब बिन सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने अपने बाप के पहलू में नमाज़ पढ़ी। जब मैंने रुकूअ किया तो अपनी उंगलियों को एक-दूसरे में डालकर अपने हाथों को अपने घुटनों के दरम्यान रख लिया तो उन्होंने मेरे हाथों पर मारा। जब वो नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो कहा, हम भी ऐसे ही किया करते थे, फिर हमें घुटनों की तरफ़ उठाने (यानी घुटनों पर रखने) का हुक्म दिया गया।

باب جَوَازِ الإِقْعَاءِ عَلَى الْعَقِبَيْنِ

बाब 7 : ऐड़ियों पर सुरीन रखकर बैठना जाइज़ है

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا حَسَنٌ الْحُلْوَانِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، - وَتَقَارَبَا فِي اللَّفْظِ - قَالاَ جَمِيعًا أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ أَنَّهُ سَمِعَ طَاوُسًا يَقُولُ قُلْنَا لاِبْنِ عَبَّاسٍ فِي الإِقْعَاءِ عَلَى الْقَدَمَيْنِ فَقَالَ هِيَ السُّنَّةُ . فَقُلْنَا لَهُ إِنَّا لَنَرَاهُ جَفَاءً بِالرَّجُلِ . فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ بَلْ هِيَ سُنَّةُ نَبِيِّكَ صلى الله عليه وسلم .

(1198) हज़रत ताऊस (रह.) बयान करते हैं, हमने इब्ने अब्बास से क़दमों पर बैठने के बारे में पूछा, उन्होंने जवाब दिया, ये सुन्नत है। तो हमने उनसे अर्ज़ किया, हमारा ख़याल है कि ये पाँव पर ज़्यादती है। तो इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा, बल्कि ये तो तेरे नबी (ﷺ) की सुन्नत है।

(अबू दाऊद : 845, तिर्मिज़ी : 283)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अल्इक़आअ : इक़आ की दो सूरतें हैं (1) अपनी सुरीन को ज़मीन पर रखकर पिण्डलियों को खड़ा करके हाथों को कुत्ते की तरह ज़मीन पर बिछा देना, ये बिल्इत्तिफ़ाक़ मम्नूअ है और दूसरी हदीस़ में इससे रोका गया है। (2) दोनों सज्दों के दरम्यान अपनी सुरीन क़दमों (ऐड़ियों) पर रखकर बैठना इसको इब्ने अब्बास (रज़ि.) सुन्नत क़रार दे रहे हैं। सहाबा, मुहद्दिसीन और इमाम शाफ़ेई इसको जाइज़ क़रार देते हैं। **(2) जफ़ाअ :** गिरानी और मशक़्क़त, बदसुलूकी। **अर्रजुल** : अगर इसको रिज्ल पढ़ें तो पाँव मुराद होगा और रजुल क़रार दें तो इंसान मुराद होगा कि इस तरह बैठना इंसान के लिये गिरानी और मशक़्क़त का बाइस़ है।

फ़ायदा : मर्द और औरत की नमाज़ में किसी हैयत और कैफ़ियत में इख़्तिलाफ़ किसी सहीह हदीस़ से साबित नहीं है और इक़आ की सूरत उस इंसान के लिये है जिसके लिये इस अन्दाज़ में बैठने में सहूलत और आसानी हो।

बाब 8 : नमाज़ में बातचीत करना हराम है और इसकी एबाहत व जवाज़ मन्सूख़ है

باب تَحْرِيمِ الْكَلاَمِ فِي الصَّلاَةِ وَنَسْخِ مَا كَانَ مِنْ إِبَاحَتِهِ

(1199) हज़रत मुआविया बिन हकम सुलमी (रज़ि.) से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ रहा था। इसी दौरान में लोगों में से एक आदमी को छींक आई तो मैंने कहा, यरहमुकल्लाह 'अल्लाह तुझे रहमत से नवाज़े।' तो लोगों ने मुझे घूरना शुरू कर दिया तो मैंने कहा, काश! मेरी माँ मुझे गुम पाती (मैं मर चुका होता) तुम्हें क्या हो गया है? तुम मुझे गहरी नज़रों से देख रहे हो। तो वो अपने हाथ अपनी रानों पर मारने लगे। जब मैंने उनको जाना कि वो मुझे चुप करा रहे हैं तो मुझे गुस्सा आया लेकिन मैं ख़ामोश हो गया। जब रसूलुल्लाह (ﷺ)

حَدَّثَنَا أَبُو جَعْفَرٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ - وَتَقَارَبَا فِي لَفْظِ الْحَدِيثِ - قَالاَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ حَجَّاجٍ الصَّوَّافِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ أَبِي مَيْمُونَةَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ الْحَكَمِ السُّلَمِيِّ، قَالَ بَيْنَا أَنَا أُصَلِّي، مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذْ عَطَسَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ فَقُلْتُ يَرْحَمُكَ اللَّهُ

नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो मेरे माँ-बाप आप पर कुर्बान! मैंने आपसे पहले और आपके बाद आपसे बेहतर तालीम वाला नहीं देखा, अल्लाह की क़सम! न तो आपने मुझे डांटा, न मुझे मारा और न मुझे बुरा-भला कहा। बल्कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये नमाज़ है, इसमें किसी क़िस्म की इंसानी बातचीत रवा नहीं है। ये तो बस तस्बीह व तकबीर और कुरआन की तिलावत है।' या जैसा रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं जाहिलिय्यत से नया-नया निकला हूँ और अब अल्लाह ने इस्लाम भेज दिया है (मुझे इस्लाम लाने की तौफ़ीक़ दी है) हममें से कुछ लोग काहिनों (पेशीनगोई करने वाले पण्डित व नुजूमी) के पास जाते हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तू उनके पास न जा।' मैंने अ़र्ज़ किया, हममें से कुछ लोग बदशगूनी लेते हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये एक चीज़ है जिसे वो अपने दिलों में पाते हैं, ये उनको किसी काम से न रोके।' इब्ने सब्बाह ने कहा, तुम्हें बिल्कुल न रोके। मैंने अ़र्ज़ किया, हममें से कुछ लोग लकीर खींचते हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अम्बिया में से एक नबी लकीरें खींचा करते थे तो जिसकी लकीरें उसके मुवाफ़िक़ होंगी तो ठीक है।' उस (मुआविया रज़ि.) ने बताया, मेरी एक लौण्डी थी जो उहुद और जवानिय्यह के पास मेरी बकरियाँ चराती थी एक दिन मैं उस तरफ़ आ निकला तो भेड़िया उसकी बकरियों से एक बकरी ले

. فَرَمَانِي الْقَوْمُ بِأَبْصَارِهِمْ فَقُلْتُ وَاثُكْلَ أُمِّيَاهْ مَا شَأْنُكُمْ تَنْظُرُونَ إِلَىَّ . فَجَعَلُوا يَضْرِبُونَ بِأَيْدِيهِمْ عَلَى أَفْخَاذِهِمْ فَلَمَّا رَأَيْتُهُمْ يُصَمِّتُونَنِي لَكِنِّي سَكَتُّ فَلَمَّا صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَبِأَبِي هُوَ وَأُمِّي مَا رَأَيْتُ مُعَلِّمًا قَبْلَهُ وَلاَ بَعْدَهُ أَحْسَنَ تَعْلِيمًا مِنْهُ فَوَاللَّهِ مَا كَهَرَنِي وَلاَ ضَرَبَنِي وَلاَ شَتَمَنِي قَالَ " إِنَّ هَذِهِ الصَّلاَةَ لاَ يَصْلُحُ فِيهَا شَىْءٌ مِنْ كَلاَمِ النَّاسِ إِنَّمَا هُوَ التَّسْبِيحُ وَالتَّكْبِيرُ وَقِرَاءَةُ الْقُرْآنِ " . أَوْ كَمَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي حَدِيثُ عَهْدٍ بِجَاهِلِيَّةٍ وَقَدْ جَاءَ اللَّهُ بِالإِسْلاَمِ وَإِنَّ مِنَّا رِجَالاً يَأْتُونَ الْكُهَّانَ . قَالَ " فَلاَ تَأْتِهِمْ " . قَالَ وَمِنَّا رِجَالٌ يَتَطَيَّرُونَ . قَالَ " ذَاكَ شَىْءٌ يَجِدُونَهُ فِي صُدُورِهِمْ فَلاَ يَصُدَّنَّهُمْ " . قَالَ ابْنُ الصَّبَّاحِ " فَلاَ يَصُدَّنَّكُمْ " . قَالَ قُلْتُ وَمِنَّا رِجَالٌ يَخُطُّونَ . قَالَ " كَانَ نَبِيٌّ مِنَ الأَنْبِيَاءِ يَخُطُّ فَمَنْ وَافَقَ خَطَّهُ فَذَاكَ " . قَالَ وَكَانَتْ لِي جَارِيَةٌ تَرْعَى غَنَمًا لِي قِبَلَ أُحُدٍ وَالْجَوَّانِيَّةِ فَاطَّلَعْتُ

ذَاتَ يَوْمٍ فَإِذَا الذِّيبُ قَدْ ذَهَبَ بِشَاةٍ مِنْ غَنَمِهَا وَأَنَا رَجُلٌ مِنْ بَنِي آدَمَ آسَفُ كَمَا يَأْسَفُونَ لَكِنِّي صَكَكْتُهَا صَكَّةً فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَعَظَّمَ ذَلِكَ عَلَىَّ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَفَلاَ أُعْتِقُهَا قَالَ " ائْتِنِي بِهَا " . فَأَتَيْتُهُ بِهَا فَقَالَ لَهَا " أَيْنَ اللَّهُ " . قَالَتْ فِي السَّمَاءِ . قَالَ " مَنْ أَنَا " . قَالَتْ أَنْتَ رَسُولُ اللَّهِ . قَالَ " أَعْتِقْهَا فَإِنَّهَا مُؤْمِنَةٌ " .

जा चुका था। तो मैं भी औलादे आदम से एक आदमी हूँ, मुझे भी इस तरह ग़ुस्सा आता है जिस तरह उनको ग़ुस्सा आता है (मुझे सब्र करना चाहिये था) लेकिन मैंने उसको ज़ोर से थप्पड़ रसीद कर दिया। इस पर मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप (ﷺ) ने मेरी इस हरकत को बहुत नागवार क़रार दिया। मैंने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मैं उसको आज़ाद न कर दूँ? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उसे मेरे पास लाओ।' मैं उसे लेकर आपके पास हाज़िर हुआ। आप (ﷺ) ने उससे पूछा, 'अल्लाह कहाँ है?' उसने कहा, आसमान पर। आप (ﷺ) ने पूछा, 'मैं कौन हूँ?' उसने कहा, अल्लाह के रसूल हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इसे आज़ाद कर दो ये मोमिना है।'

(अबू दाऊद : 930, 3282, 3909)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) **अ़तस :** उसने छींक मारी। (2) **रमानिल क़ौमु बिअबसारिहिम :** तो लोगों ने मुझ पर आँख के तीर बरसाये। यानी ग़ज़बनाक निगाहों से देखा। (3) **सुक्ल :** गुम पाना। वस्कुल उम्मियाह हाय मेरी माँ मुझे गुम पाती, मैं मर चुका होता। अस्कल उम्मी था। मन्दूब होने की वजह से आवाज़ को खींचने (लम्बा करना) के लिये आख़िर में अलिफ़ और हा का इज़ाफ़ा कर दिया। (4) **युसम्मितूननी :** मुझे चुप करा रहे थे। खर, क़हर नहर, तीनों क़रीबुल मानी लफ़्ज़ हैं। सरज़निश व तौबीख़ करना, डांट-डपट करना, जाहिलिय्यत इस्लाम की आमद से पहले का दौर। हदीसे अ़हद किसी दौर से नया-नया निकलना। (5) **ला यसुद्दन्नहुम :** उनको न रोके। वो अपने काम और इरादे से बाज़ न आयें। (6) **यख़ुत्तु :** वो ज़ायचा तैयार करते थे। (7) **जवानिय्यह :** उहुद पहाड़ के क़रीब एक जगह का नाम है। (8) **आसफ़ु :** मैं ग़म व हुज़्न और ग़ज़ब व ग़ुस्से में मुब्तला होता हूँ। (9) **सकक्तुहा सक्कह :** मैंने उसे ज़ोर से थप्पड़ रसीद किया। (10) **अ़ज़्ज़म ज़ालिक अ़लय्य :** आपने उसे मेरे लिये बहुत बुरा क़रार दिया।

फ़वाइद : (1) नमाज़ के अंदर अगर किसी को छींक आ जाये तो उसको दुआ देना जाइज़ नहीं है, लेकिन जिसको छींक आये वो अल्हम्दुलिल्लाह कह सकता है। हज़रत मुआविया बिन हकम (रज़ि.) ने छींकने वाले को दुआ नावाक़िफ़ियत और जहालत की बिना पर दी थी। इसलिये आपने उसको नमाज़ लौटाने का हुक्म नहीं दिया। इस बिना पर इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई, इमाम अहमद (रह.) और जुम्हूर उलमा का नज़रिया है कि एक नमाज़ी भूलकर या जहालत की बिना पर एक आधा कलिमा कह बैठे तो उसकी नमाज़ हो जायेगी लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के नज़दीक उसकी नमाज़ बातिल हो जायेगी, लेकिन ये बात बेदलील है। **(2)** नमाज़ में ज़रूरत की सूरत में मामूली इशारे से काम लेना जाइज़ है। सहाबा किराम (रज़ि.) ने साथी को चुप कराने के लिये अपनी रानों पर हाथ मारे तो आपने उनको मना नहीं फ़रमाया। **(3) काहिन :** उन लोगों को कहते हैं जो मुस्तक़बिल के बारे में पेशीनगोई (भविष्यवाणी) करते हैं, उनके पास जाना जाइज़ नहीं बल्कि हराम है। **(4)** बदशगूनी और नहूसत पकड़ना भी जाइज़ नहीं है। अगर किसी के दिल में बदशगूनी का ख़्याल पैदा हो जाये तो उसे उस पर अमल नहीं करना चाहिये और उसकी बिना पर अपने इरादे और काम से रुकना नहीं चाहिये। **(5)** लकीरें खींचना। जिसको इल्मे रमल का नाम दिया जाता है और उसके ज़रिये ज़ायचा तैयार किया जाता है ये दुरुस्त नहीं है क्योंकि पैग़म्बर को इसका जो इल्म हासिल था उस इल्म को हम नहीं जानते। इसलिये उसकी मुवाफ़िक़त हमारे लिये मुम्किन नहीं है। **(6)** इंसान को अपने मातहतों से नर्म रवैया रखना चाहिये। उन पर ज़ुल्म व ज़्यादती रवा रखना जाइज़ नहीं है। अगर किसी के साथ ज़्यादती हो जाये तो उसकी तलाफ़ी करनी चाहिये। **(7)** फ़िस्समाअ का मानी अलस्समाअ है। फ़ी अला के मानी में है जैसाकि सीरू फ़िल्अरज़ि और लउसल्लिबन्नकुम फ़ी जुज़ूइन्नख़्ल में है और इससे साबित हुआ अल्लाह तआला ऊपर है। **(8)** इंसान के हुस्ने सुलूक का ज़्यादा हक़दार मुसलमान मर्द और औरत है।

(1200) हमें इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने ईसा बिन यूनुस के वास्ते से औज़ाई की यहया बिन अबी कसीर की सनद से इस क़िस्म की रिवायत सुनाई।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(1201) हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) को सलाम कहा करते थे जबकि आप (ﷺ) नमाज़ पढ़ रहे होते थे और आप (ﷺ) हमारे सलाम का जवाब दे देते थे। जब हम नजाशी

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ - وَأَلْفَاظُهُمْ مُتَقَارِبَةٌ - قَالُوا حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ

اللهِ، قَالَ كُنَّا نُسَلِّمُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ فِي الصَّلاَةِ فَيَرُدُّ عَلَيْنَا فَلَمَّا رَجَعْنَا مِنْ عِنْدِ النَّجَاشِي سَلَّمْنَا عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْنَا فَقُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ كُنَّا نُسَلِّمُ عَلَيْكَ فِي الصَّلاَةِ فَتَرُدُّ عَلَيْنَا . فَقَالَ " إِنَّ فِي الصَّلاَةِ شُغْلاً " .

के यहाँ से वापस आये, हमने आप (ﷺ) को (नमाज़ में) सलाम कहा तो आप (ﷺ) ने हमें जवाब न दिया। तो हमने आप (ﷺ) से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! हम नमाज़ में आपको सलाम कहा करते थे और आप हमें जवाब दिया करते थे तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नमाज़ ख़ुद एक मशग़ूलियत रखती है।'
(तिर्मिज़ी : 1199, 3875, अबू दाऊद : 923)

फ़वाइद : (1) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) हब्शा से मक्का वापस आ गये थे और फिर दोबारा हब्शा चले गये थे। फिर हिज्रते नबवी के बाद मुस्तक़िल तौर पर मदीना वापस आ गये थे और यहाँ ये मदीना वाली वापसी मुराद है। क्योंकि नमाज़ में कलाम की हुरमत मदीना में नाज़िल हुई है। **(2)** इन्-न फ़िस्सलाति शुग़ुलन : अगर शुग़ुलन की तन्वीन को तन्कीर के लिये बनायें तो मानी होगा कि एक क़िस्म की मसरूफ़ियत है। यानी तिलावते क़ुरआन, तस्बीह व तहमीद और तकबीर के सिवा इंसानी कलाम दुरुस्त नहीं है और अगर तन्वीन को तअ़ज़ीम के लिये मानें तो मानी होगा कि नमाज़ में एक बहुत बड़ी मसरूफ़ियत है कि इंसान अल्लाह तआ़ला के साथ मुनाजात (सरगोशी) कर रहा होता है इसलिये किसी और तरफ़ तवज्जह या ध्यान करना मुम्किन नहीं है या इंसान जो कुछ कह रहा होता है उसमें ग़ौर व तदब्बुर में मुब्तला होता है, इसलिये कोई और काम नहीं कर सकता। **(3)** इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई, इमाम अहमद और मुहद्दिसीन (रह.) के नज़दीक सलाम का जवाब इशारे से देना चाहिये और अहनाफ़ के नज़दीक इशारे से जवाब देना भी जाइज़ नहीं है। सलाम फेरने के बाद जवाब देगा और उ़ज़्र भी बयान कर देगा कि मैं नमाज़ की बिना पर जवाब नहीं दे सकता था। हालांकि आप को उ़ज़्र का बयान करने की ज़रूरत इसलिये पेश आई थी कि वो ज़बान से सलाम का जवाब लेने के आदी थे इशारे को समझ न सके थे।

حَدَّثَنِي ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ السَّلُولِيُّ، حَدَّثَنَا هُرَيْمُ بْنُ سُفْيَانَ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . نَحْوَهُ .

(1202) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ

(1203) हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) से रिवायत है कि हम नमाज़ में बातचीत कर

إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنِ الْحَارِثِ بْنِ شُبَيْلٍ، عَنْ أَبِي عَمْرٍو الشَّيْبَانِيِّ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، قَالَ كُنَّا نَتَكَلَّمُ فِي الصَّلاَةِ يُكَلِّمُ الرَّجُلُ صَاحِبَهُ وَهُوَ إِلَى جَنْبِهِ فِي الصَّلاَةِ حَتَّى نَزَلَتْ { وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ} فَأُمِرْنَا بِالسُّكُوتِ وَنُهِينَا عَنِ الْكَلاَمِ .

लिया करते थे। इंसान नमाज़ में अपने साथ खड़े होने वाले साथी से बातचीत कर लेता था यहाँ तक कि ये आयत उतरी, क़ूमू लिल्लाहि क़ानितीन 'अल्लाह के हुज़ूर इज्ज़ो नियाज़ (मुकम्मल दिल लगाकर) से खड़े हो।' (सूरह बक़रह : 238) तो हमें ख़ामोश रहने का हुक्म दिया गया और बातचीत करने से रोक दिया गया।

(सहीह बुख़ारी : 1200, 4534, अबू दाऊद : 949, तिर्मिज़ी : 405, 2986, नसाई : 3/18)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، وَوَكِيعٌ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، كُلُّهُمْ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(1204) इमाम साहब तीन और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّهُ قَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَعَثَنِي لِحَاجَةٍ ثُمَّ أَدْرَكْتُهُ وَهُوَ يَسِيرُ - قَالَ قُتَيْبَةُ يُصَلِّي - فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَأَشَارَ إِلَىَّ فَلَمَّا فَرَغَ دَعَانِي فَقَالَ " إِنَّكَ سَلَّمْتَ آنِفًا وَأَنَا أُصَلِّي " . وَهُوَ مُوَجِّهٌ حِينَئِذٍ قِبَلَ الْمَشْرِقِ .

(1205) हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे किसी ज़रूरत के लिये भेजा, फिर मैं आप (ﷺ) को चलते हुए आकर मिला। क़ुतैबा ने कहा, आप (ﷺ) नमाज़ पढ़ रहे थे और मैंने आप (ﷺ) को सलाम किया। आप (ﷺ) ने मुझे इशारा फ़रमाया (इशारे से जवाब दिया)। जब आप (ﷺ) नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो मुझे बुलवाया और फ़रमाया, 'अभी तुमने सलाम कहा जब मैं नमाज़ पढ़ रहा था।' और उस वक़्त (नमाज़ में) आप (ﷺ) का रुख़ मश्रिक़ की तरफ़ था (नफ़्ली नमाज़ सवारी पर ग़ैर क़िब्ले की तरफ़ रुख़ करके पढ़ी जा सकती है)।

(नसाई : 3/6, इब्ने माजह : 1018)

(1206) हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि मुझे आपने जबकि आप (ﷺ) बनू मुस्तलिक़ की तरफ़ जा रहे थे (काम के लिये) भेजा। मैं वापस आपके पास आया तो आप (ﷺ) अपने ऊँट पर नमाज़ पढ़ रहे थे। मैंने आप (ﷺ) से बातचीत करना चाही तो आप (ﷺ) ने मुझे हाथ से इस तरह इशारा किया (ज़ुहैर ने अपने हाथ से ज़मीन की तरफ़ इशारा किया) और मैं आप (ﷺ) की क़िरअत सुन रहा था। (रुकूअ व सुजूद के लिये) सर से इशारा फ़रमाते थे। आप (ﷺ) ने फ़ारिग़ होकर पूछा, 'जिस काम के लिये मैंने भेजा था उसके बारे में क्या किया? मुझे तेरे साथ बातचीत करने से सिर्फ़ इस चीज़ ने रोका कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था।' ज़ुहैर ने कहा, अबू ज़ुबैर (रज़ि.) कअ़बा की तरफ़ रुख़ करके बैठे हुए थे तो अबू ज़ुबैर (रज़ि.) ने बनू मुस्तलिक़ की तरफ़ इशारा किया और उन्होंने हाथ से ग़ैर क़िब्ले की तरफ़ इशारा किया (यानी नमाज़ में आप (ﷺ) का रुख़ कअ़बा की तरफ़ नहीं था)।

(अबू दाऊद : 926)

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ أَرْسَلَنِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ مُنْطَلِقٌ إِلَى بَنِي الْمُصْطَلِقِ فَأَتَيْتُهُ وَهُوَ يُصَلِّي عَلَى بَعِيرِهِ فَكَلَّمْتُهُ فَقَالَ لِي بِيَدِهِ هَكَذَا - وَأَوْمَأَ زُهَيْرٌ بِيَدِهِ - ثُمَّ كَلَّمْتُهُ فَقَالَ لِي هَكَذَا - فَأَوْمَأَ زُهَيْرٌ أَيْضًا بِيَدِهِ نَحْوَ الأَرْضِ - وَأَنَا أَسْمَعُهُ يَقْرَأُ يُومِئُ بِرَأْسِهِ فَلَمَّا فَرَغَ قَالَ " مَا فَعَلْتَ فِي الَّذِي أَرْسَلْتُكَ لَهُ فَإِنَّهُ لَمْ يَمْنَعْنِي أَنْ أُكَلِّمَكَ إِلاَّ أَنِّي كُنْتُ أُصَلِّي " . قَالَ زُهَيْرٌ وَأَبُو الزُّبَيْرِ جَالِسٌ مُسْتَقْبِلَ الْكَعْبَةِ فَقَالَ بِيَدِهِ أَبُو الزُّبَيْرِ إِلَى بَنِي الْمُصْطَلِقِ فَقَالَ بِيَدِهِ إِلَى غَيْرِ الْكَعْبَةِ .

फ़ायदा : बनू मुस्तलिक़ के साथ जंग 5 या 6 हिजरी में हुई।

(1207) हज़रत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं कि हम नबी (ﷺ) के साथ थे। आप (ﷺ) ने मुझे किसी काम के लिये भेजा, मैं वापस आया तो आप (ﷺ) सवारी पर नमाज़ पढ़ रहे थे और आप (ﷺ) का रुख़ ग़ैर क़िब्ले की तरफ़ था। मैंने आप (ﷺ) को सलाम कहा। तो

حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ كَثِيرٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَبَعَثَنِي فِي حَاجَةٍ فَرَجَعْتُ وَهُوَ يُصَلِّي عَلَى رَاحِلَتِهِ وَوَجْهُهُ

عَلَى غَيْرِ الْقِبْلَةِ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَىَّ فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ " إِنَّهُ لَمْ يَمْنَعْنِي أَنْ أَرُدَّ عَلَيْكَ إِلاَّ أَنِّي كُنْتُ أُصَلِّي " .

आप (ﷺ) ने मुझे सलाम का जवाब न दिया। जब आप (ﷺ) ने सलाम फेरा तो फ़रमाया, 'मुझे तुझे सलाम का जवाब देने से सिर्फ़ इस चीज़ ने रोका कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था।'

(सहीह बुख़ारी : 1217)

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا كَثِيرُ بْنُ شِنْظِيرٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ بَعَثَنِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي حَاجَةٍ . بِمَعْنَى حَدِيثِ حَمَّادٍ .

(1208) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

फ़वाइद : (1) इन अहादीस़ से स़ाबित हुआ कि इज़ा क़ुरिअल् क़ुरआन फ़स्तमिऊ लहू व अन्सितू का तअ़ल्लुक़ नमाज़ से नहीं है। क्योंकि अगर इस आयत का तअ़ल्लुक़ नमाज़ से होता तो जो आयत इमाम के पीछे क़िरअत से रोकती है उसने बातचीत से क्यों न रोका? और इस आयत के नुज़ूल के बावजूद सहाबा किराम (रज़ि.) नमाज़ में बातचीत करते रहे? **(2)** इज़ा क़ुरिअल क़ुरआन सूरह आराफ़ की आयत है और बिल्इत्तिफ़ाक़ मक्की आयत है और सहाबा किराम (रज़ि.) मदीना में मस्जिदे नबवी में आपके पीछे बातचीत कर लेते थे, आप (ﷺ) नमाज़ में सलाम का जवाब भी दे देते थे। जंगे बनू मुस्तलिक़ जो 5 या 6 हिजरी में हुई है, उससे कुछ पहले कलाम मन्सूख़ हुआ और आप (ﷺ) ने सलाम का जवाब भी ज़बान से देना बंद कर दिया। इससे स़ाबित हुआ इस आयत का तअ़ल्लुक़ नमाज़ की क़िरअत से नहीं। वरना सहाबा किराम (रज़ि.) मदीना मुनव्वरा में नमाज़ में आपस में बातचीत न करते और न ही आप (ﷺ) से सलाम का जवाब बोल कर देते।

बाब 9 : नमाज़ में शैतान पर लानत भेजना और उससे पनाह जाइज़ है और नमाज़ में अमले क़लील (छोटा मोटा काम) भी जाइज़ है

باب جَوَازِ لَعْنِ الشَّيْطَانِ فِي أَثْنَاءِ الصَّلاَةِ وَالتَّعَوُّذِ مِنْهُ وَجَوَازِ الْعَمَلِ الْقَلِيلِ فِي الصَّلاَةِ

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، - وَهُوَ ابْنُ زِيَادٍ - قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ عِفْرِيتًا مِنَ الْجِنِّ جَعَلَ يَفْتِكُ عَلَىَّ الْبَارِحَةَ لِيَقْطَعَ عَلَىَّ الصَّلاَةَ وَإِنَّ اللَّهَ أَمْكَنَنِي مِنْهُ فَذَعَتُّهُ فَلَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ أَرْبِطَهُ إِلَى جَنْبِ سَارِيَةٍ مِنْ سَوَارِي الْمَسْجِدِ حَتَّى تُصْبِحُوا تَنْظُرُونَ إِلَيْهِ أَجْمَعُونَ - أَوْ كُلُّكُمْ - ثُمَّ ذَكَرْتُ قَوْلَ أَخِي سُلَيْمَانَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لاَ يَنْبَغِي لأَحَدٍ مِنْ بَعْدِي . فَرَدَّهُ اللَّهُ خَاسِئًا " . وَقَالَ ابْنُ مَنْصُورٍ شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ .

(1209) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'गुज़िश्ता रात एक सरकश जिन्न मेरी तरफ़ बढ़ा ताकि मेरी नमाज़ तोड़ दे और अल्लाह तआला ने उसे मेरे क़ाबू में दे दिया तो मैंने उसका गला घोंट दिया और मैंने ये इरादा भी कर लिया था कि उसे मस्जिद के सुतूनों में से किसी सुतून के साथ बांध दूँ ताकि तुम सब सुबह उसको देख सको। फिर मुझे अपने भाई सुलैमान (अलै) का ये क़ौल याद आ गया, 'और ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी हुकूमत दे जो मेरे सिवा किसी के लिये मुम्किन न हो।' इस तरह अल्लाह ने उस जिन्न को नाकाम व नामुराद लौटा दिया।' इब्ने मन्सूर ने शोबा से हद्दसना मुहम्मद की बजाय शोबा अन मुहम्मद बिन ज़ियाद कहा है।

(सहीह बुख़ारी : 461, 1210, 3284, 3423, 4808)

फ़ायदा : नबी (ﷺ) ने नमाज़ के दौरान सरकश जिन्न का गला घोंट दिया और उसको मस्जिद के सुतून के साथ बांधने का इरादा फ़रमाया। इससे साबित हुआ कि नमाज़ के अंदर ज़रूरत के तहत कुछ अमल व हरकत जाइज़ है। नीज़ नमाज़ के दौरान ही आपका ध्यान हज़रत सुलैमान (अलै.) की दुआ की तरफ़ चला गया, इससे मालूम हुआ अगर नमाज़ में ध्यान किसी चीज़ की तरफ़ अचानक चला जाये तो नमाज़ नहीं टूटती।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، هُوَ ابْنُ جَعْفَرٍ ح قَالَ وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، كِلاَهُمَا عَنْ شُعْبَةَ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ وَلَيْسَ فِي حَدِيثِ ابْنِ جَعْفَرٍ قَوْلُهُ فَذَعَتُّهُ . وَأَمَّا ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ فَقَالَ فِي رِوَايَتِهِ فَدَعَتُّهُ .

(1210) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं। इब्ने जअफ़र की रिवायत में गला घोंटने का ज़िक्र नहीं है और इब्ने अबी शैबा की रिवायत में है कि 'मैंने उसको ज़ोर से धक्का दिया।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) इफ़रीत : सरकश, मुतमर्रिद। **(2) यफ़्तिक :** उसने अचानक हमला करना चाहा। **(3) ज़अ़तुहू :** मैंने उसका गला घोंट दिया। **(4) दअ़त्तुहू :** मैंने उसको ज़ोर से धक्का दिया।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ الْمُرَادِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ صَالِحٍ، يَقُولُ حَدَّثَنِي رَبِيعَةُ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ الْخَوْلاَنِيِّ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ، قَالَ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَسَمِعْنَاهُ يَقُولُ " أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْكَ " . ثُمَّ قَالَ " أَلْعَنُكَ بِلَعْنَةِ اللَّهِ " . ثَلاَثًا . وَبَسَطَ يَدَهُ كَأَنَّهُ يَتَنَاوَلُ شَيْئًا فَلَمَّا فَرَغَ مِنَ الصَّلاَةِ قُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ سَمِعْنَاكَ تَقُولُ فِي الصَّلاَةِ شَيْئًا لَمْ نَسْمَعْكَ تَقُولُهُ قَبْلَ ذَلِكَ وَرَأَيْنَاكَ بَسَطْتَ يَدَكَ . قَالَ " إِنَّ عَدُوَّ اللَّهِ إِبْلِيسَ جَاءَ بِشِهَابٍ مِنْ نَارٍ لِيَجْعَلَهُ فِي وَجْهِي فَقُلْتُ أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْكَ . ثَلاَثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ قُلْتُ أَلْعَنُكَ بِلَعْنَةِ اللَّهِ التَّامَّةِ

(1211) हज़रत अबू दरदा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ के लिये खड़े हुए तो हमने आप को ये कहते हुए सुना, 'मैं तुझसे अल्लाह की पनाह में आता हूँ।' फिर आपने फ़रमाया, 'मैं तुझ पर अल्लाह की लानत भेजता हूँ।' तीन बार और आपने अपना हाथ बढ़ाया गोया आप किसी चीज़ को पकड़ रहे हैं। तो जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, हमने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! हमने आपको नमाज़ में कुछ कहते सुना है। हमने इससे पहले आपको ये कलिमात कहते नहीं सुना और हमने आपको अपना हाथ बढ़ाते देखा। आपने फ़रमाया, 'अल्लाह का दुश्मन इब्लीस आग का एक अंगारा लेकर आया ताकि मेरे चेहरे पर डाल दे। तो मैंने तीन बार अऊज़ुबिल्लाह मिन्क कहा। फिर मैंने तीन बार कहा, मैं तुझ पर अल्लाह की कामिल लानत भेजता हूँ।' वो पीछे न हटा,

फिर मैंने उसको पकड़ने का इरादा कर लिया। अल्लाह की क़सम! अगर हमारे भाई सुलैमान (अलै.) की दुआ न होती तो वो सुबह तक बांध दिया जाता और अहले मदीना के बच्चे उसके साथ खेलते।'

(नसाई : 3/13)

فَلَمْ يَسْتَأْخِرْ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ أَرَدْتُ أَخْذَهُ وَاللَّهِ لَوْلاَ دَعْوَةُ أَخِينَا سُلَيْمَانَ لأَصْبَحَ مُوثَقًا يَلْعَبُ بِهِ وِلْدَانُ أَهْلِ الْمَدِينَةِ " .

फ़वाइद : (1) इन दोनों हदीसों से साबित होता है कि जिन्न एक मुस्तक़िल और इंसानों से अलग मख़्लूक़ है। जैसाकि जिन्नों का वजूद क़ुरआन मजीद से भी साबित है। चूंकि जिन्न आम लोगों की निगाहों से मस्तूर और मख़्फ़ी (छिपे) रहते हैं इसलिये उनको ये नाम मिला। **(2)** जिन्नों को आम लोग नहीं देख सकते और न आम तौर पर देखा जा सकता है। लेकिन कभी-कभार उनको देखना मुम्किन है जैसाकि आपने जिन्न को देखा, उसका गला घोंटा, धक्का दिया और उसको बांधने का इरादा फ़रमाया। **(3)** जिन्नात हज़रत सुलैमान (अलै.) की फ़ौज में दाख़िल थे और उनके बड़े-बड़े मुश्किल और ज़ोर तलब (भारी) काम अल्लाह के हुक्म से करते थे। अगर आप जिन्न को पकड़कर सुतून के साथ बांध देते तो ये इश्तिबाह पैदा हो सकता था कि जिन्नों पर आपको भी क़ुदरत व इक़्तिदार हासिल है। इसलिये आपने इरादे को अमली जामा नहीं पहनाया। **(4)** किसी को जिन्न अगर तंग करें तो वो उन पर लानत भेज सकता है और नमाज़ में भी तअव्वुज़ (अल्लाह की पनाह) लेना जाइज़ है। जिन्नों के हमले से महफ़ूज़ रहने का बेहतरीन तरीक़ा अल्लाह तआला से पनाह चाहना है।

बाब 10 : नमाज़ में बच्चों को उठाना जाइज़ है

باب جَوَازِ حَمْلِ الصِّبْيَانِ فِي الصَّلاَةِ

हिन्दो-पाक का नुस्ख़ा, नमाज़ में बच्चों का उठा लेना जाइज़ है और उनके कपड़े जब तक नजासत साबित न हो, पाक समझे जायेंगे और अमले क़लील (मामूली काम) से नमाज़ बातिल नहीं होती और इस तरह जब काम अलग-अलग तौर पर किये जायें नमाज़ बातिल नहीं होगी।

(1212) हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी बेटी ज़ैनब (रज़ि.) की बेटी उमामा (रज़ि.) को उठाकर नमाज पढ़ लेते थे, जो अबुल आस

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ

बिन रबीअ़ (रज़ि.) की बेटी थीं। जब आप क़ियाम में होते तो उसे उठा लेते और जब सज्दा फ़रमाते तो उसे ज़मीन पर बिठा देते। यहया ने कहा, इमाम मालिक ने जवाब दिया, हाँ (ये रिवायत मुझे सुनाई है)।
(सहीह बुख़ारी : 5996, 516, अबू दाऊद : 918, 919, 920, 917, नसाई : 2/95, 2/45-46, 3/10)

يَحْيَى، قَالَ قُلْتُ لِمَالِكٍ حَدَّثَكَ عَامِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ سُلَيْمٍ الزُّرَقِيِّ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُصَلِّي وَهُوَ حَامِلٌ أُمَامَةَ بِنْتَ زَيْنَبَ بِنْتِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَلأَبِي الْعَاصِ بْنِ الرَّبِيعِ فَإِذَا قَامَ حَمَلَهَا وَإِذَا سَجَدَ وَضَعَهَا قَالَ يَحْيَى قَالَ مَالِكٌ نَعَمْ .

(1213) हज़रत अबू क़तादा अन्सारी (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने नबी (ﷺ) को देखा, लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे हैं और अबुल आ़स (रज़ि.) की बेटी उमामा (रज़ि.) जो नबी (ﷺ) की बेटी ज़ैनब (रज़ि.) की बेटी है, वो आपके कन्धे पर है। जब आप रुकूअ़ में जाते तो उसे ज़मीन पर उतार देते और जब सज्दे से उठते तो उसे फिर कन्धे पर बिठा लेते।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ أَبِي سُلَيْمَانَ، وَابْنِ، عَجْلاَنَ سَمِعَا عَامِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، يُحَدِّثُ عَنْ عَمْرِو بْنِ سُلَيْمٍ الزُّرَقِيِّ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ الأَنْصَارِيِّ، قَالَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَؤُمُّ النَّاسَ وَأُمَامَةُ بِنْتُ أَبِي الْعَاصِ وَهْىَ بِنْتُ زَيْنَبَ بِنْتِ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى عَاتِقِهِ فَإِذَا رَكَعَ وَضَعَهَا وَإِذَا رَفَعَ مِنَ السُّجُودِ أَعَادَهَا .

(1214) हज़रत अबू क़तादा अन्सारी (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा, आप लोगों को इमामत करा रहे हैं और अबुल आ़स (रज़ि.) की बेटी उमामा (रज़ि.) पर है। जब आप सज्दा करते तो उसको बिठा देते (गर्दन से उतार देते)।

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ مَخْرَمَةَ بْنِ بُكَيْرٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي مَخْرَمَةُ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ سُلَيْمٍ الزُّرَقِيِّ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا قَتَادَةَ الأَنْصَارِيَّ، يَقُولُ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يُصَلِّي لِلنَّاسِ وَأُمَامَةُ بِنْتُ أَبِي الْعَاصِ عَلَى عُنُقِهِ فَإِذَا سَجَدَ وَضَعَهَا

फ़वाइद : (1) बच्चों के कपड़े और बदन को पाक समझा जायेगा, जब तक उनकी नजासत का यक़ीन न हो या उन पर नजासत न लगी हो। (2) ज़रूरत के तहत बच्चे को गोद में लेकर नमाज़ पढ़ना (फ़र्ज़ हो या नफ़ल) इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद (रह.) के नज़दीक जाइज़ है जैसाकि इस हदीस से साबित हो रहा है लेकिन मालिकिया ने बिला दलील इसको नफ़ल नमाज़ से ख़ास क़रार दिया है। (3) नमाज़ में बच्चे को गोद में लेना और फिर रुकूअ और सज्दे के वक़्त उतार देना और फिर दूसरी रकअत के शुरू में दोबारा उठा लेना ये अमले कसीर नहीं है, अमले क़लील है इसलिये इससे नमाज़ नहीं टूटती।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرٍ الْحَنَفِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ، جَمِيعًا عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ عَمْرِو بْنِ سُلَيْمٍ الزُّرَقِيِّ، سَمِعَ أَبَا قَتَادَةَ، يَقُولُ بَيْنَا نَحْنُ فِي الْمَسْجِدِ جُلُوسٌ خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . بِنَحْوِ حَدِيثِهِمْ غَيْرَ أَنَّهُ لَمْ يَذْكُرْ أَنَّهُ أَمَّ النَّاسَ فِي تِلْكَ الصَّلاَةِ .

(1215) हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) बयान करते हैं, 'हम मस्जिद में बैठे हुए थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाये। फिर मज़्कूरा बाला रावियों की हम मानी रिवायत सुनाई। फ़र्क़ ये है उसने ये बयान नहीं किया कि उस नमाज़ में आपने लोगों की इमामत फ़रमाई थी।

باب جَوَازِ الْخُطْوَةِ وَالْخُطْوَتَيْنِ فِي الصَّلاَةِ

बाब 11 : नमाज़ में एक-दो क़दम चलना दुरुस्त है

हिन्दो-पाक का नुस्ख़ा है नमाज़ में एक-दो क़दम चलना जाइज़ है और इसमें कोई कराहत नहीं है बशर्तेकि ज़रूरत की बिना पर हो और इमाम का नमाज़ की तालीम देने या किसी और ज़रूरत के तहत मुक़्तदियों से बुलंद जगह पर खड़े होकर नमाज़ पढ़ाना रवा है (जाइज़ और दुरुस्त है)।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، كِلاَهُمَا عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ

(1216) हज़रत अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी हाज़िम (रह.) अपने बाप के वास्ते से बयान करते हैं कि कुछ लोग हज़रत सहल बिन सअद (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और वो मिम्बरे नबवी के बारे में झगड़ रहे थे कि वो

نَفَرًا، جَاءُوا إِلَى سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَدْ تَمَارَوْا فِي الْمِنْبَرِ مِنْ أَيِّ عُودٍ هُوَ فَقَالَ أَمَا وَاللَّهِ إِنِّي لأَعْرِفُ مِنْ أَيِّ عُودٍ هُوَ وَمَنْ عَمِلَهُ وَرَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَوَّلَ يَوْمٍ جَلَسَ عَلَيْهِ - قَالَ - فَقُلْتُ لَهُ يَا أَبَا عَبَّاسٍ فَحَدِّثْنَا . قَالَ أَرْسَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلَى امْرَأَةٍ قَالَ أَبُو حَازِمٍ إِنَّهُ لَيُسَمِّيهَا يَوْمَئِذٍ " انْظُرِي غُلاَمَكِ النَّجَّارَ يَعْمَلْ لِي أَعْوَادًا أُكَلِّمُ النَّاسَ عَلَيْهَا " . فَعَمِلَ هَذِهِ الثَّلاَثَ دَرَجَاتٍ ثُمَّ أَمَرَ بِهَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَوُضِعَتْ هَذَا الْمَوْضِعَ فَهْىَ مِنْ طَرْفَاءِ الْغَابَةِ . وَلَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَامَ عَلَيْهِ فَكَبَّرَ وَكَبَّرَ النَّاسُ وَرَاءَهُ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ ثُمَّ رَفَعَ فَنَزَلَ الْقَهْقَرَى حَتَّى سَجَدَ فِي أَصْلِ الْمِنْبَرِ ثُمَّ عَادَ حَتَّى فَرَغَ مِنْ آخِرِ صَلاَتِهِ ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ " يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي صَنَعْتُ هَذَا لِتَأْتَمُّوا بِي وَلِتَعَلَّمُوا صَلاَتِي " .

किस लकड़ी से बना है? तो उन्होंने कहा, हाँ अल्लाह की क़सम! मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि वो किस लकड़ी का है और उसे किसने बनाया है और रसूलुल्लाह (ﷺ) जब पहले दिन उस पर बैठे थे, मैंने आपको देखा था। मैंने (अबू हाज़िम) कहा ऐ अबू अब्बास! तो हमें बताइये? उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक औरत की तरफ़ पैग़ाम भेजा (अबू हाज़िम ने कहा, वो उस दिन उसका नाम भी बता रहे थे) कि अपने बढ़ई गुलाम को देखो (और कहो) वो मेरे लिये लकड़ियों को जोड़ दे (मिम्बर बना दे) मैं उन पर लोगों से बातचीत करूँगा। तो उसने ये तीन सीढ़िया बनाईं। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसके बारे में हुक्म दिया और उसे उस जगह रख दिया गया और वो मदीना के जंगल के झाव से बना था। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा, उस पर खड़े हुए और तकबीर कही और लोगों ने भी आपके पीछे तकबीर कही और आप मिम्बर पर ही थे। फिर आप (रुकूअ से) उठे और उल्टे पाँव नीचे उतरे, यहाँ तक कि मिम्बर की जड़ में सज्दा किया। फिर दोबारा मिम्बर पर खड़े हो गये। यहाँ तक कि नमाज़ पूरी करके फ़ारिग़ हो गये। फिर लोगों की तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़रमाया, 'ऐ लोगो! मैंने ये काम इसलिये किया है ताकि तुम मेरी इक़्तिदा करो और मेरी नमाज़ सीख लो या जान लो (अगर तअल्लमू हो तो मानी सीख लो होगा और अगर तअलमू हो तो मानी जान लो होगा)।

(1217) हज़रत अबू हाज़िम (रह.) से रिवायत है कि कुछ लोग सहल बिन सअ़द (रज़ि.) के पास आये। नीज़ हमें अबू बकर बिन अबी शैबा, ज़ुहैर बिन हरब और इब्ने अबी उमर ने सुफ़ियान बिन उयय्ना के वास्ते से अबू हाज़िम की रिवायत सुनाई कि लोग सहल बिन सअ़द (रज़ि.) के पास आये और उनसे पूछा, नबी (ﷺ) का मिम्बर किस चीज़ से बनाया गया है और इब्ने अबी हाज़िम की हम मानी रिवायत बयान की।

(सहीह बुख़ारी : 377, इब्ने माजह : 1416, सहीह बुख़ारी : 917, अबू दाऊद : 1080)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدٍ الْقَارِيُّ الْقُرَشِيُّ، حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ، أَنَّ رِجَالاً، أَتَوْا سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ ح قَالَ وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، قَالَ أَتَوْا سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ فَسَأَلُوهُ مِنْ أَىِّ شَىْءٍ مِنْبَرُ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَسَاقُوا الْحَدِيثَ نَحْوَ حَدِيثِ ابْنِ أَبِي حَازِمٍ .

फ़वाइद : (1) हज़रत सहल (रज़ि.) की हदीस़ से स़ाबित हुआ कि नमाज़ में मिम्बर पर चढ़ना और उतरना ज़रूरत की सूरत में जाइज़ है, अगरचे इस काम को बार-बार करना पड़े। (2) लोगों को नमाज़ की तालीम अ़मलन देनी चाहिये ताकि वो पढ़ते देखकर नमाज़ पढ़ना सीख सकें। (3) आपने सहाबा किराम (रज़ि.) को ऊँची जगह खड़े होकर नमाज़ पढ़ाई ताकि वो आपकी इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ना सीख लें। लिहाज़ा अब भी हमें इसी तरह नमाज़ पढ़नी चाहिये, जैसाकि आपने सहाबा किराम (रज़ि.) को सिखाई थी और उन्होंने उसे बयान किया है। (4) मसले की तहक़ीक़ के लिये ऐसे शख़्स के पास जाना चाहिये जो उसे अच्छी तरह जानता हो। (5) ज़रूरत के तहत इमाम लोगों से बुलंद जगह पर खड़ा हो सकता है और मुक़्तदी भी दूसरी मंज़िल पर नमाज़ पढ़ सकते हैं। (6) ख़ुत्बए जुम्आ के लिये मिम्बर रखना चाहिये।

बाब 12 : नमाज़ में कमर (कोख) पर हाथ रखना नाजाइज़ है

باب كَرَاهَةِ الاِخْتِصَارِ فِي الصَّلاَةِ

(1218) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने आदमी को कोख पर हाथ रख कर नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाया। अबू बकर की रिवायत में नबी के बजाय रसूलुल्लाह का लफ़्ज़ है।

وَحَدَّثَنِي الْحَكَمُ بْنُ مُوسَى الْقَنْطَرِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ، وَأَبُو أُسَامَةَ جَمِيعًا عَنْ هِشَامٍ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ

ﷺ أَنَّهُ نَهَى أَنْ يُصَلِّيَ الرَّجُلُ مُخْتَصِرًا . وَفِي رِوَايَةِ أَبِي بَكْرٍ قَالَ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ .

(नसाई : 889, तिर्मिज़ी : 383)

फवाइद : (1) अल इख़्तिसारु फ़िस्सलात से क्या मुराद है? इसके बारे में उलमाए दीन में इख़्तिलाफ़ है। अक्सर के नज़दीक और राजेह मानी यही है कि कोख पर हाथ रखना नमाज़ में जाइज़ नहीं है। अल्लामा हरवी ने कहा, इख़्तिसार ये है कि मुकम्मल सूरत न पढ़े शुरू या आख़िर से दो चार आयतें पढ़ ले या क़िरअत जल्दी-जल्दी करे। इमाम ग़ज़ाली के बक़ौल क़िरअत करते वक़्त दरम्यान से सज्दा वाली आयत छोड़ दे। अल्लामा ख़त्ताबी के नज़दीक नमाज़ में असा (लाठी) का सहारा लेना मुराद है और कुछ के नज़दीक अरकाने नमाज़ यानी क़ियाम, रुकूअ और सज्दा में ऐतदाल न करना मुराद है। **(2)** इख़्तिसार कोख पर हाथ रखने की हिक्मत के बारे में अलग-अलग अक़्वाल हैं। (1) इब्लीस को जन्नत से इस हालत में उतारा गया। (2) इब्लीस इसी हालत में चलता है। (3) ये यहूदियों का तर्ज़े अमल है। (4) दोज़ख़ी इस तरह आराम करते हैं। (5) ये फ़ख़्र व घमण्ड करने वालों का रवैया है। हज़रत आइशा से तीसरी सूरत मरवी है।

बाब 13 : दौराने नमाज़ कंकरियाँ पौंछना (हटाना) और मिट्टी बराबर करना मकरूह है

باب كَرَاهَةِ مَسْحِ الْحَصَى وَتَسْوِيَةِ التُّرَابِ فِي الصَّلاَةِ

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ الدَّسْتَوَائِيُّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ مُعَيْقِيبٍ، قَالَ ذَكَرَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَسْحَ فِي الْمَسْجِدِ - يَعْنِي الْحَصَى - قَالَ " إِنْ كُنْتَ لاَ بُدَّ فَاعِلاً فَوَاحِدَةً " .

(1219) हज़रत मुऐक़ीब (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने मस्जिद में कंकरियाँ हमवार करने का तज़्किरा फ़रमाया 'कि अगर इसके बग़ैर चारह न हो तो एक बार कर लो।'
(सहीह बुख़ारी : 1207, नसाई : 3/7, इब्ने माजह : 1026)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ هِشَامٍ، قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ مُعَيْقِيبٍ، أَنَّهُمْ سَأَلُوا

(1220) हज़रत मुऐक़ीब (रज़ि.) से रिवायत है कि उन्होंने नबी (ﷺ) से नमाज़ में हाथ फेरने के बारे में सवाल किया तो आपने फ़रमाया, 'एक बार।'

النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم عَنِ الْمَسْحِ فِي الصَّلاَةِ فَقَالَ " وَاحِدَةٌ " .

फ़ायदा : नमाज़ में नमाज़ की जगह सज्दा करते वक़्त बार-बार साफ़ करना दुरुस्त नहीं है। ये नमाज़ के आदाब और तवाज़ोअ़ के मुनाफ़ी हरकत है। ज़रूरत की सूरत में सिर्फ़ एक बार करना दुरुस्त है।

وَحَدَّثَنِيهِ عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ - حَدَّثَنَا هِشَامٌ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَقَالَ فِيهِ حَدَّثَنِي مُعَيْقِيبٌ،

(1221) मुझे यही रिवायत उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर क़वारीरी ने ख़ालिद (यानी हारिस़ का बेटा) के वास्ते से हिशाम की मज़्कूरा बाला सनद से सुनाई और अ़न मुऐक़ीब की बजाय हद्दसनी मुऐक़ीब कहा।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، قَالَ حَدَّثَنِي مُعَيْقِيبٌ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ فِي الرَّجُلِ يُسَوِّي التُّرَابَ حَيْثُ يَسْجُدُ قَالَ " إِنْ كُنْتَ فَاعِلاً فَوَاحِدَةً " .

(1222) हज़रत मुऐक़ीब (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उस आदमी के बारे में जो सज्दा करते वक़्त सज्दागाह से मिट्टी बराबर करता है फ़रमाया, 'अगर ऐसा करना ही है तो एक बार कर।'

باب النَّهْىِ عَنِ الْبُصَاقِ، فِي الْمَسْجِدِ فِي الصَّلاَةِ وَغَيْرِهَا

बाब 14 : दौराने नमाज़ और उसके अ़लावा मस्जिद में थूकना मना है

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَأَى بُصَاقًا فِي جِدَارِ الْقِبْلَةِ فَحَكَّهُ ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ " إِذَا كَانَ أَحَدُكُمْ يُصَلِّي فَلاَ يَبْصُقْ قِبَلَ وَجْهِهِ فَإِنَّ اللَّهَ قِبَلَ وَجْهِهِ إِذَا صَلَّى " .

(1223) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़िब्ले वाली दीवार में थूक देखा तो आपने उसे खुरच दिया। फिर लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई नमाज़ में हो तो अपने सामने न थूके, क्योंकि वो नमाज़ पढ़ता है तो अल्लाह उसके सामने है।'

(सहीह बुख़ारी : 406, नसाई : 2/51)

फ़ायदा : इंसान जब नमाज़ पढ़ता है तो अल्लाह से राज़ व नियाज़ और मुनाजात करता है और यूँ तसव्वुर करता है गोया कि मैं उसको देख रहा हूँ। इस लिहाज़ से गोया वो सामने मौजूद है। इसको आपने सामने होने से ताबीर फ़रमाया है। असल मक़सद ये है कि क़िब्ले का एहतिराम व ऐज़ाज़ होना चाहिये। हालते नमाज़ में हो या नमाज़ से ख़ारिज हो, इंसान किसी भी वक़्त क़िब्ले की तरफ़ न थूके। क्योंकि वो अल्लाह तआला का मुक़र्रर करदा है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، وَأَبُو أُسَامَةَ ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي جَمِيعًا، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، عَنِ اللَّيْثِ بْنِ سَعْدٍ، ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنِي ابْنَ عُلَيَّةَ - عَنْ أَيُّوبَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، أَخْبَرَنَا الضَّحَّاكُ، - يَعْنِي ابْنَ عُثْمَانَ ح وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، كُلُّهُمْ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ رَأَى نُخَامَةً فِي قِبْلَةِ الْمَسْجِدِ . إِلاَّ الضَّحَّاكَ فَإِنَّ فِي حَدِيثِهِ نُخَامَةً فِي الْقِبْلَةِ . بِمَعْنَى حَدِيثِ مَالِكٍ .

(1224) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने मस्जिद के क़िब्ले में बल्ग़म देखा। सिर्फ़ ज़ह्हाक की रिवायत में नुख़ामतन फ़िल क़िब्लह है। (फ़ी क़िब्लतिल मस्जिद नहीं है) और इमाम मालिक की मज़्कूरा बाला रिवायत से हम मानी रिवायत बयान की।

(सहीह बुख़ारी : 753, इब्ने माजह : 763, 8271, सहीह बुख़ारी : 1213, अबू दाऊद : 479)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَعَمْرٌو النَّاقِدُ جَمِيعًا عَنْ سُفْيَانَ، - قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، - عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ

(1225) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मस्जिद के क़िब्ले की दीवार पर बल्ग़म देखा तो आपने उसे कंकरी से खुरच डाला। फिर आपने इस बात से मना फ़रमाया कि आदमी अपने दायें

الْخُدْرِيِّ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم رَأَى نُخَامَةً فِي قِبْلَةِ الْمَسْجِدِ فَحَكَّهَا بِحَصَاةٍ ثُمَّ نَهَى أَنْ يَبْزُقَ الرَّجُلُ عَنْ يَمِينِهِ أَوْ أَمَامَهُ وَلَكِنْ يَبْزُقُ عَنْ يَسَارِهِ أَوْ تَحْتَ قَدَمِهِ الْيُسْرَى .

या सामने थूके, अल्बत्ता वो अपने बायें और बायें पाँव के नीचे थूक सकता है।
(सहीह बुख़ारी : 408, 409, 410, 411, 114, नसाई : 2/51, इब्ने माजह : 761)

फ़ायदा : अगर इंसान अकेला हो तो वो मस्जिद से बाहर अपने बायें थूक सकता है। अगर उसकी बायें जानिब दूसरा आदमी मौजूद हो तो फिर बायें पाँव के नीचे थूक ले।

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، وَحَرْمَلَةُ، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي كِلاَهُمَا، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، وَأَبَا، سَعِيدٍ أَخْبَرَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ رَأَى نُخَامَةً . بِمِثْلِ حَدِيثِ ابْنِ عُيَيْنَةَ .

(1226) इमाम साहब अलग-अलग उस्तादों से हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) और अबू सईद (रज़ि.) की रिवायत बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बल्ग़म देखा। आगे मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की।

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، فِيمَا قُرِئَ عَلَيْهِ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى بُصَاقًا فِي جِدَارِ الْقِبْلَةِ أَوْ مُخَاطًا أَوْ نُخَامَةً فَحَكَّهُ .

(1227) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़िब्ले की दीवार पर थूक या रेंट (नाक का मवाद) या बल्ग़म देखा तो उसे खुरच डाला।
(सहीह बुख़ारी : 407)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُلَيَّةَ، قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مِهْرَانَ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَأَى نُخَامَةً فِي قِبْلَةِ الْمَسْجِدِ فَأَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ " مَا بَالُ أَحَدِكُمْ يَقُومُ

(1228) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मस्जिद के क़िब्ले की दीवार पर थूक देखा तो लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, 'तुम्हें क्या हुआ है कि तुममें से कोई अपने रब के सामने खड़ा होता है, फिर अपने सामने (आगे) बल्ग़म फेंकता है? क्या तुममें से किसी को ये बात पसंद है कि उसके सामने खड़ा होकर

مُسْتَقْبِلَ رَبِّهِ فَيَتَنَخَّعُ أَمَامَهُ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يُسْتَقْبَلَ فَيُتَنَخَّعَ فِي وَجْهِهِ فَإِذَا تَنَخَّعَ أَحَدُكُمْ فَلْيَتَنَخَّعْ عَنْ يَسَارِهِ تَحْتَ قَدَمِهِ فَإِنْ لَمْ يَجِدْ فَلْيَقُلْ هَكَذَا " . وَوَصَفَ الْقَاسِمُ فَتَفَلَ فِي ثَوْبِهِ ثُمَّ مَسَحَ بَعْضَهُ عَلَى بَعْضٍ .

उसके चेहरे पर थूक दिया जाये? लिहाज़ा जब तुममें से किसी को खंखार आये तो वो अपने बायें क़दम के नीचे थूके, अगर उसकी गुंजाइश न हो तो ऐसे कर ले।' क़ासिम ने इसकी वज़ाहत में अपने कपड़े में थूका, फिर उसे आपस में मल दिया।

(नसाई : 1/163, इब्ने माजह : 1022)

وَحَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، كُلُّهُمْ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مِهْرَانَ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ . نَحْوَ حَدِيثِ ابْنِ عُلَيَّةَ وَزَادَ فِي حَدِيثِ هُشَيْمٍ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَرُدُّ ثَوْبَهُ بَعْضَهُ عَلَى بَعْضٍ .

(1229) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं। हुशैम की रिवायत में ये इज़ाफ़ा है कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा, गोया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को कपड़े को आपस में मलते देख रहा हूँ।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ قَتَادَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا كَانَ أَحَدُكُمْ فِي الصَّلاَةِ فَإِنَّهُ يُنَاجِي رَبَّهُ فَلاَ يَبْزُقَنَّ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلاَ عَنْ يَمِينِهِ وَلَكِنْ عَنْ شِمَالِهِ تَحْتَ قَدَمِهِ " .

(1230) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई नमाज़ पढ़ता है तो वो अपने रब से राज़ व नियाज़ की बातचीत करता है, इसलिये वो अपने सामने या दायें तरफ़ न थूके। हाँ! बायें तरफ़ पाँव के नीचे थूक ले।'

(सहीह बुख़ारी : 412, 413, 1214)

फ़ायदा : इस हदीस़ से साबित होता है कि नमाज़ दरहक़ीक़त एक तरह से अल्लाह तआला से सरगोशी और राज़ व नियाज़ की बात है। इसलिये इंसान को नमाज़ पूरे दिल को हाज़िर रखकर और

ख़ुशूअ और ख़ुज़ूअ के साथ पूरी तवज्जह और एहतिमाम से क़िरअत और तस्बीहात व तम्जीदात और दूसरे अज़्कार पढ़ने चाहिये और नमाज़ में कोई ऐसी हरकत नहीं करनी चाहिये जिससे इंसान की तवज्जह और हुज़ूरे दिल व दिमाग़ में ख़लल पड़े और नमाज़ में अगर थूकने की ज़रूरत पेश आ जाये तो वो बायें क़दम के नीचे थूक ले।

(1231) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मस्जिद में थूकना ग़लती है और इसका कफ़्फ़ारा उसको दफ़न कर देना है।'
(अबू दाऊद : 475, तिर्मिज़ी : 572, नसाई : 2/50)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ، قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " الْبُزَاقُ فِي الْمَسْجِدِ خَطِيئَةٌ وَكَفَّارَتُهَا دَفْنُهَا " .

(1232) हज़रत शोबा (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैंने क़तादा (रज़ि.) से मस्जिद में थूकने के बारे में पूछा तो उसने कहा, मैंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) को ये कहते हुए सुना कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना, 'मस्जिद में थूक ग़लती है और इसका कफ़्फ़ारा उसको दफ़न करना है।'
(सहीह बुख़ारी : 415, अबू दाऊद : 474)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ - حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَأَلْتُ قَتَادَةَ عَنِ التَّفْلِ، فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " التَّفْلُ فِي الْمَسْجِدِ خَطِيئَةٌ وَكَفَّارَتُهَا دَفْنُهَا " .

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है कि इंसान को मस्जिद में नहीं थूकना चाहिये। अगर ज़रूरत और मजबूरी की बिना पर थूक ले तो फिर दूसरी हदीस़ की रू से बायें क़दम तले थूक ले और उसको दफ़न कर दे।

इसलिये दोनों हदीस़ों में तआरुज़ (टकराव) नहीं है और क़ाज़ी अयाज़ और इमाम नववी का इस मसले के बारे में कुछ इख़्तिलाफ़ है। इमाम नववी के नज़दीक मस्जिद में नहीं थूकना चाहिये। ज़रूरत पड़े तो अपने कपड़े में थूक ले। अगर मस्जिद में थूकेगा तो गुनाहगार होगा। क़ाज़ी अयाज़ का नज़रिया है कि अगर मस्जिद में थूक कर दफ़न कर दिया तो गुनाह नहीं होगा। अगर दफ़न नहीं किया तो गुनाहगार होगा। आज-कल मसाजिद में दफ़न करना मुम्किन नहीं है इसलिये ज़रूरत और मजबूरी की सूरत में थूकदान या कपड़े को इस्तेमाल करना चाहिये।

(1233) हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझ पर मेरी उम्मत के अच्छे और बुरे आमाल पेश किये गये तो मैंने उसके अच्छे आमाल में रास्ते से तकलीफ़देह चीज़ हटाने को पाया और मैंने उसके बुरे आमाल में मस्जिद में खंखार को पाया जिसको दफ़न नहीं किया गया।'

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَسْمَاءَ الضُّبَعِيُّ، وَشَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، قَالاَ حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ مَيْمُونٍ، حَدَّثَنَا وَاصِلٌ، مَوْلَى أَبِي عُيَيْنَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ عُقَيْلٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ يَعْمَرَ، عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ الدِّيلِيِّ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ " عُرِضَتْ عَلَىَّ أَعْمَالُ أُمَّتِي حَسَنُهَا وَسَيِّئُهَا فَوَجَدْتُ فِي مَحَاسِنِ أَعْمَالِهَا الأَذَى يُمَاطُ عَنِ الطَّرِيقِ وَوَجَدْتُ فِي مَسَاوِي أَعْمَالِهَا النُّخَاعَةَ تَكُونُ فِي الْمَسْجِدِ لاَ تُدْفَنُ " .

फ़ायदा : इस हदीस़ से साबित हुआ कि आपको अपनी ज़िन्दगी में उम्मत के अच्छे और बुरे अमलों का मुशाहिदा करवाया गया ताकि आप उम्मत को अच्छे और बुरे अमलों से अला वजहिल बसीरह आगाह फ़रमा दें और आपने ये फ़रीज़ा सर अन्जाम दे दिया। लेकिन ये कहना (ये तसरीह है) कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर उम्मत के तमाम आमाल पेश किये जाते हैं। हदीस़ के मफ़्हूम व मानी में अपनी तरफ़ से इज़ाफ़ा है और ये हदीस़ का मन्शा और मक़सद नहीं है।

(1234) हज़रत यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर अपने बाप से बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ नमाज़ अदा की तो मैंने आपको देखा कि आपने थूका और उसे अपने जूते से मसल दिया।

(अबू दाऊद : 483, 484)

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا كَهْمَسٌ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الشِّخِّيرِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَرَأَيْتُهُ تَنَخَّعَ فَدَلَكَهَا بِنَعْلِهِ .

(1235) हज़रत अबू अला यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं कि उसने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ में नमाज़ पढ़ी। आपने थूका और उसे अपने बायें जूते से मसल डाला।

وَحَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنِ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي الْعَلاَءِ، يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الشِّخِّيرِ عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ صَلَّى مَعَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ فَتَنَخَّعَ فَدَلَكَهَا بِنَعْلِهِ الْيُسْرَى .

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ मस्जिद में थूक वग़ैरह के दफ़न करने का मानी है उसको अपने बायें जूते से मसल देना इस तरह उसका इज़ाला हो जायेगा ये मानी नहीं है कि ज़मीन को खोदा जाये और उसमें दफ़न किया जाये।

बाब 15 : जूते पहनकर नमाज़ पढ़ना जाइज़ है

باب جَوَازِ الصَّلاَةِ فِي النَّعْلَيْنِ

(1236) अबू मस्लमा सईद बिन यज़ीद (रह.) से रिवायत है कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से पूछा, क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) जूते पहनकर नमाज़ पढ़ते थे? उन्होंने जवाब दिया, हाँ।

(सहीहबुख़ारी:386,5850 तिर्मिज़ी:400 नसाई: 2/74

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، عَنْ أَبِي مَسْلَمَةَ، سَعِيدِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ قُلْتُ لأَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي فِي النَّعْلَيْنِ قَالَ نَعَمْ .

(1237) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ الْعَوَّامِ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ يَزِيدَ أَبُو مَسْلَمَةَ، قَالَ سَأَلْتُ أَنَسًا . بِمِثْلِهِ .

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि अगर जूती साफ़ और पाक हो तो उसमें नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है। लेकिन आज-कल मसाजिद में फ़र्श और क़ालीन होते हैं और जूते की मिट्टी वग़ैरह उनमें जज़्ब हो जाती है। इसलिये सिर्फ़ वहाँ जूते पहनकर नमाज़ पढ़नी चाहिये जहाँ मस्जिद कच्ची हो उस पर क़ालीन, दरियाँ, सफ़ें न हों।

बाब 16 : मुनक़्क़श बेल-बूटेदार कपड़ों में नमाज़ पढ़ना मक्रूह (ना पसंदीदा) है

باب كَرَاهَةِ الصَّلاَةِ فِي ثَوْبٍ لَهُ أَعْلاَمٌ

(1238) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने एक मुनक़्क़श चादर में नमाज़ पढ़ी और फ़रमाया, 'इसके बेल-बूटों

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ

الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم صَلَّى فِي خَمِيصَةٍ لَهَا أَعْلاَمٌ وَقَالَ " شَغَلَتْنِي أَعْلاَمُ هَذِهِ فَاذْهَبُوا بِهَا إِلَى أَبِي جَهْمٍ وَائْتُونِي بِأَنْبِجَانِيِّهِ " .

ने मुझे अपने में मुन्हमिक (मशग़ूल) करना चाहा। इसको अबू जहम के पास ले जाओ और मुझे उससे अम्बिजानी चादर ला दो।'
(सहीह बुख़ारी : 752, अबू दाऊद : 914, 4053, नसाई : 2/72, इब्ने माजह : 3550)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) ख़मीसह : मुरब्बअ शक्ल की ऊनी चादर। **(2) आलाम :** अलम की जमा है, नक़्शो-निगार।

حَدَّثَنَا حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي فِي خَمِيصَةٍ ذَاتِ أَعْلاَمٍ فَنَظَرَ إِلَى عَلَمِهَا فَلَمَّا قَضَى صَلاَتَهُ قَالَ " اذْهَبُوا بِهَذِهِ الْخَمِيصَةِ إِلَى أَبِي جَهْمِ بْنِ حُذَيْفَةَ وَائْتُونِي بِأَنْبِجَانِيِّهِ فَإِنَّهَا أَلْهَتْنِي آنِفًا فِي صَلاَتِي " .

(1239) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक नक़्शो-निगार वाली चादर में नमाज़ पढ़ने लगे और उसके नक़्शो-निगार पर नज़र डाली तो जब आप अपनी नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया, 'ये ऊनी चादर अबू जहम बिन हुज़ैफ़ा के पास ले जाओ और मुझे उसकी अम्बिजानी चादर ला दो। क्योंकि इसने अभी मुझे मेरी नमाज़ से ग़ाफ़िल कर दिया था।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَتْ لَهُ خَمِيصَةٌ لَهَا عَلَمٌ فَكَانَ يَتَشَاغَلُ بِهَا فِي الصَّلاَةِ فَأَعْطَاهَا أَبَا جَهْمٍ وَأَخَذَ كِسَاءً لَهُ أَنْبِجَانِيًّا .

(1240) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) के पास एक फूलदार ऊनी चादर थी। आप नमाज़ में उसमें मशग़ूल हो जाते। आपने वो अबू जहम को दे दी और उसकी सादा अम्बिजानी ऊन की चादर ले ली।

फ़ायदा : आपको एक मुनक़्क़श चादर हज़रत अबू जहम (रज़ि.) ने तोहफ़तन दी थी। आप जब उसमें नमाज़ पढ़ने लगे तो आपकी तवज्जह और ध्यान उसके नक़्शो-निगार की तरफ़ होने लगा। आपने नमाज़ से इस ग़फ़लत को पसंद न फ़रमाया और ये चादर हज़रत अबू जहम (रज़ि.) को वापस करके उससे सादा चादर ले ली, ताकि तोहफ़े की वापसी से उसकी हौसला शिक्नी और दिल आज़ारी न हो। इस हदीस़ से मालूम हुआ मसाजिद को ऐसे नक़्शो-निगार और फ़र्श व फ़ुरूश से बचाना चाहिये जो नमाज़ियों की

तवज्जह और दिल्जमई में ख़लल का बाइस बने और ऐसी सजावट व आराइश जो आम मामूल बन चुकी हो जिसकी वजह से नमाज़ियों की तवज्जह में ख़लल न पड़ता हो, उसमें कोई हर्ज नहीं है।

باب كَرَاهَةِ الصَّلاَةِ بِحَضْرَةِ الطَّعَامِ الَّذِي يُرِيدُ أَكْلَهُ فِي الْحَالِ وَكَرَاهَةِ الصَّلاَةِ مَعَ مُدَافَعَةِ الأَخْبَثَيْنِ

बाब 17 : वो खाना जिसको इंसान फ़ौरी तौर पर खाना चाहता हो, उसकी मौजूदगी में नमाज़ मक्रूह है, इसी तरह पेशाब-पाख़ाना को रोककर नमाज़ पढ़ना मक्रूह है

أَخْبَرَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا حَضَرَ الْعَشَاءُ وَأُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَابْدَءُوا بِالْعَشَاءِ " .

(1241) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब शाम का खाना सामने आ जाये और नमाज़ के लिये तकबीर हो जाये तो पहले खाना खा लो।'
(तिर्मिज़ी : 353, नसाई : 2/111, इब्ने माजह : 933)

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا قُرِّبَ الْعَشَاءُ وَحَضَرَتِ الصَّلاَةُ فَابْدَءُوا بِهِ قَبْلَ أَنْ تُصَلُّوا صَلاَةَ الْمَغْرِبِ وَلاَ تَعْجَلُوا عَنْ عَشَائِكُمْ " .

(1242) अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब शाम का खाना पेश कर दिया जाये और नमाज़ का वक़्त हो जाये तो मग़रिब की नमाज़ पढ़ने से पहले खाना खाना शुरू करो और खाना छोड़कर नमाज़ के लिये जल्दी न करो।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، وَحَفْصٌ، وَوَكِيعٌ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. بِمِثْلِ حَدِيثِ ابْنِ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَنَسٍ .

(1243) इमाम साहब अपने एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत हज़रत आइशा (रज़ि.) से बयान करते हैं।
(इब्ने माजह : 935)

(1244) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से किसी का खाना लगा दिया जाये और नमाज़ के लिये इक़ामत हो जाये तो खाने से शुरू करो और फ़राग़त से पहले नमाज़ के लिये जल्दी न करो।'
(सहीह बुख़ारी : 673)

حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، قَالَ وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، قَالاَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " إِذَا وُضِعَ عَشَاءُ أَحَدِكُمْ وَأُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَابْدَءُوا بِالْعَشَاءِ وَلاَ يَعْجَلَنَّ حَتَّى يَفْرُغَ مِنْهُ " .

(1245) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत के हम मानी रिवायत बयान करते हैं।
(सहीह बुख़ारी : 673, तोहफ़ा : 8468, 7783)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ الْمُسَيَّبِيُّ، حَدَّثَنِي أَنَسٌ، - يَعْنِي ابْنَ عِيَاضٍ - عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ مَسْعَدَةَ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا الصَّلْتُ بْنُ مَسْعُودٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ مُوسَى، عَنْ أَيُّوبَ، كُلُّهُمْ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِنَحْوِهِ .

(1246) हज़रत इब्ने अबी अतीक़ से रिवायत है कि मैंने और क़ासिम ने आइशा (रज़ि.) के पास एक बातचीत की और क़ासिम बातचीत में ऐराबी ग़लती बहुत करते थे क्योंकि वो लौण्डी के बेटे थे। आइशा (रज़ि.) ने उसे कहा, क्या बात है तुम मेरे इस भतीजे की तरह बातचीत नहीं करते हो? हाँ! मैं जानती हूँ तुममें ये बात कहाँ से आई है। इसको इसकी माँ ने अदब सिखाया (तालीम दी) और तुझे तेरी माँ ने अदब सिखाया। इस पर क़ासिम नाराज़ हो गया और हसद व कीना का इज़हार किया और जब उसने आइशा

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا حَاتِمٌ، - هُوَ ابْنُ إِسْمَاعِيلَ - عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي عَتِيقٍ، قَالَ تَحَدَّثْتُ أَنَا وَالْقَاسِمُ، عِنْدَ عَائِشَةَ - رضى الله عنها - حَدِيثًا وَكَانَ الْقَاسِمُ رَجُلاً لَحَّانَةً وَكَانَ لأُمِّ وَلَدٍ فَقَالَتْ لَهُ عَائِشَةُ مَا لَكَ لاَ تَحَدَّثُ كَمَا يَتَحَدَّثُ ابْنُ أَخِي هَذَا أَمَا إِنِّي قَدْ عَلِمْتُ مِنْ أَيْنَ أُتِيتَ . هَذَا أَدَّبَتْهُ أُمُّهُ وَأَنْتَ أَدَّبَتْكَ

أُمُّكَ - قَالَ - فَغَضِبَ الْقَاسِمُ وَأَضَبَّ عَلَيْهَا فَلَمَّا رَأَى مَائِدَةَ عَائِشَةَ قَدْ أُتِيَ بِهَا قَامَ . قَالَتْ أَيْنَ قَالَ أُصَلِّي . قَالَتِ اجْلِسْ . قَالَ إِنِّي أُصَلِّي . قَالَتِ اجْلِسْ غُدَرُ إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " لاَ صَلاَةَ بِحَضْرَةِ الطَّعَامِ وَلاَ وَهُوَ يُدَافِعُهُ الأَخْبَثَانِ " .

(रज़ि.) का दस्तरख़्वान आते देखा तो उठ खड़ा हुआ। आइशा (रज़ि.) ने पूछा, कहाँ जाते हो? उसने कहा, नमाज़ पढ़ने। आइशा (रज़ि.) ने कहा, बैठ जाओ। उसने कहा, नमाज़ पढ़ता हूँ। आइशा (रज़ि.) ने फ़रमाया, ऐ बेवफ़ा! बैठ जा। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना, 'खाना सामने आ जाये तो नमाज़ न पढ़ो। इसी तरह पेशाब-पाख़ाना रोक कर नमाज़ न पढ़ो।'

(अबू दाऊद : 89)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) लह्हानह : ऐराब में बहुत ग़लती करने वाला। **(2) मिन ऐ-न उतीत :** तुझमें ये ऐराबी ग़लती कहाँ से आई। **(3) अज़ब्ब :** ज़ब्ब (हसद व कीना) से माख़ूज़ है तैश और गुस्सा का इज़हार किया। **(4) ग़ुदर :** यानी ऐ बेवफ़ा। **(5) अल्अख़्बसान :** पेशाब व पाख़ाना। **(6) युदाफ़िइ :** हटाना, दूर करना मुराद उनको रोकना है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - وَهُوَ ابْنُ جَعْفَرٍ - أَخْبَرَنِي أَبُو حَزْرَةَ الْقَاصُّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي عَتِيقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ وَلَمْ يَذْكُرْ فِي الْحَدِيثِ قِصَّةَ الْقَاسِمِ .

(1247) इमाम साहब ने अपने अलग-अलग उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की और इस हदीस़ में क़ासिम का वाक़िया बयान नहीं किया।

फ़वाइद : (1) अहादीसे मज़्कूरा बाला (पिछली हदीसों) से ये साबित होता है कि अगर नमाज़ में हाज़िरी के वक़्त इंसान को खाना खाने की हाजत हो और खाना सामने मौजूद हो या पेशाब व पाख़ाना की हाजत हो तो पहले उन ज़रूरतों से फ़ारिग़ होना चाहिये ताकि दिल की पूरी तवज्जह नमाज़ की तरफ़ हो। अगर ये ज़रूरतें मामूली क़िस्म की हों और उनको मुअख़्ख़र करने में कोई तकलीफ़ न हो और उनका असर नमाज़ पर न पड़ता हो तो फिर उनको मुअख़्ख़र (ताख़ीर) किया जा सकता है। (2) इब्ने अबी अतीक़ से मुराद अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अबू बकर सिद्दीक़ है और क़ासिम से

मुराद क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबी बकर सिद्दीक़ मुराद है। जो मदीना मुनव्वरा के सात फ़ुक़्हा में से एक जलीलुल क़द्र फ़क़ीह हैं। क़ासिम हज़रत आइशा का भतीजा है लेकिन उसकी माँ लौण्डी थी जो अरबी न थी और इब्ने अबी अतीक़ उनके भतीजे का बेटा है और उसकी माँ हुर्रह और अरब थी।

बाब 18 : जिसने लहसुन या प्याज या गन्दना या कोई बदबूदार चीज़ खाई उसको (मस्जिद में जाने से) रोकना (यहाँ तक कि ये बू ख़त्म हो जाये और उसको मस्जिद से निकालना)

باب نَهْيِ مَنْ أَكَلَ ثُومًا أَوْ بَصَلاً أَوْ كُرَّاثًا أَوْ نَحْوَهَا عَنْ حُضُورِ الْمَسْجِدِ

(1248) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ग़ज़्वए ख़ैबर के मौक़े पर फ़रमाया, 'जिसने ये पौधा यानी लहसुन खाया वो मस्जिदों में हर्गिज़ न आये।' ज़ुहैर ने सिर्फ़ ग़ज़्वए ख़ैबर का नाम नहीं लिया।

(सहीह बुख़ारी : 853, अबू दाऊद : 3825)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، - وَهُوَ الْقَطَّانُ - عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، قَالَ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ فِي غَزْوَةِ خَيْبَرَ " مَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ - يَعْنِي الثُّومَ - فَلاَ يَأْتِيَنَّ الْمَسَاجِدَ " . قَالَ زُهَيْرٌ فِي غَزْوَةٍ . وَلَمْ يَذْكُرْ خَيْبَرَ .

(1249) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने ये तरकारी यानी लहसुन खाया वो उस वक़्त तक हमारी मस्जिदों के हर्गिज़ क़रीब न आये कि जब तक उसकी बदबू न चली जाये।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الْبَقْلَةِ فَلاَ يَقْرَبَنَّ مَسَاجِدَنَا حَتَّى يَذْهَبَ رِيحُهَا " . يَعْنِي الثُّومَ .

(1250) हज़रत अनस (रज़ि.) से लहसुन के बारे में पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने इस सब्ज़ी से खाया, वो हमारे हर्गिज़ क़रीब न आये और हमारे साथ नमाज़ न पढ़े।'

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنِي ابْنَ عُلَيَّةَ - عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، - وَهُوَ ابْنُ صُهَيْبٍ - قَالَ سُئِلَ أَنَسٌ عَنِ الثُّومِ، فَقَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " مَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ فَلاَ يَقْرَبَنَّا وَلاَ يُصَلِّي مَعَنَا " .

(1251) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने इस सब्ज़ी से खाया वो हर्गिज़ हमारी मस्जिद के क़रीब न आये और हमें लहसुन की बू से तकलीफ़ न दे।'

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ فَلاَ يَقْرَبَنَّ مَسْجِدَنَا وَلاَ يُؤْذِيَنَّا بِرِيحِ الثُّومِ " .

(1252) हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने प्याज और गन्दना खाने से मना फ़रमाया तो हमने ज़रूरत से मजबूर होकर उससे खा लिया। इस पर आपने फ़रमाया, 'जिसने इस बदबूदार सब्ज़ी को इस्तेमाल किया वो हमारी मस्जिद के क़रीब न आये, क्योंकि फ़रिश्तों को भी उस चीज़ से तकलीफ़ होती है, जिससे इंसानों को तकलीफ़ होती है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا كَثِيرُ بْنُ هِشَامٍ، عَنْ هِشَامٍ الدَّسْتَوَائِيِّ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ أَكْلِ الْبَصَلِ وَالْكُرَّاثِ . فَغَلَبَتْنَا الْحَاجَةُ فَأَكَلْنَا مِنْهَا فَقَالَ " مَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ الْمُنْتِنَةِ فَلاَ يَقْرَبَنَّ مَسْجِدَنَا فَإِنَّ الْمَلاَئِكَةَ تَأَذَّى مِمَّا يَتَأَذَّى مِنْهُ الإِنْسُ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : कुर्रास़ : एक क़िस्म की बदबूदार तरकारी है जिसकी कुछ क़िस्में प्याज़ और कुछ क़िस्में लहसुन के मुशाबेह होती हैं और कुछ के सिरे नहीं होते, उसका मुफ़रद करास़तुन है।

(1253) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने लहसुन या प्याज़ खाया वो हमसे अलग रहे या हमारी मस्जिदों से अलग

وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، وَحَرْمَلَةُ، قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ حَدَّثَنِي عَطَاءُ بْنُ أَبِي رَبَاحٍ، أَنَّ جَابِرَ بْنَ

रहे और अपने घर में बैठे।' और एक बार आपके पास हाण्डी लाई गई जिसमें तरकारियाँ थीं तो आपने उनकी बदबू महसूस की और पूछा, तो आपको तरकारियों के बारे में बताया गया तो आपने फ़रमाया, 'इसको फ़लाँ साथी के क़रीब कर दो।' तो उसने उसे देखकर (आपकी कराहत की बिना पर) उसे नापसंद किया। आपने फ़रमाया, 'तुम खा लो क्योंकि मैं उससे सरगोशी करता हूँ जिससे तुम सरगोशी नहीं करते हो।' यानी मैं फ़रिश्तों से सरगोशी करता हूँ।

(सहीह बुख़ारी:855, 5452, 7359 अबू दाऊद:3822

عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ - وَفِي رِوَايَةِ حَرْمَلَةَ وَزَعَمَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ أَكَلَ ثُومًا أَوْ بَصَلاً فَلْيَعْتَزِلْنَا أَوْ لِيَعْتَزِلْ مَسْجِدَنَا وَلْيَقْعُدْ فِي بَيْتِهِ " . وَأَنَّهُ أُتِيَ بِقِدْرٍ فِيهِ خَضِرَاتٌ مِنْ بُقُولٍ فَوَجَدَ لَهَا رِيحًا فَسَأَلَ فَأُخْبِرَ بِمَا فِيهَا مِنَ الْبُقُولِ فَقَالَ " قَرِّبُوهَا " . إِلَى بَعْضِ أَصْحَابِهِ فَلَمَّا رَآهُ كَرِهَ أَكْلَهَا قَالَ " كُلْ فَإِنِّي أُنَاجِي مَنْ لاَ تُنَاجِي " .

(1254) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने ये तरकारी, लहसुन खाया' और एक बार फ़रमाया, 'जिसने प्याज़, लहसुन और गन्दना खाया वो हमारी मस्जिद के क़रीब न आये क्योंकि फ़रिश्ते उन चीज़ों से अज़ियत (तकलीफ़) महसूस करते हैं, जिनसे इंसानों को अज़ियत पहुँचती है।'

(सहीह बुख़ारी:854, तिर्मिज़ी : 1806, नसाई : 2/43)

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الْبَقْلَةِ الثُّومِ - وَقَالَ مَرَّةً مَنْ أَكَلَ الْبَصَلَ وَالثُّومَ وَالْكُرَّاثَ - فَلاَ يَقْرَبَنَّ مَسْجِدَنَا فَإِنَّ الْمَلاَئِكَةَ تَتَأَذَّى مِمَّا يَتَأَذَّى مِنْهُ بَنُو آدَمَ " .

(1255) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से बयान करते हैं आपने फ़रमाया, 'जिसने इस पौधे (लहसुन मुराद है) से खाया वो हमारी मस्जिद में हमारे पास न आये।' प्याज़ और गन्दना का तज़्किरा नहीं किया।

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالاَ جَمِيعًا أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ " مَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ - يُرِيدُ الثُّومَ - فَلاَ يَغْشَنَا فِي مَسْجِدِنَا " . وَلَمْ يَذْكُرِ الْبَصَلَ وَالْكُرَّاثَ .

(1256) हज़रत अबू सईद (रज़ि.) से रिवायत है कि हम ख़ैबर की फ़तह से आगे नहीं बढ़े थे कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथी लहसुन की तरकारी पर टूट पड़े क्योंकि लोग भूखे थे और हमने उसे ख़ूब पेट भरकर खाया। फिर हम मस्जिद की तरफ़ गये तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बदबू महसूस फ़रमाई तो फ़रमाया, 'जिसने इस नापसन्दीदा (ख़बीस़) पौधे से कुछ खाया वो हमारी मस्जिद में हमारे क़रीब न आये।' तो लोगों ने कहा, लहसुन हराम क़रार दिया गया, हराम हो गया? ये बात नबी (ﷺ) तक पहुँची तो आपने फ़रमाया, 'ऐ लोगो! अल्लाह ने जो कुछ मेरे लिये हलाल कर दिया है मैं उसको हराम नहीं कर सकता, लेकिन ये एक पौधा है मैं इसकी बू को नापसंद करता हूँ।'

وَحَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، عَنِ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ لَمْ نَعْدُ أَنْ فُتِحَتْ، خَيْبَرُ فَوَقَعْنَا أَصْحَابَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي تِلْكَ الْبَقْلَةِ الثُّومِ وَالنَّاسُ جِيَاعٌ فَأَكَلْنَا مِنْهَا أَكْلاً شَدِيدًا ثُمَّ رُحْنَا إِلَى الْمَسْجِدِ فَوَجَدَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الرِّيحَ فَقَالَ " مَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ الْخَبِيثَةِ شَيْئًا فَلاَ يَقْرَبَنَّا فِي الْمَسْجِدِ " . فَقَالَ النَّاسُ حُرِّمَتْ حُرِّمَتْ . فَبَلَغَ ذَاكَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّهُ لَيْسَ بِي تَحْرِيمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لِي وَلَكِنَّهَا شَجَرَةٌ أَكْرَهُ رِيحَهَا " .

(1257) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक बार अपने साथियों के साथ प्याज़ के खेत से गुज़रे। उनमें कुछ लोगों ने उतरकर उससे कुछ खा लिया और दूसरों ने न खाया। हम आपके पास गये तो आपने उन लोगों को क़रीब बुला लिया जिन्होंने प्याज़ नहीं खाया था और जिन्होंने प्याज़ खाया था उनको पीछे कर दिया। यहाँ तक उसकी बदबू ख़त्म हो गई।

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ عِيسَى، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، عَنْ بُكَيْرِ بْنِ الأَشَجِّ، عَنِ ابْنِ خَبَّابٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَرَّ عَلَى زَرَّاعَةِ بَصَلٍ هُوَ وَأَصْحَابُهُ فَنَزَلَ نَاسٌ مِنْهُمْ فَأَكَلُوا مِنْهُ وَلَمْ يَأْكُلْ آخَرُونَ فَرُحْنَا إِلَيْهِ فَدَعَا الَّذِينَ لَمْ يَأْكُلُوا الْبَصَلَ وَأَخَّرَ الآخَرِينَ حَتَّى ذَهَبَ رِيحُهَا .

(1258) हज़रत मअ़दान बिन अबी तलहा (रज़ि.) से रिवायत है कि उमर बिन ख़त्ताब

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ

سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ، عَنْ مَعْدَانَ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ، خَطَبَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَذَكَرَ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَذَكَرَ أَبَا بَكْرٍ قَالَ إِنِّي رَأَيْتُ كَأَنَّ دِيكًا نَقَرَنِي ثَلاَثَ نَقَرَاتٍ وَإِنِّي لاَ أُرَاهُ إِلاَّ حُضُورَ أَجَلِي وَإِنَّ أَقْوَامًا يَأْمُرُونَنِي أَنْ أَسْتَخْلِفَ وَإِنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُنْ لِيُضَيِّعَ دِينَهُ وَلاَ خِلاَفَتَهُ وَلاَ الَّذِي بَعَثَ بِهِ نَبِيَّهُ صلى الله عليه وسلم فَإِنْ عَجِلَ بِي أَمْرٌ فَالْخِلاَفَةُ شُورَى بَيْنَ هَؤُلاَءِ السِّتَّةِ الَّذِينَ تُوُفِّيَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ عَنْهُمْ رَاضٍ وَإِنِّي قَدْ عَلِمْتُ أَنَّ أَقْوَامًا يَطْعَنُونَ فِي هَذَا الأَمْرِ أَنَا ضَرَبْتُهُمْ بِيَدِي هَذِهِ عَلَى الإِسْلاَمِ فَإِنْ فَعَلُوا ذَلِكَ فَأُولَئِكَ أَعْدَاءُ اللَّهِ الْكَفَرَةُ الضُّلاَّلُ ثُمَّ إِنِّي لاَ أَدَعُ بَعْدِي شَيْئًا أَهَمَّ عِنْدِي مِنَ الْكَلاَلَةِ مَا رَاجَعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي شَىْءٍ مَا رَاجَعْتُهُ فِي الْكَلاَلَةِ وَمَا أَغْلَظَ لِي فِي شَىْءٍ مَا أَغْلَظَ لِي فِيهِ حَتَّى طَعَنَ بِإِصْبَعِهِ فِي صَدْرِي فَقَالَ " يَا عُمَرُ أَلاَ تَكْفِيكَ آيَةُ الصَّيْفِ الَّتِي فِي آخِرِ سُورَةِ النِّسَاءِ " . وَإِنِّي إِنْ أَعِشْ أَقْضِ فِيهَا بِقَضِيَّةٍ يَقْضِي بِهَا مَنْ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَمَنْ لاَ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ ثُمَّ

(रज़ि.) ने जुम्आ के दिन ख़ुत्बा दिया और नबी (ﷺ) और अबू बकर (रज़ि.) का तज़्किरा किया। कहा, मैंने ख़्वाब देखा है गोया कि एक मुर्ग़ ने मुझे तीन ठोंगें मारी हैं और मैं समझता हूँ मेरी मौत क़रीब आ गई और कुछ लोग मुझे मशवरा दे रहे हैं कि मैं ख़लीफ़ा नामज़द कर दूँ और अल्लाह तआला अपने दीन को ज़ाया नहीं होने देगा, न आपकी ख़िलाफ़त को और न उस शरीअत को जिसे अपने नबी (ﷺ) को देकर भेजा है। अगर मुझे जल्द मौत आ जाये तो ख़िलाफ़त उन छ: हज़रात के आपसी मशवरे से तय होगी जिनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ुश-ख़ुश फ़ौत हुए और मैं जानता हूँ कुछ लोग जिनसे मैंने इस्लाम की ख़ातिर अपने इस हाथ से जंग लड़ी है, वो इस ख़िलाफ़त पर ऐतराज़ करेंगे। अगर वो ऐसा करेंगे तो वो अल्लाह के काफ़िर और गुमराह होंगे । फिर मैं अपने बाद अपने नज़दीक कलाला (की विरासत) का मसला सबसे अहम छोड़ रहा हूँ । मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से किसी मसले के बारे में इस क़द्र बार-बार नहीं पूछा जिस क़द्र कलाला के बारे में पूछा और आपने भी मेरे साथ किसी मसले में इस क़द्र शिद्दत नहीं बरती जितनी आपने मेरे साथ इस मसले में शिद्दत इख़्तियार फ़रमाई यहाँ तक कि आपने अपनी उंगली से मेरे सीने को ठोक कर फ़रमाया, 'ऐ उमर! क्या गर्मी के मौसम में उतरने वाली सूरह निसा की आख़िरी आयत

قَالَ اللَّهُمَّ إِنِّي أُشْهِدُكَ عَلَى أُمَرَاءِ الأَمْصَارِ وَإِنِّي إِنَّمَا بَعَثْتُهُمْ عَلَيْهِمْ لِيَعْدِلُوا عَلَيْهِمْ وَلِيُعَلِّمُوا النَّاسَ دِينَهُمْ وَسُنَّةَ نَبِيِّهِمْ صلى الله عليه وسلم وَيَقْسِمُوا فِيهِمْ فَيْئَهُمْ وَيَرْفَعُوا إِلَيَّ مَا أَشْكَلَ عَلَيْهِمْ مِنْ أَمْرِهِمْ ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ تَأْكُلُونَ شَجَرَتَيْنِ لاَ أَرَاهُمَا إِلاَّ خَبِيثَتَيْنِ هَذَا الْبَصَلَ وَالثُّومَ لَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا وَجَدَ رِيحَهُمَا مِنَ الرَّجُلِ فِي الْمَسْجِدِ أَمَرَ بِهِ فَأُخْرِجَ إِلَى الْبَقِيعِ فَمَنْ أَكَلَهُمَا فَلْيُمِتْهُمَا طَبْخًا

तुम्हारे लिये तसल्ली बख़्श नहीं है? और अगर मैं ज़िन्दा रहा तो मैं इसके बारे में फ़ैसला करूँगा कि इसके मुताबिक़ हर इंसान जो कुरआन पढ़ता है या नहीं पढ़ता है फ़ैसला कर सकेगा।' फिर फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह! मैं तुम्हें शहरों के गवर्नरों के बारे में गवाह बनाता हूँ कि मैंने उन्हीं लोगों पर सुन्नत की तालीम दीं और उनकी ग़नीमत उनमें तक़सीम कीं और उनके मामलात में अगर उन्हें कोई मुश्किल पेश आये तो उसे मेरे सामने पेश करें, फिर तुम ऐ लोगो! दो पौधे खाते हो, मैं उन्हें ख़बीस ही समझता हूँ ये प्याज़ और लहसुन।'. मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा, जब आप मस्जिद में किसी आदमी से उनकी बू महसूस करते तो आप उसे बक़ीअ की तरफ़ निकालने का हुक्म देते। लिहाज़ा जो शख़्स उन्हें खाना चाहता है वो उन्हें पकाकर उनकी बू ख़त्म कर दे।

(नसाई : 2/43, इब्ने माजह : 1014, 2726, 3363)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي عَرُوبَةَ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، كِلاَهُمَا عَنْ شَبَابَةَ بْنِ سَوَّارٍ، قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، جَمِيعًا عَنْ قَتَادَةَ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ

(1259) इमाम साहब अपने तीन उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

फ़वाइद : (1) नबी (ﷺ) ने लहसुन, प्याज़ और गन्दना खाकर मस्जिद में जाने से मना फ़रमाया है और इसका सबब इसकी बदबू को क़रार दिया है, जो इंसानों की तरह फ़रिश्तों के लिये भी अज़ियत और तकलीफ़ का बाइस है। इससे साबित होता है कि कोई भी बदबूदार चीज़ इस्तेमाल करने के बाद मस्जिद में या लोगों के इल्मी इज्तिमाअ में जहाँ फ़रिश्ते आते हैं, नहीं जाना चाहिये और लहसुन व

प्याज़ और गन्दना ऐसी तरकारियाँ हैं जिनका खाना बिल्इत्तिफ़ाक़ जाइज़ है। इसलिये आप ने बदबू के ज़ाइल होने के बाद मस्जिद में आने की इजाज़त दी है तो वो चीज़ें जिनका इस्तेमाल नाजाइज़ या कम से कम मक्रूह और नापसन्दीदा है जैसे हुक्का, सिगरेट, बीड़ी वग़ैरह इनको इस्तेमाल करने के बाद मस्जिद में आने की गुंजाइश कैसे निकल सकती है। **(2)** हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में ख़लीफ़ा की सिफ़ात और इस्लामी उमरा और हुक्काम की ज़िम्मेदारी को इन्तिहाई जामेइय्यत के साथ बयान कर दिया है। जिसकी रोशनी में हम अपनी हुकूमतों के उमरा और हुक्काम के अफ़आल व आमाल को परख सकते हैं और ये फ़ैसला कर सकते हैं क्या ये हुकूमतें इस्लामी हैं या नहीं? **(3)** हज़रत उमर (रज़ि.) ने ख़िलाफ़त के लिये छः हज़रात को नामज़द फ़रमाया था और ये हज़रात थे जिनको नबी (ﷺ) ने जन्नत की बशारत दी थी। यानी उसमान, अली, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, तलहा, ज़ुबैर और सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) जन्नत की बशारत पाने वाले दस सहाबा किराम (रज़ि.) में से अबू बक्र अबू उबैदा बिन जर्राह (रज़ि.) वफ़ात पा चुके थे और हज़रत उमर (रज़ि.) के सिवा बाक़ी सात थे लेकिन आपने क़राबतदारी की बिना पर सईद बिन ज़ैद को उनमें दाख़िल नहीं किया और उन हज़रात को पाबंद किया कि तीन दिन के अंदर-अंदर अपने में से किसी का इन्तिख़ाब कर लें। फिर आपसी मशवरे से तीसरे ख़लीफ़ा के तौर पर हज़रत उसमान (रज़ि.) को चुन लिया गया और उसके बाद तमाम लोगों ने उनकी बैअत कर ली और उनके इन्तिख़ाब पर इन्तिहाई मसर्रत और शादमानी का इज़हार किया और हज़रत उमर (रज़ि.) के इन्तिबाह (ख़बरदार करने) की बिना पर, उन लोगों ने ख़ामोशी इख़्तियार कर ली जो ख़िलाफ़त के लिये उन छः हज़रात की नामज़द पर कराहत महसूस करते थे। इसलिये वो खुलकर सामने नहीं आ सके, क्योंकि हज़रत उमर (रज़ि.) के कुछ अक़्वाल से महसूस होता है कि ये वो लोग थे जो ख़िलाफ़त बनू हाशिम के पास आने को नापसंद करते थे कि नुबूवत और ख़िलाफ़त एक ख़ानदान में जमा हो जायेंगी और उसमान (रज़ि.) के ख़लीफ़ा बनने की सूरत में ख़िलाफ़त बनू हाशिम के पास नहीं आई थी। **(4)** कलाला की तफ़्सीर में इख़्तिलाफ़ है, लेकिन जुम्हूर उम्मत के नज़दीक इससे मुराद वो मय्यित है जिसने अपने पीछे औलाद और वालिदैन में से किसी को न छोड़ा हो यानी उसके वारिस उसकी औलाद या वालिदैन न हों। आपके ख़्वाब की ये ताबीर जल्द ही ज़ाहिर हो गई कि आपको नमाज़े फ़ज्र में अबू लुअलुअ फ़ीरोज़ ने तीन बार ख़न्जर मारा जिसके नतीजे में आप शहीद हो गये।

बाब 19 : मस्जिद में गुमशुदा चीज़ की तलाश की मुमानिअत (मनाही) और तलाश करने वाले के ऐलान को सुनकर क्या कहा जायेगा

باب النَّهْىِ عَنْ نَشْدِ الضَّالَّةِ، فِي الْمَسْجِدِ وَمَا يَقُولُهُ مَنْ سَمِعَ النَّاشِدَ

(1260) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने किसी आदमी को बुलंद आवाज़ से मस्जिद में गुमशुदा चीज़ को तलाश करते सुना तो वो कहे, अल्लाह करे तेरी चीज़ तुझे न मिले क्योंकि मस्जिदें इस मक़सद के लिये नहीं बनाई गई।'
(अबू दाऊद : 21, इब्ने माजह : 767)

حَدَّثَنَا أَبُو الطَّاهِرِ، أَحْمَدُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ حَيْوَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي عَبْدِ اللَّهِ، مَوْلَى شَدَّادِ بْنِ الْهَادِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ سَمِعَ رَجُلاً يَنْشُدُ ضَالَّةً فِي الْمَسْجِدِ فَلْيَقُلْ لاَ رَدَّهَا اللَّهُ عَلَيْكَ فَإِنَّ الْمَسَاجِدَ لَمْ تُبْنَ لِهَذَا " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) **यन्शुदु :** वो तलाश करता है, ढूण्ढता है। (2) **अज़्ज़ाल्लह :** ज़वाल गुमशुदा चीज़।

(1261) इमाम साहब मज़्कूरा बाला रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِيهِ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا الْمُقْرِئُ، حَدَّثَنَا حَيْوَةُ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا الأَسْوَدِ، يَقُولُ حَدَّثَنِي أَبُو عَبْدِ اللَّهِ، مَوْلَى شَدَّادٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ. بِمِثْلِهِ .

(1262) हज़रत सुलैमान बिन बुरैदा (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं कि एक आदमी ने मस्जिद में ऐलान किया कि सुर्ख़ ऊँट के बारे में कौन बतायेगा? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुझे न मिले! मस्जिदें सिर्फ़ उन्हीं

وَحَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا الثَّوْرِيُّ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَجُلاً، نَشَدَ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ مَنْ دَعَا إِلَى الْجَمَلِ

الأَحْمَرِ . فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " لاَ وَجَدْتَ . إِنَّمَا بُنِيَتِ الْمَسَاجِدُ لِمَا بُنِيَتْ لَهُ

कामों के लिये बनी हैं जिनके लिये बनाई जाती हैं।'

(इब्ने माजह : 765)

फ़ायदा : मस्जिद बनाने का असल मक़सद नमाज़, तिलावत, ज़िक्र व अज़कार और दीन की तालीमात और वअ़ज़ व नसीहत है और लोगों के इज्तिमाअ़ से फ़ायदा उठाकर गुमशुदा चीज़ का ऐलान करना, इन मक़ासिद के मुनाफ़ी है। यहाँ तक कि इमाम मालिक इल्मी बहस और मुज़ाकरे को भी आवाज़ के बुलंद हो जाने की बिना पर नापसंदीदा क़रार देते हैं और कुछ हज़रात का ख़्याल है कि इंसान अपनी ज़ात की ज़रूरत के लिये मस्जिद में सवाल भी नहीं कर सकता, सिर्फ़ दीनी ज़रूरत के लिये या मफ़ादे आम्मह (आम लोगों के फ़ायदे) की चीज़ का सवाल कर सकता है। इसलिये आपने अपने गुमशुदा ऊँट के बारे में ऐलान करने वाले को रहमतुल्लिल आलमीन होने के बावजूद बद्दुआ दी, जिससे साबित होता है मस्जिद से ख़ारिज गुमशुदा चीज़ का ऐलान मस्जिद में करना दुरुस्त नहीं है। ख़ास कर नमाज़ और तालीम व तदरीस के औक़ात में।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ أَبِي سِنَانٍ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم لَمَّا صَلَّى قَامَ رَجُلٌ فَقَالَ مَنْ دَعَا إِلَى الْجَمَلِ الأَحْمَرِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ " لاَ وَجَدْتَ إِنَّمَا بُنِيَتِ الْمَسَاجِدُ لِمَا بُنِيَتْ لَهُ " .

(1263) हज़रत सुलैमान बिन बुरैदा (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो गये, एक आदमी ने खड़े होकर कहा, सुर्ख़ ऊँट के लिये किसने बुलाया है? यानी सुर्ख़ ऊँट किसको मिला है? इसके बारे में कौन बता सकता है? तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुझे न मिले, मसाजिद सिर्फ़ उन्ही कामों के लिये हैं जिनके लिये इनको बनाया गया है।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ شَيْبَةَ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ، عَنِ ابْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ جَاءَ أَعْرَابِيٌّ بَعْدَ مَا صَلَّى النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم صَلاَةَ الْفَجْرِ . فَأَدْخَلَ رَأْسَهُ مِنْ بَابِ الْمَسْجِدِ فَذَكَرَ

(1264) हज़रत इब्ने बुरैदा (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं कि जब नबी (ﷺ) सुबह की नमाज़ पढ़ चुके तो एक बदवी (देहाती) आया और मस्जिद के दरवाज़े से अपना सर अंदर किया फिर मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की। इमाम मुस्लिम (रह.)

بِمِثْلِ حَدِيثِهِمَا . قَالَ مُسْلِمٌ هُوَ شَيْبَةُ بْنُ نَعَامَةَ أَبُو نَعَامَةَ رَوَى عَنْهُ مِسْعَرٌ وَهُشَيْمٌ وَجَرِيرٌ وَغَيْرُهُمْ مِنَ الْكُوفِيِّينَ .

फ़रमाते हैं कि मुहम्मद बिन शैबा से मुराद अबू नआमा है जिससे मिस्अर, हुशैम, जरीर और दूसरे कूफ़ी रावी रिवायत बयान करते हैं।

باب السَّهْوِ فِي الصَّلاَةِ وَالسُّجُودِ لَهُ

बाब 20 : नमाज़ में भूल और उसके लिये सज्दा करना

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا قَامَ يُصَلِّي جَاءَهُ الشَّيْطَانُ فَلَبَسَ عَلَيْهِ حَتَّى لاَ يَدْرِيَ كَمْ صَلَّى فَإِذَا وَجَدَ ذَلِكَ أَحَدُكُمْ فَلْيَسْجُدْ سَجْدَتَيْنِ وَهُوَ جَالِسٌ " .

(1265) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से कोई जब नमाज़ पढ़ने के लिये खड़ा होता है तो शैतान आकर उसे इल्तिबास (शुब्हा) में डालता है यहाँ तक कि उसे पता नहीं रहता कि उसने कितनी रकआत पढ़ी हैं, तुममें से कोई जब इस काम में मुब्तला हो जाये तो वो बैठकर यानी आख़िर में दो सज्दे कर ले।'

(सहीहबुख़ारी:1232, अबूदाऊद:1030, नसाई:3/31)

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، - وَهُوَ ابْنُ عُيَيْنَةَ - ح قَالَ وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، عَنِ اللَّيْثِ بْنِ سَعْدٍ، كِلاَهُمَا عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(1266) इमाम साहब अपने चार उस्तादों से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) हदीस के हम मानी हदीस बयान करते हैं।

(तिर्मिज़ी : 397)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ

(1267) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब अज़ान कही जाती है तो शैतान गोज़ मारता हुआ, पुश्त फेर कर भागता है ताकि

أَبَا هُرَيْرَةَ، حَدَّثَهُمْ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا نُودِيَ بِالأَذَانِ أَدْبَرَ الشَّيْطَانُ لَهُ ضُرَاطٌ حَتَّى لاَ يَسْمَعَ الأَذَانَ فَإِذَا قُضِيَ الأَذَانُ أَقْبَلَ فَإِذَا ثُوِّبَ بِهَا أَدْبَرَ فَإِذَا قُضِيَ التَّثْوِيبُ أَقْبَلَ يَخْطُرُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَنَفْسِهِ يَقُولُ اذْكُرْ كَذَا اذْكُرْ كَذَا . لِمَا لَمْ يَكُنْ يَذْكُرُ حَتَّى يَظَلَّ الرَّجُلُ إِنْ يَدْرِي كَمْ صَلَّى فَإِذَا لَمْ يَدْرِ أَحَدُكُمْ كَمْ صَلَّى فَلْيَسْجُدْ سَجْدَتَيْنِ وَهُوَ جَالِسٌ " .

अज़ान सुनाई न दे। जब अज़ान मुकम्मल हो जाती है वापस आता है, जब नमाज़ के लिये तकबीर कही जाती है, फिर जाता है जब तकबीर कही जा चुकती है तो आकर इंसान और उसके दिल में हाइल होता है। यानी उसके दिल में शुकूक व शुब्हात पैदा करता है। कहता है, फ़लाँ बात याद करो, फ़लाँ चीज़ याद करो, वो चीज़ें जो उसे याद नहीं होतीं यहाँ तक कि उसे याद नहीं रहता उसने कितनी रकआत पढ़ी हैं। जब तुममें से किसी को ये याद न रहे कि उसने कितनी रकआत पढ़ी हैं तो वो बैठे-बैठे (तशह्हुद में) दो सज्दे कर ले।'

(सहीह बुख़ारी : 1231, नसाई : 3/31)

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، عَنْ عَبْدِ رَبِّهِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " إِنَّ الشَّيْطَانَ إِذَا ثُوِّبَ بِالصَّلاَةِ وَلَّى وَلَهُ ضُرَاطٌ " . فَذَكَرَ نَحْوَهُ وَزَادَ " فَهَنَّاهُ وَمَنَّاهُ وَذَكَّرَهُ مِنْ حَاجَاتِهِ مَا لَمْ يَكُنْ يَذْكُرُ " .

(1268) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब नमाज़ के लिये तकबीर कही जाती है तो शैतान हवा ख़ारिज करता हुआ पुश्त फेरकर भागता है।' ऊपर की तरह रिवायत सुनाई और उसमें ये इज़ाफ़ा किया, 'उसे रग़बतें और उम्मीदें दिलाता है और उसे उसकी वो ज़रूरतें याद दिलाता है जो उसे याद न थीं।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : हन्नाहु तहन्नअह : शौक़ व रग़बत दिलाना, हन्नाहु बिकज़ा का मानी होता है उस चीज़ की मुबारकबाद देना। मन्नाह : आरज़ू और उम्मीद दिलाना, यहाँ दोनों लफ़्ज़ों से मक़सूद दिली ख़्यालात व तसव्वुरात हैं।

फ़वाइद : (1) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की हदीस़ से ये साबित होता है कि अल्लाह तआला ने अज़ान और तकबीर में ये ख़ासियत और तासीर रखी है कि उनको सुनकर शैतान भाग खड़ा होता है। यानी वो शैतान जो हर इंसान के साथ लगा हुआ है। (2) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की हदीस़ का ज़ाहिरी मफ़्हूम ये है कि अगर इंसान को ये याद न रहे कि उसने नमाज़ की कितनी रकअतें पढ़ी हैं कम हैं

या ज़्यादा पढ़ लीं हैं तो वो आख़िर में दो सज्दे कर ले। हसन बसरी (रह.) और सलफ़ की एक जमाअत का यही मौक़िफ़ है। शअबी, औज़ाई (रह.) और बहुत से सलफ़ का नज़रिया ये है कि ऐसी सूरत में वो नमाज़ नये सिरे से पढ़ेगा। अगर फिर याद न रहा तो फिर नये सिरे से पढ़ेगा जब तक यक़ीन नहीं होगा नमाज़ नये सिरे से पढ़ता रहेगा। और कुछ का ख़्याल है चौथी बार के बाद इआदा (लौटाना) नहीं है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) का मस्लक ये है अगर पहली बार शक हुआ है तो नमाज़ नये सिरे से पढ़े, अगर ऐसे होता रहता है तो फिर ज़न्ने ग़ालिब पर अमल करे। जैसे तीन और चार में तरद्दुद है तो फिर ज़न्ने ग़ालिब पर अमल करके दो सज्दे कर ले और अगर ज़न्ने ग़ालिब न हो तो जितनी रकआत यक़ीनी हैं यानी तीन जिसको बिनाअलल अक़ल्ल कहते हैं। समझकर चौथी रकअत पढ़कर दो सज्दे कर ले। इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद (रह.) के नज़दीक यक़ीनी रकआत पर अमल करे और आख़िर में दो सज्दे कर ले। अहादीस की रोशनी में सहीह मौक़िफ़ यही है कि फ़ल्यतहिरुस्सवाब सहीह बात को पहुँचने की कोशिश करे। जैसाकि इब्ने मसऊद (रज़ि.) की रिवायत है अगर ये न हो सके तो फिर वल्युब्नि अ़ला मस्तैक़न जितनी रकआत का यक़ीन हो उसके मुताबिक़ पढ़े जैसाकि अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) की रिवायत है क्योंकि अहादीस एक दूसरी की तफ़्सीर व तौज़ीह करती हैं। रही वो हदीस जिसमें इआदे (लौटाने) का हुक्म है तो इसके बारे में मौलाना शब्बीर अहमद उसमानी लिखते हैं, ये हदीस की किताबों में नहीं मिलती। (फ़तहुल मुल्हिम : 2/156)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ ابْنِ بُحَيْنَةَ، قَالَ صَلَّى لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَكْعَتَيْنِ مِنْ بَعْضِ الصَّلَوَاتِ ثُمَّ قَامَ فَلَمْ يَجْلِسْ فَقَامَ النَّاسُ مَعَهُ فَلَمَّا قَضَى صَلاَتَهُ وَنَظَرْنَا تَسْلِيمَهُ كَبَّرَ فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ وَهُوَ جَالِسٌ قَبْلَ التَّسْلِيمِ ثُمَّ سَلَّمَ ‏.‏

(1269) हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुहैनह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किसी नमाज़ की दो रकअतें पढ़ाईं फिर (तीसरी के लिये) खड़े हो गये, दरम्यानी तशह्हुद के लिये न बैठे और लोग भी आपके साथ खड़े हो गये। तो जब आपने नमाज़ अदा कर ली और हमने आपके सलाम का इन्तिज़ार किया, आपने तकबीर कही और बैठे-बैठे सलाम से पहले दो सज्दे किये फिर सलाम फेरा।

(सहीह बुख़ारी : 829, 830, 1224, 1225, 1230, 6670, अबू दाऊद : 1034, 1035, तिर्मिज़ी : 391, नसाई : 2/44, 2/244, 3/19, 3/34, इब्ने माजह : 1206, 1207)

फ़वाइद : (1) अ़ब्दुल्लाह बिन बुहैना के बारे में बज़ाहिर ये मालूम होता है कि बुहैना अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) का बाप है। हालांकि हक़ीक़त ये है कि ये उनकी वालिदा (माँ) का नाम है, बाप का नाम मालिक है। (2) अगर इंसान दरम्यानी तशह्हुद भूल जाये और क़ियाम के क़रीब याद आये तो वो वापस नहीं आयेगा, बल्कि उसकी जगह सलाम से पहले दो सज्दे करेगा, अगर बैठने के क़रीब है तो वापस आ जायेगा और सज्दए सह्व नहीं करेगा।

(1270) अ़ब्दुल्लाह बिन बुहैना असदी (रज़ि.) जो अ़ब्दुल मुत्तलिब की औलाद का हलीफ़ था उससे रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़ुहर की नमाज़ में (दूसरी रकअ़त के बाद) बैठने की बजाए (तीसरी रकअ़त के लिये) खड़े हो गये। तो जब आपने अपनी नमाज़ मुकम्मल कर ली, आपने बैठे-बैठे सलाम से पहले हर सज्दे के लिये तकबीर कहकर दो सज्दे कर लिये और लोगों ने भी आपके साथ दो सज्दे किये, उस जुलूस (बैठने) की जगह जो आप भूल गये थे।

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا ابْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ ابْنِ بُحَيْنَةَ الأَسْدِيِّ، حَلِيفِ بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَامَ فِي صَلاَةِ الظُّهْرِ وَعَلَيْهِ جُلُوسٌ فَلَمَّا أَتَمَّ صَلاَتَهُ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ يُكَبِّرُ فِي كُلِّ سَجْدَةٍ وَهُوَ جَالِسٌ قَبْلَ أَنْ يُسَلِّمَ وَسَجَدَهُمَا النَّاسُ مَعَهُ مَكَانَ مَا نَسِيَ مِنَ الْجُلُوسِ .

फ़वाइद : (1) मुत्तफ़क़ अ़लैह (बुख़ारी व मुस्लिम) की रिवायत की रू से अ़ब्दुल्लाह बिन मालिक (रज़ि.) अ़ब्दुल मुत्तलिब की औलाद के हलीफ़ थे और सीरत व तारीख़ के माहिरीन के नज़दीक मुत्तलिब बिन अ़ब्दे मुनाफ़ की औलाद के हलीफ़ थे। (2) इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक और इमाम शाफ़ेई (रह.) के नज़दीक पहला तशह्हुद, रुकूअ़ व सुजूद या क़ियाम की तरह नमाज़ का रुक्न या फ़र्ज़ नहीं है, इसलिये इसकी जगह सुजूदे सह्व किफ़ायत करेंगे, लेकिन रुक्न की जगह ये काफ़ी नहीं होंगे। लेकिन इमाम अहमद और कुछ हज़रात के नज़दीक पहला तशह्हुद भी ज़रूरी है लेकिन इसकी जगह, इस हदीस़ की रू से सुजूदे सह्व किफ़ायत करेंगे और उनके लिये तकबीर कहनी होगी।

(1271) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मालिक इब्ने बुहैना अज़दी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पहले दोगाना के बाद जिसमें आप बैठना चाहते थे खड़े हो गये और

وَحَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَالِكٍ ابْنِ بُحَيْنَةَ

الأَزْدِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَامَ فِي الشَّفْعِ الَّذِي يُرِيدُ أَنْ يَجْلِسَ فِي صَلاَتِهِ فَمَضَى فِي صَلاَتِهِ فَلَمَّا كَانَ فِي آخِرِ الصَّلاَةِ سَجَدَ قَبْلَ أَنْ يُسَلِّمَ ثُمَّ سَلَّمَ .

नमाज़ पढ़ते रहे। तो जब नमाज़ के आख़िर में पहुँच गये तो सलाम से पहले सज्दे किये और फिर सलाम फेरा।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَحْمَدَ بْنِ أَبِي خَلَفٍ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ دَاوُدَ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا شَكَّ أَحَدُكُمْ فِي صَلاَتِهِ فَلَمْ يَدْرِ كَمْ صَلَّى ثَلاَثًا أَمْ أَرْبَعًا فَلْيَطْرَحِ الشَّكَّ وَلْيَبْنِ عَلَى مَا اسْتَيْقَنَ ثُمَّ يَسْجُدُ سَجْدَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يُسَلِّمَ فَإِنْ كَانَ صَلَّى خَمْسًا شَفَعْنَ لَهُ صَلاَتَهُ وَإِنْ كَانَ صَلَّى إِتْمَامًا لأَرْبَعٍ كَانَتَا تَرْغِيمًا لِلشَّيْطَانِ " .

(1272) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से किसी को अपनी नमाज़ के बारे में शक पड़ जाये और उसे मालूम न हो सके कि उसने तीन रकआत पढ़ी हैं या चार तो वो शक को फेंक दे (नज़र अन्दाज़ कर दे) और यक़ीन पर बिना करे फिर सलाम से पहले दो सज्दे करे, अगर उसने पाँच रकआत पढ़ ली हैं तो उसकी नमाज़ को जोड़ा (छः रकआत) कर देंगे और अगर उसने उस रकअत से चार की तक्मील कर ली है तो ये सज्दे शैतान की ज़िल्लत व रुस्वाई का बाइस होंगे।'

(अबू दाऊद : 1024, 1026, 1027, नसाई : 3/23, इब्ने माजह : 1210)

حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي عَمِّي عَبْدُ اللَّهِ، حَدَّثَنِي دَاوُدُ بْنُ قَيْسٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَفِي مَعْنَاهُ قَالَ" يَسْجُدُ سَجْدَتَيْنِ قَبْلَ السَّلاَمِ". كَمَا قَالَ سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ .

(1273) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं।

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम हुआ बिना अलल अक़ल्ल यानी यक़ीन के मुताबिक़ नमाज़ पढ़ने की सूरत में भी सुजूदे सह्व सलाम से पहले होंगे। अगरचे इस सूरत में नमाज़ में ज़्यादती ही हो जाये यानी चार की बजाए पाँच रकआत हो जायें।

(1274) हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें नमाज़ पढ़ाई। इब्राहीम ने कहा, उसमें आपने ज़्यादती या कमी की तो जब आपने सलाम फेरा तो आपसे अ़र्ज़ किया गया, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या नमाज़ में कोई नया हुक्म आ गया है? आपने पूछा, वो क्या है? सहाबा ने कहा, आपने इतनी-इतनी रकअ़तें पढ़ाई हैं। आपने अपने दोनों पाँव मोड़े, क़िब्ले की तरफ़ रुख़ किया और दो सज्दे किये फिर सलाम फेरा। फिर आपने हमारी तरफ़ रुख़ किया और फ़रमाया, 'अगर नमाज़ में कोई नया हुक्म नाज़िल होता तो मैं तुम्हें बता देता, लेकिन मैं भी इंसान हूँ, तुम्हारी तरह भूल जाता हूँ, इसलिये जब मैं भूल जाऊँ तो मुझे याद दिला दिया करो और जब तुममें से किसी को अपनी नमाज़ के बारे में शक पड़ जाये तो वो दुरुस्तगी या सहीह बात की तरफ़ पहुँचने की कोशिश करे और उसके मुताबिक़ नमाज़ पूरी कर ले, फिर दो सज्दे कर ले।'

(सहीह बुख़ारी : 401, 6671, अबू दाऊद : 1020, नसाई: 3/28, 3/39, इब्ने माजह : 11/12, 12/12)

وَحَدَّثَنَا عُثْمَانُ، وَأَبُو بَكْرٍ ابْنَا أَبِي شَيْبَةَ وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ جَمِيعًا عَنْ جَرِيرٍ، - قَالَ عُثْمَانُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، - عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، قَالَ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم - قَالَ إِبْرَاهِيمُ زَادَ أَوْ نَقَصَ - فَلَمَّا سَلَّمَ قِيلَ لَهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَحَدَثَ فِي الصَّلاَةِ شَىْءٌ قَالَ " وَمَا ذَاكَ " . قَالُوا صَلَّيْتَ كَذَا وَكَذَا - قَالَ - فَثَنَى رِجْلَيْهِ وَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ فَقَالَ " إِنَّهُ لَوْ حَدَثَ فِي الصَّلاَةِ شَىْءٌ أَنْبَأْتُكُمْ بِهِ وَلَكِنْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ أَنْسَى كَمَا تَنْسَوْنَ فَإِذَا نَسِيتُ فَذَكِّرُونِي وَإِذَا شَكَّ أَحَدُكُمْ فِي صَلاَتِهِ فَلْيَتَحَرَّ الصَّوَابَ فَلْيُتِمَّ عَلَيْهِ ثُمَّ لْيَسْجُدْ سَجْدَتَيْنِ " .

(1275) इमाम साहब दो और उस्तादों से रिवायत बयान करते हैं, इब्ने बिश्र की रिवायत में, 'वो ग़ौर करे, सेहत के क़रीबतर क्या है' और वकीअ़ की रिवायत में है, 'वो सेहत का क़सद करे यानी ज़न्ने ग़ालिब (दिल जिधर माइल हो उस) पर अ़मल करे।'

حَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ بِشْرٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، كِلاَهُمَا عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ مَنْصُورٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ بِشْرٍ " فَلْيَنْظُرْ أَحْرَى ذَلِكَ لِلصَّوَابِ " . وَفِي رِوَايَةِ وَكِيعٍ " فَلْيَتَحَرَّ الصَّوَابَ " .

(1276) इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं कि फ़ल्यन्ज़ुर अहरा ज़ालिक लिस्सवाब 'वो ग़ौर व फ़िक्र करे, सेहत व दुरुस्तगी के क़रीबतर सूरत कौनसी है?'

وَحَدَّثَنَاهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ مَنْصُورٌ " فَلْيَنْظُرْ أَحْرَى ذَلِكَ لِلصَّوَابِ " .

(1277) इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं कि फ़ल्यहतर्रस्सवाब वो सहीह का क़सद करे।

حَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ الأُمَوِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ " فَلْيَتَحَرَّ الصَّوَابَ " .

(1278) इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं कि फ़ल्यतहर्र अक़रब ज़ालिक लिस्सवाब 'उनमें से जो सूरत सहीह के क़रीबतर हो उस तक पहुँचने का इरादा करे।'

حَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ " فَلْيَتَحَرَّ أَقْرَبَ ذَلِكَ إِلَى الصَّوَابِ " .

(1279) इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं कि फ़ल्यतहर्रल्लज़ी युरा अन्नहुस्सवाब 'वो उसका क़सद करे जिसके बारे में ये समझा जाये कि वो सहीह है या दुरुस्त है।'

وَحَدَّثَنَاهُ يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا فُضَيْلُ بْنُ عِيَاضٍ، عَنْ مَنْصُورٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ " فَلْيَتَحَرَّ الَّذِي يُرَى أَنَّهُ الصَّوَابُ " .

(1280) इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं कि फ़ल्यतहर्रस्सवाब 'वो सहीह का क़सद करे।'

وَحَدَّثَنَاهُ ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ، عَنْ مَنْصُورٍ، بِإِسْنَادِ هَؤُلاَءِ وَقَالَ " فَلْيَتَحَرَّ الصَّوَابَ " .

(1281) हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ुहर की नमाज़ पाँच रकआत पढ़ाईं, जब आपने सलाम फेरा तो आपसे पूछा गया, क्या नमाज़

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى

में इज़ाफ़ा कर दिया गया है? आपने पूछा, वो क्या है? सहाबा ने कहा, आपने पाँच रकआत पढ़ी हैं। तो आपने दो सज्दे कर लिये।

(सहीह बुख़ारी : 404, 1226, 7249, अबू दाऊद : 1019, तिर्मिज़ी : 292, नसाई : 3/31, 3/32, इब्ने माजह : 1205)

الله عليه وسلم صَلَّى الظُّهْرَ خَمْسًا فَلَمَّا سَلَّمَ قِيلَ لَهُ أَزِيدَ فِي الصَّلاَةِ قَالَ " وَمَا ذَاكَ " . قَالُوا صَلَّيْتَ خَمْسًا . فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ .

(1282) हज़रत इब्राहीम से रिवायत है कि अल्क़मा ने बयान किया आपने उन्हें पाँच रकआत पढ़ा दीं।

(अबू दाऊद : 1022, नसाई : 3/32,3/33)

وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، أَنَّهُ صَلَّى بِهِمْ خَمْسًا .

(1283) इब्राहीम बिन सुवैद (रह.) बयान करते हैं कि अल्क़मा (रज़ि.) ने हमें ज़ुहर की नमाज़ पाँच रकआत पढ़ा दीं तो जब उसने सलाम फेरा लोगों ने कहा, ऐ अबू शिब्ल! आपने तो पाँच रकआत पढ़ा दी हैं। उसने कहा, हर्गिज़ मैंने ये काम नहीं किया। लोगों ने कहा, क्यों नहीं और मैं लोगों के एक तरफ़ था और मैं नौजवान था तो मैंने कहा, क्यों नहीं! आपने वाक़ेई पाँच रकआत पढ़ाई हैं। उसने कहा, ऐ आवर! तू भी यही कहता है? तो मैंने कहा, हाँ। इब्राहीम ने कहा, तो फिर गये और दो सज्दे किये फिर सलाम फेरा और फिर कहा, अब्दुल्लाह ने कहा, हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पाँच रकआत पढ़ा दीं तो जब आप फिरे लोगों में तश्वीश पैदा हुई। तो आपने पूछा, तुम्हें क्या हुआ है? लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या नमाज़ में इज़ाफ़ा हो गया है? आपने फ़रमाया, नहीं।

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سُوَيْدٍ، قَالَ صَلَّى بِنَا عَلْقَمَةُ الظُّهْرَ خَمْسًا فَلَمَّا سَلَّمَ قَالَ الْقَوْمُ يَا أَبَا شِبْلٍ قَدْ صَلَّيْتَ خَمْسًا . قَالَ كَلاَّ مَا فَعَلْتُ . قَالُوا بَلَى - قَالَ - وَكُنْتُ فِي نَاحِيَةِ الْقَوْمِ وَأَنَا غُلاَمٌ فَقُلْتُ بَلَى قَدْ صَلَّيْتَ خَمْسًا . قَالَ لِي وَأَنْتَ أَيْضًا يَا أَعْوَرُ تَقُولُ ذَاكَ قَالَ قُلْتُ نَعَمْ . قَالَ فَانْفَتَلَ فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ ثُمَّ قَالَ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم خَمْسًا فَلَمَّا انْفَتَلَ تَوَشْوَشَ الْقَوْمُ بَيْنَهُمْ فَقَالَ " مَا شَأْنُكُمْ " . قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلْ زِيدَ فِي الصَّلاَةِ قَالَ " لاَ " . قَالُوا فَإِنَّكَ قَدْ

صَلَّيْتَ خَمْسًا . فَانْفَتَلَ ثُمَّ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ ثُمَّ قَالَ " إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ أَنْسَى كَمَا تَنْسَوْنَ " . وَزَادَ ابْنُ نُمَيْرٍ فِي حَدِيثِهِ " فَإِذَا نَسِيَ أَحَدُكُمْ فَلْيَسْجُدْ سَجْدَتَيْنِ " .

लोगों ने कहा, तो आपने पाँच रकअ़ात पढ़ा दी हैं तो आप फिरे और दो सज्दे किये फिर सलाम फेरा और फिर फ़रमाया, 'नहीं! बस तुम्हारी तरह बशर हूँ मैं भी भूल जाता हूँ जैसे तुम भूल जाते हो।' और इब्ने नुमैर ने अपनी हदीस़ में ये इज़ाफ़ा किया तो जब तुममें से कोई भूल जाये तो वो दो सज्दे कर ले।

وَحَدَّثَنَاهُ عَوْنُ بْنُ سَلاَّمٍ الْكُوفِيُّ، أَخْبَرَنَا أَبُو بَكْرٍ النَّهْشَلِيُّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الأَسْوَدِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم خَمْسًا فَقُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ أَزِيدَ فِي الصَّلاَةِ قَالَ " وَمَا ذَاكَ " . قَالُوا صَلَّيْتَ خَمْسًا . قَالَ " إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ أَذْكُرُ كَمَا تَذْكُرُونَ وَأَنْسَى كَمَا تَنْسَوْنَ " . ثُمَّ سَجَدَ سَجْدَتَىِ السَّهْوِ .

(1284) हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें पाँच रकअ़ात पढ़ा दीं तो हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या नमाज़ में इज़ाफ़ा कर दिया गया है? आपने पूछा, ये क्या? लोगों ने कहा, आपने पाँच रकअ़ात पढ़ाई हैं। आपने फ़रमाया, 'मैं भी बस तुम्हारी तरह बशर हूँ मैं याद रखता हूँ जिस तरह तुम याद रखते हो और मैं भूल जाता हूँ जिस तरह तुम भूलते हो।' फिर आपने भूलने के दो सज्दे किये।

(सहीह बुख़ारी : 1258)

फ़वाइद (1) : इन हदीसों से साबित होता है कि आप बशर थे। बक़ौल अ़ल्लामा सईदी क़ुरआन करीम से क़तइय्यत के साथ जो मालूम है वो ये है कि आप नौए इंसान से मब्ऊस़ हुए आप इंसाने कामिल और अफ़ज़लुल बशर हैं। (शरह सहीह मुस्लिम, जिल्द 2, पेज नं. 145) **(2)** क़ुरआन मजीद में रसूलुल्लाह (ﷺ) पर ख़ुद इत्लाक़ हुआ है और बक़ौल अ़ल्लामा सईदी इसमें कोई शक नहीं रसूलुल्लाह (ﷺ) इल्म व हिदायत के ऐतिबार से अ़ला वजहिल कमाल नूर थे और ये भी खुली हक़ीक़त है कि कुफ़्र, शिर्क और जहालत के अन्धेरों को दूर करना अम्बिया का काम है और ये कि अफ़ज़ल नूर ही है जो इल्मे हिदायत का नूर है। (जिल्द 2, पेज नं. 145) आपका इल्म व हिदायत के ऐतिबार से नूर होना, इसका तो कोई मुसलमान भी इंकार नहीं कर सकता। **(3)** इस हदीस़ से साबित होता है कि आप भी कई बार भूल जाते थे, लेकिन इस भूल का ताल्लुक़ बिल्इत्तिफ़ाक़ उन बातों से नहीं जो आपको उम्मत तक पहुँचाने के लिये बताई जाती थीं। रुश्दो-हिदायत की तब्लीग़ के बाद भूल का इम्कान है। लेकिन आप भूल-चूक पर क़ायम नहीं रह सकते थे क्योंकि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आगाह कर दिया जाता था।

अगर आपको ख़ुद याद नहीं आता था या किसी की तवज्जह दिलाने से याद नहीं आता था, इंसानों के साथ निस्यान में मुशाबिहत, महज़ भूल के ऐतबार से है। जबकि आदम (अलै.) के बारे में आया, नसि-य आदम व नसियत ज़ुर्रिय्यतुहू भूल आदम की फ़ितरत में थी, इसलिये उनकी औलाद भी भूल जाती है। लेकिन भूल के सबब व इल्लत का यकसाँ होना लाज़िम नहीं है और न इससे ये लाज़िम आता है कि हमारी भूल और आपकी कैफ़ियत यकसाँ है। लेकिन ये बातें महज़ मुबाल्गे में हैं हम क़िब्ले के मोहताज, उनका ख़ुद क़िब्ला मोहताज, हम किसी से नमाज़ में बात करें तो नमाज़ टूट जाये और सरकार किसी नमाज़ी से नमाज़ में बात करें तो नमाज़ क़ायम रहे। क्योंकि अगर ये सूरते हाल होती तो जब आप बैतुल मक़्दिस की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ते थे तो बैतुल्लाह की तरफ़ रुख़ करने के लिये बेताब न होते, नमाज़ में आपके सलाम का बुलंद आवाज़ से जवाब मरहमत फ़रमाते। उनका सवाल का जवाब नमाज़ के अंदर ही देते, अगर आपके फ़ुज़्लात पाक होते तो आप लोगों को उनसे महरूम न फ़रमाते। आप सिंगी लगवाते थे तो लोगों में ये ख़ून तक़सीम फ़रमाते ताकि वो उसको पी लें, फिर पाख़ाना व पेशाब किसी बर्तन में करते और फिर उसको तक़सीम कर देते या कम से कम सहाबा किराम (रज़ि.) आप(ﷺ) के लुआब और वुज़ू के पानी की तरह उन पर झपटते और उनके अहकाम, आम इंसानों के अहकाम से अलग होते, आपकी तहारत उनसे मुतास्सिर न होती। **(4)** ये हदीस़ इस बात की दलील है कि अगर इंसान एक रकअत भूलकर ज़्यादा पढ़ ले तो उसकी नमाज़ बातिल न होगी और नमाज़ के सलाम के बाद अगर मुक़्तदी बतायें और इस सिलसिले में कलाम हो तो फिर भी नमाज़ बातिल नहीं होगी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के ख़ुसूसी शागिर्द अल्क़मा ने इस हदीस़ का यही मफ़्हूम समझा इसलिये बातचीत के बाद सलाम से पहले दो सज्दे सह्व ही किये। नये सिरे से नमाज़ नहीं पढ़ी। इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई, इमाम अहमद (रह.) और जुम्हूर सलफ़ का यही क़ौल है। लेकिन अहनाफ़ के नज़दीक बक़द्र तशह्हुद बैठने के बाद उठा है तो फिर सज्दए सह्व करके सलाम फेरेगा, बशर्तेकि इस दौरान बातचीत न की। अगर चार रकआत के बाद बैठा नहीं है और पाँचवीं रकअत पढ़ ली तो फिर एक और रकअत पढ़कर सलाम फेरे और ये छः रकआत इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ के नज़दीक नफ़ल नमाज़ होगी और इमाम मुहम्मद के नज़दीक ये नमाज़ नहीं होगी। **(5)** अगर कोई इंसान भूलकर पाँचवीं रकअत शुरू कर दे तो दूसरे सज्दे से पहले-पहले जहाँ भी पता चल जाये तशह्हुद के लिये बैठ जाये और सज्दए सह्व कर ले। **(6) सज्दए सह्व का तरीक़ा :** नमाज़ में सह्व की हदीस़ में पाँच सूरतें आई हैं (1) आप दो रकअत के बाद तीसरी रकअत के लिये बैठे बग़ैर खड़े हो गये। (2) दो रकअत के बाद सलाम फेर दिया। (3) तीन रकअत के बाद सलाम फेर दिया। (4) शक की सूरत में सज्दा किया। (5) पाँच रकआत पढ़ाने की सूरत में सज्दा किया।

सज्दए सह्व के तरीक़े में इख़्तिलाफ़ है : (1) इमाम दाऊद ज़ाहिरी के नज़दीक सिर्फ़ उन सूरतों में सज्दए सह्व किया जायेगा, जहाँ नबी (ﷺ) से साबित है और इस तरह पहले या बाद में किया जायेगा

जैसे आपने किया था। भूल की किसी और सूरत में सज्दा नहीं किया जायेगा। (2) अहनाफ़ के नज़दीक सज्दए सह्व हर सूरत में सलाम से पहले होगा। यानी तशह्हुद पढ़ने के बाद सलाम फेरकर सज्दए सह्व करेगा, फिर नये सिरे से तशह्हुद पढ़कर दरूद और दुआओं के बाद सलाम फेरा जायेगा। (3) मालिकिया के नज़दीक नमाज़ में अगर कमी वाक़ेअ हुई जैसे पहला तशह्हुद रह गया है तो सज्दए सह्व सलाम से पहले होंगे, अगर नमाज़ में इज़ाफ़ा हुआ। जैसे तीसरी रकअत के बाद बैठ गया है और फिर उठा है तो सज्दए सह्व बाद में होंगे। (4) हनाबिला के नज़दीक नबी (ﷺ) ने जिस जगह सलाम से पहले सज्दा किया है वहाँ पहले किया जायेगा और जहाँ बाद में सज्दा किया है वहाँ बाद में किया जायेगा, अगर कोई नई सूरत सामने आ जाये तो फिर सज्दए सह्व पहले होंगे। (5) इमाम इस्हाक़ बिन राहवे का नज़रिया है आपसे साबित सूरतों में इमाम अहमद वाला और नई सूरत में इमाम मालिक वाला है। सबसे बेहतर तरीक़ा यही है और अइम्मा का इख़्तिलाफ़ बेहतर और औला तरीक़ा में ही है। जवाज़ में इख़्तिलाफ़ नहीं है कि सलाम से पहले कर ले या बाद में, हर सूरत जाइज़ है और आम आदमी के लिये इमाम शाफ़ेई वाला तरीक़ा ही बेहतर है। अक्सर जगह आपने पहले ही सज्दे किये हैं और बाद में सलाम फेरा है जैसाकि मज़्कूरा बाला अहादीस में गुज़र चुका है और नमाज़ में भूल एक बार से ज़्यादा बार हो तो भी सज्दे दो ही करने होंगे। (7) इब्राहीम बिन सुवैद, अल्क़मा के शागिर्द थे और इसी वजह से उन्हें या आवर से ख़िताब किया। क्योंकि शागिर्द उस्ताद की ऐसी बात को बुरा नहीं समझता, अगर किसी को इस अन्दाज़ से तकलीफ़ पहुँचती हो तो फिर ये तरीक़ा दुरुस्त नहीं होगा। मगर ये कि उसके बग़ैर उसका पता न चलता हो जैसाकि कुछ रावियों के नामों के साथ आमश, अअ्रज वग़ैरह आता है।

وَحَدَّثَنَا مِنْجَابُ بْنُ الْحَارِثِ التَّمِيمِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ مُسْهِرٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَزَادَ أَوْ نَقَصَ - قَالَ إِبْرَاهِيمُ وَالْوَهْمُ مِنِّي - فَقِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَزِيدَ فِي الصَّلاَةِ شَيْءٌ فَقَالَ " إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ أَنْسَى كَمَا تَنْسَوْنَ فَإِذَا نَسِيَ أَحَدُكُمْ فَلْيَسْجُدْ سَجْدَتَيْنِ وَهُوَ جَالِسٌ " . ثُمَّ تَحَوَّلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ .

(1285) हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ाई, उसमें इज़ाफ़ा या कमी की (इब्राहीम का क़ौल है यहाँ वहम मुझे हुआ है) पूछा गया, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या नमाज़ में इज़ाफ़ा कर दिया गया है? तो आपने फ़रमाया, 'मैं भी तुम्हारी तरह इंसान हूँ, मैं भी भूल सकता हूँ, जैसे तुम भूलते हो, तो जब तुममें से कोई भूल जाये तो वो बैठे-बैठे दो सज्दे कर ले।' फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) क़िब्ला रुख़ हुए और दो सज्दे किये।

(सहीह बुख़ारी : 1021, इब्ने माजह : 1203)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا حَفْصٌ، وَأَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ سَجَدَ سَجْدَتَىِ السَّهْوِ بَعْدَ السَّلاَمِ وَالْكَلاَمِ .

(1286) हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सुजूदे सह्व सलाम व कलाम (बातचीत) के बाद किये।

फ़ायदा : इस हदीस़ से ये साबित हो रहा है नमाज़ में भूल जाने की सूरत में, नमाज़ के बारे में बातचीत से नमाज़ बातिल नहीं होती, क्योंकि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की हब्शा से मदीना वापसी नमाज़ में बातचीत की इजाज़त ख़त्म होने के बाद हुई और इस वाक़िये में वो शरीक थे और आपने बातचीत करने के बाद सज्दए सह्व किये हैं।

وَحَدَّثَنِي الْقَاسِمُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ الْجُعْفِيُّ، عَنْ زَائِدَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ صَلَّيْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَإِمَّا زَادَ أَوْ نَقَصَ - قَالَ إِبْرَاهِيمُ وَايْمُ اللَّهِ مَا جَاءَ ذَاكَ إِلاَّ مِنْ قِبَلِي - قَالَ فَقُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ أَحَدَثَ فِي الصَّلاَةِ شَىْءٌ فَقَالَ " لاَ " . قَالَ فَقُلْنَا لَهُ الَّذِي صَنَعَ فَقَالَ " إِذَا زَادَ الرَّجُلُ أَوْ نَقَصَ فَلْيَسْجُدْ سَجْدَتَيْنِ " . قَالَ ثُمَّ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ

(1287) हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी। आपने इज़ाफ़ा या कमी की। इब्राहीम कहते हैं, अल्लाह की क़सम! ये (वहम) मेरी ही तरफ़ से है। तो हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या नमाज़ के बारे में कोई नया हुक्म नाज़िल हुआ है? आपने फ़रमाया, नहीं। तो हमने आपको आपके किये से आगाह किया तो आपने फ़रमाया, 'जब आदमी ज़्यादती या कमी कर बैठे तो वो दो सज्दे कर ले।' उसके बाद आपने दो सज्दे किये।

(तिर्मिज़ी : 353, नसाई : 3/66)

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، - قَالَ عَمْرٌو حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، - حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، قَالَ سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ سِيرِينَ، يَقُولُ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ صَلَّى

(1288) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दोपहर की एक नमाज़ ज़ुहर या असर पढ़ाई और दो रकअतों पर सलाम फेर दिया। फिर मस्जिद के सामने गड़े एक तने के साथ टेक लगाकर

بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِحْدَى صَلاَتَىِ الْعَشِيِّ إِمَّا الظُّهْرَ وَإِمَّا الْعَصْرَ فَسَلَّمَ فِي رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ أَتَى جِذْعًا فِي قِبْلَةِ الْمَسْجِدِ فَاسْتَنَدَ إِلَيْهَا مُغْضَبًا وَفِي الْقَوْمِ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ فَهَابَا أَنْ يَتَكَلَّمَا وَخَرَجَ سَرَعَانُ النَّاسِ قُصِرَتِ الصَّلاَةُ فَقَامَ ذُو الْيَدَيْنِ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَقُصِرَتِ الصَّلاَةُ أَمْ نَسِيتَ فَنَظَرَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يَمِينًا وَشِمَالاً فَقَالَ " مَا يَقُولُ ذُو الْيَدَيْنِ " . قَالُوا صَدَقَ لَمْ تُصَلِّ إِلاَّ رَكْعَتَيْنِ . فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ وَسَلَّمَ ثُمَّ كَبَّرَ ثُمَّ سَجَدَ ثُمَّ كَبَّرَ فَرَفَعَ ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ ثُمَّ كَبَّرَ وَرَفَعَ . قَالَ وَأُخْبِرْتُ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ أَنَّهُ قَالَ وَسَلَّمَ .

गुस्से की हालत में खड़े हो गये। लोगों में अबू बकर व उमर (रज़ि.) मौजूद थे। उन्होंने आपकी हैबत की बिना पर बातचीत न की और जल्दबाज़ लोग निकल गये (ये समझते हुए) कि नमाज़ में कमी हो गई है तो ज़ुल्यदैन (रज़ि.) नामी शख़्स खड़ा हुआ और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या नमाज़ कम कर दी गई है या आप भूल गये हैं? तो नबी (ﷺ) ने दायें और बायें देखकर फ़रमाया, 'ज़ुल्यदैन क्या कह रहा है?' लोगों ने कहा, सच कह रहा है। आपने दो ही रकअतें पढ़ी हैं। तो आपने दो रकअतें (और) पढ़कर सलाम फेर दिया। फिर अल्लाहु अकबर कहकर सज्दा किया फिर अल्लाहु अकबर कहकर सर उठाया। फिर अल्लाहु अकबर कहकर सज्दा किया फिर अल्लाहु अकबर कहकर सज्दे से उठे । मुहम्मद बिन सीरीन कहते हैं, इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) की तरफ़ से मुझे बताया गया उसके बाद आपने सलाम फेरा।

حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِحْدَى صَلاَتَىِ الْعَشِيِّ . بِمَعْنَى حَدِيثِ سُفْيَانَ .

(1289) अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दोपहर की एक नमाज़ पढ़ाई। सुफ़ियान के हम मानी हदीस़ सुनाई।

(अबू दाऊद : 1008, 1011)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अल्अशिय्य : सूरज के ढलने से गुरूब तक के वक़्त को कहते हैं। जिसमें ज़हर और असर की नमाज़ें आती हैं। **(2) इस्तनद इलैहा :** उस पर टेक लगाई, उसके सहारे पर खड़े हुए। **(3) जिज़्अ :** दरख़्त का तना, मक़सूद दरख़्त की लकड़ी है। इसलिये ज़मीर मुअन्नस़ लौटाई है जबकि जिज़्अ मुज़क्कर है। **(4) सरआनुन्नास :** जल्दबाज़, मस्जिद से जल्दी निकलने वाले लोग।

कुछ हज़रात ने इसको सुरआन पढ़ा है और ये सरीअ की जमा है, जल्दी करने वाला। (5) **क़ुसिरत :** कम कर दी गई है क़सुरत कम हो गई है। (6) **ज़ुल्यदैन :** लम्बे हाथ वाला।

(1290) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने असर की नमाज़ पढ़ाई और दो रकअतों पर सलाम फेर दिया। तो ज़ुल्यदैन (रज़ि.) ने खड़े होकर पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! नमाज़ कम कर दी गई है या आप ही भूल गये हैं? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'दोनों काम नहीं हुए।' तो उसने अर्ज़ किया, एक काम तो हुआ है ऐ अल्लाह के रसूल! रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर पूछा, 'क्या ज़ुल्यदैन सच कह रहा है?' उन्होंने कहा, हाँ ऐ अल्लाह के रसूल! तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बाक़ी मान्दा नमाज़ पूरी की। फिर दो सज्दे सलाम फेरने के बाद बैठे-बैठे किये।

(नसाई : 1225)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ الْحُصَيْنِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، مَوْلَى ابْنِ أَبِي أَحْمَدَ أَنَّهُ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ صَلَّى لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم صَلاَةَ الْعَصْرِ فَسَلَّمَ فِي رَكْعَتَيْنِ فَقَامَ ذُو الْيَدَيْنِ فَقَالَ أَقُصِرَتِ الصَّلاَةُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَمْ نَسِيتَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " كُلُّ ذَلِكَ لَمْ يَكُنْ " . فَقَالَ قَدْ كَانَ بَعْضُ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَأَقْبَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ " أَصَدَقَ ذُو الْيَدَيْنِ " . فَقَالُوا نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَأَتَمَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَا بَقِيَ مِنَ الصَّلاَةِ ثُمَّ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ وَهُوَ جَالِسٌ بَعْدَ التَّسْلِيمِ .

फ़ायदा : नबी (ﷺ) ने ज़ुल्यदैन (रज़ि.) के जवाब में फ़रमाया, 'कुल्लु ज़ालिक लम यकुन दोनों काम ही नहीं हुए' और बुख़ारी में आया है, 'लम तक़सुर वलम अन्सा, न नमाज़ कम हुई है और न ही मैं भूला हूँ।' इसलिये ज़ुल्यदैन ने कहा, क़द कान बअ़ज़ु ज़ालिक कुछ तो हो चुका है। इससे इस क़ाइदे की ताईद होती है कि अगर कुल्लु का लफ़्ज़ काना मन्फ़ी से पहले आये तो हर-हर फ़र्द की नफ़ी होती है और बाद में आये (लम यकुन कुल्लु ज़ालिक) तो मज्मूआ यानी सबकी नफ़ी होती है। यानी दोनों काम नहीं हुए, एक हुआ है और आपका ये फ़रमाना कि कोई काम नहीं हुआ, न नमाज़ कम हुई और न मैं भूला हूँ, अपने नुक़्ते नज़र से है। क्योंकि आपका तसव्वुर यही था, मैंने नमाज़ चार रकआत ही पढ़ाई है। इसलिये अगर कोई इंसान अपने तसव्वुर की रू से सहीह समझते हुए वाक़िये के ख़िलाफ़ कह दे तो उसको झूठा क़रार नहीं दिया जायेगा।

(1291) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ुहर की दो रकअतें पढ़ीं। फिर सलाम फेर दिया तो आपके पास सुलैम क़बीला का एक आदमी आया और पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! नमाज़ कम कर दी गई है या आप भूल गये हैं? फिर मज़्कूरा हदीस़ बयान की।

وَحَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ الْخَزَّازُ، حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، - وَهُوَ ابْنُ الْمُبَارَكِ - حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ مِنْ صَلاَةِ الظُّهْرِ ثُمَّ سَلَّمَ فَأَتَاهُ رَجُلٌ مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَقُصِرَتِ الصَّلاَةُ أَمْ نَسِيتَ وَسَاقَ الْحَدِيثَ .

(1292) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि मैं नबी (ﷺ) के साथ ज़ुहर की नमाज़ पढ़ रहा था। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दो रकअतों पर सलाम फेर दिया तो सुलैम ख़ानदान का एक आदमी खड़ा हुआ। आगे मज़्कूरा बाला हदीस़ बयान की।

وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ شَيْبَانَ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ بَيْنَا أَنَا أُصَلِّي، مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم صَلاَةَ الظُّهْرِ سَلَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ فَقَامَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ . وَاقْتَصَّ الْحَدِيثَ .

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम हुआ इस नमाज़ में अबू हुरैरह (रज़ि.) बज़ाते ख़ुद शरीक थे और अबू हुरैरह (रज़ि.) की आमद 7 हिजरी में है और नमाज़ में बोलने की इजाज़त बहुत पहले ख़त्म हो चुकी थी। इसलिये स़ाबित हुआ अगर इमाम नमाज़ में भूल जाये और मुक़्तदी इस सिलसिले में उसके साथ बातचीत करें तो इससे नमाज़ बातिल नहीं होती। बातचीत के बाद भूल कर रह जाने वाली नमाज़ पढ़ी जायेगी और सज्दे सह्व कर लिये जायेंगे। नये सिरे से नमाज़ पढ़ने की ज़रूरत नहीं है। जबकि अहनाफ़ के नज़दीक नमाज़ नये सिरे से पढ़ी जायेगी।

मुफ़रदातुल हदीस़ : इक़्तस्सल हदीस़ व साक़ल हदीस़ : हदीस़ बयान की, उसको पूरा किया।

(1293) हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अ़सर की नमाज़ पढ़ाई और तीन रकआत पर सलाम

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُلَيَّةَ، - قَالَ زُهَيْرٌ

حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - عَنْ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَبِي الْمُهَلَّبِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم صَلَّى الْعَصْرَ فَسَلَّمَ فِي ثَلاَثِ رَكَعَاتٍ ثُمَّ دَخَلَ مَنْزِلَهُ فَقَامَ إِلَيْهِ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ الْخِرْبَاقُ وَكَانَ فِي يَدَيْهِ طُولٌ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَذَكَرَ لَهُ صَنِيعَهُ . وَخَرَجَ غَضْبَانَ يَجُرُّ رِدَاءَهُ حَتَّى انْتَهَى إِلَى النَّاسِ فَقَالَ " أَصَدَقَ هَذَا " . قَالُوا نَعَمْ . فَصَلَّى رَكْعَةً ثُمَّ سَلَّمَ ثُمَّ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ .

फेर दिया। फिर अपने घर जाने लगे तो आपके पास एक आदमी आया, जिसे ख़िरबाक़ कहा जाता था और उसके हाथ लम्बे थे। उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! और आपको, आपका किया हुआ बताया। तो आप गुस्से की हालत में चादर खींचते हुए निकले। यहाँ तक कि लोगों के पास आ गये और पूछा, क्या ये सच कह रहा है? लोगों ने कहा, हाँ! तो आपने एक रकअत पढ़ाई और सलाम फेर दिया। फिर दो सज्दे (सह्व के लिये) किये फिर सलाम फेर दिया।

(अबू दाऊद : 1018, नसाई : 3/6, 3/26, इब्ने माजह : 1215)

फ़ायदा : हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) की रिवायत से भी ये बात साबित होती है कि नमाज़ की इस्लाह दुरुस्तगी के बारे में की गई बातचीत से पहली नमाज़ बातिल नहीं होती। सिर्फ़ रह जाने वाली नमाज़ पढ़नी पड़ती है।

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - وَهُوَ الْحَذَّاءُ - عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَبِي الْمُهَلَّبِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ الْحُصَيْنِ، قَالَ سَلَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي ثَلاَثِ رَكَعَاتٍ مِنَ الْعَصْرِ ثُمَّ قَامَ فَدَخَلَ الْحُجْرَةَ فَقَامَ رَجُلٌ بَسِيطُ الْيَدَيْنِ فَقَالَ أَقُصِرَتِ الصَّلاَةُ يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَخَرَجَ مُغْضَبًا فَصَلَّى الرَّكْعَةَ الَّتِي كَانَ تَرَكَ ثُمَّ سَلَّمَ ثُمَّ سَجَدَ سَجْدَتَىِ السَّهْوِ ثُمَّ سَلَّمَ .

(1294) हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने असर की तीसरी रकअत के बाद सलाम फेर दिया। फिर उठकर कमरे में दाख़िल होने लगे तो खुले हाथों वाला आदमी खड़ा हुआ और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या नमाज़ कम कर दी गई है? तो आप (ﷺ) गुस्से की हालत में निकले और वो रकअत जो छोड़ दी थी, पढ़ाई। फिर सलाम फेर दिया फिर भूल के लिये दो सज्दे किये फिर सलाम फेरा।

باب سُجُودِ التِّلاَوَةِ

बाब 21 : तिलावत के लिये सज्दा करना या सुजूदे तिलावत (तिलावत के सज्दे)

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، كُلُّهُمْ عَنْ يَحْيَى الْقَطَّانِ، - قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، - عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، قَالَ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ فَيَقْرَأُ سُورَةً فِيهَا سَجْدَةٌ فَيَسْجُدُ وَنَسْجُدُ مَعَهُ حَتَّى مَا يَجِدُ بَعْضُنَا مَوْضِعًا لِمَكَانِ جَبْهَتِهِ .

(1295) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) कुरआन मजीद की तिलावत फ़रमाया करते थे तो आप सज्दे वाली सूरत की तिलावत फ़रमाते और सज्दा करते। हम भी आपके साथ सज्दा करते, यहाँ तक कि (भीड़ की वजह से) हममें से कुछ को पेशानी रखने के लिये जगह न मिलती थी।

(सहीह बुख़ारी : 1075, 1079, अबू दाऊद : 1412)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ رُبَّمَا قَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الْقُرْآنَ فَيَمُرُّ بِالسَّجْدَةِ فَيَسْجُدُ بِنَا حَتَّى ازْدَحَمْنَا عِنْدَهُ حَتَّى مَا يَجِدُ أَحَدُنَا مَكَانًا لِيَسْجُدَ فِيهِ فِي غَيْرِ صَلاَةٍ .

(1296) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) बयान करते हैं कि कई बार रसूलुल्लाह (ﷺ) कुरआन की तिलावत करते। सज्दे वाली आयत से गुज़रते और हमारे साथ सज्दा करते। यहाँ तक कि आप (ﷺ) के पास हमारी भीड़ लग जाती। यहाँ तक कि नमाज़ के बग़ैर ही हममें से कुछ को सज्दा करने के लिये जगह न मिलती।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ سَمِعْتُ الأَسْوَدَ، يُحَدِّثُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ

(1297) हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने सूरह नज्म की तिलावत की और उसमें सज्दा किया और आप के साथ तमाम हाज़िरीन ने सज्दा किया। सिर्फ़ एक बूढ़े ने कंकरियों या मिट्टी की एक मुट्ठी

قَرَأَ { وَالنَّجْمِ} فَسَجَدَ فِيهَا وَسَجَدَ مَنْ كَانَ مَعَهُ غَيْرَ أَنَّ شَيْخًا أَخَذَ كَفًّا مِنْ حَصًى أَوْ تُرَابٍ فَرَفَعَهُ إِلَى جَبْهَتِهِ وَقَالَ يَكْفِينِي هَذَا . قَالَ عَبْدُ اللَّهِ لَقَدْ رَأَيْتُهُ بَعْدُ قُتِلَ كَافِرًا .

भरकर अपनी पेशानी से लगाई और कहा, मेरे लिये यही काफ़ी है। अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) कहते हैं, मैंने उसको (यानी उमैया बिन ख़ल्फ़) कुफ़्र की हालत में क़त्ल होते देखा।

(सहीह बुख़ारी : 1067, 1070, 3853, 3972, 4863, अबू दाऊद : 1406, नसाई : 2/160)

फ़वाइद : (1) अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की इस रिवायत से मालूम होता है कि आग़ाज़ में मुश्रिकीने मक्का भी कई बार क़ुरआन मजीद की तिलावत सुन लेते थे। आपने जब सूरह नज्म की तिलावत की जिसमें लात व मनात और उ़ज़्ज़ा का तज़्किरा है तो वो इस पर बहुत शादाँ व फ़रहाँ हुए और जब आपने आख़िर में सज्दा किया तो उमैया के सिवा तमाम मौजूद मुश्रिकीन ने भी मुसलमानों के साथ सज्दा किया और लोगों में ये बात मशहूर हो गई कि मुश्रिकीने मक्का मुसलमान हो गये हैं। **(2)** जिस वक़्त सूरह नज्म में आपने सज्दा किया तो तमाम हाज़िरीन ने आपके साथ सज्दा किया और ये ज़ाहिर बात है वो तमाम बावुज़ू नहीं होंगे। इसलिये सज्दे तिलावत के लिये वुज़ू को लाज़िम ठहराना जबकि ये सुनने वाले के ज़िम्मे भी है, दुरुस्त नहीं है। मगर ये कि ये शर्त लगाई जाये कि क़ुरआन मजीद की तिलावत और सिमाअ़ वुज़ू के बग़ैर नहीं हो सकता। हालांकि ज़बानी तिलावत बिल्इत्तिफ़ाक़ वुज़ू के बग़ैर जाइज़ है। इख़्तिलाफ़ क़ुरआन मजीद को हाथ लगा कर पढ़ने की सूरत में है। **(3)** सूरह नज्म सुनकर मुश्रिकीने मक्का ने क्यों सज्दा किया? तो बक़ौल क़ाज़ी अ़याज़ (रह.) के इसका सबब ये है, ये क़ुरआन मजीद की पहली सूरत है जिसमें सज्दा आता है। लेकिन सवाल ये है कि इसका मुश्रिकीन पर क्या असर पड़ा? सहीह बात यही है कि वो इस सूरत में अपने माबूदों का ज़िक्र सुनकर ख़ुश होंगे। इसके अ़लावा उस वक़्त शैतान ने तिल्कल ग़रानीक़ल उ़ला व इन्-न शफ़ाअ़तहुन्न लतुरतजा के अल्फ़ाज़ भी कह डाले। ये बुलंद मर्तबा देवियाँ हैं जिनकी सिफ़ारिश की उम्मीद की जा सकती है। जैसाकि अ़ल्लामा हैसमी ने तबरानी से रिवायत नक़ल की है कि रसूलल्लाह (ﷺ) ने अफ़रऐतुमुल्ला-त वल्उ़ज़्ज़ा व मनातस्सालिसतल उख़्रा की तिलावत की। तो अल्क़श्शैतान इन्द ज़ालिक ज़करत्तवाग़ीत शैतान ने उस वक़्त बुतों का तज़्किरा कर डाला। ये एक खुली हक़ीक़त है कि इन कलिमात का रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़बाने मुबारक पर जारी होने का इम्कान नहीं है। नक़ल व अ़कल की किसी रू से भी ये जाइज़ नहीं है। लेकिन शैतान का इन अल्फ़ाज़ को कह डालना, इसमें नामुम्किन होने वाली कोई बात नहीं है। इसकी ताईद के लिये तफ़्सीरे तबरी सूरह हज की आयत 52 से 54 देखिये। जंगे बद्र में क़ुरआन की तसरीह के मुताबिक़ उसने मुश्रिकीने मक्का को कहा था, 'आज

तुम पर कोई लोग ग़ालिब नहीं आ सकते, मैं तुम्हारा मुआविन व मददगार हूँ।' इस तरह शैतान ने जंगे उहुद में बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत के मुताबिक़ आपस में टकरा दिया था और ख़ुद कुरआन मजीद में मौजूद है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब तिलावत फ़रमाते कि, 'शैतान उसकी तिलावत में कुछ डालता है, अल्लाह तआला शैतान के डाले हुए को ख़त्म कर डालता है और अपनी आयतों को मुहकम करता है।' आगे फ़रमाया, 'ताकि अल्लाह शैतान के डाले हुए को जिनके दिलों में रोग है आज़माइश व इब्तिला का बाइस बनाये। अगर शैतान कुछ डाल नहीं सकता तो फिर अल्लाह तआला दूर या ख़त्म किस चीज़ को करता है और अपनी आयतों को मुहकम किस चीज़ से करता है? जिनके दिलों में बीमारी (कुफ़्र व निफ़ाक़) है उनके लिये इम्तिहान किस चीज़ का होता है। लेकिन इन आयाते मुबारका से ये चीज़ भी साबित हो रही है कि शैतान के बोल से सिर्फ़ काफ़िर व मुनाफ़िक़ ही मुतास्सिर हो सकते हैं। इसलिये ये कहना कि इससे तो तमाम शरीअत से ऐतमाद उठ जायेगा क्योंकि हो सकता है कि हम तक सहाबा की रिवायत से जो अहकाम पहुँचे हैं, वो आपका फ़रमान न हों बल्कि शैतान का कहा हुआ हो, बेमहल है। क्योंकि ये तो तब मुम्किन था अगर अल्लाह तआला इससे आगाह न फ़रमाता या अहले ईमान इससे मुतास्सिर होकर इसको कुबूल कर लेते। सूरह हज की आयत 52-54 तक ग़ौर से पढ़ ली जायें तो बात बिल्कुल वाज़ेह हो जाती है। इन आयतों की तफ़्सीर के लिये देखिये फ़तहुल बयान, जिल्द 4, पेज नम्बर 416-417।

अल्लामा आलूसी ने शैख़ अबू मन्सूर मातुरीदी का ये क़ौल नक़ल किया है कि सहीह बात ये है कि शैतान ने अपने ज़िन्दीक़ और बेदीन चेलों के दिलों में तिल्कल ग़रानीक़ल उला का वस्वसा डाला। ताकि वो ज़ईफ़ मुसलमानों को दीन के बारे में शक व शुब्हा में मुब्तला करें। (रूहुल मआनी, जिल्द 1, पेज नम्बर : 230) इमाम अबू बक्र जसास हन्फ़ी का क़ौल देखिये (अहकामुल कुरआन इमाम जसास, जिल्द 3, पेज नम्बर : 321) इमाम अबू बक्र बिन अरबी मालिकी का क़ौल देखिये (अहकामुल कुरआन इमाम इब्नुल अरबी, जिल्द 3, पेज नम्बर : 303) (तफ़्सीरे तबरी, जिल्द 9, पेज नम्बर : 178) मक्तबा दारुल किताबुल इल्मिय्या बेरूत है। ख़ुलासए कलाम ये है कि ये कलिमात नबी (ﷺ) की ज़बान पर जारी नहीं हुए। इन्नश्शैतान औक़अ फ़ी मसामिइल मुश्रिकीन ज़ालिक मिन दूनि अंय्यतकल्ल-म बिही रसूलुल्लाह मैंने जो मानी किया है उसे अल्लामा जरीर तबरी, इमाम अबू बक्र जसास हन्फ़ी, इमाम अबू बक्र इब्नुल अरबी मालिकी, हाफ़िज़ इब्ने तैमिया, इब्ने हजर व हज़्म ने तस्लीम किया है। लेकिन अक्सर अइम्मा ने इस वाक़िये को तस्लीम नहीं किया। इस पर कुछ ऐतराज़ात किये हैं। लेकिन हम तफ़्सीलात में नहीं जा सकते। इसलिये उनके जवाबात नहीं लिख सकते। वो सब तब वारिद हैं अगर इस बात को तस्लीम किया जाये कि ये कलिमात आपकी

ज़बान से जारी हुए और हम बता चुके हैं, ये सूरत नामुम्किन है। (जदीद दौर के किसी मुहद्दिस या मुफ़स्सिर ने इस वाक़िये को तस्लीम नहीं किया) जिन लोगों ने तर्दीद की है इस वाक़िये की आपकी ज़बान पर जारी करते हैं। अ़ल्लामा अल्बानी (रह.) ने इसी बुनियाद पर इसकी तर्दीद पर एक मुस्तक़िल रिसाला लिखा है।

(1298) हज़रत अ़ता बिन यसार से रिवायत है कि मैंने ज़ैद बिन स़ाबित (रज़ि.) से इमाम के साथ क़िरअत करने के बारे में सवाल किया तो उन्होंने कहा, इमाम के साथ कुछ न पढ़े और कहा, उस (ज़ैद रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने वन्नज्मि इज़ा हवा पढ़ी। आप (ﷺ) ने सज्दा न किया।

(सहीह बुख़ारी : 1072-1073, अबू दाऊद : 1404, तिर्मिज़ी : 576, नसाई : 2/160)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَيَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالَ يَحْيَى بْنُ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرُونَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، وَهُوَ ابْنُ جَعْفَرٍ عَنْ يَزِيدَ بْنِ خُصَيْفَةَ، عَنِ ابْنِ قُسَيْطٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ، سَأَلَ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ عَنِ الْقِرَاءَةِ، مَعَ الإِمَامِ فَقَالَ لاَ قِرَاءَةَ مَعَ الإِمَامِ فِي شَىْءٍ . وَزَعَمَ أَنَّهُ قَرَأَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم { وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَى} فَلَمْ يَسْجُدْ .

फ़वाइद : (1) ज़ैद बिन स़ाबित (रज़ि.) सूरह फ़ातिहा से ज़्यादा क़िरअत का इंकार कर रहे हैं। क्योंकि अगर उनका मक़सद हर क़िस्म की क़िरअत मुराद हो यानी फ़ातिहा हो या उसके सिवा, तो फिर ये रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़रमान कि 'फ़ातिहा के बग़ैर नमाज़ नहीं होती' के मुनाफ़ी होगी। इसलिये सहीह अहादीस़ के मुक़ाबले में उनका क़ौल नज़र अन्दाज़ कर दिया जायेग। (2) सज्दए तिलावत इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई, इमाम अहमद (रह.) और जुम्हूर सलफ़ के नज़दीक सुन्नत है। इसलिये आपने कई बार सज्दे तिलावत नहीं किया। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के नज़दीक ये वाजिब है, फ़र्ज़ नहीं है और अहनाफ़ की तरफ़ से जो दलाइल दिये जाते हैं उनसे वुजूब स़ाबित नहीं होता। फ़स्जुदू लिल्लाहि वअ़बुदू से जो वुजूब स़ाबित किया जाता है वो भी सहीह नहीं। क्योंकि इसके मुख़ातब मुसलमान नहीं हैं। फिर अ़जीब बात ये है कि अहनाफ़ नमाज़ में रुकूअ़ को ही (अगर तीन आयतों की तिलावत के बाद कर लिया जाये) सज्दए तिलावत की जगह काफ़ी समझते हैं और अगर नमाज़ में सज्दे तिलावत अदा करने से रह जाये तो साक़ित क़रार देते हैं। (शरह सहीह मुस्लिम : 2/154) क्या जो चीज़ वाजिब है वो रह जाये तो साक़ित हो जाती है? अहनाफ़ के नज़दीक वाजिब का दर्जा फ़र्ज़ से कम है। वो फ़र्ज़ और वाजिब में फ़र्क़ करते हैं। बाक़ी अइम्मा के नज़दीक फ़र्ज़ व वाजिब में कोई फ़र्क़ नहीं है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَزِيدَ، مَوْلَى الأَسْوَدِ بْنِ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَرَأَ لَهُمْ { إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ} فَسَجَدَ فِيهَا فَلَمَّا انْصَرَفَ أَخْبَرَهُمْ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم سَجَدَ فِيهَا .

(1299) हज़रत अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान बयान करते हैं हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने उनके सामने सूरह इज़स्समाउन शक़्क़त पढ़ी और उसमें सज्दा किया और सलाम फेरने के बाद उन्हें बताया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस सूरत में सज्दा किया।

(नसाई : 2/161, तोहफ़ा : 14969)

وَحَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا عِيسَى، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ هِشَامٍ، كِلاَهُمَا عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ .

(1300) इमाम साहब दो और उस्तादों से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं।

(सहीह बुख़ारी : 1074)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ أَيُّوبَ بْنِ مُوسَى، عَنْ عَطَاءِ بْنِ مِينَاءَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ سَجَدْنَا مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فِي { إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ} وَ { اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ}

(1301) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि हमने नबी (ﷺ) के साथ इज़स्समाउन शक़्क़त और इक़्रअ् बिस्मि रब्बिक में सज्दा किया।

(अबू दाऊद : 1407, तिर्मिज़ी : 573, नसाई : 2/162, इब्ने माजह : 1058)

फ़ायदा : हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) 7 हिजरी में मुसलमान हुए हैं और उन्होंने मुफ़स्सल सूरतों में से दो के सज्दे का तज़्किरा किया है, जो इस बात की दलील है कि इन सूरतों में भी सज्दा किया जायेगा। इमाम मालिक के नज़दीक क़ुरआन मजीद में ग्यारह सज्दे हैं। वो सूरह सॉद और सूरह नज्म, इन्शिक़ाक़ और इक़्रअ् में सज्दा नहीं मानते। इमाम शाफ़ेई के नज़दीक चौदह सज्दे हैं। वो भी सूरह सॉद का सज्दा नहीं मानते और सूरह हज में दो सज्दे मानते हैं। इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक भी चौदह सज्दे हैं। वो सूरह सॉद का सज्दा मानते हैं और सूरह हज में एक सज्दा समझते हैं। इमाम अहमद और मुहद्दिसीन के नज़दीक पन्द्रह सज्दे हैं। वो सबको तस्लीम करते हैं।

(1302) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इज़स्समाउन शक़्क़त और इक़्रअ् बिस्मि रब्बिक में सज्दा किया।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ، مَوْلَى بَنِي مَخْزُومٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ قَالَ سَجَدَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي { إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ} وَ { اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ}

(1303) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي جَعْفَرٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ مِثْلَهُ .

(1304) हज़रत अबू राफ़ेअ (रह.) बयान करते हैं कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) के साथ इशा की नमाज़ पढ़ी। उन्होंने इज़स्समाउन शक़्क़त की तिलावत की और उसमें सज्दा किया। मैंने पूछा, ये सज्दा कैसा है? तो उन्होंने जवाब दिया, मैंने इसमें अबुल क़ासिम (ﷺ) के पीछे सज्दा किया है। इसलिये मैं इसमें हमेशा सज्दा करता रहूँगा। यहाँ तक कि उनसे जा मिलूँ (फ़ौत हो जाऊँ) इब्ने अब्दुल आला ने कहा, मैं हमेशा ये सज्दा करता रहूँगा।

(सहीह बुख़ारी:766, 768, 1078, अबू दाऊद :1408, नसाई:967)

وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالاَ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ بَكْرٍ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، قَالَ صَلَّيْتُ مَعَ أَبِي هُرَيْرَةَ صَلاَةَ الْعَتَمَةِ فَقَرَأَ { إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ} فَسَجَدَ فِيهَا . فَقُلْتُ لَهُ مَا هَذِهِ السَّجْدَةُ فَقَالَ سَجَدْتُ بِهَا خَلْفَ أَبِي الْقَاسِمِ صلى الله عليه وسلم فَلاَ أَزَالُ أَسْجُدُ بِهَا حَتَّى أَلْقَاهُ . وَقَالَ ابْنُ عَبْدِ الأَعْلَى فَلاَ أَزَالُ أَسْجُدُهَا .

(1305) इमाम साहब तीन और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं लेकिन उन्होंने खल्फ़ अबिल क़ासिम नहीं कहा।

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، - يَعْنِي ابْنَ زُرَيْعٍ - ح قَالَ وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ،

حَدَّثَنَا سُلَيْمُ بْنُ أَخْضَرَ، كُلُّهُمْ عَنِ التَّيْمِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . غَيْرَ أَنَّهُمْ لَمْ يَقُولُوا خَلْفَ أَبِي الْقَاسِمِ صلى الله عليه وسلم .

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي مَيْمُونَةَ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، قَالَ رَأَيْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَسْجُدُ فِي { إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ} فَقُلْتُ تَسْجُدُ فِيهَا فَقَالَ نَعَمْ رَأَيْتُ خَلِيلِي صلى الله عليه وسلم يَسْجُدُ فِيهَا فَلاَ أَزَالُ أَسْجُدُ فِيهَا حَتَّى أَلْقَاهُ . قَالَ شُعْبَةُ قُلْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم . قَالَ نَعَمْ .

(1306) हज़रत अबू राफ़ेअ (रह.) बयान करते हैं कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) को इज़स्समाउन शक़्क़त में सज्दा करते देखा तो मैंने पूछा, आप इसमें सज्दा करते हैं? उन्होंने कहा, हाँ! मैंने अपने ख़लील (दोस्त) (ﷺ) को इसमें सज्दा करते देखा है। इसलिये मैं हमेशा इसमें सज्दा करता रहूँगा यहाँ तक कि उनसे जा मिलूँ। शोबा कहते हैं, मैंने उस्ताद से पूछा, इससे नबी (ﷺ) मुराद हैं? उसने कहा, हाँ!

باب صِفَةِ الْجُلُوسِ فِي الصَّلاَةِ وَكَيْفِيَّةِ وَضْعِ الْيَدَيْنِ عَلَى الْفَخِذَيْنِ

बाब 22 : नमाज़ (तशह्हुद) में बैठने की हैयत और दोनों रानों पर हाथ रखने की कैफ़ियत

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَعْمَرِ بْنِ رِبْعِيٍّ الْقَيْسِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو هِشَامٍ الْمَخْزُومِيُّ، عَنْ عَبْدِ الْوَاحِدِ، - وَهُوَ ابْنُ زِيَادٍ - حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ حَكِيمٍ، حَدَّثَنِي عَامِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا قَعَدَ فِي الصَّلاَةِ جَعَلَ قَدَمَهُ الْيُسْرَى بَيْنَ فَخِذِهِ وَسَاقِهِ وَفَرَشَ قَدَمَهُ الْيُمْنَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُسْرَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَأَشَارَ بِإِصْبَعِهِ .

(1307) आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब नमाज़ में बैठते तो अपने बायें पैर को अपनी रान और अपनी पिण्डली के दरम्यान कर लेते और अपने दायें पाँव को बिछा लेते और अपना बायाँ हाथ, अपने बायें घुटने पर रख लेते और अपना दायाँ हाथ अपनी दायें रान पर रख लेते और उंगली से इशारा करते।

(अबू दाऊद : 988, नसाई : 3/39)

(1308) हज़रत आमिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब (नमाज़ में) बैठते तो दुआ करते वक़्त अपना दायाँ हाथ अपनी दायें रान पर रखते और अपना बायाँ हाथ अपनी बायें रान पर रखते और अपनी शहादत की उंगली से इशारा करते और अपना अंगूठा अपनी दरम्यानी उंगली पर रखते और अपने बायें हाथ में अपने घुटने को पकड़ लेते।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنِ ابْنِ عَجْلاَنَ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، عَنِ ابْنِ عَجْلاَنَ، عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا قَعَدَ يَدْعُو وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَيَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى وَأَشَارَ بِإِصْبَعِهِ السَّبَّابَةِ وَوَضَعَ إِبْهَامَهُ عَلَى إِصْبَعِهِ الْوُسْطَى وَيُلْقِمُ كَفَّهُ الْيُسْرَى رُكْبَتَهُ .

(1309) हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब नमाज़ में बैठते तो अपने दोनों हाथ अपने दोनों घुटनों पर रख लेते और अंगूठे से मिलने वाली दायें उंगली (शहादत की उंगली) उठाकर उससे इशारा करते और उस वक़्त आपका बायाँ हाथ आपके बायें घुटने पर बिछा होता था।
(तिर्मिज़ी : 294, नसाई : 3/37, इब्ने माजह : 913)

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا جَلَسَ فِي الصَّلاَةِ وَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ وَرَفَعَ إِصْبَعَهُ الْيُمْنَى الَّتِي تَلِي الإِبْهَامَ فَدَعَا بِهَا وَيَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُسْرَى بَاسِطُهَا عَلَيْهَا .

(1310) हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब तशह्हुद के लिये बैठते तो अपना बायाँ हाथ अपने बायें घुटने पर रखते और अपना दायाँ हाथ अपने दायें घुटने पर रखते और तिरपन की शक्ल बनाते और शहादत की उंगली से इशारा करते।

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا قَعَدَ فِي التَّشَهُّدِ وَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُسْرَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُمْنَى وَعَقَدَ ثَلاَثَةً وَخَمْسِينَ وَأَشَارَ بِالسَّبَّابَةِ .

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ مُسْلِمِ بْنِ أَبِي مَرْيَمَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمُعَاوِيِّ، أَنَّهُ قَالَ رَآنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ وَأَنَا أَعْبَثُ بِالْحَصَى فِي الصَّلاَةِ فَلَمَّا انْصَرَفَ نَهَانِي فَقَالَ اصْنَعْ كَمَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَصْنَعُ . فَقُلْتُ وَكَيْفَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَصْنَعُ قَالَ كَانَ إِذَا جَلَسَ فِي الصَّلاَةِ وَضَعَ كَفَّهُ الْيُمْنَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَقَبَضَ أَصَابِعَهُ كُلَّهَا وَأَشَارَ بِإِصْبَعِهِ الَّتِي تَلِي الإِبْهَامَ وَوَضَعَ كَفَّهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى .

(1311) हज़रत अ़ली बिन अ़ब्दुर्रहमान मुआ़वी (रह.) बयान करते हैं कि मुझे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने नमाज़ में कंकरियों से खेलते हुए देखा। जब उन्होंने सलाम फेरा तो मुझे रोका और कहा उस तरह करो जिस तरह रसूलुल्लाह (ﷺ) किया करते थे। मैंने पूछा, रसूलुल्लाह (ﷺ) कैसे करते थे? उन्होंने बताया, जब आप नमाज़ में बैठते, अपनी दायें हथेली अपनी दायें रान पर रखते और सब उंगलियों को बंद कर लेते और अंगूठे के साथ वाली उंगली से इशारा करते और अपनी बायें हथेली को अपनी बायें रान पर रख लेते।

(अबू दाऊद : 987, नसाई : 2/195, 3/36, 3/36)

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُسْلِمِ بْنِ أَبِي مَرْيَمَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمُعَاوِيِّ، قَالَ صَلَّيْتُ إِلَى جَنْبِ ابْنِ عُمَرَ . فَذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ مَالِكٍ وَزَادَ قَالَ سُفْيَانُ فَكَانَ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا بِهِ عَنْ مُسْلِمٍ ثُمَّ حَدَّثَنِيهِ مُسْلِمٌ .

(1312) हज़रत अ़ली बिन अ़ब्दुर्रहमान मुआ़वी (रह.) से रिवायत है कि मैंने इब्ने उ़मर (रज़ि.) के पहलू में नमाज़ पढ़ी फिर ऊपर के मफ़्हूम वाली हदीस़ बयान की, सुफ़ियान का क़ौल है। ये रिवायत मुस्लिम से यहया बिन सईद ने सुनाई थी। फिर मुझे मुस्लिम ने बराहे रास्त (बिला वास्ता) सुनाई।

फ़वाइद : (1) फ़ज्र की नमाज़ के सिवा बाक़ी नमाज़ों में दो तशह्हुद हैं। उनमें बैठने की कैफ़ियत की बेहतरीन सूरत में इख़्तिलाफ़ है। अहनाफ़ के नज़दीक दोनों सज्दों के दरम्यान और हर तशह्हुद में इफ़्तिराश यानी दायें पाँव को खड़ा करके बायें पैर को बिछाकर उस पर बैठना अफ़ज़ल है। मालिकियों के नज़दीक हर जगह तवर्रुक यानी दायें पैर को खड़ा करके बायें को पिण्डली और रान के दरम्यान से निकालकर सुरीन पर बैठना अफ़ज़ल है। शवाफ़िअ, हनाबिला और मुहद्दिसीन के नज़दीक सज्दों के दरम्यान इफ़्तिराश है नीज़ शवाफ़िअ और मुहद्दिसीन के नज़दीक सलाम वाले तशह्हुद में तवर्रुक है और जिस तशह्हुद के बाद सलाम नहीं है उसमें इफ़्तिराश है। इमाम अहमद के नज़दीक जिन नमाज़ों में

दो तशहहुद हैं, उनमें पहले में इफ़्तिराश है और दूसरे में तवर्रुक है और जिन नमाज़ों में तशह्हुद एक है जैसे फ़ज्र, जुम्आ और ईदैन उसमें इफ़्तिराश है। (2) अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) की रिवायत में तोरुक की सूरत में दायें पैर को खड़ा करने की बजाय बिछाने को बयान किया गया है। हालांकि आ़म रिवायात में दायें पाँव को खड़ा रखना आया है। इसलिये क़ाज़ी अ़याज़ ने इसमें ये कहा है कि यहाँ बायें की जगह ग़लती से दायें का तज़्किरा हो गया है। लेकिन सहीह बात ये है कभी बायें पैर के साथ दायें को भी बिछाया जा सकता है। (3) इस बाब की तमाम अहादीस़ से ये स़ाबित हो रहा है कि तशह्हुद में बैठते ही दायें उंगली शहादत के साथ इशारा किया जायेगा और इसको आख़िर तक किया जायेगा। इसको रखने का तज़्किरा किसी सहीह रिवायत में नहीं है। इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक ला इला-ह पर उंगली उठाये और इल्ला पर रख दे। बाक़ी अइम्मा के नज़दीक अल्लाह पर उंगली उठाये। (4) इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई (रह.) के नज़दीक इशारे के वक़्त तिरपन की शक्ल बनाये। यानी सारी उंगलियों को बंद करके सिर्फ़ शहादत की उंगली उठाये। लेकिन इमाम अहमद के नज़दीक अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) की रिवायत के मुताबिक़ अंगूठे को दरम्यानी उंगली पर रखे और आख़िरी दोनों उंगलियाँ (ख़िन्सर और बिन्सर) बंद करके शहादत की उंगली उठाये और दोनों तरीक़े ही सहीह हैं। (5) अ़ल्लामा ग़ुलाम रसूल सईदी ने इमाम अबू हनीफ़ा और साहिबैन का नज़रिया यही बयान किया है कि वो इन अहादीस़ के मुताबिक़ शहादत की उंगली उठाने के क़ाइल हैं और मुताख़िख़रीन अहनाफ़ जो इसको मक्रूह या हराम क़रार देते हैं या इसको तोड़ने का हुक्म देते हैं उनकी पुरज़ोर तर्दीद की है। (शरह सहीह मुस्लिम : 2/166-177)

बाब 23 : नमाज़ से फ़राग़त के वक़्त उससे निकलने के लिये सलाम कहना और उसकी कैफ़ियत

باب السَّلاَمِ لِلتَّحْلِيلِ مِنَ الصَّلاَةِ عِنْدَ فَرَاغِهَا وَكَيْفِيَّتِهِ

(1313) हज़रत मअ़मर (रह.) से रिवायत है कि मक्का मुकर्रमा का एक हाकिम दो तरफ़ सलाम फेरता था तो अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा, उसने कहाँ से ये सुन्नत हासिल कर ली? हकम ने अपनी हदीस़ में कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) ऐसे ही किया करते थे।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنِ الْحَكَمِ، وَمَنْصُورٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، أَنَّ أَمِيرًا، كَانَ بِمَكَّةَ يُسَلِّمُ تَسْلِيمَتَيْنِ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ أَنَّى عَلِقَهَا قَالَ الْحَكَمُ فِي حَدِيثِهِ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَفْعَلُهُ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : अन्ना अलिमहा : उसने ये सुन्नत कहाँ से हासिल कर ली, यानी इस हाकिम ने सुन्नते सलाम की मअरिफ़त पर तअज्जुब का इज़हार किया।

(1314) अबू मअमर (रह.) हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से बयान करते हैं कि एक अमीर या एक आदमी ने दोनों तरफ़ सलाम फेरा तो अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा, तूने ये तरीक़ा कहाँ से सीख लिया?

وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، - قَالَ شُعْبَةُ - رَفَعَهُ مَرَّةً - أَنَّ أَمِيرًا أَوْ رَجُلاً سَلَّمَ تَسْلِيمَتَيْنِ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ أَنَّى عَلِقَهَا .

(1315) हज़रत आमिर बिन सअद (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को अपने दायें और अपने बायें सलाम फेरते देखता था। यहाँ तक कि मैं आपके रुख़सारों की सफ़ेदी देखता था।
(नसाई : 1315, 1316, इब्ने माजह : 915)

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا أَبُو عَامِرٍ الْعَقَدِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ كُنْتُ أَرَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُسَلِّمُ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ يَسَارِهِ حَتَّى أَرَى بَيَاضَ خَدِّهِ .

फ़वाइद : (1) इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद (रह.) और जुम्हूर सलफ़ के नज़दीक दोनों तरफ़ सलाम फेरना चाहिये। इमाम मालिक (रह.) के नज़दीक सिर्फ़ सामने सलाम फेरा जायेगा। कई बार ये तरीक़ा इख़्तियार करना जाइज़ है क्योंकि नमाज़ से तो इंसान एक ही सलाम से निकल जाता है। (2) इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई, इमाम अहमद और जुम्हूर सलफ़ के नज़दीक नमाज़ से निकलने के लिये सलाम फेरना फ़र्ज़ है। इसके बग़ैर नमाज़ नहीं होगी और अहनाफ़ के नज़दीक वाजिब है अगर नमाज़ी तशह्हुद की मिक़्दार बैठने के बाद, जान-बूझकर नमाज़ के मुनाफ़ी कोई भी काम करे तो नमाज़ हो जायेगी। लेकिन सज्दए सह्व करना पड़ेगा। लेकिन आख़िर में अगर बिला क़सद व इरादा अगर कोई काम नमाज़ के मुनाफ़ी हो जाये तो इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक नमाज़ बातिल होगी और साहिबैन के नज़दीक दुरुस्त होगी। लेकिन अल्लामा करख़ी ने इस क़ौल की तर्दीद की है तफ़्सील के लिये देखिये (शरह सहीह मुस्लिम अल्लामा सईदी, जिल्द 2, पेज नम्बर : 178-179) इसके लिये बिला दलील ये क़ाइदा बनाया गया है कि ख़बरे वाहिद से वुजूब साबित होता है, फ़र्ज़िय्यत नहीं। दूसरी दलील अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की ज़ईफ़ रिवायत पेश की

जाती है। तीसरी दलील अबू हुरैरह (रज़ि.) की नमाज़ सहीह तरीक़े से न पढ़ने वाले को नमाज़ का तरीक़ा सिखाना है कि उसमें सलाम का तज़्किरा नहीं हालांकि उसमें सिर्फ़ उन उमूर का तज़्किरा है जहाँ उसने ग़लती की थी, नमाज़ के तमाम उमूर का तज़्किरा नहीं है।

बाब 24 : नमाज़ के बाद

باب الذِّكْرِ بَعْدَ الصَّلاَةِ

(1316) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ का इख़्तिताम या नमाज़ की तक्मील अल्लाहु अकबर कहने से पहचानते थे।
(सहीह बुख़ारी : 842, अबू दाऊद : 1002, नसाई : 3/64)

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرٍو، قَالَ أَخْبَرَنِي بِذَا أَبُو مَعْبَدٍ، - ثُمَّ أَنْكَرَهُ بَعْدُ - عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ كُنَّا نَعْرِفُ انْقِضَاءَ صَلاَةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِالتَّكْبِيرِ .

फ़ायदा : अबू मअबद ने बाद में इस हदीस के सुनाने से इंकार कर दिया था कि मैंने तुम्हें ये रिवायत नहीं सुनाई। लेकिन मुहद्दिसीन के नज़दीक अगर कोई रावी अपनी रिवायत का इंकार करे और उससे नक़ल करने वाला क़ाबिले ऐतमाद और सिक़ह (सच्चा) हो तो वो क़ाबिले क़ुबूल है। इसलिये इमाम मुस्लिम (रह.) ने इंकार नक़ल करने के बावजूद रिवायत बयान कर दी है।

(1317) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ के ख़त्म होने को बुलंद आवाज़ से अल्लाहु अकबर कहने ही से पहचानते थे। अम्र बयान करते हैं, मैंने ये रिवायत (बाद में) अबू मअबद को सुनाई तो उसने इसका इंकार किया और कहा, मैंने तुम्हें ये हदीस नहीं सुनाई। अम्र कहते हैं, हालांकि उसने पहले मुझे ये रिवायत सुनाई।

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ أَبِي مَعْبَدٍ، مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ سَمِعَهُ يُخْبِرُ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ مَا كُنَّا نَعْرِفُ انْقِضَاءَ صَلاَةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلاَّ بِالتَّكْبِيرِ . قَالَ عَمْرٌو فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لأَبِي مَعْبَدٍ فَأَنْكَرَهُ وَقَالَ لَمْ أُحَدِّثْكَ بِهَذَا . قَالَ عَمْرٌو وَقَدْ أَخْبَرَنِيهِ قَبْلَ ذَلِكَ .

(1318) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि फ़र्ज़ नमाज़ के बाद लोगों के सलाम फेरने के बाद बुलंद आवाज़ से ज़िक्र नबी (ﷺ) के दौर में था और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बताया, मुझे सलाम फेरने का इल्म उसके सुनने से होता था।

(सहीह बुख़ारी : 841, अबू दाऊद : 1003)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، أَنَّ أَبَا مَعْبَدٍ، مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَفْعَ الصَّوْتِ بِالذِّكْرِ حِينَ يَنْصَرِفُ النَّاسُ مِنَ الْمَكْتُوبَةِ كَانَ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . وَأَنَّهُ قَالَ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ كُنْتُ أَعْلَمُ إِذَا انْصَرَفُوا بِذَلِكَ إِذَا سَمِعْتُهُ .

फ़ायदा : हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की रिवायत से साबित होता है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के दौरे मुबारक में फ़र्ज़ नमाज़ से सलाम फेरने के बाद बुलंद आवाज़ से ज़िक्र होता था और इस ज़िक्र की तौज़ीह दूसरी रिवायत में तकबीर से की गई है। जिससे मालूम हुआ कि आपकी इक़्तिदा में मुक़्तदी भी बुलंद आवाज़ से अल्लाहु अकबर कहते थे और अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से रिवायत है कि आप सलाम के बाद बुलंद आवाज़ से ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर, ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि ला इला-ह इल्लल्लाहु वला नअ़्बुदु इल्ला इय्याहु लहुन्-निअ़्मतु व लहुल फ़ज़्लु व लहुस्सनाउल हसनु ला इला-ह इल्लल्लाहु मुख़्लिसीन लहुद्दीन व लौ करिहल काफ़िरून कहते थे। इससे बुलंद आवाज़ से मुरव्वजव (प्रचलित) ज़िक्र का जवाज़ साबित नहीं होता। इससे सिर्फ़ इतना साबित होता है कि सलाम फेरने के बाद आप बुलंद आवाज़ से ताकि आपके क़रीब वालों को सुन जाये ये कलिमात कहते। आपकी इक़्तिदा में आपके क़रीब रहने वाले कहते इस तरह ये आवाज़ आख़िरी सफ़ तक पहुँच जाती। जहाँ बच्चों में इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) मौजूद होते थे। लेकिन आज-कल मस्नून अल्फ़ाज़ बुलंद आवाज़ से कहने की बजाय एक सुर और एक आवाज़ से अपनी तरफ़ से कुछ कलिमात कहे जाते हैं। इस हमआहंगी का सुबूत इस रिवायत से कैसे निकल आया अ़ल्लामा सईदी ने अ़ल्लामा शामी (रह.) से नक़ल किया है कि मसाजिद में इकट्ठे ज़िक्र करना ख़लफ़ व सलफ़ के नज़दीक पसन्दीदा है। बशर्तेकि उनके जहर (बुलंद आवाज़) से किसी की नींद, क़िरअत या नमाज़ में ख़लल पैदा न हो। क्या इस क़ौल से ज़िक्र बिल्जहर की मौजूदा कैफ़ियत पर इस्तिदलाल किया जा सकता है?

बाब 25 : अज़ाबे क़ब्र से पनाह माँगना पसन्दीदा है

باب اسْتِحْبَابِ التَّعَوُّذِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

(1319) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि मेरे यहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाये जबकि मेरे पास एक यहूदी औरत मौजूद थी और वो कहती थी, क्या तुम्हें पता है या एहसास है कि क़ब्रों में तुम्हारी आज़माइश होगी? आइशा (रज़ि.) कहती हैं, इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ौफ़ज़दा हो गये और फ़रमाया, 'बस यहूद ही की आज़माइश होगी।' आइशा (रज़ि.) ने बताया, कुछ दिन गुज़रने के बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या तुम्हें पता चला मुझे वह्य की गई है कि तुम क़ब्रों में आज़माये जाओगे?' तो बाद में मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को अज़ाबे क़ब्र से पनाह माँगते सुना।

(नसाई : 4/104)

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ، وَحَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ هَارُونُ حَدَّثَنَا وَقَالَ، حَرْمَلَةُ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ بْنُ يَزِيدَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ عَائِشَةَ، قَالَتْ دَخَلَ عَلَىَّ رَسُولُ ﷺ وَعِنْدِي امْرَأَةٌ مِنَ الْيَهُودِ وَهْىَ تَقُولُ هَلْ شَعَرْتِ أَنَّكُمْ تُفْتَنُونَ فِي الْقُبُورِ قَالَتْ فَارْتَاعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَقَالَ " إِنَّمَا تُفْتَنُ يَهُودُ " . قَالَتْ عَائِشَةُ فَلَبِثْنَا لَيَالِيَ ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " هَلْ شَعَرْتِ أَنَّهُ أُوحِيَ إِلَىَّ أَنَّكُمْ تُفْتَنُونَ فِي الْقُبُورِ " . قَالَتْ عَائِشَةُ فَسَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بَعْدُ يَسْتَعِيذُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ .

फ़ायदा : नबी (ﷺ) को इस बात का इल्म न था कि आज़माइशे क़ब्र से मुसलमानों को भी गुज़रना होगा। इसलिये आप (ﷺ) ने इसकी तख़्सीस (ख़ास) यहूद से कर दी। क्योंकि यहूदिया औरत ने क़ब्र में आज़माइश का ऐतराफ़ किया था। बाद में अल्लाह तआला ने वह्य के ज़रिये से बता दिया कि आपकी उम्मत भी इस आज़माइश से गुज़रेगी। इससे साबित हुआ कि आप क़ब्र और बरज़ख़ के हालात से इस क़द्र आगाह हैं जिस क़द्र आपको अल्लाह तआला की तरफ़ से आगाह किया गया है।

(1320) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने उसके बाद आपको क़ब्र के अज़ाब से पनाह माँगते सुना।

(नसाई : 4/103)

وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ، وَحَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، وَعَمْرُو بْنُ سَوَّادٍ، قَالَ حَرْمَلَةُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ،

عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بَعْدَ ذَلِكَ يَسْتَعِيذُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ .

(1321) हज़रत आइशा (रज़ि.) की रिवायत है कि मेरे पास मदीना की दो बूढ़ी यहूदी औरतें आईं और उन्होंने कहा, क़ब्र वालों को क़ब्रों में अज़ाब होता है। मैंने उनको झुठलाया और उनकी तस्दीक़ करने को गवारा न किया। वो चली गईं और मेरे पास रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाये तो मैंने आपसे कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे पास मदीना की यहूदी बूढ़ी औरतों में से दो औरतें आईं और कहा, क़ब्र वालों को उनकी क़ब्रों में अज़ाब होता है। आपने फ़रमाया, 'उन्होंने सच कहा। उन्हें ऐसा अज़ाब होता है कि उसे मवेशी भी सुनते हैं।' उसके बाद मैंने आपको हर नमाज़ में क़ब्र के अज़ाब से पनाह माँगते हुए पाया। लम उन्इम 'मैंने उसको अच्छा न समझा।'

(सहीह बुख़ारी : 6366, नसाई : 4/105)

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، كِلاَهُمَا عَنْ جَرِيرٍ، قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ دَخَلَتْ عَلَىَّ عَجُوزَانِ مِنْ عُجُزِ يَهُودِ الْمَدِينَةِ فَقَالَتَا إِنَّ أَهْلَ الْقُبُورِ يُعَذَّبُونَ فِي قُبُورِهِمْ . قَالَتْ فَكَذَّبْتُهُمَا وَلَمْ أُنْعِمْ أَنْ أُصَدِّقَهُمَا فَخَرَجَتَا وَدَخَلَ عَلَىَّ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقُلْتُ لَهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ عَجُوزَيْنِ مِنْ عُجُزِ يَهُودِ الْمَدِينَةِ دَخَلَتَا عَلَىَّ فَزَعَمَتَا أَنَّ أَهْلَ الْقُبُورِ يُعَذَّبُونَ فِي قُبُورِهِمْ فَقَالَ " صَدَقَتَا إِنَّهُمْ يُعَذَّبُونَ عَذَابًا تَسْمَعُهُ الْبَهَائِمُ " . قَالَتْ فَمَا رَأَيْتُهُ بَعْدُ فِي صَلاَةٍ إِلاَّ يَتَعَوَّذُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ .

फ़ायदा : मक्की सूरतों में क़ब्र के अज़ाब का ज़िक्र मौजूद है। लेकिन इन आयात का तअल्लुक़ काफ़िरों से है। इसलिये आप पहले यही समझते थे कि अज़ाबे क़ब्र काफ़िरों के लिये है। मदीना में आकर इस बात का इल्म हुआ कि गुनाहगार मुसलमानों को भी इस आज़माइश और अज़ाब से दोचार होना होगा। आपने हज़रत आइशा (रज़ि.) को चूंकि क़ब्र के इम्तिहान के बारे में बताया था और उन्होंने इससे अज़ाबे क़ब्र न समझा। इसलिये यहूदी औरतों की तकज़ीब कर दी और आपको फ़ित्नए क़ब्र के बाद अज़ाबे क़ब्र से भी आगाह कर दिया गया था क्योंकि फ़ित्नए क़ब्र ही अज़ाबे क़ब्र का पेश ख़ैमा है।

(1322) मसरूक़ हज़रत आइशा (रज़ि.) से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं और उसमें ये है कि उसके बाद आपने कोई नमाज़ नहीं पढ़ी मगर इस सूरत में कि मैंने आपको अज़ाबे क़ब्र से पनाह माँगते सुना। आपने उसमें क़ब्र के अज़ाब से पनाह माँगी।

(सहीह बुख़ारी : 1372, नसाई : 3/56)

حَدَّثَنَا هَنَّادُ بْنُ السَّرِيِّ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَشْعَثَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، بِهَذَا الْحَدِيثِ وَفِيهِ قَالَتْ وَمَا صَلَّى صَلاَةً بَعْدَ ذَلِكَ إِلاَّ سَمِعْتُهُ يَتَعَوَّذُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ .

बाब 26 : नमाज़ में किन चीज़ों से पनाह माँगी जायेगी

باب مَا يُسْتَعَاذُ مِنْهُ فِي الصَّلاَةِ

(पाकिस्तानी नुस्ख़े में ये हदीसें मज़्कूरा बाला बाब के तहत दर्ज हैं इसलिये इन चीज़ों का तज़्किरा पाकिस्तानी नुस्ख़े में ऊपर वाले बाब में किया गया है)

(1323) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को अपनी नमाज़ में दज्जाल के इम्तिहान से पनाह माँगते सुना।

(सहीह बुख़ारी : 7129)

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ عَائِشَةَ، قَالَتْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَسْتَعِيذُ فِي صَلاَتِهِ مِنْ فِتْنَةِ الدَّجَّالِ .

फ़ायदा : दज्ल झूठ और फ़रेब को कहते हैं। चूंकि वो बहुत बड़ा झूठा होगा इसलिये उसको ये नाम दिया गया। या दज्ल का मानी ढांपना होता है और वो ज़मीन को अपने पैरोकारों से ढांपेगा या हक़ को बातिल से ढांपेगा। या ये दजलल असर (नक़्शे क़दम मिट गये) से माख़ूज़ है। क्योंकि उसकी आँख मिटी हुई होगी इसलिये उसको मसीह यानी मम्सूहुल ऐन कहते हैं।

(1324) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई तशह्हुद पढ़ ले तो अल्लाह तआला से चार चीज़ों से पनाह

وَحَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ وَأَبُو كُرَيْبٍ وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ جَمِيعًا عَنْ وَكِيعٍ، - قَالَ أَبُو كُرَيْبٍ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، - حَدَّثَنَا

الْأَوْزَاعِيُّ، عَنْ حَسَّانَ بْنِ عَطِيَّةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَائِشَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، وَعَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا تَشَهَّدَ أَحَدُكُمْ فَلْيَسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنْ أَرْبَعٍ يَقُولُ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ " .

तलब करे।' आप फ़रमाते थे, 'ऐ अल्लाह! मैं जहन्नम के अ़ज़ाब से और क़ब्र के अ़ज़ाब से और ज़िन्दगी और मौत की आज़माइश से और मसीह दज्जाल के फ़ित्ने के शर से तेरी पनाह तलब करता हूँ।'

(अबू दाऊद : 983, नसाई : 3/58, इब्ने माजह : 909)

फ़ायदा : ये दुआ दुनिया व आख़िरत की आफ़तों और मुसीबतों से हिफ़ाज़त के लिये बड़ी जामेअ़ है। सबसे पहले जहन्नम के अ़ज़ाब से पनाह माँगी है। जो शदीद तरीन और नाक़ाबिले तसव्वुर अ़ज़ाब है और इंसान की सबसे बड़ी शक़ावत और बदबख़्ती है। फिर क़ब्र के अ़ज़ाब से पनाह माँगी है जो दरहक़ीक़त अ़ज़ाबे जहन्नम का ही एक रुख़ या पेश ख़ैमा है। जो अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहा, वो दोज़ख़ के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा। क्योंकि क़ब्र आख़िरत की मंज़िलों में सबसे पहली मंज़िल है। अगर बन्दा इससे निजात पा गया तो आगे की मंज़िलें आसान हैं और अगर इंसान क़ब्र की मंज़िल से निजात न पा सका तो उसके बाद उसकी मंज़िलें तो बहुत ज़्यादा सख़्त और कठिन हैं। उसके बाद आपने ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्नों से पनाह माँगी है। ज़िन्दगी में इंसान अपने अहलो-अ़याल, अ़ज़ीज़ो-अक़ारिब, दोस्त व अहबाब की मुहब्बत, अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात, दुनियवी अग़राज़ व मक़ासिद, नादानी व जहालत की बिना पर अल्लाह तआ़ला के अहकाम व हिदायात को नज़र अन्दाज़ करता है या गुनाह का इर्तिकाब कर बैठता है और मौत का फ़ित्ना ये है कि इंसान मरते वक़्त ईमान पर क़ायम न रहे या मरते वक़्त ग़लत वसियत कर जाये। मौत की सख़्ती से जज़अ़ व फ़ज़अ़ करे और ज़बान से ग़लत अल्फ़ाज़ निकाल बैठे। आख़िर में आपने दज्जाल के शर से पनाह माँगी। क्योंकि ये दुनिया में बर्पा होने वाले फ़ित्नों में से सबसे बड़ा और मुश्किल फ़ित्ना होगा। जिसमें ईमान का सलामत रखना बड़ा कठिन होगा।

حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ، أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ

(1325) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) नमाज़ में ये दुआ माँगते थे। ऐ अल्लाह! मैं क़ब्र के अ़ज़ाब से तेरी पनाह

أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ عَائِشَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَخْبَرَتْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَدْعُو فِي الصَّلاَةِ " اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ " . قَالَتْ فَقَالَ لَهُ قَائِلٌ مَا أَكْثَرَ مَا تَسْتَعِيذُ مِنَ الْمَغْرَمِ يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَقَالَ " إِنَّ الرَّجُلَ إِذَا غَرِمَ حَدَّثَ فَكَذَبَ وَوَعَدَ فَأَخْلَفَ " .

चाहता हूँ, मैं मसीह दज्जाल के फ़ित्ने से तेरी पनाह का तालिब हूँ, मैं ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्ने से तेरी पनाह माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं गुनाह और क़र्ज़ के फ़ित्ने से तेरी पनाह में आता हूँ।' किसी पूछने वाले ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! आप क़र्ज़ से किस क़द्र ज़्यादा पनाह माँगते हैं? आपने फ़रमाया, 'जब आदमी मक़रूज़ (कर्ज़दार) हो जाता है तो जब बात करता है झूठ बोलता है और वादा करके उसके ख़िलाफ़वर्ज़ी करता है।'
(सहीह बुख़ारी : 832, 2397, अबू दाऊद : 880, नसाई : 3/56)

मुफ़रदातुल हदीस़ : मअ़सम : मस्दर हो तो मानी गुनाह होगा या इससे मुराद ऐसा काम है जो गुनाह का सबब व बाइ़स हो। **मग़्रम :** यानी क़र्ज़ या ऐसा काम जो क़र्ज़ का बाइ़स बने।

फ़ायदा : नबी (ﷺ) के अगले-पिछले गुनाह माफ़ हो चुके हैं, उसके बावजूद आप क़ब्र और जहन्नम के अ़ज़ाब से पनाह माँगते हैं। इसकी उ़लमा ने कई तौजीहात बयान की हैं : (1) उम्मत को दुआ़ की तालीम व तल्क़ीन के लिये। (2) ये बताने के लिये कि दुआ़ माँगना सुन्नत है। (3) तवाज़ोअ़ और उ़बूदियत व बन्दगी के इज़हार के लिये। (4) अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत व हैबत और ख़ौफ़ के ग़ल्बे के सबब। (5) इंसान का अल्लाह की तरफ़ एहतियात और फ़क्र के इज़हार के लिये। (6) अल्लाह के हुक्म व इस्तिग़फ़ार के इम्तिसाल (हुक्म मानना) के लिये। (7) उम्मत को इस्तिग़फ़ार की तरग़ीब व तश्वीक़ (रग़बत व शौक़ दिलाने) के लिये कि मैं इस क़द्र बुलंद दर्जा रखने के बावजूद अगर इस्तिग़फ़ार करता हूँ तो तुम्हें इसका किस क़द्र एहतिमाम और पाबन्दी करनी चाहिये। (8) उन गुनाहों और क़ब्र व दोज़ख़ से डराने के लिये कि ये बहुत मुश्किल घाटियाँ हैं उनकी फ़िक्र करो। (9) दुआ़ इस्तिग़फ़ार मुस्तक़िल तौर पर अल्लाह के क़ुर्ब व रहमत और दर्जात के बुलन्दी का बाइ़स है। इसलिये ज़रूरी नहीं इंसान ज़रूरतमन्द हो या गुनाहगार हो तो ही दुआए इस्तिग़फ़ार करे। बल्कि नेकियों के हुसूल और दर्जात की बुलन्दी की ख़ातिर ये काम करने चाहियें। इसलिये आप इसके बावजूद कि मसीह दज्जाल का ज़ुहूर आप (ﷺ) के बाद क़यामत के क़रीब होगा, आप उसके शर व फ़ित्ने से पनाह तलब करते थे।

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنِي الأَوْزَاعِيُّ، حَدَّثَنَا حَسَّانُ بْنُ عَطِيَّةَ، حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عَائِشَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا فَرَغَ أَحَدُكُمْ مِنَ التَّشَهُّدِ الآخِرِ فَلْيَتَعَوَّذْ بِاللَّهِ مِنْ أَرْبَعٍ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ " .

(1326) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई दूसरे तशह्हुद से फ़ारिग़ हो जाये तो अल्लाह तआला से चार चीज़ों से पनाह तलब करे, जहन्नम के अ़ज़ाब से, क़ब्र के अ़ज़ाब से, मौत व हयात के फ़ित्ने से और मसीह दज्जाल के फ़ित्ने से।'

وَحَدَّثَنِيهِ الْحَكَمُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا هِقْلُ بْنُ زِيَادٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، أَخْبَرَنَا عِيسَى، - يَعْنِي ابْنَ يُونُسَ - جَمِيعًا عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ " إِذَا فَرَغَ أَحَدُكُمْ مِنَ التَّشَهُّدِ " . وَلَمْ يَذْكُرِ " الآخِرَ " .

(1327) यही रिवायत मुझे हकम बिन मूसा बिन ज़ियाद से नीज़ हमें अ़ली बिन ख़शरम ने ईसा से (जो यूनुस का बेटा है) दोनों ने औज़ाई की मज़्कूरा सनद से सुनाई और तशह्हुद के साथ अल्आख़िर (आख़िरी, दूसरा) के अल्फ़ाज़ नहीं कहे।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ وَفِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَشَرِّ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ " .

(1328) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने दुआ की, 'ऐ अल्लाह! मैं क़ब्र के अ़ज़ाब से तेरी पनाह का तालिब हूँ और आग के अ़ज़ाब से और ज़िन्दगी और मौत की आज़माइश से और मसीह दज्जाल के शर से।'
(सहीह बुख़ारी : 1377)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ طَاوُسٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم "

(1329) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह के अ़ज़ाब से अल्लाह की पनाह लो, क़ब्र के अ़ज़ाब से अल्लाह की पनाह

عُوذُوا بِاللَّهِ مِنْ عَذَابِ اللَّهِ عُوذُوا بِاللَّهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ عُوذُوا بِاللَّهِ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ عُوذُوا بِاللَّهِ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ " .

माँगो, मसीह दज्जाल के फ़ित्ने से अल्लाह की पनाह तलब करो, ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्ने से अल्लाह की पनाह लो।'
(नसाई : 8/277, 8/275, 8/277)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم مِثْلَهُ .

(1330) इमाम साहब एक और उस्ताद से अबू हुरैरह (रज़ि.) की मज़्कूरा रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم مِثْلَهُ .

(1331) इमाम साहब अपने और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।
(नसाई : 8/275, 8/277)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ بُدَيْلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ كَانَ يَتَعَوَّذُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ جَهَنَّمَ وَفِتْنَةِ الدَّجَّالِ .

(1332) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) क़ब्र के अ़ज़ाब से, जहन्नम के अ़ज़ाब से और दज्जाल के फ़ित्ने से पनाह माँगा करते थे।
(नसाई : 2/278)

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، - فِيمَا قُرِئَ عَلَيْهِ - عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ طَاوُسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُعَلِّمُهُمْ هَذَا الدُّعَاءَ كَمَا يُعَلِّمُهُمُ السُّورَةَ مِنَ الْقُرْآنِ يَقُولُ " قُولُوا اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَأَعُوذُ بِكَ

(1333) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमें इस दुआ की तालीम इस तरह देते थे, जिस तरह क़ुरआन मजीद की किसी सूरत की तालीम देते थे। इरशाद फ़रमाते थे कि कहो, 'ऐ अल्लाह! हम जहन्नम के अ़ज़ाब से तेरी पनाह माँगते हैं, मैं क़ब्र के अ़ज़ाब से तेरी माँगता हूँ और मैं पनाह माँगता हूँ मसीह दज्जाल के फ़ित्ने से और मैं पनाह माँगता हूँ ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्ने

مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ " . قَالَ مُسْلِمُ بْنُ الْحَجَّاجِ بَلَغَنِي أَنَّ طَاوُسًا قَالَ لاِبْنِهِ أَدَعَوْتَ بِهَا فِي صَلاَتِكَ فَقَالَ لاَ . قَالَ أَعِدْ صَلاَتَكَ لأَنَّ طَاوُسًا رَوَاهُ عَنْ ثَلاَثَةٍ أَوْ أَرْبَعَةٍ أَوْ كَمَا قَالَ .

से।' साहिबे किताब मुस्लिम बिन हज्जाज (रह.) बयान करते हैं कि मुझे ताऊस से ये बात पहुँची है कि उसने अपने बेटे से पूछा, क्या तूने ये दुआ अपनी नमाज़ में माँगी है? उसने जवाब दिया, नहीं। इस पर ताऊस ने कहा, अपनी नमाज़ दोबारा पढ़ क्योंकि ताऊस ने ये रिवायत तीन-चार सहाबा से नक़ल की है या जैसाकि उसने कहा।

(अबू दाऊद : 1542, तिर्मिज़ी : 3494, नसाई : 4/177, 8/276)

फ़वाइद : (1) इमाम ताऊस ने तअव्वुज़ के छोड़ देने पर अपने बेटे को नये सिरे से नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया। जिससे मालूम होता है कि वो इस हुक्म को फ़र्ज़िय्यत के मानी में लेते थे। इब्ने हज़म (रह.) का भी यही नज़रिया है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) से मन्क़ूल तअव्वुज़ नमाज़ के लिये ज़रूरी है। लेकिन जुम्हूर उ़लमा के नज़दीक ये इस्तिहबाब के लिये है यानी ये कलिमात नमाज़ में पढ़ने चाहिये। लेकिन इसके बग़ैर नमाज़ हो जाती है। **(2)** कुछ लोग दफ़न के बाद अज़ान देते हैं ताकि शैतान भाग जाये और मय्यित को फ़रिश्तों के सवालात के जवाब मुस्तहज़र हों। अ़ल्लामा सईदी ने लिखा है, इसको तदफ़ीन का एक रुक्न क़रार देना बातिल और बिदअ़ते सय्यिआ है। (जिल्द 2 पेज नम्बर : 190) ज़ाहिर बात है बिदअ़त की शुरूआत इसी तरह होती है कि पहले एक काम अच्छा समझकर शुरू किया जाता है उसको ज़रूरी और लाज़िम नहीं समझा जाता, आहिस्ता-आहिस्ता उसको दीन का हिस्सा बना लिया जाता है और जो वो काम न करे उसको तअनो-तश्नीअ का निशाना बनाया जाता है।

باب اسْتِحْبَابِ الذِّكْرِ بَعْدَ الصَّلاَةِ وَبَيَانِ صِفَتِهِ

बाब 27 : नमाज़ के बाद ज़िक्र अच्छा अ़मल है और उसकी कैफ़ियत व सूरत की वज़ाहत

حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ رُشَيْدٍ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، عَنْ أَبِي عَمَّارٍ، - اسْمُهُ شَدَّادُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ - عَنْ أَبِي أَسْمَاءَ، عَنْ ثَوْبَانَ، قَالَ

(1334) हज़रत स़ौबान (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब अपनी नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो तीन बार बख़्शिश तलब करते और उसके बाद कहते, ऐ अल्लाह! तू ही

सलाम और तेरी ही तरफ़ से सलामती मिलती है, तू बरकत व अज़मत वाला है ऐ बुज़ुर्गी और बरतरी वाले!' वलीद कहते हैं, मैंने औज़ाई से पूछा, इस्तिग़फ़ार कैसे है? उसने कहा, यूँ कहो, अस्तग़फ़िरुल्लाह-अस्तग़फ़िरुल्लाह।

(अबू दाऊद : 1513, तिर्मिज़ी : 300, नसाई : 3/69, इब्ने माजह : 928)

كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا انْصَرَفَ مِنْ صَلاَتِهِ اسْتَغْفَرَ ثَلاَثًا وَقَالَ " اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلاَمُ وَمِنْكَ السَّلاَمُ تَبَارَكْتَ ذَا الْجَلاَلِ وَالإِكْرَامِ " . قَالَ الْوَلِيدُ فَقُلْتُ لِلأَوْزَاعِيِّ كَيْفَ الاِسْتِغْفَارُ قَالَ تَقُولُ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ .

फ़वाइद : (1) इस हदीस़ से स़ाबित हुआ कि नबी (ﷺ) का ये मामूल था कि आप सलाम फेरने के बाद मुत्तसिलन (अल्लाहु अकबर कहने के बाद) तीन बार अस्तग़फ़िरुल्लाह कहते थे। क्योंकि ये अ़बदियत और बन्दगी की इन्तिहा है कि नमाज़ जैसी इबादत के बाद भी अपने आपको क़ुसूरवार और हक़्क़े इबादत की अदायगी से कोताह और आजिज़ समझते हुए अल्लाह तआ़ला से माफ़ी और बख़्शिश माँगी जाये और हक़ तो ये है कि हक़ अदा न हुआ का ऐतराफ़ किया। (2) हज़रत स़ौबान (रज़ि.) की इस मुख़्तसर दुआ जो उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से नक़ल की है। आज-कल आ़म तौर पर कुछ कलिमात 'इलैक यरजिउस्सलाम, फ़हय्यिना रब्बना बिस्सलाम व अदख़िल्ना दारस्सलाम का अपने तौर पर इज़ाफ़ा कर लिया जाता है। अ़ल्लामा सईदी लिखते हैं, 'हदीस़ शरीफ़ में दुआ और ज़िक्र के जो अल्फ़ाज़ वारिद हों, उनमें अपनी तरफ़ से कमी-बेशी या तग़य्युर व तबद्दुल करना सहीह नहीं है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) को एक दुआ सिखाई जिसमें ये अल्फ़ाज़ थे व नबिय्यकल्लज़ी अर्सल्ता हज़रत बराअ (रज़ि.) ने जब ये कलिमात दोहराकर आपको सुनाये तो यूँ पढ़ा, 'वबि-रसूलिकल्लज़ी अर्सल्ता' आपने फ़रमाया, ला (नहीं)। व नबिय्यिकल्लज़ी अर्सल्ता वही अल्फ़ाज़ पढ़ो जो मैंने सिखाये हैं। (जिल्द 2, पेज नम्बर 192) आगे हाफ़िज़ इब्ने हजर और अ़ल्लामा ऐ़नी (रह.) की इबारत नक़ल की है जिसका मानी ये है, अल्फ़ाज़े ज़िक्र लफ़्ज़ के तअ़य्युन और स़वाब की मिक़्दार में तौफ़ीक़ी होते हैं (उनमें मन्क़ूल की पाबंदी की जाती है) क्योंकि कई बार एक लफ़्ज़ में ऐसा राज़ होता है जो उसके हम मानी दूसरे लफ़्ज़ में नहीं होता।

(1335) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सलाम फेरने के बाद सिर्फ़ अल्लाहुम्-म अन्तस्सलामु व मिन्कस्सलामु तबारक्-त या ज़ल्जलालि

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ

صلى الله عليه وسلم إِذَا سَلَّمَ لَمْ يَقْعُدْ إِلاَّ مِقْدَارَ مَا يَقُولُ " اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلاَمُ وَمِنْكَ السَّلاَمُ تَبَارَكْتَ ذَا الْجَلاَلِ وَالإِكْرَامِ " . وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ نُمَيْرٍ " يَا ذَا الْجَلاَلِ وَالإِكْرَامِ " .

वल्इकराम पढ़ने की मिक़्दार तक बैठते थे और इब्ने नुमैर की रिवायत या ज़ल्जलालि वल्इकराम यानी या के इज़ाफ़े के साथ है।

(अबू दाऊद : 1512, तिर्मिज़ी : 298, नसाई : 3/69, इब्ने माजह : 924)

फ़ायदा : अन्तस्सलाम का मानी ये है कि तू हर ऐब व नुक़्स, हवादिस व आफ़ात और हर क़िस्म के तग़य्युर व ज़वाल से महफ़ूज़ और पाक है और मिन्कस्सलाम का मानी है कि सलामती तेरे हाथ में है। जिसके लिये चाहे और जब चाहे सलामती का फ़ैसला करे और जिसके न चाहे, न फ़ैसला करे और हज़रत आइशा (रज़ि.) का मक़सद ये है कि आम तौर पर आप क़िब्ला रुख़ बैठकर यही कलिमात पढ़ते थे और उसके बाद मुक़्तदियों की तरफ़ मुँह कर लेते थे और बाक़ी ज़िक्र व अज़्कार करते थे। जैसाकि दूसरी रिवायात से साबित होता है।

وَحَدَّثَنَاهُ ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ، - يَعْنِي الأَحْمَرَ - عَنْ عَاصِمٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ " يَا ذَا الْجَلاَلِ وَالإِكْرَامِ " .

(1336) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं, जिसमें है और कहा, या ज़ल्जलालि वल्इकराम ऐ अज़्मत व एहसान के मालिक!

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ، حَدَّثَنِي أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ، وَخَالِدٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ، كِلاَهُمَا عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ . بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ " يَا ذَا الْجَلاَلِ وَالإِكْرَامِ " .

(1337) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं, जिसमें है कि आप या ज़ल्जलालि वल्इकराम कहा करते थे।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنِ الْمُسَيَّبِ بْنِ رَافِعٍ، عَنْ وَرَّادٍ، مَوْلَى الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ كَتَبَ الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ إِلَى مُعَاوِيَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى

(1338) हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा (रज़ि.) ने मुआविया (रज़ि.) को लिखा कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ से फ़ारिग़ होकर सलाम फेरते तो फ़रमाते, अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वो अकेला और यकता है, उसका कोई शरीक नहीं, उसकी

الله عليه وسلم كان إذا فرغ من الصلاة وسلم قال " لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ اللَّهُمَّ لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلاَ يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ " .

हुकूमत और फ़रमांरवाई है और वही शुक्र व सताइश का हक़दार है और हर चीज़ पर उसकी कुदरत हासिल है। ऐ अल्लाह! जो कुछ तू किसी को देना चाहे उसे कोई रोक सकने वाला नहीं और जिस चीज़ के तू न देने का फ़ैसला कर ले, कोई उसे दे सकने वाला नहीं और किसी सरमायेदार साहिबे जाह व माल को उसका सरमाया और जाह व माल तुझसे मुस्तग़नी नहीं कर सकता। बड़े से बड़ा सरमायेदार और साहिबे माल व जाह हर आन तेरा मोहताज है।
(सहीह बुख़ारी : 844, 6330, 6472, 6615, 7292, अबू दाऊद : 1505, नसाई : 3/70, 3/71)

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ وَأَحْمَدُ بْنُ سِنَانٍ قَالُوا حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنِ الْمُسَيَّبِ بْنِ رَافِعٍ، عَنْ وَرَّادٍ، مَوْلَى الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ عَنِ الْمُغِيرَةِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ قَالَ أَبُو بَكْرٍ وَأَبُو كُرَيْبٍ فِي رِوَايَتِهِمَا قَالَ فَأَمْلاَهَا عَلَىَّ الْمُغِيرَةُ وَكَتَبْتُ بِهَا إِلَى مُعَاوِيَةَ .

(1339) इमाम साहब मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत अपने अलग-अलग उस्तादों से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي عَبْدَةُ بْنُ أَبِي لُبَابَةَ، أَنَّ وَرَّادًا، مَوْلَى الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ كَتَبَ الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ إِلَى مُعَاوِيَةَ - كَتَبَ ذَلِكَ الْكِتَابَ لَهُ وَرَّادٌ - إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ حِينَ سَلَّمَ . بِمِثْلِ حَدِيثِهِمَا إِلاَّ قَوْلَهُ " وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ " . فَإِنَّهُ لَمْ يَذْكُرْ .

(1340) हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा (रज़ि.) ने मुआविया (रज़ि.) को लिखवाया (ये तहरीर उनकी तरफ़ वर्राद ने लिखी) मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सलाम के वक़्त सुना। फिर मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की। मगर उसमें व—हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर के अल्फ़ाज़ बयान नहीं किये।

وَحَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ عُمَرَ الْبَكْرَاوِيُّ، حَدَّثَنَا بِشْرٌ، - يَعْنِي ابْنَ الْمُفَضَّلِ ح قَالَ وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنِي أَزْهَرُ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عَوْنٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ وَرَّادٍ، كَاتِبِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ كَتَبَ مُعَاوِيَةُ إِلَى الْمُغِيرَةِ . بِمِثْلِ حَدِيثِ مَنْصُورٍ وَالأَعْمَشِ .

(1341) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ الْمَكِّيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ أَبِي لُبَابَةَ، وَعَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عُمَيْرٍ، سَمِعَا وَرَّادًا، كَاتِبَ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ يَقُولُ كَتَبَ مُعَاوِيَةُ إِلَى الْمُغِيرَةِ اكْتُبْ إِلَىَّ بِشَىْءٍ سَمِعْتَهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . قَالَ فَكَتَبَ إِلَيْهِ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ إِذَا قَضَى الصَّلاَةَ " لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ اللَّهُمَّ لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلاَ يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ " .

(1342) हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने मुग़ीरह (रज़ि.) को ख़त लिखा कि मुझे कोई ऐसी हदीस़ लिख भेजो जो तुमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी हो तो उन्होंने लिख भेजा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना कि जब आप नमाज़ पढ़ लेते तो फ़रमाते, ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू, लहुल मुल्कु व लहुल् हम्दु वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर अल्लाहुम्-म ला मानि-अ़ लिमा अअ़्तै-त वला मुअ़्ति-य लिमा मनअ़्-त वला यन्फ़उ ज़ल्जद्दि मिन्कल जद्दु।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، قَالَ كَانَ ابْنُ الزُّبَيْرِ يَقُولُ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلاَةٍ حِينَ يُسَلِّمُ " لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ

(1343) हज़रत अबू ज़ुबैर (रह.) से रिवायत है कि इब्ने ज़ुबैर (रह.) हर नमाज़ के बाद सलाम फेरते वक़्त ये कलिमात कहते थे, ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू, लहुल मुल्कु व लहुल् हम्दु वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि ला इला-ह इल्लल्लाहु वला

لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَلاَ نَعْبُدُ إِلاَّ إِيَّاهُ لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ " . وَقَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُهَلِّلُ بِهِنَّ دُبُرَ كُلِّ صَلاَةٍ .

नअ़्बुदु इल्ला इय्याहु लहुन्-निअ़्मतु व लहुल् फ़ज़्लु व लहुस्सनाउल हसनु ला इला-ह इल्लल्लाहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न वलौ करिहल काफ़िरून। अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, उसका कोई शरीक और साझी नहीं, उसकी हुकूमत व फ़रमांरवाई है और वही शुक्र व सताइश का हक़दार है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है। गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ और नेकी करने की कुव्वत सब अल्लाह ही के इरादे से है उसके सिवा कोई इलाह (माबूद) नहीं। हम सिर्फ़ उसकी बन्दगी करते हैं, सब नेमतें उसी की हैं और फ़ज़्ल व करम उसका है, अच्छी तारीफ़ का मुस्तहिक़ भी वही है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, हम पूरे इख़्लास के साथ उसकी बन्दगी करते हैं, अगरचे मुन्किरों को कितना ही नागवार हो।' और बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हर नमाज़ के बाद इन कलिमात को बुलंद आवाज़ से कहते थे।

(अबू दाऊद : 1506, 1507, नसाई : 3/69, 3/70)

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، مَوْلًى لَهُمْ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الزُّبَيْرِ، كَانَ يُهَلِّلُ دُبُرَ كُلِّ صَلاَةٍ . بِمِثْلِ حَدِيثِ ابْنِ نُمَيْرٍ وَقَالَ فِي آخِرِهِ ثُمَّ يَقُولُ ابْنُ الزُّبَيْرِ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُهَلِّلُ بِهِنَّ دُبُرَ كُلِّ صَلاَةٍ .

(1344) हज़रत अबू ज़ुबैर (रह.) बयान करते हैं कि अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रह.) हर नमाज़ के बाद कलिमाते तहलील कहते थे जैसाकि इब्ने नुमैर की रिवायत में है और आख़िर में कहा, फिर इब्ने ज़ुबैर कहते रसूलुल्लाह (ﷺ) हर नमाज़ के बाद ये कलिमात कहते थे।

(1345) हज़रत अबू ज़ुबैर (रह.) से रिवायत है कि मैंने अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से सुना है वो इस मिम्बर पर ख़ुत्बा देते हुए बयान कर रहे थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सलाम फेरने के बाद नमाज़ ख़त्म करते वक़्त कहा करते थे और हिशाम इब्ने उरवह की तरह हदीस बयान की।

وَحَدَّثَنِي يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ، حَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ بْنُ أَبِي عُثْمَانَ، حَدَّثَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الزُّبَيْرِ، يَخْطُبُ عَلَى هَذَا الْمِنْبَرِ وَهُوَ يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ إِذَا سَلَّمَ فِي دُبُرِ الصَّلاَةِ أَوِ الصَّلَوَاتِ . فَذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ .

(1346) हज़रत ज़ुबैर मक्की (रह.) से रिवायत है कि उसने अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से सुना, वो हर नमाज़ के बाद जब सलाम फेरते तो कलिमाते तहलील कहते थे। जैसाकि मज़्कूरा बाला रिवायत है और आख़िर में कहा वो ये बात रसूलुल्लाह (ﷺ) से बयान करते थे।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ الْمُرَادِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَالِمٍ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، أَنَّ أَبَا الزُّبَيْرِ الْمَكِّيَّ، حَدَّثَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الزُّبَيْرِ، وَهُوَ يَقُولُ فِي إِثْرِ الصَّلاَةِ إِذَا سَلَّمَ . بِمِثْلِ حَدِيثِهِمَا وَقَالَ فِي آخِرِهِ وَكَانَ يَذْكُرُ ذَلِكَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

फ़ायदा : हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) की हदीस में कलिमात में कुछ फ़र्क़ है। जिसकी वजह ये है कि आप नमाज़ के बाद कभी मुग़ीरह (रज़ि.) वाले कलिमात कहते थे और कभी इब्ने ज़ुबैर वाले। इसलिये इसमें तज़ाद (टकराव) नहीं है। नीज़ इससे ये भी साबित होता है कि आप ये दुआयें और ज़िक्र ये कलिमात और कुछ दूसरे कलिमात हम्द व तस्बीह और तौहीद व तकबीर सलाम फेरने के बाद, सुन्नतों से पहले पढ़ते थे। इब्ने हम्माम और कुछ दीगर फ़ुक़हा ने हज़रत आइशा (रज़ि.) की हदीस से इस्तिदलाल करते हुए ये कहा है कि अल्लाहुम्-म अन्तस्सलामु व मिन्कस्सलामु वाली दुआ के सिवा अज़कार सुन्नतें अदा करने के बाद पढ़ीं, दुरुस्त नहीं है अल्लामा सईदी ने तफ़्सील से इसकी तर्दीद की है। लेकिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) की रिवायत से मुरव्वजा (प्रचलित) ज़िक्र बिल्जहर पर इस्तिदलाल करना दुरुस्त नहीं है।

(1347) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि तंगदस्त मुहाजिरीन रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और गुज़ारिश

حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ النَّضْرِ التَّيْمِيُّ، حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا

की कि मालदार बुलंद दर्जात और सदाबहार नेमतें ले गये। आपने पूछा, ये कैसे? उन्होंने कहा, वो हमारी तरह नमाज़ें पढ़ते हैं, वो रोज़े रखते हैं, जैसे हम रोज़े रखते हैं और वो सदक़ा करते हैं, हम सदक़ा नहीं कर सकते, वो आज़ादी देते हैं, हम आज़ाद नहीं कर सकते। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तो क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न सिखाऊँ जिससे तुम अपने सबक़त ले जाने वालों को पहुँच जाओ और उसके सबब अपने बाद वालों से सबक़त ले जाओ? और तुम से कोई अफ़ज़ल न हो मगर वो जो तुम्हारी तरह अमल करे।' उन्होंने कहा, क्यों नहीं (ज़रूर बतलायें) ऐ अल्लाह के रसूल! आपने फ़रमाया, 'तुम तैंतीस मर्तबा हर नमाज़ के बाद सुब्हानअल्लाह, अल्लाहु अकबर वल्हम्दुलिल्लाह कहो।' अबू सालेह बयान करते हैं, मोहताज मुहाजिरीन दोबारा रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आये और कहा, हमारे मालदार भाइयों ने हमारे अमल को सुनकर हमारी तरह अमल शुरू कर दिया है। (वो भी तस्बीह, तकबीर तहमीद करने लगे हैं) तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे इनायत फ़रमा दे।' क़ुतैबा (रज़ि.) के सिवा किसी और ने लैस़ से इब्ने अज्लान के वास्ते से सुमय्य से बयान किया। मैंने ये हदीस़ अपने घर के किसी फ़र्द को सुनाई तो उसने कहा, तुम भूल गये हो। आप (ﷺ) ने फ़रमाया था,

قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنِ ابْنِ عَجْلاَنَ، كِلاَهُمَا عَنْ سُمَىٍّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، - وَهَذَا حَدِيثُ قُتَيْبَةَ أَنَّ فُقَرَاءَ، الْمُهَاجِرِينَ أَتَوْا رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالُوا ذَهَبَ أَهْلُ الدُّثُورِ بِالدَّرَجَاتِ الْعُلَى وَالنَّعِيمِ الْمُقِيمِ . فَقَالَ " وَمَا ذَاكَ " . قَالُوا يُصَلُّونَ كَمَا نُصَلِّي وَيَصُومُونَ كَمَا نَصُومُ وَيَتَصَدَّقُونَ وَلاَ نَتَصَدَّقُ وَيُعْتِقُونَ وَلاَ نُعْتِقُ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَفَلاَ أُعَلِّمُكُمْ شَيْئًا تُدْرِكُونَ بِهِ مَنْ سَبَقَكُمْ وَتَسْبِقُونَ بِهِ مَنْ بَعْدَكُمْ وَلاَ يَكُونُ أَحَدٌ أَفْضَلَ مِنْكُمْ إِلاَّ مَنْ صَنَعَ مِثْلَ مَا صَنَعْتُمْ " . قَالُوا بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَ " تُسَبِّحُونَ وَتُكَبِّرُونَ وَتَحْمَدُونَ دُبُرَ كُلِّ صَلاَةٍ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ مَرَّةً " . قَالَ أَبُو صَالِحٍ فَرَجَعَ فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِينَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالُوا سَمِعَ إِخْوَانُنَا أَهْلُ الأَمْوَالِ بِمَا فَعَلْنَا فَفَعَلُوا مِثْلَهُ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ " . وَزَادَ غَيْرُ قُتَيْبَةَ فِي هَذَا الْحَدِيثِ عَنِ اللَّيْثِ عَنِ ابْنِ عَجْلاَنَ قَالَ سُمَىٌّ فَحَدَّثْتُ بَعْضَ أَهْلِي هَذَا الْحَدِيثَ فَقَالَ وَهِمْتَ إِنَّمَا قَالَ " تُسَبِّحُ اللَّهَ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ وَتَحْمَدُ اللَّهَ

ثَلاثًا وَثَلاثِينَ وَتُكَبِّرُ اللَّهَ ثَلاثًا وَثَلاثِينَ " . فَرَجَعْتُ إِلَى أَبِي صَالِحٍ فَقُلْتُ لَهُ ذَلِكَ فَأَخَذَ بِيَدِي فَقَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ حَتَّى تَبْلُغَ مِنْ جَمِيعِهِنَّ ثَلاثَةً وَثَلاثِينَ . قَالَ ابْنُ عَجْلاَنَ فَحَدَّثْتُ بِهَذَا الْحَدِيثِ رَجَاءَ بْنَ حَيْوَةَ فَحَدَّثَنِي بِمِثْلِهِ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

'तैंतीस मर्तबा सुब्हानअल्लाह कहो, तैंतीस बार अल्हम्दुलिल्लाह कहो और तैंतीस बार अल्लाहु अकबर कहो।' तो मैं दोबारा अबू सालेह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसे ये बताया तो उसने मेरा हाथ पकड़कर कहा, अल्लाहु अकबर सुब्हानअल्लाह और अल्हम्दुलिल्लाह, अल्लाहु अकबर सुब्हानअल्लाह अल्हम्दुलिल्लाह इस तरह कुल तादाद तैंतीस हो जाये। इब्ने अ़ज्लान कहते हैं, मैंने ये हदीस़ रजा बिन हैवा को सुनाई तो उसने मुझे इस तरह अबू सालेह के वास्ते से अबू हुरैरह (रज़ि.) की रसूलुल्लाह (ﷺ) से हदीस़ सुनाई।

(सहीह बुख़ारी : 843, 6329)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अद्दुसूर : दस़र की जमा है, बहुत माल, अहलुद्दुसूर, बहुत मालदार। **(2) अद्दरजातुल उ़ला :** दर्जात, दर्जे की जमा है, मर्तबा और उ़ला, आ़ला का मुअन्नस़ है। **(3) अन्नईमुल मुक़ीम :** दायमी या हमेशा की नेमतें, दुबुर बाद में या आख़िर में।

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है कि अगर इंसान के पास फ़ुरसत कम हो या उसे किसी वजह से जल्दी हो तो वो उन कलिमात को ग्यारह ग्यारह बार भी कह सकता है।

وَحَدَّثَنِي أُمَيَّةُ بْنُ بِسْطَامَ الْعَيْشِيُّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا رَوْحٌ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُمْ قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ ذَهَبَ أَهْلُ الدُّثُورِ بِالدَّرَجَاتِ الْعُلَى وَالنَّعِيمِ الْمُقِيمِ . بِمِثْلِ حَدِيثِ قُتَيْبَةَ عَنِ اللَّيْثِ إِلاَّ أَنَّهُ أَدْرَجَ فِي حَدِيثِ أَبِي هُرَيْرَةَ قَوْلَ أَبِي صَالِحٍ ثُمَّ رَجَعَ

(1348) सुहैल अपने बाप से रिवायत करते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! सरमायेदार, बुलंद मरातिब और दायमी नेमतें ले गये। जैसा कि क़ुतैबा की लैस़ से वारिद है मगर उसने अबू हुरैरह (रज़ि.) की हदीस़ में अबू सालेह का ये क़ौल दाख़िल कर दिया है कि फिर फ़ुक़राउल मुहाजिरीन लौटकर आये। आख़िर हदीस़ तक और हदीस़ में ये इज़ाफ़ा

فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِينَ . إِلَى آخِرِ الْحَدِيثِ وَزَادَ فِي الْحَدِيثِ يَقُولُ سُهَيْلٌ إِحْدَى عَشْرَةَ إِحْدَى عَشْرَةَ فَجَمِيعُ ذَلِكَ كُلُّهُ ثَلاَثَةٌ وَثَلاَثُونَ .

किया, सुहैल ने कहा, हर कलिमा ग्यारह बार और ये सब मिलाकर मज्मूई तौर पर तैंतीस बार।

وَحَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عِيسَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلٍ، قَالَ سَمِعْتُ الْحَكَمَ بْنَ عُتَيْبَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مُعَقِّبَاتٌ لاَ يَخِيبُ قَائِلُهُنَّ - أَوْ فَاعِلُهُنَّ - دُبُرَ كُلِّ صَلاَةٍ مَكْتُوبَةٍ ثَلاَثٌ وَثَلاَثُونَ تَسْبِيحَةً وَثَلاَثٌ وَثَلاَثُونَ تَحْمِيدَةً وَأَرْبَعٌ وَثَلاَثُونَ تَكْبِيرَةً " .

(1349) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी यअ़ला (रह.) ने कअ़ब बिन उ़ज्रह (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़रमान सुना कि नमाज़ के पीछे कहे जाने वाले कलिमात ये हैं कि उनके फ़र्ज़ नमाज़ के बाद कहने वाला या उनको बजा लाने वाला (हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद) नामुराद व नाकाम नहीं रहता या बुलंद दर्जात से महरूम नहीं रहता। तैंतीस बार सुब्हानअल्लाह, तैंतीस बार अल्हम्दुलिल्लाह और चौंतीस बार अल्लाहु अकबर।
(तिर्मिज़ी : 3412, नसाई : 3/75)

حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، حَدَّثَنَا حَمْزَةُ الزَّيَّاتُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ " مُعَقِّبَاتٌ لاَ يَخِيبُ قَائِلُهُنَّ - أَوْ فَاعِلُهُنَّ - ثَلاَثٌ وَثَلاَثُونَ تَسْبِيحَةً وَثَلاَثٌ وَثَلاَثُونَ تَحْمِيدَةً وَأَرْبَعٌ وَثَلاَثُونَ تَكْبِيرَةً فِي دُبُرِ كُلِّ صَلاَةٍ " .

(1350) हज़रत कअ़ब बिन उ़ज्रह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नमाज़ के बाद कहे जाने वाले कलिमात ये हैं, हर नमाज़ के बाद इनको कहने वाला या इनको बजा लाने वाला नामुराद नहीं रहता, तैंतीस बार तस्बीह, तैंतीस बार तहमीद और चौंतीस बार तकबीर।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا أَسْبَاطُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ قَيْسٍ الْمُلاَئِيُّ، عَنِ الْحَكَمِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(1351) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

(1352) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने हर नमाज़ के बाद तैंतीस मर्तबा सुब्हानअल्लाह, तैंतीस बार अल्हम्दुलिल्लाह और तैंतीस बार अल्लाहु अकबर कहा, ये निन्यानवे हो गये और सौ पूरा करने के लिये ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु वहु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर कहा, उसकी लग़्ज़िशें और क़ुसूर माफ़ कर दिये जायेंगे, ख़्वाह समुन्द्र के झाग के बराबर ही क्यों न हो।'

حَدَّثَنِي عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ بَيَانٍ الْوَاسِطِيُّ، أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِي عُبَيْدٍ الْمَذْحِجِيِّ، - قَالَ مُسْلِمٌ أَبُو عُبَيْدٍ مَوْلَى سُلَيْمَانَ بْنِ عَبْدِ الْمَلِكِ - عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ اللَّيْثِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ سَبَّحَ اللَّهَ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلاَةٍ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ وَحَمِدَ اللَّهَ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ وَكَبَّرَ اللَّهَ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ فَتِلْكَ تِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ وَقَالَ تَمَامَ الْمِائَةِ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ غُفِرَتْ خَطَايَاهُ وَإِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ " .

(1353) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِي عُبَيْدٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

फ़वाइद : (1) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की रिवायत में तस्बीह, तहमीद और तकबीर तीनों कलिमात की गिनती 33-33 बतलाई गई है और सौ की गिनती पूरी करने के लिये एक मर्तबा कलिमए तौहीद व तहलील पढ़ने के लिये फ़रमाया गया है। लेकिन कअब बिन उज्रह और कुछ दूसरे सहाबा (रज़ि.) की रिवायात में सौ की गिनती पूरी करने के लिये अल्लाहु अकबर 34 बार पढ़ने की तरग़ीब दी गई, दोनों तरह ही पढ़ना दुरुस्त है और ज़ाहिर है कि अबू हुरैरह (रज़ि.) की इस रिवायत में जिस अज्र व सवाब को बयान किया गया है, वो दूसरी सूरत में बयान नहीं किया गया। (2) मौलाना मन्ज़ूर अहमद नोमानी (रह.) ने लिखा है कि (नमाज़ के ख़ातमे पर यानी सलाम के बाद ज़िक्र व दुआ रसूलुल्लाह (ﷺ) से अमलन भी साबित है और तालीमन भी और इससे इंकार की गुंजाइश नहीं है। लेकिन ये जो रिवाज है कि सलाम फेरने के बाद दुआ में भी मुक्तदी नमाज़ ही की तरह इमाम के पाबंद रहते हैं, यहाँ तक कि अगर किसी को जल्दी जाने की ज़रूरत हो तब भी इमाम से पहले उठ जाना बुरा समझा जाता है। ये बिल्कुल बेअसल है बल्कि क़ाबिले इस्लाह है। इमामत और इक़्तिदा का राबता सलाम फेरने पर ख़त्म हो जाता है। इसलिये सलाम के बाद दुआ में इमाम की इक़्तिदा और पाबंदी

ज़रूरी नहीं। चाहे तो मुख़्तसरन दुआ करके इमाम से पहले उठ जाये और चाहे तो अपने ज़ौक़ और कैफ़ियत के मुताबिक़ देर तक करता रहे। (मआरिफ़ुल हदीस : 3/318)

बाब 28 : तकबीरे तहरीमा और क़िरअत के दरम्यान कौनसी दुआ पढ़ी जायेगी

باب مَا يُقَالُ بَيْنَ تَكْبِيرَةِ الإِحْرَامِ وَالْقِرَاءَةِ

(1354) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब नमाज़ के लिये तकबीर कहते तो क़िरअत से पहले कुछ वक़्त सुकूत फ़रमाते। तो मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान! फ़रमाइये, आप तकबीर और क़िरअत के दरम्यान ख़ामोशी के दौरान क्या पढ़ते हैं? आपने फ़रमाया, 'मैं कहता हूँ, अल्लाहुम्-म बाइद बैनी व बै-न ख़ताया-य कमा बअद्-त बैनल् मश्रिक़ि वल्मग़्रिबि अल्लाहुम्-म नक़्क़िनी मिन ख़ताया-य कमा युनक़्क़स्-सौबुल् अब्यज़ु मिनद्दनसि अल्लाहुम्मग़्-सिल्नी मिन ख़ताया-य बिस्सल्जि वल्माइ वल्बरद (ऐ अल्लाह! मेरे और मेरे गुनाहों के दरम्यान इस क़द्र फ़ासला कर दे जितना फ़ासला तूने मश्रिक़ और मग़्रिब के दरम्यान रखा है। ऐ अल्लाह! मुझे गुनाहों से यूँ पाक-साफ़ कर दे जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल-कुचैल से साफ़ किया जाता है। ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को बर्फ़, पानी और औलों से धो दे।'

(सहीह बुख़ारी : 744, अबू दाऊद : 781, नसाई : 1/50, 894, इब्ने माजह : 2/805)

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا كَبَّرَ فِي الصَّلاَةِ سَكَتَ هُنَيَّةً قَبْلَ أَنْ يَقْرَأَ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي أَرَأَيْتَ سُكُوتَكَ بَيْنَ التَّكْبِيرِ وَالْقِرَاءَةِ مَا تَقُولُ قَالَ " أَقُولُ اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَاىَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ اللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنْ خَطَايَاىَ كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ اللَّهُمَّ اغْسِلْنِي مِنْ خَطَايَاىَ بِالثَّلْجِ وَالْمَاءِ وَالْبَرَدِ "

फ़ायदा : रसूलुल्लाह (ﷺ) अगरचे आम गुनाहों और कोताहियों से महफ़ूज़ थे, लेकिन क़रीबाँ राबीश बूद हैरानी के फ़ितरी उसूल के मुताबिक़, आप उन लग़्ज़िशों और कोताहियों से सख़्त लरज़ा और तरसाँ रहते थे जो बशरी तक़ाज़ों के तहत भूल-चूक के सबब आप से सरज़द हो सकती थीं और मअ़सियत व नाफ़रमानी न होने के बावजूद आपकी बुलंद व बाला शान और मक़ाम तक़रीब के लिहाज़ से क़ाबिले गिरफ़्त हो सकती थीं।

मशहूर मक़ूला है हसनातुल अबरार सय्यिआतुल मुक़र्रबीन जिनके रुतबे हैं सिवा, उनको सिवा मुश्किल है और आपकी दुआ से मालूम होता है इंसान किसी क़द्र भी बुलंद व बाला मक़ाम पर फ़ाइज़ हो जाये वो बशरियत के तक़ाज़ों से नहीं निकल सकता और अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ व रहनुमाई के बग़ैर ख़ताओं और लग़्ज़िशों से दूर नहीं रह सकता और गुनाहे माद्दी मैल-कुचैल की तरह दिल और रूह की मैल-कुचैल हैं और अल्लाह के ग़ज़ब की आग और उसकी सोज़िश व जलन का सबब हैं। इसलिये इस हिद्दत व सोज़िश को अल्लाह की बख़्शिश व रहमत के पानी, बर्फ़ और औलों से ठण्डा करने की ज़रूरत है।

(1355) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

. حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، - يَعْنِي ابْنَ زِيَادٍ - كِلاَهُمَا عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَ حَدِيثِ جَرِيرٍ .

(1356) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब दूसरी रकअ़त से उठते तो ख़ामोशी इख़्तियार किये बग़ैर क़िरअत का आग़ाज़ अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन से फ़रमाते।

قَالَ مُسْلِمٌ وَحُدِّثْتُ عَنْ يَحْيَى بْنِ حَسَّانَ، وَيُونُسَ الْمُؤَدِّبِ، وَ غَيْرِهِمَا قَالُوا حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ، قَالَ حَدَّثَنِي عُمَارَةُ بْنُ الْقَعْقَاعِ، حَدَّثَنَا أَبُو زُرْعَةَ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا نَهَضَ مِنَ الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ اسْتَفْتَحَ الْقِرَاءَةَ بِـ { الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ} وَلَمْ يَسْكُتْ .

फ़ायदा : तकबीरे तहरीमा के बाद क़िरअत से पहले दुआ-ए-इस्तिफ़्ताह पढ़ना इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम शाफ़ेई, इमाम अहमद (रह.) और जुम्हूर सलफ़ के नज़दीक मुस्तहब है। इमाम मालिक (रह.) तकबीरे तहरीमा के बाद दुआ-ए-इस्तिफ़्ताह के क़ाइल नहीं हैं। इमाम शाफ़ेई (रह.) ने हज़रत अली (रज़ि.) से मरवी दुआ वज्जह्तु वज्हि-य लिल्लज़ी फ़तरस्समावाति वल्अरज़ि (हदीस़) को इख़्तियार किया है और इमाम अहमद और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने सुब्हान-कल्लाहुम्-म वबि-हम्दिक और ये दुआ आहिस्ता पढ़ी जायेगी। दूसरी रकअत के बाद तीसरी रकअत के आग़ाज़ पर दुआ-ए-इस्तिफ़्ताह नहीं है। जैसाकि इमाम मुस्लिम की इसके बारे में रिवायत में सराहत मौजूद है।

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، أَخْبَرَنَا قَتَادَةُ، وَثَابِتٌ، وَحُمَيْدٌ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَجُلاً، جَاءَ فَدَخَلَ الصَّفَّ وَقَدْ حَفَزَهُ النَّفَسُ فَقَالَ الْحَمْدُ لِلَّهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ . فَلَمَّا قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم صَلاَتَهُ قَالَ " أَيُّكُمُ الْمُتَكَلِّمُ بِالْكَلِمَاتِ " . فَأَرَمَّ الْقَوْمُ فَقَالَ " أَيُّكُمُ الْمُتَكَلِّمُ بِهَا فَإِنَّهُ لَمْ يَقُلْ بَأْسًا " . فَقَالَ رَجُلٌ جِئْتُ وَقَدْ حَفَزَنِي النَّفَسُ فَقُلْتُهَا . فَقَالَ " لَقَدْ رَأَيْتُ اثْنَىْ عَشَرَ مَلَكًا يَبْتَدِرُونَهَا أَيُّهُمْ يَرْفَعُهَا " .

(1357) मुझे ज़ुहैर बिन हरब ने अफ़्फ़ान के वास्ते से हम्माद की क़तादा स़ाबित और हुमैद से हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत सुनाई है कि एक आदमी आया और सफ़ में इस हालत में शरीक हुआ कि उसका साँस फूल रहा था और उसने पढ़ा अल्हम्दुलिल्लाहि हम्दा यानी अल्लाह ही बहुत ज़्यादा पाक और बरकत वाली तारीफ़ व स़ना का हक़दार है। तो जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ पूरी कर ली तो आपने पूछा, 'तुममें से किसने ये कलिमात कहे थे?' इस पर सब लोग ख़ामोश रहे। आपने दोबारा पूछा, 'तुममें किसने ये कलिमात कहे? उसने कोई बुरी बात नहीं कही।' तो एक शख़्स ने कहा, मैं इस हाल में आया कि मेरा साँस फूल गया था तो मैंने ये कलिमात कहे। आपने फ़रमाया, 'मैंने बारह फ़रिश्तों को देखा जो इन कलिमात को ऊपर ले जाने के लिये एक-दूसरे से सबक़त ले जाने की कोशिश कर रहे थे।'

क़द हफ़जहुन्नफ़सु (उसका साँस फूला हुआ था) अरम्मल (क़ौम लोग चुप रहे)।

(अबू दाऊद : 763, नसाई : 2/132)

फ़ायदा : इस हदीस से हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) ने इस्तिदलाल किया है कि नमाज़ में जो अज़्कार मन्कूल हैं, उनके अलावा ज़िक्र करना भी जाइज़ है। बशर्तेकि वो मन्कूल के ख़िलाफ़ न हो। इस पर अ़ल्लामा सईदी लिखते हैं, ये सहीह नहीं हैं क्योंकि ये ज़िक्र आपके सामने किया गया और आपने उसको मुक़र्रर और जाइज़ रखा, इसलिये इसका जवाज़ आपकी तक़रीर और तशरीह से मालूम हुआ। अब जबकि वह्य मुन्क़तअ़ (कट) हो चुकी है, किसी शख़्स को ये हक़ नहीं है कि वो नमाज़ या किसी मुअ़य्यन इबादत में अपनी तरफ़ से ज़िक्र व अज़्कार का इज़ाफ़ा करे। यहाँ तक कि हमारे फ़ुक़हा ने कहा है, अगर पहले तशह्हुद के बाद किसी शख़्स ने अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला मुहम्मद भूल-चूक में या जान-बूझकर पढ़ दिया तो उस पर सज्दए सह्व लाज़िम आयेगा। रसूलुल्लाह (ﷺ) की शरीअ़त में बाद के लोगों को किसी इज़ाफ़े का हक़ नहीं है। (शरह मुस्लिम : 2/212)

सवाल ये है कि जब ये बात तय है कि वह्य मुन्क़तअ़ हो गई है और शरीअ़त तमाम हो चुकी है और शरीअ़त में बाद के लोगों को किसी इज़ाफ़े का हक़ हासिल नहीं है तो फिर ईद मीलादुन्नबी, दरूद शरीफ़ के नये-नये सैग़े और ईसाले सवाब के लिये अन्वाअ़ व अक़्साम की नफ़ली इबादात का बग़ैर शरई तअ़यीन करना, क्या ये इज़ाफ़ा नहीं है? ये तमाम उमूर मुस्तहसन कैसे हो गये? पहले तशह्हुद में दरूद की गुंजाइश मौजूद है बल्कि कुछ अइम्मा तो उसको लाज़िम क़रार देते हैं। इस पर सज्दए सह्व डाल दिया गया है। इसी तरह नमाज़ी को अगर छींक आ जाये तो वो ज़बान से अल्हम्दुलिल्लाह कह सकता है। लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा की एक रिवायत की रू से उसकी नमाज़ फ़ासिद हो जायेगी। तो क्या उनके इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक उन उमूर को मुस्तहसन क़रार दिया जा सकता है, जो उनके मुक़ल्लिदों ने उनके बाद निकाल लिये हैं।

(1358) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे, इस असना (बीच) में लोगों में से एक आदमी ने कहा, अल्लाहु अकबर कबीरा वल्हम्दुलिल्लाहि कसीरा व सुब्हानल्लाहि बुक्रतंव्-व असीला (अल्लाह बहुत बड़ा है और अल्लाह के लिये बहुत ज़्यादा तारीफ़ है और सुबह व शाम अल्लाह ही के लिये पाकीज़गी व तस्बीह है) तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूछा, 'ये-ये बोल किसने

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، أَخْبَرَنِي الْحَجَّاجُ بْنُ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ عَوْنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ بَيْنَمَا نَحْنُ نُصَلِّي مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذْ قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا وَسُبْحَانَ اللَّهِ بُكْرَةً وَأَصِيلاً ‏.‏ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏"‏ مَنِ

الْقَائِلُ كَلِمَةَ كَذَا وَكَذَا " . قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ أَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَ " عَجِبْتُ لَهَا فُتِحَتْ لَهَا أَبْوَابُ السَّمَاءِ " . قَالَ ابْنُ عُمَرَ فَمَا تَرَكْتُهُنَّ مُنْذُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ ذَلِكَ .

कहा है?' लोगों में से एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने कहा है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे उन पर तअज्जुब हुआ, इनके लिये आसमान के दरवाज़े खोले गये।' इब्ने उमर (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने आपसे ये बात सुनने के बाद इन कलिमात को कभी नहीं छोड़ा।

(तिर्मिज़ी : 3592, नसाई : 2/125)

फ़ायदा : उन दो आदमियों ने ये ज़िक्र कहाँ किया था, हदीस में इसका महल और मौक़ा नहीं बताया गया। इसलिये कुछ हज़रात ने इनका महल आग़ाज़े नमाज़ बताया है जैसाकि इमाम नववी (रह.) के तर्जुमे से मालूम होता है और कुछ ने रुकूअ के बाद रब्बना व लकल हम्द के बाद कहा है।

باب اسْتِحْبَابِ إِتْيَانِ الصَّلاَةِ بِوَقَارٍ وَسَكِينَةٍ وَالنَّهْيِ عَنْ إِتْيَانِهَا سَعْيًا

बाब 29 : नमाज़ के लिये वक़ार व मतानत और सुकून व इत्मीनान से आना मुस्तहब है और दौड़कर आना मना है

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم ح قَالَ وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرِ بْنِ زِيَادٍ، أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ - يَعْنِي ابْنَ سَعْدٍ - عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ، وَأَبِي، سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم ح قَالَ وَحَدَّثَنِي

(1359) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना, 'जब नमाज़ खड़ी हो जाये तो उसके लिये दौड़कर न आओ, उसके लिये इत्मीनान के साथ चलते हुए आओ। जो इमाम के साथ पाओ, पढ़ो और जो रह जाये उसको पूरा कर लो।'

(इब्ने माजह : 775, तिर्मिज़ी : 329, नसाई : 2/114, अबू दाऊद : 572)

حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، - وَاللَّفْظُ لَهُ - أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَلاَ تَأْتُوهَا تَسْعَوْنَ وَأْتُوهَا تَمْشُونَ وَعَلَيْكُمُ السَّكِينَةُ فَمَا أَدْرَكْتُمْ فَصَلُّوا وَمَا فَاتَكُمْ فَأَتِمُّوا " .

फ़वाइद : (1) इस हदीस़ से मालूम हुआ नमाज़ के लिये भाग कर नहीं आना चाहिये। सुकून व इत्मीनान के साथ आम चाल से तेज़ रफ़्तार हो सकती है। **(2)** इमाम के साथ जो रकआत या रकअत मिल जायेगी, वो मिलने वाले की पहली रकअत होगी और इमाम के सलाम के बाद वाली नमाज़, बाद वाली नमाज़ होगी। इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई, इमाम अहमद (रह.) और जुम्हूर सलफ़ का यही नज़रिया है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के नज़दीक इमाम के साथ मिलने वाली रकअत या रकआत आख़िरी होंगी और जो रह गई है, वो पहली रकआत में शुमार होगी। इसलिये वो बाद वाली रकआत में क़िरअत करेगा। इमाम मुहम्मद के नज़दीक रह जाने वाली नमाज़ क़िरअत के ऐतबार से अव्वल है और रकआत के ऐतबार से आख़िरी है। जुम्हूर का मौक़िफ़ क़वी है और अतिम्मू का लफ़्ज़ इसी पर दलालत करता है। क्योंकि इतमाम का तअल्लुक़ आख़िर से हुआ और जिन रिवायात में व इक़्ज़ि मा सबक़क है कि जो नमाज़ रह गई है उसको पूरा करो तो यहाँ क़ज़ा अतम्म के मानी में है। जैसाकि क़ुरआन मजीद में है, इज़ा क़ुज़ियतिस्सलातु फ़न्तशिरू फ़िल्अर्ज़ जब नमाज़ पूरी हो जाये तो ज़मीन में फैल जाओ और अरबी मुहावरा है क़ज़ैतु हक़्क़ फ़ुलानिन मैंने फ़लाँ का हक़ अदा कर दिया।

(1360) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाये तो उसके लिये दौड़ते हुए न आओ और उसके लिये इत्मीनान के साथ आओ। जो पा लो, पढ़ लो और जो रह जाये उसे पूरा कर लो। क्योंकि जब तुममें से कोई नमाज़ का रुख़ करता है तो वो नमाज़ ही में होता है।'

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَابْنُ، حُجْرٍ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ جَعْفَرٍ، - قَالَ ابْنُ أَيُّوبَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - أَخْبَرَنِي الْعَلاَءُ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " إِذَا ثُوِّبَ لِلصَّلاَةِ فَلاَ تَأْتُوهَا وَأَنْتُمْ تَسْعَوْنَ وَأْتُوهَا وَعَلَيْكُمُ السَّكِينَةُ فَمَا أَدْرَكْتُمْ

فَصَلُّوا وَمَا فَاتَكُمْ فَأَتِمُّوا فَإِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا كَانَ يَعْمِدُ إِلَى الصَّلاَةِ فَهُوَ فِي صَلاَةٍ " .

(1361) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब नमाज़ के लिये बुलाया जाये तो तुम उसके लिये चलते हुए इत्मीनान इख़्तियार करो, तुम्हें जो मिल जाये पढ़ लो और जो रह जाये उसको पूरा कर लो।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " إِذَا نُودِيَ بِالصَّلاَةِ فَأْتُوهَا وَأَنْتُمْ تَمْشُونَ وَعَلَيْكُمُ السَّكِينَةُ فَمَا أَدْرَكْتُمْ فَصَلُّوا وَمَا فَاتَكُمْ فَأَتِمُّوا " .

(1362) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाये तो उसके लिये तुममें से कोई भाग कर न आये, लेकिन चलकर इत्मीनान और वक़ार को इख़्तियार करे, जो मिल जाये पढ़ ले और जो गुज़र जाये उसको अदा कर ले।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ، - يَعْنِي ابْنَ عِيَاضٍ - عَنْ هِشَامٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا ثُوِّبَ بِالصَّلاَةِ فَلاَ يَسْعَ إِلَيْهَا أَحَدُكُمْ وَلَكِنْ لِيَمْشِ وَعَلَيْهِ السَّكِينَةُ وَالْوَقَارُ صَلِّ مَا أَدْرَكْتَ وَاقْضِ مَا سَبَقَكَ " .

(1363) हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) बयान करते हैं इस असना (बीच) में कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे कि आपने शोर सुना (नमाज़ के बाद) आपने पूछा, तुम्हें क्या हुआ? लोगों ने जवाब दिया, हमने नमाज़ के लिये जल्दी की। आप (ﷺ) ने

حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ الصُّورِيُّ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ سَلاَّمٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي قَتَادَةَ، أَنَّ أَبَاهُ، أَخْبَرَهُ قَالَ بَيْنَمَا نَحْنُ

نُصَلِّي مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَسَمِعَ جَلَبَةً . فَقَالَ " مَا شَأْنُكُمْ " . قَالُوا اسْتَعْجَلْنَا إِلَى الصَّلاَةِ . قَالَ " فَلاَ تَفْعَلُوا إِذَا أَتَيْتُمُ الصَّلاَةَ فَعَلَيْكُمُ السَّكِينَةُ فَمَا أَدْرَكْتُمْ فَصَلُّوا وَمَا سَبَقَكُمْ فَأَتِمُّوا " .

फ़रमाया, 'ऐसे न करो, जब तुम नमाज़ के लिये आओ तो इत्मीनान को लाज़िम पकड़ो, जो तुम्हें मिल जाये पढ़ लो और जो गुज़र जाये उसको पूरा कर लो।'
(सहीह बुख़ारी : 635)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(1364) इमाम साहब अपने एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं।

फ़ायदा : शैबान, यहया बिन इब्ने कसीर का शागिर्द है। जैसाकि अगले बाब के तहत आ रहा है।

باب مَتَى يَقُومُ النَّاسُ لِلصَّلاَةِ

बाब 30 : लोग नमाज़ के लिये किस वक़्त खड़े होंगे

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ حَجَّاجٍ الصَّوَّافِ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، وَعَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَلاَ تَقُومُوا حَتَّى تَرَوْنِي " . وَقَالَ ابْنُ حَاتِمٍ " إِذَا أُقِيمَتْ أَوْ نُودِيَ " .

(1365) हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब नमाज़ के लिये तकबीर कही जाये तो उस वक़्त तक खड़े न हो जब तक मुझे न देख लो।' इब्ने हातिम ने कहा, 'जब इक़ामत कही जाये या पुकारा जाये।' (इक़ामत को नूदि-य से ताबीर किया गया है)
(सहीह बुख़ारी : 637, 638, 909, अबू दाऊद : 539, 540, तिर्मिज़ी : 592, नसाई : 2/31, 2/81)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ مَعْمَرٍ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ وَحَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ، عَنْ حَجَّاجِ بْنِ أَبِي عُثْمَانَ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ

(1366) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं। नबी (ﷺ) की हदीस़ सुनाई और इस्हाक़ ने मअ़मर और शैबान की रिवायत में हत्ता तरौनी के बाद कहा, क़द ख़रज्तु यहाँ तक कि मुझे देख लो, मैं निकल आया हूँ।

يُونُسَ، وَعَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، وَقَالَ، إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنْ شَيْبَانَ، كُلُّهُمْ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . وَزَادَ إِسْحَاقُ فِي رِوَايَتِهِ حَدِيثَ مَعْمَرٍ وَشَيْبَانَ " حَتَّى تَرَوْنِي قَدْ خَرَجْتُ " .

फ़ायदा : अबू क़तादा (रज़ि.) की रिवायत से मालूम होता है जब इमाम नमाज़ के लिये आता हुआ नज़र आ जाये फिर तकबीर कहनी चाहिये और इमाम को देखकर मुक़्तदियों को सफ़बन्दी करनी चाहिये। हज़रत बिलाल (रज़ि.) आप (ﷺ) को देखकर इक़ामत शुरू कर देते थे। जब आप लोगों को नज़र आने लगते तो वो उठना शुरू कर देते और आपके मुसल्ले पर खड़े होने तक लोग (सहाबा किराम रज़ि.) सफ़बन्दी कर लेते। इमाम मालिक और आम सलफ़ का तरीक़ा यही था कि वो इक़ामत के साथ ही खड़ा होना शुरू हो जाते। इमाम अहमद के नज़दीक मुक़्तदी क़द क़ामतिस्सलात पर खड़े हो जायेंगे और इमाम शाफ़ेई और कुछ हज़रात के नज़दीक इक़ामत के ख़त्म होने पर खड़े होंगे और इन सब अइम्मा और जुम्हूर सलफ़ के नज़दीक तकबीर के ख़त्म होने के बाद इमाम तकबीरे तहरीमा कहेगा। लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक मुक़्तदी हय्य अलस्सलाह पर खड़े होंगे और जब मुअज़्ज़िन क़द क़ामतिस्सलाह कह लेगा तो इमाम अल्लाहु अकबर कह देगा। ज़ाहिर है अमली तौर पर सहीह और मुनासिब तरीक़ा इमाम मालिक वाला है। क्योंकि सब लोगों का एक ही वक़्त में खड़ा होना मुश्किल है और सफ़बन्दी का तक़ाज़ा भी यही है। नमाज़ के लिये सफ़बन्दी ज़रूरी है। इसलिये इक़ामत के साथ ही सफ़बन्दी शुरू कर देनी चाहिये।

(1367) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि इक़ामत हो गई तो हमने सफ़ों को बराबर कर लिया। रसूलुल्लाह (ﷺ) अभी तक हमारे सामने नहीं आये थे, रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाकर अपने मुसल्ले पर खड़े हो गये। अभी आपने अल्लाहु अकबर नहीं कहा था कि आपको (ग़ुस्ल करना) याद आ गया तो आप वापस पलट गये और हमें

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مَعْرُوفٍ، وَحَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَقُمْنَا فَعَدَّلْنَا الصُّفُوفَ قَبْلَ أَنْ يَخْرُجَ إِلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم

فَأَتَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى إِذَا قَامَ فِي مُصَلاَّهُ قَبْلَ أَنْ يُكَبِّرَ ذَكَرَ فَانْصَرَفَ وَقَالَ لَنَا " مَكَانَكُمْ " . فَلَمْ نَزَلْ قِيَامًا نَنْتَظِرُهُ حَتَّى خَرَجَ إِلَيْنَا وَقَدِ اغْتَسَلَ يَنْطِفُ رَأْسُهُ مَاءً فَكَبَّرَ فَصَلَّى بِنَا .

फ़रमाया, 'इसी जगह पर जमे रहो।' हम आपके इन्तिज़ार में खड़े रहे, यहाँ तक कि आप तशरीफ़ ले आये। आप ग़ुस्ल कर चुके थे और आपके सर से पानी के क़तरे गिर रहे थे। आपने अल्लाहु अकबर कहकर हमें जमाअत कराई।

(सहीह बुख़ारी : 275, अबू दाऊद : 235)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) ज़िक्र : यहाँ तज़्किरा के मानी में है कि आपको याद आया। **(2) यन्तिफ़ु :** क़तरे गिर रहे थे।

फ़ायदा : अबू हुरैरह (रज़ि.) की हदीस़ से मालूम हुआ जब आप हुज्रे मुबारकसे निकलने लगते, बिलाल (रज़ि.) तकबीर शुरू कर देते। कुछ लोग आप (ﷺ) को देखकर खड़ा होना शुरू कर देते। उनको देखकर दूसरे लोग भी खड़े हो जाते और आपके मुसल्ले पर आने तक तकबीर हो चुकी होती और मुक़्तदी सफ़ें बराबर कर लेते और ये भी मुम्किन है ये वाक़िया अबू क़तादा की रिवायत से पहले पेश आया हो और इस बिना पर आपने फ़रमाया हो। ला तक़ूमू हत्ता तरौनी मुझे देखे बग़ैर खड़ा न हुआ करो और इससे ये भी स़ाबित हुआ तकबीरे तहरीमा और इक़ामत के दरम्यान ज़रूरत की बातचीत हो सकती है। नीज़ तकबीर के बाद कुछ ज़रूरत के तहत ताख़ीर हो जाये तो दोबारा तकबीर की ज़रूरत नहीं है।

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَمْرٍو، - يَعْنِي الأَوْزَاعِيَّ - حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ وَصَفَّ النَّاسُ صُفُوفَهُمْ وَخَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَامَ مَقَامَهُ فَأَوْمَأَ إِلَيْهِمْ بِيَدِهِ أَنْ " مَكَانَكُمْ " . فَخَرَجَ وَقَدِ اغْتَسَلَ وَرَأْسُهُ يَنْطِفُ الْمَاءَ فَصَلَّى بِهِمْ .

(1368) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि नमाज़ खड़ी हो गई। लोगों ने अपनी सफ़ें बांध लीं। रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाकर अपनी जगह पर खड़े हो गये और लोगों को हाथ के इशारे से कहा, अपनी जगह ठहरे रहो। फिर आप इस हाल में वापस आये कि आप नहा चुके थे और आपके सर से पानी गिर रहा था। फिर आपने जमाअत कराई।

(सहीह बुख़ारी : 639, 640, अबू दाऊद : 235, 541, नसाई)

(1369) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये नमाज़ खड़ी की जाती और लोग सफ़ों में अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो जाते। लेकिन अभी तक नबी (ﷺ) अपनी जगह पर खड़े नहीं होते थे।

وَحَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ الصَّلاَةَ، كَانَتْ تُقَامُ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَيَأْخُذُ النَّاسُ مَصَافَّهُمْ قَبْلَ أَنْ يَقُومَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم مَقَامَهُ .

फ़ायदा : अबू हुरैरह (रज़ि.) की इस हदीस़ से ये बात बिल्कुल वाज़ेह हो जाती है कि आप के हुज्रे से निकलने पर, तकबीर के साथ ही लोग खड़ा होना शुरू हो जाते और आपकी मुसल्ले पर आमद तक सफ़बन्दी हो चुकी होती थीं।

(1370) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से रिवायत है कि जब सूरज ढल जाता तो बिलाल (रज़ि.) ज़ुहर की अज़ान कहते और नबी (ﷺ) की तशरीफ़ आवरी तक तकबीर न कहते। जब आप हुज्रे से निकलते तो आपको देखकर वो तकबीर शुरू कर देते।

وَحَدَّثَنِي سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ أَعْيَنَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا سِمَاكُ بْنُ حَرْبٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ كَانَ بِلاَلٌ يُؤَذِّنُ إِذَا دَحَضَتْ فَلاَ يُقِيمُ حَتَّى يَخْرُجَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فَإِذَا خَرَجَ أَقَامَ الصَّلاَةَ حِينَ يَرَاهُ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : दहज़त : सूरज ढल गया।

बाब 31 : जिसने नमाज़ की एक रकअ़त पा ली उसने उस नमाज़ को पा लिया

باب مَنْ أَدْرَكَ رَكْعَةً مِنَ الصَّلاَةِ فَقَدْ أَدْرَكَ تِلْكَ الصَّلاَةَ

(1371) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने एक रिवायत सुनाई है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने नमाज़ की एक रकअ़त को पा लिया उसने नमाज़ पा ली।'

(सहीह बुख़ारी : 580, अबू दाऊद : 1121, नसाई : 1/274)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ" مَنْ أَدْرَكَ رَكْعَةً مِنَ الصَّلاَةِ فَقَدْ أَدْرَكَ الصَّلاَةَ "

(1372) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने नमाज़ की एक रकअत इमाम के साथ पा ली तो उसने नमाज़ पा ली।'
(तिर्मिज़ी : 524, नसाई : 3/112, इब्ने माजह : 1122)

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ أَدْرَكَ رَكْعَةً مِنَ الصَّلاَةِ مَعَ الإِمَامِ فَقَدْ أَدْرَكَ الصَّلاَةَ " .

(1373) इमाम साहब अलग-अलग उस्तादों से हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं और उनमें से किसी की हदीस़ में मअल इमाम, इमाम के साथ का लफ़्ज़ नहीं है और उबैदुल्लाह की हदीस़ में 'फ़क़द अदरकस्सलात' के बाद कुल्लहा का लफ़्ज़ यानी मुकम्मल नमाज़ पा ली।
(नसाई : 1/274)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالُوا حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ مَعْمَرٍ، وَالأَوْزَاعِيِّ، وَمَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، وَيُونُسَ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، قَالَ وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، جَمِيعًا عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، كُلُّ هَؤُلاَءِ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِ حَدِيثِ يَحْيَى عَنْ مَالِكٍ وَلَيْسَ فِي حَدِيثِ أَحَدٍ مِنْهُمْ " مَعَ الإِمَامِ " . وَفِي حَدِيثِ عُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ " فَقَدْ أَدْرَكَ الصَّلاَةَ كُلَّهَا " .

फ़ायदा : इन रिवायात का मक़सद ये है अगर नौ मुस्लिम ने या बालिग़ हो जाने वाले बच्चे ने या दीवानगी और बेहोशी से होश में आने वाले ने या हैज़ व निफ़ास से पाक होने वाली औरत ने किसी नमाज़ का आख़िरी वक़्त पा लिया तो उन सब को ये नमाज़ पढ़नी पड़ेगी। अगर नमाज़ का वक़्त सिर्फ़ एक रकअत के बक़द्र बाक़ी था तो तब भी ये नमाज़ उन सब पर फ़र्ज़ हो जायेगी। इसी तरह अगर किसी ने इमाम के साथ एक रकअत को पा लिया तो उसको जमाअत की फ़ज़ीलत हासिल हो जायेगी। इसी तरह अगर किसी ने किसी मजबूरी या ज़रूरत के सबब ऐसे वक़्त में नमाज़ शुरू की कि एक रकअत पढ़ने के बाद उसका वक़्त निकल गया तो वो उस नमाज़ को मुकम्मल कर लेगा। इन अहादीस़ का ये

मतलब नहीं है कि एक रकअत पा लेने से उसने मुकम्मल नमाज़ पा ली और अब बाक़ी नमाज़ पढ़ने की ज़रूरत नहीं रही। किसी इमाम के नज़दीक ये मानी मुराद नहीं है।

(1374) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने सूरज निकलने से पहले सुबह की एक रकअत पा ली तो उसने सुबह की नमाज़ को पा लिया और जिसने सूरज के ग़ुरूब होने से पहले असर की एक रकअत पा ली तो उसने असर की नमाज़ पा ली।

(सहीह बुख़ारी : 579, तिर्मिज़ी : 186, नसाई : 1/257, इब्ने माजह : 699)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، وَعَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، وَعَنِ الأَعْرَجِ، حَدَّثُوهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ أَدْرَكَ رَكْعَةً مِنَ الصُّبْحِ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ فَقَدْ أَدْرَكَ الصُّبْحَ وَمَنْ أَدْرَكَ رَكْعَةً مِنَ الْعَصْرِ قَبْلَ أَنْ تَغْرُبَ الشَّمْسُ فَقَدْ أَدْرَكَ الْعَصْرَ " .

(1375) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

(इब्ने माजह : 700)

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، . بِمِثْلِ حَدِيثِ مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، .

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित हुआ कि अगर किसी ने सुबह या असर की नमाज़ ऐसे वक़्त में शुरू की कि एक रकअत पढ़ने के बाद सुबह होने की सूरत में सूरज निकल आया और असर की सूरत में सूरज ग़ुरूब हो गया तो वो अपनी बाक़ी नमाज़ पढ़ लेगा। इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई, इमाम अहमद (रह.) और तमाम सलफ़ का मौक़िफ़ इस हदीस़ के मुताबिक़ है। सिर्फ़ अहनाफ़ का ये मौक़िफ़ है कि ऐसी सूरत में असर की नमाज़ तो हो जायेगी। लेकिन फ़ज्र की नमाज़ नहीं होगी और उसके लिये दलील के तौर पर एक अक़्ली ख़ुदसाख़्ता बात पेश की है कि असर नाक़िस वक़्त में शुरू हुई और नाक़िस वक़्त में मुकम्मल हुई इसलिये वो हो गई। लेकिन सुबह की नमाज़ कामिल वक़्त में शुरू की और नाक़िस में पूरी की, इसलिये नहीं हुई। लेकिन ये बात सरीह हदीस़ के ख़िलाफ़ है। अगर मक्रूह औक़ात की बिना पर ये क़ाइदा है तो आपने जिस तरह ग़ुरूबे शम्स के वक़्त नमाज़ का क़सद व इरादा करने से मना फ़रमाया है। सूरज के निकलते वक़्त भी मना फ़रमाया है और वहाँ मक़सद अम्दन जान-बूझकर ऐसी हरकत करने से मना करना है। जैसाकि ला यतहर्रा (वो क़सद और इरादा न करे) के

अल्फ़ाज़ दलालत कर रहे हैं। अगर ग़ैर शऊरी तौर पर या किसी मजबूरी के सबब ऐसा हो जाये तो वो मम्नूअ नहीं है।

وَحَدَّثَنَا حَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيدَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ حَدَّثَنَا عُرْوَةُ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ح قَالَ وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، وَحَرْمَلَةُ، كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ وَهْبٍ، - وَالسِّيَاقُ لِحَرْمَلَةَ - قَالَ أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ، حَدَّثَهُ عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ أَدْرَكَ مِنَ الْعَصْرِ سَجْدَةً قَبْلَ أَنْ تَغْرُبَ الشَّمْسُ أَوْ مِنَ الصُّبْحِ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ فَقَدْ أَدْرَكَهَا " . وَالسَّجْدَةُ إِنَّمَا هِيَ الرَّكْعَةُ .

(1376) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने सूरज के ग़ुरूब होने से पहले असर की नमाज़ का एक सज्दा (रकअत) पा लिया या उसने सूरज के निकलने से पहले सुबह की नमाज़ का एक सज्दा पा लिया तो उसने उस नमाज़ को पा लिया।' सज्दे से मुराद रकअत है।

(नसाई : 1/273, इब्ने माजह : 700)

وَحَدَّثَنَا حَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ أَدْرَكَ مِنَ الْعَصْرِ رَكْعَةً قَبْلَ أَنْ تَغْرُبَ الشَّمْسُ فَقَدْ أَدْرَكَ وَمَنْ أَدْرَكَ مِنَ الْفَجْرِ رَكْعَةً قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ فَقَدْ أَدْرَكَ " .

(1377) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने सूरज के ग़ुरूब होने से पहले असर की एक रकअत पा ली तो उसने नमाज़ पा ली और जिसने सूरज के निकलने से पहले फ़ज्र की एक रकअत पा ली तो उसने नमाज़ पा ली।'

(अबू दाऊद : 412, नसाई : 1/257)

وَحَدَّثَنَاهُ عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، قَالَ سَمِعْتُ مَعْمَرًا، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(1378) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

बाब 32 : पाँच नमाज़ों के औक़ात

باب أَوْقَاتِ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ

(1379) इमाम इब्ने शिहाब (रह.) बयान करते हैं कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने असर की नमाज़ कुछ ताख़ीर से पढ़ी तो उरवह ने उनसे कहा, जिब्राईल ने नाज़िल होकर, इमाम बनकर रसूलुल्लाह (ﷺ) को नमाज़ पढ़ाई तो उमर ने उससे कहा, ऐ उरवह! सोच-समझकर बात करो। तो उसने कहा, मैंने बशीर बिन अबी मसऊद से सुना, उसने अबू मसऊद से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिब्राईल उतरे और मुझे नमाज़ पढ़ाई। मैंने उसके साथ नमाज़ पढ़ी। फिर मैंने उसके साथ नमाज़ पढ़ी। फिर उसके साथ नमाज़ पढ़ी, फिर उसके साथ नमाज़ पढ़ी, फिर उसके साथ नमाज़ पढ़ी, वो अपनी उंगलियों से पाँच नमाज़ें शुमार करते थे।'

(सहीह बुख़ारी : 521, 3221, 4007, अबू दाऊद : 394, नसाई : 1/245, इब्ने माजह : 668)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا ابْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ، أَخَّرَ الْعَصْرَ شَيْئًا فَقَالَ لَهُ عُرْوَةُ أَمَا إِنَّ جِبْرِيلَ قَدْ نَزَلَ فَصَلَّى إِمَامَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَقَالَ لَهُ عُمَرُ اعْلَمْ مَا تَقُولُ يَا عُرْوَةُ . فَقَالَ سَمِعْتُ بَشِيرَ بْنَ أَبِي مَسْعُودٍ يَقُولُ سَمِعْتُ أَبَا مَسْعُودٍ يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " نَزَلَ جِبْرِيلُ فَأَمَّنِي فَصَلَّيْتُ مَعَهُ ثُمَّ صَلَّيْتُ مَعَهُ ثُمَّ صَلَّيْتُ مَعَهُ ثُمَّ صَلَّيْتُ مَعَهُ ثُمَّ صَلَّيْتُ مَعَهُ " . يَحْسُبُ بِأَصَابِعِهِ خَمْسَ صَلَوَاتٍ .

(1380) इमाम इब्ने शिहाब (रह.) बयान करते हैं कि एक दिन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने नमाज़ मुअख़्ख़र कर दी (देर से पढ़ी) तो उनके पास उरवह बिन ज़ुबैर हाज़िर हुए और उन्हें बताया, मुग़ीरह बिन शोबा ने एक दिन कूफ़ा में नमाज़ देर से पढ़ी तो उनके पास अबू मसऊद अन्सारी (रज़ि.) तशरीफ़ लाये और पूछा, ये क्या किया? ऐ मुग़ीरह! क्या तुम्हें इल्म नहीं है जिब्राईल उतरे और

أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ، أَخَّرَ الصَّلاَةَ يَوْمًا فَدَخَلَ عَلَيْهِ عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ فَأَخْبَرَهُ أَنَّ الْمُغِيرَةَ بْنَ شُعْبَةَ أَخَّرَ الصَّلاَةَ يَوْمًا وَهُوَ بِالْكُوفَةِ فَدَخَلَ عَلَيْهِ أَبُو مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيُّ فَقَالَ مَا هَذَا يَا مُغِيرَةُ أَلَيْسَ قَدْ عَلِمْتَ أَنَّ جِبْرِيلَ نَزَلَ فَصَلَّى فَصَلَّى رَسُولُ

اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ صَلَّى فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ صَلَّى فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ صَلَّى فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ صَلَّى فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ قَالَ " بِهَذَا أُمِرْتُ " . فَقَالَ عُمَرُ لِعُرْوَةَ انْظُرْ مَا تُحَدِّثُ يَا عُرْوَةُ أَوَإِنَّ جِبْرِيلَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ هُوَ أَقَامَ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَقْتَ الصَّلاَةِ فَقَالَ عُرْوَةُ كَذَلِكَ كَانَ بَشِيرُ بْنُ أَبِي مَسْعُودٍ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ .

नमाज़ पढ़ाई और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ (उसके साथ) पढ़ी। फिर उसने नमाज़ पढ़ी तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी। फिर उसने नमाज़ पढ़ी और रसूलल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी। फिर उसने नमाज़ पढ़ी तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी। फिर उसने नमाज़ पढ़ी और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी। फिर जिब्रईल ने कहा, आपको इसका हुक्म दिया गया है। तो उमर ने उरवह से कहा, ऐ उरवह! सोचो! क्या बयान कर रहे हो। क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) को नमाज़ के औक़ात जिब्रईल ने सिखाये थे? तो उरवह ने कहा, बशीर बिन अबी मसऊद (रज़ि.) अपने बाप से ऐसे ही बयान करते थे।

फ़ायदा : अबू मसऊद (रज़ि.) की रिवायत से औक़ाते नमाज़ (नमाज़ के वक़्तों) की अहमियत का पता चलता है कि उनकी तालीम देने के लिये अल्लाह तआला ने ख़ुसूसी तौर पर जिब्रईल अमीन (अलै.) को उतारा था और उसने उन वक़्तों में नबी (ﷺ) को नमाज़ पढ़ाई थी। ताकि आप (ﷺ) औक़ात की इब्तिदा और इन्तिहा को पूरी तरह समझ लें।

قَالَ عُرْوَةُ وَلَقَدْ حَدَّثَتْنِي عَائِشَةُ، زَوْجُ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُصَلِّي الْعَصْرَ وَالشَّمْسُ فِي حُجْرَتِهَا قَبْلَ أَنْ تَظْهَرَ .

(1381) हज़रत उरवह (रह.) ने बताया मुझे नबी (ﷺ) की बीवी हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) असर की नमाज़ इस हाल में पढ़ते कि धूप उनके कमरे में होती, उनके कमरे से बाहर न निकली होती। यानी साया उस जगह नुमायाँ न होता।

(सहीह बुख़ारी : 521, अबू दाऊद : 407)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، قَالَ عَمْرٌو حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ

(1382) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) असर की नमाज़ उस वक़्त पढ़ते जबकि धूप मेरे कमरे में चमक रही

عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي الْعَصْرَ وَالشَّمْسُ طَالِعَةٌ فِي حُجْرَتِي لَمْ يَفِئِ الْفَيْءُ بَعْدُ . وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ لَمْ يَظْهَرِ الْفَيْءُ بَعْدُ .

होती। अभी तक उसकी जगह साया न फैला होता और अबू बकर ने लम यफ़ी अल्फ़ैउ की जगह लम यज़्हर अल्फ़ैउ कहा (दोनों का मानी एक ही है)।

(सहीह बुख़ारी : 546, इब्ने माजह : 683)

मुफ़रदातुल हदीस : क़ब्ल अन तज़्हर : धूप अभी कमरे में मौजूद थी। इसी मफ़्हूम को लम यफ़ी अल्फ़ैउ से अदा किया गया है कि धूप की जगह साये ने नहीं ली थी। धूप उठती है तो उसकी जगह साया फैलता है। इसलिये दोनों अल्फ़ाज़ में तज़ाद (टकराव) नहीं है और लम तज़्हर अल्फ़ैउ का मानी भी यही है कि उस धूप की जगह साया ज़ाहिर नहीं हुआ था। उसकी जगह साया नहीं फैला था। इस तरह आप अ़सर की नमाज़ वक़्त होते ही पढ़ लेते थे।

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ عَائِشَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي الْعَصْرَ وَالشَّمْسُ فِي حُجْرَتِهَا لَمْ يَظْهَرِ الْفَيْءُ فِي حُجْرَتِهَا

(1383) नबी (ﷺ) की बीवी हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अ़सर की नमाज़ उस वक़्त पढ़ते जबकि धूप उनके हुज्रे में होती, साया उनके हुज्रे में न फैला होता था।

फ़ायदा : जब हुज्रे की दीवारें छोटी हों यानी छत बुलंद न हो तो उसमें धूप इस सूरत में होगी, जब सूरज बुलंद न हो। इसलिये अ़सर का वक़्त एक मिस्ल साया के बाद शुरू होता है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُصَلِّي الْعَصْرَ وَالشَّمْسُ وَاقِعَةٌ فِي حُجْرَتِي .

(1384) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अ़सर की नमाज़ पढ़ते जबकि धूप मेरे हुज्रे में मौजूद होती थी।

حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالاَ حَدَّثَنَا مُعَاذٌ، - وَهُوَ ابْنُ هِشَامٍ - حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ

(1385) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुम फ़ज्र की नमाज़ पढ़ लो तो उसका वक़्त उस वक़्त तक बाक़ी है जब तक

عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا صَلَّيْتُمُ الْفَجْرَ فَإِنَّهُ وَقْتٌ إِلَى أَنْ يَطْلُعَ قَرْنُ الشَّمْسِ الأَوَّلُ ثُمَّ إِذَا صَلَّيْتُمُ الظُّهْرَ فَإِنَّهُ وَقْتٌ إِلَى أَنْ يَحْضُرَ الْعَصْرُ فَإِذَا صَلَّيْتُمُ الْعَصْرَ فَإِنَّهُ وَقْتٌ إِلَى أَنْ تَصْفَرَّ الشَّمْسُ فَإِذَا صَلَّيْتُمُ الْمَغْرِبَ فَإِنَّهُ وَقْتٌ إِلَى أَنْ يَسْقُطَ الشَّفَقُ فَإِذَا صَلَّيْتُمُ الْعِشَاءَ فَإِنَّهُ وَقْتٌ إِلَى نِصْفِ اللَّيْلِ " .

सूरज का ऊपर का किनारा न निकले। फिर जब तुम ज़ुहर पढ़ लो तो उसका वक़्त असर तक बाक़ी है और जब तुम असर पढ़ लो तो उसका वक़्त सूरज के ज़र्द होने तक बाक़ी है और जब तुम मग़्रिब की नमाज़ पढ़ो तो उसका वक़्त शफ़क़ (सुर्ख़ी) के ग़ुरूब होने तक बाक़ी है और जब तुम इशा पढ़ लो तो उसका वक़्त आधी रात होने तक बाक़ी है।'

(अबू दाऊद : 396, नसाई : 1/260)

फ़ायदा : जब सूरज ग़ुरूब हो जाता है तो मग़्रिब की तरफ़ तक़रीबन एक घण्टा तक सुर्ख़ी रहती है, उसके बाद वो सुर्ख़ी ख़त्म हो जाती है उसकी जगह कुछ देर तक (तक़रीबन आधा घण्टा) सफ़ेदी रहती है। फिर वो सफ़ेदी भी ग़ायब हो जाती है और उसकी जगह स्याही आ आ जाती है। साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़, इमाम मुहम्मद) और इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद (रह.) के नज़दीक शफ़क़ से मुराद सुर्ख़ी है और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के मशहूर क़ौल के मुताबिक़ इससे मुराद सुर्ख़ी और सफ़ेदी दोनों हैं। यानी स्याही आने पर इशा का वक़्त होगा और एक क़ौल दूसरे अइम्मा के मुताबिक़ है। इसलिये आम तौर पर आज-कल अमल आम अइम्मा के क़ौल के मुताबिक़ है।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ، - وَاسْمُهُ يَحْيَى بْنُ مَالِكٍ الأَزْدِيُّ وَيُقَالُ الْمَرَاغِيُّ وَالْمَرَاغُ حَىٌّ مِنَ الأَزْدِ - عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ " وَقْتُ الظُّهْرِ مَا لَمْ يَحْضُرِ الْعَصْرُ وَوَقْتُ الْعَصْرِ مَا لَمْ تَصْفَرَّ الشَّمْسُ وَوَقْتُ الْمَغْرِبِ مَا لَمْ يَسْقُطْ ثَوْرُ الشَّفَقِ وَوَقْتُ الْعِشَاءِ إِلَى نِصْفِ اللَّيْلِ وَوَقْتُ الْفَجْرِ مَا لَمْ تَطْلُعِ الشَّمْسُ " .

(1386) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ज़ुहर का वक़्त, असर का वक़्त शुरू होने तक है और असर का वक़्त, सूरज के ज़र्द होने से पहले तक है और मग़्रिब का वक़्त उस वक़्त तक है जब तक शफ़क़ ग़ुरूब न हो और इशा का वक़्त आधी रात है और फ़ज्र का वक़्त जब तक सूरज तुलूअ न हो।'

मुफ़रदातुल हदीस : नूरुश्शफ़क़ : सुर्ख़ी का फैलाव और इन्तिशार।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ الْعَقَدِيُّ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي بُكَيْرٍ، كِلاَهُمَا عَنْ شُعْبَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَفِي حَدِيثِهِمَا قَالَ شُعْبَةُ رَفَعَهُ مَرَّةً وَلَمْ يَرْفَعْهُ مَرَّتَيْنِ .

(1387) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

फ़ायदा : इशा का वक़्त मुस्तहब आधी रात तक है। लेकिन अगर किसी वजह से (भूलकर या नींद की वजह से) ताख़ीर हो जाये तो फिर सुबह तक वक़्ते अदा रहता है।

وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " وَقْتُ الظُّهْرِ إِذَا زَالَتِ الشَّمْسُ وَكَانَ ظِلُّ الرَّجُلِ كَطُولِهِ مَا لَمْ يَحْضُرِ الْعَصْرُ وَوَقْتُ الْعَصْرِ مَا لَمْ تَصْفَرَّ الشَّمْسُ وَوَقْتُ صَلاَةِ الْمَغْرِبِ مَا لَمْ يَغِبِ الشَّفَقُ وَوَقْتُ صَلاَةِ الْعِشَاءِ إِلَى نِصْفِ اللَّيْلِ الأَوْسَطِ وَوَقْتُ صَلاَةِ الصُّبْحِ مِنْ طُلُوعِ الْفَجْرِ مَا لَمْ تَطْلُعِ الشَّمْسُ فَإِذَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ فَأَمْسِكْ عَنِ الصَّلاَةِ فَإِنَّهَا تَطْلُعُ بَيْنَ قَرْنَىْ شَيْطَانٍ " .

(1388) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब सूरज ढल जाये तो ज़ुहर का वक़्त हो जाता है और आदमी के साये के उसके बराबर होने तक रहता है, जब तक असर का वक़्त न हो जाये और असर का वक़्त सूरज के ज़र्द होने तक रहता है और मग़्रिब की नमाज़ का वक़्त सुर्ख़ी ग़ायब होने तक रहता है और इशा की नमाज़ का वक़्त दरम्यानी रात के आधे होने तक रहता है और सुबह की नमाज़ का वक़्त तुलूअे फ़ज्र से सूरज निकलने तक रहता है, जब सूरज निकलने लगे तो नमाज़ से रुक जाओ, क्योंकि वो शैतान के दो सींगों के दरम्यान निकलता है।' क़रनय् शैतान से मुराद उसके सर के किनारे हैं।

फ़ायदा : जब सूरज तुलूअ या गुरूब होता है तो शैतान अपने सींग सूरज के क़रीब कर देता है ताकि उन औक़ात में जो लोग सूरज को सज्दा करें वो यूँ लगे कि वो उस लईन को सज्दा कर रहे हैं। असल मक़सूद काफ़िरों की मुशाबिहत से रोकना है कि वो उन औक़ात में सूरज की परस्तिश करते हैं, इसलिये मुसलमानों को उन औक़ात में नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिये। लेकिन शैतान के दो क़रनों और उनके

दरम्यान सूरज के तुलूअ व गुरूब की हक़ीक़त हमारे मालूमात के दायरे से इसी तरह बाहर है जिस तरह शैतान की पूरी हक़ीक़त जानना बाहर है।

وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ يُوسُفَ الأَزْدِيُّ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَزِينٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، - يَعْنِي ابْنَ طَهْمَانَ - عَنِ الْحَجَّاجِ، - وَهُوَ ابْنُ حَجَّاجٍ - عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، أَنَّهُ قَالَ سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ وَقْتِ الصَّلَوَاتِ فَقَالَ " وَقْتُ صَلاَةِ الْفَجْرِ مَا لَمْ يَطْلُعْ قَرْنُ الشَّمْسِ الأَوَّلُ وَوَقْتُ صَلاَةِ الظُّهْرِ إِذَا زَالَتِ الشَّمْسُ عَنْ بَطْنِ السَّمَاءِ مَا لَمْ يَحْضُرِ الْعَصْرُ وَوَقْتُ صَلاَةِ الْعَصْرِ مَا لَمْ تَصْفَرَّ الشَّمْسُ وَيَسْقُطْ قَرْنُهَا الأَوَّلُ وَوَقْتُ صَلاَةِ الْمَغْرِبِ إِذَا غَابَتِ الشَّمْسُ مَا لَمْ يَسْقُطِ الشَّفَقُ وَوَقْتُ صَلاَةِ الْعِشَاءِ إِلَى نِصْفِ اللَّيْلِ " .

(1389) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से नमाज़ों के औक़ात के बारे में दरयाफ़्त किया गया? तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'फ़ज्र की नमाज़ का वक़्त उस वक़्त तक रहता है जब तक सूरज का इब्तिदाई किनारा न निकले और ज़ुहर का वक़्त उस वक़्त होता है जब सूरज आसमान के दरम्यान से मग़रिब की तरफ़ ढल जाये और उस वक़्त तक रहता है जब तक अ़सर का वक़्त नहीं होता और अ़सर की नमाज़ का वक़्त उस वक़्त तक है जब तक सूरज ज़र्द न पड़ जाये और उसका पहला किनारा डूबने लगे और मग़रिब की नमाज़ का वक़्त उस वक़्त होता है जब सूरज ग़ुरूब हो जाये और सुर्ख़ी ग़ायब होने तक रहता है और इशा की नमाज़ का वक़्त आधी रात तक है।'

फ़ायदा : आपने सवाल करने वाले के जवाब में अक्सर नमाज़ों का आख़िरी वक़्त बताया है जिससे मालूम होता है कि सवाल करने वाला यही पूछना चाहता था कि पाँचों नमाज़ों के वक़्त में कितनी वुस्अत है और हर नमाज़ किस वक़्त तक पढ़ी जा सकती है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ، لاَ يُسْتَطَاعُ الْعِلْمُ بِرَاحَةِ الْجِسْمِ .

(1390) इमाम यहया बिन अबी कसीर (रह.) का क़ौल है कि इल्म राहत व आराम तलबी से हासिल नहीं हो सकता।

फ़ायदा : यहया बिन अबी कसीर के इस क़ौल का नमाज़ के औक़ात से कोई तअल्लुक़ नहीं है और क़ौल भी मुकम्मल नक़ल नहीं किया। मुकम्मल क़ौल ये है मीरासुल इल्म ख़ैरुम् मिम्मीरासिज़्ज़हब

'इल्मी विरासत सोने की विरासत से बेहतर है।' वन्नफ़्सुस्सालिहतु ख़ैरुम् मिनल्लुअ्लुअ् 'नेक और पाकीज़ा नफ़्स मोतियों से बेहतर है।' वला युस्तताउल इल्म बिराहतिल जसद 'और इल्म आसाइश व राहत में रहकर हासिल नहीं किया जा सकता।' महसूस ऐसे होता है कि नमाज़ के औक़ात का आग़ाज़ और इख़्तिताम (शुरू और ख़त्म) करना मेहनत तलब काम है इसलिये मुसन्निफ़ ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) की हदीस़ अलग-अलग सनदों और अलग-अलग अल्फ़ाज़ से बड़ी मेहनत और कोशिश से बयान की है तो इस मुनासिबत से ये बता दिया कि इल्म का हुसूल मेहनत तलब काम है। इसलिये पढ़ने-पढ़ाने वालों को मेहनत व मशक़्क़त से गुरेज़ नहीं करना चाहिये।

(1391) हज़रत सुलैमान बिन बुरैदा (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं कि एक आदमी ने नबी (ﷺ) से नमाज़ के वक़्त के बारे में सवाल किया तो आप (ﷺ) ने उसे फ़रमाया, 'हमारे साथ दो दिन नमाज़ पढ़ो।' जब सूरज ढल गया तो आप (ﷺ) ने बिलाल (रज़ि.) को अज़ान कहने का हुक्म दिया। फिर आपने उसे हुक्म दिया तो उसने ज़ुहर के लिये तकबीर कही। फिर आपने (अ़सर का वक़्त होने पर) बिलाल (रज़ि.) को हुक्म दिया तो उन्होंने (पहले अज़ान दी फिर) अ़सर के लिये इक़ामत कही। (और ये अज़ान व इक़ामत ऐसे वक़्त में हुई कि) सूरज बुलंद, रोशन और साफ़ था (यानी उसकी रोशनी में फ़र्क़ नहीं पड़ा था) फिर आपने सूरज के ग़ुरूब होने पर बिलाल (रज़ि.) को हुक्म दिया (उन्होंने पहले अज़ान कही और फिर) मग़रिब के लिये इक़ामत कही। फिर जब सुर्ख़ी ग़ायब हो गई तो आपने उनको हुक्म दिया और उन्होंने (इशा की अज़ान दी फिर) इशा के लिये इक़ामत कही। फिर (रात के

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَزْرَقِ، - قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يُوسُفَ الأَزْرَقُ، - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّ رَجُلاً سَأَلَهُ عَنْ وَقْتِ الصَّلاَةِ فَقَالَ لَهُ " صَلِّ مَعَنَا هَذَيْنِ " . يَعْنِي الْيَوْمَيْنِ فَلَمَّا زَالَتِ الشَّمْسُ أَمَرَ بِلاَلاً فَأَذَّنَ ثُمَّ أَمَرَهُ فَأَقَامَ الظُّهْرَ ثُمَّ أَمَرَهُ فَأَقَامَ الْعَصْرَ وَالشَّمْسُ مُرْتَفِعَةٌ بَيْضَاءُ نَقِيَّةٌ ثُمَّ أَمَرَهُ فَأَقَامَ الْمَغْرِبَ حِينَ غَابَتِ الشَّمْسُ ثُمَّ أَمَرَهُ فَأَقَامَ الْعِشَاءَ حِينَ غَابَ الشَّفَقُ ثُمَّ أَمَرَهُ فَأَقَامَ الْفَجْرَ حِينَ طَلَعَ الْفَجْرُ فَلَمَّا أَنْ كَانَ الْيَوْمُ الثَّانِي أَمَرَهُ فَأَبْرَدَ بِالظُّهْرِ فَأَبْرَدَ بِهَا فَأَنْعَمَ أَنْ يُبْرِدَ بِهَا وَصَلَّى الْعَصْرَ وَالشَّمْسُ

مُرْتَفِعَةٌ أَخَّرَهَا فَوْقَ الَّذِي كَانَ وَصَلَّى الْمَغْرِبَ قَبْلَ أَنْ يَغِيبَ الشَّفَقُ وَصَلَّى الْعِشَاءَ بَعْدَ مَا ذَهَبَ ثُلُثُ اللَّيْلِ وَصَلَّى الْفَجْرَ فَأَسْفَرَ بِهَا ثُمَّ قَالَ " أَيْنَ السَّائِلُ عَنْ وَقْتِ الصَّلاَةِ " . فَقَالَ الرَّجُلُ أَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَ " وَقْتُ صَلاَتِكُمْ بَيْنَ مَا رَأَيْتُمْ " .

ख़त्म होने पर) फ़ज्र के तुलूअ होने पर उन्हें हुक्म दिया और उन्होंने (फ़ज्र की अज़ान कहने के बाद) फ़ज्र के लिये इक़ामत कही। फिर जब दूसरा दिन आया तो आपने ज़ुहर की नमाज़ को ठण्डे वक़्त में क़ायम करने का हुक्म दिया। तो उन्होंने उसे ठण्डा किया और ख़ूब ठण्डा किया और असर की नमाज़ पढ़ी जबकि सूरज बुलंद था लेकिन पहले दिन से ज़्यादा ताख़ीर की और मग़रिब की नमाज़ शफ़क़ (सुर्ख़ी) के गुरूब होने से पहले पढ़ी और इशा की नमाज़ तिहाई रात गुज़रने के बाद पढ़ी और फ़ज्र की नमाज़ रोशनी फैलने पर पढ़ी। फिर आपने फ़रमाया, 'नमाज़ के औक़ात के बारे में सवाल करने वाला कहाँ है?' तो उस आदमी ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं हाज़िर हूँ। आपने फ़रमाया, 'तुम्हारी नमाज़ों का वक़्त इसके दरम्यान है जो तुमने देखा।'

(तिर्मिज़ी : 152, नसाई : 1/258, इब्ने माजह : 667)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अबरद : ठण्डे वक़्त में दाख़िल किया। **(2) अन्अम अंय्युबरिद :** उसको ख़ूब ठण्डा किया।

फ़ायदा : साइल को नमाज़ के वक़्तों की इब्तिदा और इन्तिहा, अव्वल व आख़िर समझाने के लिये आपने ज़बानी तालीम व तफ़्हीम के बजाय अमल करके दिखाया। इसलिये आपने उसे फ़रमाया, आज और कल दो दिन हमारे साथ पाँचों नमाज़ों में शरीक हो। फिर आपने पहले दिन, हर नमाज़ अव्वल वक़्त में अदा फ़रमाई और दूसरे दिन जाइज़ हद तक मुअख़्ख़र किया और उसके बाद उसे फ़रमाया, नमाज़ों को इन औक़ात के अंदर पढ़ो, जिनमें तुमने हमें नमाज़ पढ़ते देखा है और दूसरे दिन भी आपने नमाज़ वक़्ते मुस्तहब पर पढ़ी है।

(1392) हज़रत सुलैमान बिन बुरैदा (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं कि एक आदमी नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे नमाज़ों के औक़ात के बारे में सवाल किया? आपने फ़रमाया, 'नमाज़ों में हमारे साथ हाज़िर हो।' आपने बिलाल (रज़ि.) को हुक्म दिया। उसने ग़लस (अन्धेरे) में अज़ान कही, जब फ़ज्र तुलूअ हुई तो आपने नमाज़ पढ़ाई। जब सूरज आसमान के दरम्यान से मग़रिब की तरफ़ ढल गया तो उसे ज़ुहर के बारे में हुक्म दिया। सूरज अभी बुलंद ही था कि उसे अ़सर के बारे में हुक्म दिया। फिर जब सूरज गुरूब हो गया तो उसे मग़रिब के बारे में हुक्म दिया। फिर जब शफ़क़ गुरूब हो गया तो उसे इशा के बारे में हुक्म दिया। फिर अगले दिन हुक्म दिया तो उसने सुबह को रोशन किया। फिर उसे ज़ुहर के बारे में हुक्म दिया, उसने उसको ठण्डा किया। फिर उसे अ़सर के बारे में हुक्म दिया जबकि सूरज अभी सफ़ेद और साफ़ था, उसमें ज़र्दी की आमेज़िश नहीं हुई थी (धूप अभी ज़र्द नहीं हुई थी) फिर उसे शफ़क़ के गुरूब से पहले मग़रिब के बारे में हुक्म दिया। फिर उसे तिहाई रात के गुज़रने या क़द्रे कम वक़्त पर इशा के बारे में हुक्म दिया (शक हरमी को है) जब सुबह हुई तो आपने पूछा, 'सवाल करने वाला कहाँ है? जो तुमने देखा, नमाज़ों का वक़्त इसके दरम्यान है।'

وَحَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ عَرْعَرَةَ السَّامِيُّ، حَدَّثَنَا حَرَمِيُّ بْنُ عُمَارَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَجُلاً، أَتَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَسَأَلَهُ عَنْ مَوَاقِيتِ الصَّلاَةِ فَقَالَ " اشْهَدْ مَعَنَا الصَّلاَةَ " . فَأَمَرَ بِلاَلاً فَأَذَّنَ بِغَلَسٍ فَصَلَّى الصُّبْحَ حِينَ طَلَعَ الْفَجْرُ ثُمَّ أَمَرَهُ بِالظُّهْرِ حِينَ زَالَتِ الشَّمْسُ عَنْ بَطْنِ السَّمَاءِ ثُمَّ أَمَرَهُ بِالْعَصْرِ وَالشَّمْسُ مُرْتَفِعَةٌ ثُمَّ أَمَرَهُ بِالْمَغْرِبِ حِينَ وَجَبَتِ الشَّمْسُ ثُمَّ أَمَرَهُ بِالْعِشَاءِ حِينَ وَقَعَ الشَّفَقُ ثُمَّ أَمَرَهُ الْغَدَ فَنَوَّرَ بِالصُّبْحِ ثُمَّ أَمَرَهُ بِالظُّهْرِ فَأَبْرَدَ ثُمَّ أَمَرَهُ بِالْعَصْرِ وَالشَّمْسُ بَيْضَاءُ نَقِيَّةٌ لَمْ تُخَالِطْهَا صُفْرَةٌ ثُمَّ أَمَرَهُ بِالْمَغْرِبِ قَبْلَ أَنْ يَقَعَ الشَّفَقُ ثُمَّ أَمَرَهُ بِالْعِشَاءِ عِنْدَ ذَهَابِ ثُلُثِ اللَّيْلِ أَوْ بَعْضِهِ - شَكَّ حَرَمِيٌّ - فَلَمَّا أَصْبَحَ قَالَ " أَيْنَ السَّائِلُ مَا بَيْنَ مَا رَأَيْتَ وَقْتٌ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) **ग़लस :** रात की आख़िरी तारीकी, जबकि सुबह की सफ़ेदी शुरू हो चुकी हो। (2) **वजबतिश्शम्स :** सूरज गुरूब हो गया। (3) **वक़अश्शफ़क़ :** शफ़क़ गुरूब हो गया। (4) **नव्वरा बिस्सुब्ह :** सुबह को रोशन किया, रोशनी फैलने पर नमाज़ पढ़ाई।

(1393) हज़रत अबू बकर बिन अबी मूसा (रह.) अपने बाप से नक़ल करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास एक साइल नमाज़ों के औक़ात पूछने के लिये हाज़िर हुआ? तो आपने उसे ज़बानी कोई जवाब नहीं दिया। फ़ज्र फूटने पर आपने फ़ज्र की नमाज़ खड़ी की, जबकि लोग (तारीकी की बिना पर) एक दूसरे को पहचान नहीं रहे थे। फिर जब सूरज ढल गया तो आपने उसे ज़ुहर खड़ी करने का हुक्म दिया। कहने वाला कह रहा था आधा दिन गुज़र गया है और आप उसको उनसे ज़्यादा जानते थे। सूरज अभी बुलंद था कि आपने उसे असर का हुक्म दिया और असर की नमाज़ अदा की। फिर जब शफ़क़ ग़ुरूब हो गया तो उसे हुक्म दिया और इशा की नमाज़ पढ़ी। फिर अगले दिन फ़ज्र में ताख़ीर की और कहने वाला कह रहा था सूरज निकल आया या निकलने को है। फिर ज़ुहर को मुअख़्ख़र (लेट) किया यहाँ तक कि गुज़िश्ता कल की असर के क़रीब वक़्त हो गया। फिर असर को मुअख़्ख़र किया यहाँ तक कि सलाम फेरा तो कहने वाला कह रहा था आफ़ताब सुर्ख़ हो गया। फिर मग़रिब को मुअख़्ख़र किया यहाँ तक कि शफ़क़ ग़ुरूब होने के क़रीब हो गया। फिर इशा को मुअख़्ख़र किया यहाँ तक कि रात का पहला तिहाई हो गया। फिर सुबह हुई तो आपने साइल को बुलवाया और फ़रमाया, 'नमाज़ का वक़्त इन दोनों वक़्त के दरम्यान है।'

(अबू दाऊद : 396, नसाई : 1/260)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا بَدْرُ بْنُ عُثْمَانَ، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي مُوسَى، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ أَتَاهُ سَائِلٌ يَسْأَلُهُ عَنْ مَوَاقِيتِ الصَّلاَةِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ شَيْئًا - قَالَ - فَأَقَامَ الْفَجْرَ حِينَ انْشَقَّ الْفَجْرُ وَالنَّاسُ لاَ يَكَادُ يَعْرِفُ بَعْضُهُمْ بَعْضًا ثُمَّ أَمَرَهُ فَأَقَامَ بِالظُّهْرِ حِينَ زَالَتِ الشَّمْسُ وَالْقَائِلُ يَقُولُ قَدِ انْتَصَفَ النَّهَارُ وَهُوَ كَانَ أَعْلَمَ مِنْهُمْ ثُمَّ أَمَرَهُ فَأَقَامَ بِالْعَصْرِ وَالشَّمْسُ مُرْتَفِعَةٌ ثُمَّ أَمَرَهُ فَأَقَامَ بِالْمَغْرِبِ حِينَ وَقَعَتِ الشَّمْسُ ثُمَّ أَمَرَهُ فَأَقَامَ الْعِشَاءَ حِينَ غَابَ الشَّفَقُ ثُمَّ أَخَّرَ الْفَجْرَ مِنَ الْغَدِ حَتَّى انْصَرَفَ مِنْهَا وَالْقَائِلُ يَقُولُ قَدْ طَلَعَتِ الشَّمْسُ أَوْ كَادَتْ ثُمَّ أَخَّرَ الظُّهْرَ حَتَّى كَانَ قَرِيبًا مِنْ وَقْتِ الْعَصْرِ بِالأَمْسِ ثُمَّ أَخَّرَ الْعَصْرَ حَتَّى انْصَرَفَ مِنْهَا وَالْقَائِلُ يَقُولُ قَدِ احْمَرَّتِ الشَّمْسُ ثُمَّ أَخَّرَ الْمَغْرِبَ حَتَّى كَانَ عِنْدَ سُقُوطِ الشَّفَقِ ثُمَّ أَخَّرَ الْعِشَاءَ حَتَّى كَانَ ثُلُثُ اللَّيْلِ الأَوَّلُ ثُمَّ أَصْبَحَ فَدَعَا السَّائِلَ فَقَالَ " الْوَقْتُ بَيْنَ هَذَيْنِ " .

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ بَدْرِ بْنِ عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَبِي مُوسَى، سَمِعَهُ مِنْهُ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ سَائِلاً، أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَسَأَلَهُ عَنْ مَوَاقِيتِ الصَّلاَةِ . بِمِثْلِ حَدِيثِ ابْنِ نُمَيْرٍ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ فَصَلَّى الْمَغْرِبَ قَبْلَ أَنْ يَغِيبَ الشَّفَقُ فِي الْيَوْمِ الثَّانِي .

(1394) हज़रत अबू बकर बिन अबी मूसा (रह.) अपने बाप से रिवायत करते हैं कि एक साइल नबी (ﷺ) के पास हाज़िर हुआ और आपसे नमाज़ों के औक़ात के बारे में सवाल किया? फिर मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की। हाँ ये कहा कि आपने दूसरे दिन मग़रिब की नमाज़ शफ़क़ के ग़ुरूब होने से पहले पढ़ी।

باب اسْتِحْبَابِ الإِبْرَادِ بِالظُّهْرِ فِي شِدَّةِ الْحَرِّ لِمَنْ يَمْضِي إِلَى جَمَاعَةٍ وَيَنَالُهُ الْحَرُّ فِي طَرِيقِهِ

बाब 33 : शदीद गर्मी में (जबकि रास्ते में गर्मी हो, जमाअत के लिये जाने वालों के लिये) ज़ुहर ठण्डे वक़्त में पढ़ना बेहतर है

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، وَأَبِي، سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ قَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا اشْتَدَّ الْحَرُّ فَأَبْرِدُوا بِالصَّلاَةِ فَإِنَّ شِدَّةَ الْحَرِّ مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ " .

(1395) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब गर्मी शदीद हो तो नमाज़ ठण्डे वक़्त में पढ़ो क्योंकि गर्मी की शिद्दत, दोज़ख़ की भाप या आतिशे दोज़ख़ के जोश से है।'

(अबू दाऊद : 402, तिर्मिज़ी : 157, नसाई : 1/248, इब्ने माजह : 678)

मुफ़रदातुल हदीस़ : फ़ैहि जहन्नम : जहन्नम की गर्मी का इन्तिशार व फैलाव और उसका जोश।

फ़ायदा : मौलाना मन्ज़ूर अहमद नोमानी (रह.) ने लिखा है, दुनिया में हम जो कुछ देखते और महसूस करते हैं उसके कुछ तो ज़ाहिरी अस्बाब होते हैं जिन्हें हम ख़ुद भी समझते और जानते हैं और कुछ बातिनी अस्बाब होते हैं। जो हमारे एहसास व इदराक की दस्तरस से बाहर होते हैं। अम्बिया (अलै.) कभी-कभी उनकी तरफ़ इशारे फ़रमाते हैं। इस हदीस़ में जो ये फ़रमाया गया है कि गर्मी की

शिद्दत आतिशे दोज़ख़ के जोश से है, ये इसी क़बील की चीज़ है। गर्मी की शिद्दत का ज़ाहिरी सबब तो आफ़ताब है और इस बात को हर शख़्स समझता है और कोई भी इससे इंकार नहीं कर सकता। लेकिन आलमे बातिनी और आलमे ग़ैब में इसका तअल्लुक़ जहन्नम की आग से भी है और ये उन हक़ाइक़ में से है जो अम्बिया (अलै.) ही के ज़रिये मालूम हो सकते हैं।

(1396) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، أَنَّ ابْنَ شِهَابٍ، أَخْبَرَهُ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ، وَسَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، أَنَّهُمَا سَمِعَا أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ سَوَاءً .

(1397) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब गर्म दिन हो तो नमाज़ को ठण्डे वक़्त में ले जाओ, क्योंकि गर्मी की शिद्दत आतिशे दोज़ख़ के जोश की वजह से है।' अम्र ने कहा, मुझे अबू यूनुस ने अबू हुरैरह (रज़ि.) की रिवायत सुनाई कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नमाज़ को ठण्डे वक़्त तक मुअख़्ख़र करो क्योंकि गर्मी की सख़्ती जहन्नम की गर्मी के इन्तिशार की बिना पर है।' अम्र ने कहा, मुझे इब्ने शिहाब ने इब्ने मुसय्यब और अबू सलमा से अबू हुरैरह (रज़ि.) की रिवायत ऊपर के मफ़्हूम वाली सुनाई।

وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، وَعَمْرُو بْنُ سَوَّادٍ، وَأَحْمَدُ بْنُ عِيسَى، قَالَ عَمْرٌو أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، أَنَّ بُكَيْرًا، حَدَّثَهُ عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، وَسَلْمَانَ الأَغَرِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا كَانَ الْيَوْمُ الْحَارُّ فَأَبْرِدُوا بِالصَّلاَةِ فَإِنَّ شِدَّةَ الْحَرِّ مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ " . قَالَ عَمْرٌو وَحَدَّثَنِي أَبُو يُونُسَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَبْرِدُوا عَنِ الصَّلاَةِ فَإِنَّ شِدَّةَ الْحَرِّ مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ " . قَالَ عَمْرٌو وَحَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِنَحْوِ ذَلِكَ.

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ هَذَا الْحَرَّ مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ فَأَبْرِدُوا بِالصَّلاَةِ " .

(1398) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये गर्मी आतिशे दोज़ख़ के जोश से है, इसलिये नमाज़ ठण्डे वक़्त पर पढ़ा करो।'

حَدَّثَنَا ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَبْرِدُوا عَنِ الْحَرِّ فِي الصَّلاَةِ فَإِنَّ شِدَّةَ الْحَرِّ مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ " .

(1399) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नमाज़ के लिये गर्मी को ठण्डे वक़्त में ले जाओ क्योंकि गर्मी की शिद्दत जहन्नम की आग के जोश की बिना पर है।'

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ مُهَاجِرًا أَبَا الْحَسَنِ، يُحَدِّثُ أَنَّهُ سَمِعَ زَيْدَ بْنَ وَهْبٍ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ أَذَّنَ مُؤَذِّنُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِالظُّهْرِ فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " أَبْرِدْ أَبْرِدْ " . أَوْ قَالَ " انْتَظِرِ انْتَظِرْ " . وَقَالَ " إِنَّ شِدَّةَ الْحَرِّ مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ فَإِذَا اشْتَدَّ الْحَرُّ فَأَبْرِدُوا عَنِ الصَّلاَةِ " . قَالَ أَبُو ذَرٍّ حَتَّى رَأَيْنَا فَىْءَ التُّلُولِ .

(1400) हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुअज़्ज़िन ने ज़ुहर की अज़ान देना चाही तो आपने फ़रमाया, 'ठण्डा वक़्त होने दो, ठण्डा वक़्त होने दो।' या आपने फ़रमाया, 'इन्तिज़ार करो, इन्तिज़ार करो।' और फ़रमाया, 'गर्मी की शिद्दत जहन्नम की भाप के सबब से है, इसलिये जब गर्मी शदीद हो तो नमाज़ ठण्डे वक़्त में पढ़ा करो।' अबू ज़र (रज़ि.) का क़ौल है, यहाँ तक कि हमने टीलों का साया देखा।

(सहीह बुख़ारी : 535, 539, 629, 3258, अबू दाऊद : 401, तिर्मिज़ी : 158)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) फ़ैर : सूरज ढलने के बाद के साये को फ़ेर कहते हैं। **(2) तुलूल :** मिट्टी या रेत का टीला।

फ़ायदा : हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की हदीस़ का मक़सद ये है कि जिस मौसम में जहाँ निस्फुन्नहार के वक़्त सख़्त गर्मी हो और गर्मी की शिद्दत की वजह से फ़िज़ा जहन्नम बन रही हो तो ज़ुहर की नमाज़ ताख़ीर करके ऐसे वक़्त पढ़ी जाये जब गर्मी की शिद्दत टूट जाये और वक़्त कुछ ठण्डा हो जाये और जुम्हूर का यही मौक़िफ़ है। इमाम शाफ़ेई इसको जमाअ़त के लिये दूर से आने वालों के लिये मानते हैं, इसके मुताबिक़ इमाम नववी ने बाब क़ायम किया है लेकिन ये तावील दुरुस्त नहीं है और अबू ज़र (रज़ि.) की हदीस़ से मालूम होता है कि इबराद इतना होना चाहिये कि दीवारों का साया इस क़द्र हो जाये कि इसमें आना जाना मुम्किन हो ये मक़सद नहीं है गर्मी ख़त्म हो जाये और ज़मीन ठण्डी हो जाये क्योंकि अगर ये मक़सद होता तो सहाबा किराम (रज़ि.) को सज्दा करने के लिये ज़मीन पर कपड़ा बिछाने की ज़रूरत पेश न आती और सहाबा किराम को गर्मी की शिकायत करने की ज़रूरत लाहिक़ न होती।

(1401) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'आग (दोज़ख़) ने अपने आक़ा के हुज़ूर शिकायत की और कहा, ऐ मेरे रब! मेरे कुछ हिस्से ने कुछ हिस्से को खा लिया। तो उसको दो साँस लेने की इजाज़त दे दी गई या अल्लाह ने इजाज़त दे दी। एक साँस सर्दी में और एक साँस गर्मी में, गर्मी और सर्दी में जो तुम गर्मी और सर्दी की शिद्दत महसूस करते हो वो इसी का नतीजा है।'

وَحَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ سَوَّادٍ، وَحَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، - وَاللَّفْظُ لِحَرْمَلَةَ - أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اشْتَكَتِ النَّارُ إِلَى رَبِّهَا فَقَالَتْ يَا رَبِّ أَكَلَ بَعْضِي بَعْضًا . فَأَذِنَ لَهَا بِنَفَسَيْنِ نَفَسٍ فِي الشِّتَاءِ وَنَفَسٍ فِي الصَّيْفِ فَهُوَ أَشَدُّ مَا تَجِدُونَ مِنَ الْحَرِّ وَأَشَدُّ مَا تَجِدُونَ مِنَ الزَّمْهَرِيرِ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) ज़महरीर : शदीद सर्दी। **(2) नफ़स :** साँस।

फ़ायदा : दोज़ख़ को कुव्वते इदराक व शऊर और कुव्वते तकल्लुम व गोयाई हासिल है और अल्लाह तआ़ला उसकी ज़बान को समझता है। इसलिये दोज़ख़ ने शिकायत ज़बाने क़ाल से की, महज़ ज़बाने हाल से नहीं। जहन्नम का गर्म तबक़ा गर्मी में साँस लेकर गर्मी में शिद्दत का बातिनी सबब बनता है और सर्द तबक़ा सर्दी में साँस लेकर, सर्दी बढ़ाता है और अल्लाह तआ़ला इंसानों को सहूलत व आसानी के लिये ऐसे ज़ाहिरी अस्बाब पैदा करता रहता है कि गर्मी व सर्दी की शिद्दत में कमी व बेशी वक़्तन-फ़वक़्तन होती रहती है।

(1402) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब गर्मी हो तो नमाज़ ठण्डे वक़्त में पढ़ो क्योंकि गर्मी की शिद्दत जहन्नम की भाप से है और आपने बताया, 'आग ने अपने रब के हुज़ूर शिकायत की तो उसने उसे साल में दो साँस लेने की इजाज़त दे दी। एक साँस सर्दी में और एक साँस गर्मी में।'

وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، حَدَّثَنَا مَعْنٌ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَزِيدَ، مَوْلَى الأَسْوَدِ بْنِ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَمُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ ثَوْبَانَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا كَانَ الْحَرُّ فَأَبْرِدُوا عَنِ الصَّلاَةِ فَإِنَّ شِدَّةَ الْحَرِّ مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ " . وَذَكَرَ " أَنَّ النَّارَ اشْتَكَتْ إِلَى رَبِّهَا فَأَذِنَ لَهَا فِي كُلِّ عَامٍ بِنَفَسَيْنِ نَفَسٍ فِي الشِّتَاءِ وَنَفَسٍ فِي الصَّيْفِ " .

(1403) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'आग ने अ़र्ज़ की, ऐ मेरे रब! मेरे कुछ ने कुछ को खा लिया तो मुझे साँस लेने की इजाज़त मरहमत फ़रमाइये। तो अल्लाह तआ़ला ने उसे दो साँस लेने की इजाज़त दे दी। एक साँस सर्दी में और एक साँस गर्मी में तो तुम जो सर्दी या ठण्ड की शिद्दत पाते हो वो जहन्नम की साँस से है और जो तुम गर्मी या गर्मी की शिद्दत पाते हो तो वो जहन्नम की साँस से है।'

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنَا حَيْوَةُ، قَالَ حَدَّثَنِي يَزِيدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أُسَامَةَ بْنِ الْهَادِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " قَالَتِ النَّارُ رَبِّ أَكَلَ بَعْضِي بَعْضًا فَأْذَنْ لِي أَتَنَفَّسْ . فَأَذِنَ لَهَا بِنَفَسَيْنِ نَفَسٍ فِي الشِّتَاءِ وَنَفَسٍ فِي الصَّيْفِ فَمَا وَجَدْتُمْ مِنْ بَرْدٍ أَوْ زَمْهَرِيرٍ فَمِنْ نَفَسِ جَهَنَّمَ وَمَا وَجَدْتُمْ مِنْ حَرٍّ أَوْ حَرُورٍ فَمِنْ نَفَسِ جَهَنَّمَ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) ज़महरीर : सर्दी की शिद्दत। **(2) हरूर :** गर्मी की तेज़ी, हिद्दत।

फ़ायदा : ये गर्म और सर्द साँस अपने इलाक़ों की तरफ़ फैलती है जिनका रब्बुन्नार हुक्म देता है इसलिये हर जगह और मुल्क में गर्मी व सर्दी का मौसम बराबर नहीं है।

बाब 34 : गर्मी की शिद्दत न हो तो ज़ुहर अव्वले वक़्त पढ़ाना बेहतर है

باب اسْتِحْبَابِ تَقْدِيمِ الظُّهْرِ فِي أَوَّلِ الْوَقْتِ فِي غَيْرِ شِدَّةِ الْحَرِّ

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، كِلاَهُمَا عَنْ يَحْيَى الْقَطَّانِ، وَابْنِ، مَهْدِيٍّ - قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، - عَنْ شُعْبَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا سِمَاكُ بْنُ حَرْبٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى وَحَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي الظُّهْرَ إِذَا دَحَضَتِ الشَّمْسُ .

(1404) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ज़ुहर की नमाज़ सूरज ढलने पर पढ़ते थे।
(अबू दाऊद : 806, नसाई : 2/166, इब्ने माजह : 673)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، سَلاَّمُ بْنُ سُلَيْمٍ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ وَهْبٍ، عَنْ خَبَّابٍ، قَالَ شَكَوْنَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الصَّلاَةَ فِي الرَّمْضَاءِ فَلَمْ يُشْكِنَا .

(1405) हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि.) से रिवायत है कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से गर्मी में नमाज़ अदा करने की शिकायत की तो आपने हमारी शिकायत का इज़ाला न फ़रमाया।
(नसाई : 1/247)

मुफ़रदातुल हदीस़ : अर्रमज़ा : गर्म रेत। **हरुरे रमज़ा :** गर्म रेत की तपिश।

وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، وَعَوْنُ بْنُ سَلاَّمٍ، - قَالَ عَوْنٌ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ يُونُسَ، وَاللَّفْظُ، لَهُ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، - قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ وَهْبٍ، عَنْ خَبَّابٍ، قَالَ أَتَيْنَا رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَشَكَوْنَا إِلَيْهِ حَرَّ

(1406) हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि.) से रिवायत है कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर गर्मी की हिद्दत व तेज़ी की शिकायत की तो आपने हमारी शिकायत को दूर न फ़रमाया। ज़ुहैर कहते हैं, मैंने अबू इस्हाक़ से पूछा, क्या ज़ुहर की

الرَّمْضَاءِ فَلَمْ يُشْكِنَا . قَالَ زُهَيْرٌ قُلْتُ لأَبِي إِسْحَاقَ أَفِي الظُّهْرِ قَالَ نَعَمْ . قُلْتُ أَفِي تَعْجِيلِهَا قَالَ نَعَمْ .

नमाज़ की शिकायत की थी? उसने कहा, हाँ। मैंने कहा, क्या जल्द नमाज़ पढ़ने की, उसने कहा, हाँ।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، عَنْ غَالِبٍ الْقَطَّانِ، عَنْ بَكْرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ كُنَّا نُصَلِّي مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي شِدَّةِ الْحَرِّ فَإِذَا لَمْ يَسْتَطِعْ أَحَدُنَا أَنْ يُمَكِّنَ جَبْهَتَهُ مِنَ الأَرْضِ بَسَطَ ثَوْبَهُ فَسَجَدَ عَلَيْهِ .

(1407) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि हम गर्मी की शिद्दत में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ते थे। जब हममें से कोई अपनी पेशानी जमीन पर न रख सकता तो अपना कपड़ा फैला कर उस पर सज्दा कर लेता।

(सहीह बुख़ारी:385, 542, 1208, अबू दाऊद : 660, तिर्मिज़ी : 584, नसाई : 2/216, इब्ने माजह : 1033)

फ़वाइद : (1) हज़रत ख़ब्बाब और हज़रत अनस (रज़ि.) की रिवायात से मालूम होता है कि आप गर्मी के मौसम में बहुत ज़्यादा ताख़ीर नहीं करते कि गर्मी ख़त्म हो जाये। इसलिये ख़ब्बाब (रज़ि.) ने कहा, आपने हमारी शिकायत का इज़ाला नहीं फ़रमाया। हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा, कुछ सज्दे कपड़े पर करते थे। **(2)** इमाम शाफ़ेई और इमाम मालिक (रह.) पहने हुए कपड़े पर सज्दा करना दुरुस्त नहीं समझते। इमाम अहमद (रह.) से जवाज़ और अद्मे जवाज़ दोनों मन्क़ूल हैं और इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक जाइज़ है। **(3)** हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) की रिवायत से साबित होता है कि आप ज़ुहर की नमाज़ सूरज ढलने पर पढ़ते थे। गोया आप नमाज़ अव्वले वक़्त पर पढ़ते थे। हाँ गर्मियों में ज़ुहर मुअख़्ख़र कर लेते थे। इसलिये इमाम शाफ़ेई, इमाम मालिक और इमाम अहमद के नज़दीक नमाज़ अव्वल वक़्त पर पढ़ना मुस्तहब है और इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक मग़्रिब के सिवा, हर नमाज़ ताख़ीर से पढ़ना बेहतर है। **(4)** इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई, इमाम अहमद और साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़ इमाम मुहम्मद) के नज़दीक ज़ुहर का वक़्त ज़वाले आफ़ताब से लेकर साया बराबर होने तक है। जिसको एक मिस्ल कहते हैं। इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक दो मिस्ल तक है।

बाब 35 : अ़सर अव्वल वक़्त में पढ़ना बेहतर है

باب اسْتِحْبَابِ التَّبْكِيرِ بِالْعَصْرِ

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُصَلِّي الْعَصْرَ وَالشَّمْسُ مُرْتَفِعَةٌ حَيَّةٌ فَيَذْهَبُ الذَّاهِبُ إِلَى الْعَوَالِي فَيَأْتِي الْعَوَالِيَ وَالشَّمْسُ مُرْتَفِعَةٌ . وَلَمْ يَذْكُرْ قُتَيْبَةُ فَيَأْتِي الْعَوَالِيَ .

(1408) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अ़सर की नमाज़ ऐसे वक़्त में पढ़ते थे कि सूरज बुलंद और ज़िन्दा होता था। पस अ़वाली की तरफ़ जाने वाला (अ़सर पढ़कर) चलता था तो वो अ़वाली ऐसे वक़्त में पहुँच जाता था कि आफ़ताब अभी बुलंद होता था और क़ुतैबा (रज़ि.) ने अ़वाली पहुँचने का ज़िक्र नहीं किया।

(अबू दाऊद : 404, नसाई : 506, इब्ने माजह : 682)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अश्शम्सु हय्यतुन : सूरज ज़िन्दा होता था यानी उसकी रंगत ज़र्दी या सुर्ख़ी माइल नहीं होती थी। अभी उसमें गर्मी और तपिश मौजूद होती थी। **(2) अ़वाली :** मदीना की नजद की तरफ़ वाली आबादियाँ बुलंद सतह पर वाक़ेअ़ थीं, इसलिये उनको अ़वाली कहते थे। क़रीब तरीन आबादियाँ दो या तीन मील के फ़ासले पर वाक़ेअ़ थीं और दूर वाक़ेअ़ आबादियाँ छः से आठ मील के फ़ासले पर थीं।

وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَنَسٍ، . أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُصَلِّي الْعَصْرَ بِمِثْلِهِ سَوَاءً .

(1409) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ كُنَّا نُصَلِّي الْعَصْرَ ثُمَّ يَذْهَبُ الذَّاهِبُ إِلَى قُبَاءٍ فَيَأْتِيهِمْ وَالشَّمْسُ مُرْتَفِعَةٌ .

(1410) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि हम अ़सर की नमाज़ पढ़ते थे। फिर क़ुबा जाने वाला जाता और वहाँ उस वक़्त पहुँचता जबकि आफ़ताब अभी बुलंद होता था।

(सहीह बुख़ारी : 548, नसाई : 1/252)

फ़ायदा : क़ुबा : मदीना से तीन मील के फ़ासले पर वाक़ेअ़ है।

(1411) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि हम असर की नमाज़ पढ़ते, फिर इंसान बनू अम्र बिन औफ़ के मुहल्ले की तरफ़ जाता तो वो उन्हें असर की नमाज़ पढ़ते हुए पाता।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ كُنَّا نُصَلِّي الْعَصْرَ ثُمَّ يَخْرُجُ الإِنْسَانُ إِلَى بَنِي عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ فَيَجِدُهُمْ يُصَلُّونَ الْعَصْرَ .

बनू अम्र बिन औफ़ के मुहल्ले का फ़ासला तीन मील है और बनू अम्र बिन औफ़ के लोग क़ुबा में रहते थे।

फ़ायदा : इस हदीस और मज़्कूरा बाला रिवायात से साबित होता है कि मस्जिदे नबवी में नमाज़े असर बहुत जल्द पढ़ी जाती थी।

(1412) हज़रत अता बिन अब्दुर्रहमान बयान करते हैं कि मैं हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) के पास बसरा में उनके घर नमाज़े ज़ुहर से फ़ारिग़ होकर गया और उनका घर मस्जिद के पहलू में था। जब हम उनकी ख़िदमत में पहुँचे तो उन्होंने पूछा, क्या तुमने असर की नमाज़ पढ़ ली है? तो हमने उनसे अर्ज़ किया, हम तो अभी ज़ुहर की नमाज़ पढ़कर आ रहे हैं। उन्होंने कहा, तो असर पढ़ लो। हमने उठकर असर की नमाज़ पढ़ ली। जब हम नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना है कि 'ये मुनाफ़िक़ वाली नमाज़ है कि आदमी बैठा हुआ आफ़ताब का इन्तिज़ार करता रहे, यहाँ तक कि (जब वो ज़र्द पड़ जाये) शैतान के दो सींगों के दरम्यान हो जाता है तो खड़ा होकर चार ठोंगे मारता है और अल्लाह को बहुत ही थोड़ा याद करता है।'

(अबू दाऊद : 413, तिर्मिज़ी : 160, नसाई : 1/254)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنِ الْعَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ فِي دَارِهِ بِالْبَصْرَةِ حِينَ انْصَرَفَ مِنَ الظُّهْرِ وَدَارُهُ بِجَنْبِ الْمَسْجِدِ فَلَمَّا دَخَلْنَا عَلَيْهِ قَالَ أَصَلَّيْتُمُ الْعَصْرَ فَقُلْنَا لَهُ إِنَّمَا انْصَرَفْنَا السَّاعَةَ مِنَ الظُّهْرِ . قَالَ فَصَلُّوا الْعَصْرَ . فَقُمْنَا فَصَلَّيْنَا فَلَمَّا انْصَرَفْنَا قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " تِلْكَ صَلاَةُ الْمُنَافِقِ يَجْلِسُ يَرْقُبُ الشَّمْسَ حَتَّى إِذَا كَانَتْ بَيْنَ قَرْنَىِ الشَّيْطَانِ قَامَ فَنَقَرَهَا أَرْبَعًا لاَ يَذْكُرُ اللَّهَ فِيهَا إِلاَّ قَلِيلاً " .

फ़वाइद : (1) असर की नमाज़ बिला किसी उ़ज़्र और मजबूरी के इतनी मुअख़्ख़र करना कि आफ़ताब गुरूब होने के क़रीब पहुँच जाये और उस आख़िरी और तंग वक़्त में मुर्ग़ की ठोंगों की तरह जल्दी-जल्दी चार रकअतें पढ़ना, जिनमें अल्लाह के ज़िक्र की मिक़्दार भी बहुत कम और बराए नाम हो। एक मुनाफ़िक़ाना तर्ज़े अमल है। मोमिन को हर नमाज़ ख़ास कर असर की नमाज़ अपने सहीह वक़्त पर इन्तिहाई तमानियत और तअदील के साथ पढ़नी चाहिये। जल्दी-जल्दी रुकूअ और सज्दा करना तो मुर्ग़ की ठोंगों की तरह ऊपर नीचे होना है। (2) हज़रत अनस (रज़ि.) के दौर में बनू उमय्या के कुछ गवर्नर असर की नमाज़ बहुत ताख़ीर से पढ़ते थे और हज़रत अनस (रज़ि.) उनके इस तर्ज़े अमल को ग़लत और ख़िलाफ़े सुन्नत समझते थे। इसलिये उन्होंने अपने पास आने वालों को नमाज़े असर पढ़ लेने के लिये कहा और बाद में उन्हें ये हदीस़ सुनाई और वो ख़ुद भी असर की नमाज़ घर पर जल्द पढ़ लेते थे। जैसाकि अगली रिवायत में आ रहा है।

(1413) हज़रत अबू उमामा बिन सह्ल (रज़ि.) से रिवायत है कि हमने ज़ुहर की नमाज़ उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के साथ पढ़ी। फिर हम निकलकर अनस बिन मालिक (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हमने उन्हें असर की नमाज़ पढ़ते हुए पाया। तो मैंने पूछा, ऐ चाचा! ये आपने कौनसी नमाज़ पढ़ी है? उन्होंने जवाब दिया, असर की और ये रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ है जो हम आपके साथ पढ़ा करते थे।

(सहीह बुख़ारी : 549, नसाई : 1/253)

وَحَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ أَبِي مُزَاحِمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عُثْمَانَ بْنِ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا أُمَامَةَ بْنَ سَهْلٍ، يَقُولُ صَلَّيْنَا مَعَ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ الظُّهْرَ ثُمَّ خَرَجْنَا حَتَّى دَخَلْنَا عَلَى أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ فَوَجَدْنَاهُ يُصَلِّي الْعَصْرَ فَقُلْتُ يَا عَمِّ مَا هَذِهِ الصَّلاَةُ الَّتِي صَلَّيْتَ قَالَ الْعَصْرُ وَهَذِهِ صَلاَةُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله تعالى عليه وسلم الَّتِي كُنَّا نُصَلِّي مَعَهُ .

(1414) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें असर की नमाज़ पढ़ाई तो जब आप फ़ारिग़ हुए तो आपके पास बनू सलमा का एक आदमी आया और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हम अपना ऊँट नहर (क़ुर्बान) करना चाहते हैं और हमारी चाहत है आप इस मौक़े

حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ سَوَّادٍ الْعَامِرِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ الْمُرَادِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ عِيسَى، - وَأَلْفَاظُهُمْ مُتَقَارِبَةٌ - قَالَ عَمْرٌو أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، أَنَّ مُوسَى بْنَ سَعْدِ

الأَنْصَارِيِّ، حَدَّثَهُ عَنْ حَفْصِ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّهُ قَالَ صَلَّى لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الْعَصْرَ فَلَمَّا انْصَرَفَ أَتَاهُ رَجُلٌ مِنْ بَنِي سَلِمَةَ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا نُرِيدُ أَنْ نَنْحَرَ جَزُورًا لَنَا وَنَحْنُ نُحِبُّ أَنْ تَحْضُرَهَا . قَالَ " نَعَمْ " . فَانْطَلَقَ وَانْطَلَقْنَا مَعَهُ فَوَجَدْنَا الْجَزُورَ لَمْ تُنْحَرْ فَنُحِرَتْ ثُمَّ قُطِّعَتْ ثُمَّ طُبِخَ مِنْهَا ثُمَّ أَكَلْنَا قَبْلَ أَنْ تَغِيبَ الشَّمْسُ . وَقَالَ الْمُرَادِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنِ ابْنِ لَهِيعَةَ وَعَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ فِي هَذَا الْحَدِيثِ .

पर मौजूद हों। आपने फ़रमाया, 'अच्छा!' आप चले और हम भी साथ हो गये तो हमने देखा कि ऊँट अभी नहर नहीं किया गया था तो उसे नहर किया गया। फिर उसका गोश्त काटा गया। फिर उससे कुछ पकाया गया। हमने सूरज ग़ुरूब होने से पहले खा लिया।

फ़ायदा : बनू सलमा, मस्जिदे नबवी से कुछ फ़ासले पर है। आप वहाँ तशरीफ़ ले गये, आपके जाने के बाद ऊँट ज़िब्ह किया गया। फिर उसका गोश्त काटा गया उसके बाद उसको पकाकर मग़रिब से पहले-पहले खा लिया गया। ये इस बात की सरीह दलील है कि आप अ़सर की नमाज़ वक़्त होते ही पढ़ लेते थे और वो वक़्त मिस्ल अव्वल था। क्योंकि नमाज़ पढ़कर अ़वाली में ऐसे वक़्त पहुँचना कि आफ़ताब अभी बुलंद हो, इसके बग़ैर मुम्किन नहीं। इसी तरह ऊँट क़ुर्बान करके उसका गोश्त पकाकर शाम से पहले खाना जल्द नमाज़ पढ़े बग़ैर मुम्किन नहीं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِهْرَانَ الرَّازِيُّ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، عَنْ أَبِي النَّجَاشِيِّ، قَالَ سَمِعْتُ رَافِعَ بْنَ خَدِيجٍ، يَقُولُ كُنَّا نُصَلِّي الْعَصْرَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ تُنْحَرُ الْجَزُورُ فَتُقْسَمُ عَشَرَ قِسَمٍ ثُمَّ تُطْبَخُ فَنَأْكُلُ لَحْمًا نَضِيجًا قَبْلَ مَغِيبِ الشَّمْسِ .

(1415) हज़रत राफ़ेअ़ बिन ख़दीज (रज़ि.) से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ नमाज़े अ़सर पढ़ते, फिर ऊँट नहर करके उसके दस हिस्से बनाये जाते फिर उसे पकाया जाता और हम पकाया हुआ गोश्त सूरज के ग़ुरूब होने से पहले खा लेते।

(सहीह बुख़ारी : 2485)

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، وَشُعَيْبُ بْنُ إِسْحَاقَ الدِّمَشْقِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ كُنَّا نَنْحَرُ الْجَزُورَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ بَعْدَ الْعَصْرِ . وَلَمْ يَقُلْ كُنَّا نُصَلِّي مَعَهُ .

(1416) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं। हाँ इतना फ़र्क़ है कि उसने कहा, हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में असर के बाद ऊँट क़ुर्बान करते थे। ये नहीं कहा कि हम नमाज़ में आप (ﷺ) के साथ होते थे।

باب التَّغْلِيظِ فِي تَفْوِيتِ صَلاَةِ الْعَصْرِ

बाब 36 : नमाज़े असर फ़ौत करने पर तग़लीज़ व शिद्दत

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " الَّذِي تَفُوتُهُ صَلاَةُ الْعَصْرِ كَأَنَّمَا وُتِرَ أَهْلَهُ وَمَالَهُ " .

(1417) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिस शख़्स की नमाज़े असर फ़ौत हो गई गोया उसका अहल व माल हलाक हो गया।'
(सहीह बुख़ारी : 552, अबू दाऊद : 414)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) वुतिर अह्लुहू व मालुहू : अहल और माल के लाम पर नसब और रफ़अ (ज़बर, पेश) दोनों आ सकते हैं। अक्सर अहल व माल को मफ़ऊले स़ानी मानते हैं क्योंकि वुतिर के दो मफ़ऊल आते हैं। क़ुरआन मजीद 'लंय्युतरकुम अअ़मालुकुम' मानी होगा सल्ब कर लेना कि उससे उसका अहल व माल छीन लिये गये और बक़ौल इब्ने अ़ब्दुल बर्र (रह.) छीन भी इस तरह लिये गये कि उससे बदला और इन्तिक़ाम लेने की ज़रूरत है। इस तरह उसे दोहरा ग़म लाहिक़ है अहल और माल से महरूमी और बदला और इन्तिक़ाम लेने की सूरत व हीले की फ़िक्र व तलाश और अगर अहल व माल को नाइब फ़ाइल बनाकर मरफ़ूअ पढ़ें तो मानी होगा उसका अहल व माल तबाह हो गया। **(2) तफ़ूतुहुल अ़स्र :** उलमा ने असर के फ़ौत हो जाने के अलग-अलग मानी मुराद लिये हैं : (1) असर का वक़्त निकल गया (2) सूरज की रंगत बदल गई। (3) वक़्ते मुख़्तार निकल गया (4) असर की जमाअ़त रह गई। असर की नमाज़ की तख़्सीस इसलिये है कि ये कारोबार और ख़रीदो-फ़रोख़्त में मशग़ूलियत का वक़्त है और इंसान दुनियवी कारोबार को तरजीह देते हुए इस नमाज़ से सुस्ती का मुज़ाहिरा करता है और ये अपने अहलो-अयाल की ख़ातिर करता है। इसलिये फ़रमाया ये हरकत जिनकी ख़ातिर कर रहा है तो ये दरहक़ीक़त इन दोनों की ख़ैर व बरकत से महरूम हो रहा है।

(1418) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।
(नसाई : 1/255, इब्ने माजह : 685)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، . قَالَ عَمْرٌو يَبْلُغُ بِهِ . وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ رَفَعَهُ .

(1419) हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिस शख़्स की असर की नमाज़ फ़ौत हो गई तो गोया वो अपने अहल और माल से महरूम हो गया।'

وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " مَنْ فَاتَتْهُ الْعَصْرُ فَكَأَنَّمَا وُتِرَ أَهْلَهُ وَمَالَهُ " .

(1420) हज़रत अली (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-अहज़ाब के दिन फ़रमाया, 'अल्लाह तआला उनकी क़ब्रों और घरों को आग से भर दे, जिस तरह उन्होंने हमें दरम्यानी नमाज़ से (जंग में) मशग़ूल करके रोका, यहाँ तक कि सूरज ग़ुरूब हो गया।'
(सहीह बुख़ारी : 2931, 4111, 4533, 6396, अबू दाऊद : 409, तिर्मिज़ी : 2984, नसाई : 1/236)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَبِيدَةَ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ لَمَّا كَانَ يَوْمُ الأَحْزَابِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَلأَ اللَّهُ قُبُورَهُمْ وَبُيُوتَهُمْ نَارًا كَمَا حَبَسُونَا وَشَغَلُونَا عَنِ الصَّلاَةِ الْوُسْطَى حَتَّى غَابَتِ الشَّمْسُ " .

(1421) इमाम साहब दो और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، ح وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، جَمِيعًا عَنْ هِشَامٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

नोट : हज़रत अली (रज़ि.) की रिवायत का तअल्लुक़ आने वाले बाब से है, पाकिस्तानी नुस्ख़ों में इसको अगले बाब के तहत ही दर्ज किया गया है। मालूम नहीं अल्लामा मुहम्मद फ़व्वाद अब्दुल बाक़ी के नुस्ख़े में ये ग़लती कैसे हो गई।

37 : इस बात की दलील कि सलाते वुस्ता (दरम्यानी नमाज़) से मुराद असर की नमाज़ है

باب الدَّلِيلِ لِمَنْ قَالَ الصَّلاَةُ الْوُسْطَى هِيَ صَلاَةُ الْعَصْرِ

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ قَتَادَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي حَسَّانَ، عَنْ عَبِيدَةَ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَوْمَ الأَحْزَابِ" شَغَلُونَا عَنْ صَلاَةِ الْوُسْطَى حَتَّى آبَتِ الشَّمْسُ مَلأَ اللَّهُ قُبُورَهُمْ نَارًا أَوْ بُيُوتَهُمْ أَوْ بُطُونَهُمْ". شَكَّ شُعْبَةُ فِي الْبُيُوتِ وَالْبُطُونِ

(1422) हज़रत अली (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-अहज़ाब के वक़्त फ़रमाया, 'उन्होंने हमें दरम्यानी नमाज़ से मशग़ूल रखा, यहाँ तक कि सूरज ग़ुरूब हो गया। अल्लाह तआला उनकी क़ब्रों को या घरों को या पेटों को आग से भर दे (घरों और पेटों के बारे में शोबा को शुब्हा लाहिक़ हुआ)।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : आयतुश्शम्स : सूरज अपनी जगह लौट आया, यानी ग़ुरूब हो गया।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ " بُيُوتَهُمْ وَقُبُورَهُمْ " . وَلَمْ يَشُكَّ .

(1423) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं जिसमें बग़ैर शक के बुयूतहुम व क़ुबूरहुम (उनके घरों और क़ब्रों को) आया है।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ الْجَزَّارِ، عَنْ عَلِيٍّ، ح وَحَدَّثَنَاهُ عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ يَحْيَى، سَمِعَ عَلِيًّا، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَوْمَ الأَحْزَابِ وَهُوَ قَاعِدٌ عَلَى فُرْضَةٍ مِنْ

(1424) हज़रत अली (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-अहज़ाब के दिन, जबकि आप ख़न्दक़ के दर्रों में से किसी दर्रे पर तशरीफ़ फ़रमा थे फ़रमाया, 'उन्होंने हमें दरम्यानी नमाज़ से मशग़ूल रखा, यहाँ तक कि सूरज डूब गया। अल्लाह तआला उनकी क़ब्रों और घरों को (या फ़रमाया, उनकी क़ब्रों और पेटों को) आग से भर दे।'

فُرَضِ الْخَنْدَقِ " شَغَلُونَا عَنِ الصَّلاَةِ الْوُسْطَى حَتَّى غَرَبَتِ الشَّمْسُ مَلأَ اللَّهُ قُبُورَهُمْ وَبُيُوتَهُمْ - أَوْ قَالَ قُبُورَهُمْ وَبُطُونَهُمْ - نَارًا " .

(1425) हज़रत अ़ली (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अहज़ाब के दिन फ़रमाया, 'उन्होंने हमें दरम्यानी नमाज़ अ़सर की नमाज़ से मशग़ूल रखा, अल्लाह तआ़ला उनके घरों और क़ब्रों को आग से भर दे।' फिर आपने उसे दोनों रात की नमाज़ों मग़िब और इशा के दरम्यान पढ़ा।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالُوا حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُسْلِمِ بْنِ صُبَيْحٍ، عَنْ شُتَيْرِ بْنِ شَكَلٍ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَوْمَ الأَحْزَابِ " شَغَلُونَا عَنِ الصَّلاَةِ الْوُسْطَى صَلاَةِ الْعَصْرِ مَلأَ اللَّهُ بُيُوتَهُمْ وَقُبُورَهُمْ نَارًا " . ثُمَّ صَلاَّهَا بَيْنَ الْعِشَاءَيْنِ بَيْنَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ .

(1426) हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि मुश्रिकों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को अ़सर की नमाज़ से मशग़ूल रखा, यहाँ तक कि सूरज सुर्ख़ या ज़र्द हो गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उन्होंने हमें दरम्यानी नमाज़, अ़सर की नमाज़ से मशग़ूल रखा, अल्लाह तआ़ला उनके पेटों और क़ब्रों को आग से भरे दे।' या फ़रमाया, मल्अल्लाह की बजाए हशल्लाहु अज्वाफ़हुम व कुबूरहुम नारा। फ़रमाया, मल्अ और हशा दोनों का मानी भरना है, अज्वाफ़ और बुतून पेटों को कहते हैं।

(तिर्मिज़ी : 2985, इब्ने माजह : 686)

وَحَدَّثَنَا عَوْنُ بْنُ سَلاَّمٍ الْكُوفِيُّ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ طَلْحَةَ الْيَامِيُّ، عَنْ زُبَيْدٍ، عَنْ مُرَّةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ حَبَسَ الْمُشْرِكُونَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ صَلاَةِ الْعَصْرِ حَتَّى احْمَرَّتِ الشَّمْسُ أَوِ اصْفَرَّتْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " شَغَلُونَا عَنِ الصَّلاَةِ الْوُسْطَى صَلاَةِ الْعَصْرِ مَلأَ اللَّهُ أَجْوَافَهُمْ وَقُبُورَهُمْ نَارًا " . أَوْ قَالَ " حَشَا اللَّهُ أَجْوَافَهُمْ وَقُبُورَهُمْ نَارًا " .

फ़वाइद : (1) हज़रत अली (रज़ि.) की हदीस़ से नमाज़ के साथ नबी (ﷺ) के शग़फ़ और शौक़ का इज़हार होता है कि आपको इसके ताख़ीर से पढ़ने का इतना रंज और क़लक़ हुआ कि आपने उसका बाइस़ बनने वाले मुश्रिकों के ख़िलाफ़ बद्दुआ की। हालांकि आपने ताइफ़ की वादियों में पैग़ामे तौहीद सुनाने पर लहू-लुहान करने, दिल आज़ार बातें कहने और गुण्डों और बदमाशों के आवाज़ें कसने पर, उनके ख़िलाफ़ बद्दुआ नहीं की थी। इस तरह मुश्रिकों के हर क़िस्म के ज़ुल्म व सितम रवा रखने पर उनके ख़िलाफ़ बद दुआ नहीं की। लेकिन ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर नमाज़ का वक़्त निकल जाने पर आपका पैमानए सब्र लबरेज़ हो गया। लेकिन आज हमारी हालत क्या है? बिला वजह और बिला उ़ज़्र नमाज़ें छोड़ देते हैं और हमें एहसास तक नहीं होता। **(2)** ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ तक नमाज़े ख़ौफ़ (जंग की नमाज़) का हुक्म नाज़िल नहीं हुआ था। इसलिये आपने जंग वाली नमाज़ नहीं पढ़ी थी और इन अहादीस़ से ये भी स़ाबित हुआ कि सलातुल वुस्ता (बीच की नमाज़) से मुराद नमाज़े अ़सर है।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنِ الْقَعْقَاعِ بْنِ حَكِيمٍ، عَنْ أَبِي يُونُسَ، مَوْلَى عَائِشَةَ أَنَّهُ قَالَ أَمَرَتْنِي عَائِشَةُ أَنْ أَكْتُبَ لَهَا مُصْحَفًا وَقَالَتْ إِذَا بَلَغْتَ هَذِهِ الآيَةَ فَآذِنِّي { حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلاَةِ الْوُسْطَى} فَلَمَّا بَلَغْتُهَا آذَنْتُهَا فَأَمْلَتْ عَلَىَّ حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلاَةِ الْوُسْطَى وَصَلاَةِ الْعَصْرِ . وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ . قَالَتْ عَائِشَةُ سَمِعْتُهَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(1427) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) के आज़ाद करदा ग़ुलाम अबू यूनुस की रिवायत है कि मुझे आ़इशा (रज़ि.) ने अपने लिये क़ुरआन मजीद लिखने का हुक्म दिया और फ़रमाया, जब तुम इस आयत 'हाफ़िज़ू अ़लस्सलवाति वस्सलातिल वुस्ता' (सूरह बक़रह : 238) 'नमाज़ों की निगेहदाश्त करो, ख़ास कर दरम्यानी नमाज़ की' तो मुझे इत्तिलाअ़ करना। तो जब मैं इस आयत पर पहुँचा तो उन्हें आगाह किया तो उन्होंने मुझे लिखवाया, हाफ़िज़ू अ़लस्सलवाति वस्सलातिल वुस्ततुल अ़सर व क़ूमू लिल्लाहि क़ानितीन (नमाज़ों का एहतिमाम व हिफ़ाज़त करो, ख़ास कर दरम्यानी नमाज़ यानी नमाज़े अ़सर का और अल्लाह के हुज़ूर आ़जिज़ाना अन्दाज़ से खड़े हो) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बताया, मैंने इसे रसूलुल्लाह (ﷺ) से ऐसे ही सुना है।

(अबू दाऊद : 410, तिर्मिज़ी : 2982, नसाई : 471)

(1428) हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से रिवायत है कि ये आयत, हाफ़िज़ू अलस्सलवाति वस्सलातिल असर नाज़िल हुई। जब तक अल्लाह तआला को मन्ज़ूर हुआ, हमने इस तरह पढ़ा। फिर अल्लाह तआला ने इसको बदल दिया और आयत इस तरह उतरी, हाफ़िज़ू अलस्सलवाति वस्सलातिल वुस्ता तो एक इंसान जो शक़ीक़ के पास बैठा हुआ था, उसने उनसे पूछा, तो फिर इससे मुराद असर की नमाज़ है। तो हज़रत बराअ (रज़ि.) ने जवाब दिया, मैं तुम्हें बता चुका हूँ, आयत कैसे उतरी और अल्लाह तआला ने कैसे इसे बदल दिया। असल हक़ीक़त अल्लाह ही ख़ूब जानता है।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ بْنُ مَرْزُوقٍ، عَنْ شَقِيقِ بْنِ عُقْبَةَ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، قَالَ نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَصَلاَةِ الْعَصْرِ . فَقَرَأْنَاهَا مَا شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نَسَخَهَا اللَّهُ فَنَزَلَتْ { حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلاَةِ الْوُسْطَى} فَقَالَ رَجُلٌ كَانَ جَالِسًا عِنْدَ شَقِيقٍ لَهُ هِيَ إِذًا صَلاَةُ الْعَصْرِ . فَقَالَ الْبَرَاءُ قَدْ أَخْبَرْتُكَ كَيْفَ نَزَلَتْ وَكَيْفَ نَسَخَهَا اللَّهُ . وَاللَّهُ أَعْلَمُ .

(1429) इमाम मुस्लिम फ़रमाते हैं, यही रिवायत अश्जई ने सुफ़ियान सौरी के वास्ते से अस्वद बिन क़ैस की शक़ीक़ बिन उक़बा से बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुनाई। उन्होंने कहा, हम एक अरसा तक नबी (ﷺ) के साथ पढ़ते रहे। जैसाकि फ़ुज़ैल बिन मरज़ूक़ की हदीस है।

قَالَ مُسْلِمٌ وَرَوَاهُ الأَشْجَعِيُّ عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ، عَنْ شَقِيقِ بْنِ عُقْبَةَ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، قَالَ قَرَأْنَاهَا مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم زَمَانًا . بِمِثْلِ حَدِيثِ فُضَيْلِ بْنِ مَرْزُوقٍ .

फ़ायदा : इस आयते मुबारका में सलातुल असर का लफ़्ज़ बतौरे तफ़्सीर था। इसलिये उन्होंने (आइशा रज़ि. ने) इसको अपने मुस्हफ़ में लिखवाया और नबी (ﷺ) ने तालीम के वक़्त इसको सहाबा किराम (रज़ि.) को बताया। इसलिये जब मुस्हफ़े इमाम लिखवाया गया, जिसके मुताबिक़ दूसरे मुस्हफ़ तैयार होते थे तो ये लफ़्ज़ नहीं लिखा गया। बाक़ी रहा ये मसला कि हदीस ख़बरे वाहिद है और क़ुरआन मजीद तवातुर से साबित होता है तो इसका जवाब ये है कि इसका क़ुरआन होना जिस हदीस से मालूम होता है उसी से इसका मन्सूख़ होना साबित होता है। अब ये क़ुरआन है ही नहीं कि इसके लिये तवातुर शर्त हो। उस आयत के लिये मुतवातिर होना शर्त है, जो क़ुरआन में मौजूद हो, इसलिये जिन्होंने इसको क़ुरआन समझा था, उन्होंने इस तफ़्सीर को मन्सूख़ भी समझा और जिन्होंने इसको क़ुरआन नहीं समझा बल्कि

तफ़्सीर समझा, उन्होंने अपने ज़ाती मुस्हफ़ में अपनी याद्दाश्त के लिये इसको लिखा। बहरहाल तमाम अहादीसे मज़्कूरा से ये बात साबित हो रही है कि सलाते वुस्ता से मुराद असर की नमाज़ है। इसलिये यही सहीह और राजेह क़ौल है और इसके अलावा अक़्वाल दुरुस्त नहीं हैं। अगरचे नमाज़ें पाँच हैं, इसलिये हर नमाज़ को दरम्यान में रखकर इसको दरम्यानी नमाज़ का नाम दिया जा सकता है और दिया भी गया है। यहाँ तक कि अत्फ़ को मुग़ायिरत के लिये मान कर पाँच नमाज़ों के सिवा जुम्आ को भी दरम्यानी नमाज़ का नाम दिया गया है और हर क़ौल के लिये कोई न कोई सबब बयान किया गया है।

وَحَدَّثَنِي أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، عَنْ مُعَاذِ بْنِ هِشَامٍ، - قَالَ أَبُو غَسَّانَ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، - حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ، يَوْمَ الْخَنْدَقِ جَعَلَ يَسُبُّ كُفَّارَ قُرَيْشٍ وَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَاللَّهِ مَا كِدْتُ أَنْ أُصَلِّيَ الْعَصْرَ حَتَّى كَادَتْ أَنْ تَغْرُبَ الشَّمْسُ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " فَوَاللَّهِ إِنْ صَلَّيْتُهَا " . فَنَزَلْنَا إِلَى بُطْحَانَ فَتَوَضَّأَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَتَوَضَّأْنَا فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الْعَصْرَ بَعْدَ مَا غَرَبَتِ الشَّمْسُ ثُمَّ صَلَّى بَعْدَهَا الْمَغْرِبَ .

(1430) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि ख़न्दक़ के दिन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) क़ुरैशी काफ़िरों को बुरा-भला कहने लगे और अर्ज़ की, ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह की क़सम! मैं असर की नमाज़ नहीं पढ़ सका यहाँ तक कि सूरज ग़ुरूब होने को है। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तो अल्लाह की क़सम! मैंने भी नहीं पढ़ी।' फिर हम वादी बतहान में उतरे, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने वुज़ू किया और हमने भी वुज़ू किया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सूरज के ग़ुरूब हो जाने के बाद असर की नमाज़ पढ़ी फिर उसके बाद मग़िरब की नमाज़ अदा की।

(सहीह बुख़ारी : 596, 598, 641, 945, 4112, तिर्मिज़ी : 2180, नसाई : 3/84)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا وَقَالَ، إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْمُبَارَكِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ بِمِثْلِهِ .

(1431) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है अगर उज़्र और मजबूरी की बिना पर कुछ नमाज़ें रह जायें तो उनकी क़ज़ा तर्तीब से दी जायेगी।

बाब 38 : सुबह और अ़सर की नमाज़ की फ़ज़ीलत और उनकी निगेहदाश्त (पाबंदी)

باب فَضْلِ صَلاَتَىِ الصُّبْحِ وَالْعَصْرِ وَالْمُحَافَظَةِ عَلَيْهِمَا

(1432) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम्हारे पास फ़रिश्ते रात और दिन के वक़्त बारी, बारी आते हैं और फ़ज्र की नमाज़ और अ़सर की नमाज़ के वक़्त वो इकट्ठे हो जाते हैं। फिर जिन्होंने रात गुज़ारी होती है वो ऊपर चले जाते हैं, तो उनसे उनका रब पूछता है, हालांकि वो उनसे ज़्यादा जानता है, तुम मेरे बन्दों को किस हाल में छोड़कर आये हो? तो वो जवाब देते हैं, हम उनको (सुबह) छोड़कर आये हैं जबकि वो नमाज़ पढ़ रहे थे और हम उनके पास (अ़सर के वक़्त) पहुँचे थे जबकि वो नमाज़ पढ़ रहे थे।'

(सहीह बुख़ारी : 555, 7429, 7486, नसाई : 1/340)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " يَتَعَاقَبُونَ فِيكُمْ مَلاَئِكَةٌ بِاللَّيْلِ وَمَلاَئِكَةٌ بِالنَّهَارِ وَيَجْتَمِعُونَ فِي صَلاَةِ الْفَجْرِ وَصَلاَةِ الْعَصْرِ ثُمَّ يَعْرُجُ الَّذِينَ بَاتُوا فِيكُمْ فَيَسْأَلُهُمْ رَبُّهُمْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِهِمْ كَيْفَ تَرَكْتُمْ عِبَادِي فَيَقُولُونَ تَرَكْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّونَ وَأَتَيْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّونَ " .

फ़ायदा : जुम्हूर अ़रब और अक्सर नहवी, जिनके सरख़ेल इमामुन्नह्व सीबवे हैं का नज़रिया है कि अगर फ़ाइल ज़ाहिर हो, तसनीया हो या जमा तो फ़ैअल मुफ़रद लायेंगे। इसके साथ तसनीया या जमा की ज़मीर लाना जाइज़ नहीं है लेकिन बनू हारिस बिन कअ़ब के नज़दीक, अ़लामते तसनिया और जमा लाना जाइज़ है और यतआक़बून फ़ीकुम मलाइकह उन्हीं के क़ौल के मुताबिक़ है। इसलिये अख़फ़श और उसके हमनवा कुरआन मजीद की आयत व असर्रुन्नजवल्लज़ीन ज़लमू को भी इस पर महमूल करते हैं कि अल्लज़ीन ज़लमू फ़ाइल ज़ाहिर और असर्रु फ़ैअ़ल जमा है इसके साथ ज़मीर जमा मौजूद है। इस तरह मलाइका फ़ाइल ज़ाहिर है और यतआक़बून फ़ैअ़ल जमा है। लेकिन सीबवे और उसके हमनवा अल्लज़ीन ज़लमू और मलाइकह को फ़ैअ़ल से मुत्तसिल ज़मीर जमा से बदल बनाते हैं, उनको फ़ाइल तस्लीम नहीं करते। लेकिन अगली रिवायत में अल्मलाइकतु यतआक़बून है अल्मलाइकतु

मुब्तदा और यतआक़बू फ़ेअल फ़ाइल है मलाइकह की मुनासिबत से ज़मीरे फ़ाइल जमा लाई गई है।

मुफ़रदातुल हदीस़ : यतआक़बून : एक के बाद दूसरे या बारी-बारी आते हैं, एक गिरोह की ड्यूटी ख़त्म होती है और दूसरे की ज़िम्मेदारी शुरू होती है। दूसरे गिरोह की आमद के बाद पहला गिरोह जाता है। इस तरह फ़रिश्तों की ड्यूटी सुबह और असर के वक़्त बदल जाती है। ताकि सुबह के वक़्त वो अल्लाह के बन्दों को नर्म व गर्म बिस्तरों और प्यारी और मीठी नींद को अल्लाह की रज़ा की ख़ातिर छोड़ता देख लें और असर के वक़्त फ़िक्रे मआश (माल कमाने की फ़िक्र) और कारोबार को छोड़ता देख लें और सुबह व असर की नमाज़ की इस अहमियत की बिना पर ये बन्दे में दीदारे इलाही की सलाहियत व इस्तिअदाद पैदा करती हैं।

(1433) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'फ़रिश्ते तुम्हारे पास एक के बाद एक आते हैं।' (यानी मलाइका का लफ़्ज़ यतआक़बून से पहले है) आगे मज़्कूरा बाला रिवायत है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ " وَالْمَلاَئِكَةُ يَتَعَاقَبُونَ فِيكُمْ " . بِمِثْلِ حَدِيثِ أَبِي الزِّنَادِ .

(1434) हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर थे कि अचानक आप (ﷺ) ने चौधवीं रात के चाँद की तरफ़ देखकर फ़रमाया, 'हाँ! तुम यक़ीनन अपने रब को देखोगे, जिस तरह इस चाँद को देख रहे हो, इसके देखने में तुम्हारा इज़्दहाम (भीड़) नहीं होगा या किसी के साथ ज़्यादती नहीं होगी पस अगर तुम ये कर सको कि सूरज निकलने से पहले और सूरज के ग़ुरूब से पहले की नमाज़ के सिलसिले में मग़लूब न हो (न हारो) यानी असर और फ़ज्र की नमाज़ की पाबंदी करो।' फिर जरीर ने ये आयत पढ़ी, अपने रब की हम्द के साथ उसकी पाकीज़गी बयान कर सूरज निकलने से पहले और उसके ग़ुरूब होने से पहले।' (सूरह ताहा : 130)

وَحَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ الْفَزَارِيُّ، أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ، حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ أَبِي حَازِمٍ، قَالَ سَمِعْتُ جَرِيرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، وَهُوَ يَقُولُ كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذْ نَظَرَ إِلَى الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ فَقَالَ " أَمَا إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ رَبَّكُمْ كَمَا تَرَوْنَ هَذَا الْقَمَرَ لاَ تُضَامُّونَ فِي رُؤْيَتِهِ فَإِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ لاَ تُغْلَبُوا عَلَى صَلاَةٍ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا " . يَعْنِي الْعَصْرَ وَالْفَجْرَ ثُمَّ قَرَأَ

جَرِيرٌ { وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا} .

(सहीह बुख़ारी : 554, 573, 4851, 7434, 7435, 7436, अबू दाऊद : 4729, तिर्मिज़ी : 2551, इब्ने माजह : 177)

मुफ़रदातुल हदीस़ : ला तुज़ाम्मून : अगर इस लफ़्ज़ को ज़म्म से माख़ूज़ मानें तो ये बाब तफ़ाइल से होगा और त पर ख़त्म होगा और मानी होगा जमा होना, इज़्दहाम करना और अगर इसको ज़ैम से (ज़ुल्म व ज़्यादती) से माख़ूज़ मानें तो ये स़लास़ी मुजर्रद से मुज़ारेअ मज्हूल होगा। मक़सद ये है कि जिस तरह चाँद पूरे महीने का हो उसके देखने में इज़्दहाम या धक्कम-पेल नहीं होता या ज़ुल्म व ज़्यादती करके किसी को देखने से महरूम नहीं किया जा सकता। इस तरह हर इंसान अपनी-अपनी जगह अल्लाह तआला के दीदार से मुशर्रफ़ होगा।

फ़ायदा : (1) इस हदीस़ में दीदारे इलाही की इस्तिअदाद और लियाक़त पैदा करने या दीदार से तमत्तोअ होने के लिये सिर्फ़ दो नमाज़ों का तज़्किरा किया गया है। इससे एक तरफ़ तो इन नमाज़ों की फ़ज़ीलत व अहमियत स़ाबित होती है तो दूसरी तरफ़ ये पता चलता है कि इन दोनों नमाज़ों पर हमेशगी और दवाम बाक़ी नमाज़ें अदा करने का बाइस़ और सबब है। जो उनकी पाबंदी करेगा, यक़ीनन वो बाक़ी नमाज़ों को भी पढ़ेगा। (2) इस हदीस़ में अल्लाह तआला के दीदार को पूरे चाँद की रूयत (देखना) से तश्बीह दी गई है कि जिस तरह हम अपने सर की आँखों से अपनी-अपनी जगह बग़ैर किसी इज़्दहाम और मशक़्क़त के माहे कामिल को देख लेते हैं। इसी तरह मुसलमान अपने सर की आँखों से अपनी-अपनी जगह बग़ैर किसी कुल्फ़त व दिक़्क़त के अल्लाह के दीदार से लज़्ज़त व फ़रहत हासिल करेंगे। इस तरह हदीस़ में तश्बीह का तअल्लुक़ सिर्फ़ देखने से है। माहे कामिल को अल्लाह तआला से तश्बीह नहीं दी गई।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، وَأَبُو أُسَامَةَ وَوَكِيعٌ بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ " أَمَا إِنَّكُمْ سَتُعْرَضُونَ عَلَى رَبِّكُمْ فَتَرَوْنَهُ كَمَا تَرَوْنَ هَذَا الْقَمَرَ " . وَقَالَ ثُمَّ قَرَأَ . وَلَمْ يَقُلْ جَرِيرٌ .

(1435) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं, उसमें है, हाँ! तुम यक़ीनन अपने रब के सामने पेश किये जाओगे तो उसे इस तरह देखोगे, जिस तरह इस चाँद को देखते हो।' फिर रावी ने क़रअ के बाद जरीर का लफ़्ज़ बयान नहीं किया।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ جَمِيعًا عَنْ وَكِيعٍ، - قَالَ

(1436) अबू बक्र बिन उमारह बिन रुऐबा (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना,

أَبُو كُرَيْبٍ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، - عَنِ ابْنِ أَبِي خَالِدٍ، وَمِسْعَرٍ، وَالْبَخْتَرِيِّ بْنِ الْمُخْتَارِ، سَمِعُوهُ مِنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عُمَارَةَ بْنِ رُؤَيْبَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " لَنْ يَلِجَ النَّارَ أَحَدٌ صَلَّى قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا " . يَعْنِي الْفَجْرَ وَالْعَصْرَ . فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْبَصْرَةِ آنْتَ سَمِعْتَ هَذَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ نَعَمْ . قَالَ الرَّجُلُ وَأَنَا أَشْهَدُ أَنِّي سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم سَمِعَتْهُ أُذُنَاىَ وَوَعَاهُ قَلْبِي .

'जो सूरज निकलने से पहले और उसके गुरूब से पहले नमाज़ पढ़ता है वो हर्गिज़ आग में दाख़िल नहीं होगा। यानी जो फ़ज्र और असर पढ़ता है। तो उनसे एक बसरी आदमी ने पूछा, क्या तूने ये रिवायत रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी है? उन्होंने कहा, हाँ! तो उस आदमी ने कहा, मैं शहादत देता हूँ मैंने भी ये रिवायत रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी है। मेरे कानों ने इसे सुना और मेरे दिल ने इसको समझ कर याद रखा।

(अबू दाऊद : 427, नसाई : 1/235, 1/241)

وَحَدَّثَنِي يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عُمَارَةَ بْنِ رُؤَيْبَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ يَلِجُ النَّارَ مَنْ صَلَّى قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا " . وَعِنْدَهُ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْبَصْرَةِ فَقَالَ آنْتَ سَمِعْتَ هَذَا مِنَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ نَعَمْ أَشْهَدُ بِهِ عَلَيْهِ . قَالَ وَأَنَا أَشْهَدُ لَقَدْ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُهُ بِالْمَكَانِ الَّذِي سَمِعْتَهُ مِنْهُ .

(1437) हज़रत अबू बक्र बिन उमारह बिन रुऐबा (रह.) अपने बाप से बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो इंसान सूरज निकलने से पहले और उसके गुरूब होने से पहले नमाज़ पढ़ता है वो आग में दाख़िल नहीं होगा।' और उनके पास एक बसरा का बाशिन्दा था। तो उसने पूछा, क्या आपने नबी (ﷺ) से बराहे रास्त ये हदीस़ सुनी है? तो उन्होंने कहा, हाँ! मैं इस पर शहादत देता हूँ। उसने कहा, और मैं भी शहादत देता हूँ, मैंने आपसे ऐसी जगह से सुना, जहाँ से मैं इसे सुन सकता था या उस जगह मैंने सुना, जहाँ तूने आप (ﷺ) से सुना था।

(1438) अबू बक्र अपने बाप से बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने दो ठण्डे वक़्त की नमाज़ें पढ़ीं, वो जन्नत में दाख़िल होगा।'

(सहीह बुख़ारी : 574)

وَحَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ الأَزْدِيُّ، حَدَّثَنَا هَمَّامُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنِي أَبُو جَمْرَةَ الضُّبَعِيُّ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " مَنْ صَلَّى الْبَرْدَيْنِ دَخَلَ الْجَنَّةَ " .

मुफ़रदातुल हदीस : सल्लल बरदैन : फ़ज्र और असर की नमाज़ें ठण्डे वक़्त में होती हैं, इसलिये उनको बरदैन (दो ठण्डी नमाज़ों) से ताबीर कर दिया गया है।

फ़ायदा : इन हदीसों में सिर्फ़ फ़ज्र और असर की नमाज़ की पाबंदी करने पर दोज़ख़ की आग से महफ़ूज़ रहने और जन्नत में दाख़िल होने की बशारत दी गई है। तो इसका ये मतलब नहीं है कि बाक़ी नमाज़ें न भी पढ़े तो कोई हर्ज नहीं है। बल्कि ये मक़सद है कि इन दो नमाज़ों की पाबंदी और एहतिमाम करने वाला यक़ीनन बाक़ी नमाज़ों की भी पाबंदी और हिफ़ाज़त करेगा। इसलिये इनके अलग तज़्किरे की ज़रूरत महसूस नहीं की गई या ये उन लोगों के लिये जन्नत की बशारतें हैं जो उस वक़्त ईमान लाये जबकि अभी पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ नहीं हुई थीं।

(1439) इमाम साहब दो और उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ السَّرِيِّ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا ابْنُ خِرَاشٍ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، قَالاَ جَمِيعًا حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَنَسَبَا أَبَا بَكْرٍ فَقَالاَ ابْنُ أَبِي مُوسَى .

बाब 39 : मग़रिब का अव्वल वक़्त सूरज के ग़ुरूब होने पर है

باب بَيَانِ أَنَّ أَوَّلَ وَقْتِ الْمَغْرِبِ عِنْدَ غُرُوبِ الشَّمْسِ

(1440) हज़रत यज़ीद बिन अबी उबैद की सलमा बिन अक्वअ (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मग़रिब की नमाज़ उस वक़्त पढ़ते जब सूरज ग़ुरूब हो जाता और पर्दे की ओट में चला जाता।

(सहीह बुख़ारी : 561, अबू दाऊद : 417, तिर्मिज़ी : 164, इब्ने माजह : 688)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَاتِمٌ، - وَهُوَ ابْنُ إِسْمَاعِيلَ - عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُصَلِّي الْمَغْرِبَ إِذَا غَرَبَتِ الشَّمْسُ وَتَوَارَتْ بِالْحِجَابِ .

(1441) हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मग़रिब की नमाज़ पढ़कर वापस पलटते तो हममें से कोई भी अपने तीर के गिरने की जगह देख सकता था।

(सहीह बुख़ारी : 559, इब्ने माजह : 687)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِهْرَانَ الرَّازِيُّ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، حَدَّثَنِي أَبُو النَّجَاشِيِّ، قَالَ سَمِعْتُ رَافِعَ بْنَ خَدِيجٍ، يَقُولُ كُنَّا نُصَلِّي الْمَغْرِبَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَيَنْصَرِفُ أَحَدُنَا وَإِنَّهُ لَيُبْصِرُ مَوَاقِعَ نَبْلِهِ .

(1442) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبُ بْنُ إِسْحَاقَ الدِّمَشْقِيُّ، حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، حَدَّثَنِي أَبُو النَّجَاشِيِّ، حَدَّثَنِي رَافِعُ بْنُ خَدِيجٍ، قَالَ كُنَّا نُصَلِّي الْمَغْرِبَ . بِنَحْوِهِ .

फ़ायदा : इन अहादीस़ से मालूम होता है कि नबी (ﷺ) मग़रिब की नमाज़ उमूमन अव्वल वक़्त में ही पढ़ते थे बिला किसी उज़्र और मजबूरी के इसमें ज़्यादा ताख़ीर रवा नहीं रखते थे।

बाब 40 : इशा की नमाज़ का वक़्त और उसमें ताख़ीर

باب وَقْتِ الْعِشَاءِ وَتَأْخِيرِهَا

(1443) नबी (ﷺ) की ज़ौजा मुहतरमा आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि किसी रात रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इशा की नमाज़, जिसे अतमह के नाम से पुकारा जाता है, के लिये आने में ताख़ीर कर दी। रसूलुल्लाह (ﷺ) घर से न निकले यहाँ तक कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, (मस्जिद में आने वाली) औरतें और बच्चे सो गये हैं तो रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाये और निकलकर मस्जिद के हाज़िरीन से फ़रमाया, 'अहले ज़मीन में से तुम्हारे सिवा

وَحَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ سَوَّادٍ الْعَامِرِيُّ، وَحَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، أَنَّ ابْنَ شِهَابٍ، أَخْبَرَهُ قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ عَائِشَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ أَعْتَمَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَيْلَةً مِنَ اللَّيَالِي بِصَلاَةِ الْعِشَاءِ وَهِيَ الَّتِي تُدْعَى الْعَتَمَةَ فَلَمْ يَخْرُجْ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ نَامَ النِّسَاءُ وَالصِّبْيَانُ فَخَرَجَ رَسُولُ

اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ لأَهْلِ الْمَسْجِدِ حِينَ خَرَجَ عَلَيْهِمْ " مَا يَنْتَظِرُهَا أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ الأَرْضِ غَيْرُكُمْ " . وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ يَفْشُوَ الإِسْلاَمُ فِي النَّاسِ . زَادَ حَرْمَلَةُ فِي رِوَايَتِهِ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ وَذُكِرَ لِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تَنْزُرُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَلَى الصَّلاَةِ " . وَذَاكَ حِينَ صَاحَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ .

इस नमाज़ का कोई भी मुन्तज़िर नहीं है।' ये उस वक़्त की बात है जबकि अभी लोगों में इस्लाम नहीं फैला था। हरमला ने अपनी रिवायत में इब्ने शिहाब से ये इज़ाफ़ा बयान किया, मुझे बताया गया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम्हारे लिये रवा न था कि तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) से नमाज़ के लिये इसरार करते।' ये उस वक़्त फ़रमाया जब उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने बुलंद आवाज़ से पुकारा।

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ . وَلَمْ يَذْكُرْ قَوْلَ الزُّهْرِيِّ وَذُكِرَ لِي . وَمَا بَعْدَهُ .

(1444) इमाम साहब एक और उस्ताद से रिवायत बयान करते हैं लेकिन उसमें से ज़ोहरी का हरमला वाला हिस्सा बयान नहीं किया। (सहीह बुख़ारी : 566)

حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، كِلاَهُمَا عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ بَكْرٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، - وَأَلْفَاظُهُمْ مُتَقَارِبَةٌ - قَالُوا جَمِيعًا عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي الْمُغِيرَةُ بْنُ حَكِيمٍ، عَنْ أُمِّ كُلْثُومٍ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ، أَنَّهَا أَخْبَرَتْهُ عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ أَعْتَمَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ لَيْلَةٍ حَتَّى ذَهَبَ عَامَّةُ اللَّيْلِ وَحَتَّى نَامَ أَهْلُ الْمَسْجِدِ ثُمَّ

(1445) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने एक रात देर कर दी। यहाँ तक कि रात का काफ़ी हिस्सा गुज़र गया। यहाँ तक कि अहले मस्जिद सो गये। आपने तशरीफ़ लाकर नमाज़ पढ़ाई और फ़रमाया, 'यही इसका बेहतर वक़्त है। अगर मुझे अपनी उम्मत के मशक़्क़त में मुब्तला होने का डर न होता।' और अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ की हदीस में अन अशुक़्क़ की बजाए अंय्यशुक़्क़ है। (नसाई : 1/263)

خَرَجَ فَصَلَّى فَقَالَ " إِنَّهُ لَوَقْتُهَا لَوْلاَ أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي " . وَفِي حَدِيثِ عَبْدِ الرَّزَّاقِ " لَوْلاَ أَنْ يَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अन तन्ज़ुरू : ये कि तुम इसरार और इल्हाह से काम लो, आपसे तक़ाज़ा करो। **(2) इअ़्तम्म : अतमह** से माख़ूज़ है रात के अन्धेरे को कहते हैं। मक़सद ये है कि आम वक़्त से काफ़ी देर कर दी।

(1446) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से रिवायत है कि एक रात हम इशा की नमाज़ के लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) के इन्तिज़ार में रुके रहे तो रात का तिहाई (हिस्सा) गुज़रने पर आया उसके बाद आप तशरीफ़ लाये। हमें मालूम नहीं घर की कोई मशग़ूलियत थी या कुछ और था तो आपने निकलकर फ़रमाया, 'बेशक तुम एक ऐसी नमाज़ के इन्तिज़ार में हो कि किसी और दीन वाले इसके मुन्तज़िर नहीं और अगर मुझे ये डर न होता कि ये मेरी उम्मत के लिये गिरानी का सबब होगा तो मैं उन्हें इसी घड़ी नमाज़ पढ़ाया करता।' फिर आपने मुअज़्ज़िन को हुक्म दिया उसने नमाज़ के लिये इक़ामत कही और आपने नमाज़ पढ़ाई।

(अबू दाऊद : 420, नसाई : 1/267)

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، - عَنْ مَنْصُورٍ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، قَالَ مَكَثْنَا ذَاتَ لَيْلَةٍ نَنْتَظِرُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم - لِصَلاَةِ الْعِشَاءِ الآخِرَةِ فَخَرَجَ إِلَيْنَا حِينَ ذَهَبَ ثُلُثُ اللَّيْلِ أَوْ بَعْدَهُ فَلاَ نَدْرِي أَشَىْءٌ شَغَلَهُ فِي أَهْلِهِ أَوْ غَيْرُ ذَلِكَ فَقَالَ حِينَ خَرَجَ " إِنَّكُمْ لَتَنْتَظِرُونَ صَلاَةً مَا يَنْتَظِرُهَا أَهْلُ دِينٍ غَيْرُكُمْ وَلَوْلاَ أَنْ يَثْقُلَ عَلَى أُمَّتِي لَصَلَّيْتُ بِهِمْ هَذِهِ السَّاعَةَ " . ثُمَّ أَمَرَ الْمُؤَذِّنَ فَأَقَامَ الصَّلاَةَ وَصَلَّى .

(1447) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इशा की नमाज़ से मशग़ूल हो गये तो आपने देर कर दी, यहाँ तक कि हम मस्जिद में सो गये। फिर बेदार हुए फिर सो गये, फिर बेदार हुए, फिर आप हमारे पास तशरीफ़ लाये और

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي نَافِعٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم شُغِلَ عَنْهَا لَيْلَةً فَأَخَّرَهَا حَتَّى رَقَدْنَا فِي الْمَسْجِدِ

ثُمَّ اسْتَيْقَظْنَا ثُمَّ رَقَدْنَا ثُمَّ اسْتَيْقَظْنَا ثُمَّ خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ثُمَّ قَالَ " لَيْسَ أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ الأَرْضِ اللَّيْلَةَ يَنْتَظِرُ الصَّلاَةَ غَيْرُكُمْ " .

फ़रमाया, 'आज रात तुम्हारे सिवा अहले ज़मीन से कोई इस नमाज़ का इन्तिज़ार नहीं कर रहा।'

(सहीह बुख़ारी : 570, अबू दाऊद : 199)

وَحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا بَهْزُ بْنُ أَسَدٍ الْعَمِّيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، . أَنَّهُمْ سَأَلُوا أَنَسًا عَنْ خَاتَمِ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ أَخَّرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الْعِشَاءَ ذَاتَ لَيْلَةٍ إِلَى شَطْرِ اللَّيْلِ أَوْ كَادَ يَذْهَبُ شَطْرُ اللَّيْلِ ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ " إِنَّ النَّاسَ قَدْ صَلَّوْا وَنَامُوا وَإِنَّكُمْ لَمْ تَزَالُوا فِي صَلاَةٍ مَا انْتَظَرْتُمُ الصَّلاَةَ " . قَالَ أَنَسٌ كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى وَبِيصِ خَاتَمِهِ مِنْ فِضَّةٍ وَرَفَعَ إِصْبَعَهُ الْيُسْرَى بِالْخِنْصَرِ .

(1448) हज़रत साबित (रह.) बयान करते हैं कि मैंने हज़रत अनस (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) की मुहर के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा, एक रात रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इशा की नमाज़ आधी रात तक मुअख़्ख़र कर दी या आधी रात गुज़रने को थी फिर आप तशरीफ़ लाये और फ़रमाया, 'लोग नमाज़ पढ़कर सो चुके हैं और तुम नमाज़ ही में तसव्वुर होगे जब तक नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठे रहोगे।' हज़रत अनस ने बताया, गोया कि अभी मैं आपकी चाँदी की अंगूठी की चमक देख रहा हूँ और उन्होंने बायें हाथ की उंगली उठाकर इशारा किया कि अंगूठी इसमें थी।

(नसाई : 8/194)

وَحَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا أَبُو زَيْدٍ، سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا قُرَّةُ بْنُ خَالِدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ نَظَرْنَا رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَيْلَةً حَتَّى كَانَ قَرِيبٌ مِنْ نِصْفِ اللَّيْلِ ثُمَّ جَاءَ فَصَلَّى ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ فَكَأَنَّمَا أَنْظُرُ إِلَى وَبِيصِ خَاتَمِهِ فِي يَدِهِ مِنْ فِضَّةٍ .

(1449) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि हमने एक रात रसूलुल्लाह (ﷺ) का इन्तिज़ार किया। यहाँ तक कि वक़्त आधी रात के क़रीब हो गया तो फिर आपने आकर नमाज़ पढ़ाई। फिर आपने हमारी तरफ़ तवज्जह फ़रमाई गोया कि मैं आपके हाथ में आपकी चाँदी की अंगूठी की चमक अब भी देख रहा हूँ।

(नसाई : 8/174)

(1450) इमाम साहब एक और उस्ताद से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं लेकिन उसमें ये नहीं बयान किया कि फिर आप हमारी तरफ़ मुतवज्जह हुए।

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الصَّبَّاحِ الْعَطَّارُ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيدِ الْحَنَفِيُّ، حَدَّثَنَا قُرَّةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَلَمْ يَذْكُرْ ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ .

(1451) हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) से रिवायत है कि मैं और मेरे वो साथी जो कश्ती में मेरे साथ आये थे। बतहान की वसीअ जगह में उतरे हुए थे और रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना में तशरीफ़ फ़रमा थे और हर रात हमारी एक जमाअत बारी-बारी इशा की नमाज़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होती थी। अबू मूसा (रज़ि.) बताते हैं कि मैं और मेरे साथियों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इस हाल में पाया कि आप अपने किसी काम में मशग़ूल थे। यहाँ तक कि आपने नमाज़ को आधी रात तक मुअख़्ख़र (लेट) कर दिया। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाये और हाज़िरीन को नमाज़ पढ़ाई तो जब आपने नमाज़ पूरी कर ली, हाज़िरीन को फ़रमाया, 'ज़रा ठहरो, मैं तुम्हें बताता हूँ और ख़ुश हो जाओ, अल्लाह तआला का तुम पर एहसान है, लोगों में से कोई भी इस वक़्त तुम्हारे सिवा नमाज़ नहीं पढ़ता।' या आपने फ़रमाया, 'इस वक़्त तुम्हारे सिवा किसी ने नमाज़ नहीं पढ़ी। रावी को याद नहीं अबू मूसा ने कौनसा जुम्ला कहा था। अबू मूसा (रज़ि.) ने बताया, हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की बात सुनकर ख़ुश-ख़ुश वापस आये। इब्हारुल्लैल रात आधी गुज़र गई।

(सहीह बुख़ारी : 567)

وَحَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ الأَشْعَرِيُّ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ كُنْتُ أَنَا وَأَصْحَابِي الَّذِينَ، قَدِمُوا مَعِي فِي السَّفِينَةِ نُزُولاً فِي بَقِيعِ بُطْحَانَ وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِالْمَدِينَةِ فَكَانَ يَتَنَاوَبُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عِنْدَ صَلاَةِ الْعِشَاءِ كُلَّ لَيْلَةٍ نَفَرٌ مِنْهُمْ قَالَ أَبُو مُوسَى فَوَافَقْنَا رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَا وَأَصْحَابِي وَلَهُ بَعْضُ الشُّغْلِ فِي أَمْرِهِ حَتَّى أَعْتَمَ بِالصَّلاَةِ حَتَّى ابْهَارَّ اللَّيْلُ ثُمَّ خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَصَلَّى بِهِمْ فَلَمَّا قَضَى صَلاَتَهُ قَالَ لِمَنْ حَضَرَهُ " عَلَى رِسْلِكُمْ أُعْلِمُكُمْ وَأَبْشِرُوا أَنَّ مِنْ نِعْمَةِ اللَّهِ عَلَيْكُمْ أَنَّهُ لَيْسَ مِنَ النَّاسِ أَحَدٌ يُصَلِّي هَذِهِ السَّاعَةَ غَيْرُكُمْ " . أَوْ قَالَ " مَا صَلَّى هَذِهِ السَّاعَةَ أَحَدٌ غَيْرُكُمْ " . لاَ نَدْرِي أَىَّ الْكَلِمَتَيْنِ قَالَ قَالَ أَبُو مُوسَى فَرَجَعْنَا فَرِحِينَ بِمَا سَمِعْنَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(1452) हज़रत इब्ने जुरैज (रह.) बयान करते हैं कि मैंने हज़रत अ़ता (रह.) से पूछा, आपके नज़दीक इशा की नमाज़ जिसको लोग अ़तमह कहते हैं, मेरे लिये इमामत के तौर पर या इन्फ़िरादी तौर पर किस वक़्त पढ़ना महबूब है? उसने जवाब दिया, मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) को ये फ़रमाते हुए सुना कि एक रात नबी (ﷺ) ने इशा की नमाज़ में देर कर दी। यहाँ तक कि लोग सो गये और बेदार हुए। फिर सो गये और बेदार हुए। तो हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने खड़े होकर बुलंद आवाज़ से कहा, नमाज़ पढ़ाइये। अ़ता ने बताया, इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़रमाया इस पर नबी (ﷺ) निकले गोया कि मैं अभी आपको देख रहा हूँ, आपके सर से पानी गिर रहा था और आपने अपने सर की एक जानिब अपना हाथ रखा हुआ था। आपने फ़रमाया, 'अगर मुझे डर न होता कि मेरी उम्मत मशक़्क़त में मुब्तला हो गई तो मैं उन्हें हुक्म देता कि वो इस नमाज़ को इस वक़्त पढ़ा करें।' इब्ने जुरैज कहते हैं, मैंने अ़ता से तहक़ीक़ की कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने उन्हें नबी (ﷺ) की अपना हाथ अपने सर पर रखने की क्या कैफ़ियत बतलाई थी? तो अ़ता ने मेरे सामने अपनी उंगलियाँ थोड़ी सी खोलीं, फिर अपनी उंगलियों के किनारे सर के एक जानिब रखे। फिर उनको नीचे किया, इस तरह उनको सर पर फेरा यहाँ तक कि उनके अंगूठे

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، قَالَ قُلْتُ لِعَطَاءٍ أَىُّ حِينٍ أَحَبُّ إِلَيْكَ أَنْ أُصَلِّيَ الْعِشَاءَ الَّتِي يَقُولُهَا النَّاسُ الْعَتَمَةَ إِمَامًا وَخِلْوًا قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ يَقُولُ أَعْتَمَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ لَيْلَةٍ الْعِشَاءَ - قَالَ - حَتَّى رَقَدَ نَاسٌ وَاسْتَيْقَظُوا وَرَقَدُوا وَاسْتَيْقَظُوا فَقَامَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فَقَالَ الصَّلاَةَ ‏.‏ فَقَالَ عَطَاءٌ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ فَخَرَجَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ الآنَ يَقْطُرُ رَأْسُهُ مَاءً وَاضِعًا يَدَهُ عَلَى شِقِّ رَأْسِهِ قَالَ ‏"‏ لَوْلاَ أَنْ يَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي لأَمَرْتُهُمْ أَنْ يُصَلُّوهَا كَذَلِكَ ‏"‏ ‏.‏ قَالَ فَاسْتَثْبَتُّ عَطَاءً كَيْفَ وَضَعَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يَدَهُ عَلَى رَأْسِهِ كَمَا أَنْبَأَهُ ابْنُ عَبَّاسٍ فَبَدَّدَ لِي عَطَاءٌ بَيْنَ أَصَابِعِهِ شَيْئًا مِنْ تَبْدِيدٍ ثُمَّ وَضَعَ أَطْرَافَ أَصَابِعِهِ عَلَى قَرْنِ الرَّأْسِ ثُمَّ صَبَّهَا يُمِرُّهَا كَذَلِكَ عَلَى الرَّأْسِ حَتَّى مَسَّتْ إِبْهَامُهُ طَرَفَ الأُذُنِ مِمَّا يَلِي الْوَجْهَ ثُمَّ عَلَى الصُّدْغِ وَنَاحِيَةِ اللِّحْيَةِ لاَ يُقَصِّرُ وَلاَ يَبْطِشُ بِشَىْءٍ إِلاَّ كَذَلِكَ ‏.‏ قُلْتُ لِعَطَاءٍ كَمْ ذُكِرَ لَكَ

أَخَّرَهَا النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم لَيْلَتَئِذٍ قَالَ لاَ أَدْرِي . قَالَ عَطَاءٌ أَحَبُّ إِلَىَّ أَنْ أُصَلِّيَهَا إِمَامًا وَخِلْوًا مُؤَخَّرَةً كَمَا صَلاَّهَا النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم لَيْلَتَئِذٍ فَإِنْ شَقَّ عَلَيْكَ ذَلِكَ خِلْوًا أَوْ عَلَى النَّاسِ فِي الْجَمَاعَةِ وَأَنْتَ إِمَامُهُمْ فَصَلِّهَا وَسَطًا لاَ مُعَجَّلَةً وَلاَ مُؤَخَّرَةً .

ने कान के चेहरे के क़रीब वाले किनारे को छुआ फिर कनपटी और दाढ़ी के किनारे पर पहुँचा। आपने न ताख़ीर की और न कुछ जल्दबाज़ी से काम लिया, इस तरह किया। मैंने अ़ता से पूछा, आपको उस रात नबी (ﷺ) की किस क़द्र ताख़ीर बताई? उसने कहा, मुझे मालूम नहीं। अ़ता ने कहा, मुझे यही पसंद है कि मैं इमाम हूँ या अकेला, नमाज़ ताख़ीर से पढ़ूँ। जिस तरह नबी (ﷺ) ने उस रात पढ़ी थी। अगर तुम्हारे लिये इन्फ़िरादी तौर पर या लोगों के लिये जमाअ़त की सूरत में जबकि तुम इमाम हो या दुश्वारी का बाइस़ हो तो उसको दरम्याने वक़्त में पढ़ो न जल्दी करो और न ताख़ीर।

(सहीह बुख़ारी : 571, 7239, नसाई : 1/260, 531)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) ख़िल्वन : यानी मुन्फ़रिदन, अकेले, इन्फ़िरादी तौर पर। **(2) इस्तस़्बत्तु :** मैंने छान-बीन से काम लिया, तहक़ीक़ की। **(3) सब्बहा :** उसे झुकाया, नीचे किया। **(4) ला युक़स्सिरु वला यब्तिशु :** न देर की और न जल्दी से काम लिया, लफ़्ज़ी मानी न कोताही की और न गिरफ़्त की। मक़सद ये है उंगलियों को मियाना रवी के साथ सर पर फेरा और पानी निचोड़ा।

फ़वाइद : (1) इन अहादीस़ से उम्मत के लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) की शफ़क़त और प्यार का इज़हार हो रहा है और इस ख़्वाहिश व आरज़ू का पता चलता है कि आपको अपनी उम्मत की सहूलत और आसानी अ़ज़ीज़ थी, मशक़्क़त व दुश्वारी से महफ़ूज़ रखने की कोशिश फ़रमाते थे। उसके बावजूद उम्मत, इस्लामी अहकाम व हिदायात को दुश्वार महसूस करे या उन पर अ़मल करने से पहलूतही (कोताही) करे तो उस पर अफ़सोस के सिवा क्या किया जा सकता है। **(2)** ताख़ीरे इशा वाली रिवायात से ये भी स़ाबित होता है कि अगर इंसान बैठे-बैठे सो जाये तो उससे वुज़ू नहीं टूटता। मगर ये कि उसे ये महसूस हो कि उसकी हवा ख़ारिज हो गई है। **(3)** इशा की नमाज़ अइम्मए अरबअ़ा के नज़दीक बिल्इत्तिफ़ाक़ ताख़ीर से पढ़ना बेहतर है। लेकिन उसमें नमाज़ियों का ख़्याल रखना ज़रूरी है। अगर ताख़ीर नमाज़ियों के लिये दिक़्क़त और दुश्वारी का बाइस़ हो तो फिर ऐतदाल और तवस्सुत की राह को इख़्तियार किया जायेगा। **(4)** इन अहादीस़ से ये इस्तिदलाल करना कि अल्लाह तआ़ला नबी

को अहकाम की हिल्लत व हुरमत और ईजाब व तहरीम का इख़्तियार देकर भेजता है और नबी का ये मन्सब है कि वो जिस चीज़ को चाहे फ़र्ज़ कर दे और जिस चीज़ को चाहे हराम कर दे दुरुस्त नहीं है रसूल जो कुछ फ़रमाता है वो अल्लाह तआला के नुमाइन्दे की हैसियत से फ़रमाता है। उसका हर हुक्म अल्लाह की रज़ा के ताबेअ होता है। जिसका उसूल ख़ुद क़ुरआन मजीद में 'और ये (रसूल) अपनी तरफ़ से कुछ नहीं कहते, मगर वही जो इनकी तरफ़ वह्य किया जाता है।' (सूरह नज्म : 3) की सूरत में बयान कर दिया गया है, अगर वो ख़ुद मुख़्तार होता। तो फिर मा का-न लिनबिय्यिन अंय्यकून लहू असरा (सूरह अन्फ़ाल) मा कानन्नबिय्यु वल्लज़ीन आमनू अंय्यस्तग़्फ़िरु लिल्मुश्रिकीन (सूरह तौबा) अ़फ़ल्लाहु अ़न्क लिमा अज़िनत (सूरह तौबा) याअय्युहन्नबिय्यु लि-म तुहर्रिमु मा अहल्लल्लाहु लक (सूरह तहरीम) इन तम्बीहात की ज़रूरत पेश न आती। फिर इनिल हुक्मु इल्ला लिल्लाह, अला लहुल हुक्मु वल्अम्र का क्या मफ़्हूम होगा? असल बात ये है कि रसूल अल्लाह तआला का पैग़ाम रसाँ (पहुँचाने वाला) होता है और उस पैग़ाम की तशरीह व तौज़ीह अपने क़ौल व अ़मल से अल्लाह तआला की वह्ये ख़फ़ी की रोशनी में फ़रमाता है। अगर कहीं इज्तिहादी तौर पर अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई काम हो जाये तो फ़ौरन उसको आगाह कर दिया जाता है। इसलिये मआल और अन्जाम के ऐतबार से उसका हर क़ौल व फ़ैअ़ल उम्मत के लिये बिला हील व हुज्जत और बिला चूं व चिरा वाजिबुल इत्तिबाअ़ होता है और उसके बारे में दिल में किसी क़िस्म का इन्क़िबाज़ (तंगी) रवा नहीं हो सकता। शारेअ (शरीअ़त बनाने वाला) असल में अल्लाह तआला है, बन्दों और अल्लाह तआला के दरम्यान रसूल वास्ता है। रसूल के बग़ैर अल्लाह तआला की मर्ज़ी और मन्शा को जानना मुम्किन नहीं है। इसलिये रसूल की इताअ़त ही अल्लाह की इताअ़त है। रसूल की इताअ़त के बग़ैर अल्लाह तआला की इताअ़त मुम्किन नहीं है।

(1453) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इशा की नमाज़ ताख़ीर से पढ़ते थे।

(नसाई : 1/266)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُؤَخِّرُ صَلاَةَ الْعِشَاءِ الآخِرَةِ .

(1454) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उन्हीं औक़ात में नमाज़ें पढ़ते थे जिन औक़ात में तुम नमाज़ पढ़ते हो। अल्बत्ता इशा की नमाज़

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله

عليه وسلم يُصَلِّي الصَّلَوَاتِ نَحْوًا مِنْ صَلاَتِكُمْ وَكَانَ يُؤَخِّرُ الْعَتَمَةَ بَعْدَ صَلاَتِكُمْ شَيْئًا وَكَانَ يُخِفُّ الصَّلاَةَ . وَفِي رِوَايَةِ أَبِي كَامِلٍ يُخَفِّفُ .

तुम्हारी नमाज़ से कुछ ताख़ीर से पढ़ते थे और नमाज़ में तख़फ़ीफ़ (कमी) करते थे और अबू कामिल की रिवायत में तख़फ़ीफ़ के बाद अस्सलात का लफ़्ज़ नहीं है।

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ ابْنِ أَبِي لَبِيدٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " لاَ تَغْلِبَنَّكُمُ الأَعْرَابُ عَلَى اسْمِ صَلاَتِكُمْ أَلاَ إِنَّهَا الْعِشَاءُ وَهُمْ يُعْتِمُونَ بِالإِبِلِ " .

(1455) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना, 'तुम्हारी नमाज़ के नाम पर तुम पर गंवार ग़ालिब न आ जायें। ख़बरदार! उसका नाम इशा है। वो ऊँटों का दूध दूहने की ख़ातिर अन्धेरा कर देते हैं।' (वो अन्धेरे की बिना पर इशा को अतमह कहते हैं।)
(अबू दाऊद : 4984, नसाई : 1/270, इब्ने माजह : 704)

मुफ़रदातुल हदीस़ : हुम युअ्तिमून बिल्इबिल : वो ऊँट दूहने की ख़ातिर अन्धेरा करते हैं। अतमा रात की तारीकी को कहते हैं।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي لَبِيدٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " لاَ تَغْلِبَنَّكُمُ الأَعْرَابُ عَلَى اسْمِ صَلاَتِكُمُ الْعِشَاءِ فَإِنَّهَا فِي كِتَابِ اللَّهِ الْعِشَاءُ وَإِنَّهَا تُعْتِمُ بِحِلاَبِ الإِبِلِ " .

(1456) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम्हारी इशा की नमाज़ के नाम के सिलसिले में तुम पर बद्दू ग़ालिब न आ जायें। क्योंकि अल्लाह की किताब में उसका नाम इशा है और बद्दू ऊँटों का दूध दूहने में अन्धेरा कर लेते हैं।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : हिलाब : मस्दर है और मानी थन से दूध निकालना।

फ़ायदा : आप (ﷺ) ने इशा को आम तौर पर अतमा कहने से रोका है कि इसका ग़ालिब नाम अतमा हो जाये। कभी-कभार अतमा कहने से मना नहीं फ़रमाया। इसलिये कुछ मौक़ों पर आपने ख़ुद इशा को अतमा के नाम से ताबीर फ़रमाया है और अतमा नाम रखने का आपने सबब भी बता दिया है कि गंवार

चूंकि ऊँट दूहने में देर कर देते हैं और इस काम में अन्धेरा फैल जाता है। इसलिये वो इसको अतमा के नाम से पुकारते हैं, तुम भी उनके साथ अतमा कहना न शुरू कर देना कि इशा का नाम मतरूक या मग़लूब हो जाये। क़ुरआन मजीद में है, मिम्बअ्दि सलातिल इशा। (सूरह नूर : 58)

बाब 41 : नमाज़े सुबह जल्द ही उसके अव्वल वक़्त यानी ग़लस (रात की आख़िरी तारीकी) में पढ़ना और उसमें क़िरअत की मिक़्दार का बयान

باب اسْتِحْبَابِ التَّبْكِيرِ بِالصُّبْحِ فِي أَوَّلِ وَقْتِهَا وَهُوَ التَّغْلِيسُ وَبَيَانِ قَدْرِ الْقِرَاءَةِ فِيهَا

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، كُلُّهُمْ عَنْ سُفْيَانَ بْنِ عُيَيْنَةَ، - قَالَ عَمْرٌو حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، - عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ نِسَاءَ الْمُؤْمِنَاتِ، كُنَّ يُصَلِّينَ الصُّبْحَ مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ يَرْجِعْنَ مُتَلَفِّعَاتٍ بِمُرُوطِهِنَّ لاَ يَعْرِفُهُنَّ أَحَدٌ .

(1457) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि मुसलमान औरतें सुबह की नमाज़ नबी (ﷺ) के साथ पढ़ती थीं। फिर अपनी चादरों में लिपटी हुई वापस आतीं और उन्हें (अन्धेरे की वजह से) कोई पहचान नहीं पाता था।

(नसाई : 1/271, इब्ने माजह : 669)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) निसाअल मुअ्मिनात : में इज़ाफ़तुल मौसूफ़ इलस्सिफ़त है जो कुछ (कूफ़ी) नहवियों के नज़दीक जाइज़ नहीं है इसलिये उनको यहाँ तावील की ज़रूरत पेश आती है। वो यहाँ मौसूफ़ महज़ूफ़ मानते हैं। यानी निसाअल अन्फुसिल् मुअ्मिनात या निसाअल जमाआतिल मुअ्मिनात बनाते हैं या निसा को फ़ाज़िलात के मानी लेते हैं यानी फ़ाज़िलातिल मुअ्मिनात जैसे कहते हैं, रिजालुल क़ौम यानी फ़ुज़लाउल क़ौम और जिनके नज़दीक अबसरी जाइज़ है उनको किसी तावील की ज़रूरत नहीं। **(2) मुतलफ़्फ़िआति :** लिपटी हुईं, पहने हुए। **(3) मुरूत :** मिर्त की जमा है धारीदार चादर।

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، أَنَّ ابْنَ شِهَابٍ، أَخْبَرَهُ قَالَ

(1458) नबी (ﷺ) की ज़ौजा मोहतरमा आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि कुछ मुसलमान औरतें फ़ज्र की नमाज़ में

أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ عَائِشَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ لَقَدْ كَانَ نِسَاءٌ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ يَشْهَدْنَ الْفَجْرَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مُتَلَفِّعَاتٍ بِمُرُوطِهِنَّ ثُمَّ يَنْقَلِبْنَ إِلَى بُيُوتِهِنَّ وَمَا يُعْرَفْنَ مِنْ تَغْلِيسِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِالصَّلاَةِ .

रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ शरीक होती थीं, इस हाल में कि वो अपनी चादरों में लिपटी होती थीं, फिर वो अपने घरों को लौटतीं तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के अन्धेरे में नमाज़ पढ़ने की बिना पर पहचानी नहीं जाती थीं।

وَحَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، وَإِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا مَعْنٌ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ عَمْرَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ إِنْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَيُصَلِّي الصُّبْحَ فَيَنْصَرِفُ النِّسَاءُ مُتَلَفِّعَاتٍ بِمُرُوطِهِنَّ مَا يُعْرَفْنَ مِنَ الْغَلَسِ . وَقَالَ الأَنْصَارِيُّ فِي رِوَايَتِهِ مُتَلَفِّفَاتٍ .

(1459) हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि बिला शुब्हा रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की नमाज़ पढ़ते तो औरतें अपनी चादरों में लिपटी हुई घरों को लौटतीं, अन्धेरे की वजह से पहचानी नहीं जाती थीं। अन्सारी की रिवायत में मुतलफ़्फ़िआत की जगह मुतलफ़्फ़िफ़ात है, चादरों में मल्फ़ूफ़।

(सहीह बुख़ारी : 867, अबू दाऊद : 423, तिर्मिज़ी : 153, नसाई : 1/271)

फ़ायदा : (1) हज़रत आइशा (रज़ि.) की रिवायत से साबित होता है कि हुज़ूर (ﷺ) इस क़द्र अन्धेरे में नमाज़ पढ़ते थे कि नमाज़ से फ़राग़त के बाद वापस जाने वाली औरतों का पता नहीं चलता था कि मर्द जा रहे हैं या औरतें जा रही हैं या उनमें ये इम्तियाज़ (फ़र्क़) नहीं हो सकता था कि कौनसी औरत जा रही है। हालांकि रोशनी में औरत की चाल-ढाल और हैयत कज़ाई से वाक़िफ़कार उसकी शख़्सियत को पहचान लेते हैं। इसलिये जुम्हूर के नज़दीक जिसमें इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद (रह.) शामिल हैं, अन्धेरे में नमाज़ पढ़ना बेहतर है और अस्फ़िरु बिस्सुब्ह या अस्बिहू बिस्सुब्ह का मानी ये है कि क़िरअत तवील करो ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग पहली रकअत में शरीक हो सकें। हाँ कुछ मौक़ों पर आप (ﷺ) ने ज़रूरत के तहत सुबह की नमाज़ देर से भी पढ़ी है। नीज़ इस हदीस़ से ये भी साबित होता है कि पर्दे की पाबंदी करते हुए औरतें मस्जिद में बाजमाअत नमाज़ पढ़ सकती हैं। (2) अस्फ़िरु बिस्सुब्ह की तौज़ीह अस्बिहू बिस्सुब्ह का लफ़्ज़ कर रहा है कि सुबह अच्छी तरह हो जाये। सुबह होने में कोई शक व शुब्हा न रहे। यानी अज़ान सुबह सादिक़ के बाद कही जाये, सुबहे काज़िब में नहीं। इस्फ़ार रोशनी को कहते हैं, सुबह रोशन उस वक़्त होगी जब अच्छी तरह सुबह

हो जायेगी। इसलिये हज़रत अबू बकर (रज़ि.) सुबह की नमाज़ में सूरह बक़रा पढ़ लेते थे और हज़रत उमर सूरह हूद और यूसुफ़ और रअद पढ़ लेते थे अगर इसका मानी अहनाफ़ वाला लिया जाये तो इस क़द्र तवील क़िरअत मुम्किन नहीं है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، عَنْ شُعْبَةَ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ، قَالَ لَمَّا قَدِمَ الْحَجَّاجُ الْمَدِينَةَ فَسَأَلْنَا جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ فَقَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي الظُّهْرَ بِالْهَاجِرَةِ وَالْعَصْرَ وَالشَّمْسُ نَقِيَّةٌ وَالْمَغْرِبَ إِذَا وَجَبَتْ وَالْعِشَاءَ أَحْيَانًا يُؤَخِّرُهَا وَأَحْيَانًا يُعَجِّلُ كَانَ إِذَا رَآهُمْ قَدِ اجْتَمَعُوا عَجَّلَ وَإِذَا رَآهُمْ قَدْ أَبْطَئُوا أَخَّرَ وَالصُّبْحَ كَانُوا أَوْ - قَالَ - كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّيهَا بِغَلَسٍ .

(1460) हज़रत मुहम्मद बिन अम्र बिन हसन बिन अली (रह.) बयान करते हैं कि जब हज्जाज मदीना मुनव्वरा आया (और नमाज़ें ताख़ीर से पढ़ने लगा) तो हमने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़ुहर की नमाज़ निस्फ़ुन्नहार (यानी ज़वाल होते ही) पढ़ते थे और असर ऐसे वक़्त में पढ़ते थे कि सूरज बिल्कुल साफ़ और रोशन होता था (उसकी गर्मी और रोशनी में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था) और मग़िरब की नमाज़ जब सूरज गुरूब हो जाता और इशा की नमाज़ कभी ताख़ीर से पढ़ते और कभी जल्दी पढ़ लेते। जब आप देखते कि लोग जमा हो गये हैं तो जल्दी पढ़ लेते और जब उन्हें देखते कि उन्होंने देर कर दी है तो ताख़ीर कर देते और सुबह लोग या आप (ﷺ) अन्धेरे में पढ़ते थे।

(सहीह बुख़ारी : 560, 565, अबू दाऊद : 397, नसाई : 1/263)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है कि आपका ज़ुहर की नमाज़ के बारे में ये मामूल था कि आप ज़वाल होते ही निस्फ़ुन्नहार में पढ़ लिया करते थे। लेकिन दूसरी हदीसों की रोशनी में ये बात साबित हो चुकी है कि आपका ये मामूल गर्मी के मौसम में नहीं था। क्योंकि सख़्त गर्मी के मौसम में आप ज़ुहर की नमाज़ कुछ ताख़ीर से पढ़ते थे और इशा की नमाज़ में आप लोगों की सहूलत और उनकी आमद का लिहाज़ करते थे और असर की नमाज़ उस वक़्त पढ़ लेते थे जबकि अभी सूरज की गर्मी और रोशनी में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा होता था। यानी जल्दी पढ़ लेते थे। ख़ुलासा-ए-कलाम ये है कि आप (ﷺ) इशा के सिवा हर नमाज़ वक़्त होते ही पढ़ लेते थे।

(1461) हज़रत मुहम्मद बिन अम्र बिन हसन बिन अली (रह.) बयान करते हैं कि हज्जाज नमाज़ें ताख़ीर से पढ़ता था तो हमने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से पूछा, आगे मज़्कूरा बाला रिवायत बयान है।

وَحَدَّثَنَاهُ عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدٍ، سَمِعَ مُحَمَّدَ بْنَ عَمْرِو بْنِ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ، قَالَ كَانَ الْحَجَّاجُ يُؤَخِّرُ الصَّلَوَاتِ فَسَأَلْنَا جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ بِمِثْلِ حَدِيثِ غُنْدَرٍ .

(1462) सय्यार बिन सलामह (रह.) कहते हैं कि मैंने अपने बाप को हज़रत अबू बरज़ा अस्लमी (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ के बारे में पूछते हुए सुना। शोबा ने पूछा, क्या तूने ख़ुद सुना? उसने कहा, गोया कि मैं अभी सुन रहा हूँ। उसने कहा, मैंने अपने बाप को उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ के बारे में सवाल करते हुए सुना तो उन्होंने बताया कि आप इशा की नमाज़ को आधी रात तक मुअख़्ख़र (लेट) करने की परवाह नहीं करते थे और नमाज़ से पहले सोने और उसके बाद बातचीत करने को पसंद नहीं करते थे। शोबा कहते हैं बाद में मेरी उनसे फिर मुलाक़ात हुई तो मैंने उनसे पूछा तो उन्होंने (सय्यार ने) बताया, आप ज़ुहर की नमाज़ सूरज ढलने पर पढ़ते थे और असर की नमाज़ ऐसे वक़्त में पढ़ते कि इंसान नमाज़ पढ़कर मदीना (की आबादी) के आख़िर पर ऐसे वक़्त में पहुँच जाता जबकि सूरज अभी ज़िन्दा होता था (यानी उसमें रोशनी और हरारत बाक़ी होती थी वो ज़र्द और ठण्डा नहीं होता था) और उन्होंने कहा, मैं नहीं जानता उन्होंने मग़रिब के लिये कौनसा वक़्त बताया

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنِي سَيَّارُ بْنُ سَلاَمَةَ، قَالَ سَمِعْتُ أَبِي يَسْأَلُ أَبَا بَرْزَةَ، عَنْ صَلاَةِ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم - قَالَ - قُلْتُ آنْتَ سَمِعْتَهُ قَالَ فَقَالَ كَأَنَّمَا أَسْمَعُكَ السَّاعَةَ - قَالَ - سَمِعْتُ أَبِي يَسْأَلُهُ عَنْ صَلاَةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ كَانَ لاَ يُبَالِي بَعْضَ تَأْخِيرِهَا - قَالَ يَعْنِي الْعِشَاءَ - إِلَى نِصْفِ اللَّيْلِ وَلاَ يُحِبُّ النَّوْمَ قَبْلَهَا وَلاَ الْحَدِيثَ بَعْدَهَا . قَالَ شُعْبَةُ ثُمَّ لَقِيتُهُ بَعْدُ فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ وَكَانَ يُصَلِّي الظُّهْرَ حِينَ تَزُولُ الشَّمْسُ وَالْعَصْرَ يَذْهَبُ الرَّجُلُ إِلَى أَقْصَى الْمَدِينَةِ وَالشَّمْسُ حَيَّةٌ - قَالَ - وَالْمَغْرِبَ لاَ أَدْرِي أَىَّ حِينٍ ذَكَرَ . قَالَ

ثُمَّ لَقِيتُهُ بَعْدُ فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ وَكَانَ يُصَلِّي الصُّبْحَ فَيَنْصَرِفُ الرَّجُلُ فَيَنْظُرُ إِلَى وَجْهِ جَلِيسِهِ الَّذِي يَعْرِفُ فَيَعْرِفُهُ . قَالَ وَكَانَ يَقْرَأُ فِيهَا بِالسِّتِّينَ إِلَى الْمِائَةِ .

था। शोबा कहते हैं, मैं बाद में फिर सलामह से मिला और उससे पूछा तो उसने बताया, सुबह की नमाज़ ऐसे वक़्त में पढ़ते कि इंसान सलाम फेरकर अपने साथी के चेहरे को देखता जो उसका आशना होता था, तो उसको पहचान लेता और आप उसमें साठ से सौ आयतों तक पढ़ते थे।

(सहीह बुख़ारी : 541, 547, 599, 771, अबू दाऊद : 398, 4849, नसाई : 1/246, 1/262, 1/265, इब्ने माजह : 674)

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَيَّارِ بْنِ سَلاَمَةَ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا بَرْزَةَ، يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لاَ يُبَالِي بَعْضَ تَأْخِيرِ صَلاَةِ الْعِشَاءِ إِلَى نِصْفِ اللَّيْلِ وَكَانَ لاَ يُحِبُّ النَّوْمَ قَبْلَهَا وَلاَ الْحَدِيثَ بَعْدَهَا . قَالَ شُعْبَةُ ثُمَّ لَقِيتُهُ مَرَّةً أُخْرَى فَقَالَ أَوْ ثُلُثِ اللَّيْلِ .

(1463) इमाम शोबा इब्ने सलामह से बयान करते हैं कि मैंने अबू बरज़ा (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बाज़ दफ़ा इशा की नमाज़ आधी रात तक मुअख़्ख़र करने की परवाह नहीं करते थे और उससे पहले सोना और बाद में बातचीत करना पसंद नहीं करते थे। शोबा कहते हैं, फिर मैं उन्हें दोबारा मिला तो उन्होंने कहा, या तिहाई रात तक मुअख़्ख़र करना।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ عَمْرٍو الْكَلْبِيُّ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ سَيَّارِ بْنِ سَلاَمَةَ أَبِي الْمِنْهَالِ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا بَرْزَةَ الأَسْلَمِيَّ، يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُؤَخِّرُ الْعِشَاءَ إِلَى ثُلُثِ اللَّيْلِ وَيَكْرَهُ النَّوْمَ قَبْلَهَا وَالْحَدِيثَ بَعْدَهَا وَكَانَ يَقْرَأُ فِي صَلاَةِ الْفَجْرِ مِنَ الْمِائَةِ إِلَى السِّتِّينَ وَكَانَ يَنْصَرِفُ حِينَ يَعْرِفُ بَعْضُنَا وَجْهَ بَعْضٍ .

(1464) हज़रत अबू मिन्हाल सय्यार बिन सलामह (रह.) कहते हैं कि मैंने अबू बरज़ा अस्लमी (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इशा को तिहाई रात तक मुअख़्ख़र कर देते थे और उससे पहले सोना और बाद में बातचीत करना, नापसंद करते थे और सुबह की नमाज़ में सौ से लेकर साठ आयतों तक पढ़ते थे और ऐसे वक़्त में सलाम फेरते थे कि लोग एक-दूसरे के चेहरे पहचान लेते थे।

फ़ायदा : इशा की नमाज़ से पहले इस तरह सोना कि नमाज़ बाजमाअत निकल जाये या उसका वक़्ते मुख़्तार निकल जाये, जाइज़ नहीं। लेकिन अगर इंसान बेदार होकर जमाअत के साथ मिल सके या किसी मजबूरी की बिना पर इन्फ़िरादी तौर पर पढ़नी हो तो वक़्ते मुख़्तार में पढ़ ले तो फिर इसमें कोई हर्ज नहीं है। इसी तरह इशा के बाद किसी दीनी व दुनियवी ज़रूरत बातचीत में मशग़ूल हो जाये और उसके मामूलात तहज्जुद या कम से कम फ़ज्र की नमाज़ मुतास्सिर न हो तो इसमें भी कोई हर्ज नहीं। लेकिन फ़िज़ूल और बिला मक़सद बातचीत या नाविल और अफ़साने का मुतालआ, टीवी देखना, जिनसे इशा की नमाज़ भी फ़ौत हो जाती है, दुरुस्त नहीं है।

बाब :42 वक़्ते मुख़्तार (मुतअय्यन वक़्त) से नमाज़ को मुअख़्ख़र (ताख़ीर) करना मक्रूह है और अगर इमाम नमाज़ मुअख़्ख़र करे तो मुक़्तदी को क्या करना चाहिये

باب كَرَاهِيَةِ تَأْخِيرِ الصَّلاَةِ عَنْ وَقْتِهَا الْمُخْتَارِ وَمَا يَفْعَلُهُ الْمَأْمُومُ إِذَا أَخَّرَهَا الإِمَامُ

حَدَّثَنَا خَلَفُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنِي أَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، وَأَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ قَالاَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ " كَيْفَ أَنْتَ إِذَا كَانَتْ عَلَيْكَ أُمَرَاءُ يُؤَخِّرُونَ الصَّلاَةَ عَنْ وَقْتِهَا أَوْ يُمِيتُونَ الصَّلاَةَ عَنْ وَقْتِهَا " . قَالَ قُلْتُ فَمَا تَأْمُرُنِي قَالَ " صَلِّ الصَّلاَةَ لِوَقْتِهَا فَإِنْ أَدْرَكْتَهَا مَعَهُمْ فَصَلِّ فَإِنَّهَا لَكَ نَافِلَةٌ " . وَلَمْ يَذْكُرْ خَلَفٌ عَنْ وَقْتِهَا .

(1465) हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम क्या करोगे जब तुम्हारे हुक्मरान ऐसे लोग होंगे जो नमाज़ को उसके वक़्ते (मुख़्तार) से ताख़ीर करके पढ़ेंगे या नमाज़ को उसके वक़्त से निकालकर मार डालेंगे? तो मैंने अर्ज़ किया, तो आप (ﷺ) का मेरे लिये क्या हुक्म है? आपने फ़रमाया, 'नमाज़ अपने वक़्त पर पढ़ लो और अगर दोबारा उनके साथ नमाज़ पाओ तो पढ़ लो, वो तेरे लिये नफ़ल हो जायेगी।' ख़लफ़ ने अन वक़्तिहा का लफ़्ज़ बयान नहीं किया।

(अबूदाऊद: 431, तिर्मिज़ी: 176, इब्ने माजह : 1256)

फ़वाइद : (1) नमाज़ अपने वक़्ते मुख़्तार में सुकून व इत्मीनान के साथ ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ को क़ायम रख कर पढ़ना, नमाज़ को ज़िन्दा रखना है यानी नमाज़ की रूह और मक़सद को मल्हूज़ रखना

और नमाज़ को बिला उ़ज़्र व मजबूरी वक़्त के ख़त्म होने के बाद या वक़्ते आख़िर में पढ़ना या उसमें बेपरवाई और नीम दिली (उकताहट) का मुज़ाहिरा करना, जल्दी-जल्दी बिला सुकून व ऐतदाल ठोंगे लगाना नमाज़ की रूह और उसके मक़सद को ज़ाया करके उसको मार डालना है। (2) अगर किसी इमाम का ये वतीरा और आदत हो कि वो नमाज़ हमेशा वक़्ते मुख़्तार के बाद या वक़्त के आख़िर में या वक़्त निकलने के बाद पढ़ाता है तो नमाज़ इन्फ़िरादी तौर पर या जमाअ़ती जैसे मुम्किन हो पढ़ लेनी चाहिये। अगर फ़ित्ना व फ़साद का ख़तरा हो तो दोबारा जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ लेनी चाहिये। ये दूसरी नमाज़ नफ़्ल होगी और आ़म तौर पर उमरा (हुक्मरान) ये ताख़ीर, ज़ुहर और अ़सर की नमाज़ में रवा रखते थे। इसलिये ये कहना कि अ़सर की नमाज़ दोबारा नहीं पढ़ी जा सकती क्योंकि अ़सर के बाद नफ़्ल नहीं है, दुरुस्त नहीं है। क्योंकि अपनी ख़ुशी से नहीं पढ़े जा रहे हैं, एक मजबूरी और ज़रूरत के तहत पढ़े जा रहे हैं। बिला सबब अ़सर के बाद नफ़्ल पढ़ना जाइज़ नहीं। (3) इस हदीस़ से ये भी स़ाबित हुआ कि बाद वाली नमाज़ नफ़्ल होगी और पहले पढ़ी हुई नमाज़ फ़र्ज़ होगी।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَا أَبَا ذَرٍّ إِنَّهُ سَيَكُونُ بَعْدِي أُمَرَاءُ يُمِيتُونَ الصَّلاَةَ فَصَلِّ الصَّلاَةَ لِوَقْتِهَا فَإِنْ صَلَّيْتَ لِوَقْتِهَا كَانَتْ لَكَ نَافِلَةً وَإِلاَّ كُنْتَ قَدْ أَحْرَزْتَ صَلاَتَكَ " .

(1466) हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ अबू ज़र! मेरे बाद ऐसे हुक्मरान आयेंगे जो नमाज़ को मार डालेंगे तो तुम नमाज़ उसके वक़्त पर पढ़ लेना। पस अगर तुमने (दोबारा उनके साथ) वक़्त पर नमाज़ पढ़ ली तो तुम्हारी नमाज़ नफ़्ल हो जायेगी, वरना (अगर वो वक़्त पर न पढ़े) तो तुमने अपनी नमाज़ को बचा लिया।'

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ إِنَّ خَلِيلِي أَوْصَانِي أَنْ أَسْمَعَ وَأُطِيعَ وَإِنْ كَانَ عَبْدًا مُجَدَّعَ الأَطْرَافِ وَأَنْ أُصَلِّيَ الصَّلاَةَ لِوَقْتِهَا " فَإِنْ أَدْرَكْتَ الْقَوْمَ وَقَدْ صَلَّوْا كُنْتَ قَدْ أَحْرَزْتَ صَلاَتَكَ وَإِلاَّ كَانَتْ لَكَ نَافِلَةً " .

(1467) हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) बयान करते हैं कि मेरे ख़लील ने मुझे सुनने और मानने की तल्क़ीन की, अगरचे हुक्मरान कटे हुए आ़ज़ा वाला हो और ये कि मैं नमाज़ वक़्त पर पढ़ूँ। फिर अगर लोगों को पाऊँ उन्होंने नमाज़ (वक़्त के बाद पढ़ी है) तो तुमने अपनी नमाज़ को बचा लिया, वरना (अगर उन्होंने वक़्त के अंदर पढ़ ली) तो तेरी ये नमाज़ नफ़्ली हो जायेगी।'

फ़ायदा : हुक्मरान कैसा भी हो उसकी जाइज़ बात सुननी और माननी चाहिये। अपने इरादे और इख़्तियार से किसी आज़ा बुरीदा या गुलाम को हुक्मरान नहीं बनाया जा सकता। लेकिन अगर वो ज़बरदस्ती इक़्तिदार हासिल कर ले या ख़लीफ़ा ऐसा हुक्मरान मुक़र्रर कर दे तो उसके जाइज़ अहकाम माने जायेंगे।

وَحَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ بُدَيْلٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا الْعَالِيَةِ، يُحَدِّثُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَضَرَبَ فَخِذِي " كَيْفَ أَنْتَ إِذَا بَقِيتَ فِي قَوْمٍ يُؤَخِّرُونَ الصَّلاَةَ عَنْ وَقْتِهَا " . قَالَ قَالَ مَا تَأْمُرُ قَالَ " صَلِّ الصَّلاَةَ لِوَقْتِهَا ثُمَّ اذْهَبْ لِحَاجَتِكَ فَإِنْ أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ وَأَنْتَ فِي الْمَسْجِدِ فَصَلِّ " .

(1468) हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरी रान पर हाथ मार कर फ़रमाया, 'तुम्हारी क्या हालत होगी जब तुम ऐसे लोगों में रह जाओगे जो नमाज़ को उसके वक़्त के बाद पढ़ेंगे?' तो उन्होंने पूछा, आपका क्या हुक्म है? आपने फ़रमाया, 'नमाज़ उसके वक़्त में पढ़ लो। फिर अपनी ज़रूरत के लिये चले जाओ, अगर तेरी मस्जिद में मौजूदगी में तकबीर शुरू हो जाये तो पढ़ लो।'

(नसाई : 2/75, 858)

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ الْبَرَّاءِ، قَالَ أَخَّرَ ابْنُ زِيَادٍ الصَّلاَةَ فَجَاءَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الصَّامِتِ فَأَلْقَيْتُ لَهُ كُرْسِيًّا فَجَلَسَ عَلَيْهِ فَذَكَرْتُ لَهُ صَنِيعَ ابْنِ زِيَادٍ فَعَضَّ عَلَى شَفَتِهِ وَضَرَبَ فَخِذِي وَقَالَ إِنِّي سَأَلْتُ أَبَا ذَرٍّ كَمَا سَأَلْتَنِي فَضَرَبَ فَخِذِي كَمَا ضَرَبْتُ فَخِذَكَ وَقَالَ إِنِّي سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَمَا سَأَلْتَنِي فَضَرَبَ فَخِذِي كَمَا ضَرَبْتُ فَخِذَكَ وَقَالَ "

(1469) हज़रत अबू आलिया बर्राअ (रह) से रिवायत है कि इब्ने ज़ियाद ने नमाज़ में ताख़ीर कर दी और मेरे पास अब्दुल्लाह बिन सामित तशरीफ़ लाये। मैंने उन्हें कुर्सी पेश की वो उस पर बैठ गये। मैंने उन्हें इब्ने ज़ियाद की हरकत से आगाह किया तो उन्होंने अपना होंट काटा और मेरी रान पर हाथ मारा और कहा, जिस तरह तूने मुझसे पूछा है उस तरह मैंने अबू ज़र (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने मेरी रान पर हाथ मारा जिस तरह मैंने तेरी रान पर हाथ मारा है और कहा, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा था, जिस तरह तूने मुझसे पूछा है तो आप (ﷺ) ने मेरी रान पर हाथ मारा जिस तरह मैंने तेरी रान पर हाथ मारा है

صَلِّ الصَّلاَةَ لِوَقْتِهَا فَإِنْ أَدْرَكَتْكَ الصَّلاَةُ مَعَهُمْ فَصَلِّ وَلاَ تَقُلْ إِنِّي قَدْ صَلَّيْتُ فَلاَ أُصَلِّي " .

और फ़रमाया, 'नमाज़ वक़्त पर पढ़ो, फिर अगर उनके साथ नमाज़ पढ़ने का मौक़ा मिले या उनके पास मौजूद होते हुए नमाज़ तुम्हें पा ले और ये न कहो मैंने नमाज़ पढ़ ली है इसलिये मैं नहीं पढ़ता।'

وَحَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ النَّضْرِ التَّيْمِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي نَعَامَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ قَالَ " كَيْفَ أَنْتُمْ - أَوْ قَالَ كَيْفَ أَنْتَ - إِذَا بَقِيتَ فِي قَوْمٍ يُؤَخِّرُونَ الصَّلاَةَ عَنْ وَقْتِهَا فَصَلِّ الصَّلاَةَ لِوَقْتِهَا ثُمَّ إِنْ أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَصَلِّ مَعَهُمْ فَإِنَّهَا زِيَادَةُ خَيْرٍ " .

(1470) हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से रिवायत है कि आपने फ़रमाया, 'तुम्हारी क्या हालत होगी।' या आपने फ़रमाया, 'तेरी क्या हालत होगी जब तुम ऐसे लोगों में रह जाओगे, जो नमाज़ को उसके वक़्त से मुअख़्ख़र कर लेंगे। तुम नमाज़ उसके वक़्त पर पढ़ लेना, फिर अगर नमाज़ खड़ी कर दी जाये तो उनके साथ पढ़ लेना, क्योंकि उसमें नेकी में इज़ाफ़ा है।'

وَحَدَّثَنِي أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ، حَدَّثَنَا مُعَاذٌ، - وَهُوَ ابْنُ هِشَامٍ - حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ مَطَرٍ، عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ الْبَرَّاءِ، قَالَ قُلْتُ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ نُصَلِّي يَوْمَ الْجُمُعَةِ خَلْفَ أُمَرَاءَ فَيُؤَخِّرُونَ الصَّلاَةَ - قَالَ - فَضَرَبَ فَخِذِي ضَرْبَةً أَوْجَعَتْنِي وَقَالَ سَأَلْتُ أَبَا ذَرٍّ عَنْ ذَلِكَ فَضَرَبَ فَخِذِي وَقَالَ سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ " صَلُّوا الصَّلاَةَ لِوَقْتِهَا وَاجْعَلُوا صَلاَتَكُمْ مَعَهُمْ نَافِلَةً " . قَالَ وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ ذُكِرَ لِي أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ضَرَبَ فَخِذَ أَبِي ذَرٍّ .

(1471) हज़रत अबू आलिया बर्राअ (रह.) से रिवायत है कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन सामित से पूछा कि हम जुम्आ के दिन हुक्मरानों की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ते हैं और वो नमाज़ को मुअख़्ख़र (लेट) कर देते हैं तो उन्होंने मेरी रान पर इस ज़ोर से हाथ मारा कि मुझे तकलीफ़ महसूस हुई और कहा, मैंने इसके बारे में अबू ज़र (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने मेरी रान पर हाथ मारा और कहा, मैंने यही सवाल रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया था तो आपने फ़रमाया, 'नमाज़ उसके वक़्त पर पढ़ो और हुक्मरानों के साथ अपनी नमाज़ को नफ़ली क़रार दो।' अ़ब्दुल्लाह ने बताया, मुझे बताया गया कि नबी (ﷺ) ने अबू ज़र (रज़ि.) की रान पर हाथ मारा था।

फ़ायदा : इन तमाम रिवायतों से ये बात साबित होती है कि नमाज़े असर जल्दी पढ़नी चाहिये, अगर इमामे वक़्त ताख़ीर करे तो नमाज़ अपने वक़्त पर पढ़ लेनी चाहिये और जमाअत के साथ दोबारा नमाज़ पढ़नी पड़े तो उसको दोबारा पढ़ लेना चाहिये। लेकिन उसकी ख़ातिर वक़्त पर नमाज़ पढ़ने को छोड़ना नहीं चाहिये या दोबारा बाजमाअत पढ़ने से गुरेज़ के लिये, पहली नमाज़ को बहाना नहीं बनाना चाहिये, न इस बात को बहाना बनाना चाहिये कि असर के बाद नफ़ल नहीं होते क्योंकि सबब और ज़रूरत की बिना पर असर के बाद नफ़ल नमाज़ पढ़ना जाइज़ है जैसाकि इन रिवायतों से साबित हो रहा है।

बाब 43 : नमाज़ बाजमाअत की फ़ज़ीलत और उससे पीछे रहने पर शिद्दत और ये कि वो फ़र्ज़े किफ़ाया है

باب فَضْلِ صَلاَةِ الْجَمَاعَةِ وَبَيَانِ التَّشْدِيدِ فِي التَّخَلُّفِ عَنْهَا

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " صَلاَةُ الْجَمَاعَةِ أَفْضَلُ مِنْ صَلاَةِ أَحَدِكُمْ وَحْدَهُ بِخَمْسَةٍ وَعِشْرِينَ جُزْءًا " .

(1472) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बाजमाअत नमाज़ पढ़ना तुम्हारे अकेले नमाज़ पढ़ने से पच्चीस गुना अफ़ज़ल है।'
(तिर्मिज़ी : 216, नसाई : 2/103)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " تَفْضُلُ صَلاَةٌ فِي الْجَمِيعِ عَلَى صَلاَةِ الرَّجُلِ وَحْدَهُ خَمْسًا وَعِشْرِينَ دَرَجَةً " . قَالَ " وَتَجْتَمِعُ مَلاَئِكَةُ اللَّيْلِ وَمَلاَئِكَةُ النَّهَارِ فِي صَلاَةِ الْفَجْرِ " . قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ اقْرَءُوا إِنْ شِئْتُمْ { وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا}

(1473) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बाजमाअत नमाज़ पढ़ना इंसान के अकेले नमाज़ पढ़ने से पच्चीस दर्जा बेहतर है।' और फ़रमाया, 'रात के फ़रिश्ते और दिन के फ़रिश्ते फ़ज्र की नमाज़ में जमा होते हैं।' अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा, (इसकी ताईद में) अगर तुम चाहो तो ये आयत पढ़ लो, 'फ़ज्र की तिलावत, बिला शुब्हा फ़ज्र की क़िरअत हाज़िरी का वक़्त है।'
(सहीह बुख़ारी : 648)

(1474) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना, आगे मज़्कूरा बाला रिवायत है, सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि उसमें दर्जे का लफ़्ज़ था और इसमें जुज़्अन का लफ़्ज़ है।
(सहीह बुख़ारी : 648)

وَحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ أَخْبَرَنِي سَعِيدٌ، وَأَبُو سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ . بِمِثْلِ حَدِيثِ عَبْدِ الأَعْلَى عَنْ مَعْمَرٍ إِلاَّ أَنَّهُ قَالَ " بِخَمْسٍ وَعِشْرِينَ جُزْءًا " .

(1475) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बाजमाअत नमाज़ पढ़ना, अकेले की पच्चीस नमाज़ों के बराबर है।'

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا أَفْلَحُ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ، عَنْ سَلْمَانَ الأَغَرِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " صَلاَةُ الْجَمَاعَةِ تَعْدِلُ خَمْسًا وَعِشْرِينَ مِنْ صَلاَةِ الْفَذِّ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : अल्फ़ज़्ज़ि : वह्दा यानी अकेले और मुन्फ़रिद के मानी में है।

(1476) हज़रत उमर बिन अता बिन अबी ख़ुवार (रह.) से रिवायत है कि मैं नाफ़ेअ बिन जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) के पास बैठा हुआ था कि इस अस़ना (बीच) में हमारे पास जुहैनियों के आज़ाद करदा ग़ुलाम ज़ैद बिन ज़ब्बान का बहनोई अबू अब्दुल्लाह (रज़ि.) गुज़रा तो उसे नाफ़ेअ (रज़ि.) ने बुलाया तो उसने कहा, मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इमाम के साथ नमाज़ पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने से पच्चीस गुना अफ़ज़ल है।'

حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، وَمُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ عَطَاءِ بْنِ أَبِي الْخُوَارِ، أَنَّهُ بَيْنَا هُوَ جَالِسٌ مَعَ نَافِعِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ إِذْ مَرَّ بِهِمْ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ خَتَنُ زَيْدِ بْنِ زَبَّانٍ مَوْلَى الْجُهَنِيِّينَ فَدَعَاهُ نَافِعٌ فَقَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " صَلاَةٌ مَعَ الإِمَامِ أَفْضَلُ مِنْ خَمْسٍ وَعِشْرِينَ صَلاَةً يُصَلِّيهَا وَحْدَهُ " .

(1477) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बाजमाअत नमाज़ अदा करना अकेले नमाज़ पढ़ने से सत्ताइस गुना अफ़ज़ल है।'
(सहीह बुख़ारी : 645, नसाई : 2/103)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " صَلاَةُ الْجَمَاعَةِ أَفْضَلُ مِنْ صَلاَةِ الْفَذِّ بِسَبْعٍ وَعِشْرِينَ دَرَجَةً " .

फ़ायदा : जिस तरह हमारी इस माद्दी दुनिया में चीज़ों के ख़्वास और असरात में दर्जों का तफ़ावुत है और इस फ़र्क़ और इम्तियाज़ की बिना पर चीज़ों की क़द्रो-क़ीमत और अफ़ादियत में फ़र्क़ पड़ता है। उसी तरह हमारे आमाल में भी दर्जों का फ़र्क़ है और ये इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआला ही को है और अल्लाह के बताने से रसूलुल्लाह (ﷺ) पर उसका इन्किशाफ़ होता है और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नमाज़ बाजमाअत की फ़ज़ीलत अकेले नमाज़ पढ़ने के मुक़ाबले में पच्चीस या सत्ताइस गुना ज़्यादा है। यानी कई बार पच्चीस गुना सवाब ज़्यादा होता है और कई बार सत्ताइस गुना। इस फ़र्क़ की वजह नमाज़ में आने वाले ख़ुलूस, ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ या मसाफ़त की दूरी है या आने वाले की मशग़ूलियत और मशक़्क़त है कि उसने जमाअत के हुसूल के लिये किस क़िस्म का काम छोड़ा है और उसके लिये किस क़द्र तकलीफ़ उठानी पड़ी है या बुलंद क़िरअत वाली नमाज़ों का सवाब सत्ताइस गुना और आहिस्ता क़िरअत वाली का पच्चीस गुना या जिन नमाज़ों में फ़रिश्तों का जमा होना होता है उनका सवाब सत्ताइस गुना और बाक़ी का पच्चीस गुना।

(1478) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'आदमी की जमाअत के साथ नमाज़, उसके अकेले नमाज़ पढ़ने से सत्ताइस गुना बेहतर है।'
(इब्ने माजह : 789)

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، قَالَ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " صَلاَةُ الرَّجُلِ فِي الْجَمَاعَةِ تَزِيدُ عَلَى صَلاَتِهِ وَحْدَهُ سَبْعًا وَعِشْرِينَ " .

(1479) इमाम साहब अपने दो उस्तादों से मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं। इब्ने नुमैर ने अपने बाप से बिज़्अ व इशरीन कहा और अबू बक्र बिन अबी शैबा ने अपनी

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ ح قَالَ وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي قَالاَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، بِهَذَا

الإِسْنَادِ . قَالَ ابْنُ نُمَيْرٍ عَنْ أَبِيهِ، " بِضْعًا وَعِشْرِينَ " . وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ فِي رِوَايَتِهِ " سَبْعًا وَعِشْرِينَ دَرَجَةً " .

रिवायत में बिज़्अ की बजाए सब्आ कहा यानी बिज़्अ की तअयीन कर दी कि इससे मुराद सात है।

وَحَدَّثَنَاهُ ابْنُ رَافِعٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، أَخْبَرَنَا الضَّحَّاكُ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " بِضْعًا وَعِشْرِينَ " .

(1480) इमाम साहब मज़्कूरा बाला रिवायत एक और उस्ताद से इन अल्फ़ाज़ में नक़ल करते हैं कि नबी (ﷺ) ने बिज़्आ व इशरीन बीस से कुछ ज़्यादा फ़रमाया।

وَحَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَدَ نَاسًا فِي بَعْضِ الصَّلَوَاتِ فَقَالَ " لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ رَجُلاً يُصَلِّي بِالنَّاسِ ثُمَّ أُخَالِفَ إِلَى رِجَالٍ يَتَخَلَّفُونَ عَنْهَا فَآمُرَ بِهِمْ فَيُحَرِّقُوا عَلَيْهِمْ بِحُزَمِ الْحَطَبِ بُيُوتَهُمْ وَلَوْ عَلِمَ أَحَدُهُمْ أَنَّهُ يَجِدُ عَظْمًا سَمِينًا لَشَهِدَهَا " . يَعْنِي صَلاَةَ الْعِشَاءِ .

(1481) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कुछ लोगों को किसी नमाज़ में गुम पाया तो फ़रमाया, 'मैंने इरादा किया कि किसी आदमी को लोगों की इमामत करवाने का हुक्म दूँ, फिर मैं उन लोगों की तरफ़ जाऊँ जो नमाज़ से पीछे रहते हैं और उनके बारे में हुक्म दूँ कि उनको उनके घरों समेत लकड़ियों के गट्ठों से जला दिया जाये और उनमें से किसी को अगर यक़ीन हो कि नमाज़ में हाज़िरी से उसे गोश्त से भरपूर हड्डी मिलेगी तो वो उसमें हाज़िर हो जायेगा।' आप (ﷺ) की मुराद इशा की नमाज़ है।

मुफ़रदातुल हदीस : (1) उख़ालिफ़ु इला रिजाल : उन लोगों की तरफ़ जाऊँ। **(2) अज़्मन समीनन :** मोटी-ताज़ी हड्डी।

حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ - وَاللَّفْظُ لَهُمَا - قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ

(1482) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुनाफ़िक़ों के लिये सबसे भारी और दुश्वार नमाज़ इशा और फ़ज्र की नमाज़ है। अगर उन लोगों को इनकी ख़ैर व बरकत और सवाब

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ أَثْقَلَ صَلاَةٍ عَلَى الْمُنَافِقِينَ صَلاَةُ الْعِشَاءِ وَصَلاَةُ الْفَجْرِ وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِيهِمَا لأَتَوْهُمَا وَلَوْ حَبْوًا وَلَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ بِالصَّلاَةِ فَتُقَامَ ثُمَّ آمُرَ رَجُلاً فَيُصَلِّيَ بِالنَّاسِ ثُمَّ أَنْطَلِقَ مَعِي بِرِجَالٍ مَعَهُمْ حُزَمٌ مِنْ حَطَبٍ إِلَى قَوْمٍ لاَ يَشْهَدُونَ الصَّلاَةَ فَأُحَرِّقَ عَلَيْهِمْ بُيُوتَهُمْ بِالنَّارِ " .

का यक़ीन हो जाये तो उनके लिये ज़रूर आयें अगरचे उन्हें घुटनों के बल चलकर आना पड़े और मैंने इरादा किया, मैं नमाज़ खड़ी करने का हुक्म दूँ, फिर किसी आदमी को कहूँ वो लोगों को जमाअत कराये, फिर मैं कुछ मर्दों को साथ लेकर जाऊँ जिनके पास लकड़ियों के गट्ठे हों तो उन लोगों को जो नमाज़ में हाज़िर नहीं होते उनके घरों समेत जला दूँ।'
(इब्ने माजह : 797)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ فِتْيَانِي أَنْ يَسْتَعِدُّوا لِي بِحُزَمٍ مِنْ حَطَبٍ ثُمَّ آمُرَ رَجُلاً يُصَلِّي بِالنَّاسِ ثُمَّ تُحَرَّقُ بُيُوتٌ عَلَى مَنْ فِيهَا " .

(1483) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैंने इरादा किया कि अपने जवानों को हुक्म दूँ कि वो मेरे लिये लकड़ी के गट्ठे तैयार करें, फिर किसी आदमी को लोगों को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दूँ, फिर घरों को उनमें मौजूद लोगों समेत जला दूँ।'

وَحَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَبُو كُرَيْبٍ وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ وَكِيعٍ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ بُرْقَانَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ الأَصَمِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . بِنَحْوِهِ .

(1484) यज़ीद बिन असम ने भी अबू हुरैरह (रज़ि.) से नबी (ﷺ) की मज़्कूरा बाला हदीस़ की हम मानी हदीस़ बयान की है।
(अबू दाऊद : 549, तिर्मिज़ी : 217)

وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، سَمِعَهُ مِنْهُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى

(1485) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन लोगों के बारे में जो जुम्आ से पीछे रह जाते हैं फ़रमाया, 'मैंने इरादा किया कि किसी

الله عليه وسلم قَالَ لِقَوْمٍ يَتَخَلَّفُونَ عَنِ الْجُمُعَةِ " لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ رَجُلاً يُصَلِّي بِالنَّاسِ ثُمَّ أُحَرِّقَ عَلَى رِجَالٍ يَتَخَلَّفُونَ عَنِ الْجُمُعَةِ بُيُوتَهُمْ " .

आदमी को लोगों को जमाअत कराने का हुक्म दूँ, फिर उन लोगों को जो जुम्आ से पीछे रहते हैं, उनके घरों समेत जला दूँ।'

फ़वाइद : (1) अहादीसे मज़्कूरा बाला (पिछली हदीसों) से साबित होता है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन लोगों के बारे में जो बिला सबब और उ़ज़्र नमाज़ में हाज़िर नहीं होते फ़रमाया, ये मफ़ाद परस्त लोग हैं। क्योंकि आप (ﷺ) के दौर में सिर्फ़ मुनाफ़िक़ ही इशा और फ़ज्र की नमाज़ों में ख़ुसूसी तौर पर शरीक नहीं होते थे। क्योंकि उस दौर में नमाज़ में रोशनी का इन्तिज़ाम न होने की बिना पर अन्धेरे में होती थीं और उनका पोशीदा रह जाना मुम्किन था। उनके निफ़ाक़ की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया, अगर उनको इन नमाज़ों की ख़ैर व बरकत और अज्र व सवाब का यक़ीन हो या उनको इस बात का इल्म हो कि उनको गोश्त से भरपूर हड्डी मिलेगी तो ये नमाज़ में मशक़्क़त और दुश्वारी बर्दाश्त करते हुए घुटनों के बल चलकर आयें। **(2)** जो लोग जमाअत में हाज़िर नहीं होते थे, आप (ﷺ) ने उनके बारे में पुख़्ता इरादा फ़रमाया कि उन लोगों समेत उनके घरों को आग से जला दें, लेकिन फिर आप (ﷺ) ने अपने इरादे पर सिर्फ़ इसलिये अ़मल न किया कि घरों में औरतें और बच्चे भी होते हैं और उनके लिये जमाअत ज़रूरी नहीं है और न ये मस्जिद में आने के पाबंद हैं। **(3)** वो रिवायात जिनसे ये बात साबित होती है कि मुन्फ़रिद को एक दर्जा सवाब मिलता है, उनसे साबित होता है बिला उ़ज़्र और बिला सबब जमाअत तर्क करने वाले की नमाज़ तो हो जायेगी लेकिन वो गुनाहगार होगा। उसको नमाज़ दोहराने की ज़रूरत नहीं है। **(4)** जमाअत के फ़र्ज़े ऐन होने के बारे में इख़्तिलाफ़ है। हन्फ़ियों, मालिकियों और शाफ़इयों की अक्सरियत, नमाज़ बजमाअत को सुन्नते मुअक्कदा क़रार देती है लेकिन इन हज़रात में से कुछ लोग जमाअत को फ़र्ज़े किफ़ाया क़रार देते हैं कि अगर कुछ लोग इस फ़र्ज़ को अदा कर लें तो बाक़ी के ज़िम्मे से साक़ित हो जायेगा। इस वजह से अहनाफ़ और शवाफ़ेअ के नज़दीक अगर किसी बस्ती के सारे बाशिन्दे जमाअत से नमाज़ न पढ़ें तो उनसे जंग की जायेगी। हनाबिला और मुहद्दिसीन के नज़दीक बाजमाअत नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़े ऐन है यानी हर शख़्स की इन्फ़िरादी और शख़्सी ज़िम्मेदारी है कि वो जुम्आ और जमाअत में शरीक हो।

ज़ाहिर यूँ है और इमाम इब्ने तैमिया (रह.) के नज़दीक नमाज़ की सेहत व दुरुस्तगी के लिये जमाअत शर्त है। जो जमाअत में शरीक नहीं होता उसकी नमाज़ नहीं होती। अहादीस का तक़ाज़ा यही है कि इंसान को जमाअत में शरीक होना चाहिये, बिला सबब और बिला उ़ज़्र जमाअत से महरूम होना,

निफ़ाक़े अमली की निशानी है। ख़ैर व बरकत और अज्र व सवाब से महरूमी है और उसको आदत और वतीरा बना लेने की सूरत में ख़तरा है कि शायद ऐसे इंसान की नमाज़ ही न हो।

باب يَجِبُ إِتْيَانُ الْمَسْجِدِ عَلَى مَنْ سَمِعَ النِّدَاءَ

बाब 44 : अज़ान सुनने वाले के लिये (जमाअत के लिये) मस्जिद में आना ज़रूरी है

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَسُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، وَيَعْقُوبُ الدَّوْرَقِيُّ، كُلُّهُمْ عَنْ مَرْوَانَ الْفَزَارِيِّ، - قَالَ قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا الْفَزَارِيُّ، - عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ الأَصَمِّ، قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ الأَصَمِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ أَتَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم رَجُلٌ أَعْمَى فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُ لَيْسَ لِي قَائِدٌ يَقُودُنِي إِلَى الْمَسْجِدِ . فَسَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنْ يُرَخِّصَ لَهُ فَيُصَلِّيَ فِي بَيْتِهِ فَرَخَّصَ لَهُ فَلَمَّا وَلَّى دَعَاهُ فَقَالَ " هَلْ تَسْمَعُ النِّدَاءَ بِالصَّلاَةِ " . فَقَالَ نَعَمْ . قَالَ " فَأَجِبْ " .

(1486) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) की ख़िदमत में एक नाबीना आदमी हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे मस्जिद में लाने वाला कोई आदमी नहीं है । तो उसने रसूलुल्लाह (ﷺ) से दरख़्वास्त की कि उसे अपने घर में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त मरहमत फ़रमायें। तो आपने उसको इजाज़त दे दी । जब उसने पुश्त फेर ली तो आपने उसे बुलाया और फ़रमाया, 'क्या तुम नमाज़ के लिये बुलावा सुनते हो? उसने अर्ज़ किया, जी हाँ! आपने फ़रमाया, 'तो उसे क़ुबूल करो (यानी नमाज़ के लिये आओ) ।'

(नसाई 2/63)

फ़ायदा : हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की इस हदीस़ का तक़ाज़ा और मफ़ाद यही है कि उस इंसान को नमाज़ बाजमाअत का एहतिमाम करना चाहिये जो मस्जिद में आ सकता है । अगरचे उसे नाबीना आदमी की तरह मेहनत व मशक़्क़त बर्दाश्त करके आना पड़े, अगर जमाअत छोड़ने की रुख़सत मिल सकती तो नाबीना इंसान जिसको लाने वाला भी मौजूद न हो, इसका सबसे ज़्यादा हक़दार था और आप (ﷺ) ने उसको भी इजाज़त नहीं दी ।

बाब 45 : जमाअत के लिये हाज़िर होना ही हिदायत की राह है

باب صَلاَةُ الْجَمَاعَةِ مِنْ سُنَنِ الْهُدَى

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ أَبِي زَائِدَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عُمَيْرٍ، عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، قَالَ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ لَقَدْ رَأَيْتُنَا وَمَا يَتَخَلَّفُ عَنِ الصَّلاَةِ إِلاَّ مُنَافِقٌ قَدْ عُلِمَ نِفَاقُهُ أَوْ مَرِيضٌ إِنْ كَانَ الْمَرِيضُ لَيَمْشِي بَيْنَ رَجُلَيْنِ حَتَّى يَأْتِيَ الصَّلاَةَ - وَقَالَ - إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَّمَنَا سُنَنَ الْهُدَى وَإِنَّ مِنْ سُنَنِ الْهُدَى الصَّلاَةَ فِي الْمَسْجِدِ الَّذِي يُؤَذَّنُ فِيهِ .

(1487) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने सहाबा किराम (रज़ि.) को देखा कि नमाज़ से किसी ऐसे शख़्स के सिवा कोई पीछे न रहता जो मुनाफ़िक़ होता था और उसके निफ़ाक़ का सब को पता था या बीमार होता था। ऐसा बीमार भी नमाज़ के लिये आता था जो दो आदमियों के सहारे चल सकता था। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें हिदायत के तरीक़ों की तालीम दी और हिदायत के तरीक़ों में से ये भी है कि नमाज़ ऐसी मस्जिद में आकर पढ़ी जाये जिसमें अज़ान दी जाती है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ دُكَيْنٍ، عَنْ أَبِي الْعُمَيْسِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ الأَقْمَرِ، عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَلْقَى اللَّهَ غَدًا مُسْلِمًا فَلْيُحَافِظْ عَلَى هَؤُلاَءِ الصَّلَوَاتِ حَيْثُ يُنَادَى بِهِنَّ فَإِنَّ اللَّهَ شَرَعَ لِنَبِيِّكُمْ صلى الله عليه وسلم سُنَنَ الْهُدَى وَإِنَّهُنَّ مِنْ سُنَنِ

(1488) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने फ़रमाया, 'जिस इंसान को ये बात पसंद हो कि कल क़यामत के दिन उसकी अल्लाह तआला से मुलाक़ात मुसलमान होने की सूरत में हो, वो इन नमाज़ों की पाबंदी (एहतिमाम) उन जगहों में करे जहाँ उनके लिये बुलाया जाता है। यानी नमाज़ बाजमाअत अदा करे, क्योंकि अल्लाह तआला ने तुम्हारे नबी के लिये हिदायत के तरीक़े मुक़र्रर कर दिये हैं और नमाज़ों का एहतिमाम हिदायत के तरीक़ों में से है। यानी हिदायत का राहे अमल यही है और अगर तुम

الْهُدَى وَلَوْ أَنَّكُمْ صَلَّيْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ كَمَا يُصَلِّي هَذَا الْمُتَخَلِّفُ فِي بَيْتِهِ لَتَرَكْتُمْ سُنَّةَ نَبِيِّكُمْ وَلَوْ تَرَكْتُمْ سُنَّةَ نَبِيِّكُمْ لَضَلَلْتُمْ وَمَا مِنْ رَجُلٍ يَتَطَهَّرُ فَيُحْسِنُ الطُّهُورَ ثُمَّ يَعْمِدُ إِلَى مَسْجِدٍ مِنْ هَذِهِ الْمَسَاجِدِ إِلاَّ كَتَبَ اللَّهُ لَهُ بِكُلِّ خَطْوَةٍ يَخْطُوهَا حَسَنَةً وَيَرْفَعُهُ بِهَا دَرَجَةً وَيَحُطُّ عَنْهُ بِهَا سَيِّئَةً وَلَقَدْ رَأَيْتُنَا وَمَا يَتَخَلَّفُ عَنْهَا إِلاَّ مُنَافِقٌ مَعْلُومُ النِّفَاقِ وَلَقَدْ كَانَ الرَّجُلُ يُؤْتَى بِهِ يُهَادَى بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ حَتَّى يُقَامَ فِي الصَّفِّ .

नमाज़ घरों में पढ़ोगे जैसाकि ये जमाअ़त से पीछे रहने वाला अपने घर में पढ़ता है तो तुम अपने नबी की राह छोड़ दोगे और अगर तुम अपने नबी के रास्ते को छोड़ दोगे तो गुमराह हो जाओगे। जो आदमी भी पाकीज़गी हासिल करता है और अच्छी तरह वुज़ू करता है फिर उन मस्जिदों में से किसी मस्जिद का रुख़ करता है तो अल्लाह तआ़ला उसके हर क़दम के बदले एक नेकी लिखता है और एक दर्जा बुलंद फ़रमाता है और उसका एक गुनाह मिटा देता है और मैंने अपने साथियों को पाया कि हममें से कोई एक भी जमाअ़त से पीछे न रहता था सिवाय ऐसे मुनाफ़िक़ के जिसका निफ़ाक़ सबको मालूम था। एक आदमी को दो आदमियों के सहारे लाकर सफ़ में खड़ा किया जाता था।

(अबू दाऊद : 550, नसाई : 2/108-109)

फ़वाइद : (1) नबी (ﷺ) के ख़ूबसूरत दौर में तमाम सहाबए किराम (रज़ि.) जमाअ़त का एहतिमाम करते थे, कोई भी सहीह मुसलमान जमाअ़त से पीछे रहने का तसव्वुर नहीं करता यहाँ तक कि बीमार होने की सूरत में अगर इंसान दो आदमियों के सहारे चलकर मस्जिद पहुँच सकता था तो वो इसका भी इन्तिज़ाम करते थे और बीमारी को बहाना बनाकर बीमारी की शिद्दत में भी जमाअ़त से पीछे नहीं रहते थे। सिर्फ़ ऐसे लोग ही पीछे रहते थे जिनका निफ़ाक़ मअ़रूफ़ व मशहूर था या वो ऐसे बीमार होते कि दो आदमियों के सहारे चलकर भी नहीं आ सकते थे। इसलिये आप (ﷺ) ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रज़ि.) को नाबीना होने के बावजूद जमाअ़त से पीछे रहने की इजाज़त नहीं दी थी। **(2)** बक़ौल अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) जमाअ़त का एहतिमाम करना, मुसलमान की अ़लामत व शनाख़्त है और हिदायत का रास्ता इख़्तियार करना है। **(3)** जमाअ़त की हाज़िरी की ख़ातिर मस्जिद में जाने वाले को हर क़दम के बदले एक नेकी मिलती है, एक बुराई मिटती है और उसका एक दर्जा बुलंद होता है और जमाअ़त से पीछे रहने वाला इन तीनों ख़ैरात व बरकात से महरूम रहता है।

(4) जमाअ़त से पीछे रहना मुनाफ़िक़ की अ़लामत है और एक मुसलमान को हर हालत में इस धब्बे से महफ़ूज़ रहने की कोशिश करनी चाहिये अगर एक नाबीना आदमी को घर में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त नहीं है तो आँखों वाला किस तरह घर में नमाज़ पढ़ सकता है।

बाब 46 : अज़ान के बाद मस्जिद से निकलकर जाना जाइज़ नहीं

باب النَّهْىِ عَنِ الْخُرُوجِ، مِنَ الْمَسْجِدِ إِذَا أَذَّنَ الْمُؤَذِّنُ

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْمُهَاجِرِ، عَنْ أَبِي الشَّعْثَاءِ، قَالَ كُنَّا قُعُودًا فِي الْمَسْجِدِ مَعَ أَبِي هُرَيْرَةَ فَأَذَّنَ الْمُؤَذِّنُ فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْمَسْجِدِ يَمْشِي فَأَتْبَعَهُ أَبُو هُرَيْرَةَ بَصَرَهُ حَتَّى خَرَجَ مِنَ الْمَسْجِدِ فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ أَمَّا هَذَا فَقَدْ عَصَى أَبَا الْقَاسِمِ صلى الله عليه وسلم .

(1489) अबू शअ़सा बताते हैं कि हम मस्जिद में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के साथ बैठे हुए थे कि मुअज़्ज़िन ने अज़ान दे दी। तो एक आदमी मस्जिद से उठकर चलने लगा। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने उस पर अपनी नज़रें जमा दीं यहाँ तक कि वो मस्जिद से निकल गया। तो हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा, इस आदमी ने अबुल क़ासिम (ﷺ) की नाफ़रमानी की है।

(अबू दाऊद : 536, तिर्मिज़ी : 204, नसाई : 2/29, इब्ने माजह : 733)

फ़ायदा : जब इंसान मस्जिद में मौजूद हो तो बिला किसी ज़रूरत और बग़ैर किसी उ़ज़्र के जमाअ़त छोड़कर नहीं जाना चाहिये। हाँ अगर किसी को दूसरी जगह जमाअ़त करानी है या मस्जिद में पानी नहीं है और उसे पेशाब व पाख़ाना की हाजत है या वुज़ू करके वापस आने की निय्यत है तो फिर वो मस्जिद से निकल सकता है।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ الْمَكِّيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، - هُوَ ابْنُ عُيَيْنَةَ - عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَشْعَثَ بْنِ أَبِي الشَّعْثَاءِ الْمُحَارِبِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، وَرَأَى، رَجُلاً يَجْتَازُ

(1490) अश्अ़स बिन अबी शअ़सा अपने बाप से बयान करते हैं कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना जबकि उन्होंने एक आदमी को अज़ान के बाद मस्जिद से बाहर निकलते देखा तो उन्होंने ये कहा, रहा ये, तो इसने अबुल क़ासिम (ﷺ) की नाफ़रमानी की है।

الْمَسْجِدَ خَارِجًا بَعْدَ الأَذَانِ فَقَالَ أَمَّا هَذَا فَقَدْ عَصَى أَبَا الْقَاسِمِ صلى الله عليه وسلم .

मुफ़रदातुल हदीस़ : यजताज़ : वो गुज़रता है, रास्ता उ़बूर करता है।

बाब 47 : इशा और सुबह की नमाज़ बाजमाअ़त अदा करने की फ़ज़ीलत

باب فَضْلِ صَلاَةِ الْعِشَاءِ وَالصُّبْحِ فِي جَمَاعَةٍ

(1491) अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी अ़म्रह बयान करते हैं कि हज़रत उ़स़मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) शाम की नमाज़ के बाद मस्जिद में तशरीफ़ लाये और अकेले बैठ गये, मैं भी उनके पास बैठ गया। उन्होंने फ़रमाया, ऐ भतीजे! मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़रमाते हुए सुना, 'जिसने इशा की नमाज़ बाजमाअ़त अदा की तो गोया उसने आधी रात तक क़ियाम किया और जिसने सुबह की नमाज़ भी जमाअ़त के साथ पढ़ी तो गोया उसने सारी रात नवाफ़िल पढ़े।'
(अबू दाऊद : 555, तिर्मिज़ी : 221)

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ سَلَمَةَ الْمَخْزُومِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، - وَهُوَ ابْنُ زِيَادٍ - حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ حَكِيمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي عَمْرَةَ، قَالَ دَخَلَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ الْمَسْجِدَ بَعْدَ صَلاَةِ الْمَغْرِبِ فَقَعَدَ وَحْدَهُ فَقَعَدْتُ إِلَيْهِ فَقَالَ يَا ابْنَ أَخِي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " مَنْ صَلَّى الْعِشَاءَ فِي جَمَاعَةٍ فَكَأَنَّمَا قَامَ نِصْفَ اللَّيْلِ وَمَنْ صَلَّى الصُّبْحَ فِي جَمَاعَةٍ فَكَأَنَّمَا صَلَّى اللَّيْلَ كُلَّهُ " .

(1492) यही रिवायत अबू सहल उ़स़मान बिन हकीम से एक दूसरा रावी भी इसी तरह नक़ल करता है।

وَحَدَّثَنِيهِ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الأَسَدِيُّ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، جَمِيعًا عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي سَهْلٍ، عُثْمَانَ بْنِ حَكِيمٍ بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ .

फ़ायदा : इशा और सुबह की दोनों नमाज़ों को जमाअ़त से अदा करना, इस क़द्र अज्र व स़वाब और ख़ैर व बरकत का बाइ़स़ है कि इंसान अपना अक्स़र हिस्सा आराम और नींद में गुज़ारने के बावजूद पूरी रात की इ़बादत का या डेढ़ रात की इ़बादत का स़वाब पा लेता है।

(1493) हज़रत जुन्दब बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिस शख़्स ने सुबह की नमाज़ पढ़ी, वो अल्लाह तआला की अमान या ज़िम्मेदारी में है तो अल्लाह तआला तुमसे अपनी पनाह में आने वाले के बारे में मुताल्बा न करे, (अगर किसी ने उसकी पनाह में आने वाले को सताया और उसने उसका मुवाख़िज़ा किया) तो वो उसको पकड़ कर जहन्नम में ओंन्धे मुँह डाल देगा।'

وَحَدَّثَنِي نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنَا بِشْرٌ، - يَعْنِي ابْنَ مُفَضَّلٍ - عَنْ خَالِدٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ سِيرِينَ، قَالَ سَمِعْتُ جُنْدَبَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ صَلَّى الصُّبْحَ فَهُوَ فِي ذِمَّةِ اللَّهِ فَلاَ يَطْلُبَنَّكُمُ اللَّهُ مِنْ ذِمَّتِهِ بِشَىْءٍ فَيُدْرِكَهُ فَيَكُبَّهُ فِي نَارِ جَهَنَّمَ " .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) फ़ी ज़िम्मतिल्लाह : वो अल्लाह की अमान और पनाह में है या उसकी ज़मानत और ज़िम्मेदारी में है। **(2) मंय्यत्लुबुहू मिन ज़िम्मतिही बिशैइन :** अगर किसी ने उसकी पनाह और ज़िम्मेदारी को कुछ नुक़सान पहुँचाया, पनाह में आने वाले को कुछ तकलीफ़ पहुँचाकर उसकी अमान में दख़ल अन्दाज़ी की। **(3) युदरिकुहू :** वो उसको पकड़ लेगा, वो मुवाख़िज़े से बच नहीं सकेगा।

(1494) हज़रत जुन्दब क़सरी (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने सुबह की नमाज़ पढ़ ली तो वो अल्लाह के हिफ़्ज़ व अमान में है तो अल्लाह तआला अपनी अमान व ज़िम्मेदारी में आने वाले के बारे में कुछ बिल्कुल ना करे क्योंकि वो जिससे अपनी अमान के बारे में कुछ मुतालबा करेगा वो उसे पकड़ लेगा फिर उसे ओन्धे मुँह जहन्नम की आग में डाल देगा।'

وَحَدَّثَنِيهِ يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ سِيرِينَ، قَالَ سَمِعْتُ جُنْدَبًا الْقَسْرِيَّ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ صَلَّى صَلاَةَ الصُّبْحِ فَهُوَ فِي ذِمَّةِ اللَّهِ فَلاَ يَطْلُبَنَّكُمُ اللَّهُ مِنْ ذِمَّتِهِ بِشَىْءٍ فَإِنَّهُ مَنْ يَطْلُبْهُ مِنْ ذِمَّتِهِ بِشَىْءٍ يُدْرِكْهُ ثُمَّ يَكُبَّهُ عَلَى وَجْهِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ " .

फ़ायदा : जुन्दब क़सरी से मुराद जुन्दब बिन इक्रिमा ही है जो बजली है शायद इनका क़सरी क़बीले से ताल्लुक़ हो या पड़ौसी हो।

(1495) यही रिवायत हसन बसरी जुन्दब (रज़ि.) से बयान करते हैं लेकिन आख़िरी फ़िक़रह यकुब्बहू फ़ी नारि जहन्नम 'उसको

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ هَارُونَ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنِ الْحَسَنِ،

عَنْ جُنْدَبِ بْنِ سُفْيَانَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ م بِهَذَا وَلَمْ يَذْكُرْ " فَيَكُبَّهُ فِي نَارِ جَهَنَّمَ " .

जहन्नम में ओन्धे मुँह फेंक देगा' बयान नहीं करते।

(तिर्मिज़ी : 222)

फ़वाइद : (1) जुन्दब बिन सुफ़ियान भी जुन्दब बिन अ़ब्दुल्लाह बजली है और सुफ़ियान उसका दादा है कभी निस्बत बाप की तरफ़ की गई है और कभी दादा की। (2) सुबह की नमाज़ का एहतिमाम और पाबंदी करना तमाम नमाज़ों की पाबंदी और इंसान के ईमान व इख़्लास की दलील है। इसलिये सुबह की नमाज़ की पाबंदी करने वाला अल्लाह तआ़ला के तहफ़्फ़ुज़ (पनाह) में आ जाता है और उसको किसी क़िस्म का नुक़सान और अज़ियत पहुँचाने वाला, उसके तहफ़्फ़ुज़ और ज़िम्मेदारी को तोड़कर अल्लाह तआ़ला के ग़ैज़ व ग़ज़ब का निशाना बनता है और अपने किये के वबाल से नहीं बच सकता। गोया कि नमाज़ों की हिफ़ाज़त व निगेहदाश्त इंसान के तहफ़्फ़ुज़ और निगेहदाश्त की ज़मानत है और नमाज़ों का तर्क, अपने आपको तहफ़्फ़ुज़ और निगेहदाश्त से महरूम करना है और आज-कल की बदअमनी, दहशतगर्दी, गुण्डागर्दी और दंगा व फ़साद में मुसलमानों के तारिके नमाज़ होने का बहुत ज़्यादा दख़ल है कोई नमाज़ी अल्लाह तआ़ला की अमान और पनाह को तोड़ने की जुरअत नहीं कर सकता।

باب الرُّخْصَةِ فِي التَّخَلُّفِ عَنِ الْجَمَاعَةِ، بِعُذْرٍ

बाब 48 : उ़ज़्र की सूरत में नमाज़ से पीछे रह जाने की इजाज़त

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى التُّجِيبِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّ مَحْمُودَ بْنَ الرَّبِيعِ الأَنْصَارِيَّ، حَدَّثَهُ أَنَّ عِتْبَانَ بْنَ مَالِكٍ وَهُوَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا مِنَ الأَنْصَارِ أَنَّهُ أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي قَدْ أَنْكَرْتُ بَصَرِي وَأَنَا أُصَلِّي لِقَوْمِي وَإِذَا كَانَتِ

(1496) हज़रत इतबान बिन मालिक (रज़ि.) जो उन सहाबा किराम में से हैं जो अन्सार से जंगे बद्र में शरीक हुए थे वो बयान करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी नज़र कमज़ोर हो गई है और मैं अपनी क़ौम को नमाज़ पढ़ाता हूँ और जब बारिशें होती हैं तो मेरे और उनके दरम्यान वाला नाला बहने लगता है जिसकी वजह से मैं उनकी मस्जिद में नहीं पहुँच सकता कि मैं उन्हें नमाज़ पढ़ाऊँ और मैं चाहता हूँ ऐ

الأَمْطَارُ سَالَ الْوَادِي الَّذِي بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ وَلَمْ أَسْتَطِعْ أَنْ آتِيَ مَسْجِدَهُمْ فَأُصَلِّيَ لَهُمْ وَدِدْتُ أَنَّكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ تَأْتِي فَتُصَلِّي فِي مُصَلًّى . فَأَتَّخِذَهُ مُصَلًّى . قَالَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " سَأَفْعَلُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ " . قَالَ عِتْبَانُ فَغَدَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَبُو بَكْرٍ الصِّدِّيقُ حِينَ ارْتَفَعَ النَّهَارُ فَاسْتَأْذَنَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأَذِنْتُ لَهُ فَلَمْ يَجْلِسْ حَتَّى دَخَلَ الْبَيْتَ ثُمَّ قَالَ " أَيْنَ تُحِبُّ أَنْ أُصَلِّيَ مِنْ بَيْتِكَ " . قَالَ فَأَشَرْتُ إِلَى نَاحِيَةٍ مِنَ الْبَيْتِ فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَكَبَّرَ فَقُمْنَا وَرَاءَهُ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ - قَالَ - وَحَبَسْنَاهُ عَلَى خَزِيرٍ صَنَعْنَاهُ لَهُ - قَالَ - فَثَابَ رِجَالٌ مِنْ أَهْلِ الدَّارِ حَوْلَنَا حَتَّى اجْتَمَعَ فِي الْبَيْتِ رِجَالٌ ذَوُو عَدَدٍ فَقَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ أَيْنَ مَالِكُ بْنُ الدُّخْشُنِ فَقَالَ بَعْضُهُمْ ذَلِكَ مُنَافِقٌ لاَ يُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ تَقُلْ لَهُ ذَلِكَ أَلاَ تَرَاهُ قَدْ قَالَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ . يُرِيدُ بِذَلِكَ وَجْهَ اللَّهِ " . قَالَ قَالُوا

अल्लाह के रसूल! आप (मेरे घर) तशरीफ़ लायें और किसी जगह नमाज़ अदा फ़रमायें ताकि मैं उस जगह को नमाज़गाह बना लूँ। तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं इन्शाअल्लाह आऊँगा और ये काम करूँगा।' इतबान बताते हैं कि जब दिन काफ़ी बुलंद हो गया तो आप अबू बकर (रज़ि.) के साथ तशरीफ़ लाये। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (अंदर आने की) इजाज़त तलब फ़रमाई, मैंने इजाज़त दे दी। आप घर दाख़िल होकर बैठे नहीं, तुरंत फ़रमाया, 'तुम अपने घर में किस जगह मेरे नमाज़ पढ़ने को पसंद करते हो?' मैंने घर के एक कोने की तरफ़ इशारा किया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने खड़े होकर तकबीरे तहरीमा कही और हम आपके पीछे खड़े हो गये तो आपने दो रकअतें अदा कीं, फिर सलाम फेर दिया। हमने आपके लिये जो क़ीमे की आमेज़िश से मालीदा तैयार किया था उसके लिये आपको रोक लिया। इतबान बयान करते हैं (आपकी आमद का सुनकर) हमारे मुहल्ले के हमारे गर्दो-नवाह (आस-पास) के लोग जमा हो गये यहाँ तक कि हमारे घर में काफ़ी तादाद में लोग इकट्ठे हो गये तो उनमें से किसी ने पूछा, मालिक बिन दुख़शुन कहाँ है? तो उनमें से किसी ने कहा, वो तो मुनाफ़िक़ है, अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत नहीं रखता। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उसके बारे में ये बात न कहो,

اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ . قَالَ فَإِنَّمَا نَرَى وَجْهَهُ وَنَصِيحَتَهُ لِلْمُنَافِقِينَ . قَالَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " فَإِنَّ اللَّهَ قَدْ حَرَّمَ عَلَى النَّارِ مَنْ قَالَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ . يَبْتَغِي بِذَلِكَ وَجْهَ اللَّهِ " . قَالَ ابْنُ شِهَابٍ ثُمَّ سَأَلْتُ الْحُصَيْنَ بْنَ مُحَمَّدٍ الأَنْصَارِيَّ - وَهُوَ أَحَدُ بَنِي سَالِمٍ وَهُوَ مِنْ سَرَاتِهِمْ - عَنْ حَدِيثِ مَحْمُودِ بْنِ الرَّبِيعِ فَصَدَّقَهُ بِذَلِكَ .

क्या तुम्हें मालूम नहीं उसने अल्लाह के चेहरे के लिये ला इला-ह इल्लल्लाह का इक़रार किया है? तो सहाबा किराम (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं, हम तो उसका रुख़ और उसकी ख़ैरख़्वाही मुनाफ़िकों के लिये देखते हैं। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बेशक अल्लाह तआला ने ऐसे शख़्स के लिये आग को हराम क़रार दिया है जो अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल की ख़ातिर ला इला-ह इल्लल्लाह का इक़रार करे।' इब्ने शिहाब कहते हैं, मैंने बाद में हुसैन बिन मुहम्मद अन्सारी से जो बनू सालिम के सरदारों में से हैं, महमूद बिन रबीअ की इस हदीस़ के बारे में पूछा तो उसने महमूद की तस्दीक़ की।

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) ख़ज़ीर : गोश्त के छोटे-छोटे टुकड़े करके उसको खुले पानी में पकाना और पकने के बाद चूल्हे पर ही गोश्त पर आटा छिड़क देना। **(2) स़ाब रिजालुम्-मिन अह्लिद्दार :** मुहल्ले के बहुत सारे लोग जमा हो गये यहाँ दार से मुराद मुहल्ला है, अहाता या हवेली नहीं। **सरातिहिम :** सरात सिरा की जमा है सरदार।

फ़वाइद : (1) किसी साहिबे इल्म व फ़ज़ल शख़्सियत को ख़ैर व बरकत के लिये घर बुलाना जाइज़ है ताकि उससे किसी नेक काम का इफ़्तिताह करवाया जाये। **(2)** किसी मुत्तक़ी और परहेज़गार शख़्सियत से मस्जिद का इफ़्तिताह करवाना और उससे नमाज़ पढ़वाना जाइज़ है। इसी तरह ज़रूरत के लिये घर में नमाज़ के लिये जगह मख़्सूस कराना और उसमें क़ाबिले एहतिराम शख़्सियत से नमाज़ पढ़ाने की अपील करना और बाद में ख़ुद उस जगह नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है। **(3)** अगर कोई इंसान किसी बुज़ुर्ग और मोहतरम शख़्सियत को किसी नेक मक़सद की ख़ातिर घर में बुलाये तो उसको उसकी दावत क़ुबूल करके उसकी हौसला अफ़ज़ाई करनी चाहिये और ऐसे मौक़े पर खाने का एहतिमाम करना भी दुरुस्त है। **(4)** वादे को पूरा करने की निय्यत से इन्शाअल्लाह कहना चाहिये, इसको फ़रार का बहाना नहीं बनाना चाहिये। **(5)** अगर किसी बुज़ुर्ग और क़ाबिले एहतिराम

शख़्सियत को बुलाया जाये तो वो अपने साथ अपने रफ़ीक़ को ले जा सकता है। (6) अगर किसी शख़्स को घर बुलाया जाये तो वो बिला इजाज़त घर में दाख़िल नहीं हो सकता, उसको अंदर दाख़िल होने के लिये इजाज़त लेनी होगी। (7) किसी शख़्स को जिस मक़सद के लिये बुलाया जाये उसे सबसे पहले उसको पूरा करना चाहिये। (8) कभी-कभार नफ़ल बाजमाअ़त अदा किये जा सकते हैं और उनकी कम से कम तादाद दो है। (9) अगर किसी जगह कोई बुज़ुर्ग शख़्सियत आये तो उसकी ख़िदमत और उससे फ़ैज़ (दीनी मसाइल) हासिल करने के लिये वहाँ के लोगों को जमा होना चाहिये। (10) अगर कोई इंसान किसी मजबूरी और उ़ज़्र की बिना पर मस्जिद में हाज़िर न हो सकता हो तो उसके लिये घर पर नमाज़ पढ़ना जाइज़ है। (11) किसी क़रीना की बिना पर किसी पर नक़्द व तबसरा करना ये इल्ज़ाम तराशी और जुर्म नहीं है। लेकिन अगर सुनने वाले के सामने उससे बेहतर क़रीना और अ़लामत उसके ख़िलाफ़ मौजूद हो तो उसको नक़्द और तबसरा करने वाले की इस्लाह करनी चाहिये कि तुम्हारा क़ियाफ़ा (अन्दाज़ा) दुरुस्त नहीं है। (12) मुनाफ़िक़ों से मेल-जोल रखना, जबकि इंसान ख़ुद उनसे मुतास्सिर न हो और उनकी हरकात को दुरुस्त न समझता हो जाइज़ है। (13) **ला इला-ह इल्लल्लाह** दीन को क़ुबूल करने का उ़न्वान है और इस बात का अ़हद करना है कि मैं मुकम्मल दीन को क़ुबूल करता हूँ और उस पर अ़मलपैरा होने का अ़हद करता हूँ। (14) सिद्क़ दिल (सच्चे दिल) से दीन को क़ुबूल करना और उस पर अ़मलपैरा होने का जज़्बए ख़ालिस रखना, जन्नत में जाने की ज़मानत है। (15) इस हदीस़ से ये स़ाबित नहीं होता कि आप लोगों के दिलों के हालात से आगाह थे, क्योंकि आपने इब्ने दुख़शुन को मुनाफ़िक़ कहने वाले को मुख़ातब करके फ़रमाया था, क्या तुम उसको देखते नहीं हो कि उसने ला इला-ह इल्लल्लाह का इक़रार, अल्लाह की ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिये किया है तो क्या वो इंसान उसके दिल के हालात से आगाही हासिल कर सकता था, किसी के आ़माल व अफ़्आ़ल और सीरत व किरदार को देख कर उसके बारे में फ़ैसला किया जा सकता है। क़ुरआन मजीद में आपको मुख़ातब करके फ़रमाया गया है, आप उनको अ़लामत से पहचान लेंगे और आप उनको उनके बात करने के ढंग और उस्लूब से जान लेंगे। दिलों के हालात के बारे में फ़रमाया गया, ला तअ़्लमुहुम नह्नु नअ़्लमुहुम (सूरह तौबा) आप उनको नहीं जानते हम ही उनको जानते हैं। (16) नाबीना इंसान इमाम बन सकता है।

(1497) एक दूसरी सनद से इमाम साहब मज़्कूरा बाला हदीस़ बयान करते हैं, उसमें ये अल्फ़ाज़ भी हैं कि एक आदमी ने कहा, मालिक बिन दुख़शुन या दख़ैशीन कहाँ है?

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، كِلاَهُمَا عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ، قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ حَدَّثَنِي مَحْمُودُ بْنُ رَبِيعٍ،

عَنْ عِتْبَانَ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمَعْنَى حَدِيثِ يُونُسَ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ فَقَالَ رَجُلٌ أَيْنَ مَالِكُ بْنُ الدُّخْشُنِ أَوِ الدُّخَيْشِنِ وَزَادَ فِي الْحَدِيثِ قَالَ مَحْمُودٌ فَحَدَّثْتُ بِهَذَا الْحَدِيثِ نَفَرًا فِيهِمْ أَبُو أَيُّوبَ الأَنْصَارِيُّ فَقَالَ مَا أَظُنُّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ مَا قُلْتَ - قَالَ - فَحَلَفْتُ إِنْ رَجَعْتُ إِلَى عِتْبَانَ أَنْ أَسْأَلَهُ - قَالَ - فَرَجَعْتُ إِلَيْهِ فَوَجَدْتُهُ شَيْخًا كَبِيرًا قَدْ ذَهَبَ بَصَرُهُ وَهُوَ إِمَامُ قَوْمِهِ فَجَلَسْتُ إِلَى جَنْبِهِ فَسَأَلْتُهُ عَنْ هَذَا الْحَدِيثِ فَحَدَّثَنِيهِ كَمَا حَدَّثَنِيهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ . قَالَ الزُّهْرِيُّ ثُمَّ نَزَلَتْ بَعْدَ ذَلِكَ فَرَائِضُ وَأُمُورٌ نُرَى أَنَّ الأَمْرَ انْتَهَى إِلَيْهَا فَمَنِ اسْتَطَاعَ أَنْ لاَ يَغْتَرَّ فَلاَ يَغْتَرَّ .

और ये इज़ाफ़ा है, महमूद कहते हैं मैंने ये हदीस़ कुछ लोगों को (जिनमें अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि. भी मौजूद थे) सुनाई। तो उन्होंने कहा, मैं नहीं समझता कि जो बात तुम बयान करते हो, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाई हो। तो मैंने दिल में क़सम उठाई कि अगर मैं इतबान को दोबारा मिलूँगा तो उनसे ये हदीस़ पूछूँगा। मैं उनके पास दोबारा आया तो वो बहुत बूढ़े हो चुके थे, उनकी बीनाई ख़त्म हो चुकी थी लेकिन वो अपनी क़ौम के इमाम थे तो मैं उनके पहलू में बैठ गया और उनसे इस हदीस़ के बारे में पूछा तो उन्होंने मुझे पहले की तरह सारा वाक़िया सुनाया। ज़ोहरी कहते हैं, इस वाक़िये के बाद बहुत से अहकाम नाज़िल हुए और बहुत सी चीज़ें फ़र्ज़ हुईं। हमारे ख़्याल में उनके बाद दीन मुकम्मल हो गया, लिहाज़ा जो इंसान इतबान (रज़ि.) की हदीस़ के ज़ाहिरी मफ़्हूम से धोखा न खाना चाहता हो वो हमारी वज़ाहत से धोखा खाने से बच जाये।

फ़ायदा : इमाम ज़ोहरी का मक़सद ये है कि इतबान (रज़ि.) की हदीस़ का ताल्लुक़ इब्तिदाए इस्लाम से है, जबकि अभी दीन के बहुत से फ़राइज़ और अहकाम नाज़िल नहीं हुए थे। इसलिये कोई इंसान इस धोखे में मुब्तला न हो कि महज़ कलिमे के इक़रार से इंसान आग से बच जायेगा और हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़ि.) ने भी यही मफ़्हूम लेकर (कि महज़ कलिमा निजात का बाइस़ है) इसका फ़रमाने नबवी होने से इंकार किया, लेकिन हमारे बयान करदा मफ़्हूम के मुताबिक़ इस हदीस़ में कोई इश्काल (दिक़्क़त) नहीं है और इसकी पूरी वज़ाहत किताबुल ईमान में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، قَالَ حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ،

(1498) हज़रत महमूद बिन रबीअ (रज़ि.) बयान करते हैं कि मुझे उस कुल्ली की समझ है जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमारे घर में एक

عَنْ مَحْمُودِ بْنِ الرَّبِيعِ، قَالَ إِنِّي لأَعْقِلُ مَجَّةً مَجَّهَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنْ دَلْوٍ فِي دَارِنَا . قَالَ مَحْمُودٌ فَحَدَّثَنِي عِتْبَانُ بْنُ مَالِكٍ قَالَ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ بَصَرِي قَدْ سَاءَ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ إِلَى قَوْلِهِ فَصَلَّى بِنَا رَكْعَتَيْنِ وَحَبَسْنَا رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى جَشِيشَةٍ صَنَعْنَاهَا لَهُ . وَلَمْ يَذْكُرْ مَا بَعْدَهُ مِنْ زِيَادَةِ يُونُسَ وَمَعْمَرٍ .

डोल से (पानी लेकर) की थी। महमूद कहते हैं कि मुझे इतबान बिन मालिक (रज़ि.) ने बताया कि मैंने अ़र्ज़ की, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी नज़र में ख़राबी पैदा हो गई है और दो रकअ़ात नमाज़ पढ़ाने तक वाक़िया सुनाया और ये कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये जो खाना तैयार किया था उसके लिये आप (ﷺ) को रोक लिया। उसके बाद यूनुस और मअ़मर ने जो इज़ाफ़ा किया वो बयान नहीं किया।

मुफ़रदातुल हदीस़ : जशीशह : बारीक आटा हण्डियाँ में पकाकर उस पर गोश्त या खजूरें बिखेरना।

باب جَوَازِ الْجَمَاعَةِ فِي النَّافِلَةِ وَالصَّلاَةِ عَلَى حَصِيرٍ وَخُمْرَةٍ وَثَوْبٍ وَغَيْرِهَا مِنَ الطَّاهِرَاتِ

बाब 49 : नफ़ल नमाज़ बाजमाअ़त पढ़ाना और पाक चटाई, बोरिये और कपड़े वग़ैरह पर नमाज़ पढ़ना जाइज़ है

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ جَدَّتَهُ، مُلَيْكَةَ دَعَتْ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِطَعَامٍ صَنَعَتْهُ فَأَكَلَ مِنْهُ ثُمَّ قَالَ " قُومُوا فَأُصَلِّيَ لَكُمْ " . قَالَ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ فَقُمْتُ إِلَى حَصِيرٍ لَنَا قَدِ اسْوَدَّ مِنْ طُولِ مَا لُبِسَ فَنَضَحْتُهُ بِمَاءٍ فَقَامَ عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَصَفَفْتُ أَنَا وَالْيَتِيمُ وَرَاءَهُ وَالْعَجُوزُ مِنْ وَرَائِنَا

(1499) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि उनकी दादी मुलैका (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को आपके लिये तैयार करदा खाने के लिये बुलाया। आप (ﷺ) ने उससे खाया फिर फ़रमाया, 'उठो! मैं तुम्हें नमाज़ पढ़ा दूँ।' हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) कहते हैं, तो मैं अपनी एक चटाई की तरफ़ गया जो कस़रते इस्तेमाल से स्याह हो चुकी थी, उसको पानी से धोया। फिर उस चटाई पर रसूलुल्लाह (ﷺ) खड़े हो गये और मैंने एक यतीम बच्चे के साथ आपके पीछे सफ़ बना ली और बुढ़िया हमारे पीछे

खड़ी हो गई। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें दो रकअतें पढ़ाईं, फिर तशरीफ़ ले गये।

فَصَلَّى لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ انْصَرَفَ .

(सहीह बुख़ारी : 380, 860, अबू दाऊद : 612, तिर्मिज़ी : 234, नसाई : 800)

मुफ़रदातुल हदीस़ : मिन तूलि मा लुबिस : कस़रते इस्तेमाल की बिना पर यहाँ लिबास इस्तेमाल के मानी में है, यानी काफ़ी देर से वो चटाई बिछी हुई थी इसलिये गर्दो-गुबार पड़ने से स्याह हो चुकी थी।

फ़वाइद : (1) किसी साहिबे इल्म व फ़ज़्ल के लिये खाना तैयार करना और उसके लिये उसको अपने घर बुलाना दुरुस्त है। **(2)** किसी मक़सद के लिये नमाज़ के औक़ात के सिवा बग़ैर घर वालों के मुतालबे के उनके घर में नफ़ल नमाज़ बाजमाअत अदा करना दुरुस्त है और घर में बच्चों और औरतों को नमाज़ का तरीक़ा सिखाने के लिये जमाअत कराना सहीह है। **(3)** अगर इमाम के साथ दो मुक़्तदी हों तो वो पीछे खड़े होंगे और औरत बच्चों की सफ़ में भी खड़ी नहीं हो सकती। **(4)** ज़मीन पर कोई पाक चीज़ बिछाकर उस पर नमाज़ पढ़ी जा सकती है, मिट्टी पर नमाज़ पढ़ना लाज़िम नहीं है।

(1500) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सब लोगों से आला व उम्दा अख़्लाक़ से मुत्तसिफ़ थे, कई बार आप हमारे घर में तशरीफ़ फ़रमा होते और (नफ़ली) नमाज़ का वक़्त हो जाता तो आप जिस चटाई पर बैठे होते उसको साफ़ करने का हुक्म देते, फिर उसको धोया जाता। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) इमामत करवाते, हम आपके पीछे खड़े हो जाते तो आप हमें नमाज़ पढ़ा देते और उनका बिछौना (चटाई) खजूर के पत्तों का था।

وَحَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، وَأَبُو الرَّبِيعِ، كِلاَهُمَا عَنْ عَبْدِ الْوَارِثِ، قَالَ شَيْبَانُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَحْسَنَ النَّاسِ خُلُقًا فَرُبَّمَا تَحْضُرُ الصَّلاَةُ وَهُوَ فِي بَيْتِنَا فَيَأْمُرُ بِالْبِسَاطِ الَّذِي تَحْتَهُ فَيُكْنَسُ ثُمَّ يُنْضَحُ ثُمَّ يَؤُمُّ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَنَقُومُ خَلْفَهُ فَيُصَلِّي بِنَا وَكَانَ بِسَاطُهُمْ مِنْ جَرِيدِ النَّخْلِ .

(सहीह बुख़ारी : 6129, 6203, तिर्मिज़ी : 333, 1989, इब्ने माजह : 3720)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) युक्नस : कनस से है साफ़ करना, झाड़ना। **(2) युन्ज़हु :** नज़्हुन से है, धोना।

फ़ायदा : आप (ﷺ) अपने साथियों के साथ घुल-मिलकर रहते थे, तकल्लुफ़ और तसन्नोअ (दिखावे) से काम नहीं लेते, घर में आम इस्तेमाल होने वाली चटाई पर बैठ जाते और नमाज़ के वक़्त

उसको साफ़ करवाकर उस पर नमाज़ पढ़ लेते और ये नफ़ली नमाज़ होती थी, फ़र्ज़ नमाज़ आप मस्जिद में पढ़ाते थे।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ دَخَلَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم عَلَيْنَا وَمَا هُوَ إِلاَّ أَنَا وَأُمِّي وَأُمُّ حَرَامٍ خَالَتِي فَقَالَ " قُومُوا فَلأُصَلِّيَ بِكُمْ " . فِي غَيْرِ وَقْتِ صَلاَةٍ فَصَلَّى بِنَا . فَقَالَ رَجُلٌ لِثَابِتٍ أَيْنَ جَعَلَ أَنَسًا مِنْهُ قَالَ جَعَلَهُ عَلَى يَمِينِهِ . ثُمَّ دَعَا لَنَا أَهْلَ الْبَيْتِ بِكُلِّ خَيْرٍ مِنْ خَيْرِ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ فَقَالَتْ أُمِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ خُوَيْدِمُكَ ادْعُ اللَّهَ لَهُ . قَالَ فَدَعَا لِي بِكُلِّ خَيْرٍ وَكَانَ فِي آخِرِ مَا دَعَا لِي بِهِ أَنْ قَالَ " اللَّهُمَّ أَكْثِرْ مَالَهُ وَوَلَدَهُ وَبَارِكْ لَهُ فِيهِ " .

(1501) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे यहाँ तशरीफ़ लाये और (घर में) सिर्फ़ मैं, मेरी वालिदा और मेरी ख़ाला उम्मे हराम मौजूद थे। तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उठो! मैं तुम्हें नमाज़ पढ़ा दूँ।' हालांकि ये किसी (फ़र्ज़) नमाज़ का वक़्त न था। एक आदमी ने (अनस के शागिर्द) स़ाबित से पूछा, आपने अनस को कहाँ खड़ा किया था? तो उन्होंने जवाब दिया, आपने अनस को अपनी दायें तरफ़ खड़ा किया था। अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि फिर आपने हमारे लिये यानी हमारे घराने के लिये दुनिया और आख़िरत की हर क़िस्म की भलाई की दुआ फ़रमाई तो मेरी माँ ने अ़र्ज़ की, ऐ अल्लाह के रसूल! आपका छोटा और प्यारा ख़ादिम (अनस) इसके हक़ में दुआ फ़रमायें, आपने मेरे लिये हर क़िस्म की ख़ैर की दुआ फ़रमाई और मेरे लिये दुआ करते हुए आख़िर में दुआ की, 'ऐ अल्लाह! इसको माल और औलाद कस़रत से इनायत फ़रमा और इसके लिये बरकत वदीअ़त फ़रमा।'

(नसाई : 2/86)

फ़वाइद : (1) अल्लाह तआ़ला ने हज़रत अनस (रज़ि.) के हक़ में आपकी दुआ क़ुबूल फ़रमाई। आपके सौ से ऊपर बच्चे (बेटे, पोते और पोतियाँ वग़ैरह) थे और आप (अनस) का बाग़ हर साल दो बार फल देता था और आपको हर क़िस्म की फ़रावानी और ख़ुशहाली मुयस्सर थी। **(2)** अगर इमाम के साथ नमाज़ पढ़ने वाला सिर्फ़ एक हो तो वो इमाम के दायें तरफ़ ख़ड़ा होगा।

(1502) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे उसकी वालिदा और उसकी ख़ाला को नमाज़ पढ़ाई। आपने मुझे अपने दायें तरफ़ खड़ा किया और औरतों को हमारे पीछे खड़ा किया।
(अबूदाऊद : 609, नसाई : 2/86, इब्ने माजह : 975)

وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْمُخْتَارِ، سَمِعَ مُوسَى بْنَ أَنَسٍ، يُحَدِّثُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ صَلَّى بِهِ وَبِأُمِّهِ أَوْ خَالَتِهِ . قَالَ فَأَقَامَنِي عَنْ يَمِينِهِ وَأَقَامَ الْمَرْأَةَ خَلْفَنَا .

फ़ायदा : औरतों की सफ़ अलग होगी वो मर्दों या बच्चों की सफ़ में शरीक नहीं होंगी।

(1503) इमाम मुस्लिम ने मज़्कूरा बाला रिवायत दूसरे उस्तादों के वास्ते से भी बयान की है।

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، ح وَحَدَّثَنِيهِ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، - يَعْنِي ابْنَ مَهْدِيٍّ - قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(1504) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़ौजा मोहतरमा मैमूना (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे बराबर खड़े होकर नमाज़ पढ़ते और कई बार सज्दा करते वक़्त आपका कपड़ा मुझे लग जाता था और आप बोरिये (छोटी चटाई) पर नमाज़ पढ़ते थे।
(सहीह बुख़ारी : 333, 379, 518, अबू दाऊद : 656, इब्ने माजह : 1028)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ الْعَوَّامِ، كِلاَهُمَا عَنِ الشَّيْبَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَدَّادٍ، قَالَ حَدَّثَتْنِي مَيْمُونَةُ، زَوْجُ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي وَأَنَا حِذَاءَهُ وَرُبَّمَا أَصَابَنِي ثَوْبُهُ إِذَا سَجَدَ وَكَانَ يُصَلِّي عَلَى خُمْرَةٍ .

फ़ायदा : इंसान अपनी बीवी के बराबर खड़े होकर (घर में) नमाज़ पढ़ सकता है।

(1505) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो देखा आप चटाई पर नमाज पढ़ रहे हैं और उस पर सज्दा करते हैं।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنِي سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، جَمِيعًا عَنِ

(तिर्मिज़ी : 332, इब्ने माजह : 1029,1048)

الأَعْمَشِ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ، أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَوَجَدَهُ يُصَلِّي عَلَى حَصِيرٍ يَسْجُدُ عَلَيْهِ .

फ़ायदा : नमाज़ में पेशानी ज़मीन पर लगाना ज़रूरी नहीं है बल्कि चटाई पर भी रखी जा सकती है। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ तवाज़ोअ और ख़ाकसारी व फ़रौतनी के इज़हार की ख़ातिर ज़मीन पर नमाज़ पढ़ने का हुक्म देते थे।

बाब 50 : बाजमाअत नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत और उसके लिये नमाज़ का इन्तिज़ार करना

باب فَضْلِ صَلاَةِ الْجَمَاعَةِ وَانْتِظَارِ الصَّلاَةِ

(1506) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'आदमी का जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना उसके अकेले घर में या अकेले बाज़ार में नमाज़ पढ़ने से बीस से ज़्यादा दर्जा सवाब का बाइस है क्योंकि जब कोई नमाज़ी वुज़ू करता है और अच्छी तरह वुज़ू करता है फिर वो मस्जिद में आता है और सिर्फ़ नमाज़ ही की ख़ातिर उठता है। सिर्फ़ नमाज़ ही का इरादा करता है तो वो जो क़दम भी उठाता है उसके बदले में उसका एक दर्जा बुलंद होता है और एक गुनाह उसके सबब मिटा दिया जाता है, यहाँ तक कि वो इस तरह मस्जिद में दाख़िल

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ جَمِيعًا عَنْ أَبِي مُعَاوِيَةَ، - قَالَ أَبُو كُرَيْبٍ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، - عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " صَلاَةُ الرَّجُلِ فِي جَمَاعَةٍ تَزِيدُ عَلَى صَلاَتِهِ فِي بَيْتِهِ وَصَلاَتِهِ فِي سُوقِهِ بِضْعًا وَعِشْرِينَ دَرَجَةً وَذَلِكَ أَنَّ أَحَدَهُمْ إِذَا تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوءَ ثُمَّ أَتَى الْمَسْجِدَ لاَ يَنْهَزُهُ إِلاَّ الصَّلاَةُ لاَ يُرِيدُ إِلاَّ الصَّلاَةَ فَلَمْ يَخْطُ خَطْوَةً إِلاَّ رُفِعَ لَهُ بِهَا دَرَجَةٌ وَحُطَّ عَنْهُ بِهَا

خَطِيئَةٌ حَتَّى يَدْخُلَ الْمَسْجِدَ فَإِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ كَانَ فِي الصَّلاَةِ مَا كَانَتِ الصَّلاَةُ هِيَ تَحْبِسُهُ وَالْمَلاَئِكَةُ يُصَلُّونَ عَلَى أَحَدِكُمْ مَا دَامَ فِي مَجْلِسِهِ الَّذِي صَلَّى فِيهِ يَقُولُونَ اللَّهُمَّ ارْحَمْهُ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ اللَّهُمَّ تُبْ عَلَيْهِ مَا لَمْ يُؤْذِ فِيهِ مَا لَمْ يُحْدِثْ فِيهِ " .

हो जाता है। फिर जब वो मस्जिद में दाख़िल हो जाता है तो जब तक नमाज़ उस को रोके रखती है (नमाज़ का इन्तिज़ार करता है) वो नमाज़ में समझा जाता है और तुममें से कोई एक जब तक अपने नमाज़ पढ़ने वाली जगह में रहता है फ़रिश्ते उसके हक़ में ये दुआ करते रहते हैं वो कहते हैं, ऐ अल्लाह! इस पर रहम फ़रमा, ऐ अल्लाह! इसको बख़्श दे, ऐ अल्लाह! इस पर नज़रे रहमत फ़रमा, इसकी तौबा क़ुबूल फ़रमा। जब तक वो तकलीफ़ नहीं पहुँचाता, जब तक कोई नया काम नहीं करता।'

(सहीह बुख़ारी : 477, अबू दाऊद : 559, इब्ने माजह : 786)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) ला यन्हज़ुहू : उसको नमाज़ के सिवा कोई चीज़ नहीं उठाती, आगे ला युरीदु इल्लस्सलात इसकी तफ़्सीर व तौज़ीह है कि वो सिर्फ़ नमाज़ ही का इरादा करता है। **(2) ख़ुतवह** : पेश के साथ, क़दम। **(3) ख़तवह :** ज़बर के साथ, एक क़दम उठाना। **(4) मा लम युअ्ज़ि :** की तफ़्सीर है मालम् युह्दिस़। यानी हवा ख़ारिज करके हाज़िरीन (फ़रिश्तों, इंसानों) को अज़ियत व तकलीफ़ पहुँचाया या उस (मस्जिद) में ख़िलाफ़े शरीअ़त किसी हरकत का इर्तिकाब करना।

फ़ायदा : ये हदीस़ पीछे गुज़र चुकी है और वहाँ इसके फ़वाइद गुज़र चुके हैं, मक़सद ये है कि दूर की मसाफ़त से आने वाले नमाज़ी को क़दम ज़्यादा उठाने पड़ते हैं, इसलिये उसको अज्र व स़वाब भी ज़्यादा मिलता है और इंसान जब तक मस्जिद में नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठता है वो नमाज़ के हुक्म में होता है और फ़रिश्तों की दुआओं का हक़दार ठहरता है। इसलिये उसको मस्जिद में अदब व एहतिराम और वक़ार के साथ बैठना चाहिये और कोई ऐसी हरकत नहीं करनी चाहिये जो दूसरों के लिये तकलीफ़देह हो।

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَمْرٍو الأَشْعَثِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْثَرٌ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَكَّارِ بْنِ الرَّيَّانِ، قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ

(1507) इमाम साहब ने अपने दूसरे उस्तादों से भी आमश की सनद ही से इसके हम मानी रिवायत नक़ल की है।

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ، كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ بِمِثْلِ مَعْنَاهُ .

(1508) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से कोई जब तक नमाज़ पढ़ने की जगह बैठा रहता है फ़रिश्ते उसके हक़ में यूँ दुआ करते हैं, ऐ अल्लाह! इसको बख़्श दे, ऐ अल्लाह! इस पर रहम फ़रमा। जब तक वो बेवुज़ू नहीं होता और जब तक तुममें से कोई शख़्स नमाज़ की ख़ातिर रुका हुआ है वो नमाज़ ही में होता है।'

وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَيُّوبَ السَّخْتِيَانِيِّ، عَنِ ابْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ الْمَلاَئِكَةَ تُصَلِّي عَلَى أَحَدِكُمْ مَا دَامَ فِي مَجْلِسِهِ تَقُولُ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ اللَّهُمَّ ارْحَمْهُ مَا لَمْ يُحْدِثْ وَأَحَدُكُمْ فِي صَلاَةٍ مَا كَانَتِ الصَّلاَةُ تَحْبِسُهُ " .

(1509) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बन्दा नमाज़ ही में होता है जब तक वो नमाज़ के इन्तिज़ार में नमाज़गाह में रहता है और फ़रिश्ते दुआ करते हैं, ऐ अल्लाह! इसे माफ़ फ़रमा, ऐ अल्लाह! इस पर रहमत फ़रमा। यहाँ तक कि वो चला जाये या वुज़ू तोड़ दे।' अबू राफ़ेअ कहते हैं, मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से पूछा, युह्दिसु का मतलब क्या है? तो उन्होंने कहा, आहिस्ता या बुलंद आवाज़ से हवा ख़ारिज कर दे। (अबू दाऊद : 471)

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ يَزَالُ الْعَبْدُ فِي صَلاَةٍ مَا كَانَ فِي مُصَلاَّهُ يَنْتَظِرُ الصَّلاَةَ وَتَقُولُ الْمَلاَئِكَةُ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ اللَّهُمَّ ارْحَمْهُ . حَتَّى يَنْصَرِفَ أَوْ يُحْدِثَ " . قُلْتُ مَا يُحْدِثُ قَالَ يَفْسُو أَوْ يَضْرِطُ .

(1510) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से हर एक नमाज़ में होता है जब तक नमाज़ उसे रोके रखती है, घर की तरफ़ पलटने से नमाज़ ही रुकावट बनी है।'

(सहीह बुख़ारी : 659, अबू दाऊद : 470)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " لاَ يَزَالُ أَحَدُكُمْ فِي صَلاَةٍ مَا دَامَتِ الصَّلاَةُ تَحْبِسُهُ لاَ يَمْنَعُهُ أَنْ يَنْقَلِبَ إِلَى أَهْلِهِ إِلاَّ الصَّلاَةُ " .

(1511) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम जब तक नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठते हो नमाज़ ही में हो जब तक वुज़ू न टूटे, फ़रिश्ते उसके लिये दुआ करते हैं, ऐ अल्लाह! इसे माफ़ फ़रमा, ऐ अल्लाह इस पर रहम फ़रमा।'

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ الْمُرَادِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنِ ابْنِ هُرْمُزَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " أَحَدُكُمْ مَا قَعَدَ يَنْتَظِرُ الصَّلاَةَ فِي صَلاَةٍ مَا لَمْ يُحْدِثْ تَدْعُو لَهُ الْمَلاَئِكَةُ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ اللَّهُمَّ ارْحَمْهُ " .

(1512) इमाम मुस्लिम दूसरी सनद से अबू हुरैरह (रज़ि.) से इसके हम मानी रिवायत नक़ल करते हैं।

(तिर्मिज़ी : 330)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِنَحْوِ هَذَا .

बाब 51 : मस्जिदों की तरफ़ जाने के लिये ज़्यादा क़दम उठाने की फ़ज़ीलत

باب فَضْلِ كَثْرَةِ الْخُطَا إِلَى الْمَسَاجِدِ

(1513) हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नमाज़ का सब लोगों से ज़्यादा स़वाब उस नमाज़ी को मिलता है जो उसके लिये सबसे दूर से चलकर आता है, उसके बाद जो, उसके बाद दूर से चलकर आता है और जो आदमी इमाम के साथ नमाज़ पढ़ने के लिये नमाज़ का इन्तिज़ार करता है उसको उससे ज़्यादा स़वाब मिलता है, जो नमाज़ पढ़कर सो जाता है।' अबू कुरैब की रिवायत में मअ़ल इमाम के बाद फ़ी जमाअ़तिन् के अल्फ़ाज़ हैं।

(सहीह बुख़ारी : 651)

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بَرَّادٍ الأَشْعَرِيُّ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ أَعْظَمَ النَّاسِ أَجْرًا فِي الصَّلاَةِ أَبْعَدُهُمْ إِلَيْهَا مَمْشًى فَأَبْعَدُهُمْ وَالَّذِي يَنْتَظِرُ الصَّلاَةَ حَتَّى يُصَلِّيَهَا مَعَ الإِمَامِ أَعْظَمُ أَجْرًا مِنَ الَّذِي يُصَلِّيهَا ثُمَّ يَنَامُ " . وَفِي رِوَايَةِ أَبِي كُرَيْبٍ " حَتَّى يُصَلِّيَهَا مَعَ الإِمَامِ فِي جَمَاعَةٍ " .

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا عَبْثَرٌ، عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ أُبَىِّ بْنِ كَعْبٍ، قَالَ كَانَ رَجُلٌ لاَ أَعْلَمُ رَجُلاً أَبْعَدَ مِنَ الْمَسْجِدِ مِنْهُ وَكَانَ لاَ تُخْطِئُهُ صَلاَةٌ - قَالَ - فَقِيلَ لَهُ أَوْ قُلْتُ لَهُ لَوِ اشْتَرَيْتَ حِمَارًا تَرْكَبُهُ فِي الظَّلْمَاءِ وَفِي الرَّمْضَاءِ . قَالَ مَا يَسُرُّنِي أَنَّ مَنْزِلِي إِلَى جَنْبِ الْمَسْجِدِ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ يُكْتَبَ لِي مَمْشَاىَ إِلَى الْمَسْجِدِ وَرُجُوعِي إِذَا رَجَعْتُ إِلَى أَهْلِي . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " قَدْ جَمَعَ اللَّهُ لَكَ ذَلِكَ كُلَّهُ " .

(1514) हज़रत उबइ बिन कअ़ब (रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी था, मेरे इल्म में मस्जिद से उससे ज़्यादा किसी का फ़ासला न था और उसकी कोई नमाज़ (बाजमाअ़त) क़ज़ा नहीं होती थी तो उसे किसी ने कहा या मैंने कहा, ऐ काश! आप तारीकी और गर्मी में आसानी के लिये सवारी के लिये गधा ख़रीद लें तो उसने कहा, मुझे ये बात पसंद नहीं है कि मेरा घर मस्जिद के पड़ौस में हो, मैं चाहता हूँ मेरा मस्जिद तक चलकर जाना और जब मैं घर लौटूँ तो मेरा लौटना लिखा जाये। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये सब कुछ अल्लाह तआ़ला ने तेरे लिये जमा कर दिया है।'

(अबू दाऊद : 557, इब्ने माजह : 783)

फ़ायदा : इंसान का रात की तारीकी में और गर्मियों की शिद्दत में घर से मस्जिद तक जाना-आना लिखा जाता है और उन चीज़ों (गर्मी, अन्धेरे, आने-जाने) का इंसान को अज्र व सवाब मिलता है इसलिये मस्जिद से मसाफ़त के बुअ़्द और दूरी से डर कर या उसको बहाना बनाकर घर में नमाज़ पढ़ लेना दुरुस्त नहीं है। नमाज़ के लिये जिस क़द्र मशक़्क़त बर्दाश्त करेगा या दूर से आयेगा उतना ही अज्र व सवाब में इज़ाफ़ा होगा।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، كِلاَهُمَا عَنِ التَّيْمِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . بِنَحْوِهِ .

(1515) इमाम साहब एक दूसरी सनद से इसके हम मानी रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ، حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا عَاصِمٌ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أُبَىِّ بْنِ كَعْبٍ، قَالَ كَانَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ

(1516) हज़रत उबइ बिन कअ़ब (रज़ि.) बयान करते हैं, एक अन्सारी आदमी था, उसका घर मदीना में सबसे ज़्यादा दूर था और उसकी कोई नमाज़ रसूलुल्लाह (ﷺ) की

بَيْتُهُ أَقْصَى بَيْتٍ فِي الْمَدِينَةِ فَكَانَ لاَ تُخْطِئُهُ الصَّلاَةُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم - قَالَ - فَتَوَجَّعْنَا لَهُ فَقُلْتُ لَهُ يَا فُلاَنُ لَوْ أَنَّكَ اشْتَرَيْتَ حِمَارًا يَقِيكَ مِنَ الرَّمْضَاءِ وَيَقِيكَ مِنْ هَوَامِّ الأَرْضِ . قَالَ أَمَا وَاللَّهِ مَا أُحِبُّ أَنَّ بَيْتِي مُطَنَّبٌ بِبَيْتِ مُحَمَّدٍ صلى الله عليه وسلم قَالَ فَحَمَلْتُ بِهِ حِمْلاً حَتَّى أَتَيْتُ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأَخْبَرْتُهُ - قَالَ - فَدَعَاهُ فَقَالَ لَهُ مِثْلَ ذَلِكَ وَذَكَرَ لَهُ أَنَّهُ يَرْجُو فِي أَثَرِهِ الأَجْرَ . فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ لَكَ مَا احْتَسَبْتَ " .

इक़्तिदा में पढ़ने से नहीं रहती थी। हमने उसके लिये दर्द महसूस किया (उसकी तकलीफ़ का हमें एहसास हुआ) तो मैंने उसे कहा, ऐ फ़लाँ! ऐ काश! आप एक गधा ख़रीद लें जो आपको गर्मी और ज़मीन के ज़हरीले कीड़ों से बचाये। उसने कहा, हाँ अल्लाह की क़सम! मुझे ये पसंद नहीं है कि मेरा घर तनाबों (रस्सियों) के ज़रिये मुहम्मद (ﷺ) के घर से बन्धा हुआ होता। तो मुझे उसकी ये बात बहुत नागवार महसूस हुई। यहाँ तक कि मैंने नबी (ﷺ) की ख़िदमत में आकर आपको उसकी ख़बर दी। आपने उसे बुलवाया, तो उसने आपको भी इस क़िस्म का जवाब दिया और आपको बताया, मैं अपने आने-जाने पर सवाब की उम्मीद रखता हूँ। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुझे वो अज्र मिलेगा जिसकी तुमने निय्यत की।'

मुफ़रदातुल हदीस : (1) हवाम्म : हाम्मह की जमा है। ज़हरीले कीड़े-मकोड़ों को कहते हैं। **(2) मुतन्नब :** तनब से माख़ूज़ है। ख़ैमे को रस्सियों से बांधना। मक़सद है कि मेरा घर आप (ﷺ) के घर से मुत्तसिल (मिला हुआ) होता। **(3) हमल्तु बिही हिम्ला :** मैंने सीना पर बोझ उठाया, मक़सद ये है कि उसके ये अल्फ़ाज़ मेरे लिये बहुत नागवारी का बाइस बने। **(4) फ़ी असरिही :** इस चाल और आमद व रफ़्त के सबब।

फ़ायदा : अन्सारी सहाबी का मक़सद ये था, मेरा घर मस्जिद से दूर है, मुझे आने-जाने में मशक़्क़त बर्दाश्त करनी पड़ती है और मैं ये मशक़्क़त सिर्फ़ इस उम्मीद पर बर्दाश्त करता हूँ कि मुझे इसका अज्र मिलेगा। मैं अपने अज्र व सवाब से किसी सूरत में महरूम नहीं होना चाहता। ये नहीं कि वो नबी (ﷺ) के क़ुर्ब व जवार को पसंद नहीं करता था।

وَحَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَمْرٍو الأَشْعَثِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عُمَرَ، كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، ح وَحَدَّثَنَا

(1517) इमाम साहब अपने दूसरे उस्तादों से भी आसिम की मज़्कूरा सनद से इसके हम मानी रिवायत बयान करते हैं।

سَعِيدُ بْنُ أَزْهَرَ الْوَاسِطِيُّ، قَالَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا أَبِي كُلُّهُمْ، عَنْ عَاصِمٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ

(1518) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं कि हमारे घर मस्जिद से दूर वाक़ेअ़ थे तो हमने चाहा, हम अपने घरों को फ़रोख़्त (बेच) करके मस्जिद के क़रीब घर ख़रीद लें। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें इससे रोक दिया और फ़रमाया, 'तुम्हें हर क़दम के बदले में एक दर्जा मिलेगा।'

وَحَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْرِ، قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ كَانَتْ دِيَارُنَا نَائِيَةً عَنِ الْمَسْجِدِ، فَأَرَدْنَا أَنْ نَبِيعَ، بُيُوتَنَا فَنَقْتَرِبَ مِنَ الْمَسْجِدِ فَنَهَانَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " إِنَّ لَكُمْ بِكُلِّ خُطْوَةٍ دَرَجَةً " .

(1519) हज़रत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, मस्जिद के गिर्द कुछ जगहें ख़ाली हुईं तो बनू सलमा के लोगों ने चाहा मस्जिद के क़रीब मुन्तक़िल हो जायें। रसूलुल्लाह (ﷺ) को भी इसका पता चल गया तो आप (ﷺ) ने उन्हें फ़रमाया, 'मुझे इत्तिलाअ़ मिली है कि तुम मस्जिद के क़रीब मुन्तक़िल होना चाहते हो?' उन्होंने अ़र्ज़ किया, जी हाँ! ऐ अल्लाह के रसूल! हमने इसका इरादा किया है। तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ बनू सलमा! अपने घरों में रहो, तुम्हारे नक़्शे क़दम लिखे जाते हैं, अपने घरों में ही रहो, तुम्हारे क़दमों के निशानात लिखे जाते हैं।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الْوَارِثِ، قَالَ سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ، قَالَ حَدَّثَنِي الْجُرَيْرِيُّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ خَلَتِ الْبِقَاعُ حَوْلَ الْمَسْجِدِ فَأَرَادَ بَنُو سَلِمَةَ أَنْ يَنْتَقِلُوا إِلَى قُرْبِ الْمَسْجِدِ فَبَلَغَ ذَلِكَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ لَهُمْ " إِنَّهُ بَلَغَنِي أَنَّكُمْ تُرِيدُونَ أَنْ تَنْتَقِلُوا قُرْبَ الْمَسْجِدِ " . قَالُوا نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ أَرَدْنَا ذَلِكَ . فَقَالَ " يَا بَنِي سَلِمَةَ دِيَارَكُمْ تُكْتَبْ آثَارُكُمْ دِيَارَكُمْ تُكْتَبْ آثَارُكُمْ " .

(1520) हज़रत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं कि बनू सलमा के लोगों ने मस्जिद के क़रीब आ जाने का इरादा किया, क्योंकि मस्जिद के क़रीब जगहें खाली थीं। नबी (ﷺ)

حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ النَّضْرِ التَّيْمِيُّ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، قَالَ سَمِعْتُ كَهْمَسًا، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ أَرَادَ بَنُو سَلِمَةَ أَنْ

يَتَحَوَّلُوا، إِلَى قُرْبِ الْمَسْجِدِ. - قَالَ - وَالْبِقَاعُ خَالِيَةٌ فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ " يَا بَنِي سَلِمَةَ دِيَارَكُمْ تُكْتَبْ آثَارُكُمْ " . فَقَالُوا مَا كَانَ يَسُرُّنَا أَنَّا كُنَّا تَحَوَّلْنَا .

को भी इसकी ख़बर मिल गई तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ बनू सलमा! अपने घरों में रहो, तुम्हारे नक़्शे क़दम लिखे जाते हैं।' तो उन्होंने कहा, हमें पसंद नहीं है कि हम मुन्तक़िल हो चुके होते।

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) बिक़ाअ : बुक़अह की जमा है, क़तअ ज़मीन, ज़मीन का टुकड़ा। **(2) आसार :** असर की जमा है, पाँव का निशान।

फ़ायदा : मस्जिद के क़रीब सिर्फ़ इस ग़र्ज़ के तहत जगह लेना कि ज़्यादा दूर से चलकर न आना पड़े, दुरुस्त नहीं है क्योंकि इंसान जिस क़द्र मस्जिद से दूर होगा उस क़द्र उसको एहतिमाम ज़्यादा करना पड़ेगा। नमाज़ के लिये ज़्यादा फ़िक्रमन्दी, ज़्यादा मशक़्क़त और दूर की मसाफ़त ज़्यादा वक़्त की तालिब होगी तो ये हर चीज़ अज्र व सवाब और फ़ज़ीलत का बाइस़ होगी। अगर इसका सबब कोई और चीज़ हो जैसे मस्जिद के क़रीब होने की वजह से बच्चे मस्जिद में पढ़ सकेंगे, बूढ़े और मरीज़ के लिये भी जमाअत के लिये मस्जिद में जाना आसान होगा। हमारे लिये तकबीरे तहरीमा में शिरकत आसान होगी तो इस निय्यत के तहत मस्जिद के क़रीब आना दुरुस्त है।

باب الْمَشْىُ إِلَى الصَّلاَةِ تُمْحَى بِهِ الْخَطَايَا وَتُرْفَعُ بِهِ الدَّرَجَاتُ

बाब 52 : मस्जिद में नमाज़ के लिये चलकर आने से गुनाह मिटते हैं और दरजात बुलंद होते हैं

حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ عَدِيٍّ، أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، - يَعْنِي ابْنَ عَمْرٍو - عَنْ زَيْدِ بْنِ أَبِي أُنَيْسَةَ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ الأَشْجَعِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " مَنْ تَطَهَّرَ فِي بَيْتِهِ ثُمَّ مَشَى إِلَى بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ اللَّهِ لِيَقْضِيَ فَرِيضَةً مِنْ فَرَائِضِ اللَّهِ كَانَتْ خَطْوَتَاهُ إِحْدَاهُمَا تَحُطُّ خَطِيئَةً وَالأُخْرَى تَرْفَعُ دَرَجَةً " .

(1521) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने घर में वुज़ू किया फिर अल्लाह के घरों में से किसी घर की तरफ़ चलकर गया, ताकि अल्लाह के फ़र्ज़ों में से किसी फ़रीज़े को अदा करे तो उसके दो क़दमों में से एक क़दम से गुनाह उतरेंगे और दूसरे से दर्जा बुलंद होगा।'

(1522) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर तुममें से किसी के घर के सामने नहर हो, जिससे वो हर रोज़ पाँच बार नहाता हो, क्या उसके जिस्म पर कोई मैल-कुचैल रह जायेगी?' सहाबा ने अर्ज़ की, उस पर कोई मैल-कुचैल नहीं रहेगी? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'पाँच नमाज़ों की मिसाल ऐसी ही है, अल्लाह तआला इनसे गुनाहों को मिटा देता है।'

(सहीह बुख़ारी : 528, तिर्मिज़ी : 2868, नसाई : 1/230-231)

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَقَالَ قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا بَكْرٌ، - يَعْنِي ابْنَ مُضَرَ - كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ الْهَادِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ وَفِي حَدِيثِ بَكْرٍ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ " أَرَأَيْتُمْ لَوْ أَنَّ نَهْرًا بِبَابِ أَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ مِنْهُ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسَ مَرَّاتٍ هَلْ يَبْقَى مِنْ دَرَنِهِ شَىْءٌ " . قَالُوا لاَ يَبْقَى مِنْ دَرَنِهِ شَىْءٌ . قَالَ " فَذَلِكَ مَثَلُ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ يَمْحُو اللَّهُ بِهِنَّ الْخَطَايَا " .

फ़ायदा : नमाज़ पढ़ने से इंसान के सग़ीरा (छोटे) गुनाह माफ़ हो जाते हैं, क्योंकि छोटे गुनाहों के असरात ज़ाहिर बदन पर होते हैं। इसलिये उनका इज़ाला आसान होता है, जिस तरह जिस्म की मैल अगर इंसान के मसामों में दाख़िल न हो या कपड़े में मेल जज़्ब न हो तो उसका धोना आसान होता है लेकिन अगर जिस्म पर लगने वाली मैल, उसके अंदर सरायत कर जाये तो उसको सिर्फ़ साबुन से साफ़ करना भी आसान नहीं होता। कबीरा गुनाहों के असरात इंसान के दिल को मुतास्सिर करते हैं। इसलिये वो तौबा या अल्लाह तआला की ख़ुसूसी रहमत के बग़ैर माफ़ नहीं होते।

(1523) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'पाँच नमाज़ों की मिसाल गहरी नहर की मानिन्द है, जो किसी इंसान के दरवाज़े पर बह रही हो, वो उससे रोज़ाना पाँच बार नहाता हो।' हसन बसरी ने कहा, ये ग़ुस्ल उसके जिस्म पर मैल-कुचैल छोड़ेगा? (यानी नहीं छोड़ेगा)।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، - وَهُوَ ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ - قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " مَثَلُ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ كَمَثَلِ نَهْرٍ جَارٍ غَمْرٍ عَلَى بَابِ أَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ مِنْهُ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسَ مَرَّاتٍ " . قَالَ قَالَ الْحَسَنُ وَمَا يُبْقِي ذَلِكَ مِنَ الدَّرَنِ.

मुफ़रदातुल हदीस: (1) **ग़मर:** ज़्यादा पानी या गहरा पानी। (2) **दरन :** बदन पर लगने वाली मैल-कुचैल।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُطَرِّفٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم " مَنْ غَدَا إِلَى الْمَسْجِدِ أَوْ رَاحَ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُ فِي الْجَنَّةِ نُزُلاً كُلَّمَا غَدَا أَوْ رَاحَ " .

(1524) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो इंसान (नमाज़ के लिये) मस्जिद में आता-जाता है उसके हर आने-जाने पर अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में ज़ियाफ़त (मेहमान नवाज़ी) तैयार फ़रमाता है।'
(सहीह बुख़ारी : 662)

फ़ायदा : नमाज़ की पाबंदी और एहतिमाम इंसान के लिये जन्नत में ज़ियाफ़त व दावत का सबब बनता है और मेहमान वाली तकरीम का सबब बनता है। ग़दा औ राह का मानी मुत्लक़न आना-जाना है, सिर्फ़ सुबह व शाम आना-जाना मुराद नहीं है।

باب فَضْلِ الْجُلُوسِ فِي مُصَلاَّهُ بَعْدَ الصُّبْحِ وَفَضْلِ الْمَسَاجِدِ

बाब 53 : सुबह की नमाज़ के बाद अपनी नमाज़गाह में बैठने की फ़ज़ीलत और मस्जिदों की फ़ज़ीलत

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا سِمَاكٌ، ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، - وَاللَّفْظُ لَهُ - قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، قَالَ قُلْتُ لِجَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ أَكُنْتَ تُجَالِسُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ نَعَمْ كَثِيرًا كَانَ لاَ يَقُومُ مِنْ مُصَلاَّهُ الَّذِي يُصَلِّي فِيهِ الصُّبْحَ أَوِ الْغَدَاةَ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ فَإِذَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ قَامَ وَكَانُوا يَتَحَدَّثُونَ فَيَأْخُذُونَ فِي أَمْرِ الْجَاهِلِيَّةِ فَيَضْحَكُونَ وَيَتَبَسَّمُ .

(1525) सिमाक बिन हरब बयान करते हैं, मैंने जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से पूछा, क्या आप रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बैठा करते थे? उसने कहा, हाँ, बकसरत (बहुत)। आप जिस जगह सुबह की नमाज़ पढ़ते थे, सूरज निकलने तक उस जगह तशरीफ़ रखते जब सूरज निकल आता तो फिर आप उठते और सहाबा किराम (रज़ि.) आपस में बातचीत करते, जाहिलिय्यत के दौर की बातें शुरू हो जातीं तो वो लोग हँसते और आप भी मुस्कुराते।
(अबू दाऊद : 1294, नसाई : 3/80-81)

फ़ायदा : सुबह की नमाज़ के बाद सूरज निकलने तक मस्जिद में ज़िक्र व अज़कार और तिलावत के लिये बैठे रहना अज्र व सवाब का बाइस है और पन्द व मौइज़त या इबरत पज़ीरी के लिये इस्लाम से पहले के वाक़ियात या दूसरे तारीख़ी वाक़ियात सुनना और सुनाना जाइज़ है और मस्जिद के तक़द्दुस व एहतिराम को मल्हूज़ रखते हुए ज़रूरत के वक़्त उसमें हँसना और मुस्कुराना भी जाइज़ है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، عَنْ زَكَرِيَّاءَ، كِلاَهُمَا عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا صَلَّى الْفَجْرَ جَلَسَ فِي مُصَلاَّهُ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ حَسَنًا .

(1526) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़े फ़ज्र पढ़ने के बाद सूरज के अच्छी तरह निकलने तक अपने मुसल्ले पर ही तशरीफ़ फ़रमा रहते थे।

(अबू दाऊद : 4850)

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، كِلاَهُمَا عَنْ سِمَاكٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَلَمْ يَقُولاَ حَسَنًا .

(1527) इमाम मुस्लिम ने मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत अपने दूसरे उस्तादों से बयान की है लेकिन उसमें (हसनन) अच्छी तरह निकलने के अल्फ़ाज़ नहीं हैं।

(तिर्मिज़ी : 585, नसाई : 3/80)

وَحَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مَعْرُوفٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ، - حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي ذُبَابٍ، فِي رِوَايَةِ هَارُونَ - وَفِي حَدِيثِ الأَنْصَارِيِّ حَدَّثَنِي الْحَارِثُ - عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مِهْرَانَ مَوْلَى أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَحَبُّ الْبِلاَدِ إِلَى اللَّهِ مَسَاجِدُهَا وَأَبْغَضُ الْبِلاَدِ إِلَى اللَّهِ أَسْوَاقُهَا " .

(1528) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला को तमाम जगहों से पसंद जगह मस्जिदें हैं और सबसे ज़्यादा नापसंद जगहें बाज़ार हैं।'

फ़ायदा : अल्लाह तआला को ऐसे मक़ामात पसंद हैं जहाँ लोग उसकी याद में मसरूफ़ हों, ज़िक्र व अज़कार करें, तस्बीह व तहमीद और तहलील व तकबीर में मशग़ूल हों। किताबो-सुन्नत की तालीम व तदरीस या पढ़ने में लगे हों और ये काम सबसे ज़्यादा मसाजिद में होते हैं। इसलिये मसाजिद सब जगहों से पसन्दीदा हैं। इसके बरख़िलाफ़ बाज़ार उमूमन ज़िक्रे इलाही से ख़ाली होते हैं, हर वक़्त शोर व शग़ब बर्पा रहता है, खुले आम झूठ, झूठी क़समें, धोखा, जअलसाज़ी, आमेज़िश (मिलावट), नाजाइज़ कारोबार उरूज पर होते हैं, अहकामे शरीअत की खुले आम मुख़ालिफ़त होती है इसलिये ये जगहें अल्लाह तआला को पसंद नहीं हैं।

बाब 54 : इमामत का हक़दार कौन है

باب مَنْ أَحَقُّ بِالإِمَامَةِ

(1529) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तीन नमाज़ी हों तो उनमें से एक इमाम बने और उनमें इमामत का हक़दार वो है जो क़ुरआन मजीद की ख़ूब तिलावत करता है।'

(नसाई : 2/77, 839)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا كَانُوا ثَلاَثَةً فَلْيَؤُمَّهُمْ أَحَدُهُمْ وَأَحَقُّهُمْ بِالإِمَامَةِ أَقْرَؤُهُمْ " .

फ़ायदा : इस हदीस़ से साबित होता है कि इमामत का हक़दार वो इंसान है जिसे क़ुरआन मजीद के साथ ख़ास शग़फ़ व ताल्लुक़ हो और वो इसकी कस़रत के साथ (ज़्यादा से ज़्यादा) तिलावत करता हो, लेकिन इसमें इख़्तिलाफ़ है कि क्या क़िरअत से मुराद सिर्फ़ हिफ़्ज़े क़ुरआन और उसकी कस़रत के साथ तिलावत है या इससे मुराद हिफ़्ज़े क़ुरआन के साथ इसका इल्म व फ़हम भी है। इमाम अहमद के नज़दीक सिर्फ़ क़ारी मुक़द्दम है और बाक़ी अइम्मा के नज़दीक क़ुरआन का इल्म व फ़हम रखने वाला आलिम मुक़द्दम है। अगर क़ारी आलिम भी हो तो उसके मुक़द्दम होने में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है।

(1530) इमाम मुस्लिम ने दूसरे उस्तादों से भी क़तादा की मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي عَرُوبَةَ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ،

حَدَّثَنَا مُعَاذٌ، - وَهُوَ ابْنُ هِشَامٍ - حَدَّثَنِي أَبِي كُلُّهُمْ، عَنْ قَتَادَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(1531) इमाम मुस्लिम ने और उस्तादों से यही रिवायत बयान की है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا سَالِمُ بْنُ نُوحٍ، ح وَحَدَّثَنَا حَسَنُ بْنُ عِيسَى، حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، جَمِيعًا عَنِ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(1532) हज़रत अबू मसऊद अन्सारी (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'लोगों की इमामत वो शख़्स करे जो उनमें सबसे ज़्यादा अल्लाह की किताब पढ़ने वाला हो और अगर उसमें सब यकसाँ (बराबर) हों तो उनमें जो सबसे ज़्यादा सुन्नत का इल्म रखता हो, पस अगर सुन्नत में भी सब बराबर हों तो वो जिसने सबसे पहले हिज्रत की हो और अगर हिज्रत में भी सब बराबर हों तो वो इमामत करवाये जो सबसे पहले मुसलमान हुआ और कोई आदमी दूसरे आदमी के इक़्तिदार की जगह में इमामत न कराये और न ही उसके घर में उसकी इजाज़त के बग़ैर उसकी मख़सूस जगह पर बैठे।' अशज ने अपनी रिवायत में सिल्मन् की जगह सिन्नन् कहा यानी उम्र में ज़्यादा हो।

(अबू दाऊद : 582, 583, 584, तिर्मिज़ी : 235, नसाई : 2/76, 2/77, इब्ने माजह : 980)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ كِلاَهُمَا عَنْ أَبِي خَالِدٍ، - قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، - عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ رَجَاءٍ، عَنْ أَوْسِ بْنِ ضَمْعَجٍ، عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَؤُمُّ الْقَوْمَ أَقْرَؤُهُمْ لِكِتَابِ اللَّهِ فَإِنْ كَانُوا فِي الْقِرَاءَةِ سَوَاءً فَأَعْلَمُهُمْ بِالسُّنَّةِ فَإِنْ كَانُوا فِي السُّنَّةِ سَوَاءً فَأَقْدَمُهُمْ هِجْرَةً فَإِنْ كَانُوا فِي الْهِجْرَةِ سَوَاءً فَأَقْدَمُهُمْ سِلْمًا وَلاَ يَؤُمَّنَّ الرَّجُلُ الرَّجُلَ فِي سُلْطَانِهِ وَلاَ يَقْعُدْ فِي بَيْتِهِ عَلَى تَكْرِمَتِهِ إِلاَّ بِإِذْنِهِ " . قَالَ الأَشَجُّ فِي رِوَايَتِهِ مَكَانَ سِلْمًا سِنًّا .

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) सिल्मन : इस्लाम लाना, मुसलमान होना। सुल्तान सियादत व हुकूमत। **(2) तक्रिमतिही :** उसकी इज़्ज़त व तकरीम की जगह, किसी की मस्नद। यानी मुस्तक़िल इमाम की इजाज़त के बग़ैर उसकी जगह पर इमामत नहीं करवाई जा सकती और किसी के घर उसकी मख़सूस जगह पर उसकी इजाज़त के बग़ैर बैठा नहीं जा सकता।

फ़ायदा : अहदे नबवी में फ़ज़ीलत का मदार दीन व तक़वा था। इसलिये सबसे पहला मैयार फ़ज़ीलते कुरआन मजीद के साथ शग़फ़ व ताल्लुक़ था। नमाज़ की इमामत के लिये ज़्यादा अहल और मौज़ूँ वो शख़्स है जो किताबुल्लाह के साथ शग़फ़ व रब्त में दूसरों से फ़ाइक़ (ऊँचा) हो। फ़ज़ीलत का दूसरा मैयार सुन्नत का इल्म है और ज़ाहिर है अगर अक़रउ से मुराद किताबुल्लाह का इल्म रखने वाला हो तो फिर जो सुन्नत का ज़्यादा इल्म रखता होगा वही कुरआन का ज़्यादा इल्म रखता होगा। क्योंकि सुन्नत ही कुरआन की शारेह (तशरीह) और मुफ़स्सिर है और नबी (ﷺ) से जो कुरआन पढ़ते थे आप (ﷺ) उनको उसके हक़ाइक़ व मआरिफ़ और उस पर अमल का तरीक़ा भी बताते थे। आप (ﷺ) के दौर में तीसरा मैयारे फ़ज़ीलत हिज्रत में मुक़द्दम होना था, अब ये चीज़ बाक़ी नहीं रही। इसलिये उलमा ने इसकी जगह सलाह व तक़वा में फ़ौक़ियत व बरतरी को तीसरा मैयार क़रार दिया है। तरजीह का चौथा मैयार आपने उसमें पहले इस्लाम लाने को क़रार दिया है और अगली हदीस में उम्र में बुज़ुर्गी को मैयार क़रार दिया है यानी उसको मुसलमान हुए ज़्यादा अरसा हो चुका हो। ख़ुलासए कलाम ये है कि जमाअत में जो शख़्स सबसे बेहतर और अफ़ज़ल हो उसको इमाम बनाया जाये। आज-कल इस अहम हिदायत से ग़फ़लत बरती जा रही है। इसलिये उम्मत में बहुत सी ख़राबियों ने राह बना ली है और उम्मत का शीराज़ा बिखर गया।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، وَأَبُو مُعَاوِيَةَ ح وَحَدَّثَنَا الأَشَجُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(1533) इमाम मुस्लिम ने अपने बहुत से दूसरे उस्तादों से भी मज़्कूरा बाला रिवायत को बयान किया है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ رَجَاءٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَوْسَ بْنَ ضَمْعَجٍ، يَقُولُ سَمِعْتُ أَبَا مَسْعُودٍ، يَقُولُ قَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَؤُمُّ الْقَوْمَ أَقْرَؤُهُمْ لِكِتَابِ اللَّهِ

(1534) अबू मसऊद (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें फ़रमाया, 'लोगों की इमामत वो शख़्स कराये जो उनमें सबसे ज़्यादा किताबुल्लाह का पढ़ने वाला हो और क़िरअत में सबसे आगे हो। अगर वो क़िरअत में बराबर हों तो उनका इमाम वो शख़्स बने जो हिज्रत में सबसे आगे हो। अगर हिज्रत में बराबर हों तो उनकी इमामत वो शख़्स करे जो

وَأَقْدَمُهُمْ قِرَاءَةً فَإِنْ كَانَتْ قِرَاءَتُهُمْ سَوَاءً فَلْيَؤُمَّهُمْ أَقْدَمُهُمْ هِجْرَةً فَإِنْ كَانُوا فِي الْهِجْرَةِ سَوَاءً فَلْيَؤُمَّهُمْ أَكْبَرُهُمْ سِنًّا وَلاَ تَؤُمَّنَّ الرَّجُلَ فِي أَهْلِهِ وَلاَ فِي سُلْطَانِهِ وَلاَ تَجْلِسْ عَلَى تَكْرِمَتِهِ فِي بَيْتِهِ إِلاَّ أَنْ يَأْذَنَ لَكَ أَوْ بِإِذْنِهِ " .

उनमें उम्र में बड़ा हो और किसी आदमी की उसके घर में और उसके इक़्तिदार में इमामत न करो और न उसके घर में उसकी इज़्ज़त व तक्रीम की जगह पर बैठो, मगर ये कि वो तुम्हें इजाज़त दे दे या उसकी इजाज़त से हो।'

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ، قَالَ أَتَيْنَا رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَنَحْنُ شَبَبَةٌ مُتَقَارِبُونَ فَأَقَمْنَا عِنْدَهُ عِشْرِينَ لَيْلَةً وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَحِيمًا رَقِيقًا فَظَنَّ أَنَّا قَدِ اشْتَقْنَا أَهْلَنَا فَسَأَلَنَا عَنْ مَنْ تَرَكْنَا مِنْ أَهْلِنَا فَأَخْبَرْنَاهُ فَقَالَ " ارْجِعُوا إِلَى أَهْلِيكُمْ فَأَقِيمُوا فِيهِمْ وَعَلِّمُوهُمْ وَمُرُوهُمْ فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلاَةُ فَلْيُؤَذِّنْ لَكُمْ أَحَدُكُمْ ثُمَّ لْيَؤُمَّكُمْ أَكْبَرُكُمْ " .

(1535) हज़रत मालिक बिन हुवेरिस़ (रज़ि.) बयान करते हैं कि हम हम उम्र नौजवान रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हम आप (ﷺ) के पास बीस दिन ठहरे। रसूलुल्लाह (ﷺ) बहुत मेहरबान और नर्म दिल थे तो आपने ख़याल किया कि हम अपने घर वालों को चाहने लगे हैं, यानी हम घर जाना चाहते हैं तो आपने हमसे पूछा, हम किन घर वालों को छोड़कर आये हैं? तो हमने आपको बता दिया। आपने फ़रमाया, 'अपने ख़ानदान के पास लौट जाओ और उन्हीं में ठहरो, उन्हें तालीम दो और उन्हें हुक्म दो जब नमाज़ का वक़्त हो जाये तुममें से एक अज़ान कहे। फिर तुममें से जो बड़ा हो वो तुम्हारा इमाम बने।'

(सहीह बुख़ारी : 630-631, 628, 658, 685, 819, 2847, 6008, 7246, अबू दाऊद : 589, तिर्मिज़ी : 205, नसाई : 2/8-9, 2/77, 2/9, 2/21, इब्ने माजह : 979)

फ़ायदा : हज़रत मालिक बिन हुवेरिस़ (रज़ि.) चूंकि तक़रीबन हम उम्र साथियों के साथ नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हुसूले तालीम के लिये हाज़िर हुए थे और सबने बराबर तालीम हासिल की। इसलिये आप (ﷺ) ने वजहे तरजीह उम्र में बुज़ुर्गी को क़रार दिया।

(1536) इमाम मुस्लिम ने यही रिवायत एक दूसरे उस्ताद से बयान की है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، وَخَلَفُ بْنُ هِشَامٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(1537) हज़रत अबू सुलैमान मालिक बिन हुवेरिस़ (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैं कुछ लोगों के साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हम लोग तक़रीबन हम उम्र नौजवान थे। फिर मज़्कूरा रिवायत के हम मानी रिवायत बयान की।

وَحَدَّثَنَاهُ ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، عَنْ أَيُّوبَ، قَالَ قَالَ لِي أَبُو قِلاَبَةَ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ أَبُو سُلَيْمَانَ، قَالَ أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي نَاسٍ وَنَحْنُ شَبَبَةٌ مُتَقَارِبُونَ . وَاقْتَصَّا جَمِيعًا الْحَدِيثَ بِنَحْوِ حَدِيثِ ابْنِ عُلَيَّةَ .

(1538) हज़रत मालिक बिन हुवेरिस़ (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैं और मेरा दोस्त नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो जब हमने आप (ﷺ) के यहाँ से वापस जाने का इरादा किया, आपने हमें फ़रमाया, 'जब नमाज़ का वक़्त हो जाये तो अज़ान का इन्तिज़ाम करना, फिर इक़ामत कहना और जो तुममें से बड़ा है वो इमामत कराये।'

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، عَنْ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ، قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم أَنَا وَصَاحِبٌ لِي فَلَمَّا أَرَدْنَا الإِقْفَالَ مِنْ عِنْدِهِ قَالَ لَنَا " إِذَا حَضَرَتِ الصَّلاَةُ فَأَذِّنَا ثُمَّ أَقِيمَا وَلْيَؤُمَّكُمَا أَكْبَرُكُمَا " .

फ़ायदा : सफ़र में भी अज़ान और जमाअ़त का एहतिमाम करना चाहिये। मुअज़्ज़िन के लिये बेहतर और अफ़ज़ल होना शर्त नहीं है, इमामत का हक़दार अफ़ज़ल और बेहतर ही है। आते वक़्त सब साथी इकट्ठे आये, जाते वक़्त सबसे आख़िर में आप (ﷺ) को अल्विदाअ़ कहने वाले ये दोनों साथी थे, इसलिये आपने इनको ख़ुसूसी हिदायत दीं।

(1539) इमाम मुस्लिम एक दूसरे उस्ताद से यही रिवायत बयान करते हैं जिसके आख़िर में है, ख़ालिद हज़्ज़ा ने कहा, ये दोनों क़िरअत में बराबर थे।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، حَدَّثَنَا حَفْصٌ، - يَعْنِي ابْنَ غِيَاثٍ - حَدَّثَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَزَادَ قَالَ الْحَذَّاءُ وَكَانَا مُتَقَارِبَيْنِ فِي الْقِرَاءَةِ .

बाब 55 : जब मुसलमान किसी मुसीबत में मुब्तला हों तो तमाम नमाज़ों में दुआए क़ुनूत पढ़ना बेहतर है

باب اسْتِحْبَابِ الْقُنُوتِ فِي جَمِيعِ الصَّلاَةِ إِذَا نَزَلَتْ بِالْمُسْلِمِينَ نَازِلَةٌ

(1540) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जिस वक़्त सुबह की नमाज़ की क़िरअत से फ़ारिग़ होकर अल्लाहु अकबर कहते और (रुकूअ से) सर उठाते तो फ़रमाते, समिअल्लाहु लिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द अल्लाह तआला की जिसने हम्द की उसने उसको सुन लिया। ऐ हमारे रब! हम्द का हक़दार तू ही है। फिर खड़े-खड़े दुआ करते, ऐ अल्लाह! वलीद बिन वलीद, सलमा बिन हिशाम, अय्याश बिन अबी रबीआ और कमज़ोर समझे जाने वाले मोमिनों को निजात दे। ऐ अल्लाह! मुज़रियों को सख़्त तरीक़े से रौंद डाल और ये पकड़ यूसुफ़ (अलै.) के दौर की ख़ुश्कसाली की सूरत में हो। ऐ अल्लाह! लिहयान, रिअल, ज़कवान और उसय्या जिसने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की, पर लानत फ़रमा। फिर हमको ख़बर पहुँची कि जब ये आयत उतरी, 'आपको इस मामले में कोई इख़्तियार नहीं है, अल्लाह चाहे तो उनकी तौबा कुबूल कर ले, चाहे तो उनको अज़ाब दे क्योंकि वो ज़ालिम हैं।' (सूरह आले इमरान : 128) तो आप (ﷺ) ने ये दुआ छोड़ दी।

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، وَحَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ بْنُ يَزِيدَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّهُمَا سَمِعَا أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ حِينَ يَفْرُغُ مِنْ صَلاَةِ الْفَجْرِ مِنَ الْقِرَاءَةِ وَيُكَبِّرُ وَيَرْفَعُ رَأْسَهُ " سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ " . ثُمَّ يَقُولُ وَهُوَ قَائِمٌ " اللَّهُمَّ أَنْجِ الْوَلِيدَ بْنَ الْوَلِيدِ وَسَلَمَةَ بْنَ هِشَامٍ وَعَيَّاشَ بْنَ أَبِي رَبِيعَةَ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهُمَّ اشْدُدْ وَطْأَتَكَ عَلَى مُضَرَ وَاجْعَلْهَا عَلَيْهِمْ كَسِنِي يُوسُفَ اللَّهُمَّ الْعَنْ لِحْيَانَ وَرِعْلاً وَذَكْوَانَ وَعُصَيَّةَ عَصَتِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ " . ثُمَّ بَلَغَنَا أَنَّهُ تَرَكَ ذَلِكَ لَمَّا أُنْزِلَ { لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَىْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ} .

फ़ायदा : जब मुसलमान किसी मुसीबत का शिकार हों जैसे दुश्मन का ख़ौफ़ हो, ख़ुश्कसाली हो, कोई वबा फैल जाये तो तमाम नमाज़ों में कुनूते नाज़िला करना बेहतर है। इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद (रह.) का यही मौक़िफ़ है। लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा और साहिबैन के नज़दीक, कुनूते नाज़िला नमाज़ों में मन्सूख़ है। अ़ल्लामा इब्ने हम्माम ने कुनूते नाज़िला को शरीअ़ते मुस्तमिर्रह क़रार दिया है। क्योंकि ये ख़ुलफ़ाए राशिदीन से साबित है और बिअ्रे मऊ़ना में शहीद होने वाले सत्तर क़ारियों के लिये आप (ﷺ) ने एक माह तक दुआ फ़रमाई और फिर छोड़ दी, क्योंकि मक़सद पूरा हो गया था। इसलिये कुनूते नाज़िला का ताल्लुक़ ज़रूरत से है, अगर मुसलमान ख़ौफ़ज़दा हों, मुसीबत से दोचार हों तो दुआ की जायेगी वरना नहीं।

नोट : लैस लक मिनल अम्रि शैअ आयत से साबित होता है कि आप (ﷺ) मुख़्तारे कुल मुत्लक़ नहीं हैं। अ़ल्लामा सईदी ने इसका जवाब देने की कोशिश की है लेकिन जवाब की बजाए ग़ैर शऊरी तौर पर इस बात को तस्लीम कर लिया है। अ़ल्लामा आलूसी हनफ़ी की इबारत नक़ल करके तर्जुमा लिखते हैं, आप (ﷺ) उनको तौबा के लिये मजबूर करने पर क़ादिर नहीं, न तौबा से रोकने पर, अ़ज़ाब देने पर क़ादिर हैं न माफ़ करने पर, ये तमाम उमूर अल्लाह तआ़ला के इख़्तियार में है।

अ़ल्लामा इस्माईल हनफ़ी की इबारत नक़ल करके तर्जुमा लिखते हैं, आयत का मानी ये है कि कुफ़्फ़ार के मामलात का अल्लाह तआ़ला अ़लल इत्लाक़ (मुकम्मल तौर पर) मालिक है ख़्वाह उन्हें हलाक कर दे या सज़ा दे, इस्लाम लाने पर उनकी तौबा क़ुबूल करे या इस्लाम न लाने पर उनको अ़ज़ाबे उख़रवी दे। आप (ﷺ) इन मामलात के मालिक नहीं हैं। (शरह सहीह मुस्लिम : 2/329)

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم إِلَى قَوْلِهِ " وَاجْعَلْهَا عَلَيْهِمْ كَسِنِي يُوسُفَ " . وَلَمْ يَذْكُرْ مَا بَعْدَهُ .

(1541) इमाम मुस्लिम यही रिवायत दूसरी सनद से बयान करते हैं लेकिन उसमें अल्लाहुम्मल अ़न लिहयान व रिअ़्लन से आख़िर तक का हिस्सा बयान नहीं करते।
(सहीह बुख़ारी : 6200, इब्ने माजह : 1244)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِهْرَانَ الرَّازِيُّ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ،

(1542) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ में रुकूअ़ के बाद एक माह तक कुनूत किया जब आप समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह कहते तो ये

حَدَّثَهُمْ أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَنَتَ بَعْدَ الرَّكْعَةِ فِي صَلاَةٍ شَهْرًا إِذَا قَالَ " سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ " . يَقُولُ فِي قُنُوتِهِ " اللَّهُمَّ أَنْجِ الْوَلِيدَ بْنَ الْوَلِيدِ اللَّهُمَّ نَجِّ سَلَمَةَ بْنَ هِشَامٍ اللَّهُمَّ نَجِّ عَيَّاشَ بْنَ أَبِي رَبِيعَةَ اللَّهُمَّ نَجِّ الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهُمَّ اشْدُدْ وَطْأَتَكَ عَلَى مُضَرَ اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا عَلَيْهِمْ سِنِينَ كَسِنِي يُوسُفَ " . قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ ثُمَّ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ تَرَكَ الدُّعَاءَ بَعْدُ فَقُلْتُ أُرَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَدْ تَرَكَ الدُّعَاءَ لَهُمْ - قَالَ - فَقِيلَ وَمَا تَرَاهُمْ قَدْ قَدِمُوا.

दुआ-ए-कुनूत पढ़ते। ऐ अल्लाह! वलीद बिन वलीद को निजात दे, ऐ अल्लाह! सलमा बिन हिशाम को निजात दे, ऐ अल्लाह! अ़य्याश बिन अबी रबीआ़ को निजात दे। ऐ अल्लाह! कमज़ोर मुसलमानों को निजात दे, ऐ अल्लाह! मुज़रियों को बड़ी शिद्दत से रोंद डाल। ऐ अल्लाह! उन पर यूसुफ़ के दौर का क़हत मुसल्लत कर दे।' अबू हुरैरह (रज़ि.) कहते हैं, फिर मैंने बाद में रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि आपने उन लोगों के हक़ में दुआ़ करना छोड़ दिया है तो मुझे बताया गया कि तुम देख नहीं रहे हो कि ये लोग आ चुके हैं।

(अबू दाऊद : 1442)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) वत्अतक : वता पामाली करना, रोंदना, मक़सद ये है उनकी पकड़ फ़रमा। **(2) सिनीन :** सिनह की जमा है ये लफ़्ज़ क़हतसाली के लिये इस्तेमाल होता है। मक़सद ये है कि उनको क़हतसाली से दोचार फ़रमा। **(3) क़द क़दिमू :** वो आ चुके हैं, कुछ हज़रात ने इसका तर्जुमा मातू किया है जो दुरुस्त नहीं है क्योंकि सलमा बिन हिशाम 14 हिजरी में फ़ौत हुए हैं और अ़य्याश बिन अबी रबीआ़ 15 हिजरी में। सिर्फ़ वलीद बिन वलीद आपकी ख़िदमत में पहुँचते ही वफ़ात पा गये थे।

फ़ायदा : इस हदीस़ से स़ाबित हुआ कि मुसलमान क़ैदियों की ख़ुलासी और निजात के लिये नमाज़ में दुआ़ की जा सकती है। वलीद बिन वलीद, ख़ालिद बिन वलीद के भाई हैं। सलमा बिन हिशाम, अबू जहल का भाई है और अ़य्याश बिन अबी रबीआ़ भी अबू जहल का माँ की तरफ़ से भाई है। ये तीनों मुश्रिकीने मक्का की क़ैद में थे। आप (ﷺ) की दुआ़ के नतीजे में मुश्रिकों की क़ैद से छूटकर भाग आये और उनकी आमद के बाद आपने दुआ़ छोड़ दी। इसलिये दुआ़ छोड़ने से इसका मन्सूख़ होना कैसे स़ाबित हुआ। ये तो मक़सद पूरा होने की बिना पर छोड़ दी गई थी।

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ

(1543) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इशा की नमाज़

مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَيْنَمَا هُوَ يُصَلِّي الْعِشَاءَ إِذْ قَالَ " سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ " . ثُمَّ قَالَ قَبْلَ أَنْ يَسْجُدَ " اللَّهُمَّ نَجِّ عَيَّاشَ بْنَ أَبِي رَبِيعَةَ " . ثُمَّ ذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ الأَوْزَاعِيِّ إِلَى قَوْلِهِ " كَسِنِي يُوسُفَ " . وَلَمْ يَذْكُرْ مَا بَعْدَهُ .

पढ़ा रहे थे कि आपने समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहा, फिर सज्दा करने से पहले ये दुआ की, 'ऐ अल्लाह! अय्याश बिन अबी रबीआ को निजात दे।' फिर मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की। लेकिन उसमें क़ाल अबू हुरैरह सुम्म रएतु अल्अख़ वाला हिस्सा नक़ल नहीं किया।

(सहीह बुख़ारी : 4598)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ وَاللَّهِ لأُقَرِّبَنَّ بِكُمْ صَلاَةَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَكَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ يَقْنُتُ فِي الظُّهْرِ وَالْعِشَاءِ الآخِرَةِ وَصَلاَةِ الصُّبْحِ وَيَدْعُو لِلْمُؤْمِنِينَ وَيَلْعَنُ الْكُفَّارَ .

(1544) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ के क़रीब-क़रीब नमाज़ पढ़ाऊँगा। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ज़ुहर, इशा और सुबह की नमाज़ में क़ुनूत करते थे, मोमिनों के हक़ में दुआ करते और काफ़िरों पर लानत भेजते।

(सहीह बुख़ारी : 797, अबू दाऊद : 1440, नसाई : 2/202)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ دَعَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى الَّذِينَ قَتَلُوا أَصْحَابَ بِئْرِ مَعُونَةَ ثَلاَثِينَ صَبَاحًا يَدْعُو عَلَى رِعْلٍ وَذَكْوَانَ وَلِحْيَانَ وَعُصَيَّةَ عَصَتِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ . قَالَ أَنَسٌ أَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ فِي الَّذِينَ قُتِلُوا بِبِئْرِ

(1545) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तीस दिन उन लोगों के ख़िलाफ़ दुआ की जिन्होंने बिअ्रे मऊना के लोगों को क़त्ल (शहीद) कर दिया था। आप रिअ्ल, ज़कवान, लिहयान और उसय्या के लोग जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की, के ख़िलाफ़ दुआ करते। हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि अल्लाह तआला ने बिअ्रे मऊना के वाक़िये में शहीद होने वाले लोगों के बारे में ये

مَعُونَةَ قُرْآنًا قَرَأْنَاهُ حَتَّى نُسِخَ بَعْدُ أَنْ بَلِّغُوا قَوْمَنَا أَنْ قَدْ لَقِينَا رَبَّنَا فَرَضِيَ عَنَّا وَرَضِينَا عَنْهُ .

आयत उतारी, 'हमारी क़ौम तक ये पैग़ाम पहुँचा दो कि हम अपने रब से जा मिले, वो हमसे ख़ुश हुआ और हम उससे राज़ी हैं।' हमने इस आयत की तिलावत की, बाद में ये आयत मन्सूख़ हो गई।

(सहीह बुख़ारी : 4095, 2814)

फ़ायदा : सफ़र 4 हिजरी में अबू बराअ आमिर बिन मालिक जो मुल्ला अबल असनह के नाम से मारूफ़ था और अपनी क़ौम का सरदार था, इलाक़े नजद से। नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आपने उसे इस्लाम की दावत दी। मगर उसने न उसे कुबूल किया न रद्द और आपको बड़े मुख़्लिसाना अन्दाज़ में ये मशवरा दिया कि आप अपने कुछ साथियों को मेरे इलाक़े में भेजें, उम्मीद है लोग इस्लाम कुबूल कर लेंगे और आपके लोग मेरी पनाह में होंगे। आपने तालीम व तब्लीग़ के लिये सत्तर क़ारी भेजे ताकि वो मुअल्लिम और दाई का फ़रीज़ा सर अन्जाम दें। आपने उनका अमीर मुनन्ज़िर बिन अम्र को मुक़र्रर किया। आपने अबू बराअ के भतीजे आमिर बिन तुफ़ैल के नाम ख़त दिया था जब ये वफ़्द बिअ्रे मऊना नामी जगह पर पहुँचा तो वहाँ से हराम बिन मल्हान रसूलुल्लाह (ﷺ) का ख़त लेकर आमिर बिन तुफ़ैल की तरफ़ रवाना हुए। उसने ख़त देखे बग़ैर ही अपने आदमी को इशारा कर के उनको क़त्ल करवा दिया। फिर अपनी क़ौम बनू आमिर को कहा कि मदीना से आने वाले लोगों पर हमला करो। लेकिन उन्होंने अपने सरदार अबू बुरदा के अहद को तोड़ना गवारा न किया। तब उसने बनू सुलैम की शाख़ों यानी रिअ्ल, ज़कवान, लिहयान और उसय्या को इस काम पर आमादा किया। उन लोगों ने मुसलमान क़ारियों को शहीद कर दिया। सिर्फ़ दो आदमी ज़िन्दा बचे। आपको इस वाक़िये की इत्तिलाअ मिली तो आपको बेहद दुख हुआ और आपने उन क़बाइल के ख़िलाफ़ एक माह तक कुनूते नाज़िला फ़रमाई।

उन शुहदा की ख़्वाहिश पर अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इस वाक़िये की इत्तिलाअ दी और उनका पैग़ाम पहुँचा दिया। जिसको वक़्ती तौर पर पढ़ा गया, फिर वो मन्सूख़ हो गया। मन्सूख़ शुदा आयात चूंकि अब कुरआन में नहीं है, इसलिये वो तवातुर से साबित नहीं है।

नोट : इस वाक़िये बिअ्रे मऊना से साबित होता है कि आपको इल्मे ग़ैब न था। वरना आप अबू बराअ के कहने पर सत्तर मुन्तख़ब लोगों को उसके इलाक़े में न भेजते। लेकिन अल्लामा सईदी इसका इन्तिहाई मज़हका ख़ैज़ (मज़ाक़िया अन्दाज़ में) जवाब देते हैं कि आपको उनकी शहादत का इल्म था। आपने अहले नजद के मुतालबे तब्लीग़ पर उन्हें नजद भेज दिया ताकि कल क़यामत के दिन वो ये न

कह सकें कि हमने तो कुबूले इस्लाम के लिये तेरे नबी से मुबल्लिग़ माँगे थे, उसने नहीं भेजे। (शरह सहीह मुस्लिम : 2/332)

हालांकि ऊपर ये लिखा है कि आपने अबू बराअ के कहने पर सहाबा किराम (रज़ि.) को भेजा था और उसने उनकी हिफ़ाज़त की ज़मानत दी, उसकी ज़मानत पर भेजा था। फिर अगर आपको मालूम था तो आपने इस क़द्र रंज व मलाल का इज़हार क्यों फ़रमाया और एक माह तक उनके ख़िलाफ़ बद्दुआ क्यों फ़रमाई। यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने आपको रोक दिया और ये लोग अहले नजद तक तो पहुँचे ही नहीं। बिअ्रे मऊना तो मक्का और असफ़ान के दरम्यान हुज़ैल का इलाक़ा है। आमिर बिन तुफ़ैल ने तो उनको रास्ते में ही रोक लिया था।

(1546) इमाम मुहम्मद बिन सीरीन बयान करते हैं कि मैंने हज़रत अनस (रज़ि.) से पूछा, क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सुबह की नमाज़ में कुनूत की है? उन्होंने जवाब दिया, हाँ! कुछ अरसा, रुकूअ के बाद।
(सहीह बुख़ारी : 1001, अबू दाऊद : 1444, नसाई : 2/200-201, इब्ने माजह : 1184)

وَحَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ مُحَمَّدٍ، قَالَ قُلْتُ لأَنَسٍ هَلْ قَنَتَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي صَلاَةِ الصُّبْحِ قَالَ نَعَمْ بَعْدَ الرُّكُوعِ يَسِيرًا .

(1547) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक माह सुबह की नमाज़ में रुकूअ के बाद दुआ-ए-कुनूत की है। रिअ्ल और ज़कवान के ख़िलाफ़ दुआ की और फ़रमाया, 'उसय्या ने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की है।'
(सहीह बुख़ारी : 1003, 4094, नसाई : 2/200)

وَحَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، وَأَبُو كُرَيْبٍ وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ مُعَاذٍ - حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي مِجْلَزٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَنَتَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم شَهْرًا بَعْدَ الرُّكُوعِ فِي صَلاَةِ الصُّبْحِ يَدْعُو عَلَى رِعْلٍ وَذَكْوَانَ وَيَقُولُ " عُصَيَّةُ عَصَتِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ " .

(1548) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़ज्र की नमाज़ में रुकूअ के बाद एक महीना कुनूत की, बनू उसय्या के ख़िलाफ़ बद दुआ।
(अबू दाऊद : 1445)

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا بَهْزُ بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، أَخْبَرَنَا أَنَسُ بْنُ سِيرِينَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَنَتَ شَهْرًا بَعْدَ الرُّكُوعِ فِي صَلاَةِ الْفَجْرِ يَدْعُو عَلَى بَنِي عُصَيَّةَ .

(1549) आसिम बयान करते हैं, मैंने हज़रत अनस (रज़ि.) से क़ुनूत के बारे में सवाल किया कि वो रुकूअ से पहले है या रुकूअ के बाद है? तो उन्होंने जवाब दिया, रुकूअ से पहले है। तो मैंने कहा, कुछ लोग ख़्याल करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़ुनूत रुकूअ के बाद की है? तो उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (रुकूअ के बाद) एक महीना क़ुनूत किया, उन लोगों के ख़िलाफ़ दुआ की जिन्होंने आप(ﷺ) के कुछ साथियों को जिन्हें क़ुर्रा कहा जाता था, क़त्ल कर दिया था।

(सहीहबुख़ारी: 1002, 1300, 3170, 4096, 6394)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ سَأَلْتُهُ عَنِ الْقُنُوتِ، قَبْلَ الرُّكُوعِ أَوْ بَعْدَ الرُّكُوعِ فَقَالَ قَبْلَ الرُّكُوعِ . قَالَ قُلْتُ فَإِنَّ نَاسًا يَزْعُمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَنَتَ بَعْدَ الرُّكُوعِ . فَقَالَ إِنَّمَا قَنَتَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم شَهْرًا يَدْعُو عَلَى أُنَاسٍ قَتَلُوا أُنَاسًا مِنْ أَصْحَابِهِ يُقَالُ لَهُمُ الْقُرَّاءُ .

फ़ायदा : हज़रत अनस (रज़ि.) के जवाब से मालूम होता है आप क़ुनूत हमेशा रुकूअ के बाद नहीं करते थे। आपने रुकूअ से पहले भी क़ुनूत की है। इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद (रह.) रुकूअ के बाद दुआए क़ुनूत करने के क़ाइल हैं। सहीह रिवायात की रोशनी में क़ुनूते नाज़िला रुकूअ के बाद बुलंद आवाज़ से है। इसमें हाथ उठाये जायेंगे और मुक़्तदी आमीन कहेंगे। वित्र में क़ुनूत इमाम अहमद के नज़दीक रसूलुल्लाह (ﷺ) से साबित नहीं है लेकिन नसाई और इब्ने माजह की रिवायत है कि आप वित्र में रुकूअ से पहले क़ुनूत करते थे। इब्ने हिब्बान की रिवायत में है कि आपने हज़रत हसन (रज़ि.) को वित्र में रुकूअ के बाद क़ुनूत सिखाया।

(1550) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को किसी जमाअत (की शहादत) पर इस क़द्र ग़मज़दा नहीं देखा, जिस क़द्र आप ग़मगीन उन सत्तर आदमियों पर हुए थे जो बिअ्रे मऊना के वाक़िये में शहीद हो गये। उनको क़ुर्रा के नाम से पुकारा जाता था। आप एक महीने तक उनके क़ातिलीन के ख़िलाफ़ दुआ करते रहे।

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَاصِمٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسًا، يَقُولُ مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَجَدَ عَلَى سَرِيَّةٍ مَا وَجَدَ عَلَى السَّبْعِينَ الَّذِينَ أُصِيبُوا يَوْمَ بِئْرِ مَعُونَةَ كَانُوا يُدْعَوْنَ الْقُرَّاءَ فَمَكَثَ شَهْرًا يَدْعُو عَلَى قَتَلَتِهِمْ .

(1551) ये रिवायत इमाम साहब दूसरे उस्तादों से भी बयान करते हैं जिसमें वो एक-दूसरे पर कुछ इज़ाफ़ा करते हैं।

وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا حَفْصٌ، وَابْنُ، فُضَيْلٍ ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا مَرْوَانُ، كُلُّهُمْ عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا الْحَدِيثِ . يَزِيدُ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ .

(1552) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने एक माह क़ुनूत की, रिअ्ल और ज़कवान और उसय्या जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की, उन पर लानत भेजते थे। (नसाई : 2/203)

وَحَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا الأَسْوَدُ بْنُ عَامِرٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَنَتَ شَهْرًا يَلْعَنُ رِعْلاً وَذَكْوَانَ وَعُصَيَّةَ عَصَوُا اللَّهَ وَرَسُولَهُ .

(1553) इमाम साहब ने मज़्कूरा बाला रिवायत के हम मानी रिवायत दूसरी सनद से बयान की है।

وَحَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا الأَسْوَدُ بْنُ عَامِرٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُوسَى بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِنَحْوِهِ .

(1554) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अ़रब के कुछ क़बाइल के ख़िलाफ़ एक माह दुआए क़ुनूत की, फिर उसे छोड़ दिया।

(सहीह बुख़ारी : 4089, नसाई : 1076, 1078, इब्ने माजह : 1243)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَنَتَ شَهْرًا يَدْعُو عَلَى أَحْيَاءٍ مِنْ أَحْيَاءِ الْعَرَبِ ثُمَّ تَرَكَهُ .

मुफ़रदातुल हदीस़ : अहयाइन : हय्य की जमा है, क़बीले को कहते हैं।

(1555) हज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह और मग़रिब की नमाज़ में दुआए क़ुनूत करते थे।

(अबूदाऊद : 1441, तिर्मिज़ी : 401, नसाई : 2/202)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي لَيْلَى، قَالَ حَدَّثَنَا الْبَرَاءُ بْنُ عَازِبٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَقْنُتُ فِي الصُّبْحِ وَالْمَغْرِبِ .

(1556) हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़ज्र और मग़रिब में दुआ-ए-क़ुनूत की।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنِ الْبَرَاءِ، قَالَ قَنَتَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي الْفَجْرِ وَالْمَغْرِبِ .

(1557) हज़रत ख़ुफ़ाफ़ बिन ईमा ग़िफ़ारी (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ में ये दुआ की, 'ऐ अल्लाह! बनू लिहयान, रिअ्ल, ज़कवान और उसय्या जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की है लानत भेज। ग़िफ़ार को अल्लाह तआला माफ़ फ़रमाये और अस्लम को सलामत रखे।'

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَحْمَدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ سَرْحٍ الْمِصْرِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنِ اللَّيْثِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ أَبِي أَنَسٍ، عَنْ حَنْظَلَةَ بْنِ عَلِيٍّ، عَنْ خُفَافِ بْنِ إِيمَاءٍ الْغِفَارِيِّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي صَلاَةٍ " اللَّهُمَّ الْعَنْ بَنِي لِحْيَانَ وَرِعْلاً وَذَكْوَانَ وَعُصَيَّةَ عَصَوُا اللَّهَ وَرَسُولَهُ غِفَارُ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا وَأَسْلَمُ سَالَمَهَا اللَّهُ " .

(1558) ख़ुफ़ाफ़ बिन ईमा (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रुकूअ किया, फिर उससे अपना सर उठाया और कहा, 'ग़िफ़ार को अल्लाह माफ़ फ़रमाये, अस्लम को महफ़ूज़ रखे। उसय्या ने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की। ऐ अल्लाह! बनू लिहयान पर लानत भेज और रिअ्ल और ज़कवान पर लानत नाज़िल कर।' फिर आपने सज्दा किया। ख़ुफ़ाफ़ ने कहा, इस बिना पर काफ़िरों पर लानत भेजी जाती है।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالَ ابْنُ أَيُّوبَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ أَخْبَرَنِي مُحَمَّدٌ، - وَهُوَ ابْنُ عَمْرٍو - عَنْ خَالِدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حَرْمَلَةَ، عَنِ الْحَارِثِ بْنِ خُفَافٍ، أَنَّهُ قَالَ قَالَ خُفَافُ بْنُ إِيمَاءٍ رَكَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ " غِفَارُ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا وَأَسْلَمُ سَالَمَهَا اللَّهُ وَعُصَيَّةُ عَصَتِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ اللَّهُمَّ الْعَنْ بَنِي لِحْيَانَ وَالْعَنْ رِعْلاً وَذَكْوَانَ " . ثُمَّ وَقَعَ سَاجِدًا . قَالَ خُفَافٌ فَجُعِلَتْ لَعْنَةُ الْكَفَرَةِ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ .

(1559) इमाम साहब एक दूसरी सनद से ख़ुफ़ाफ़ बिन ईमा (रज़ि.) की मज़्कूरा रिवायत बयान करते हैं लेकिन ख़ुफ़ाफ़ का ये

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ وَأَخْبَرَنِيهِ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ حَرْمَلَةَ، عَنْ حَنْظَلَةَ بْنِ

عَلِيُّ بْنِ الأَسْقَعِ، عَنْ خُفَافِ بْنِ إِيمَاءٍ، بِمِثْلِهِ إِلاَّ أَنَّهُ لَمْ يَقُلْ فَجُعِلَتْ لَعْنَةُ الْكَفَرَةِ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ .

क़ौल नहीं बयान किया कि इस वजह से काफ़िरों पर लानत भेजी जाती है।

फ़ायदा : इस बाब की रिवायात से सुबह की नमाज़ में हमेशा क़ुनूत करना साबित नहीं होता। लेकिन पाक व हिन्द के नुस्ख़ों में इमाम नववी ने इस बाब में इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा किया है। अल्लाह तआला से पनाह माँगना और सुबह की नमाज़ में क़ुनूत का हमेशा करना मुस्तहब होना और उसका मौक़ा व महल आख़िरी रकअत में रुकूअ के बाद सर उठाने के बाद है और उसका बुलंद पढ़ना बेहतर है। इमाम शाफ़ेई का यही मौक़िफ़ है। इमाम मालिक के नज़दीक सुबह की नमाज़ में क़ुनूत सुन्नत है। इमाम अहमद और इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक क़ुनूत नहीं है। सहीह बात ये है कि क़ुनूत का मदार मुसलमानों की ज़रूरत व हाजत पर है। अगर मुसीबत शदीद हो या ख़तरा ज़्यादा हो अक्सर या सब नमाज़ों में क़ुनूते नाज़िला पढ़ी जायेगी। अगर ख़तरा और मुसीबत कम हो तो एक या दो नमाज़ों में क़ुनूत कर लें।

باب قَضَاءِ الصَّلاَةِ الْفَائِتَةِ وَاسْتِحْبَابِ تَعْجِيلِ قَضَائِهَا

बाब 56 : फ़ौतशुदा नमाज़ों की क़ज़ाई और क़ज़ाई में जल्दी करना बेहतर है

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى التُّجِيبِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حِينَ قَفَلَ مِنْ غَزْوَةِ خَيْبَرَ سَارَ لَيْلَهُ حَتَّى إِذَا أَدْرَكَهُ الْكَرَى عَرَّسَ وَقَالَ لِبِلاَلٍ " اكْلأْ لَنَا اللَّيْلَ " . فَصَلَّى بِلاَلٌ مَا قُدِّرَ لَهُ وَنَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَصْحَابُهُ فَلَمَّا تَقَارَبَ الْفَجْرُ اسْتَنَدَ بِلاَلٌ إِلَى رَاحِلَتِهِ

(1560) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब ग़ज़्व-ए-ख़ैबर से वापस लौटे, एक रात चलते रहे यहाँ तक कि आप पर नींद ग़ालिब आ गई तो आपने पड़ाव किया और बिलाल (रज़ि.) से फ़रमाया, 'तुम आज रात हमारी हिफ़ाज़त करो।' हज़रत बिलाल (रज़ि.) जब तक अल्लाह को मन्ज़ूर रहा नफ़ल पढ़ते रहे। रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपके साथी सो गये। जब सुबह का वक़्त क़रीब आ गया तो बिलाल (रज़ि.) फ़ज्र के फूटने की (जगह) की तरफ़ रुख़ करके अपनी सवारी को टेक लगाकर बैठ गये। तो बिलाल (रज़ि.) पर

مُوَاجِهَ الْفَجْرِ فَغَلَبَتْ بِلاَلاً عَيْنَاهُ وَهُوَ مُسْتَنِدٌ إِلَى رَاحِلَتِهِ فَلَمْ يَسْتَيْقِظْ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَلاَ بِلاَلٌ وَلاَ أَحَدٌ مِنْ أَصْحَابِهِ حَتَّى ضَرَبَتْهُمُ الشَّمْسُ فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَوَّلَهُمُ اسْتِيقَاظًا فَفَزِعَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " أَىْ بِلاَلُ " . فَقَالَ بِلاَلٌ أَخَذَ بِنَفْسِي الَّذِي أَخَذَ - بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ - بِنَفْسِكَ قَالَ " اقْتَادُوا " . فَاقْتَادُوا رَوَاحِلَهُمْ شَيْئًا ثُمَّ تَوَضَّأَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَمَرَ بِلاَلاً فَأَقَامَ الصَّلاَةَ فَصَلَّى بِهِمُ الصُّبْحَ فَلَمَّا قَضَى الصَّلاَةَ قَالَ " مَنْ نَسِيَ الصَّلاَةَ فَلْيُصَلِّهَا إِذَا ذَكَرَهَا فَإِنَّ اللَّهَ قَالَ { أَقِمِ الصَّلاَةَ لِذِكْرِي} " . قَالَ يُونُسُ وَكَانَ ابْنُ شِهَابٍ يَقْرَؤُهَا لِلذِّكْرَى .

उसकी आँखें ग़ालिब आ गईं क्योंकि वो सवारी को टेक लगाये हुए थे। तो रसूलुल्लाह (ﷺ), बिलाल और आपके साथियों में से कोई भी बेदार न हुआ यहाँ तक कि उन पर धूप पड़ने लगी। सबसे पहले रसूलुल्लाह (ﷺ) बेदार हुए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने घबराकर फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह!' बिलाल ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान! मेरी रूह को उस ज़ात ने पकड़ लिया, जिसने आपकी रूह को क़ब्ज़े में कर लिया। आपने फ़रमाया, 'कूच करो।' तो सहाबा किराम (रज़ि.) ने अपनी सवारियों को थोड़ा सा चलाया। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने वुज़ू किया और बिलाल (रज़ि.) को हुक्म दिया। उन्होंने नमाज़ का एहतिमाम किया (अज़ान और इक़ामत कही) आपने उन्हें नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद फ़रमाया, 'जो नमाज़ भूल जाये वो याद आते ही उसे पढ़ ले क्योंकि अल्लाह तआला का फ़रमान है, 'मेरी याद के लिये नमाज़ पढ़िये।' (सूरह ताहा : 14) इब्ने शिहाब ज़िकरी (मेरी याद के लिये) के बजाए लिज़्ज़िकरा (याद आने पर) पढ़ते थे।

(अबू दाऊद : 435-436, इब्ने माजह : 696)

फ़ायदा : हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने बड़े पुर ऐतिमाद होकर ये दावा किया था कि आप सो जायें, मैं आपको बेदार करूँगा। मालूम होता है इन्शाअल्लाह नहीं कहा। इसलिये हुज़ूर (ﷺ) और आपके साथियों की तरह, उन पर भी नींद ने ग़ल्बा पा लिया और जब धूप से आप सबसे पहले बेदार हुए तो आपको नमाज़ के क़ज़ा होने पर अफ़सोस हुआ और आप (ﷺ) ने बिलाल (रज़ि.) से पूछा, तुमने ये

क्या किया? उन्होंने माज़रत की कि मैंने जान-बूझकर ऐसे नहीं किया। अल्लाह तआला को ऐसे ही मन्ज़ूर था तो आपने उस ग़फ़लत का बाइस बनने वाली ज़मीन को छोड़ने का हुक्म दिया और आगे चलकर सबसे पहले नमाज़ का ही एहतिमाम फ़रमाया। इसीलिये क़ज़ाशुदा नमाज़ को जितना जल्दी मुम्किन हो पढ़ने की कोशिश करनी चाहिये। जहाँ तक हो सके ऐसी जगहों से परहेज़ करना चाहिये जो इंसान को दीनी उमूर से ग़ाफ़िल कर देती हैं।

(1561) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं, हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ रात के आख़िरी हिस्से में पड़ाव किया और हम सूरज निकलने तक बेदार न हो सके। तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हर इंसान अपनी सवारी का सर पकड़ ले यानी लगाम या महार पकड़कर चल पड़े। क्योंकि ये ऐसी जगह है जिसमें हमारे साथ शैतान आ गया है।' हमने आपके हुक्म पर अमल किया। फिर आपने पानी मँगवाया, फिर आपने वुज़ू करके दो रकअतें (सुन्नत) पढ़ीं। फिर जमाअत खड़ी की गई (इक़ामत कही गई) और आपने सुबह की नमाज़ पढ़ाई।

(नसाई : 1/298)

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، وَيَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، كِلاَهُمَا عَنْ يَحْيَى، - قَالَ ابْنُ حَاتِمٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، - حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ كَيْسَانَ، حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ عَرَّسْنَا مَعَ نَبِيِّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَلَمْ نَسْتَيْقِظْ حَتَّى طَلَعَتِ الشَّمْسُ فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " لِيَأْخُذْ كُلُّ رَجُلٍ بِرَأْسِ رَاحِلَتِهِ فَإِنَّ هَذَا مَنْزِلٌ حَضَرَنَا فِيهِ الشَّيْطَانُ " . قَالَ فَفَعَلْنَا ثُمَّ دَعَا بِالْمَاءِ فَتَوَضَّأَ ثُمَّ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ - وَقَالَ يَعْقُوبُ ثُمَّ صَلَّى سَجْدَتَيْنِ - ثُمَّ أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَصَلَّى الْغَدَاةَ .

फ़वाइद : (1) अगर मुश्तरका तौर पर नमाज़ फ़ौत हो जाये तो वक़्त मिलते ही उसके लिये एहतिमाम किया जायेगा। अज़ान कहकर सुन्नतें पढ़ी जायेंगी। फिर इक़ामत कहकर जमाअत करवाई जायेगी। अगर नमाज़ें एक से ज़्यादा फ़ौत हो जायें तो पहली नमाज़ के लिये अज़ान और इक़ामत दोनों है। बाद वाली नमाज़ों के लिये इख़्तियार है। हर एक के लिये अज़ान और इक़ामत कह लें या सिर्फ़ इक़ामत पर इक्तिफ़ा कर लें। इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अहमद हर नमाज़ के लिये अज़ान के क़ाइल हैं। इमाम मालिक और इमाम शाफ़ेई आख़िरी क़ौल में अज़ान के क़ाइल नहीं। **(2)** इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद (रह.) के नज़दीक सुन्नतों की क़ज़ाई बेहतर है। सुन्नतें नमाज़ के साथ रह गई हों या सिर्फ़ सुन्नतें बाक़ी हों और अहनाफ़ के नज़दीक अगर सिर्फ़ सुन्नतें रह गई हों तो उनकी क़ज़ा नहीं है। फ़र्ज़ों के साथ क़ज़ा है।

(1562) हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें ख़िताब फ़रमाया और कहा, 'तुम आज ज़वाल से लेकर रात भर चलोगे और कल सुबह इन्शाअल्लाह पानी पर पहुँचोगे।' तो लोग चल पड़े कोई किसी दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह नहीं हो रहा था। अबू क़तादा (रज़ि.) कहते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) चलते रहे। मैं भी साथ था कि आधी रात गुज़र गई। रसूलुल्लाह (ﷺ) को ऊँघ आ गई और अपनी सवारी पर एक तरफ़ झुके। मैंने आगे बढ़कर आपको जगाये बग़ैर सहारा दिया यहाँ तक कि आप अपनी सवारी पर सीधे हो गये। फिर आप चलते रहे। यहाँ तक कि रात का अक्सर हिस्सा गुज़र गया तो आप अपनी सवारी पर एक तरफ़ झुक गये। फिर मैंने आपको जगाये बग़ैर सहारा दिया। यहाँ तक कि आप सवारी पर सीधे बैठ गये। फिर चलते रहे यहाँ तक कि रात का आख़िरी हिस्सा आ पहुँचा। तो आप पहली दो बार से ज़्यादा झुक गये। क़रीब था कि आप गिर जायें तो मैंने आपके पास आकर आपको सहारा दिया। आपने सर उठाकर पूछा, 'ये कौन है?' मैंने कहा, अबू क़तादा हूँ। आपने पूछा, तुम कब से मेरे साथ इस तरह चल रहे हो? मैंने अ़र्ज़ किया, रात भर से आपके साथ इस तरह चल रहा हूँ। आपने फ़रमाया, 'अल्लाह तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाये, क्योंकि तुमने उसके नबी की हिफ़ाज़त की है।' फिर आपने फ़रमाया, 'क्या तुम्हारे ख़याल में हम लोगों से ओझल हो सकते हैं?' फिर फ़रमाया, 'क्या तुम्हें कोई

وَحَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، - يَعْنِي ابْنَ الْمُغِيرَةِ - حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَبَاحٍ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، قَالَ خَطَبَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " إِنَّكُمْ تَسِيرُونَ عَشِيَّتَكُمْ وَلَيْلَتَكُمْ وَتَأْتُونَ الْمَاءَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ غَدًا " . فَانْطَلَقَ النَّاسُ لاَ يَلْوِي أَحَدٌ عَلَى أَحَدٍ - قَالَ أَبُو قَتَادَةَ - فَبَيْنَمَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَسِيرُ حَتَّى ابْهَارَّ اللَّيْلُ وَأَنَا إِلَى جَنْبِهِ - قَالَ - فَنَعَسَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَمَالَ عَنْ رَاحِلَتِهِ فَأَتَيْتُهُ فَدَعَمْتُهُ مِنْ غَيْرِ أَنْ أُوقِظَهُ حَتَّى اعْتَدَلَ عَلَى رَاحِلَتِهِ - قَالَ - ثُمَّ سَارَ حَتَّى تَهَوَّرَ اللَّيْلُ مَالَ عَنْ رَاحِلَتِهِ - قَالَ - فَدَعَمْتُهُ مِنْ غَيْرِ أَنْ أُوقِظَهُ حَتَّى اعْتَدَلَ عَلَى رَاحِلَتِهِ - قَالَ - ثُمَّ سَارَ حَتَّى إِذَا كَانَ مِنْ آخِرِ السَّحَرِ مَالَ مَيْلَةً هِيَ أَشَدُّ مِنَ الْمَيْلَتَيْنِ الأُولَيَيْنِ حَتَّى كَادَ يَنْجَفِلُ فَأَتَيْتُهُ فَدَعَمْتُهُ فَرَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ " مَنْ هَذَا " . قُلْتُ أَبُو قَتَادَةَ . قَالَ " مَتَى كَانَ هَذَا مَسِيرَكَ مِنِّي " . قُلْتُ مَا زَالَ هَذَا مَسِيرِي مُنْذُ اللَّيْلَةِ . قَالَ " حَفِظَكَ اللَّهُ بِمَا حَفِظْتَ

بِهِ نَبِيَّهُ " . ثُمَّ قَالَ " هَلْ تَرَانَا نَخْفَى عَلَى النَّاسِ " . ثُمَّ قَالَ " هَلْ تَرَى مِنْ أَحَدٍ " . قُلْتُ هَذَا رَاكِبٌ . ثُمَّ قُلْتُ هَذَا رَاكِبٌ آخَرُ . حَتَّى اجْتَمَعْنَا فَكُنَّا سَبْعَةَ رَكْبٍ - قَالَ - فَمَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنِ الطَّرِيقِ فَوَضَعَ رَأْسَهُ ثُمَّ قَالَ " احْفَظُوا عَلَيْنَا صَلاَتَنَا " . فَكَانَ أَوَّلَ مَنِ اسْتَيْقَظَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَالشَّمْسُ فِي ظَهْرِهِ - قَالَ - فَقُمْنَا فَزِعِينَ ثُمَّ قَالَ " ارْكَبُوا " . فَرَكِبْنَا فَسِرْنَا حَتَّى إِذَا ارْتَفَعَتِ الشَّمْسُ نَزَلَ ثُمَّ دَعَا بِمِيضَأَةٍ كَانَتْ مَعِي فِيهَا شَىْءٌ مِنْ مَاءٍ - قَالَ - فَتَوَضَّأَ مِنْهَا وُضُوءًا دُونَ وُضُوءٍ - قَالَ - وَبَقِيَ فِيهَا شَىْءٌ مِنْ مَاءٍ ثُمَّ قَالَ لأَبِي قَتَادَةَ " احْفَظْ عَلَيْنَا مِيضَأَتَكَ فَسَيَكُونُ لَهَا نَبَأٌ " . ثُمَّ أَذَّنَ بِلاَلٌ بِالصَّلاَةِ فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ صَلَّى الْغَدَاةَ فَصَنَعَ كَمَا كَانَ يَصْنَعُ كُلَّ يَوْمٍ - قَالَ - وَرَكِبَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَرَكِبْنَا مَعَهُ - قَالَ - فَجَعَلَ بَعْضُنَا يَهْمِسُ إِلَى بَعْضٍ مَا كَفَّارَةُ مَا صَنَعْنَا بِتَفْرِيطِنَا فِي

नज़र आ रहा है?' मैंने कहा, ये सवार है। फिर मैंने कहा, ये दूसरा सवार है। यहाँ तक कि सात सवार जमा हो गये। रसूलुल्लाह (ﷺ) रास्ते से एक तरफ़ हट गये और अपना सर ज़मीन पर रख लिया। यानी सोने लगे। फिर आपने फ़रमाया, 'तुम लोग हमारी नमाज़ की हिफ़ाज़त करना।' फिर सबसे पहले रसूलुल्लाह (ﷺ) बेदार हुए जबकि सूरज आपकी पुश्त पर आ चुका था और हम भी घबराकर उठ खड़े हुए। फिर आपने फ़रमाया, 'सवार हो जाओ।' तो हम सवार होकर चल पड़े। यहाँ तक कि सूरज बुलंद हो गया तो आप सवारी से उतरे। फिर आपने वुज़ू का बर्तन तलब किया जो मेरे पास था। उसमें थोड़ा सा पानी था तो आपने उससे तख़्फ़ीफ़ के साथ वुज़ू किया। यानी कम मर्तबा आज़ा (वुज़ू के अंग) धोये कि कम पानी इस्तेमाल किया और बर्तन में थोड़ा सा पानी बच गया। फिर आप (ﷺ) ने अबू क़तादा (रज़ि.) से फ़रमाया, 'हमारे लिये अपने बर्तन को महफ़ूज़ रखना, जल्द ये कि एक बड़ी ख़ैर का सबब होगा।' फिर बिलाल (रज़ि.) ने अज़ान कही। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दो रकअतें अदा कीं। फिर सुबह की नमाज़ पढ़ाई। उसको उसी तरह पढ़ाया जिस तरह रोज़ाना पढ़ाते थे। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) सवार हो गये और हम भी आप (ﷺ) के साथ सवार हो गये और हम एक-दूसरे से सरगोशी करने लगे कि नमाज़ के बारे में जो हमने कोताही की है उसका कफ़्फ़ारा क्या है? आपने फ़रमाया, 'क्या मैं

तुम्हारे लिये नमूना नहीं हूँ?' फिर आपने फ़रमाया, 'हाँ! सो जाने की सूरत में कोताही नहीं है, कोताही तो इस सूरत में है कि इंसान नमाज़ न पढ़े (हालांकि पढ़ सकता है) यहाँ तक कि दूसरी नमाज़ का वक़्त हो जाये। जिसको ये सूरत (कि सोया रहे) पेश आ जाये तो वो बेदार होने पर नमाज़ पढ़ ले और अगले दिन नमाज़ अपने वक़्त पर पढ़े। (जान-बूझकर मुअख़्ख़र (ताख़ीर) न करे) फिर आपने पूछा, 'तुम्हारे ख़्याल में लोगों ने क्या किया?' फिर फ़रमाया, 'लोगों ने सुबह के वक़्त अपने नबी को अपने अंदर नहीं पाया तो अबू बकर और उमर (रज़ि.) ने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) तुम्हारे पीछे हैं वो तुम्हें अपने पीछे नही छोड़ सकते और दूसरे लोगों ने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) तुम्हारे आगे हैं। पस अगर लोग अबू बकर और उमर (रज़ि.) की इताअत करेंगे तो हिदायत पायेंगे (यानी उनकी बात मान लेंगे तो मेरे इन्तिज़ार में रुके रहेंगे क्योंकि मैं तो पीछे हूँ) फिर हम लोगों के पास उस वक़्त पहुँचे जब दिन काफ़ी चढ़ आया और हर चीज़ गर्म हो गई और लोग कह रहे थे कि ऐ अल्लाह के रसूल! हम प्यासे मर गये। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम हलाक नहीं होगे।' फिर आपने फ़रमाया, 'मेरा छोटा प्याला लाओ।' और आपने वुज़ू का बर्तन मँगवाया। रसूलुल्लाह (ﷺ) पानी डालने लगे और अबू क़तादा (रज़ि.) पिला रहे थे जूँ ही लोगों ने बर्तन में मामूली सा पानी देखा तो उस पर टूट पड़े (हर एक की ख़्वाहिश थी कि मैं पानी से

صَلاَتِنَا ثُمَّ قَالَ " أَمَا لَكُمْ فِيَّ أُسْوَةٌ " . ثُمَّ قَالَ " أَمَا إِنَّهُ لَيْسَ فِي النَّوْمِ تَفْرِيطٌ إِنَّمَا التَّفْرِيطُ عَلَى مَنْ لَمْ يُصَلِّ الصَّلاَةَ حَتَّى يَجِيءَ وَقْتُ الصَّلاَةِ الأُخْرَى فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ فَلْيُصَلِّهَا حِينَ يَنْتَبِهُ لَهَا فَإِذَا كَانَ الْغَدُ فَلْيُصَلِّهَا عِنْدَ وَقْتِهَا " . ثُمَّ قَالَ " مَا تَرَوْنَ النَّاسَ صَنَعُوا " . قَالَ ثُمَّ قَالَ " أَصْبَحَ النَّاسُ فَقَدُوا نَبِيَّهُمْ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَعْدَكُمْ لَمْ يَكُنْ لِيُخَلِّفَكُمْ . وَقَالَ النَّاسُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَيْنَ أَيْدِيكُمْ فَإِنْ يُطِيعُوا أَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ يَرْشُدُوا " . قَالَ فَانْتَهَيْنَا إِلَى النَّاسِ حِينَ امْتَدَّ النَّهَارُ وَحَمِيَ كُلُّ شَىْءٍ وَهُمْ يَقُولُونَ يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلَكْنَا عَطِشْنَا . فَقَالَ " لاَ هُلْكَ عَلَيْكُمْ " . ثُمَّ قَالَ " أَطْلِقُوا لِي غُمَرِي " . قَالَ وَدَعَا بِالْمِيضَأَةِ فَجَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَصُبُّ وَأَبُو قَتَادَةَ يَسْقِيهِمْ فَلَمْ يَعْدُ أَنْ رَأَى النَّاسُ مَاءً فِي الْمِيضَأَةِ تَكَابُّوا عَلَيْهَا . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَحْسِنُوا الْمَلأَ كُلُّكُمْ سَيَرْوَى " .

قَالَ فَفَعَلُوا فَجَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَصُبُّ وَأَسْقِيهِمْ حَتَّى مَا بَقِيَ غَيْرِي وَغَيْرُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم - قَالَ - ثُمَّ صَبَّ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ لِي " اشْرَبْ " . فَقُلْتُ لاَ أَشْرَبُ حَتَّى تَشْرَبَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " إِنَّ سَاقِيَ الْقَوْمِ آخِرُهُمْ شُرْبًا " . قَالَ فَشَرِبْتُ وَشَرِبَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم - قَالَ - فَأَتَى النَّاسُ الْمَاءَ جَامِّينَ رِوَاءً . قَالَ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَبَاحٍ إِنِّي لأُحَدِّثُ هَذَا الْحَدِيثَ فِي مَسْجِدِ الْجَامِعِ إِذْ قَالَ عِمْرَانُ بْنُ حُصَيْنٍ انْظُرْ أَيُّهَا الْفَتَى كَيْفَ تُحَدِّثُ فَإِنِّي أَحَدُ الرَّكْبِ تِلْكَ اللَّيْلَةَ . قَالَ قُلْتُ فَأَنْتَ أَعْلَمُ بِالْحَدِيثِ . فَقَالَ مِمَّنْ أَنْتَ قُلْتُ مِنَ الأَنْصَارِ . قَالَ حَدِّثْ فَأَنْتُمْ أَعْلَمُ بِحَدِيثِكُمْ . قَالَ فَحَدَّثْتُ الْقَوْمَ فَقَالَ عِمْرَانُ لَقَدْ شَهِدْتُ تِلْكَ اللَّيْلَةَ وَمَا شَعَرْتُ أَنَّ أَحَدًا حَفِظَهُ كَمَا حَفِظْتُهُ .

महरूम न रहूँ) तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अच्छा अख़लाक़ इख़्तियार करो, सब सैराब हो जाओगे।' तो लोगों ने आप (ﷺ) की बात पर अमल किया। रसूलुल्लाह (ﷺ) पानी उंडेलने लगे और मैं उन्हें पिलाने लगा। यहाँ तक कि मेरे और रसूलुल्लाह (ﷺ) के सिवा कोई बाक़ी न रहा। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पानी डाला और मुझे फ़रमाया, 'पियो।' तो मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! जब तक आप नहीं पी लेंगे मैं नहीं पियुँगा। आपने फ़रमाया, 'लोगों को पिलाने वाला आख़िर में पीता है।' तो मैंने पी लिया और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी पी लिया। फिर सब लोग सैराब होकर आराम के साथ पानी तक पहुँच गये। स़ाबित कहते हैं, अब्दुल्लाह बिन रबाह ने बताया मैं जामेअ मस्जिद में ये हदीस़ बयान कर रहा था कि हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने फ़रमाया, ऐ नौजवान! सोच लो, कैसे बयान कर रहे हो क्योंकि उस रात के सवारों में से एक मैं भी हूँ। तो मैंने कहा, तो आप (ﷺ) वाक़िया बेहतर जानते हैं। उन्होंने पूछा, तुम किस ख़ानदान से हो? मैंने कहा, अन्सार से हूँ। उन्होंने कहा, बयान करो तुम अपने वाक़ियात को बेहतर जानते हो। तो मैंने लोगों को पूरा वाक़िया सुनाया। हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने कहा, मैं भी उस रात मौजूद था और मैं नहीं समझता किसी ने इस वाक़िये को इस तरह याद रखा है जैसा तूने याद रखा है।

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) ला यल्वि अहद अ़ला अहद : कोई एक-दूसरे की तरफ़ मुड़कर नहीं देखता था, सब सीधे रुख़ चल रहे थे। **(2) इब्हारुल्लैल :** रात का हिस्सा। रात आधी गुज़र गई। **(3) नअ़स :** आपको ऊँघ आ गई। **(4) दअ़म्तुहू :** मैंने आपको सहारा दिया ताकि आप सीधे हो जायें। **(5) तहव्वरल्लैल :** रात का अक्सर हिस्सा गुज़र गया। **(6) तहव्वरल बिना :** से माख़ूज़ इमारत गिरने लगी। **(7) यन्जफ़ल :** गिरने लगी। बिमा हफ़िज़्त में बा सबबिया है और मा मस्दरिया है, यानी बसबब। **(8) हफ़िज़क :** तेरे हिफ़ाज़त करने के सबब, तेरी हिफ़ाज़त की बिना पर। **(9) रक्बुन, राकिब :** की जमा है। सवार मीज़अतन : लौटा वुज़ू करने का बर्तन। **(10) वुज़ू :** दून वुज़ू आम वुज़ू से हल्का। आम वुज़ू से कम पानी इस्तेमाल किया। **(11) यहमिसु इला बअ़ज़िन :** एक दूसरे से आहिस्तगी के साथ बातचीत करना। **(12) उस्वह :** नमूना, मॉडल। **(13) लैस फ़िन्नौम तफ़रीत :** सोये-सोये ग़ैर इख़्तियारी तौर पर नमाज़ फ़ौत हो जाये तो ये तक़सीर और कोताही नहीं है। **(14) मा तरौनन्नास सनऊ सुम्मा क़ाल :** मक़सद ये है कि जब आपने सूरज निकलने के बाद उन पीछे रह जाने वाले साथियों को सुबह की नमाज़ पढ़ा दी तो उनसे पूछा, तुम्हारे ख़्याल में दूसरे साथियों का हमारे बारे में क्या ख़्याल है कि हम कहाँ हैं?

फ़वाइद : (1) हुज़ूर (ﷺ) ने सफ़र के सिलसिले में तमाम साथियों को ऐतिमाद में लिया और उनको सूरते हाल से पूरी तरह आगाह फ़रमाया ताकि वो ज़हनी तौर पर तैयार हो जायें और उस सफ़र में बहुत से मोजिज़ात (चमत्कार) ज़ुहूर पज़ीर हुए और आप (ﷺ) ने आइन्दा पेश आने वाले वाक़ियात से भी आगाह फ़रमाया। लेकिन इसका ये मानी नहीं है कि आपको ऐसी क़ुव्वत हासिल थी जिस चीज़ से आप ग़ैब को जान लेते थे। रसूल अल्लाह तआ़ला की निगरानी और हिफ़ाज़त में होता है। इसलिये अल्लाह तआ़ला ने अपनी हिक्मत व मस्लिहत के तहत जिससे आगाह करना चाहता है आगाह फ़रमा देता है और जिसको छिपाना चाहता है अपनी हिक्मत के तहत छिपाये रखता है। आपको सुबह के वक़्त से आगाह नहीं फ़रमाया। आपने नमाज़ के एहतिमाम की ख़ातिर ड्यूटी मुक़र्रर की थी। मुहाफ़िज़ भी सो गये, लेकिन आपने इस वाक़िये से आगाह नहीं फ़रमाया कि ये वाक़िया भी पेश आयेगा और न ही आप (ﷺ) को अपनी ऊँघ और अबू क़तादा (रज़ि.) के बार-बार सहारा देने का पता चला। (2) आप (ﷺ) नींद की मजबूरी के तहत साथियों से अलग होकर लेट गये और साथियों को नमाज़ के बारे में ताकीद फ़रमाई। लेकिन सब नींद के हाथों मजबूर होकर सो गये। सूरज के काफ़ी बुलंद होने के बाद आप बेदार हुए। लेकिन आपने साथियों को सरज़निश और तौबीख़ नहीं फ़रमाई। बल्कि साथी जब इस सिलसिले में परेशान हुए कि इस कोताही का कफ़्फ़ारा क्या होगा तो उनको हौसला दिया। (3) हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) आपके साथ रहे। आपकी हिफ़ाज़त की तो आपने उसकी इस ख़िदमत का ऐतराफ़ फ़रमाया और उसको दुआए ख़ैर दी। (4) आप (ﷺ) ने फ़ौतशुदा नमाज़ को पूरे एहतिमाम के साथ बाजमाअ़त अदा फ़रमाया और ग़फ़लत वाली जगह को छोड़कर नमाज़ अदा की और साथियों को बता दिया। अगर ग़ैर शऊरी और ग़ैर इरादी तौर पर सोने की वजह से नमाज़ का वक़्त निकल जाये तो इंसान मअ़ज़ूर तसव्वुर होगा, गुनाहगार नहीं होगा। हाँ उसको नींद

से बेदार होने के बाद नमाज़ पढ़ लेनी चाहिये और आइन्दा का इआदा करे, जान-बूझकर नमाज़ में ताख़ीर करना दुरुस्त नहीं है। (5) आप (ﷺ) ने वुज़ू के बर्तन से तख़फ़ीफ़ के साथ वुज़ू किया और उसमें कुछ पानी रहने दिया और अबू क़तादा (रज़ि.) को बता दिया कि इस बर्तन की हिफ़ाज़त करना। ये एक अजीब ख़बर का बाइस बनेगा और ऐसे ही हुआ कि जब सहाबा किराम (रज़ि.) ने प्यास से हलाकत की शिकायत की तो आपने फ़रमाया, हौसला रखो। किसी क़िस्म की हलाकत से दोचार नहीं होगे। इस मामूली पानी में इतनी बरकत हुई कि सब साथी इससे सैराब हो गये और जब सैंकड़ों साथी मामूली पानी देखकर एक-दूसरे से पहले पानी लेने की कोशिश करने लगे तो आपने फ़रमाया, 'आराम व सुकून से पानी लो। तुम सब सैराब और आसूदा हो जाओगे।' और ऐसा ही हुआ कि सुकून व इत्मीनान से अपनी-अपनी बारी पर पानी लेकर तमाम लोग सैराब हो गये। (6) आप (ﷺ) ने अपने साथियों से पीछे रहकर नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ पढ़ने के बाद दूसरे साथियों में होने वाली बातचीत से आगाह फ़रमाया और ये भी बता दिया अबू बकर (रज़ि.) और उमर (रज़ि.) ने सहीह बात की है अगर लोग इनकी बात मानकर हमारा इन्तिज़ार करेंगे तो यही फ़ैसला सहीह होगा और हम उन तक पहुँच जायेंगे। (7) आप (ﷺ) चूंकि लोगों को पानी पिला रहे थे इसलिये आप (ﷺ) ने सबसे आख़िर में पानी नोश फ़रमाया और इस बात की अमली तालीम दी कि साक़िल कौम आख़िरुहुम शुर्बन पानी पिलाने वाला सबसे आख़िर में पीता है। (8) हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) ने जिस सफ़र का वाक़िया बयान किया है, अगरचे उसमें भी इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) मौजूद थे लेकिन जो वाक़िया उन्होंने ख़ुद बयान किया है वो उससे अलग वाक़िया है। लेकिन ये मुम्किन है दोनों वाक़ियात एक ही सफ़र में पेश आये हों। एक वाक़िया में आपके साथ सिर्फ़ सात साथी थे और दूसरे वाक़िये में सब साथी साथ थे जैसाकि अगली हदीस़ में आ रहा है। (9) हुज़ूर (ﷺ) ने पहले ही बता दिया था कि तुम ज़वाल के बाद से लेकर रात भर चलने के बाद पानी पर पहुँचोगे। ऐसे ही हुआ जब लोग पानी में बरकत के बाद सैराब होकर आसूदा हालत में चल पड़े तो पानी पर पहुँच गये। इसी तरह आप (ﷺ) ने सफ़र में जितनी पेशीनगोइयाँ फ़रमाई थीं पूरी हो गईं।

(1563) हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) बयान करते हैं कि एक सफ़र में मैं नबी (ﷺ) के साथ था कि हम रात भर चलते रहे यहाँ तक कि सुबह का वक़्त हो गया तो हमने पड़ाव किया और हम पर नींद ने ग़ल्बा पा लिया। यहाँ तक कि सूरज निकल आया। हममें सबसे पहले अबू बकर (रज़ि.) बेदार हुए। हमारी आदत थी कि जब नबी (ﷺ) सो जाते तो हम आपको नींद से जगाते नहीं थे, यहाँ तक कि आप ख़ुद ही बेदार

وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدِ بْنِ صَخْرٍ الدَّارِمِيُّ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيدِ، حَدَّثَنَا سَلْمُ بْنُ زَرِيرٍ الْعُطَارِدِيُّ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا رَجَاءٍ الْعُطَارِدِيَّ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، قَالَ كُنْتُ مَعَ نَبِيِّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي مَسِيرٍ لَهُ فَأَدْلَجْنَا لَيْلَتَنَا حَتَّى إِذَا كَانَ فِي وَجْهِ

हो जाते। फिर (अबू बकर (रज़ि.) के बाद) उमर (रज़ि.) बेदार हो गये तो वो नबी (ﷺ) के पास खड़े होकर अल्लाहु अकबर कहने लगे और तकबीर भी बुलंद आवाज़ से कहते। यहाँ तक कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बेदार हो गये। जब आप (ﷺ) ने सर मुबारक उठाया और सूरज को देखा कि वो निकल चुका है तो फ़रमाया, 'कूच करो।' हमारे साथ आप भी चलते रहे यहाँ तक कि सूरज सफ़ेद हो गया। (यानी सुर्ख़ी ख़त्म हो गई धूप फैल गई) आप (ﷺ) ने सवारी से उतरकर सुबह की नमाज़ पढ़ाई। एक आदमी लोगों से अलग रहा। उसने हमारे साथ नमाज़ न पढ़ी तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब सलाम फेरा तो उससे पूछा, 'ऐ फ़लाँ! तुमने हमारे साथ नमाज़ क्यों नहीं पढ़ी?' उसने जवाब दिया, ऐ अल्लाह के नबी! मुझे जनाबत लाहिक़ हो गई थी (जनाबत की बिना पर जमाअत में शरीक नहीं हुआ) आपने उसे तयम्मुम का हुक्म दिया और उसने मिट्टी से तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ ली। फिर आपने चंद साथियों के साथ मुझे आगे पानी की तलाश में दौड़ाया। क्योंकि हमें सख़्त प्यास लग चुकी थी। हम जा रहे थे कि अचानक हमें एक औरत मिली जो दो मश्कों के दरम्यान पाँव लटकाये हुए थी तो हमने उससे पूछा, पानी कहाँ है? उसने कहा, दूर बहुत ही दूर। तुम पानी हासिल नहीं कर सकते। हमने पूछा, तेरे घर वालों से पानी कितनी दूर है? उसने कहा, एक दिन-रात का फ़ासला है। हमने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास चलो। उसने कहा, रसूलुल्लाह क्या होता है? हमने उसका मामला उसके इख़्तियार में न रहने दिया और उसको

الصُّبْحِ عَرَّسْنَا فَغَلَبَتْنَا أَعْيُنُنَا حَتَّى بَزَغَتِ الشَّمْسُ - قَالَ - فَكَانَ أَوَّلَ مَنِ اسْتَيْقَظَ مِنَّا أَبُو بَكْرٍ وَكُنَّا لاَ نُوقِظُ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنْ مَنَامِهِ إِذَا نَامَ حَتَّى يَسْتَيْقِظَ ثُمَّ اسْتَيْقَظَ عُمَرُ فَقَامَ عِنْدَ نَبِيِّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَجَعَلَ يُكَبِّرُ وَيَرْفَعُ صَوْتَهُ بِالتَّكْبِيرِ حَتَّى اسْتَيْقَظَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ وَرَأَى الشَّمْسَ قَدْ بَزَغَتْ قَالَ " ارْتَحِلُوا " . فَسَارَ بِنَا حَتَّى إِذَا ابْيَضَّتِ الشَّمْسُ نَزَلَ فَصَلَّى بِنَا الْغَدَاةَ فَاعْتَزَلَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ لَمْ يُصَلِّ مَعَنَا فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَا فُلاَنُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تُصَلِّيَ مَعَنَا " . قَالَ يَا نَبِيَّ اللَّهِ أَصَابَتْنِي جَنَابَةٌ . فَأَمَرَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَتَيَمَّمَ بِالصَّعِيدِ فَصَلَّى ثُمَّ عَجَّلَنِي فِي رَكْبٍ بَيْنَ يَدَيْهِ نَطْلُبُ الْمَاءَ وَقَدْ عَطِشْنَا عَطَشًا شَدِيدًا . فَبَيْنَمَا نَحْنُ نَسِيرُ إِذَا نَحْنُ بِامْرَأَةٍ سَادِلَةٍ رِجْلَيْهَا بَيْنَ مَزَادَتَيْنِ فَقُلْنَا لَهَا أَيْنَ الْمَاءُ قَالَتْ أَيْهَاهْ أَيْهَاهْ لاَ مَاءَ لَكُمْ . قُلْنَا فَكَمْ بَيْنَ أَهْلِكِ وَبَيْنَ الْمَاءِ . قَالَتْ مَسِيرَةُ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ . قُلْنَا انْطَلِقِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى

الله عليه وسلم . قَالَتْ وَمَا رَسُولُ اللَّهِ فَلَمْ نُمَلِّكْهَا مِنْ أَمْرِهَا شَيْئًا حَتَّى انْطَلَقْنَا بِهَا فَاسْتَقْبَلْنَا بِهَا رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَسَأَلَهَا فَأَخْبَرَتْهُ مِثْلَ الَّذِي أَخْبَرَتْنَا وَأَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا مُوتِمَةٌ لَهَا صِبْيَانٌ أَيْتَامٌ فَأَمَرَ بِرَاوِيَتِهَا فَأُنِيخَتْ فَمَجَّ فِي الْعَزْلاَوَيْنِ الْعُلْيَاوَيْنِ ثُمَّ بَعَثَ بِرَاوِيَتِهَا فَشَرِبْنَا وَنَحْنُ أَرْبَعُونَ رَجُلاً عِطَاشٌ حَتَّى رَوِينَا وَمَلأْنَا كُلَّ قِرْبَةٍ مَعَنَا وَإِدَاوَةٍ وَغَسَّلْنَا صَاحِبَنَا غَيْرَ أَنَّا لَمْ نَسْقِ بَعِيرًا وَهِيَ تَكَادُ تَنْضَرِجُ مِنَ الْمَاءِ - يَعْنِي الْمَزَادَتَيْنِ - ثُمَّ قَالَ " هَاتُوا مَا كَانَ عِنْدَكُمْ " . فَجَمَعْنَا لَهَا مِنْ كِسَرٍ وَتَمْرٍ وَصَرَّ لَهَا صُرَّةً فَقَالَ لَهَا " اذْهَبِي فَأَطْعِمِي هَذَا عِيَالَكِ وَاعْلَمِي أَنَّا لَمْ نَرْزَأْ مِنْ مَائِكِ " . فَلَمَّا أَتَتْ أَهْلَهَا قَالَتْ لَقَدْ لَقِيتُ أَسْحَرَ الْبَشَرِ أَوْ إِنَّهُ لَنَبِيٌّ كَمَا زَعَمَ كَانَ مِنْ أَمْرِهِ ذَيْتَ وَذَيْتَ . فَهَدَى اللَّهُ ذَاكَ الصِّرْمَ بِتِلْكَ الْمَرْأَةِ فَأَسْلَمَتْ وَأَسْلَمُوا .

लेकर चल पड़े और हम उसको रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने ले आये। आपने उससे पूछा, उसने आपको वही कुछ बताया जो हमें बता चुकी थी और उसने आपको ये भी बताया वो यतीमों वाली है। उसके कई यतीम बच्चे हैं। आपने उसके पानी वाले ऊँट के बारे में हुक्म दिया। उसे बिठाया गया। आपने उसकी मश्कों के ऊपर वाले दहानों में कुल्ली की फिर उसके ऊँट को बिठा दिया गया तो हमने पानी पिया जबकि हम चालीस प्यासे आदमी थे। हम सैराब हो गये और हमारे पास जो मश्कीज़ा और बर्तन था उसको हमने भर लिया और आप (ﷺ) ने साथी को ग़ुस्ल करवाया। हाँ हमने किसी ऊँट को पानी नहीं पिलाया और उसकी मश्कें फटने को थीं यानी उसकी मश्कें पहले से भी ज़्यादा भर गईं। फिर आपने फ़रमाया, 'जो कुछ तुम्हारे पास है लाओ।' हमने उसके लिये रोटी के टुकड़े और खजूरें जमा कीं और आपने उन्हें एक थैली में बांध दिया और उसे फ़रमाया, 'जाओ इसे अपने बच्चे को खिलाओ और जान लो हमने तेरे पानी को कुछ कम नहीं किया।' जब वो अपने घर वालों के पास आई तो कहने लगी, आज मैं सब इंसानों से बड़े जादूगर को मिल चुकी हूँ या वो नबी है जैसाकि उसका दावा है। उसने ये काम दिखाये तो अल्लाह तआला ने उस औरत की वजह से उन बस्ती वालों को हिदायत दी। वो मुसलमान हुई और बस्ती वाले भी मुसलमान हो गये।

(सहीह बुख़ारी : 3571)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) **अदलज्ना :** हम तक़रीबन रात भर चलते रहे। (2) **बज़ग़तिश्शम्सु :** सूरज निकल आया। (3) **सादिलह :** लटकाये हुए। (4) **मज़ादतैन :** मज़ादा, बड़ी मश्क, मज़ादतैन दो

मश्कें जो ऊँट के ऊपर लादी जाती हैं। **(5) फ़लम नुमल्लिकहा मिन अम्रिहा शैआ :** हमने उसको अपनी मर्ज़ी न करने दी। **(6) मूतिमह :** यतीम बच्चों वाली जिनका बाप फ़ौत हो चुका है। **(7) रावियति :** पानी ढोने वाले ऊँट। **(8) अज्लावैन :** अज़ला की तसनिया है, पानी निकालने वाला मुँह कभी मश्कीज़े के निचले की बजाए ऊपर वाले मुँह को भी कह देते हैं, जिससे पानी डाला जाता है। इसलिये यहाँ इसकी सिफ़त उलय्या लाई गई है। **(9) तन्ज़रिजु मिनल माअ :** पानी की ज़्यादती से फटना। **(10) किसर :** कसरह की जमा है, टुकड़े। **(11) सर्रा लहा सुर्रतन :** उसके लिये थैली बांधी। **(12) सुर्रतन :** थैली **(13) लम नरज़ा :** हमने कुछ कम नहीं किया। **(14) ज़ैत, ज़ैत :** कैत व कैत या कज़ा व कज़ा के हम मानी है। यानी ये काम किये या इस-इस तरह किया। **(15) सिर्म :** घरों का इज्तिमाअ, जमाअत और गिरोह।

फ़वाइद : (1) हुज़ूर (ﷺ) बशर (इंसान) थे। बशरी तक़ाज़े की बिना पर ही नींद ने आप पर ग़ल्बा पाया और आपने नींद से मजबूर होकर रात के आख़िरी हिस्से में आराम के लिये पड़ाव किया और नमाज़ के लिये आपने ये इन्तिज़ाम किया कि हज़रत बिलाल (रज़ि.) की ड्यूटी लगाई कि वो जागकर सुबह का इन्तिज़ार करें और जब फ़ज्र तुलूअ हो तो साथियों को जगा दें। लेकिन सफ़र की थकावट की वजह से वो भी सो गये यहाँ तक कि सूरज निकल आया। **(2)** सहाबा किराम (रज़ि.) हुज़ूर (ﷺ) को अदब व एहतिराम की बिना पर जगाते नहीं थे और ये बात भी मल्हूज़ होती थी कि मुम्किन है आप पर नींद की हालत में वह्य का नुज़ूल हो रहा हो और आपको बेदार करना उसमें ख़लल अन्दाज़ी का सबब बने और सूरज के बुलंद होने की सूरत में जब आपको बेदार करने की ज़रूरत लाहिक़ हुई तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने इस मक़सद के लिये बुलंद आवाज़ से अल्लाहु अकबर कहना शुरू किया। आपको बराहे रास्त बेदार नहीं किया। इससे मालूम हुआ किसी बुज़ुर्ग शख़्सियत को नमाज़ के लिये बेदार करना बेअदबी या गुस्ताख़ी नहीं है। **(3)** नींद की वजह से अगर नमाज़ क़ज़ा हो जाये तो बाइसे अफ़सोस तो है लेकिन गुनाह और जुर्म नहीं है। **(4)** जो शख़्स मुसलमानों के साथ जमाअत में शरीक न हो उससे उसका सबब मालूम करना चाहिये। अगर उसका उज़्र शरई हो तो उसे क़ुबूल कर लेना चाहिये। जैसाकि जुन्बी सहाबी ने अदमे वाक़िफ़ियत की बिना पर तयम्मुम न किया। इसलिये नमाज़ में शरीक न हुआ तो आपने उससे उसका सबब पूछा, बताने पर उसको मसला समझा दिया जिससे साबित हुआ अगर पानी न मिले तो जुन्बी तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ लेगा और बाद में जब पानी मिल जायेगा तो गुस्ल कर लेगा। **(5)** ज़रूरत के तहत अजनबी औरत से बातचीत करना जाइज़ है और काफ़िर की चीज़ से भी फ़ायदा उठाया जा सकता है और काफ़िर के साथ एहसान भी किया जा सकता है। **(6)** प्यास की ज़रूरत गुस्ले जनाबत पर मुक़द्दम है। पानी पीने की ज़रूरत से ज़्यादा हो तो उससे गुस्ल किया जायेगा। **(7)** इस वाक़िये में भी आपके [illegible] मोजिज़े का ज़ुहूर हुआ कि आपने मश्कीज़े का मुँह खोलकर उसमें कुल्ली फ़रमाई, उस मश्कीज़े से चालीस सहाबा किराम (रज़ि.) ने वुज़ू किया। पानी पिया और अपने पानी के तमाम बर्तन भर लिये, [illegible]

सहाबी को ग़ुस्ल करवाया, कुछ मश्कीज़े के पानी में किसी क़िस्म की कमी न हुई बल्कि वो पहले से ज़्यादा भरा मालूम होता था। (8) नींद की हालत में दिल अगरचे बेदार होता था लेकिन आँखें सो जाती थीं। इसलिये आप (ﷺ) को फ़ज्र के तुलूअ होने और सूरज के निकलने का पता न चल सका क्योंकि सूरज का ताल्लुक़ देखने से है जो आँखों का काम है, दिल का नहीं। (9) जब आप (ﷺ) की सुबह की नमाज़ फ़ौत हो गई तो आपने सुबह की नमाज़ से पहले सुबह की सुन्नतें पढ़ीं, जिससे मालूम हुआ कि क़ज़ा शुदा नमाज़ के साथ, उसकी सुन्नतें पढ़ना बेहतर है। इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद (रह.) का यही मौक़िफ़ है अहनाफ़ के नज़दीक सुन्नतों की क़ज़ाई नहीं है। कुछ अहनाफ़ का ख़याल है कि अगर नमाज़ के साथ सुन्नतें क़ज़ा हो जायें तो फिर उनकी क़ज़ाई है। अगर सिर्फ़ सुन्नतें रह जायें तो क़ज़ाई नहीं है। (10) इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अहमद के नज़दीक क़ज़ा होने वाली नमाज़ के लिये अज़ान कही जायेगी और इमाम मालिक और इमाम शाफ़ेई के क़ौले जदीद के मुताबिक़ तकबीर कह लेना ही काफ़ी है।

(1564) हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) बयान करते हैं कि हम एक सफ़र में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे तो हम रात भर चलते रहे, यहाँ तक कि रात का आख़िरी वक़्त यानी सुबह के क़रीब का वक़्त हो गया, तो हम इस तरह लेट गये कि मुसाफ़िर को उससे ज़्यादा लज़ीज़ लेटना नहीं मिलता। फिर हमें सूरज की गर्मी ही ने बेदार किया। आगे कुछ कमी व बेशी के साथ अस्लम बिन ज़रीर की मज़्कूरा बाला रिवायत की तरह बयान किया और इस हदीस़ में ये भी है कि जब उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) बेदार हुए और उन्होंने लोगों की परेशानकुन हालत देखी और वो बुलंद आवाज़ और ज़ोरावर थे तो उन्होंने अल्लाहु अकबर कहना शुरू किया और तकबीर को बुलंद आवाज़ से कहा, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उनकी बुलंद आवाज़ से बेदार हो गये। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) बेदार हो

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، حَدَّثَنَا عَوْفُ بْنُ أَبِي جَمِيلَةَ الأَعْرَابِيُّ، عَنْ أَبِي رَجَاءٍ الْعُطَارِدِيِّ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ الْحُصَيْنِ، قَالَ كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي سَفَرٍ فَسَرَيْنَا لَيْلَةً حَتَّى إِذَا كَانَ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ قُبَيْلَ الصُّبْحِ وَقَعْنَا تِلْكَ الْوَقْعَةَ الَّتِي لاَ وَقْعَةَ عِنْدَ الْمُسَافِرِ أَحْلَى مِنْهَا فَمَا أَيْقَظَنَا إِلاَّ حَرُّ الشَّمْسِ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِنَحْوِ حَدِيثِ سَلْمِ بْنِ زَرِيرٍ وَزَادَ وَنَقَصَ . وَقَالَ فِي الْحَدِيثِ فَلَمَّا اسْتَيْقَظَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ وَرَأَى مَا أَصَابَ النَّاسَ وَكَانَ أَجْوَفَ جَلِيدًا فَكَبَّرَ وَرَفَعَ صَوْتَهُ بِالتَّكْبِيرِ حَتَّى اسْتَيْقَظَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِشِدَّةِ صَوْتِهِ بِالتَّكْبِيرِ فَلَمَّا اسْتَيْقَظَ رَسُولُ اللَّهِ

صلى الله عليه وسلم شَكَوْا إِلَيْهِ الَّذِي أَصَابَهُمْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ ضَيْرَ ارْتَحِلُوا " . وَاقْتَصَّ الْحَدِيثَ .

गये तो लोगों ने आपसे अपनी परेशानी का तज़्किरा किया तो आपने फ़रमाया, 'कोई नुक़सान नहीं, कूच करो।' और हदीस़ को आख़िर तक बयान किया।

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) अज्वफ़ : बुलंद आवाज़, आवाज़ जिसके जौफ़ (पेट) से निकले। **(2) जलीद :** क़वी, ताक़तवर और मज़बूत। **(3) ला ज़ैर :** यानी नींद के सबब नमाज़ का लेट हो जाना बाइसे नुक़सान नहीं है। इसलिये परेशान होने की ज़रूरत नहीं है।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ بَكْرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَبَاحٍ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا كَانَ فِي سَفَرٍ فَعَرَّسَ بِلَيْلٍ اضْطَجَعَ عَلَى يَمِينِهِ وَإِذَا عَرَّسَ قُبَيْلَ الصُّبْحِ نَصَبَ ذِرَاعَهُ وَوَضَعَ رَأْسَهُ عَلَى كَفِّهِ .

(1565) हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) बयान करते हैं कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) सफ़र में होते और रात को पड़ाव करते तो अपने दायें पहलू पर लेटते और जब सुबह के क़रीब पड़ाव करते तो अपना बाज़ू ज़मीन पर रख लेते और अपना सर अपनी हथेली पर रख लेते।

फ़ायदा : अगर इंसान सुबह के क़रीब आराम करने की ज़रूरत महसूस करे तो इस अन्दाज़ से लेटने से गुरेज़ करे कि नींद गहरी आ जाये, बल्कि इस तरह बैठकर कुछ आराम करे कि नमाज़ के लिये बेदार होना आसान हो।

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ نَسِيَ صَلاَةً فَلْيُصَلِّهَا إِذَا ذَكَرَهَا لاَ كَفَّارَةَ لَهَا إِلاَّ ذَلِكَ " . قَالَ قَتَادَةُ وَأَقِمِ الصَّلاَةَ لِذِكْرِي .

(1566) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो शख़्स कोई नमाज़ पढ़ना भूल जाये तो जब याद आ जाये उस वक़्त उसे पढ़ ले। उसका यही कफ़्फ़ारा है।' और क़तादा (रज़ि.) ने आयत पढ़ी, अक़िमिस्सला-त लिज़िक्री (मेरी याद के लिये नमाज़ पढ़ो)।'

(सहीह बुख़ारी : 597)

(1567) हज़रत अनस (रज़ि.) ने नबी (ﷺ) की मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की और उसमें ये टुकड़ा नक़ल नहीं किया कि 'उसका कफ़्फ़ारा यही है।'
(तिर्मिज़ी : 178, नसाई : 1/293, इब्ने माजह : 696)

وَحَدَّثَنَاهُ يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَسَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، جَمِيعًا عَنْ أَبِي عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَلَمْ يَذْكُرْ " لاَ كَفَّارَةَ لَهَا إِلاَّ ذَلِكَ " .

(1568) अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो कोई नमाज़ पढ़ना भूल गया या उससे सोया रहा, तो उसका कफ़्फ़ारा ये है कि याद आते ही पढ़ ले।'

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ نَبِيُّ اللَّهِ ﷺ " مَنْ نَسِيَ صَلاَةً أَوْ نَامَ عَنْهَا فَكَفَّارَتُهَا أَنْ يُصَلِّيَهَا إِذَا ذَكَرَهَا " .

(1569) अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई नमाज़ से सोया रहे या उससे ग़ाफ़िल हो जाये तो उसे याद आने पर पढ़ ले, क्योंकि अल्लाह तआला का फ़रमान है, 'मेरी याद के लिये नमाज़ पढ़ो।'

وَحَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنِي أَبِي، حَدَّثَنَا الْمُثَنَّى، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا رَقَدَ أَحَدُكُمْ عَنِ الصَّلاَةِ أَوْ غَفَلَ عَنْهَا فَلْيُصَلِّهَا إِذَا ذَكَرَهَا فَإِنَّ اللَّهَ يَقُولُ أَقِمِ الصَّلاَةَ لِذِكْرِي " .

फ़ायदा : हज़रत अनस (रज़ि.) की हदीस़ से मालूम होता है कि इंसान जिस वक़्त भी नींद से बेदार हो या भूल जाने की सूरत में जब नमाज़ याद आ जाये, वो नमाज़ पढ़ लेगा। हाँ बिला सबब और जान-बूझकर औक़ाते मक्रूहा में नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं है। इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद (रह.) का यही मस्लक है कि औक़ाते मक्रूहा में नमाज़ की क़ज़ाई दी जा सकती है। अहनाफ़ के नज़दीक इन औक़ात में नमाज़ की क़ज़ाई देना भी दुरुस्त नहीं है।

इस किताब के कुल 31 बाब और 267 हदीसें हैं।

किताब सलातुल मुसाफ़िरीन व क़सरिहा का तआरुफ़

सहीह मुस्लिम की किताबों और अबवाब के उन्वान इमाम मुस्लिम (रह.) के अपने नहीं हैं। उन्होंने सुनन की एक उम्दा तर्तीब से अहादीस़ बयान की हैं। किताबों और अबवाब की तक़सीम बाद में की गई है। फ़र्ज़ नमाज़ों के कई सारे मसाइल पर अहादीस़ लाने के बाद यहाँ इमाम मुस्लिम (रह.) ने सफ़र की नमाज़ और उससे मुताल्लिक़ मसाइल, जैसे : क़सर, सफ़र और सफ़र के अलावा नमाज़ें जमा करने, सफ़र के दौरान में नवाफ़िल और दूसरी सहूलतों के बारे में अहादीस़ लाये हैं। इमाम नववी (रह.) ने यहाँ इस हवाले से किताब सलातुल मुसाफ़िरीन व क़सरिहा का उन्वान बांध दिया है। इन मसाइल के बाद इमाम मुस्लिम (रह.) ने इमाम की इक़्तिदा और उसके बाद नफ़ल नमाज़ों के हवाले से अहादीस़ बयान की हैं। आख़िर में बड़ा हिस्सा रात के नवाफ़िल (तहज्जुद) से मुताल्लिक़ा मसाइल के लिये वक़्फ़ किया है। इन सबके उन्वान अबवाब की सूरत में हैं। इससे पता चलता है कि किताब सलातुल मुसाफ़िरीन व क़सरिहा मुस्तक़िल किताब नहीं बल्कि ज़ैली किताब है। असल किताबुस्सलात ही है जो इस ज़ैली के ख़त्म होने के बाद इख़्तिताम पज़ीर होती है। यही वजह है कि कुछ मुताख़्ख़िरीन ने अपनी शुरूह में इस ज़ैली किताब को असल किताबुस्सलात ही में ज़म (शामिल) कर दिया है।

किताबुस्सलात के इस हिस्से में उन सहूलतों का ज़िक्र है जो अल्लाह की तरफ़ से पहले हालते जंग में अता की गईं और बाद में उनको तमाम मुसाफ़िरों के लिये कर दिया गया। तहिय्यतुल मस्जिद, चाश्त की नमाज़, फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ अदा किये जाने वाले नवाफ़िल के अलावा रात की नमाज़ में रब्बे तआला के साथ मुनाजात (लौ लगाने) की लज़्ज़तों, उन घड़ियों में मुनाजात करने वाले बन्दों के लिये अल्लाह के क़ुर्ब और उसकी बेपनाह रहमत व मग़्फ़िरत के दरवाज़े खुल जाने और रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़ूबसूरत दुआओं का रूह परवर तज़्किरा, पढ़ने वाले के ईमान में इज़ाफ़ा कर देता है।

हदीस नम्बर 1570 से 1731 तक

(बक़िया अहादीस अगली जिल्द में)

كتاب صلاة المسافرين وقصرها

6. मुसाफ़िरों की नमाज़ और उसके क़स्र का बयान

باب صَلاَةِ الْمُسَافِرِينَ وَقَصْرِهَا

बाब 1 : सफ़र पर निकलने वालों की नमाज़ और उसका क़स्र करना

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، زَوْجِ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ فُرِضَتِ الصَّلاَةُ رَكْعَتَيْنِ رَكْعَتَيْنِ فِي الْحَضَرِ وَالسَّفَرِ فَأُقِرَّتْ صَلاَةُ السَّفَرِ وَزِيدَ فِي صَلاَةِ الْحَضَرِ .

(1570) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़ौजा मोहतरमा हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि सफ़र और हज़र (इक़ामत) में नमाज़ दो-दो रकअत फ़र्ज़ की गई थी, फिर सफ़र में नमाज़ पहली हालत पर बरक़रार रखी गई और हज़र की नमाज़ में इज़ाफ़ा कर दिया गया।

(सहीह बुख़ारी:355 अबूदाऊद:1198, नसाई:1/255)

وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، وَحَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ عَائِشَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ فَرَضَ اللَّهُ الصَّلاَةَ حِينَ فَرَضَهَا رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ أَتَمَّهَا فِي الْحَضَرِ فَأُقِرَّتْ صَلاَةُ السَّفَرِ عَلَى الْفَرِيضَةِ الأُولَى .

(1571) नबी (ﷺ) की बीवी हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि जब अल्लाह तआला ने नमाज़ फ़र्ज़ की तो उसे दो रकअत फ़र्ज़ क़रार दिया। फिर हज़र की सूरत में उसे पूरा कर दिया और सफ़र में नमाज़ को पहली फ़र्ज़िय्यत पर क़ायम रखा गया।

وَحَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ الصَّلاَةَ، أَوَّلَ مَا فُرِضَتْ رَكْعَتَيْنِ فَأُقِرَّتْ صَلاَةُ السَّفَرِ وَأُتِمَّتْ صَلاَةُ الْحَضَرِ . قَالَ الزُّهْرِيُّ

(1572) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, शुरूआत में नमाज़ दो रकअत फ़र्ज़ की गई। फिर सफ़र की नमाज़ बरक़रार रखी गई और हज़र की नमाज़ पूरी कर दी गई। इमाम ज़ोहरी कहते हैं, मैंने उरवह (रज़ि.) से

पूछा, आइशा (रज़ि.) सफ़र में नमाज़ पूरी क्यों पढ़ती हैं? उसने कहा, उ़समान (रज़ि.) की तरह वो भी तावील करती हैं।

فَقُلْتُ لِعُرْوَةَ مَا بَالُ عَائِشَةَ تُتِمُّ فِي السَّفَرِ قَالَ إِنَّهَا تَأَوَّلَتْ كَمَا تَأَوَّلَ عُثْمَانُ .

(सहीह बुख़ारी : 1090, नसाई : 3/78)

फ़वाइद : (1) नमाज़ हिज्रत से पहले मक्का मुकर्रमा में फ़र्ज़ हुई है। मग़्रिब की नमाज़ के सिवा बाक़ी चारों नमाज़ें दो-दो रकअ़त थीं। मदीना मुनव्वरा की तरफ़ हिज्रत के बाद मग़्रिब और फ़ज्र के सिवा नमाज़ों में दो-दो रकअ़त का इज़ाफ़ा कर दिया गया। फ़ज्र में क़िरअत तवील होती है इसलिये इसमें इज़ाफ़ा नहीं किया गया और मग़्रिब का अन्दाज़ पहले ही जुदागाना था। **(2)** हज़रत उ़समान (रज़ि.) और हज़रत आइशा (रज़ि.) नमाज़ पूरी क्यों पढ़ते थे? इसके सबब और वजह या तावील में इख़्तिलाफ़ है। हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) का ख़्याल है, दौराने सफ़र में नमाज़ में क़सर करते थे और जब कहीं पड़ाव कर लेते तो नमाज़ पूरी पढ़ते थे। कुछ हज़रात का ख़्याल है कि हज़रत उ़समान (रज़ि.) के दौर में इस्लाम दूर तक फैल गया और कुछ ऐसे लोग भी हज करने के लिये आते थे जो दीनी मसाइल पूरी तरह नहीं समझते थे, इसलिये उन्होंने अपनी ख़िलाफ़त का आधा दौर गुज़रने के बाद मिना में नमाज़ पूरी पढ़नी शुरू कर दी थी ताकि लोग किसी ग़लतफ़हमी में मुब्तला न हो जायें।

कुछ हज़रात का ख़्याल है कि हज़रत उ़समान (रज़ि.) के दौर में जब मिना में लोगों ने रिहाइश के लिये मकानात बना लिये और उसने एक बस्ती की शक्ल इख़्तियार कर ली तो उन्होंने नमाज़ पूरी पढ़नी शुरू कर दी। कुछ हज़रात का ख़्याल है उन्होंने मिना में शादी कर ली थी और इंसान जहाँ शादी कर ले वहाँ नमाज़ पूरी पढ़ेगा। इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक और इमाम अहमद (रह.) का नज़रिया भी यही है। इसलिये बक़ौल इब्ने क़य्यिम (रह.) यही जवाब बेहतर है अगरचे और भी अस्बाब बयान किये गये हैं। **(3)** सफ़र में नमाज़ के क़स्र और रोज़े के इफ़्तार करने की रुख़्सत है, इसलिये सहीह यही मालूम होता है कि हज़रत उ़समान (रज़ि.) और हज़रत आइशा (रज़ि.) क़स्र को फ़र्ज़ नहीं समझते थे, जिस तरह के सुनन दार क़ुतनी में रिवायत है जिसको उन्होंने सहीह क़रार दिया है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! आपने नमाज़े क़स्र पढ़ी है और मैंने नमाज़ पूरी पढ़ी है, आपने रोज़ा रखा है और मैंने इफ़्तार किया है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, **'ऐ आइशा! तूने अच्छा किया है।'** **(4)** इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद (रह.) के नज़दीक नमाज़ में क़स्र करना अफ़ज़ल और पूरा पढ़ना जाइज़ है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के नज़दीक क़स्र फ़र्ज़ है अकेले के लिये पूरी नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं है, हाँ इमाम की इक़्तिदा में जाइज़ है। हालांकि अहनाफ़ का उसूल है कि रावी के फ़हम को रिवायत पर तरजीह होगी और यहाँ हज़रत आइशा (रज़ि.) का अ़मल यही है कि वो नमाज़ पूरी पढ़ती थीं। इसीलिये अहनाफ़ को नमाज़ पूरी पढ़नी चाहिये।

(1573) हज़रत यअ़ला बिन उमय्या बयान करते हैं कि मैंने उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से पूछा कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है, 'अगर तुम्हें काफ़िरों की तरफ़ से फ़ित्ने का

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرُونَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ

بْنُ إِدْرِيسَ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي عَمَّارٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بَابَيْهِ، عَنْ يَعْلَى بْنِ أُمَيَّةَ، قَالَ قُلْتُ لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ { لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا، مِنَ الصَّلاَةِ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا} فَقَدْ أَمِنَ النَّاسُ فَقَالَ عَجِبْتُ مِمَّا عَجِبْتَ مِنْهُ فَسَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ ذَلِكَ . فَقَالَ " صَدَقَةٌ تَصَدَّقَ اللَّهُ بِهَا عَلَيْكُمْ فَاقْبَلُوا صَدَقَتَهُ " .

अन्देशा हो तो तुम पर कोई हर्ज नहीं है कि नमाज़ में क़स्र कर लो।' (सूरह निसा : 101) अब तो लोग बेख़ौफ़ हो गये हैं (फिर क़स्र क्यों करते हैं?) तो उन्होंने जवाब दिया, मुझे भी इस बात पर तअज्जुब हुआ था, जिस पर तुम तअज्जुब कर रहे हो, तो मैंने इसके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) से सवाल किया, तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये अल्लाह तआला का सदक़ा है जो अल्लाह तआला ने तुम पर किया है, तो उसके सदक़े को क़ुबूल करो।'
(अबू दाऊद : 1199, 1200, तिर्मिज़ी : 3034, नसाई : 3/120, इब्ने माजह : 1065)

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम हुआ नमाज़े क़स्र का असल सबब दुश्मन से जंग का अन्देशा था, लेकिन अल्लाह तआला ने उम्मत पर एहसान करते हुए इसको आम कर दिया कि अगरचे सफ़र में किसी क़िस्म का ख़ौफ़ व ख़तरा न हो तब भी क़स्र कर सकते हो इसलिये 'लैसा अलैकुम जुनाहुन' और सदक़े का लफ़्ज़ इस बात की दलील है कि ये फ़र्ज़ नहीं है लेकिन ये चूंकि अल्लाह का फ़ज़्ल व एहसान है इसलिये इसका तक़ाज़ा यही है कि इंसान इन्फ़िरादी और शख़्सी तौर पर नमाज़ क़स्र पढ़े। हाँ अगर मुक़ीम इमाम (लोकल इमाम) के पीछे नमाज़ पढ़े तो पूरी पढ़ ले।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي عَمَّارٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بَابَيْهِ، عَنْ يَعْلَى بْنِ أُمَيَّةَ، قَالَ قُلْتُ لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ . بِمِثْلِ حَدِيثِ ابْنِ إِدْرِيسَ .

(1574) हज़रत यअला बिन उमय्या बयान करते हैं कि मैंने उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सवाल किया तो उन्होंने मज़्कूरा बाला जवाब दिया।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَسَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَأَبُو الرَّبِيعِ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرُونَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ بُكَيْرِ بْنِ الأَخْنَسِ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ

(1575) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे नबी (ﷺ) के वास्ते से उसकी ज़बान से, हज़र में चार, सफ़र में दो और ख़ौफ़ (जंग) में एक रकअत नमाज़ फ़र्ज़ की है।

عَبَّاسٍ، قَالَ فَرَضَ اللَّهُ الصَّلاَةَ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّكُمْ صلى الله عليه وسلم فِي الْحَضَرِ أَرْبَعًا وَفِي السَّفَرِ رَكْعَتَيْنِ وَفِي الْخَوْفِ رَكْعَةً .

(अबू दाऊद : 1247, नसाई : 1/226, 3/118-119, 3/169, इब्ने माजह : 1068)

फ़ायदा : सफ़र में ज़ुहर, असर और इशा में क़स्र है। यानी सिर्फ़ दो रकअत नमाज़ फ़र्ज़ है। मग़रिब और फ़ज्र की नमाज़ में सफ़र और हज़र में कोई फ़र्क़ नहीं है। जंग में अगर जंग सफ़र में हो तो अइम्मए अरबआ और जुम्हूर उम्मत के नज़दीक नमाज़ क़स्र है। जंगी हालात की बिना पर कैफ़ियत में फ़र्क़ हो सकता है। तफ़सील नमाज़े ख़ौफ़ में आयेगी।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، جَمِيعًا عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مَالِكٍ، - قَالَ عَمْرٌو حَدَّثَنَا قَاسِمُ بْنُ مَالِكٍ الْمُزَنِيُّ، - حَدَّثَنَا أَيُّوبُ بْنُ عَائِذٍ الطَّائِيُّ، عَنْ بُكَيْرِ بْنِ الأَخْنَسِ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ إِنَّ اللَّهَ فَرَضَ الصَّلاَةَ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّكُمْ ﷺ عَلَى الْمُسَافِرِ رَكْعَتَيْنِ وَعَلَى الْمُقِيمِ أَرْبَعًا وَفِي الْخَوْفِ رَكْعَةً .

(1576) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे नबी (ﷺ) की ज़बान पर मुसाफ़िर पर दो रकअतें, मुक़ीम पर चार और जंग में एक रकअत फ़र्ज़ की है।

फ़ायदा : जुम्हूर उम्मत के नज़दीक मुजाहिद, एक रकअत इमाम के साथ पढ़ेगा और एक रकअत अकेला पढ़ेगा और यहाँ मुराद इमाम के साथ वाली रकअत है। लेकिन हसन बसरी, ज़हहाक और इमाम इस्हाक़ (रह.) के नज़दीक ख़ौफ़ में एक ही रकअत फ़र्ज़ है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ قَتَادَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ مُوسَى بْنِ سَلَمَةَ الْهُذَلِيِّ، قَالَ سَأَلْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ كَيْفَ أُصَلِّي إِذَا كُنْتُ بِمَكَّةَ إِذَا لَمْ أُصَلِّ مَعَ الإِمَامِ . فَقَالَ رَكْعَتَيْنِ سُنَّةَ أَبِي الْقَاسِمِ ﷺ .

(1577) मूसा बिन सलमा हुज़ली बयान करते हैं कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछा, जब मैं मक्का में हूँ और इमाम के साथ नमाज़ न पढ़ूँ तो फिर कैसे नमाज़ पढ़ूँ? तो उन्होंने जवाब दिया, अबुल क़ासिम (ﷺ) की सुन्नत दो रकअत है।

(नसाई : 3/119)

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ مِنْهَالٍ الضَّرِيرُ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا

(1578) इमाम साहब ने क़तादा (रज़ि.) की मज़्कूरा सनद से दूसरे उस्तादों से भी इस

مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا أَبِي جَمِيعًا، عَنْ قَتَادَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

क़िस्म की हदीस़ बयान की है।

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ حَفْصِ بْنِ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ صَحِبْتُ ابْنَ عُمَرَ فِي طَرِيقِ مَكَّةَ - قَالَ - فَصَلَّى لَنَا الظُّهْرَ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ أَقْبَلَ وَأَقْبَلْنَا مَعَهُ حَتَّى جَاءَ رَحْلَهُ وَجَلَسَ وَجَلَسْنَا مَعَهُ فَحَانَتْ مِنْهُ الْتِفَاتَةٌ نَحْوَ حَيْثُ صَلَّى فَرَأَى نَاسًا قِيَامًا فَقَالَ مَا يَصْنَعُ هَؤُلاَءِ قُلْتُ يُسَبِّحُونَ . قَالَ لَوْ كُنْتُ مُسَبِّحًا لأَتْمَمْتُ صَلاَتِي يَا ابْنَ أَخِي إِنِّي صَحِبْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي السَّفَرِ فَلَمْ يَزِدْ عَلَى رَكْعَتَيْنِ حَتَّى قَبَضَهُ اللَّهُ وَصَحِبْتُ أَبَا بَكْرٍ فَلَمْ يَزِدْ عَلَى رَكْعَتَيْنِ حَتَّى قَبَضَهُ اللَّهُ وَصَحِبْتُ عُمَرَ فَلَمْ يَزِدْ عَلَى رَكْعَتَيْنِ حَتَّى قَبَضَهُ اللَّهُ ثُمَّ صَحِبْتُ عُثْمَانَ فَلَمْ يَزِدْ عَلَى رَكْعَتَيْنِ حَتَّى قَبَضَهُ اللَّهُ وَقَدْ قَالَ اللَّهُ { لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ} .

(1579) हफ़्स बिन आसिम बयान करते हैं कि मैंने मक्का के रास्ते में इब्ने उमर (रज़ि.) के साथ सफ़र किया। उन्होंने हमें ज़ुहर की नमाज़ दो रकअ़त पढ़ाई। फिर वो और हम अपनी क़ियामगाह की तरफ़ बढ़े और हम उनके साथ बैठ गये। अचानक उन्होंने उस जगह की तरफ़ नज़र दौड़ाई जहाँ उन्होंने नमाज़ पढ़ाई थी तो लोगों को देखा खड़े नमाज़ पढ़ रहे हैं। तो उन्होंने पूछा, ये लोग क्या कर रहे हैं? मैंने कहा, सुन्नतें पढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा, अगर मुझे सुन्नतें पढ़नी होतीं तो मैं नमाज़ पूरी पढ़ता (क़स्र न करता) ऐ मेरे भतीजे! मैं इस सफ़र में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ रहा तो आप (ﷺ) ने दो रकअ़त से ज़्यादा नमाज़ नहीं पढ़ी। यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उन्हें क़ब्ज़े में ले लिया और मैं अबू बकर (रज़ि.) के साथ रहा तो उन्होंने भी दो रकअ़त से ज़्यादा नमाज़ नहीं पढ़ी। यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उन्हें क़ब्ज़े में ले लिया और मैं उमर (रज़ि.) के साथ रहा तो उन्होंने दो रकअ़त से ज़्यादा न पढ़ीं। यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उनको वफ़ात दी और उसमान (रज़ि.) के साथ रहा उन्होंने भी दो से ज़्यादा रकअ़तें नहीं पढ़ीं। यहाँ तक कि वो अल्लाह के हुक्म से वफ़ात पा गये और अल्लाह तआला का फ़रमान है, 'तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) बेहतरीन नमूना हैं।'

(सहीह बुख़ारी : 1101, 1102, अबू दाऊद : 1223, नसाई : 3/123, इब्ने माजह : 1071)

फ़वाइद : (1) हुज़ूर (ﷺ) और ख़ुलफ़ाए राशिदीन नमाज़ के साथ, सफ़र में सुनने मुअक्कदा नहीं पढ़ते थे। लेकिन सुबह की सुन्नतें पढ़ते थे इसी तरह वित्र भी पढ़ते थे और आम नवाफ़िल भी सवारी पर बैठे-बैठे पढ़ते थे। इसलिये इमाम मालिक, शाफ़ेई और इमाम अहमद (रह.) के नज़दीक सुनने मुअक्कदा का हुक्म नवाफ़िल वाला होगा। उनको नफ़ल की हैसियत से पढ़ लिया जायेगा। हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम ने हसन बसरी से नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथी सफ़र में फ़र्ज़ नमाज़ से पहले और बाद में नफ़ल पढ़ा करते थे। (ज़ादुल मआद, तबअ अहयाउत्तुरासुल इस्लामी, पेज नम्बर 456) (2) हज़रत उ़समान (रज़ि.) मिना के सिवा तमाम मक़ामात पर सफ़र में नमाज़ क़स्र पढ़ते थे। (3) अहनाफ़ के नज़दीक मुसाफ़िर सफ़र के दौरान सुन्नते मुअक्कदा न पढ़े और हालते क़ियाम में पढ़ ले।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، - يَعْنِي ابْنَ زُرَيْعٍ - عَنْ عُمَرَ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، قَالَ مَرِضْتُ مَرَضًا فَجَاءَ ابْنُ عُمَرَ يَعُودُنِي قَالَ وَسَأَلْتُهُ عَنِ السُّبْحَةِ، فِي السَّفَرِ فَقَالَ صَحِبْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي السَّفَرِ فَمَا رَأَيْتُهُ يُسَبِّحُ وَلَوْ كُنْتُ مُسَبِّحًا لأَتْمَمْتُ وَقَدْ قَالَ اللَّهُ تَعَالَى { لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ إِسْوَةٌ حَسَنَةٌ}

(1580) हफ़्स बिन आ़सिम बयान करते हैं, मैं एक बीमारी में मुब्तला हुआ तो इब्ने उ़मर (रज़ि.) मेरी इयादत के लिये आये तो मैंने उनसे सफ़र में सुन्नतें पढ़ने के बारे में सवाल किया? तो उन्होंने कहा, मैं सफ़र में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ रहा हूँ तो मैंने आप (ﷺ) को सुन्नतें पढ़ते नहीं देखा और अगर मुझे सुन्नतें पढ़नी होतीं तो मैं नमाज़ ही पूरी पढ़ता और अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है, 'रसूलुल्लाह तुम्हारे लिये बेहतरीन नमूना हैं।'

फ़ायदा : हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) का मक़सद ये है कि सफ़र की बिना पर मुसाफ़िर की सहूलत और आसानी की ख़ातिर फ़र्ज़ नमाज़ में तख़्फ़ीफ़ कर दी गई है तो सुनने रातिबा की पाबंदी क्यों ज़रूरी ठहरी? अगर मुसाफ़िर के लिये तख़्फ़ीफ़ व सहूलत मतलूब न होती तो नमाज़ पूरी पढ़ना ही बेहतर ठहरता।

حَدَّثَنَا خَلَفُ بْنُ هِشَامٍ، وَأَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالُوا حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، وَهُوَ ابْنُ زَيْدٍ ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَيَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالاَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، كِلاَهُمَا عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ صَلَّى الظُّهْرَ بِالْمَدِينَةِ أَرْبَعًا وَصَلَّى الْعَصْرَ بِذِي الْحُلَيْفَةِ رَكْعَتَيْنِ .

(1581) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मदीना में ज़ुहर की चार रकअ़तें पढ़ाईं और ज़ुल हुलैफ़ा में अ़सर की दो रकअ़तें पढ़ाईं।

(सहीह बुख़ारी : 1547, 1548, 1551, 1712, 1714, 1715, 2951, 2986, अबू दाऊद : 1796, 2793, नसाई : 1/237)

(1582) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मदीना में ज़ुहर की चार रकआत पढ़ीं और मैंने आप (ﷺ) के साथ ज़ुल हुलैफ़ा में असर की दो रकअतें पढ़ीं।

(सहीह बुख़ारी : 1089, 1546, अबू दाऊद : 1202, 1773, तिर्मिज़ी : 546, नसाई : 1/235)

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْكَدِرِ، وَإِبْرَاهِيمُ بْنُ مَيْسَرَةَ، سَمِعَا أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ الظُّهْرَ بِالْمَدِينَةِ أَرْبَعًا وَصَلَّيْتُ مَعَهُ الْعَصْرَ بِذِي الْحُلَيْفَةِ رَكْعَتَيْنِ ‏.‏

(1583) यहया बिन यज़ीद हुनाई बयान करते हैं कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से नमाज़ क़स्र करने के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) जब तीन मील या तीन फ़रसख़ की मसाफ़त पर निकलते (उसके बारे में शोबा को शक है) तो दो रकअत नमाज़ पढ़ते।

(अबू दाऊद : 1201)

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، كِلاَهُمَا عَنْ غُنْدَرٍ، - قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، غُنْدَرٌ - عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ يَزِيدَ الْهُنَائِيِّ، قَالَ سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ عَنْ قَصْرِ الصَّلاَةِ، فَقَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا خَرَجَ مَسِيرَةَ ثَلاَثَةِ أَمْيَالٍ أَوْ ثَلاَثَةِ فَرَاسِخَ - شُعْبَةُ الشَّاكُّ - صَلَّى رَكْعَتَيْنِ ‏.‏

फ़वाइद : (1) हुज़ूर (ﷺ) ने चार क़िस्म के सफ़र फ़रमाये हैं : (1) आम तौर पर आप (ﷺ) ने सफ़र जिहाद की ख़ातिर किया है (2) सफ़रे हिज्रत (3) सफ़रे उमरह (4) सफ़रे हज और ये चारों सफ़र तवील थे। आप (ﷺ) का कोई सफ़र भी ऐसा नहीं है जो सिर्फ़ नौ या दस मील तक का हो। **(2)** इमाम मालिक के नज़दीक मसाफ़ते क़स्र एक दिन की मसाफ़त है जो आम तौर पर बीस मील बनते हैं। इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद के नज़दीक मसाफ़ते क़स्र दो दिन की मसाफ़त है। जैसे इमाम नववी और इमाम इब्ने क़ुदामा ने चार बरद (यानी 48 मील क़रार दिया है) क्योंकि एक बरीद में चार फ़रसख़ होते हैं और एक फ़रसख़ में तीन मील होते हैं। इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक मसाफ़ते क़स्र तीन दिन की मसाफ़त है। लेकिन अहनाफ़ आम तौर पर मीलों में इसको 48 मील क़रार देते हैं। इस तरह इन तीनों इमामों के नज़दीक अगर 48 मील तक सफ़र करना हो तो फिर इंसान क़स्र कर सकता है लेकिन ये तहदीद और तअयीन किसी सहीह और मरफ़ूअ हदीस़ से स़ाबित नहीं है। आप (ﷺ) से मुत्लक़ सफ़र में बिला तहदीद व तअयीन क़स्र स़ाबित है। इसलिये उर्फ़े आम में जितनी मसाफ़त को सफ़र समझा जाता है उसमें इंसान नमाज़ क़स्र कर सकता है। मसाफ़त की तअयीन की ज़रूरत नहीं है। इंसान जब अपने आपको मुसाफ़िर समझे और उसका दिल मुत्मइन हो कि वाक़ेई मुसाफ़िर हूँ तो वो क़स्र नमाज़ पढ़े। **(3)** इंसान जब घर से सफ़र पर रवाना हो जाये और आबादी से निकल जाये तो

नमाज़ का वक़्त हो जाने पर वो क़स्र नमाज़ पढ़ेगा। हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर जो आप (ﷺ) का आख़िरी सफ़र है, आपने ज़ुहर की नमाज़ मदीना में पूरी पढ़ी और असर की नमाज़ ज़ुल हुलैफ़ा में क़स्र की सूरत में अदा की और ज़ुल हुलैफ़ा मदीना मुनव्वरा से तक़रीबन 6 मील के फ़ासले पर है। कुछ हज़रात ने हज़रत अनस (रज़ि.) के जवाब से क़स्र की मसाफ़त तीन फ़रसख़ यानी नौ मील क़रार दी है। हालांकि हुज़ूर (ﷺ) का कोई सफ़र भी इतनी कम मसाफ़त का साबित नहीं है।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ مَهْدِيٍّ، - قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، - حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ خُمَيْرٍ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ عُبَيْدٍ، عَنْ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ، قَالَ خَرَجْتُ مَعَ شُرَحْبِيلَ بْنِ السِّمْطِ إِلَى قَرْيَةٍ عَلَى رَأْسِ سَبْعَةَ عَشَرَ أَوْ ثَمَانِيَةَ عَشَرَ مِيلاً فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ . فَقُلْتُ لَهُ فَقَالَ رَأَيْتُ عُمَرَ صَلَّى بِذِي الْحُلَيْفَةِ رَكْعَتَيْنِ فَقُلْتُ لَهُ فَقَالَ إِنَّمَا أَفْعَلُ كَمَا رَأَيْتُ رَسُولَ ﷺ يَفْعَلُ

(1584) ज़ुबैर बिन नुफ़ेर बयान करते हैं कि मैं शुरहबील बिन सिम्त के साथ एक बस्ती में गया जो 17 या 18 मील के फ़ासले पर थी तो उन्होंने नमाज़ दो रकअत अदा की। तो मैंने उनसे पूछा, उन्होंने जवाब दिया, मैंने उमर (रज़ि.) को ज़ुल हुलैफ़ा में दो रकअत पढ़ते देखा तो मैंने उनसे पूछा, उन्होंने जवाब दिया, मैं वैसे ही करता हूँ जैसाकि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को करते देखा है।

(नसाई : 1436)

फ़ायदा : ये बात ऊपर गुज़र चुकी है कि ज़ुल हुलैफ़ा रसूलुल्लाह (ﷺ) का सफ़र का आख़िरी पड़ाव नहीं था कि आप इससे आगे न गये हों। दौराने सफ़र अलग-अलग वक़्तों में आपने वहाँ आरिज़ी तौर पर क़ियाम फ़रमाया और नमाज़ क़स्र अदा की। क्योंकि आप मुसाफ़िर थे और मुसाफ़िर आते-जाते वक़्त आबादी से बाहर क़स्र कर सकता है।

وَحَدَّثَنِيهِ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَقَالَ عَنِ ابْنِ السِّمْطِ، وَلَمْ يُسَمِّ شُرَحْبِيلَ وَقَالَ إِنَّهُ أَتَى أَرْضًا يُقَالُ لَهَا دَوْمِينُ مِنْ حِمْصَ عَلَى رَأْسِ ثَمَانِيَةَ عَشَرَ مِيلاً

(1585) दूसरी सनद में है कि इब्ने सिम्त हिम्स की दौमीन नामी जगह पर पहुँचे जो 18 मील के फ़ासले पर थी (और वहाँ नमाज़ क़स्र पढ़ी)।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى

(1586) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) **बयान करते हैं कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मदीना से मक्का जाने के लिये निकले तो आप (ﷺ) दो-दो रकअत नमाज़ पढ़ते रहे यहाँ तक**

الله عليه وسلم مِنَ الْمَدِينَةِ إِلَى مَكَّةَ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ رَكْعَتَيْنِ حَتَّى رَجَعَ . قُلْتُ كَمْ أَقَامَ بِمَكَّةَ قَالَ عَشْرًا .

कि वापस मदीना पहुँच गये। रावी ने हज़रत अनस (रज़ि.) से पूछा, आप मक्का में कितना अरसा ठहरे? उन्होंने जवाब दिया, दस दिन।
(सहीह बुख़ारी : 1081, 4297, अबू दाऊद : 1233, तिर्मिज़ी : 548, नसाई : 3/118, इब्ने माजह : 1077)

फ़ायदा : इस हदीस़ में हज्जतुल विदाअ के सफ़र की तरफ़ इशारा है। आप चार ज़िल्हिज्जा को मक्का मुकर्रमा पहुँचे थे। फिर आठ ज़िल्हिज्जा को सुबह के बाद मिना चले गये और नौ ज़िल्हिज्जा को सुबह की नमाज़ के बाद अ़रफ़ात चले गये। दस ज़िल्हिज्जा की रात मुज़्दलफ़ा में गुज़ारी और सूरज निकलने से पहले मिना की तरफ़ वापस आ गये और 13 ज़िल्हिज्जा तक मिना में रहे और 14 ज़िल्हिज्जा को फ़ज्र से पहले मदीना मुनव्वरा की तरफ़ सफ़र इख़्तियार कर लिया। इस तरह आपने मक्का मुकर्रमा और उसके आस-पास में दस दिन गुज़ारे। ख़ास तौर पर मक्का में आपने बीस नमाज़ें अदा कीं। इसलिये इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई, और इमाम अहमद के नज़दीक क़स्र बीस नमाज़ तक है। अगर इससे ज़्यादा अ़रसा क़ियाम करना हो तो शुरू ही से नमाज़ पूरी पढ़नी होगी और अहनाफ़ ने फ़तहे मक्का के दिनों से इस्तिदलाल करते हुए मुद्दते सफ़र पन्द्रह दिन मुक़र्रर की है। हालांकि ये दिन जंग के दिन थे, जिनमें इंसान इक़ामत की निय्यत नहीं करता। अ़ल्लामा ग़ुलाम रसूल साहब कहते हैं, ये रिवायात हमें तब मुफ़ीद होतीं जब उनमें ये तसरीह होती कि आपने 15, 17 या 19 दिन क़ियाम की निय्यत की होती और फिर आप क़स्र करते रहते क्योंकि अगर 15 दिन क़ियाम की निय्यत न हो। फिर क़ियाम पन्द्रह दिन से ज़्यादा हो जाये फिर भी क़स्र पढ़ी जाती है। (जिल्द 2, पेज नम्बर 378)

अहनाफ़ के पास पन्द्रह दिन के लिये बतौरे दलील कोई मरफ़ूअ़ हदीस़ नहीं है। अ़ल्लामा ग़ुलाम रसूल ने सिर्फ़ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) का अ़मल पेश किया है और उनसे इस सिलसिले में अलग-अलग अफ़आ़ल मन्क़ूल हैं।

(1587) यही हदीस़ हज़रत अनस (रज़ि.) से एक दूसरी सनद से भी मरवी है।

وَحَدَّثَنَاهُ قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، ح وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ، جَمِيعًا عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِ حَدِيثِ هُشَيْمٍ .

(1588) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि हम हज के लिये मदीना से चले, फिर मज़्कूरा बाला रिवायत बयान फ़रमाई।

وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ خَرَجْنَا مِنَ الْمَدِينَةِ إِلَى الْحَجِّ . ثُمَّ ذَكَرَ مِثْلَهُ .

وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، جَمِيعًا عَنِ الثَّوْرِيِّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ وَلَمْ يَذْكُرِ الْحَجَّ .

(1589) यही रिवायत एक और सनद से मन्क़ूल है लेकिन उसमें हज का तज़्किरा नहीं है।

باب قَصْرِ الصَّلاَةِ بِمِنًى

बाब 2 : मिना में नमाज़ क़स्र पढ़ना

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، وَهُوَ ابْنُ الْحَارِثِ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَنَّهُ صَلَّى صَلاَةَ الْمُسَافِرِ بِمِنًى وَغَيْرِهِ رَكْعَتَيْنِ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ رَكْعَتَيْنِ صَدْرًا مِنْ خِلاَفَتِهِ ثُمَّ أَتَمَّهَا أَرْبَعًا .

(1590) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मिना और दूसरी जगह यानी उसके आस-पास में मुसाफ़िर वाली नमाज़ पढ़ी। अबू बकर व उ़मर (रज़ि.) ने भी और उ़समान (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त के शुरूआती सालों में दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, बाद में पूरी चार पढ़ने लगे।

وَحَدَّثَنَاهُ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، ح وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، جَمِيعًا عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ قَالَ بِمِنًى . وَلَمْ يَقُلْ وَغَيْرِهِ .

(1591) एक दूसरी सनद से भी यही रिवायत मन्क़ूल है लेकिन उसमें मिना के साथ दूसरी जगह का ज़िक्र नहीं है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِمِنًى رَكْعَتَيْنِ وَأَبُو بَكْرٍ بَعْدَهُ وَعُمَرُ بَعْدَ أَبِي بَكْرٍ وَعُثْمَانُ صَدْرًا مِنْ خِلاَفَتِهِ ثُمَّ إِنَّ

(1592) हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मिना में दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी। आप (ﷺ) के बाद अबू बकर ने और अबू बकर के बाद उ़मर ने और उ़समान ने अपनी ख़िलाफ़त के शुरूआती सालों में और बाद में उ़समान (रज़ि.) चार रकअ़त पढ़ने लगे। इसलिये इब्ने उ़मर (रज़ि.)

عُثْمَانَ صَلَّى بَعْدُ أَرْبَعًا . فَكَانَ ابْنُ عُمَرَ إِذَا صَلَّى مَعَ الإِمَامِ صَلَّى أَرْبَعًا وَإِذَا صَلاَّهَا وَحْدَهُ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ .

जब इमाम के साथ नमाज़ पढ़ते तो चार रकआत पढ़ते और जब अकेले पढ़ते तो दो रकअतें पढ़ते।

وَحَدَّثَنَاهُ ابْنُ الْمُثَنَّى، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، وَهُوَ الْقَطَّانُ ح وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ، ح وَحَدَّثَنَاهُ ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ، كُلُّهُمْ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(1593) इमाम साहब ने दूसरे उस्तादों से भी इस क़िस्म की रिवायत नक़ल की है।

وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، سَمِعَ حَفْصَ بْنَ عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ صَلَّى النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم بِمِنًى صَلاَةَ الْمُسَافِرِ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ ثَمَانِيَ سِنِينَ أَوْ قَالَ سِتَّ سِنِينَ . قَالَ حَفْصٌ وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يُصَلِّي بِمِنًى رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ يَأْتِي فِرَاشَهُ . فَقُلْتُ أَىْ عَمِّ لَوْ صَلَّيْتَ بَعْدَهَا رَكْعَتَيْنِ . قَالَ لَوْ فَعَلْتُ لأَتْمَمْتُ الصَّلاَةَ .

(1594) इब्ने उमर (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ), अबू बकर, उमर और उसमान (रज़ि.) ने आठ या छ: साल मिना में मुसाफ़िर वाली नमाज़ पढ़ी। हफ़्स बयान करते हैं, इब्ने उमर (रज़ि.) मिना में दो रकअत नमाज़ पढ़ते थे। फिर अपने बिस्तर पर आ जाते थे। मैंने कहा, ऐ चाचा! काश आप फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दो सुन्नतें भी पढ़ लिया करें तो उन्होंने कहा, अगर मैं ऐसे करता तो नमाज़ पूरी पढ़ लेता।

फ़ायदा : इब्ने उमर (रज़ि.) की रिवायत से मालूम होता है कि हज़रत उसमान (रज़ि.) सिर्फ़ मिना में चार रकआत पढ़ने लगे थे। बाक़ी मक़ामात पर दो रकअत ही पढ़ते थे।

وَحَدَّثَنَاهُ يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ الصَّمَدِ، قَالاَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَلَمْ يَقُولاَ فِي الْحَدِيثِ بِمِنًى . وَلَكِنْ قَالاَ صَلَّى فِي السَّفَرِ .

(1595) शोबा के शागिर्द और ऊपर वाली सनद से बयान करते हैं लेकिन उन्होंने ये नहीं कहा, मिना। बल्कि दोनों ने कहा, सफ़र में नमाज़ पढ़ी।

(1596) अ़ब्दुर्रहमान बिन यज़ीद बयान करते हैं कि हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) ने हमें मिना में चार रकआ़त पढ़ाईं तो इसका तज़्किरा अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) के पास किया गया तो उन्होंने इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊ़न पढ़ा। फिर बताया मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मिना में दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और मैंने अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) के साथ मिना में दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और मैंने उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के साथ मिना में दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी। काश! चार रकआ़त में मेरा हिस्सा अगर शर्फ़े क़ुबूलियत हासिल करने वाली रकअ़तें हों।

(सहीह बुख़ारी : 1084, अबू दाऊद : 1960, नसाई : 3/119-120)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، عَنِ الأَعْمَشِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ يَزِيدَ، يَقُولُ صَلَّى بِنَا عُثْمَانُ بِمِنًى أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ فَقِيلَ ذَلِكَ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ فَاسْتَرْجَعَ ثُمَّ قَالَ صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِمِنًى رَكْعَتَيْنِ وَصَلَّيْتُ مَعَ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ بِمِنًى رَكْعَتَيْنِ وَصَلَّيْتُ مَعَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ بِمِنًى رَكْعَتَيْنِ فَلَيْتَ حَظِّي مِنْ أَرْبَعِ رَكَعَاتٍ رَكْعَتَانِ مُتَقَبَّلَتَانِ .

फ़ायदा : चूंकि रसूलुल्लाह (ﷺ), अबू बकर और उ़मर (रज़ि.) मिना में नमाज़ क़स्र पढ़ते थे। इसलिये अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) यही चाहते थे कि उ़स्मान (रज़ि.) भी मिना में दो रकअ़त ही नमाज़ पढ़ें। लेकिन इस राय और फ़िक्र के बावजूद वो उ़स्मान (रज़ि.) की मुख़ालिफ़त करके इन्तिशार और इफ़्तिराक़ पैदा करने से परहेज़ करते थे और उनकी इक़्तिदा में पूरी नमाज़ पढ़ते थे और अकेले नमाज़ क़स्र पढ़ते थे। जिससे मालूम होता है इन्तिशार और इफ़्तिराक़ एक नापसन्दीदा हरकत है। इससे बचने की ख़ातिर एक ऐसी बात क़ुबूल की जा सकती है जो मरजूह हो। नीज़ आपके क़ौल और फ़ैअ़ल की मौजूदगी में किसी बड़े से बड़े इंसान का क़ौल व फ़ैअ़ल भी हुज्जत नहीं है अगरचे उस पर बेजा तन्क़ीद व तब्सरा नहीं किया जायेगा।

(1597) इमाम मुस्लिम ने दूसरे उस्तादों से भी इसी मफ़्हूम की हामिल हदीस़ बयान की।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، وَابْنُ، خَشْرَمٍ قَالاَ أَخْبَرَنَا عِيسَى، كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(1598) हज़रत हारिसा बिन वहब (रज़ि.) बयान करते हैं मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मिना में इन्तिहाई पुर अमन हालात में कसीर तादाद के साथ दो रकअत नमाज़ पढ़ी।
(सहीह बुख़ारी : 1083)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَقُتَيْبَةُ، قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ، قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ حَارِثَةَ بْنِ وَهْبٍ، قَالَ صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِمِنًى - آمَنَ مَا كَانَ النَّاسُ وَأَكْثَرَهُ - رَكْعَتَيْنِ .

(1599) हारिसा बिन वहब ख़ुज़ाई (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने हज्जतुल विदाअ में रसूलुल्लाह (ﷺ) की इक़्तिदा में लोगों की बहुत ज़्यादा तादाद की मौजूदगी में मिना में दो रकअत नमाज़ पढ़ी। इमाम मुस्लिम फ़रमाते हैं, हारिसा बिन वहब ख़ुज़ाई (रज़ि.) माँ की तरफ़ से उबैदुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के भाई हैं।

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، حَدَّثَنِي حَارِثَةُ بْنُ وَهْبٍ الْخُزَاعِيُّ، قَالَ صَلَّيْتُ خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِمِنًى وَالنَّاسُ أَكْثَرُ مَا كَانُوا فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ . قَالَ مُسْلِمٌ حَارِثَةُ بْنُ وَهْبٍ الْخُزَاعِيُّ هُوَ أَخُو عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ لأُمِّهِ .

बाब 3 : बारिश में घरों में नमाज़ पढ़ना

باب الصَّلاَةِ فِي الرِّحَالِ فِي الْمَطَرِ

(1600) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने एक सर्द और हवादार रात में अज़ान दी और कहा, अला सल्लू फ़िर्रिहालि। ख़बरदार! घरों में नमाज़ पढ़ लो। फिर बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब रात सर्द और बारिश वाली होती तो मुअज़्ज़िन को हुक्म देते कि वो कह दे 'अला सल्लू फ़िर्रिहालि सुनो नमाज़ घरों में पढ़ लो।'
(सहीह बुख़ारी:666, अबूदाऊद:1063 नसाई : 2/15)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ، أَنَّ ابْنَ عُمَرَ، أَذَّنَ بِالصَّلاَةِ فِي لَيْلَةٍ ذَاتِ بَرْدٍ وَرِيحٍ فَقَالَ أَلاَ صَلُّوا فِي الرِّحَالِ . ثُمَّ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَأْمُرُ الْمُؤَذِّنَ إِذَا كَانَتْ لَيْلَةٌ بَارِدَةٌ ذَاتُ مَطَرٍ يَقُولُ " أَلاَ صَلُّوا فِي الرِّحَالِ " .

(1601) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने एक सर्दी, हवा और बारिश वाली रात में अज़ान

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، حَدَّثَنِي نَافِعٌ، عَنِ ابْنِ

عُمَرَ، أَنَّهُ نَادَى بِالصَّلاَةِ فِي لَيْلَةٍ ذَاتِ بَرْدٍ وَرِيحٍ وَمَطَرٍ فَقَالَ فِي آخِرِ نِدَائِهِ أَلاَ صَلُّوا فِي رِحَالِكُمْ أَلاَ صَلُّوا فِي الرِّحَالِ . ثُمَّ قَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَأْمُرُ الْمُؤَذِّنَ إِذَا كَانَتْ لَيْلَةٌ بَارِدَةٌ أَوْ ذَاتُ مَطَرٍ فِي السَّفَرِ أَنْ يَقُولَ أَلاَ صَلُّوا فِي رِحَالِكُمْ .

दी और अज़ान के आख़िर में कहा, ख़बरदार! अपने घरों में नमाज़ पढ़ लो। सुनो! घरों में नमाज़ पढ़ो। फिर बताया कि जब सफ़र में रात सर्द होती या बारिश हो रही होती तो रसूलुल्लाह (ﷺ) मुअज़्ज़िन को ये कहने का हुक्म देते, 'अला सल्लू फ़ी रिहालिकुम।'

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّهُ نَادَى بِالصَّلاَةِ بِضَجْنَانَ ثُمَّ ذَكَرَ بِمِثْلِهِ وَقَالَ أَلاَ صَلُّوا فِي رِحَالِكُمْ . وَلَمْ يُعِدْ ثَانِيَةً أَلاَ صَلُّوا فِي الرِّحَالِ . مِنْ قَوْلِ ابْنِ عُمَرَ .

(1602) नाफ़ेअ बयान करते हैं इब्ने उमर (रज़ि.) ने ज़ज्नान पहाड़ पर अज़ान कही फिर ऊपर वाली बात बयान की और इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा, 'अला सल्लू फ़ी रिहालिकुम।' इसमें इब्ने उमर (रज़ि.) के दोबारा अला सल्लू फ़िर्रिहाल कहने का ज़िक्र नहीं है। (अबू दाऊद : 1062)

फ़वाइद : (1) इब्ने उमर (रज़ि.) की रिवायत से मालूम होता है कि बारिश के उज़्र और मजबूरी की बिना पर अगर मस्जिद में पहुँचना मुश्किल हो तो नमाज़ घरों में पढ़ना जाइज़ है। ऐसी सूरत में नमाज़ बाजमाअत ज़रूरी नहीं है। (2) इब्ने उमर (रज़ि.) पहले अज़ान आम दिनों के मुताबिक़ देते थे ताकि जो लोग मस्जिद में आ सकते हों आ जायें और अज़ान के आख़िर में रुख़सत के कलिमात कह देते थे ताकि जो कमज़ोर, बूढ़े और मरीज़ हैं उन्हें मस्जिद में न आने की इजाज़त मिल जाये। इसलिये कुछ उलमा का ख़याल है कि ये कलिमात अज़ान के आख़िर में कहना बेहतर है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، قَالَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي سَفَرٍ فَمُطِرْنَا فَقَالَ " لِيُصَلِّ مَنْ شَاءَ مِنْكُمْ فِي رَحْلِهِ " .

(1603) हज़रत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं कि एक सफ़र में हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ निकले और बारिश हो गई तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से जिसका दिल चाहे, नमाज़ अपनी क़ियामगाह में पढ़ ले।' (अबू दाऊद : 1065, तिर्मिज़ी : 409)

وَحَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، حَدَّثَنَا

(1604) अब्दुल्लाह बिन हारिस़ बयान करते हैं कि एक बारिश वाले दिन अब्दुल्लाह बिन

إِسْمَاعِيلُ، عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ، صَاحِبِ الزِّيَادِيِّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّهُ قَالَ لِمُؤَذِّنِهِ فِي يَوْمٍ مَطِيرٍ إِذَا قُلْتَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ فَلاَ تَقُلْ حَىَّ عَلَى الصَّلاَةِ قُلْ صَلُّوا فِي بُيُوتِكُمْ - قَالَ - فَكَأَنَّ النَّاسَ اسْتَنْكَرُوا ذَاكَ فَقَالَ أَتَعْجَبُونَ مِنْ ذَا قَدْ فَعَلَ ذَا مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنِّي إِنَّ الْجُمُعَةَ عَزْمَةٌ وَإِنِّي كَرِهْتُ أَنْ أُحْرِجَكُمْ فَتَمْشُوا فِي الطِّينِ وَالدَّحْضِ .

अ़ब्बास (रज़ि.) ने अपने मुअज़्ज़िन से फ़रमाया, जब तुम अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह, अशहदु अन्-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह कहो तो हय्य अ़लस्सलाह न कहना, सल्लू फ़ी बुयूतिकुम कहना। लोगों ने गोया कि इसको एक नया काम ख़्याल किया तो इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, क्या तुम इस पर तअ़ज्जुब कर रहे हो? ये काम उन्होंने किया जो मुझसे बेहतर थे, जुम्आ पढ़ना लाज़िम है और मुझे बुरा मालूम हुआ कि मैं तुम्हें तंगी में मुब्तला करूँ और तुम कीचड़ और फिस्लन में चलकर आओ।

सहीह बुख़ारी:616, अबूदाऊद:1066 इब्नेमाजह: 939

मुफ़रदातुल हदीस़ : दहज़ुन : ज़ललुन, ज़लकुन और रदग़ुन सब कलिमात हम मानी हैं। कीचड़ और गारे को कहते हैं जिसमें इंसान फिसल्ता है।

फ़वाइद : (1) **सल्लू फ़ी बुयूतिकुम और सल्लू फ़ी रिहालिकुम या सल्लू फ़िर्रिहाल** इन सब कलिमात का मक़सद मस्जिद में हाज़िर होने से रुख़सत देना मन्ज़ूर है। क्योंकि बक़ौल इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) अगर ये कलिमात न कहे जायें तो मस्जिद में आना पड़ेगा और ये चीज़ कमज़ोर, बूढ़ों और मरीज़ों के लिये मशक़्क़त और अज़ियत का बाइस होगी। (2) कलिमाते रुख़सत हय्य अ़लस्सलाह और हय्य अ़लल फ़लाह की जगह भी कहे जा सकते हैं, इनको अज़ान के आख़िर में कहना ज़रूरी नहीं है। (3) कीचड़ और गारे की सूरत में जब जुम्आ के लिये मस्जिद में आना किसी के लिये तकलीफ़ और मशक़्क़त का बाइस हो तो वो जुम्आ छोड़ सकता है और उसकी जगह नमाज़े ज़ुहर घर में पढ़ लेगा। इस्लाम इंसानों की सहूलत और आसानी को मल्हूज़ रखता है और मशक़्क़त व तकलीफ़ के औक़ात में कमी और सहूलत पैदा करता है।

وَحَدَّثَنِيهِ أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ - عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ، قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الْحَارِثِ، قَالَ خَطَبَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبَّاسٍ فِي يَوْمٍ ذِي رَدْغٍ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمَعْنَى حَدِيثِ ابْنِ عُلَيَّةَ وَلَمْ يَذْكُرِ الْجُمُعَةَ

(1605) अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस़ बयान करते हैं कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कीचड़ और गारे वाले दिन हमें ख़िताब फ़रमाया। ऊपर वाली हदीस़ के हम मानी रिवायत सुनाई लेकिन जुम्आ का नाम नहीं लिया और कहा, ये काम उस शख़्सियत ने किया है जो मुझसे बेहतर है यानी नबी (ﷺ)

وَقَالَ قَدْ فَعَلَهُ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنِّي . يَعْنِي النَّبِيَّ ﷺ وَقَالَ أَبُو كَامِلٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ، بِنَحْوِهِ .

ने ये काम किया है। हम्माद ने ये रिवायत ्अब्दुल हमीद की बजाए ्आसिम से भी रिवायत की है।

وَحَدَّثَنِيهِ أَبُو الرَّبِيعِ الْعَتَكِيُّ، - هُوَ الزَّهْرَانِيُّ - حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ - حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، وَعَاصِمٌ الأَحْوَلُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَلَمْ يَذْكُرْ فِي حَدِيثِهِ يَعْنِي النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم .

(1606) इमाम मुस्लिम ने ये रिवायत अपने दूसरे उस्ताद से भी बयान की है। लेकिन उसमें यानी नबी (ﷺ) के अल्फ़ाज़ नहीं हैं।

وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ شُمَيْلٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ، صَاحِبُ الزِّيَادِيِّ قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الْحَارِثِ، قَالَ أَذَّنَ مُؤَذِّنُ ابْنِ عَبَّاسٍ يَوْمَ جُمُعَةٍ فِي يَوْمٍ مَطِيرٍ . فَذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ ابْنِ عُلَيَّةَ وَقَالَ وَكَرِهْتُ أَنْ تَمْشُوا فِي الدَّحْضِ وَالزَّلَلِ .

(1607) ्अब्दुल्लाह बिन हारिस़ बयान करते हैं कि उन्हें ्अब्बास (रज़ि.) के मुअज़्ज़िन (जुम्आ के दिन जब बारिश हो रही थी) अज़ान दी। आगे इब्ने ्उलय्या (इस्माईल) की तरह हदीस़ बयान की और इब्ने ्अब्बास (रज़ि.) ने कहा, मैंने इस बात को नापसंद किया कि तुम कीचड़ और फिस्लन में चलकर आओ।

وَحَدَّثَنَاهُ عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، كِلاَهُمَا عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ، أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ، أَمَرَ مُؤَذِّنَهُ - فِي حَدِيثِ مَعْمَرٍ - فِي يَوْمِ جُمُعَةٍ فِي يَوْمٍ مَطِيرٍ . بِنَحْوِ حَدِيثِهِمْ وَذَكَرَ فِي حَدِيثِ مَعْمَرٍ فَعَلَهُ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنِّي . يَعْنِي النَّبِيَّ ﷺ .

(1608) ्अब्दुल्लाह बिन हारिस़ बयान करते हैं कि इब्ने ्अब्बास (रज़ि.) ने अपने मुअज़्ज़िन को हुक्म दिया। जैसाकि मअ्मर की रिवायत में है, जुम्आ के दिन बारिश के रोज़ जैसाकि दूसरों की रिवायत में है और मअ्मर की हदीस़ में है ये काम उस शख़्स ने किया है जो मुझसे बेहतर है यानी नबी (ﷺ) ने किया है।

وَحَدَّثَنَاهُ عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِسْحَاقَ الْحَضْرَمِيُّ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ

(1609) ्अब्दुल्लाह बिन हारिस़ बयान करते हैं और बक़ौल वुहैब, अय्यूब ने ये हदीस़ ्अब्दुल्लाह बिन हारिस़ से नहीं सुनी।

عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ، - قَالَ وُهَيْبٌ لَمْ يَسْمَعْهُ مِنْهُ - قَالَ أَمَرَ ابْنُ عَبَّاسٍ مُؤَذِّنَهُ فِي يَوْمِ جُمُعَةٍ فِي يَوْمٍ مَطِيرٍ . بِنَحْوِ حَدِيثِهِمْ .

(और बक़ौल इब्ने हजर, सुनी है) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने जुम्आ के दिन बारिश के रोज़ अपने मुअज़्ज़िन को हुक्म दिया जैसाकि दूसरे रावियों ने बयान किया है।

फ़ायदा : इमाम बुख़ारी (रह.) ने बारिश की अज़ान से ये मसला मुस्तम्बत किया है कि ज़रूरत के तहत अज़ान में बातचीत करना जाइज़ है।

باب جَوَازِ صَلاَةِ النَّافِلَةِ عَلَى الدَّابَّةِ فِي السَّفَرِ حَيْثُ تَوَجَّهَتْ

बाब 4 : सफ़र में नफ़ल नमाज़ सवारी पर पढ़ना, चाहे उसका रुख़ किसी भी तरफ़ हो, जाइज़ है

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُصَلِّي سُبْحَتَهُ حَيْثُمَا تَوَجَّهَتْ بِهِ نَاقَتُهُ .

(1610) अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी नफ़ली नमाज़ अपनी ऊँटनी पर पढ़ते थे। चाहे उसका रुख़ किसी तरफ़ होता।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُصَلِّي عَلَى رَاحِلَتِهِ حَيْثُ تَوَجَّهَتْ بِهِ .

(1611) इब्ने उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) नफ़ली नमाज़ अपनी सवारी पर पढ़ते थे, उसका रुख़ जिधर भी होता।

وَحَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ أَبِي سُلَيْمَانَ، قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي وَهُوَ مُقْبِلٌ مِنْ مَكَّةَ إِلَى الْمَدِينَةِ عَلَى رَاحِلَتِهِ حَيْثُ كَانَ وَجْهُهُ - قَالَ - وَفِيهِ نَزَلَتْ { فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ}

(1612) इब्ने उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ पढ़ते थे जबकि आप (ﷺ) मक्का से मदीना की तरफ़ आ रहे होते अपनी सवारी पर, जिधर भी उसका रुख़ होता और उसके बारे में ये आयत उतरी (तुम जिधर भी मुँह करो, अल्लाह की ज़ात उधर ही है।)
(तिर्मिज़ी : 2958)

फ़ायदा : नफ़ली नमाज़ हर क़िस्म की सवारी पर पढ़ी जा सकती है। इसमें अइम्मए अरबआ के दरम्यान कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है और क़ुरआनी आयत से भी इसका सुबूत मिलता है। हाँ शुरू में अगर सवारी का रुख़ क़िब्ले की तरफ़ हो सके तो बेहतर है, बाद में उसका रुख़ चाहे किसी तरफ़ भी हो जाये और आयते मुबारका फ़इन्नमा तुवल्लू फ़सम्म वजहुल्लाहि का ताल्लुक़ सफ़र में नफ़ली नमाज़ से है कि इंसान सफ़र में सवारी पर नफ़ल नमाज़ पढ़ सकता है। सवारी से उतरने की ज़रूरत नहीं है।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، وَابْنُ أَبِي زَائِدَةَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي كُلُّهُمْ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ . وَفِي حَدِيثِ ابْنِ مُبَارَكٍ وَابْنِ أَبِي زَائِدَةَ ثُمَّ تَلاَ ابْنُ عُمَرَ { فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ} وَقَالَ فِي هَذَا نَزَلَتْ .

(1613) इमाम मुस्लिम अपने दूसरे उस्तादों से अब्दुल मलिक की सनद से यही रिवायत नक़ल करते हैं और उनमें इब्ने मुबारक और इब्ने अबी ज़ाइदा की रिवायत में है कि फिर इब्ने उमर (रज़ि.) ने पढ़ा, फ़इन्नमा तुवल्लू फ़सम्म वजहुल्लाहि और कहा ये इसी मसले के बारे में उतरी है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى الْمَازِنِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَسَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي عَلَى حِمَارٍ وَهُوَ مُوَجِّهٌ إِلَى خَيْبَرَ .

(1614) इब्ने उमर (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को गधे पर नमाज़ पढ़ते देखा जबकि आप (ﷺ) का रुख़ ख़ैबर की तरफ़ था।

(अबू दाऊद : 1226, नसाई : 2/60)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَسَارٍ، أَنَّهُ قَالَ كُنْتُ أَسِيرُ مَعَ ابْنِ عُمَرَ بِطَرِيقِ مَكَّةَ - قَالَ سَعِيدٌ - فَلَمَّا خَشِيتُ الصُّبْحَ نَزَلْتُ فَأَوْتَرْتُ ثُمَّ أَدْرَكْتُهُ فَقَالَ لِي ابْنُ عُمَرَ أَيْنَ كُنْتَ فَقُلْتُ لَهُ خَشِيتُ الْفَجْرَ فَنَزَلْتُ

(1615) सईद बिन यसार बयान करते हैं कि मैं मक्का के रास्ते में इब्ने उमर (रज़ि.) के साथ जा रहा था। फिर जब मुझे सुबह होने का अन्देशा महसूस हुआ, मैंने सवारी से उतरकर वित्र पढ़े फिर मैं उनसे जा मिला। तो इब्ने उमर (रज़ि.) ने मुझसे पूछा, तुम कहाँ रह गये थे? तो मैंने उनसे कहा, मुझे फ़ज्र हो जाने का ख़तरा पैदा हुआ इसलिये मैंने उतर कर वित्र पढ़े। तो अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा, क्या तेरे

فَأَوْتَرْتُ . فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ أَلَيْسَ لَكَ فِي رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أُسْوَةٌ فَقُلْتُ بَلَى وَاللَّهِ . قَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُوتِرُ عَلَى الْبَعِيرِ .

लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) का अमली नमूना नहीं है? तो मैंने कहा, क्यों नहीं अल्लाह की क़सम! उन्होंने कहा, बिला शुब्हा रसूलुल्लाह (ﷺ) ऊँट पर वित्र पढ़ते थे।

(सहीह बुख़ारी : 999, तिर्मिज़ी : 472, नसाई : 3/232, इब्ने माजह : 1200)

फ़ायदा : वित्र का हुक्म नफ़्ल नमाज़ वाला है, इसलिये सफ़र में वित्र भी सवारी पर पढ़े जा सकते हैं, उनके लिये सवारी से उतरने की ज़रूरत नहीं है।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّهُ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي عَلَى رَاحِلَتِهِ حَيْثُمَا تَوَجَّهَتْ بِهِ . قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دِينَارٍ كَانَ ابْنُ عُمَرَ يَفْعَلُ ذَلِكَ .

(1616) इब्ने उमर (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ अपनी सवारी पर पढ़ते थे, उसका रुख़ जिधर भी होता। अब्दुल्लाह बिन दीनार कहते हैं, इब्ने उमर (रज़ि.) भी ऐसा ही करते थे।

(नसाई : 1/243-244, 2/61)

फ़ायदा : इब्ने उमर (रज़ि.) की रिवायत में जहाँ मुत्लक़ नमाज़ का तज़्किरा है उससे मुराद नफ़्ली नमाज़ है। क्योंकि उनके बेटे सालिम की रिवायत में तसरीह मौजूद है कि आप (ﷺ) फ़र्ज़ नमाज़ सवारी पर नहीं पढ़ते थे।

وَحَدَّثَنِي عِيسَى بْنُ حَمَّادٍ الْمِصْرِيُّ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي ابْنُ الْهَادِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّهُ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُوتِرُ عَلَى رَاحِلَتِهِ .

(1617) अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) वित्र अपनी सवारी पर पढ़ते थे।

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُسَبِّحُ عَلَى الرَّاحِلَةِ قِبَلَ أَىِّ وَجْهٍ تَوَجَّهَ وَيُوتِرُ عَلَيْهَا غَيْرَ أَنَّهُ لاَ يُصَلِّي عَلَيْهَا الْمَكْتُوبَةَ .

(1618) सालिम बिन अब्दुल्लाह अपने बाप से बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नफ़्ल अपनी सवारी पर पढ़ते, उनका रुख़ जिधर भी होता और वित्र भी उस पर पढ़ते। हाँ इतनी बात है आप (ﷺ) फ़र्ज़ उस पर नहीं पढ़ते थे।

(सहीह बुख़ारी : 1098, अबू दाऊद : 1224, नसाई : 1/243-244, 2/61)

फ़ायदा : आपके दौर में सवारियाँ ऐसी थीं कि इंसान जहाँ और जब चाहता उनसे उतर सकता था। अब आम तौर पर ऐसे वाक़ियात आम हैं कि इंसान अपनी मर्ज़ी से सवारी को नहीं रोक सकता। जैसे बस, रेलगाड़ी और हवाई जहाज़। अगर सवारी इंसान की ज़ाती हो या उसको रोकना मुम्किन हो तो नमाज़े फ़र्ज़ सवारी से उतरकर पढ़नी चाहिये। लेकिन अगर सवारी अपनी न हो या सवारी से नमाज़ के वक़्त उतरना मुम्किन न हो, फिर अगर दो नमाज़ों में जमा तक़दीम या जमा ताख़ीर मुम्किन हो तो उस पर अमल कर लेना चाहिये। लेकिन अगर रेल या हवाईजहाज़ का सफ़र हो और जमा मुम्किन न हो तो फिर चूंकि अइम्मए अरबआ के नज़दीक बिल्इत्तिफ़ाक़ कश्ती पर नमाज़ जाइज़ है। इसलिये रेल और हवाई जहाज़ में फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ी जा सकती है, लेकिन क़िब्ला रुख़ होना ज़रूरी है। हाँ अगर खड़े होकर नमाज़ पढ़ना मुम्किन न हो तो फिर बैठ कर नमाज़ पढ़ना जाइज़ होगा। अगर खड़े होना मुम्किन हो तो फिर बैठना जाइज़ नहीं है और इसके लिये उलमा ने सुनन तिर्मिज़ी की रिवायत से भी इस्तिदलाल किया है कि आप (ﷺ) एक सफ़र में थे, नमाज़ का वक़्त हो गया। आसमान से बारिश हो रही थी और ज़मीन पर कीचड़ था, तो अज़ान और इक़ामत सवारी पर कही गई और आपने सवारी पर ही इमामत करवाई। इस वजह से इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम अहमद और इमाम मालिक के एक क़ौल की रू से ज़रूरत और मजबूरी की बिना पर सवारी पर फ़र्ज़ नमाज़ जाइज़ है। इसी तरह जंगी ज़रूरत के तहत सवारी पर फ़र्ज़ नमाज़ जाइज़ है। इसलिये अगर रेलगाड़ी या हवाई जहाज़ से उतरकर नमाज़ पढ़ना मुम्किन न हो तो बहरी जहाज़ की तरह उन पर भी नमाज़ पढ़ ली जायेगी।

(1619) हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबीआ (रज़ि.) बयान करते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा आप (ﷺ) सफ़र में रात को सवारी पर नफ़ल पढ़ते थे उसका रुख़ जिधर भी होता।

(सहीह बुख़ारी : 1093)

وَحَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ سَوَّادٍ، وَحَرْمَلَةُ، قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَاهُ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ، رَأَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يُصَلِّي السُّبْحَةَ بِاللَّيْلِ فِي السَّفَرِ عَلَى ظَهْرِ رَاحِلَتِهِ حَيْثُ تَوَجَّهَتْ .

(1620) अनस बिन सीरीन बयान करते हैं कि जब अनस बिन मालिक (रज़ि.) शाम से आये तो हमने आपका इस्तिक़बाल किया, हम आपसे ऐनुत्तमर मक़ाम पर मिले तो मैंने उन्हें देखा, वो गधे पर नमाज़ पढ़ रहे थे और उनका रुख़ इस तरफ़ था (हम्माम ने क़िब्ले की बायें तरफ़ इशारा किया) तो मैंने उनसे

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ سِيرِينَ، قَالَ تَلَقَّيْنَا أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ حِينَ قَدِمَ الشَّامَ فَتَلَقَّيْنَاهُ بِعَيْنِ التَّمْرِ فَرَأَيْتُهُ يُصَلِّي عَلَى حِمَارٍ وَوَجْهُهُ ذَلِكَ الْجَانِبَ - وَأَوْمَأَ هَمَّامٌ عَنْ يَسَارِ

الْقِبْلَةِ - فَقُلْتُ لَهُ رَأَيْتُكَ تُصَلِّي لِغَيْرِ الْقِبْلَةِ . قَالَ لَوْلاَ أَنِّي رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَفْعَلُهُ لَمْ أَفْعَلْهُ .

पूछा, मैंने आपको ग़ैर क़िब्ले की तरफ़ नमाज़ पढ़ते देखा है। उन्होंने कहा, अगर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ऐसा करते न देखा होता तो मैं ये काम न करता। (सहीह बुख़ारी : 1100)

باب جَوَازِ الْجَمْعِ بَيْنَ الصَّلاَتَيْنِ فِي السَّفَرِ

बाब 5 : सफ़र में दो नमाज़ें जमा करना जाइज़ है

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا عَجِلَ بِهِ السَّيْرُ جَمَعَ بَيْنَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ .

(1621) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को जब तेज़ चलने की ज़रूरत होती तो मग़्रिब और इशा की नमाज़ जमा कर लेते।
(नसाई : 597)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، قَالَ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ، أَنَّ ابْنَ عُمَرَ، كَانَ إِذَا جَدَّ بِهِ السَّيْرُ جَمَعَ بَيْنَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ بَعْدَ أَنْ يَغِيبَ الشَّفَقُ وَيَقُولُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا جَدَّ بِهِ السَّيْرُ جَمَعَ بَيْنَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ .

(1622) नाफ़ेअ बयान करते हैं कि इब्ने उमर (रज़ि.) जब उन्हें तेज़ रफ़्तारी की ज़रूरत होती तो शफ़क़ (सूरज की सुर्ख़ी) के ग़ुरूब होने के बाद (इशा के वक़्त में) मग़्रिब और इशा को जमा करके पढ़ते थे और बताते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को जब तेज़ चलना मतलूब होता तो मग़्रिब और इशा की नमाज़ जमा कर लेते थे।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَعَمْرٌو النَّاقِدُ كُلُّهُمْ عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، - قَالَ عَمْرٌو حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، - عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَجْمَعُ بَيْنَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ إِذَا جَدَّ بِهِ السَّيْرُ .

(1623) सालिम अपने बाप (इब्ने उमर) से बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा जब उनको तेज़ चलना मक़सूद होता तो मग़्रिब और इशा को जमा कर लेते थे।
(सहीह बुख़ारी : 1106, नसाई : 1/290)

(1624) सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बयान करते हैं मुझे मेरे बाप ने बताया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा जब आप (ﷺ) को सफ़र में तेज़ चलने की ज़रूरत होती तो मग़रिब की नमाज़ को मुअख़्ख़र (लेट) कर देते यहाँ तक कि उसे और इशा की नमाज़ को जमा कर लेते।

(सहीह बुख़ारी : 1901)

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ أَبَاهُ، قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا أَعْجَلَهُ السَّيْرُ فِي السَّفَرِ يُؤَخِّرُ صَلاَةَ الْمَغْرِبِ حَتَّى يَجْمَعَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ صَلاَةِ الْعِشَاءِ .

फ़ायदा : जब इंसान सफ़र में हो और किसी ज़रूरत या सबब के तहत उसे सफ़र को जल्द से जल्द करने की ज़रूरत हो तो वो नमाज़ के लिये तीन तरीक़े इख़्तियार कर सकता है। (1) जमा तक़दीम, दो नमाज़ों ज़ुहर और अ़सर को ज़ुहर के वक़्त में पढ़ ले और मग़रिब व इशा को मग़रिब के वक़्त में पढ़ ले। (2) जमा ताख़ीर, दो नमाज़ों यानी ज़ुहर और अ़सर को अ़सर के वक़्त में पढ़ ले और मग़रिब व इशा को इशा के वक़्त में पढ़ ले। (3) ज़ुहर व अ़सर को इस तरह पढ़े कि ज़ुहर को उसके आख़िरी वक़्त में ले जाये कि उससे फ़राग़त के बाद अ़सर का वक़्त हो जाये तो इस तरह ज़ुहर आख़िरी वक़्त में पढ़ी गई है और अ़सर वक़्त के शुरू में पढ़ ली गई। लेकिन दोनों नमाज़ों को अपने-अपने वक़्त में पढ़ा गया। मग़रिब और इशा के लिये भी यही तरीक़ा इख़्तियार किया गया है कि मग़रिब अपने आख़िरी वक़्त में इशा अपने वक़्त के शुरू में है यानी एक नमाज़ दूसरी के वक़्त में पढ़ी गई है और अइम्मए सलासा इमाम शाफ़ेई, इमाम अहमद और इमाम मालिक (रह.) इसके क़ाइल हैं। लेकिन अहनाफ़ के नज़दीक पहला तरीक़ा सिर्फ़ अ़रफ़ात में ज़ुहर और अ़सर के साथ ख़ास है कि अ़सर की नमाज़ ज़ुहर के वक़्त में पढ़ी जायेगी और दूसरा तरीक़ा मुज़्दलफ़ा में मग़रिब और इशा के साथ ख़ास है कि मग़रिब, इशा के वक़्त में पढ़ी जायेगी। इन दो मक़ामात के सिवा हक़ीक़ी जमा जाइज़ नहीं है और जमा हक़ीक़ी पर दलालत करने वाली अहादीस की वो बिला वजह तावील करते हैं।

(1625) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सूरज ढलने से पहले कूच कर लेते तो ज़ुहर को अ़सर के वक़्त तक मुअख़्ख़र (ताख़ीर) फ़रमाते। फिर (सवारी से) उतरकर दोनों को जमा कर लेते, पस अगर सूरज आप (ﷺ) के

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُفَضَّلُ، - يَعْنِي ابْنَ فَضَالَةَ - عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا ارْتَحَلَ قَبْلَ أَنْ تَزِيغَ الشَّمْسُ أَخَّرَ الظُّهْرَ إِلَى وَقْتِ الْعَصْرِ ثُمَّ

نَزَلَ فَجَمَعَ بَيْنَهُمَا فَإِنْ زَاغَتِ الشَّمْسُ قَبْلَ أَنْ يَرْتَحِلَ صَلَّى الظُّهْرَ ثُمَّ رَكِبَ .

कूच करने से पहले ढल जाता तो ज़ुहर पढ़ कर सवार हो जाते।

(सहीह बुख़ारी : 1111, 1112, अबू दाऊद : 1218-1219, नसाई : 1/284-287)

फ़ायदा : अगर तेज़ रफ़्तारी की ज़रूरत न होती तो आप (ﷺ) ज़ुहर पढ़कर सफ़र पर रवाना हो जाते और अ़सर अपने वक़्त में पढ़ते। अगर तेज़ी मतलूब होती तो फिर ज़वाले आफ़ताब (सूरज ढल जाने) के बाद ज़ुहर के साथ ही अ़सर पढ़ लेते, जैसाकि ग़ज़्व-ए-तबूक के सफ़र में आप (ﷺ) ने किया था।

وَحَدَّثَنِي عَمْرُو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ بْنُ سَوَّارٍ الْمَدَائِنِيُّ، حَدَّثَنَا لَيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ عُقَيْلِ بْنِ خَالِدٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم إِذَا أَرَادَ أَنْ يَجْمَعَ بَيْنَ الصَّلاَتَيْنِ فِي السَّفَرِ أَخَّرَ الظُّهْرَ حَتَّى يَدْخُلَ أَوَّلُ وَقْتِ الْعَصْرِ ثُمَّ يَجْمَعُ بَيْنَهُمَا .

(1626) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सफ़र में जब दो नमाज़ों को जमा करना चाहते तो ज़ुहर को मुअख़्ख़र करते यहाँ तक कि अ़सर का अव्वल वक़्त हो जाता, फिर आप दोनों नमाज़ों को जमा कर लेते।

وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، وَعَمْرُو بْنُ سَوَّادٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي جَابِرُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ إِذَا عَجِلَ عَلَيْهِ السَّفَرُ يُؤَخِّرُ الظُّهْرَ إِلَى أَوَّلِ وَقْتِ الْعَصْرِ فَيَجْمَعُ بَيْنَهُمَا وَيُؤَخِّرُ الْمَغْرِبَ حَتَّى يَجْمَعَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ الْعِشَاءِ حِينَ يَغِيبُ الشَّفَقُ .

(1627) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) को जब सफ़र में जल्दी होती तो ज़ुहर को अ़सर के अव्वल वक़्त तक मुअख़्ख़र करते और दोनों को जमा कर लेते और मग़रिब को मुअख़्ख़र करते और जब शफ़क़ ग़ुरूब हो जाता तो उसे और इशा को जमा कर लेते।

باب الْجَمْعِ بَيْنَ الصَّلاَتَيْنِ فِي الْحَضَرِ

बाब 6 : हज़र में दो नमाज़ें जमा करना

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه

(1628) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ौफ़ और सफ़र के बग़ैर ज़ुहर और अ़सर को जमा किया और मग़रिब और इशा को जमा किया।

وسلم الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ جَمِيعًا وَالْمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ جَمِيعًا فِي غَيْرِ خَوْفٍ وَلاَ سَفَرٍ .

(अबू दाऊद : 1210, नसाई : 1/290)

وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، وَعَوْنُ بْنُ سَلاَّمٍ، جَمِيعًا عَنْ زُهَيْرٍ، - قَالَ ابْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، - حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْرِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ جَمِيعًا بِالْمَدِينَةِ فِي غَيْرِ خَوْفٍ وَلاَ سَفَرٍ . قَالَ أَبُو الزُّبَيْرِ فَسَأَلْتُ سَعِيدًا لِمَ فَعَلَ ذَلِكَ فَقَالَ سَأَلْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ كَمَا سَأَلْتَنِي فَقَالَ أَرَادَ أَنْ لاَ يُحْرِجَ أَحَدًا مِنْ أُمَّتِهِ .

(1629) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मदीना में ख़ौफ़ और सफ़र के बग़ैर ज़ुहर और अ़सर को जमा किया। अबू ज़ुबैर कहते हैं, मैंने (इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के शागिर्द) सईद से पूछा, आपने ऐसा क्यों किया था? उन्होंने जवाब दिया, जैसे तूने मुझसे ये सवाल किया है मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सवाल किया था। तो उन्होंने कहा, आप (ﷺ) ने चाहा कि अपनी उम्मत के किसी फ़र्द को तंगी और दुश्वारी में न डालें।

फ़ायदा : कुछ हज़रात ने इस जमा को मतर (बारिश) पर महमूल किया है, लेकिन ये बात दुरुस्त नहीं है क्योंकि आगे तसरीह आ रही है कि ये काम बारिश के दिन नहीं किया। यानी सफ़र, ख़ौफ़ और बारिश तीनों में से कोई एक उ़ज़्र भी न था। लेकिन नसाई की रिवायत से मालूम होता है कि ये जमा सूरी थी कि अख़्ख़रज़्ज़ुहर व अ़ज्जलल अ़सर अ़ल्लामा अल्बानी ने इन अल्फ़ाज़ को मुदरज क़रार दिया है। नीज़ अख़्ख़रज़्ज़ुहर से ज़ाहिर यही होता है कि ज़ुहर को अ़सर तक मुअख़्ख़र (लेट) किया और अ़सर में जल्दी की कि दोनों को अ़सर के अव्वल वक़्त में पढ़ लिया। अख़्ख़रज़्ज़ुहर का ये मानी करना कि ज़ुहर अपने आख़िरी वक़्त में पढ़ी उसका कोई क़रीना नहीं है लेकिन इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के शागिर्द अबू शअ़सा और उसके शागिर्द अ़म्र बिन दीनार ने भी यही तावील की है और उनके अन्दाज़ और उस्लूब से ये मालूम होता है कि वो इसको जमा सूरी पर महमूल करते थे। सफ़र और हज़र का इम्तियाज़ और फ़र्क़ भी यही चाहता है कि हज़र में शाज़ व नादिर तौर पर जमा सूरी जाइज़ है। जमा हक़ीक़ी दुरुस्त नहीं है अगरचे कुछ मुहद्दिसीन ने कभी-कभार किसी मक़सद के तहत हज़र में हक़ीकी की भी इजाज़त दी है। जैसे दोनों नमाज़ों के लिये अलग-अलग वुज़ू करने में दिक़्क़त है या किसी जगह वअ़ज़ व नसीहत की मज्लिस क़ायम है। दरम्यान में वक़्फ़ा करना दुरुस्त नहीं है, जैसाकि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने वअ़ज़ के मौक़े पर ऐसे किया था, उसको आ़दत बनाना दुरुस्त नहीं है।

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ - حَدَّثَنَا قُرَّةُ،

(1630) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक सफ़र जो ग़ज़्व-ए-तबूक के लिये किया था दो नमाज़ों

حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْرِ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ جَمَعَ بَيْنَ الصَّلاَةِ فِي سَفْرَةٍ سَافَرَهَا فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ فَجَمَعَ بَيْنَ الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ وَالْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ . قَالَ سَعِيدٌ فَقُلْتُ لاِبْنِ عَبَّاسٍ مَا حَمَلَهُ عَلَى ذَلِكَ قَالَ أَرَادَ أَنْ لاَ يُحْرِجَ أُمَّتَهُ .

को जमा किया, ज़ुहर और अ़सर को इकट्ठा पढ़ा और मग़रिब व इशा को इकट्ठा पढ़ा। (इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के शागिर्द) सईद कहते हैं, मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से पूछा, आपने ऐसा क्यों किया था? उन्होंने कहा, आपने चाहा अपनी उम्मत को हर्ज और तंगी में न डालें।

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْرِ، عَنْ أَبِي الطُّفَيْلِ، عَامِرٍ عَنْ مُعَاذٍ، قَالَ خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ فَكَانَ يُصَلِّي الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ جَمِيعًا وَالْمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ جَمِيعًا .

(1631) अबू तुफ़ैल आमिर, मुआ़ज़ (रज़ि.) से बयान करते हैं कि हम ग़ज़्व-ए-तबूक में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ निकले तो आप ज़ुहर और अ़सर इकट्ठी पढ़ते थे और मग़रिब और इशा को जमा करते थे।

(अबू दाऊद : 1206, 1208, नसाई : 1/285, इब्ने माजह : 1070)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ - حَدَّثَنَا قُرَّةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْرِ، حَدَّثَنَا عَامِرُ بْنُ وَاثِلَةَ أَبُو الطُّفَيْلِ، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ، قَالَ جَمَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ بَيْنَ الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ وَبَيْنَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ . قَالَ فَقُلْتُ مَا حَمَلَهُ عَلَى ذَلِكَ قَالَ فَقَالَ أَرَادَ أَنْ لاَ يُحْرِجَ أُمَّتَهُ .

(1632) हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-तबूक में ज़ुहर और अ़सर और मग़रिब और इशा को जमा किया (मुआ़ज़ बिन जबल रज़ि. के शागिर्द) कहते हैं, मैंने पूछा, आपने ऐसा किस मक़सद के लिये किया? तो उन्होंने कहा, आपने चाहा उम्मत को दुश्वारी न हो।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ - وَاللَّفْظُ لأَبِي كُرَيْبٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي

(1633) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मदीना में बिला ख़ौफ़ व ख़तर और बिला बारिश ज़ुहर व अ़सर और मग़रिब व इशा को जमा किया, वकीअ़ की रिवायत में है सईद ने इब्ने

ثَابِتٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ جَمَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَيْنَ الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ وَالْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ بِالْمَدِينَةِ فِي غَيْرِ خَوْفٍ وَلاَ مَطَرٍ . فِي حَدِيثِ وَكِيعٍ قَالَ قُلْتُ لاِبْنِ عَبَّاسٍ لِمَ فَعَلَ ذَلِكَ قَالَ كَىْ لاَ يُحْرِجَ أُمَّتَهُ . وَفِي حَدِيثِ أَبِي مُعَاوِيَةَ قِيلَ لاِبْنِ عَبَّاسٍ مَا أَرَادَ إِلَى ذَلِكَ قَالَ أَرَادَ أَنْ لاَ يُحْرِجَ أُمَّتَهُ .

अब्बास (रज़ि.) से पूछा, आपने ऐसा क्यों किया? उन्होंने कहा, ताकि अपनी उम्मत को दुश्वारी में मुब्तला न करें और अबू मुआविया की हदीस़ में है, इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछा गया, आप (ﷺ) ने इससे क्या चाहा? उन्होंने कहा, आप (ﷺ) ने चाहा आपकी उम्मत को दुश्वारी न हो।

(अबूदाऊद : 1211, तिर्मिज़ी : 187, नसाई : 1/290)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ جَابِرِ بْنِ زَيْدٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم ثَمَانِيًا جَمِيعًا وَسَبْعًا جَمِيعًا . قُلْتُ يَا أَبَا الشَّعْثَاءِ أَظُنُّهُ أَخَّرَ الظُّهْرَ وَعَجَّلَ الْعَصْرَ وَأَخَّرَ الْمَغْرِبَ وَعَجَّلَ الْعِشَاءَ . قَالَ وَأَنَا أَظُنُّ ذَاكَ .

(1634) जाबिर बिन ज़ैद इब्ने अब्बास (रज़ि.) से नक़ल करते हैं कि मैंने नबी (ﷺ) के साथ आठ रकआत (ज़ुहर व असर) इकट्ठी पढ़ीं और सात रकआत (मग़रिब व इशा) इकट्ठी पढ़ीं। अम्र कहते हैं, मैंने अबू शअसा (जाबिर बिन ज़ैद) से पूछा कि मेरा ख़याल है आप (ﷺ) ने ज़ुहर में ताख़ीर की और असर जल्दी पढ़ी। मग़रिब को मुअख़्ख़र किया और इशा में तअजील (जल्दी की, उन्होंने कहा, मेरा ख़याल भी यही है) इमाम बुख़ारी ने भी यही बाब बांधा है। अख़्ख़रज़्ज़ुहर व अज्जलल असर।

(सहीह बुख़ारी : 543, 562, 1174, अबू दाऊद : 1214, नसाई : 1/286, 1/290)

फ़ायदा : अइम्मए सलासा इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद (रह.) ने इसको जमा ताख़ीर पर महमूल किया है कि आपने पहली नमाज़ को दूसरी नमाज़ के वक़्त में पढ़ा और अहनाफ़ ने इसको जमा सूरी पर महमूल किया है कि दोनों नमाज़ों को अपने-अपने वक़्त में पढ़ा है। हाँ पहली नमाज़ अपने आख़िरी वक़्त में और दूसरी अपने शुरूआती वक़्त में पढ़ी गई है। इसी तरह दोनों को जमा किया है लेकिन पढ़ा अपने-अपने वक़्त में है। ज़ाहिर बात है कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने जमा करने की जो इल्लत और सबब बयान किया है ये सूरत उसके मुनाफ़ी है। क्योंकि बिल्कुल आख़िरी और इब्तिदाई वक़्त को

मल्हूज़ रखना आसान काम नहीं है और जमा ताख़ीर की मज़्कूरा बाला रिवायात के भी ये तावील मुनाफ़ी है। जबकि इब्ने अब्बास (रज़ि.) इस जमा को आप (ﷺ) का तरीक़ा और आदत क़रार दे रहे हैं। जैसाकि आगे रिवायत में आ रहा है गोया इस तरह सफ़र और हज़र की नमाज़ों में जमा की सूरत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के नज़दीक एक ही है। अगरचे आप (ﷺ) ने हज़र में ये काम सिर्फ़ एक बार ही किया है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ زَيْدٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم صَلَّى بِالْمَدِينَةِ سَبْعًا وَثَمَانِيًا الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ وَالْمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ .

(1635) इब्ने अब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मदीना में सात रकआत और आठ रकआत नमाज़ पढ़ी यानी ज़ुहर और असर, मग़रिब और इशा इकट्ठी पढ़ीं।

وَحَدَّثَنِي أَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ الْخِرِّيتِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ، قَالَ خَطَبَنَا ابْنُ عَبَّاسٍ يَوْمًا بَعْدَ الْعَصْرِ حَتَّى غَرَبَتِ الشَّمْسُ وَبَدَتِ النُّجُومُ وَجَعَلَ النَّاسُ يَقُولُونَ الصَّلاَةَ الصَّلاَةَ - قَالَ - فَجَاءَهُ رَجُلٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ لاَ يَفْتُرُ وَلاَ يَنْثَنِي الصَّلاَةَ الصَّلاَةَ . فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ أَتُعَلِّمُنِي بِالسُّنَّةِ لاَ أُمَّ لَكَ . ثُمَّ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم جَمَعَ بَيْنَ الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ وَالْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ . قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ شَقِيقٍ فَحَاكَ فِي صَدْرِي مِنْ ذَلِكَ شَىْءٌ فَأَتَيْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ فَسَأَلْتُهُ فَصَدَّقَ مَقَالَتَهُ .

(1636) अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ बयान करते हैं कि एक दिन इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने असर के बाद ख़िताब शुरू किया यहाँ तक कि सूरज ग़ुरूब हो गया और सितारे नमूदार हो गये और लोग कहने लगे, नमाज़, नमाज़। फिर उनके पास बनू तमीम का एक आदमी आया जो न सुस्त पड़ता था और न बाज़ आ रहा था। नमाज़, नमाज़ कहे जा रहा था। तो इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा, बड़े तअज्जुब और हैरत की बात है कि ये तो मुझे सुन्नत सिखा रहा है। फिर कहा, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा आप (ﷺ) ने ज़ुहर और असर और मग़रिब और इशा को जमा किया। अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ कहते हैं तो इससे मेरे दिल में ख़लिश और खटका पैदा हुआ तो मैं अबू हुरैरह (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उनसे पूछा, तो उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) के क़ौल की तस्दीक़ की।

फ़ायदा : हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के इस वाक़िये से ये बात साबित हुई है कि उन्होंने दोनों नमाज़ों को एक नमाज़ के वक़्त में पढ़ा और उसको सफ़र वाली नमाज़ की तरह पढ़ा। इसलिये अगली रिवायत में ये अल्फ़ाज़ आये कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने मुबारक में दो नमाज़ों को जमा किया करते थे और मरफ़ूअ रिवायात में जमा हक़ीक़ी की सराहत मौजूद है और जमा सूरी तो दरहक़ीक़त जमा है ही नहीं। इसमें तो नमाज़ अपने-अपने वक़्त में पढ़ी गई है। बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायात में सिर्फ़ जमा ताख़ीर का तज़्किरा हुआ है। किसी रिवायत में जमा तक़दीम का ज़िक्र मौजूद नहीं है। इसलिये जमा तक़दीम की रिवायत की सेहत के बारे में इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ हुआ है। कुछ सहीह क़रार देते हैं और कुछ ज़ईफ़।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ حُدَيْرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ الْعُقَيْلِيِّ، قَالَ قَالَ رَجُلٌ لاِبْنِ عَبَّاسٍ الصَّلاَةَ فَسَكَتَ . ثُمَّ قَالَ الصَّلاَةَ . فَسَكَتَ ثُمَّ قَالَ الصَّلاَةَ فَسَكَتَ . ثُمَّ قَالَ لاَ أُمَّ لَكَ أَتُعَلِّمُنَا بِالصَّلاَةِ وَكُنَّا نَجْمَعُ بَيْنَ الصَّلاَتَيْنِ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(1637) एक शख़्स ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से कहा, नमाज़ पढ़ो, आप ख़ामोश रहे। उसने फिर कहा, नमाज़ पढ़ो, वो फिर भी चुप रहे। उसने फिर कहा, नमाज़ पढ़ो तो आप (रज़ि.) चुप रहे। फिर कहने लगे, तुझ पर हैरत है, तू क्या हमें नमाज़ की तालीम देता है। हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के दौर में दो नमाज़ें जमा कर लिया करते थे।

मुफ़रदातुल हदीस़ : ला उम्म लक : तेरी माँ नहीं है या तू अपनी माँ को नहीं जानता। ये कलिमा किसी की तर्दीद और मज़म्मत के वक़्त इस्तेमाल करते हैं कि तेरा ये काम अफ़सोसनाक है।

फ़ायदा : अहनाफ़ ने एक नमाज़ के वक़्त में दूसरी नमाज़ पढ़ने के अ़दमे जवाज़ की दलील, आयते मुबारका इन्नस्सला-त कानत अ़लल मुअ्मिनी-न किताबम्-मौक़ूता कि नमाज़ मुसलमानों पर औक़ाते मुक़र्ररह में फ़र्ज़ है (सूरह निसा : 103) पेश करते हैं। इसका जवाब ये है कि इस आयत का वही मफ़्हूम मोतबर है जो इसके शारेह और मुबीन ने जिस पर क़ुरआन उतारा गया है और वो मुअ़ल्लिमे क़ुरआन है, ने भी बयान किया है। नीज़ इस आयते मुबारका का ताल्लुक़ आ़म हालात से है। इसलिये आयत के इस टुकड़े से पहले ये अल्फ़ाज़ हैं, फ़इज़ा अत्मअ्नन्तुम फ़अक़ीमुस्सलात जब तुम्हें इत्मीनान और सुकून हासिल हो तो फिर नमाज़ का एहतिमाम करो। इसके अ़लावा मुज़्दलफ़ा और अ़रफ़ात में दो नमाज़ों का एक नमाज़ के वक़्त में पढ़ना तो अहनाफ़ के नज़दीक भी जाइज़ है क्या वो इस आयत के मुनाफ़ी नहीं है।

बाब 7 : नमाज़ से फ़राग़त के बाद दायें और बायें दोनों तरफ़ फिरना जाइज़ है

باب جَوَازِ الاِنْصِرَافِ مِنَ الصَّلاَةِ عَنِ الْيَمِينِ، وَالشِّمَالِ

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، وَوَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عُمَارَةَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ لاَ يَجْعَلَنَّ أَحَدُكُمْ لِلشَّيْطَانِ مِنْ نَفْسِهِ جُزْءًا لاَ يَرَى إِلاَّ أَنَّ حَقًّا عَلَيْهِ أَنْ لاَ يَنْصَرِفَ إِلاَّ عَنْ يَمِينِهِ أَكْثَرُ مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَنْصَرِفُ عَنْ شِمَالِهِ .

(1638) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) बयान करते हैं कि तुममें से कोई अपनी ज़ात से शैतान को हिस्सा न दे, ये न ख़्याल करे कि उस पर लाज़िम है कि वो नमाज़ से दायें तरफ़ ही मुड़े। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को अक्सर देखा है कि आप (ﷺ) बायें तरफ़ फिरते थे।

(सहीह बुख़ारी : 852, अबू दाऊद : 1042, नसाई : 3/81, इब्ने माजह : 930)

फ़ायदा : शरीअ़त जिस चीज़ को लाज़िम और वाजिब क़रार नहीं देती, उसको अपनी तरफ़ से वाजिब ठहराना, अपने में से शैतान को हिस्सा देना है। इसलिये इस हदीस़ से बक़ौल अ़ल्लामा सईदी ये क़ाइदा मुस्तम्बत हुआ कि शरीअ़त ने जिस इबादत का जो हुक्म बयान किया है उससे आगे नहीं बढ़ना चाहिये। जो शख़्स इस हुक्म से आगे बढ़ता है वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की शरीअ़त बदलकर नई शरीअ़त बना रहा है। हमारे ख़्याल में उससे बढ़कर और गुमराही नहीं है। (शरह सहीह मुस्लिम, जिल्द 2, पेज नम्बर 418)

लेकिन अब सवाल ये है कि जब नबी (ﷺ) की तरफ़ से फ़ौतशुदा मुसलमानों को ईसाले स़वाब के लिये तीसरे, दसवें और चालीसवें दिन क़ुरआन पाक की तिलावत करना और सदक़ा करना स़ाबित नहीं है तो क्या इस अम्र को मुस्तहब क़रार देना शरीअ़तसाज़ी नहीं है जबकि सूरते हाल ये है तीजा, सातवाँ और दसवाँ वग़ैरह न करने वाले को मलामत की जाती है और ये वाजिब ठहराने की अ़लामत है। अ़ल्लामा सईदी लिखते हैं, वाजिब और मुस्तहब में ये फ़र्क़ है कि वाजिब के छोड़ने वाले को न करने पर टोका जाता है और उसे मलामत की जाती है कि तुमने ये काम क्यों नहीं किया और मुस्तहब के छोड़ने वाले को मलामत नहीं की जाती, न ही न करने पर टोका जाता है अगर कोई शख़्स किसी मुस्तहब काम के न करने पर टोक रहा है तो दूसरे लफ़्ज़ों में वो उस मुस्तहब को वाजिब बना रहा है, अल्इयाज़ बिल्लाह। शरह सहीह मुस्लिम : 2/418। पहले तो तीजे, सातवें वग़ैरह की अपनी तरफ़ से तअ़यीन कर ली जबकि ये रसूलुल्लाह (ﷺ) से स़ाबित नहीं है और फिर ये काम न करने वाले को तअ़नो-तश्नीअ़ का निशाना बनाया जाता है। तो क्या ये उसको लाज़िम और वाजिब क़रार देना नहीं है जो गुमराही में बिदअ़ते सय्यिआ है।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، وَعِيسَى بْنُ يُونُسَ، ح وَحَدَّثَنَاهُ عَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، أَخْبَرَنَا عِيسَى، جَمِيعًا عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ

(1639) इमाम साहब आमश ही के वास्ते से दूसरे उस्तादों से भी ये रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنِ السُّدِّيِّ، قَالَ سَأَلْتُ أَنَسًا كَيْفَ أَنْصَرِفُ إِذَا صَلَّيْتُ عَنْ يَمِينِي أَوْ عَنْ يَسَارِي قَالَ أَمَّا أَنَا فَأَكْثَرُ مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَنْصَرِفُ عَنْ يَمِينِهِ .

(1640) सुद्दी बयान करते हैं कि मैंने हज़रत अनस (रज़ि.) से पूछा कि जब मैं नमाज़ पढ़ लूँ तो कैसे फिरूँ? अपने दायें या अपने बायें? उन्होंने कहा, मैंने तो ज़्यादातर रसूलुल्लाह (ﷺ) को दायें तरफ़ फिरते देखा है।

(नसाई : 3/81)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنِ السُّدِّيِّ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَنْصَرِفُ عَنْ يَمِينِهِ

(1641) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी दायें तरफ़ फिरा करते थे।

फ़ायदा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के बक़ौल हुज़ूर (ﷺ) आम तौर पर बायें तरफ़ फिरा करते थे और हज़रत अनस (रज़ि.) के नज़दीक आप (ﷺ) उमूमन दायें तरफ़ मुड़ा करते थे। इस तरह हर एक ने अपना-अपना मुशाहिदा बयान किया है और आप (ﷺ) वाक़िअतन दोनों तरफ़ फिरा करते थे और दोनों तरह जाइज़ और सुन्नत है इसलिये किसी एक तरफ़ को लाज़िम ठहराना और उसकी पाबंदी करना दुरुस्त नहीं है। ये अलग बात है कि दायें तरफ़ के बेहतर होने की वजह से इंसान ज़्यादा दायें तरफ़ से फिरे लेकिन चूंकि आपने इसकी तअयीन नहीं की, इसलिये इसी को मुतअय्यन कर लेना शरीअतसाज़ी है जो जाइज़ नहीं है।

باب اسْتِحْبَابِ يَمِينِ الإِمَامِ

बाब 8 : इमाम की दायें तरफ़ (खड़ा होना) मुस्तहब (पसन्दीदा) है

وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ ثَابِتِ بْنِ عُبَيْدٍ، عَنِ ابْنِ الْبَرَاءِ، عَنِ الْبَرَاءِ، قَالَ كُنَّا إِذَا صَلَّيْنَا خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَحْبَبْنَا أَنْ نَكُونَ

(1642) हज़रत बराअ (रज़ि.) बयान करते हैं कि जब हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ते तो हम आप (ﷺ) की दायें तरफ़ होना पसंद करते। आप रुख़ हमारी तरफ़ करते थे (यानी दायें मुड़ते थे) बराअ (रज़ि.)

عَنْ يَمِينِهِ يُقْبِلُ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ - قَالَ - فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ " رَبِّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ - أَوْ تَجْمَعُ - عِبَادَكَ " .

ने बताया कि मैंने आपको ये फ़रमाते हुए सुना (ऐ मेरे रब! जिस दिन तू अपने बन्दों को उठायेगा या जमा करेगा, मुझे अपने अ़ज़ाब से बचाना।)

(अबूदाऊद:615, नसाई : 2/94, इब्ने माजह : 1006)

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ مِسْعَرٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَلَمْ يَذْكُرْ يُقْبِلُ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ .

(1643) इमाम साहब ने यही हदीस़ दूसरी सनद से बयान की है, जिसमें युक़्बिलु अ़लैना बिवज्हिही (आप (ﷺ) रुख़ हमारी तरफ़ करते) के अल्फ़ाज़ नहीं हैं।

باب كَرَاهَةِ الشُّرُوعِ فِي نَافِلَةٍ بَعْدَ شُرُوعِ الْمُؤَذِّنِ

बाब 9 : मुअ़ज़्ज़िन की इक़ामत शुरू कर लेने के बाद नफ़ल नमाज़ का आग़ाज़ करना दुरुस्त नहीं है वो नफ़ल सुन्नते रातिबा जैसे सुबह और ज़ुहर दूसरी नमाज़ों की सुन्नतें और चाहे मुक़्तदी को ये इल्म (यक़ीन) हो कि वो इमाम के साथ (पहली) रकआ़त पा लेगा या ये इल्म न हो

وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ وَرْقَاءَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ " إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَلاَ صَلاَةَ إِلاَّ الْمَكْتُوبَةُ " .

(1644) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब नमाज़ के लिये इक़ामत शुरू हो जाये तो फ़र्ज़ नमाज़ के सिवा, कोई नमाज़ न पढ़ी जाये।'

(अबू दाऊद : 1266, तिर्मिज़ी : 421, नसाई : 2/116-167, इब्ने माजह : 1151)

وَحَدَّثَنِيهِ مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ وَابْنُ رَافِعٍ قَالاَ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ حَدَّثَنِي وَرْقَاءُ بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(1645) इमाम साहब ने दूसरे उस्ताद से भी ये रिवायत बयान की है।

(अबू दाऊद : 1266, तिर्मिज़ी : 421, नसाई : 2/116-167, इब्ने माजह : 1151)

(1646) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाये तो फ़र्ज़ नमाज़ के सिवा कोई नमाज़ नहीं है।'

وَحَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا رَوْحٌ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، قَالَ سَمِعْتُ عَطَاءَ بْنَ يَسَارٍ، يَقُولُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَلاَ صَلاَةَ إِلاَّ الْمَكْتُوبَةُ " .

(1647) इमाम साहब ने दूसरे उस्ताद से भी यही रिवायत बयान की है।

وَحَدَّثَنَاهُ عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ إِسْحَاقَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(1648) इमाम साहब एक दूसरे उस्ताद हम्माद बिन ज़ैद की सनद से अबू हुरैरह (रज़ि.) की ये रिवायत बयान करते हैं, हम्माद कहते हैं फिर मैं अपने उस्ताद के उस्ताद अम्र से मिला उसने मुझे ये हदीस़ सुनाई। लेकिन उसने इस हदीस़ की निस्बत रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ नहीं की (यानी अबू हुरैरह रज़ि. का क़ौल क़रार दिया)।

وَحَدَّثَنَا حَسَنٌ الْحُلْوَانِيُّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ . قَالَ حَمَّادٌ ثُمَّ لَقِيتُ عَمْرًا فَحَدَّثَنِي بِهِ وَلَمْ يَرْفَعْهُ .

(1649) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मालिक (रज़ि.) जो बुहैना के बेटे हैं, बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक शख़्स के पास से गुज़रे जो नमाज़ पढ़ रहा था जबकि सुबह की नमाज़ के लिये इक़ामत कही जा रही थी तो आप (ﷺ) ने उससे बातचीत की, जिसको हम जान न सके। जब हम नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो हमने उसको घेर लिया, हम पूछ रहे थे कि तुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क्या कहा? उसने बताया, आपने मुझे फ़रमाया, 'अब तुममें से कोई सुबह की चार रकआत पढ़ने लगेगा, क़अनबी ने कहा,

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَالِكٍ ابْنِ بُحَيْنَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَرَّ بِرَجُلٍ يُصَلِّي وَقَدْ أُقِيمَتْ صَلاَةُ الصُّبْحِ فَكَلَّمَهُ بِشَىْءٍ لاَ نَدْرِي مَا هُوَ فَلَمَّا انْصَرَفْنَا أَحَطْنَا نَقُولُ مَاذَا قَالَ لَكَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ قَالَ لِي " يُوشِكُ أَنْ يُصَلِّيَ أَحَدُكُمُ

अ़ब्दुल्लाह बिन मालिक इब्ने बुहैना (रज़ि.) अपने बाप से रिवायत करते हैं। इमाम अबुल हुसैन मुस्लिम कहते हैं, क़अ़न्बी का इस हदीस़ में अ़न अबीह (बाप के वास्ते से) कहना लग़्ज़िश है। इमाम मुस्लिम का मक़सद ये है कि मालिक, अ़ब्दुल्लाह का बाप है और बुहैना अ़ब्दुल्लाह की माँ है और क़अ़न्बी ने बुहैना को मालिक का बाप समझ लिया है।

सहीह बुख़ारी:663, नसाई:2/117, इब्नेमाजह:1153

الصُّبْحَ أَرْبَعًا " . قَالَ الْقَعْنَبِيُّ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَالِكٍ ابْنُ بُحَيْنَةَ عَنْ أَبِيهِ . قَالَ أَبُو الْحُسَيْنِ مُسْلِمٌ وَقَوْلُهُ عَنْ أَبِيهِ فِي هَذَا الْحَدِيثِ خَطَأٌ .

(1650) इब्ने बुहैना (रज़ि.) बयान करते हैं कि सुबह की नमाज़ खड़ी हो गई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक शख़्स को नमाज़ पढ़ते देखा जबकि मुअज़्ज़िन इक़ामत कह रहा है तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या तू सुबह की चार रकअ़ात पढ़ेगा?'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ بُحَيْنَةَ، قَالَ أُقِيمَتْ صَلاَةُ الصُّبْحِ فَرَأَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَجُلاً يُصَلِّي وَالْمُؤَذِّنُ يُقِيمُ فَقَالَ" أَتُصَلِّي الصُّبْحَ أَرْبَعًا " .

(1651) इमाम साहब अपने अलग-अलग उस्तादों के वास्ते से बयान करते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सरजिस (रज़ि.) ने बताया कि एक आदमी मस्जिद में आया जबकि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की नमाज़ पढ़ा रहे थे तो उसने मस्जिद के एक कोने में दो रकअ़तें पढ़ीं। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ नमाज़ में शरीक हो गया। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सलाम फेरा तो फ़रमाया, 'ऐ शख़्स! तूने दो नमाज़ों में कौनसी नमाज़ को फ़र्ज़ क़रार दिया है? क्या उस नमाज़ को जो तूने अकेले पढ़ी है या अपनी इस नमाज़ को जो हमारे साथ पढ़ी है?'

حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ، ح وَحَدَّثَنِي حَامِدُ بْنُ عُمَرَ الْبَكْرَاوِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ يَعْنِي ابْنَ زِيَادٍ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، كُلُّهُمْ عَنْ عَاصِمٍ، ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ الْفَزَارِيُّ، عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَرْجِسَ، قَالَ دَخَلَ رَجُلٌ الْمَسْجِدَ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي صَلاَةِ الْغَدَاةِ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ فِي جَانِبِ الْمَسْجِدِ ثُمَّ

دَخَلَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَلَمَّا سَلَّمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَالَ " يَا فُلاَنُ بِأَىِّ الصَّلاَتَيْنِ اعْتَدَدْتَ أَبِصَلاَتِكَ وَحْدَكَ أَمْ بِصَلاَتِكَ مَعَنَا " .

(अबू दाऊद : 1265, नसाई : 2/117, इब्ने माजह : 1552)

फ़ायदा : इस बाब में आने वाली हदीसों से साबित होता है कि जब मुअज़्ज़िन नमाज़ के लिये इक़ामत शुरू कर दे तो उसके बाद कोई नमाज़ नहीं पढ़ी जा सकती। सिवाय उस नमाज़ के जो इमाम की इक़्तिदा में अदा करनी है, इक़ामत के शुरू होने के बाद नफ़ल या सुन्नत का आग़ाज़ करना जुम्हूर के नज़दीक जाइज़ नहीं है और जो नमाज़ वो पहले पढ़ रहा है तो अगर वो आख़िरी रकअ़त के रुकूअ़ से गुज़र चुका है तो उसको मुकम्मल कर ले, वरना छोड़ दे। क्योंकि अ़ब्दुल्लाह बिन मालिक (रज़ि.) की रिवायत से मालूम होता है कि सुबह की सुन्नतें पढ़ने वाला, नमाज़ शुरू कर चुका था। फिर इक़ामत हो गई तो आप (ﷺ) ने उसे नमाज़ पढ़ते देखा तो फ़रमाया, क्या तुम सुबह की चार रकआत पढ़ोगे? तो गोया उसने इक़ामत के बाद अभी दोनों रकअ़तें पढ़नी थीं। लेकिन अहनाफ़ के नज़दीक चूंकि सुबह की सुन्नतों की बहुत ताकीद की गई है इसलिये अगर वो दूसरी रकअ़त में इमाम के साथ शामिल हो सकता हो तो वो इक़ामत के बाद फ़ज्र की सुन्नतें पढ़ सकता है। लेकिन अ़ब्दुल्लाह बिन सरजिस (रज़ि.) की रिवायत में सराहतन इक़ामत के बाद सुबह की सुन्नतें मस्जिद में पढ़ने की मुमानिअ़त मौजूद है। इसलिये अ़ल्लामा सईदी लिखते हैं, (बज़ाहिर इस हदीस से इमाम शाफ़ेई की ताईद होती है क्योंकि फ़ज्र की सुन्नतों की ताकीद भी रसूलुल्लाह (ﷺ) ने की है और ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ही इक़ामते फ़ज्र के वक़्त सुन्नतें पढ़ने पर नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया है। इसलिये इत्तिबाअ़े हदीस का तक़ाज़ा ये है कि इक़ामते फ़ज्र के वक़्त सुन्नत पढ़ना शुरू न करे (क्योंकि जिनके हुक्म से सुन्नतें पढ़ी जाती हैं वो ख़ुद मना फ़रमा रहे हैं) और अगर सुन्नतें पहले से शुरू की हुई हैं तो जल्द से जल्द ख़त्म करके जमाअ़त में शामिल हो जाये। अ़ल्लामा दश्तानी लिखते हैं कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) उस शख़्स को मारते थे जो इक़ामते फ़ज्र के वक़्त सुन्नतें पढ़ता था क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इससे मना किया है। (सहीह मुस्लिम जिल्द 2, पेज नम्बर 421)

मज़ीद लिखते हैं, ये इन्तिहाई ग़लत तरीक़ा मुरव्वज (चलन में) है कि मस्जिद में फ़ज्र की जमाअ़त खड़ी होती है और लोग जमाअ़त की सफ़ों से मुत्तसिल खड़े होकर सुन्नतें पढ़ना शुरू कर देते हैं। इसमें एक ख़राबी ये है कि इमाम बआवाज़े बुलंद क़ुरआन पढ़ रहा है जिसका सुनना फ़र्ज़ है और सुन्नतों में मशग़ूल शख़्स इस फ़र्ज़ को तर्क कर रहा है। दूसरी ख़राबी ये है कि सुन्नतों में मशग़ूल शख़्स बज़ाहिर फ़र्ज़ और जमाअ़त से ऐराज़ कर रहा है और तीसरी ख़राबी ये है कि इसका ये अ़मल इस बाब की अहादीस की मुख़ालिफ़त को मुस्तल्ज़िम (लाज़िम) है। (जिल्द 2, पेज नम्बर 421)

बाब 10 : मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त कौनसी दुआ पढ़ेगा

باب مَا يَقُولُ إِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ

(1652) हज़रत अबू हुमैद (रज़ि.) या अबू उसैद (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई शख़्स मस्जिद में दाख़िल हो तो कहे, अल्लाहुम्मफ़्-तहली अब्वा-ब रहमतिक ऐ अल्लाह! मेरे लिये अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे। और जब मस्जिद से निकले तो कहे, अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क मिन फ़ज़्लिक ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरे फ़ज़्ल का सवाल करता हूँ।' इमाम मुस्लिम फ़रमाते हैं, मैंने यहया बिन यहया से सुना कि वो कह रहे थे मैंने ये हदीस़ सुलैमान बिन बिलाल की किताब से लिखी और मुझे ये बात पहुँची है कि यहया अल्हिम्मानी और अबू उसैद कहते थे यानी औ की बजाए व कहते थे गोया ये दोनों से मरवी है।

(अबूदाऊद : 465, नसाई : 3/53, इब्ने माजह : 772)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ، - أَوْ عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ، - قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمُ الْمَسْجِدَ فَلْيَقُلِ اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ . وَإِذَا خَرَجَ فَلْيَقُلِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ " . قَالَ مُسْلِمٌ سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ يَحْيَى يَقُولُ كَتَبْتُ هَذَا الْحَدِيثَ مِنْ كِتَابِ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ . قَالَ بَلَغَنِي أَنَّ يَحْيَى الْحِمَّانِيَّ يَقُولُ وَأَبِي أُسَيْدٍ .

(1653) इमाम मुस्लिम अपने दूसरे उस्ताद से भी यही रिवायत नक़ल करते हैं।

وَحَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ عُمَرَ الْبَكْرَاوِيُّ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، حَدَّثَنَا عُمَارَةُ بْنُ غَزِيَّةَ، عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ سَعِيدِ بْنِ سُوَيْدٍ الأَنْصَارِيِّ، عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ، أَوْ عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

फ़ायदा : रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मस्जिद में दाख़िले के वक़्त बाबे रहमत खोलने की दुआ पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमाई है क्योंकि रहमत का लफ़्ज़ आम तौर पर क़ुरआन व हदीस़ में उख़रवी और दीनी व रूहानी इनामात व एहसानात के लिये इस्तेमाल हुआ है और मस्जिद दीनी व रूहानी और उख़रवी नेमतों के हुसूल की जगह है और मस्जिद से निकलते वक़्त अल्लाह तआला से उसका फ़ज़्ल व करम यानी रिज़्क़, माल व दौलत में बरकत की दरख़्वास्त करने की तालीम दी है। क्योंकि फ़ज़्ल का लफ़्ज़ रिज़्क़ माल व दौलत की दाद व दहिश और उनमें फ़रावानी के लिये इस्तेमाल हुआ है और नमाज़े जुम्आ के पढ़ने के बाद अल्लाह तआला का हुक्म है वब्तग़ू मिन फ़ज़्लिल्लाह ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह तआला का फ़ज़्ल तलाश करो। तो गोया मस्जिद से बाहर की दुनिया के लिये यही मुनासिब है कि इंसान हुसूले रिज़्क़ की तगो-दौ में मसरूफ़ हो जाये, असल मक़सद ये है कि इंसान मस्जिद में हो या मस्जिद से बाहर कहीं भी और किसी वक़्त भी बन्दा अल्लाह तआला की तरफ़ से ग़ाफ़िल न हो हर जगह उस की साइलाना तवज्जह अल्लाह तआला की तरफ़ हो।

बाब 11 : दो रकअत तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ना मुस्तहब है और ये रकअतें पढ़े बग़ैर बैठना मकरूह है और ये शरअन तमाम औक़ात में पढ़ी जा सकती हैं

باب اسْتِحْبَابِ تَحِيَّةِ الْمَسْجِدِ بِرَكْعَتَيْنِ وَكَرَاهَةِ الْجُلُوسِ قَبْلَ صَلاَتِهِمَا وَأَنَّهَا مَشْرُوعَةٌ فِي جَمِيعِ الأَوْقَاتِ

(1654) इमाम साहब अलग-अलग उस्तादों से अबू क़तादा (रज़ि.) की रिवायत बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई मस्जिद में दाख़िल हो तो बैठने से पहले दो रकअत नमाज़ पढ़े।'

(सहीह बुख़ारी : 444, 1163, अबू दाऊद : 467-468, तिर्मिज़ी : 316, नसाई : 2/53, इब्ने माजह : 1013)

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ، ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ سُلَيْمٍ الزُّرَقِيِّ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمُ الْمَسْجِدَ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يَجْلِسَ " .

(1655) रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथी अबू क़तादा (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैं मस्जिद में इस हाल में दाख़िल हुआ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) लोगों के दरम्यान तशरीफ़ फ़रमा थे तो मैं भी बैठ गया। इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बैठने से पहले तुम्हें दो रकअत नमाज़ पढ़ने से किस चीज़ ने रोका है?' तो मैंने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने आपको और लोगों को बैठते हुए देखा (इसलिये मैं भी बैठ गया)। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुममें से कोई मस्जिद में आये तो दो रकआत नमाज़ पढ़े बग़ैर न बैठे।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ، عَنْ زَائِدَةَ، قَالَ حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ يَحْيَى الأَنْصَارِيُّ، حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ سُلَيْمِ بْنِ خَلْدَةَ الأَنْصَارِيِّ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، صَاحِبِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ دَخَلْتُ الْمَسْجِدَ وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم جَالِسٌ بَيْنَ ظَهْرَانَىِ النَّاسِ - قَالَ - فَجَلَسْتُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا مَنَعَكَ أَنْ تَرْكَعَ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ تَجْلِسَ " . قَالَ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ رَأَيْتُكَ جَالِسًا وَالنَّاسُ جُلُوسٌ . قَالَ " فَإِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمُ الْمَسْجِدَ فَلاَ يَجْلِسْ حَتَّى يَرْكَعَ رَكْعَتَيْنِ " .

फ़ायदा : 1. मस्जिद को अल्लाह तआ़ला से ख़ुसूसी निस्बत है जिसकी बिना पर उसे बैतुल्लाह (अल्लाह का घर) का नाम दिया जाता है। इसलिये इसके हुक़ूक़ और इसमें दाख़िले के आदाब और इसकी ताज़ीम व तक्रीम का ये भी तक़ाज़ा है कि इंसान इसमें बैठने से पहले दो रकअ़त अदा करे। ये गोया बारगाहे इलाही की सलामी है। इसलिये इसको तहिय्यतुल मस्जिद का नाम दिया जाता है। जुम्हूर अइम्मा के नज़दीक चूंकि ये अ़मल मस्जिद के अदब व ताज़ीम के तक़ाज़े से है इसलिये इस्तिहबाबी अ़मल है। लेकिन ज़ाहिरिया के नज़दीक ये फ़र्ज़ है। वाज़ेह रहे कि मस्जिद में दाख़िल होने के बाद फ़र्ज़, सुन्नत या नफ़ल नमाज़ पढ़ लेने से तहिय्यतुल मस्जिद का हक़ अदा हो जाता है। क्योंकि इससे मक़सूद मस्जिद की ताज़ीम व तक्रीम है जो हासिल हो गई है। 2. औक़ाते नह्य (मनाही वक़्त) में सबबी नमाज़ पढ़ने के बारे में इख़्तिलाफ़ है। इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक और एक क़ौल की रू से इमाम अहमद औक़ाते नह्य में किसी नमाज़ को सबबी हो या ग़ैर सबबी जाइज़ नहीं समझते। लेकिन इमाम शाफ़ेई और एक क़ौल की रू से जिसे हाफ़िज़ इब्ने तैमिया ने इख़्तियार किया है। इमाम अहमद, सबबी नमाज़ को औक़ाते नह्य में जाइज़ क़रार देते हैं। क्योंकि इज़ा दख़ल अहदुकुमुल मस्जिद आ़म है और नही का ताल्लुक़ मुत्लक़ नमाज़ से है यानी जिसका सबब न हो। इसलिये सुबह और अ़सर की

नमाज़ इमाम के साथ दोबारा पढ़ना जाइज़ है। असर के बाद नमाज़े जनाज़ा पढ़ना और तवाफ़ की रकआत पढ़ना जाइज़ है। जिससे साबित होता है औक़ाते नह्य में सबबी नमाज़ पढ़ना सहीह है, लेकिन बिला ज़रूरत सबब पैदा नहीं करना चाहिये। 3. मस्जिद में दाख़िले के आदाब व हुक़ूक़ में से ये भी है कि इंसान बावुज़ू होकर दाख़िल होता कि बैठने से पहले तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ सके और तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ने से पहले अगर भूलकर बैठ जाये तो खड़ा होकर पढ़ ले। 4. जब सूरज तुलूअ हो रहा हो या ज़वाल हो रहा हो या सूरज ग़ुरूब हो रहा हो तो फिर तुलूअ और ग़ुरूब और इस्तवार का इन्तिज़ार करना चाहिये क्योंकि इन औक़ात के बारे में ख़ुसूसी तौर पर नह्य वारिद है। 5. मस्जिदे हराम का तहिय्या तवाफ़ है, अगर किसी वजह से ये मुम्किन न हो तो फिर कम से कम दो रकअतें ही पढ़ ले।

(1656) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, मेरा नबी (ﷺ) के ज़िम्मे क़र्ज़ था। आप (ﷺ) ने उसे अदा किया और मुझे रक़म ज़्यादा दी और मैं आप (ﷺ) के पास मस्जिद में गया तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'दो रकअत नमाज़ अदा करो।'
(सहीह बुख़ारी : 443, 2394, 3603, 2604, 3087, 3089, 3090, 4081, 4082, 1654, अबू दाऊद : 3347, नसाई : 7/283-284)

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ جَوَّاسٍ الْحَنَفِيُّ أَبُو عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ الأَشْجَعِيُّ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ مُحَارِبِ بْنِ دِثَارٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ كَانَ لِي عَلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم دَيْنٌ فَقَضَانِي وَزَادَنِي وَدَخَلْتُ عَلَيْهِ الْمَسْجِدَ فَقَالَ لِي " صَلِّ رَكْعَتَيْنِ " .

फ़ायदा : आप (ﷺ) का मुख़्तलिफ़ सहाबा किराम को तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ने का हुक्म देना इस बात की दलील है कि हत्तल वसअ (हर सम्भव) इस अमल को छोड़ना नहीं चाहिये।

बाब 12 : सफ़र से वापस आने वाले के लिये सफ़र से आते ही मस्जिद में दो रकअत नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है

باب اسْتِحْبَابِ الرَّكْعَتَيْنِ فِي الْمَسْجِدِ لِمَنْ قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ أَوَّلَ قُدُومِهِ

(1657) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे एक ऊँट ख़रीदा। जब आप (ﷺ) मदीना पहुँचे तो आप (ﷺ) ने मुझे मस्जिद में

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُحَارِبٍ، سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يَقُولُ اشْتَرَى مِنِّي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه

आने का हुक्म दिया और ये कि मैं दो रकअ़त नमाज़ पढ़ूँ।

وسلم بَعِيرًا فَلَمَّا قَدِمَ الْمَدِينَةَ أَمَرَنِي أَنْ آتِيَ الْمَسْجِدَ فَأُصَلِّيَ رَكْعَتَيْنِ .

(1658) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं कि एक ग़ज़्वे में, मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ निकला। मेरा ऊँट आहिस्ता-आहिस्ता चलने लगा और थक गया। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) (मदीने में) मुझसे पहले आ गये और मैं अगले दिन सुबह आया (क्योंकि वो मदीना से बाहर अपने घर ठहर गये थे) तो मैं मस्जिद में आया और मैं आपको मस्जिद के दरवाज़े पर मिला। आप (ﷺ) ने पूछा, 'तुम अब पहुँचे हो?' मैंने कहा, जी हाँ! आपने फ़रमाया, 'अपना ऊँट छोड़ो और मस्जिद में दाख़िल होकर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ो।' मैंने मस्जिद में दाख़िल होकर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और फिर वापस चला आया।

(सहीह बुख़ारी : 2097, 2718)

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، - يَعْنِي الثَّقَفِيَّ - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ خَرَجْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي غَزَاةٍ فَأَبْطَأَ بِي جَمَلِي وَأَعْيَى ثُمَّ قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَبْلِي وَقَدِمْتُ بِالْغَدَاةِ فَجِئْتُ الْمَسْجِدَ فَوَجَدْتُهُ عَلَى بَابِ الْمَسْجِدِ قَالَ " الآنَ حِينَ قَدِمْتَ " . قُلْتُ نَعَمْ . قَالَ " فَدَعْ جَمَلَكَ وَادْخُلْ فَصَلِّ رَكْعَتَيْنِ " . قَالَ فَدَخَلْتُ فَصَلَّيْتُ ثُمَّ رَجَعْتُ .

(1659) हज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सफ़र से दिन को चाश्त के वक़्त ही वापस लौटते थे। तो जब आप वापस आते मस्जिद से आग़ाज़ फ़रमाते। उसमें दो रकअ़त नमाज़ अदा करते फिर वहीं तशरीफ़ रखते (ताकि घर वालों को आपकी आमद का इल्म हो सके)।

(सहीह बुख़ारी : 3088, अबू दाऊद : 2773, 2781, नसाई : 2/53)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا الضَّحَّاكُ يَعْنِي أَبَا عَاصِمٍ، ح وَحَدَّثَنِي مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالاَ جَمِيعًا أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ، أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ، أَخْبَرَهُ عَنْ أَبِيهِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ، وَعَنْ عَمِّهِ، عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ عَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ لاَ

يَقْدَمُ مِنْ سَفَرٍ إِلاَّ نَهَارًا فِي الضُّحَى فَإِذَا قَدِمَ بَدَأَ بِالْمَسْجِدِ فَصَلَّى فِيهِ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ جَلَسَ فِيهِ

फ़वाइद : (1) इन हदीसों से मालूम हुआ सफ़र से वापसी के बाद अपने घर जाने से पहले अल्लाह के घर में हाज़िर होना चाहिये ताकि अपने घर वालों की मुलाक़ात से पहले अल्लाह तआला के हुज़ूर हदियए उबूदियत पेश किया जा सके। **(2)** अगर कोई इंसान लोगों की अक़ीदत व मुहब्बत का मर्कज़ हो और लोग उसकी मुलाक़ात व ज़ियारत के मुश्ताक़ हों तो उसे चाहिये कि वो सफ़र से वापसी पर तहिय्यतुल मस्जिद अदा करने के बाद कुछ देर के लिये मस्जिद में बैठ जाये ताकि लोग आसानी के साथ उससे मुलाक़ात की सआदत हासिल कर सकें। **(3)** सफ़र से घर वापसी ऐसे वक़्त में होनी चाहिये जो उनके इल्म में हो और उनके लिये दिक़्क़त व कुल्फ़त का बाइस न हो इसलिये आप सफ़र से वापसी में आख़िरी मन्ज़िल उमूमन मदीना तय्यिबा के क़रीब ही करते थे जिसकी वजह से मदीना तय्यिबा में ये इत्तिलाअ हो जाती थी कि आप कल सुबह तशरीफ़ लाने वाले हैं। फिर आप उस मन्ज़िल से सुबह जल्द ही रवाना होकर चाश्त के वक़्त मदीना मुनव्वरा पहुँच जाते और सबसे पहले मस्जिद में तशरीफ़ लाते ताकि घर वालों को आमद का इल्म हो जाये।

बाब 13 : नमाज़े चाश्त पसन्दीदा अमल है जो कम से कम दो रकअत, मुकम्मल आठ रकआत और दरम्यानी सूरत चार या छः रकआत हैं और आपने इसकी मुहाफ़िज़त व पाबंदी की तरग़ीब दी है

باب اسْتِحْبَابِ صَلاَةِ الضُّحَى وَأَنَّ أَقَلَّهَا رَكْعَتَانِ وَأَكْمَلَهَا ثَمَانِ رَكَعَاتٍ وَأَوْسَطَهَا أَرْبَعُ رَكَعَاتٍ أَوْ سِتٌّ وَالْحَثِّ عَلَى الْمُحَافَظَةِ عَلَيْهَا

(1660) अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ बयान करते हैं कि मैंने आइशा (रज़ि.) से पूछा, क्या नबी (ﷺ) चाश्त की नमाज़ पढ़ते थे? उन्होंने कहा, नहीं। मगर ये कि सफ़र से वापस आयें।

(अबू दाऊद : 1292, नसाई : 4/152)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنْ سَعِيدٍ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ، قَالَ قُلْتُ لِعَائِشَةَ هَلْ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي الضُّحَى قَالَتْ لاَ إِلاَّ أَنْ يَجِيءَ مِنْ مَغِيبِهِ .

फ़ायदा : हज़रत आइशा (रज़ि.) से नमाज़े चाश्त के बारे में अलग-अलग रिवायात हैं। मालूम होता है आप नमाज़े चाश्त पर मुवाज़िबत और हमेशगी नहीं फ़रमाते थे। इसलिये आइशा (रज़ि.) ने कहा, मैंने आपको (घर में) कभी चाश्त की नमाज़ पढ़ते नहीं देखा। दूसरों से सुनकर आपके चाश्त की नमाज़ पढ़ने का तज़्किरा फ़रमाया और सफ़र से वापसी की सूरत में पढ़ने का ऐतिराफ़ किया।

وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا كَهْمَسُ بْنُ الْحَسَنِ الْقَيْسِيُّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ، قَالَ قُلْتُ لِعَائِشَةَ أَكَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي الضُّحَى قَالَتْ لاَ إِلاَّ أَنْ يَجِيءَ مِنْ مَغِيبِهِ

(1661) इमाम साहब दूसरे उस्ताद के वास्ते से नक़ल करते हैं कि अ़ब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ बयान करते हैं, मैंने आइशा (रज़ि.) से सवाल किया, क्या नबी (ﷺ) चाश्त की नमाज़ पढ़ते थे? उन्होंने जवाब दिया, नहीं। मगर ये कि सफ़र से वापस आयें।

(नसाई : 4/152)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا قَالَتْ مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي سُبْحَةَ الضُّحَى قَطُّ . وَإِنِّي لأُسَبِّحُهَا وَإِنْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَيَدَعُ الْعَمَلَ وَهُوَ يُحِبُّ أَنْ يَعْمَلَ بِهِ خَشْيَةَ أَنْ يَعْمَلَ بِهِ النَّاسُ فَيُفْرَضَ عَلَيْهِمْ .

(1662) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, मैंने कभी रसूलुल्लाह (ﷺ) को चाश्त के नफ़ल पढ़ते नहीं देखा और मैं चाश्त की नमाज़ पढ़ती हूँ क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) किसी काम को करना पसंद फ़रमाते थे लेकिन इस डर से उसे नहीं करते थे कि लोग भी (आपको देखकर) वो काम करेंगे और वो (उनकी दिलचस्पी की बिना पर) उन पर फ़र्ज़ क़रार दिया जायेगा।

(सहीह बुख़ारी : 1128, अबू दाऊद : 1293)

फ़ायदा : हज़रत आइशा (रज़ि.) ने अपने मुशाहिदे और रूयत (देखने) की नफ़ी की है। मुत्लक़न चाश्त पढ़ने का इंकार नहीं किया। इसलिये आपके न पढ़ने की तौजीह ऐसी की है जिसके दवाम व हमेशगी और दूसरों के सामने पढ़ने की नफ़ी होती है। इसलिये एक गिरोह ने हज़रत आइशा (रज़ि.) की इस रिवायत की बिना पर और कुछ दूसरी रिवायतों की बिना पर चाश्त की नमाज़ न पढ़ने को तरजीह दी है और दूसरे गिरोह ने आपके पढ़ने की रिवायतों की बिना पर पढ़ने को तरजीह दी है और तीसरी जमाअ़त ने कभी-कभार पढ़ने को तरजीह दी और हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम ने किसी सबब की बिना पर पढ़ने को तरजीह दी है। जैसे सफ़र से वापसी, फ़तह व कामयाबी का हुसूल, किसी की ज़ियारत व

मुलाक़ात करने की सूरत में, उस वक़्त मस्जिद में जाने की बिना पर शुक्राने के तौर पर या जो किसी दिन ज़रूरत की बिना पर रात को तहज्जुद न पढ़ सका तो वो पढ़ ले।

(1663) हज़रत आइशा (रज़ि.) से मुआज़ा ने सवाल किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) चाश्त की नमाज़ कितनी रकआत पढ़ते थे? उन्होंने जवाब दिया, चार रकआत और जिस क़द्र ज़्यादा पढ़ना चाहते पढ़ लेते।
(इब्ने माजह : 1381)

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، - يَعْنِي الرِّشْكَ - حَدَّثَتْنِي مُعَاذَةُ، أَنَّهَا سَأَلَتْ عَائِشَةَ - رضى الله عنها - كَمْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي صَلاَةَ الضُّحَى قَالَتْ أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ وَيَزِيدُ مَا شَاءَ .

(1664) मुसन्निफ़ ने यही रिवायत दूसरी सनद से बयान की है, उसमें मा शाअ की बजाए माशाअल्लाह (जितनी अल्लाह ने चाहा) है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ يَزِيدَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ وَقَالَ يَزِيدُ مَا شَاءَ اللَّهُ .

(1665) एक और सनद है कि मुआज़ा अदविय्या ने आइशा (रज़ि.) से बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) चाश्त की नमाज़ चार रकआत पढ़ते थे और जिस क़द्र अल्लाह तआला ज़्यादा चाहता पढ़ लेते।

وَحَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، عَنْ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، أَنَّ مُعَاذَةَ الْعَدَوِيَّةَ، حَدَّثَتْهُمْ عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُصَلِّي الضُّحَى أَرْبَعًا وَيَزِيدُ مَا شَاءَ اللَّهُ

(1666) एक और सनद से यही रिवायत बयान की गई है।

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَابْنُ، بَشَّارٍ جَمِيعًا عَنْ مُعَاذِ بْنِ هِشَامٍ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

फ़ायदा : अपने मुशाहिदे के ऐतबार से हज़रत आइशा (रज़ि.) ने आप (ﷺ) के चाश्त की नमाज़ पढ़ने की नफ़ी की है कि मैंने आपको पढ़ते नहीं देखा और यहाँ दूसरों के बताने पर या सफ़र से वापसी पर पढ़ने का तज़्किरा किया है।

(1667) अब्दुर्रहमान बिन अबी यअला बयान करते हैं कि मुझे उम्मे हानी (रज़ि.) के सिवा किसी ने नहीं बताया कि उसने

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ

عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، قَالَ مَا أَخْبَرَنِي أَحَدٌ، أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي الضُّحَى إِلاَّ أُمُّ هَانِئٍ فَإِنَّهَا حَدَّثَتْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ بَيْتَهَا يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ فَصَلَّى ثَمَانِيَ رَكَعَاتٍ مَا رَأَيْتُهُ صَلَّى صَلاَةً قَطُّ أَخَفَّ مِنْهَا غَيْرَ أَنَّهُ كَانَ يُتِمُّ الرُّكُوعَ وَالسُّجُودَ . وَلَمْ يَذْكُرِ ابْنُ بَشَّارٍ فِي حَدِيثِهِ قَوْلَهُ قَطُّ .

नबी(ﷺ) को चाश्त की नमाज़ पढ़ते देखा। उम्मे हानी ने बताया कि फ़तहे मक्का के दिन नबी (ﷺ) उसके घर तशरीफ़ लाये और आपने आठ रकआत पढ़ीं । मैंने आपको कभी इससे हल्की या ख़फ़ीफ़ नमाज़ पढ़ते नहीं देखा। हाँ आप रुकूअ व सुजूद मुकम्मल तरीक़े से करते थे। इब्ने बश्शार ने अपनी रिवायत में क़त्तु का लफ़्ज़ बयान नहीं किया।

(सहीह बुख़ारी : 1103, 1176, 4292, अबू दाऊद : 1291, तिर्मिज़ी : 474)

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، وَمُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ الْمُرَادِيُّ، قَالاَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ، أَنَّ أَبَاهُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الْحَارِثِ بْنِ نَوْفَلٍ، قَالَ سَأَلْتُ وَحَرَصْتُ عَلَى أَنْ أَجِدَ أَحَدًا مِنَ النَّاسِ يُخْبِرُنِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم سَبَّحَ سُبْحَةَ الضُّحَى فَلَمْ أَجِدْ أَحَدًا يُحَدِّثُنِي ذَلِكَ غَيْرَ أَنَّ أُمَّ هَانِئٍ بِنْتَ أَبِي طَالِبٍ أَخْبَرَتْنِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَتَى بَعْدَ مَا ارْتَفَعَ النَّهَارُ يَوْمَ الْفَتْحِ فَأُتِيَ بِثَوْبٍ فَسُتِرَ عَلَيْهِ فَاغْتَسَلَ ثُمَّ قَامَ فَرَكَعَ ثَمَانِيَ رَكَعَاتٍ لاَ أَدْرِي أَقِيَامُهُ فِيهَا أَطْوَلُ أَمْ رُكُوعُهُ أَمْ سُجُودُهُ كُلُّ ذَلِكَ مِنْهُ مُتَقَارِبٌ - قَالَتْ - فَلَمْ أَرَهُ سَبَّحَهَا قَبْلُ وَلاَ بَعْدُ . قَالَ الْمُرَادِيُّ عَنْ يُونُسَ . وَلَمْ يَقُلْ أَخْبَرَنِي .

(1668) अब्दुल्लाह बिन हारिस़ बयान करते हैं, मैंने पूछा और मेरी ये आरज़ू और ख़्वाहिश थी कि मुझे कोई ऐसा शख़्स मिल जाये जो मुझे बताये कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने चाश्त की नमाज़ पढ़ी है तो मुझे उम्मे हानी के सिवा कोई न मिला जो मुझे ये बताता। उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब (रज़ि.) ने मुझे ख़बर दी कि फ़तहे मक्का के दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) दिन बुलंद होने के बाद आये तो कपड़ा लाकर आपको पर्दा मुहैया किया गया, तो आपने गुस्ल फ़रमाया। फिर आप उठे और आठ रकआत पढ़ीं, मैं नहीं जानती कि उनमें आपका क़ियाम तवील था या आपका रुकूअ या आपका सज्दा ये सब अरकान क़रीब-क़रीब था और उम्मे हानी ने बताया, मैंने इससे पहले और इसके बाद आपको चाश्त की नमाज़ पढ़ते नहीं देखा।

(इब्ने माजह : 614, 1319)

फ़ायदा : ये उन लोगों की दलील है जो कहते हैं कि उम्मे हानी के घर आप (ﷺ) ने फ़तह के शुक्राने के तौर पर चाश्त की नमाज़ पढ़ी थी।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ أَبِي النَّضْرِ، أَنَّ أَبَا مُرَّةَ، مَوْلَى أُمِّ هَانِئٍ بِنْتِ أَبِي طَالِبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ أُمَّ هَانِئٍ بِنْتَ أَبِي طَالِبٍ، تَقُولُ ذَهَبْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَامَ الْفَتْحِ فَوَجَدْتُهُ يَغْتَسِلُ وَفَاطِمَةُ ابْنَتُهُ تَسْتُرُهُ بِثَوْبٍ - قَالَتْ - فَسَلَّمْتُ فَقَالَ " مَنْ هَذِهِ " . قُلْتُ أُمُّ هَانِئٍ بِنْتُ أَبِي طَالِبٍ . قَالَ " مَرْحَبًا بِأُمِّ هَانِئٍ " . فَلَمَّا فَرَغَ مِنْ غُسْلِهِ قَامَ فَصَلَّى ثَمَانِيَ رَكَعَاتٍ مُلْتَحِفًا فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ . فَلَمَّا انْصَرَفَ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ زَعَمَ ابْنُ أُمِّي عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ أَنَّهُ قَاتِلٌ رَجُلاً أَجَرْتُهُ فُلاَنُ بْنُ هُبَيْرَةَ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " قَدْ أَجَرْنَا مَنْ أَجَرْتِ يَا أُمَّ هَانِئٍ " . قَالَتْ أُمُّ هَانِئٍ وَذَلِكَ ضُحًى .

(1669) हज़रत उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब (रज़ि.) बयान करती हैं कि मैं फ़तहे मक्का के साल रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ गई तो मैंने आपको नहाते हुए पाया और आपकी बेटी फ़ातिमा (रज़ि.) आपको कपड़े से पर्दा किये हुए थी। मैंने जाकर सलाम अ़र्ज़ किया, आपने पूछा, ये कौन हैं? मैंने कहा, उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब हूँ। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उम्मे हानी को ख़ुश आमदीद।' तो जब आप नहाने से फ़ारिग़ हुए तो उठे और आठ रकआत नमाज़ पढ़ी। आप एक कपड़े में लिपटे हुए थे जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हो गये तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरा माँ जाया भाई अ़ली बिन अबी तालिब (रज़ि.) एक ऐसे आदमी को क़त्ल करना चाहता है जिसे मैं पनाह दे चुकी हूँ, जो हुबैरह का बेटा है। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ उम्मे हानी जिसको तूने पनाह दी हमने भी पनाह दी।' उम्मे हानी (रज़ि.) ने बताया, ये चाश्त का वक़्त था।

(सहीह बुख़ारी : 280, 357, 3171, 6158, तिर्मिज़ी : 1579, 2734, नसाई : 1/126, इब्ने माजह : 465)

फ़वाइद : (1) इस हदीस़ से मालूम हुआ बापर्दा नहाने वाले शख़्स को सलाम कहना और उससे ज़रूरी बातचीत करना जाइज़ है। जबकि वो कपड़ा बांधे हुए हो, क्योंकि आप बेटी के सामने बरहना नहीं हो सकते थे। **(2)** अगर किसी इंसान को औ़रत पनाह दे दे तो वो नाफ़िज़ुल अ़मल होगी, उसकी पनाह को तोड़ना दुरुस्त नहीं है। इमाम शाफ़ेई और जुम्हूर का यही मौक़िफ़ है। इमाम अबू हनीफ़ा और

इमाम मालिक के नज़दीक औरत की दी हुई पनाह इमाम (अमीर) की सवाबदीद पर मौक़ूफ़ है। वो बरक़रार रखे या तोड़ दे उसकी मर्ज़ी है।

وَحَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا وُهَيْبُ بْنُ خَالِدٍ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي مُرَّةَ، مَوْلَى عَقِيلٍ عَنْ أُمِّ هَانِئٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم صَلَّى فِي بَيْتِهَا عَامَ الْفَتْحِ ثَمَانِيَ رَكَعَاتٍ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ قَدْ خَالَفَ بَيْنَ طَرَفَيْهِ ‏.‏

(1670) हज़रत उम्मे हानी (रज़ि.) बयान करती हैं कि फ़तहे मक्का के साल रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसके घर में एक कपड़े में, जिसके दोनों जानिब आपस में मुख़ालिफ़त जानिब डाले गये थे आठ रकआत नमाज़ पढ़ी।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَسْمَاءَ الضُّبَعِيُّ، حَدَّثَنَا مَهْدِيٌّ، - وَهُوَ ابْنُ مَيْمُونٍ - حَدَّثَنَا وَاصِلٌ، مَوْلَى أَبِي عُيَيْنَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ عُقَيْلٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ يَعْمَرَ، عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ الدُّؤَلِيِّ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ ‏"‏ يُصْبِحُ عَلَى كُلِّ سُلاَمَى مِنْ أَحَدِكُمْ صَدَقَةٌ فَكُلُّ تَسْبِيحَةٍ صَدَقَةٌ وَكُلُّ تَحْمِيدَةٍ صَدَقَةٌ وَكُلُّ تَهْلِيلَةٍ صَدَقَةٌ وَكُلُّ تَكْبِيرَةٍ صَدَقَةٌ وَأَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ صَدَقَةٌ وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ وَيُجْزِئُ مِنْ ذَلِكَ رَكْعَتَانِ يَرْكَعُهُمَا مِنَ الضُّحَى ‏"‏ ‏.‏

(1671) हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से हर शख़्स के जोड़-जोड़ (हर जोड़) पर सुबह को सदक़ा है। पस एक बार सुब्हानअल्लाह कहना सदक़ा है और अल्हम्दुलिल्लाह कहना भी सदक़ा है और ला इला-ह इल्लल्लाह कहना सदक़ा है और अल्लाहु अकबर कहना भी सदक़ा है, किसी को नेकी की तल्क़ीन करना सदक़ा है और किसी को बुराई से रोकना भी सदक़ा है और इन तमाम उमूर की जगह दो रकअत नमाज़ जो इंसान चाश्त के वक़्त पढ़ता है किफ़ायत करती हैं।'

(अबू दाऊद : 1285, 5243-5244)

फ़ायदा : सुबह को इंसान जब इस हालत में उठता है कि उसका हर अंग और उसका हर जोड़ सहीह सलामत है तो उस पर अल्लाह तआला का फ़ज़्ल व करम है जो इसका तक़ाज़ा करता है कि इंसान हर जोड़ की तरफ़ से शुक्राने के तौर पर सदक़ा करे और हर नेकी अज्र व सवाब का काम सदक़ा बन सकता

है और अगर इंसान हर रोज़ सुबह को चाश्त की दो रकअ़त नमाज़ पढ़ ले तो हर जोड़ की तरफ़ से शुक्राना अदा हो जाता है क्योंकि नमाज़ एक ऐसी इबादत है जिसमें इंसान का हर अंग और हर जोड़ हिस्सा लेता है। इस हदीस़ से स़ाबित होता है कि हर बालिग़ इंसान को हर दिन, सुबह कम से कम दो रकअ़ात अपनी सेहत व सलामती के शुक्राने के तौर पर पढ़ लेनी चाहिये ताकि अल्लाह तआ़ला उसकी सेहत व सलामती को बरक़रार रखे और उसका हर अंग और हर जोड़ शर व फ़साद और तोड़-फोड़ से महफ़ूज़ रहे।

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا أَبُو التَّيَّاحِ، حَدَّثَنِي أَبُو عُثْمَانَ النَّهْدِيُّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ أَوْصَانِي خَلِيلِي صلى الله عليه وسلم بِثَلاَثٍ بِصِيَامِ ثَلاَثَةِ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ وَرَكْعَتَىِ الضُّحَى وَأَنْ أُوتِرَ قَبْلَ أَنْ أَرْقُدَ .

(1672) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि मुझे मेरे ख़लील (ﷺ) ने तीन चीज़ों की तल्क़ीन फ़रमाई, 'हर माह तीन रोज़े रखूँ, चाश्त की दो रकअ़तें पढ़ूँ और सोने से पहले वित्र पढ़ लूँ।'
(सहीह बुख़ारी : 1178, 1981, नसाई : 3/229)

फ़ायदा : कुछ अहादीस़ से मालूम होता है कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) रात को अहादीस़ याद करने में मशग़ूल रहते थे दिन को भी अहादीस़ के सिमाअ़ के सिलसिले में आप (ﷺ) के साथ रहते थे। इसलिये उनके लिये उन हालात में रात का क़ियाम मुश्किल था। इसलिये आप (ﷺ) ने उनको तीन चीज़ों की वसियत की। जिससे मालूम हुआ तालिबे इल्म का ये कम से कम तर्बियती कोर्स है कि वो इन तीन बातों की पाबंदी करें, अगर इनसे ज़्यादा चीज़ों की पाबंदी कर लें तो ये और बेहतर होगा।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبَّاسٍ الْجُرَيْرِيِّ، وَأَبِي، شِمْرٍ الضُّبَعِيِّ قَالاَ سَمِعْنَا أَبَا عُثْمَانَ النَّهْدِيَّ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. بِمِثْلِهِ .

(1673) इमाम साहब ने अपने दूसरे उस्तादों से भी अबू हुरैरह (रज़ि.) की ये रिवायत बयान की है।

وَحَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ مَعْبَدٍ، حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُخْتَارٍ، عَنْ عَبْدِ

(1674) एक और सनद में है कि अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि मुझे मेरे

اللَّهِ الدَّانَاجِ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو رَافِعٍ الصَّائِغُ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ أَوْصَانِي خَلِيلِي أَبُو الْقَاسِمِ صلى الله عليه وسلم بِثَلاَثٍ . فَذَكَرَ مِثْلَ حَدِيثِ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ .

ख़लील अबुल क़ासिम (ﷺ) ने तीन बातों की वसियत फ़रमाई।

وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، عَنِ الضَّحَّاكِ بْنِ عُثْمَانَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُنَيْنٍ، عَنْ أَبِي مُرَّةَ، مَوْلَى أُمِّ هَانِئٍ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ، قَالَ أَوْصَانِي حَبِيبِي ﷺ بِثَلاَثٍ لَنْ أَدَعَهُنَّ مَا عِشْتُ بِصِيَامِ ثَلاَثَةِ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ وَصَلاَةِ الضُّحَى وَبِأَنْ لاَ أَنَامَ حَتَّى أُوتِرَ .

(1675) हज़रत अबू दरदा (रज़ि.) बयान करते हैं कि मेरे हबीब (ﷺ) ने मुझे तीन बातों की तल्क़ीन फ़रमाई है मैं ज़िन्दगी भर उनको छोड़ूँगा नहीं, 'हर माह तीन रोज़े, चाश्त की नमाज़ और सोने से पहले वित्र पढ़ना।'

नोट : जिस तरह इशा के बाद से लेकर तुलूअे फ़ज्र तक के तवील वक़्फ़े में लोगों की राह व सुकून और नींद की ख़ातिर कोई नमाज़ फ़र्ज़ नहीं की गई लेकिन इस वक़्फ़े के दौरान तहज्जुद की कुछ रकअतें पढ़ने उठने की तरग़ीब दी गई है। इसी तरह फ़ज्र से लेकर नमाज़े जुहर तक तवील वक़्फ़े में लोगों की मआशी ज़रूरतों की रिआयत रखते हुए कोई नमाज़ फ़र्ज़ नहीं की गई। लेकिन इस वक़्फ़े में नफ़ल और इस्तिहबाब के तौर पर सलातुज़्ज़ुहा के नाम से चंद रकअतें पढ़ने की तरग़ीब दी गई है अगर ये रकअतें तुलूअे आफ़ताब के थोड़ी देर बाद पढ़ी जायें तो उन्हें इशराक़ का नाम दिया जाता है और दिन अच्छी तरह चढ़ने के बाद पढ़ी जायें तो उन्हें चाश्त कहा जाता है जो कम से कम दो हैं और उससे ज़्यादा सहीह अहादीस़ की रू से आठ रकआत तक हैं चूंकि आप (ﷺ) ने इस नमाज़ पर हमेशगी और दवाम नहीं फ़रमाया। इसलिये कुछ लोगों को इसका इल्म न हो सका और उन्होंने इंकार किया। यहाँ तक कि इब्ने उमर (रज़ि.) ने इसके मस्जिद में पढ़ने को बिदअत क़रार दिया। लेकिन जुम्हूर इस नमाज़ के मुस्तहब होने के क़ाइल है।

बाब 14 : फ़ज्र की दो सुन्नतों का मुस्तहब होना, उनकी तरग़ीब देना और उनको मुख़्तसर पढ़ना और उनकी पाबंदी करना और उनमें क्या पढ़ना पसन्दीदा है

باب اسْتِحْبَابِ رَكْعَتَيْ سُنَّةِ الْفَجْرِ وَالْحَثِّ عَلَيْهِمَا وَتَخْفِيفِهِمَا وَالْمُحَافَظَةِ عَلَيْهِمَا وَبَيَانِ مَا يُسْتَحَبُّ أَنْ يُقْرَأَ فِيهِمَا

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ حَفْصَةَ أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ، أَخْبَرَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا سَكَتَ الْمُؤَذِّنُ مِنَ الأَذَانِ لِصَلاَةِ الصُّبْحِ وَبَدَا الصُّبْحُ رَكَعَ رَكْعَتَيْنِ خَفِيفَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ تُقَامَ الصَّلاَةُ ‏.‏

(1676) हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) बयान करती हैं कि जब मुअज़्ज़िन सुबह की अज़ान कहकर ख़ामोश हो जाता और सुबह नमूदार हो जाती तो रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ की इक़ामत से पहले दो हल्की रकअतें पढ़ते।

(सहीह बुख़ारी : 618, 1173, 1181, तिर्मिज़ी : 433, नसाई: 1/283, 3/252, 3/255, इब्ने माजह : 1145)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، رُمْحٍ عَنِ اللَّيْثِ بْنِ سَعْدٍ، ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ أَيُّوبَ، كُلُّهُمْ عَنْ نَافِعٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ كَمَا قَالَ مَالِكٌ ‏.‏

(1677) इमाम साहब अपने दूसरे उस्तादों से नाफ़ेअ की सनद से ही यही रिवायत इमाम मालिक की तरह बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَكَمِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ زَيْدِ بْنِ مُحَمَّدٍ، قَالَ سَمِعْتُ نَافِعًا، يُحَدِّثُ عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنْ حَفْصَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا طَلَعَ الْفَجْرُ لاَ يُصَلِّي إِلاَّ رَكْعَتَيْنِ خَفِيفَتَيْنِ ‏.‏

(1678) हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) बयान करती हैं कि तुलूओ फ़ज्र के बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) दो हल्की रकअतों के सिवा कोई नमाज़ नहीं पढ़ते थे।

(1679) इमाम साहब अपने एक और उस्ताद से ये रिवायत नक़ल करते हैं।

وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا النَّضْرُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(1680) हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) बयान करती हैं कि जब फ़ज्र रोशन हो जाती तो नबी (ﷺ) दो रकअ़त नमाज़ पढ़ते थे।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَخْبَرَتْنِي حَفْصَةُ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا أَضَاءَ لَهُ الْفَجْرُ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ .

फ़ायदा : जब फ़ज्र तुलूअ़ हो जाये तो अज़ान के बाद नमाज़ से पहले सिर्फ़ फ़ज्र की दो सुन्नत पढ़ी जाती हैं। बिला सबब और कोई नमाज़ नहीं पढ़ी जा सकती। हाँ अगर किसी की इशा की नमाज़ रह गई हो या वित्र रह गये हों तो उनको पढ़ा जा सकता है।

(1681) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अज़ान सुनने के बाद फ़ज्र की दो रकअ़त तख़्फ़ीफ़ के साथ पढ़ते थे। (यानी हल्की)

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي رَكْعَتَىِ الْفَجْرِ إِذَا سَمِعَ الأَذَانَ وَيُخَفِّفُهُمَا .

(1682) इमाम साहब ने अपने दूसरे उस्तादों से भी हिशाम की सनद से यही रिवायत नक़ल की है लेकिन अबू उसामा ने इज़ा समिअ़ल अज़ान के बजाए इज़ा तलअ़ल फ़ज्र नक़ल किया है, जब फ़ज्र तुलूअ़ हो जाये।

وَحَدَّثَنِيهِ عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، حَدَّثَنَا عَلِيٌّ يَعْنِي ابْنَ مُسْهِرٍ، ح وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، ح وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرٍ، وَأَبُو كُرَيْبٍ وَابْنُ نُمَيْرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، ح وَحَدَّثَنَاهُ عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، كُلُّهُمْ عَنْ هِشَامٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَفِي حَدِيثِ أَبِي أُسَامَةَ إِذَا طَلَعَ الْفَجْرُ .

(1683) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि नबी (ﷺ) सुबह की नमाज़ की

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي

عَدِيٍّ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ بَيْنَ النِّدَاءِ وَالإِقَامَةِ مِنْ صَلاَةِ الصُّبْحِ .

अज़ान और इक़ामत के दौरान दो रकअत पढ़ते थे।

(सहीह बुख़ारी : 619)

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، قَالَ سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ سَعِيدٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهُ سَمِعَ عَمْرَةَ، تُحَدِّثُ عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا كَانَتْ تَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي رَكْعَتَىِ الْفَجْرِ فَيُخَفِّفُ حَتَّى إِنِّي أَقُولُ هَلْ قَرَأَ فِيهِمَا بِأُمِّ الْقُرْآنِ .

(1684) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की दो रकअत सुन्नत इस क़द्र हल्की पढ़ते थे कि मैं दिल में कहती थी क्या आप (ﷺ) ने उनमें सूरह फ़ातिहा पढ़ी है?

(सहीह बुख़ारी : 1171, अबू दाऊद : 1255)

फ़ायदा : हज़रत आइशा (रज़ि.) और हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) की रिवायात से मालूम होता है कि हुज़ूर (ﷺ) सुबह की सुन्नतों को इख़्तिसार व तख़्फ़ीफ़ (हल्की) के साथ अदा करते थे और उनमें तिलावत ज़्यादा नहीं फ़रमाते ताकि सुबह की फ़र्ज़ नमाज़ में क़िरअत तवील की जा सके।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَنْصَارِيِّ، سَمِعَ عَمْرَةَ بِنْتَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا طَلَعَ الْفَجْرُ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ أَقُولُ هَلْ يَقْرَأُ فِيهِمَا بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ .

(1685) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान फ़रमाती हैं कि जब फ़ज्र तुलूअ हो जाती तो रसूलुल्लाह (ﷺ) दो रकअत अदा करते, मैं दिल में सोचती क्या आप (ﷺ) ने उनमें सूरह फ़ातिहा पढ़ी है? यानी हल्की और कम क़िरअत करते थे।

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ حَدَّثَنِي عَطَاءٌ، عَنْ

(1686) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि नबी (ﷺ) जिस क़द्र एहतिमाम व पाबंदी सुबह की नमाज़ से पहले की दो

عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم لَمْ يَكُنْ عَلَى شَىْءٍ مِنَ النَّوَافِلِ أَشَدَّ مُعَاهَدَةً مِنْهُ عَلَى رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الصُّبْحِ .

रकअ़त का करते थे, और किसी नफ़ल का इस क़द्र एहतिमाम नहीं फ़रमाते थे।

(सहीह बुख़ारी : 1169, अबू दाऊद : 1254)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ جَمِيعًا عَنْ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، - قَالَ ابْنُ نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا حَفْصٌ، - عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي شَىْءٍ مِنَ النَّوَافِلِ أَسْرَعَ مِنْهُ إِلَى الرَّكْعَتَيْنِ قَبْلَ الْفَجْرِ .

(1687) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को किसी नफ़ल के लिये भी इस क़द्र सुर्अ़त व जल्दी करते नहीं देखा, जिस क़द्र सुर्अ़त आप फ़ज्र की नमाज़ से पहले की दो रकअ़तों के लिये करते थे।

फ़ायदा : सुबह की सुन्नतों के लिये जल्दी करना, उनके एहतिमाम और मुहाफ़िज़त से किनाया है और इस तरफ़ इशारा है कि आप (ﷺ) इस बात का इल्तिज़ाम (पाबंदी) फ़रमाते थे कि उनको सुबह की नमाज़ से पहले ही पढ़ा जाये। नमाज़े फ़ज्र के बाद उनकी क़ज़ाई की ज़रूरत न पेश आये। लेकिन आज हम इन सुन्नतों का इस क़द्र एहतिमाम नहीं करते हैं इसलिये बहुत से लोग नमाज़े फ़ज्र के बाद उनको पढ़ते हैं जो उनका असल वक़्त नहीं है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ الْغُبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ زُرَارَةَ بْنِ أَوْفَى، عَنْ سَعْدِ بْنِ هِشَامٍ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " رَكْعَتَا الْفَجْرِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا " .

(1688) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'फ़ज्र की दो रकअ़त (सुन्नत) दुनिया और जो कुछ इसमें है से बेहतर हैं।'

(तिर्मिज़ी : 416, नसाई : 1758)

फ़ायदा : इससे मालूम होता है कि आख़िरत में फ़ज्र की दो रकअ़त सुन्नत का एहतिमाम और पाबंदी इस क़द्र अज्र व सवाब का बाइस है कि दुनिया और दुनिया में जो कुछ है, उन सबसे ज़्यादा क़ीमती और मुफ़ीद है क्योंकि दुनिया व मा फ़ीहा सब आरिज़ी और फ़ानी हैं और आख़िरत का अज्र व सवाब बाक़ी और ग़ैर फ़ानी है।

(1689) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि नबी (ﷺ) ने तुलूअे फ़ज्र के वक़्त की दो रकअत के बारे में फ़रमाया, 'वो दोनों मुझे पूरी दुनिया के मुक़ाबले में ज़्यादा पसंद हैं।'

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، قَالَ قَالَ أَبِي حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ زُرَارَةَ، عَنْ سَعْدِ بْنِ هِشَامٍ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ فِي شَأْنِ الرَّكْعَتَيْنِ عِنْدَ طُلُوعِ الْفَجْرِ " لَهُمَا أَحَبُّ إِلَىَّ مِنَ الدُّنْيَا جَمِيعًا " .

(1690) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़ज्र की दो रकअत सुन्नत में कुल याअय्युहल काफ़िरून और कुल हुवल्लाहु अहमद पढ़ीं।
(अबू दाऊद : 1256, नसाई : 2/156, इब्ने माजह : 1148)

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالاَ حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ، عَنْ يَزِيدَ، - هُوَ ابْنُ كَيْسَانَ - عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَرَأَ فِي رَكْعَتَىِ الْفَجْرِ { قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ} وَ { قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ}

(1691) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़ज्र की दो रकअत सुन्नत में पहली रकअत में क़ूलू आमन्ना बिल्लाहि वमा उन्ज़ि-ल इलैना (सूरह बक़रह : 136) और दूसरी रकअत में आले इमरान की आयत नम्बर 52 आमन्ना बिल्लाहि वश्हद बिअन्ना मुस्लिमून पढ़ते थे।
(अबू दाऊद : 1259, नसाई : 943)

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْفَزَارِيُّ، - يَعْنِي مَرْوَانَ بْنَ مُعَاوِيَةَ - عَنْ عُثْمَانَ بْنِ حَكِيمٍ الأَنْصَارِيِّ، قَالَ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ يَسَارٍ، أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ، أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَقْرَأُ فِي رَكْعَتَىِ الْفَجْرِ فِي الأُولَى مِنْهُمَا { قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا} الآيَةَ الَّتِي فِي الْبَقَرَةِ وَفِي الآخِرَةِ مِنْهُمَا { آمَنَّا بِاللَّهِ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ}

(1692) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़ज्र की दो सुन्नतों में क़ूलू आमन्ना बिल्लाहि वमा उन्ज़ि-

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ حَكِيمٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ

يَسَارٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقْرَأُ فِي رَكْعَتَىِ الْفَجْرِ { قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا} وَالَّتِي فِي آلِ عِمْرَانَ { تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ}

ल इलैना और सूरह आले इमरान की आयत 64 तआलौ इला कलिमतिन सवाइम्-बैनना व बैनकुम पढ़ते थे।

وَحَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ حَكِيمٍ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ . بِمِثْلِ حَدِيثِ مَرْوَانَ الْفَزَارِيِّ .

(1693) यही हदीस इमाम साहब ने एक दूसरे उस्ताद से बयान की है।

फ़ायदा : इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की रिवायत से मालूम होता है कि आप (ﷺ) फ़ज्र की सुन्नतों की दूसरी रकअ़त में भी सूरह आले इमरान की आयत नम्बर 52 पढ़ते थे और कभी आयत नम्बर 64। लेकिन पहली रकअ़त में सूरह बक़रह की आयत 136 पढ़ते थे और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की रिवायत से कुल या अय्युहल काफ़िरून और कुल हुवल्लाहु अहद पढ़ना साबित है इस तरह ये तीन क़िस्म की क़िरअत साबित होती है इनमें से जिसको भी पढ़ लिया जाये बेहतर है।

باب فَضْلِ السُّنَنِ الرَّاتِبَةِ قَبْلَ الْفَرَائِضِ وَبَعْدَهُنَّ وَبَيَانِ عَدَدِهِنَّ

बाब 15 : फ़र्ज़ों से पहले और बाद वाली सुनने रातिबा की फ़ज़ीलत और उनकी तादाद

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ، - يَعْنِي سُلَيْمَانَ بْنَ حَيَّانَ - عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ سَالِمٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ أَوْسٍ، قَالَ حَدَّثَنِي عَنْبَسَةُ بْنُ أَبِي سُفْيَانَ، فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ بِحَدِيثٍ يَتَسَارُّ إِلَيْهِ قَالَ سَمِعْتُ أُمَّ حَبِيبَةَ تَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " مَنْ صَلَّى

(1694) अ़म्र बिन औस बयान करते हैं कि मुझे अ़म्बसा बिन अबी सुफ़ियान ने अपनी मर्ज़ुल मौत में हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि.) से एक ख़ुशकुन हदीस सुनाई कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिसने दिन-रात में बारह रकअ़त अदा कीं उसके लिये जन्नत में घर बनाया जायेगा।' उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा (रज़ि.) फ़रमाती हैं, जब से मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) का ये फ़रमान सुना है मैंने

اثْنَتَىْ عَشْرَةَ رَكْعَةً فِي يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ بُنِيَ لَهُ بِهِنَّ بَيْتٌ فِي الْجَنَّةِ " . قَالَتْ أُمُّ حَبِيبَةَ فَمَا تَرَكْتُهُنَّ مُنْذُ سَمِعْتُهُنَّ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . وَقَالَ عَنْبَسَةُ فَمَا تَرَكْتُهُنَّ مُنْذُ سَمِعْتُهُنَّ مِنْ أُمِّ حَبِيبَةَ . وَقَالَ عَمْرُو بْنُ أَوْسٍ مَا تَرَكْتُهُنَّ مُنْذُ سَمِعْتُهُنَّ مِنْ عَنْبَسَةَ . وَقَالَ النُّعْمَانُ بْنُ سَالِمٍ مَا تَرَكْتُهُنَّ مُنْذُ سَمِعْتُهُنَّ مِنْ عَمْرِو بْنِ أَوْسٍ .

इन रकअ़ात को नहीं छोड़ा और अ़म्बसा कहते हैं, जब से मैंने उम्मे हबीबा (रज़ि.) से ये हदीस़ सुनी है, मैंने इन रकअ़ात को छोड़ा नहीं और अ़म्र बिन औस का बयान है कि जब से मैंने अ़म्बसा से ये रिवायत सुनी है मैंने इन रकअ़ात को छोड़ा नहीं और नोमान बिन सालिम का क़ौल है जबसे मैंने अ़म्र बिन औस से ये हदीस़ सुनी है, मैंने इन रकअ़ात को नहीं छोड़ा।

(अबू दाऊद : 1250)

फ़वाइद : (1) दिन-रात में पाँच फ़र्ज़ नमाज़ें इस्लाम का रुक्ने रकीन और ईमान का लाज़िमा हैं, जिनके बग़ैर ईमान का क़ियाम व बक़ा मुम्किन नहीं है। लेकिन इनके अ़लावा इन ही के आगे और पीछे कुछ रकअ़ात पढ़ने की तरग़ीब व तालीम भी रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दी है उनमें से जिनके लिये आप (ﷺ) ने ताकीदी अल्फ़ाज़ फ़रमाये हैं और दूसरों को तरग़ीब व तश्वीक़ (शौक़) दिलाने के साथ-साथ आपने अ़मलन उनका ख़ूब एहतिमाम फ़रमाया है तो उनको सुनने रातिबा या सुनने मुअक्कदा का नाम दिया जाता है और अगर आपने उनकी तरग़ीब नहीं दी या ज़्यादा एहतिमाम नहीं किया तो उनको सुनने ग़ैर मुअक्कदा या नफ़्ल से ताबीर किया जाता है। **(2)** अइम्मए अरबआ़ का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि दिन-रात में बारह रकअ़ात यानी दो रकअ़त फ़ज्र से पहले, चार रकअ़ात ज़ुहर से पहले और दो रकअ़त ज़ुहर के बाद, दो रकअ़त मग़्रिब के बाद और दो रकअ़त इशा के बाद सुनने मुअक्कदा हैं और इनके सिवा रकअ़ात जिनका ज़िक्र अलग-अलग अहादीस़ में मौजूद है, वो सुनने ग़ैर मुअक्कदा और नवाफ़िल हैं। जो इंसान के लिये अज्र व स़वाब के हुसूल और दरजात व मरातिब में रिफ़अ़त व बुलंदी का बाइस़ हैं। **(3)** फ़र्ज़ों से पहले पढ़ी जाने वाली सुनने मुअक्कदा और नवाफ़िल का बज़ाहिर मक़सद या हिक्मत व मस्लिहत ये मालूम होती है कि फ़र्ज़ नमाज़ जो अल्लाह तआ़ला के दरबारे आ़लिया में सरगोशी और हुज़ूरी है और मस्जिद में इज्तिमाई तौर पर अदा की जाती है, उसमें मशग़ूल होने से पहले इन्फ़िरादी तौर पर चंद रकअ़ात पढ़ कर दिल को दुनिया के मशाग़िल और मसरूफ़ियात से फेरकर अल्लाह के दरबार से कुछ आश्ना और मानूस कर लिया जाये ताकि फ़र्ज़ों की अदायगी में पूरी यकसूई और दिलजमई से अल्लाह तआ़ला से राज़ व नियाज़ हो सके और दिल दुनिया के मशाग़िल (धन्धे पानी) में ही न उलझा रहे। **(4)** फ़र्ज़ों के बाद पढ़ी जाने वाली सुनने रातिबा या नवाफ़िल की बज़ाहिर

यही हिक्मत और मस्लिहत मालूम होती है कि फ़र्ज़ नमाज़ की अदायगी में जो कमी और कोताही रह गई है उसका कुछ इज़ाला और तदारुक हो जाये। (5) हमारे अस्लाफ़े किराम की ये आदते मुबारक थी कि जब उनके सामने कोई ताकीदी या तरग़ीबी फ़रमाने नबवी (ﷺ) आता तो हत्तल वसअ़ (हर मुम्किन) उसकी पाबंदी और एहतिमाम करते थे, उसके बारे में किसी क़िस्म के तग़ाफ़ुल या तसाहुल और सुस्ती का मुज़ाहिरा नहीं करते थे।

حَدَّثَنِي أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، حَدَّثَنَا دَاوُدُ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ سَالِمٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ " مَنْ صَلَّى فِي يَوْمٍ ثِنْتَىْ عَشْرَةَ سَجْدَةً تَطَوُّعًا بُنِيَ لَهُ بَيْتٌ فِي الْجَنَّةِ " .

(1695) इमाम मुस्लिम ने अपने दूसरे उस्ताद से नोमान बिन सालिम की सनद ही से बयान किया कि 'जिसने एक दिन में बारह रकअ़त नवाफ़िल पढ़े उसके लिये जन्नत में घर बनाया जायेगा।'

मुफ़रदातुल हदीस़ : यतसार इलैहि : मअ़रूफ़ और मज्हूल दोनों तरह पढ़ा गया है और ये सुरूर से माख़ूज़ है। यानी हसरत और ख़ुशी का सबब, बाइस़ बनने वाली और यहाँ सज्दह रकअ़त के मानी में है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ سَالِمٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ أَوْسٍ، عَنْ عَنْبَسَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهَا قَالَتْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يُصَلِّي لِلَّهِ كُلَّ يَوْمٍ ثِنْتَىْ عَشْرَةَ رَكْعَةً تَطَوُّعًا غَيْرَ فَرِيضَةٍ إِلاَّ بَنَى اللَّهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ أَوْ إِلاَّ بُنِيَ لَهُ بَيْتٌ فِي الْجَنَّةِ " . قَالَتْ أُمُّ حَبِيبَةَ فَمَا بَرِحْتُ أُصَلِّيهِنَّ بَعْدُ . وَقَالَ عَمْرٌو مَا بَرِحْتُ أُصَلِّيهِنَّ بَعْدُ . وَقَالَ النُّعْمَانُ مِثْلَ ذَلِكَ .

(1696) नबी (ﷺ) की ज़ौजा मोहतरमा उम्मे हबीबा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो मुसलमान बन्दा अल्लाह तआला की रज़ा के लिये हर दिन फ़र्ज़ों के सिवा ख़ुशी से बारह रकआत पढ़ता है अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में घर बनाता है या उसके लिये जन्नत में घर बनाया जायेगा।' उम्मे हबीबा कहती हैं, उस दिन से मैं हमेशा ये रकआत पढ़ रही हूँ। अ़म्र कहते हैं, उस वक़्त से मैं भी हमेशा पढ़ रहा हूँ, नोमान का भी यही क़ौल है।

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ بِشْرٍ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ هَاشِمٍ الْعَبْدِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ،

(1697) उम्मे हबीबा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो

मुसलमान बन्दा भी वुज़ू करता है और अच्छी तरह कामिल वुज़ू करता है, फिर हर दिन अल्लाह तआला की ख़ुश्नूदी के लिये .' आगे मज़्कूरा हदीस़ बयान की।

قَالَ النُّعْمَانُ بْنُ سَالِمٍ أَخْبَرَنِي قَالَ سَمِعْتُ عَمْرَو بْنَ أَوْسٍ، يُحَدِّثُ عَنْ عَنْبَسَةَ، عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ، قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ تَوَضَّأَ فَأَسْبَغَ الْوُضُوءَ ثُمَّ صَلَّى لِلَّهِ كُلَّ يَوْمٍ " . فَذَكَرَ بِمِثْلِهِ .

(1698) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ दो रकअत ज़ुहर से पहले दो रकअत ज़ुहर के बाद और दो रकअत मग़्रिब के बाद और दो रकअत इशा के बाद पढ़ीं और दो रकअत जुम्आ के बाद पढ़ीं । रही मग़्रिब और इशा और जुम्आ की सुन्नतें तो ये मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ आपके घर में पढ़ीं।

(सहीह बुख़ारी : 1172, 8164)

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، - وَهُوَ ابْنُ سَعِيدٍ - عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، قَالَ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَبْلَ الظُّهْرِ سَجْدَتَيْنِ وَبَعْدَهَا سَجْدَتَيْنِ وَبَعْدَ الْمَغْرِبِ سَجْدَتَيْنِ وَبَعْدَ الْعِشَاءِ سَجْدَتَيْنِ وَبَعْدَ الْجُمُعَةِ سَجْدَتَيْنِ فَأَمَّا الْمَغْرِبُ وَالْعِشَاءُ وَالْجُمُعَةُ فَصَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي بَيْتِهِ .

फ़वाइद : (1) ज़ुहर से पहले आम तौर पर आप चार रकआत पढ़ते थे और कई बार आपने दो रकअत भी पढ़ी हैं।

हज़रत आइशा (रज़ि.) की रिवायत है कि आप ज़ुहर से पहले चार रकअत नहीं छोड़ते थे। दूसरी रिवायत में है, अगर आपकी ज़ुहर से पहले चार रकआत रह जातीं तो आप ज़ुहर के बाद की दो रकअत के बाद चार रकआत पढ़ते थे, जिससे स़ाबित होता है कि आप सुन्नतों की क़ज़ाई देते थे और ज़ुहर के बाद भी आपने चार रकआत पढ़ने की तरग़ीब दी है। जैसाकि उम्मे हबीबा (रज़ि.) की सुनने अरबआ में सहीह रिवायात है कि जो कोई ज़ुहर से पहले चार रकआत और ज़ुहर के बाद चार रकआत की पाबंदी करेगा, अल्लाह तआला उसको दोज़ख़ की आग पर हराम कर देगा। **(2)** आप सुनन और नवाफ़िल घर में पढ़ते थे और इसकी तरग़ीब देते थे ख़ासकर मग़्रिब, इशा, फ़ज्र और जुम्आ की सुन्नतें आप घर पर अदा फ़रमाते थे।

बाब 16 : नफ़ल नमाज़ खड़े होकर और बैठकर पढ़ना और रकअत की कुछ क़िरअत बैठकर और कुछ खड़े होकर करना जाइज़ है

باب جَوَازِ النَّافِلَةِ قَائِمًا وَقَاعِدًا وَفِعْلِ بَعْضِ الرَّكْعَةِ قَائِمًا وَبَعْضِهَا قَاعِدًا

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ، قَالَ سَأَلْتُ عَائِشَةَ عَنْ صَلاَةِ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ تَطَوُّعِهِ فَقَالَتْ كَانَ يُصَلِّي فِي بَيْتِي قَبْلَ الظُّهْرِ أَرْبَعًا ثُمَّ يَخْرُجُ فَيُصَلِّي بِالنَّاسِ ثُمَّ يَدْخُلُ فَيُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ وَكَانَ يُصَلِّي بِالنَّاسِ الْمَغْرِبَ ثُمَّ يَدْخُلُ فَيُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ وَيُصَلِّي بِالنَّاسِ الْعِشَاءَ وَيَدْخُلُ بَيْتِي فَيُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ وَكَانَ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ تِسْعَ رَكَعَاتٍ فِيهِنَّ الْوِتْرُ وَكَانَ يُصَلِّي لَيْلاً طَوِيلاً قَائِمًا وَلَيْلاً طَوِيلاً قَاعِدًا وَكَانَ إِذَا قَرَأَ وَهُوَ قَائِمٌ رَكَعَ وَسَجَدَ وَهُوَ قَائِمٌ وَإِذَا قَرَأَ قَاعِدًا رَكَعَ وَسَجَدَ وَهُوَ قَاعِدٌ وَكَانَ إِذَا طَلَعَ الْفَجْرُ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ .

(1699) अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ बयान करते हैं कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) की नफ़ल नमाज़ के बारे में सवाल किया तो उन्होंने जवाब दिया कि आप मेरे घर में ज़ुहर से पहले चार रकआत पढ़ते, फिर घर से निकलते और लोगों को नमाज़ पढ़ाते। फिर घर वापस आते और दो रकअत अदा फ़रमाते और आप लोगों को मग़रिब की नमाज़ पढ़ाते, फिर घर आते और दो रकअत नमाज़ पढ़ते और लोगों को इशा की नमाज़ पढ़ाते और मेरे घर आते और दो रकअत पढ़ते और रात को वित्र समेत नौ रकआत पढ़ते और रात को काफ़ी देर तक खड़े नमाज़ पढ़ते और काफ़ी देर तक बैठे नमाज़ अदा करते और जब खड़े होकर क़िरअत करते तो रुकूअ और सज्दा भी खड़े होकर करते और जब बैठकर क़िरअत करते तो रुकूअ और सज्दा भी बैठे-बैठे कर लेते और तुलूअे फ़ज्र के बाद दो रकअत पढ़ते।

(अबू दाऊद : 1251, तिर्मिज़ी : 275, 436)

फ़ायदा : कई बार हुज़ूर (ﷺ) रात की नमाज़ ग्यारह रकअत से कम पढ़ते थे। इसी तरह कई बार आप नमाज़ में तवील क़िरअत खड़े होकर करते और उसके बाद रुकूअ और सज्दा करते और कई बार आप

नमाज़ में तवील क़िरअत बैठे-बैठे करते, फिर रुकूअ के लिये उठते नहीं थे बल्कि बैठे-बैठे रुकूअ और सज्दा कर लेते और कई बार आप क़िरअत का काफ़ी हिस्सा बैठे-बैठे पढ़ते और फिर आख़िर में तीस या चालीस आयात खड़े होकर पढ़ते फिर उसके बाद रुकूअ और सुजूद करते, ये आख़िरी उम्र का अमल है जैसाकि आगे आ रहा है।

(1700) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रात काफ़ी देर तक नमाज़ पढ़ते रहते, जब खड़े होकर नमाज़ पढ़ते तो रुकूअ भी खड़े होकर करते और जब बैठकर नमाज़ पढ़ते तो बैठकर रुकूअ करते।
(अबू दाऊद : 955, नसाई : 3/219-220)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ بُدَيْلٍ، وَأَيُّوبَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي لَيْلاً طَوِيلاً فَإِذَا صَلَّى قَائِمًا رَكَعَ قَائِمًا وَإِذَا صَلَّى قَاعِدًا رَكَعَ قَاعِدًا .

(1701) अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ बयान करते हैं कि मैं फ़ारिस में बीमार था और बैठकर नमाज़ पढ़ता था, मैंने इसके बारे में हज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने जवाब दिया, रसूलुल्लाह (ﷺ) काफ़ी देर तक खड़े होकर नमाज़ पढ़ते थे और हदीस मुकम्मल बयान की।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ بُدَيْلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ، قَالَ كُنْتُ شَاكِيًا بِفَارِسَ فَكُنْتُ أُصَلِّي قَاعِدًا فَسَأَلْتُ عَنْ ذَلِكَ عَائِشَةَ فَقَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي لَيْلاً طَوِيلاً قَائِمًا . فَذَكَرَ الْحَدِيثَ .

फ़ायदा : हज़रत आइशा (रज़ि.) का रसूलुल्लाह (ﷺ) का अमल बयान करने से ये मक़सद था कि ज़रूरत और मजबूरी की सूरत में बैठकर नमाज़ पढ़ी जा सकती है, अगर बैठकर नमाज़ न होती तो आप बैठकर नमाज़ न पढ़ते। जुम्हूर अइम्मा के नज़दीक सुनन व नवाफ़िल बैठकर पढ़ना जाइज़ हैं, अगर कोई शख़्स क़ियाम की क़ुदरत नहीं रखता या किसी उज़्र या मजबूरी की बिना पर सुनन व नवाफ़िल बैठकर पढ़ता है तो उसके अज्र व सवाब में कमी नहीं होगी और अगर क़ुदरत के बावजूद बैठकर पढ़ता है तो उसको आधा सवाब मिलेगा। फ़र्ज़ नमाज़ क़ुदरत के बावजूद बैठकर पढ़ेगा तो नमाज़ नहीं होगी क्योंकि क़ियाम फ़र्ज़ है, किसी उज़्र और मजबूरी के सिवा इसको नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता।

(1702) अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ उक़ैली बयान करते हैं कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) की रात की नमाज़ के

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ

شَقِيقٍ الْعُقَيْلِيِّ، قَالَ سَأَلْتُ عَائِشَةَ عَنْ صَلاَةِ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِاللَّيْلِ فَقَالَتْ كَانَ يُصَلِّي لَيْلاً طَوِيلاً قَائِمًا وَلَيْلاً طَوِيلاً قَاعِدًا وَكَانَ إِذَا قَرَأَ قَائِمًا رَكَعَ قَائِمًا وَإِذَا قَرَأَ قَاعِدًا رَكَعَ قَاعِدًا .

बारे में सवाल किया? तो उन्होंने जवाब दिया, आप रात काफ़ी देर तक खड़े होकर नमाज़ पढ़ते और रात का काफ़ी किस्सा बैठकर नमाज़ पढ़ते और जब आप खड़े होकर क़िरअत करते तो रुकूअ भी खड़े होकर करते और जब बैठकर क़िरअत करते तो रुकूअ भी बैठकर करते। (इब्ने माजह : 1228)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ الْعُقَيْلِيِّ، قَالَ سَأَلْنَا عَائِشَةَ عَنْ صَلاَةِ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُكْثِرُ الصَّلاَةَ قَائِمًا وَقَاعِدًا فَإِذَا افْتَتَحَ الصَّلاَةَ قَائِمًا رَكَعَ قَائِمًا وَإِذَا افْتَتَحَ الصَّلاَةَ قَاعِدًا رَكَعَ قَاعِدًا .

(1703) अ़ब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ उ़क़ैली बयान करते हैं कि हमने आ़इशा (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा, आप काफ़ी देर तक खड़े होकर और काफ़ी देर तक बैठकर नमाज़ पढ़ते, तो जब आप खड़े होकर नमाज़ शुरू करते तो रुकूअ खड़े होकर करते और जब बैठकर नमाज़ का आग़ाज़ करते तो रुकूअ बैठकर करते।

وَحَدَّثَنِي أَبُو الرَّبِيعِ الزَّهْرَانِيُّ، أَخْبَرَنَا حَمَّادٌ يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ، ح قَالَ وَحَدَّثَنَا حَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ مَيْمُونٍ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، جَمِيعًا عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، قَالَ أَخْبَرَنِي أَبِي، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقْرَأُ فِي شَىْءٍ مِنْ صَلاَةِ اللَّيْلِ جَالِسًا حَتَّى إِذَا كَبِرَ

(1704) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि मैंने रात की किसी नमाज़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) को बैठकर क़िरअत करते नहीं देखा, यहाँ तक कि जब उ़म्र रसीदा (बूढ़े) हो गये तो बैठकर क़िरअत करने लगे, यहाँ तक कि जब (तवील) सूरत की तीस या चालीस आयात रह जातीं तो उन्हें खड़े होकर पढ़ते फिर रुकूअ करते।
(सहीह बुख़ारी : 1148)

قَرَأَ جَالِسًا حَتَّى إِذَا بَقِيَ عَلَيْهِ مِنَ السُّورَةِ ثَلاَثُونَ أَوْ أَرْبَعُونَ آيَةً قَامَ فَقَرَأَهُنَّ ثُمَّ رَكَعَ .

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَزِيدَ، وَأَبِي النَّضْرِ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُصَلِّي جَالِسًا فَيَقْرَأُ وَهُوَ جَالِسٌ فَإِذَا بَقِيَ مِنْ قِرَاءَتِهِ قَدْرُ مَا يَكُونُ ثَلاَثِينَ أَوْ أَرْبَعِينَ آيَةً قَامَ فَقَرَأَ وَهُوَ قَائِمٌ ثُمَّ رَكَعَ ثُمَّ سَجَدَ ثُمَّ يَفْعَلُ فِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ مِثْلَ ذَلِكَ .

(1705) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बैठकर नमाज़ पढ़ते और बैठे-बैठे क़िरअत करते, जब आपकी क़िरअत से तीस या चालीस आयात बाक़ी रह जातीं तो आप खड़े होकर क़िरअत फ़रमाते, फिर रुकूअ करते फिर सज्दा करते, फिर दूसरी रकअत में भी इसी तरह करते।

(सहीह बुख़ारी : 1119, अबू दाऊद : 951, तिर्मिज़ी : 374, नसाई : 3/320)

फ़ायदा : हुज़ूर (ﷺ) का मामूल था कि आप तहज्जुद में तवील (लम्बी) क़िरअत फ़रमाते थे, जब तक आप उम्र रसीदा नहीं हुए और जिस्म मुबारक भारी नहीं हुआ था तब तक आप क़िरअत खड़े होकर फ़रमाते रहे। जब तबीअत में उम्र रसीदगी के आसार नुमायाँ हो गये, जिस्म बोझल हो गया तो तवील क़िरअत खड़े-खड़े मुश्किल हो गई तो आपने ये तरीक़ा इख़्तियार किया कि कुछ रकआत खड़े होकर पढ़ लेते और कुछ बैठकर और कुछ बार ऐसे भी किया कि क़िरअत खड़े होकर शुरू करने की बजाए बैठकर शुरू की और आख़िर में खड़े हो गये। इसलिये ये जाइज़ है कि इंसान बैठकर नमाज़ शुरू करे और फिर खड़ा हो जाये या खड़े होकर नमाज़ शुरू करे और फिर बैठ जाये, ज़ाहिर है इसकी ज़रूरत उस सूरत में पेश आयेगी जब क़िरअत तवील करनी हो।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ أَبِي هِشَامٍ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَمْرَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَقْرَأُ وَهُوَ قَاعِدٌ فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ قَامَ قَدْرَ مَا يَقْرَأُ إِنْسَانٌ أَرْبَعِينَ آيَةً .

(1706) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बैठकर क़िरअत फ़रमाते तो जब रुकूअ करना चाहते तो इतनी देर के लिये खड़े हो जाते जिसमें इंसान चालीस आयात पढ़ लेता है।

(नसाई : 1649, इब्ने माजह : 1226)

(1707) अल्क़मा बिन वक़्क़ास बयान करते हैं कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा, रसूलुल्लाह (ﷺ) बैठकर दो रकअत कैसे पढ़ते थे? उन्होंने जवाब दिया, आप क़िरअत करते रहते तो जब रुकूअ करने का इरादा करते खड़े हो जाते और रुकूअ करते।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو، حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَقَّاصٍ، قَالَ قُلْتُ لِعَائِشَةَ كَيْفَ كَانَ يَصْنَعُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي الرَّكْعَتَيْنِ وَهُوَ جَالِسٌ قَالَتْ كَانَ يَقْرَأُ فِيهِمَا فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ قَامَ فَرَكَعَ .

फ़ायदा : बैठकर क़िरअत करने के बाद खड़े होकर रुकूअ करने की सूरत वही है जो ऊपर गुज़र चुकी है।

(1708) अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ बयान करते हैं कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा, क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) बैठकर नमाज़ पढ़ लेते थे? उन्होंने कहा, हाँ! जब लोगों (के मामलात की फ़िक्रमन्दी और देखभाल) ने आपको कमज़ोर कर दिया।

(नसाई : 3/223)

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنْ سَعِيدٍ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ، قَالَ قُلْتُ لِعَائِشَةَ هَلْ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي وَهُوَ قَاعِدٌ قَالَتْ نَعَمْ بَعْدَ مَا حَطَمَهُ النَّاسُ .

मुफ़रदातुल हदीस : हतमहुन्नास : अरबी मुहावरा है हतम फ़ुलानन अहलुहू घर वालों ने उसे तोड़-फोड़ डाला यानी उनके मामलात की फ़िक्र में वो कमज़ोर हो गया।

मक़सद ये है कि लोगों के उमूर व हालात के फ़िक्र व एहतिमाम ने आपको कमज़ोर कर दिया, जिस्मानी आज़ा कमज़ोर हो गये और आप बुढ़ापे से दोचार हो गये।

(1709) इमाम साहब ने अपने दूसरे उस्ताद से भी मज़्कूरा बाला रिवायत बयान की है।

وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا كَهْمَسٌ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ، قَالَ قُلْتُ لِعَائِشَةَ . فَذَكَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ .

(1710) हज़रत आइशा (रज़ि.) ने अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान को बताया कि नबी (ﷺ) वफ़ात से पहले नमाज़ का बहुत सा

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، وَهَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، قَالاَ حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ قَالَ

ابْنُ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي عُثْمَانُ بْنُ أَبِي سُلَيْمَانَ، أَنَّ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَخْبَرَهُ أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم لَمْ يَمُتْ حَتَّى كَانَ كَثِيرٌ مِنْ صَلاَتِهِ وَهُوَ جَالِسٌ .

हिस्सा बैठकर पढ़ने लगे या बहुत सी नमाज़ बैठकर पढ़ते थे।

(नसाई : 3/222)

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، وَحَسَنٌ الْحُلْوَانِيُّ، كِلاَهُمَا عَنْ زَيْدٍ، قَالَ حَسَنٌ حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ الْحُبَابِ، حَدَّثَنِي الضَّحَّاكُ بْنُ عُثْمَانَ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ لَمَّا بَدَّنَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَثَقُلَ كَانَ أَكْثَرُ صَلاَتِهِ جَالِسًا .

(1711) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह (ﷺ) उम्र दराज़ हो गये या आपका बदन भारी और बोझल हो गया तो आप ज़्यादा नमाज़ बैठकर पढ़ते थे।

मुफ़रदातुल हदीस़ : बद्द-न : अगर इस लफ़्ज़ को बाबे तफ़ईल से बनायें और दाल मुशद्दद पढ़ें तो मानी होगा उम्र दराज़ हो गये और अगर इसको शरुफ़ के बाब से बनायें और दाल मुख़फ़्फ़फ़ पर पेश पढ़ें तो मानी होगा भारी भरकम हो गये।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ، عَنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ أَبِي وَدَاعَةَ السَّهْمِيِّ، عَنْ حَفْصَةَ، أَنَّهَا قَالَتْ مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم صَلَّى فِي سُبْحَتِهِ قَاعِدًا حَتَّى كَانَ قَبْلَ وَفَاتِهِ بِعَامٍ فَكَانَ يُصَلِّي فِي سُبْحَتِهِ قَاعِدًا وَكَانَ يَقْرَأُ بِالسُّورَةِ فَيُرَتِّلُهَا حَتَّى تَكُونَ أَطْوَلَ مِنْ أَطْوَلَ مِنْهَا .

(1712) हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) बयान करती हैं कि मैंने कभी रसूलुल्लाह (ﷺ) को नफ़ली नमाज़ बैठकर पढ़ते नहीं देखा यहाँ तक कि वफ़ात से एक साल पहले तो आप नफ़ली नमाज़ बैठकर पढ़ने लगे कि आप सूरह पढ़ते और उसे ठहर-ठहर कर पढ़ते यहाँ तक कि वो अपने से तवील सूरत से भी लम्बी हो जाती।

(तिर्मिज़ी : 373, नसाई : 1657)

मुफ़रदातुल हदीस़ : युरत्तिलुहा : इसको आहिस्ता-आहिस्ता ठहर-ठहर कर पढ़ते।

(1713) इमाम साहब दूसरे उस्तादों से भी मज़्कूरा बाला रिवायत बयान करते हैं, उसमें ये है जब एक या दो साल रह गये।

وَحَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، وَحَرْمَلَةُ، قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، جَمِيعًا عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ غَيْرَ أَنَّهُمَا قَالاَ بِعَامٍ وَاحِدٍ أَوِ اثْنَيْنِ

(1714) हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) का इन्तिक़ाल नहीं हुआ यहाँ तक कि आप बैठकर नमाज़ पढ़ने लगे।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ حَسَنِ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ سِمَاكٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي جَابِرُ بْنُ سَمُرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَمُتْ حَتَّى صَلَّى قَاعِدًا .

(1715) अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) बयान करते हैं मुझे बताया गया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया है, 'आदमी की बैठकर नमाज़ आधी नमाज़ है।' तो मैं आपके पास आया और मैंने आपको बैठकर नमाज पढ़ते पाया तो मैंने अपना हाथ आपके सर मुबारक पर रख दिया तो आपने पूछा, 'ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र! तुम्हें क्या हुआ है?' मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे बताया गया है कि आपने फ़रमाया है, 'आदमी की बैठकर नमाज़ आधी नमाज़ के बराबर है।' यानी बैठकर नमाज़ पढ़ने की सूरत में आधा अज्र मिलता है और आपने बैठकर नमाज़ पढ़ी हैं? आपने फ़रमाया, 'हाँ! लेकिन मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ।'

(अबू दाऊद : 950, नसाई : 3/223)

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ يَسَافٍ، عَنْ أَبِي يَحْيَى، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ حُدِّثْتُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " صَلاَةُ الرَّجُلِ قَاعِدًا نِصْفُ الصَّلاَةِ " . قَالَ فَأَتَيْتُهُ فَوَجَدْتُهُ يُصَلِّي جَالِسًا فَوَضَعْتُ يَدِي عَلَى رَأْسِهِ فَقَالَ مَا لَكَ يَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو قُلْتُ حُدِّثْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنَّكَ قُلْتَ " صَلاَةُ الرَّجُلِ قَاعِدًا عَلَى نِصْفِ الصَّلاَةِ " . وَأَنْتَ تُصَلِّي قَاعِدًا قَالَ " أَجَلْ وَلَكِنِّي لَسْتُ كَأَحَدٍ مِنْكُمْ " .

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ جَمِيعًا عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جَعْفَرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، كِلاَهُمَا عَنْ مَنْصُورٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَفِي رِوَايَةِ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي يَحْيَى الأَعْرَجِ، .

(1716) मुसन्निफ़ ने यही हदीस़ दूसरे उस्तादों से बयान की है।

फ़वाइद : (1) इंसान चाहे जिस क़द्र बुज़ुर्गी का मालिक हो और उससे लोगों को कैसी ही अक़ीदत व मुहब्बत हो अगर उसके क़ौल व अ़मल में तवाफ़ुक़ न हो बल्कि तज़ाद हो तो देखने वाला उसकी बिना पर हैरत व तअ़ज्जुब में मुब्तला हो जाता है और यही चाहता है कि इसके क़ौल व अ़मल में बराबरी होनी चाहिये तज़ाद नहीं और आज हमारे क़ौल व अ़मल का तज़ाद एक मामूल बन चुका है। जिसकी बिना पर हमारे क़ौल का अस़र ख़त्म हो गया है और उम्मत तबाही का शिकार हो गई है। (2) रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये इम्तियाज़ और ख़ुसूसियत हासिल है कि आप अगर क़ुदरत के बावजूद बैठकर नमाज़ पढ़ते तो आपको पूरा स़वाब मिलता, लेकिन आपने उ़मूमन ज़ौफ़ और कमज़ोरी की बिना पर ही बैठकर नमाज़ पढ़ी है। जैसाकि हज़रत आ़इशा व हफ़्सा (रज़ि.) की रिवायात से ये बात खुलकर सामने आ चुकी है।

باب صَلاَةِ اللَّيْلِ وَعَدَدِ رَكَعَاتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي اللَّيْلِ وَأَنَّ الْوِتْرَ رَكْعَةٌ وَأَنَّ الرَّكْعَةَ صَلاَةٌ صَحِيحَةٌ

बाब 17 : रात की नमाज़ और रसूलुल्लाह (ﷺ) की रात की नमाज़ की रकअ़ात की तादाद और वित्र एक रकअ़त है और एक रकअ़त नमाज़ पढ़ना सहीह है

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُصَلِّي بِاللَّيْلِ إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً يُوتِرُ مِنْهَا بِوَاحِدَةٍ فَإِذَا فَرَغَ مِنْهَا اضْطَجَعَ عَلَى شِقِّهِ الأَيْمَنِ حَتَّى يَأْتِيَهُ الْمُؤَذِّنُ فَيُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ خَفِيفَتَيْنِ .

(1717) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रात को ग्यारह रकअ़ात पढ़ते थे उनमें से एक वित्र होता था, आप जब उससे फ़ारिग़ हो जाते तो दायें पहलू पर लेट जाते। यहाँ तक कि आपके पास मुअज़्ज़िन आ जाता तो आप दो हल्की रकअ़तें पढ़ते।

(अबू दाऊद : 1336, तिर्मिज़ी : 440-441, नसाई : 1695, 3/243)

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي فِيمَا بَيْنَ أَنْ يَفْرُغَ مِنْ صَلاَةِ الْعِشَاءِ - وَهِيَ الَّتِي يَدْعُو النَّاسُ الْعَتَمَةَ - إِلَى الْفَجْرِ إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً يُسَلِّمُ بَيْنَ كُلِّ رَكْعَتَيْنِ وَيُوتِرُ بِوَاحِدَةٍ فَإِذَا سَكَتَ الْمُؤَذِّنُ مِنْ صَلاَةِ الْفَجْرِ وَتَبَيَّنَ لَهُ الْفَجْرُ وَجَاءَهُ الْمُؤَذِّنُ قَامَ فَرَكَعَ رَكْعَتَيْنِ خَفِيفَتَيْنِ ثُمَّ اضْطَجَعَ عَلَى شِقِّهِ الأَيْمَنِ حَتَّى يَأْتِيَهُ الْمُؤَذِّنُ لِلإِقَامَةِ .

(1718) नबी (ﷺ) की ज़ौजा मोहतरमा हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इशा की नमाज़ जिसको लोग अतमा कहते हैं, से फ़राग़त से लेकर फ़ज्र तक ग्यारह रकआत पढ़ते थे, हर दो रकअत पर सलाम फेरते और एक वित्र पढ़ते। जब मुअज़्ज़िन सुबह की नमाज़ की अज़ान कहकर ख़ामोश हो जाता और आपके सामने सुबह रोशन हो जाती और आपके पास मुअज़्ज़िन आ जाता तो आप उठकर दो हल्की रकआत पढ़ते फिर अपने दायें पहलू पर लेट जाते, यहाँ तक कि मुअज़्ज़िन आपके पास इक़ामत की इत्तिलाअ के लिये आ जाता। इन तीन उमूर में वा तर्तीब के लिये नहीं है। तर्तीब इसी तरह है इज़ा तबय्यनल फ़ज्र जब फ़ज्र रोशन हो जाती व जाअहुल मुअज़्ज़िन उसके लिये मुअज़्ज़िन आ जाता व सकतल मुअज़्ज़िन और मुअज़्ज़िन अज़ान से फ़ारिग़ हो जाता फिर आप दो रकअत पढ़ते।

(अबू दाऊद : 1337, नसाई : 2/30, 3/65)

फ़ायदा : हज़रत आइशा (रज़ि.) की रिवायत से साबित होता है कि हुज़ूर (ﷺ) रात को दो-दो रकआत पर सलाम फेरते थे और आख़िर में जाकर एक रकअत अलग पढ़ लेते थे। इस तरह रात की नमाज़ वित्र (ताक़) हो जाती थी और वित्र से फ़राग़त के बाद लेट जाते थे। कई बार वित्र से फ़राग़त की बजाए सुन्नते फ़ज्र के बाद लेट जाते और मुअज़्ज़िन की इक़ामत की इत्तिलाअ तक लेटे रहते। सुनन अबू दाऊद और तिर्मिज़ी में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की रिवायत है आपने फ़रमाया, **'जब तुममें से कोई फ़ज्र की दो रकअत पढ़े तो वो अपने दायें करवट लेट जाये।'**

(1719) इमाम साहब अपने दूसरे उस्ताद से ज़ोहरी की इस सनद से रिवायत बयान करते हैं, लेकिन इसमें सुबह के रोशन हो जाने का तज़्किरा नहीं है, इस तरह मुअज़्ज़िन की आमद का तज़्किरा नहीं है, इक़ामत का ज़िक्र नहीं है। बाक़ी हदीस ऊपर की तरह है।
(नसाई : 3/65)

وَحَدَّثَنِيهِ حَرْمَلَةُ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَسَاقَ حَرْمَلَةُ الْحَدِيثَ بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّهُ لَمْ يَذْكُرْ وَتَبَيَّنَ لَهُ الْفَجْرُ وَجَاءَهُ الْمُؤَذِّنُ . وَلَمْ يَذْكُرِ الإِقَامَةَ . وَسَائِرُ الْحَدِيثِ بِمِثْلِ حَدِيثِ عَمْرٍو سَوَاءً .

(1720) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रात को तेरह (13) रकआत पढ़ते थे, उसमें पाँच वित्र होते थे, जिनमें आप सिर्फ़ आख़िरी रकअत में (तशह्हुद के लिये) बैठते थे।
(तिर्मिज़ी : 459)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ ثَلاَثَ عَشْرَةَ رَكْعَةً يُوتِرُ مِنْ ذَلِكَ بِخَمْسٍ لاَ يَجْلِسُ فِي شَىْءٍ إِلاَّ فِي آخِرِهَا .

फ़ायदा : हुज़ूर (ﷺ) से रात की नमाज़ की अलग-अलग सूरतें साबित हैं, आपका आम मामूल यही था कि आप वित्र समेत ग्यारह रकअत पढ़ते थे, लेकिन कई मसरूफ़ियात, मर्ज़, नींद या तकलीफ़ के सबब इसमें कमी व बेशी की है। आख़िरी उम्र में उम्र दराज़ होने की बिना पर भी आपने कमी की है, इसलिये आप से सात, नौ, ग्यारह, तेरह रकआत साबित हैं। हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम (रह.) ने आपकी रात की नमाज़ की आठ शक्लें बयान फ़रमाई हैं।

वित्र आपने कभी आख़िर में एक ही पढ़ा है। इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद के नज़दीक बेहतर तरीक़ा यही है कि आख़िर में एक ही वित्र पढ़ा जाये और आपने एक सलाम से दरम्यान में बैठे बग़ैर तीन वित्र भी पढ़े हैं और पाँच भी जिनमें आप सिर्फ़ पाचवीं रकअत पर बैठे हैं, सात वित्र भी पढ़े हैं, जिनमें आप छठी रकअत पर बैठे लेकिन सलाम सातवें रकअत पर बैठकर फेरते, इस तरह नौ वित्र पढ़े हैं, आठवीं रकअत पर बैठकर सलाम नवीं रकअत पर फेरा है। ये सारी ही सूरतें जाइज़ हैं, अहनाफ़ के नज़दीक वित्र की सिर्फ़ एक सूरत है कि वित्र तीन हैं और उनको मग़्रिब की तरह दो तशह्हुदों से पढ़ा जायेगा। हालांकि सहीह इब्ने हिब्बान की रिवायत में जिसको इमाम हाकिम, इमाम ज़हबी और इमाम बैहक़ी ने सहीह क़रार दिया है इस सूरत से मना किया गया है।

(1721) इमाम साहब ने अपने दूसरे उस्तादों से भी यही रिवायत बयान की है।
(इब्ने माजह : 1359, 17052)

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، ح وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، وَأَبُو أُسَامَةَ كُلُّهُمْ عَنْ هِشَامٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(1722) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़ज्र की दो रकअत सुन्नत समेत तेरह रकआत पढ़ा करते थे।
(अबू दाऊद : 1360)

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ عِرَاكِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ عُرْوَةَ، أَنَّ عَائِشَةَ، أَخْبَرَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُصَلِّي ثَلاَثَ عَشْرَةَ رَكْعَةً بِرَكْعَتَىِ الْفَجْرِ .

(1723) हज़रत अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रमज़ान में नमाज़ कैसे पढ़ते थे? उन्होंने जवाब दिया, रमज़ान और उसके अलावा महीनों में आप ग्यारह रकआत से ज़्यादा नहीं पढ़ते। चार रकआत पढ़ते, उनके हुस्न और तवालत (लम्बाई) के बारे में मत पूछिये, फिर चार रकआत पढ़ते, उनके हुस्न और तवालत के बारे में न पूछिये, फिर तीन रकआत पढ़ते। हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आप वित्र पढ़ने से पहले सो जाते हैं? तो आपने फ़रमाया, 'ऐ आइशा! मेरी आँखें सोती हैं और मेरा दिल बेदार रहता है।'
(सहीह बुख़ारी : 1147, 2013, 3569, अबू दाऊद : 1341, तिर्मिज़ी : 439, नसाई : 3/234)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ كَيْفَ كَانَتْ صَلاَةُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي رَمَضَانَ قَالَتْ مَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَزِيدُ فِي رَمَضَانَ وَلاَ فِي غَيْرِهِ عَلَى إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً يُصَلِّي أَرْبَعًا فَلاَ تَسْأَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَطُولِهِنَّ ثُمَّ يُصَلِّي أَرْبَعًا فَلاَ تَسْأَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَطُولِهِنَّ ثُمَّ يُصَلِّي ثَلاَثًا فَقَالَتْ عَائِشَةُ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتَنَامُ قَبْلَ أَنْ تُوتِرَ فَقَالَ " يَا عَائِشَةُ إِنَّ عَيْنَىَّ تَنَامَانِ وَلاَ يَنَامُ قَلْبِي " .

फ़ायदा : आप रात की नमाज़ में क़ियाम बहुत ही लम्बा फ़रमाते थे, इसलिये आइशा (रज़ि.) फ़रमाती हैं, उनके हुस्न और तूल के बारे में सवाल की ज़रूरत नहीं है। इस बिना पर आप चार रकआत

पढ़ने के बाद कुछ वक़्फ़ा फ़रमाते, फिर चार रकआत के बाद वक़्फ़ा फ़रमाते और फिर आख़िर में तीन पढ़ते, लेकिन उनके पढ़ने की कैफ़ियत वही थी जो हज़रत आइशा (रज़ि.) की पहली रिवायत में गुज़र चुकी है आप रात की नमाज़ दो रकअत करके पढ़ते थे और आख़िर में एक वित्र पढ़ते थे।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، قَالَ سَأَلْتُ عَائِشَةَ عَنْ صَلاَةِ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ كَانَ يُصَلِّي ثَلاَثَ عَشْرَةَ رَكْعَةً يُصَلِّي ثَمَانَ رَكَعَاتٍ ثُمَّ يُوتِرُ ثُمَّ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ وَهُوَ جَالِسٌ فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ قَامَ فَرَكَعَ ثُمَّ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ بَيْنَ النِّدَاءِ وَالإِقَامَةِ مِنْ صَلاَةِ الصُّبْحِ .

(1724) अबू सलमा बयान करते हैं कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ के बारे में सवाल किया तो उन्होंने बताया, आप तेरह (13) रकअत पढ़ते थे, आठ रकआत पढ़ते, फिर वित्र अदा फ़रमाते। फिर बैठकर दो रकअत पढ़ते और जब रुकूअ करना चाहते, उठ खड़े होते और रुकूअ करते। फिर अज़ान और सुबह की नमाज़ की इक़ामत के दरम्यान दो रकअत पढ़ते।

(अबू दाऊद : 1340, नसाई : 3/251, 3/256)

फ़ायदा : इस हदीस़ से मालूम होता है कि आप कई बार वित्रों से फ़राग़त के बाद भी दो रकअत पढ़ लेते थे, जो वित्रों का ततिम्मा और तक्मिला थीं, मुस्तक़िल नमाज़ न थी।

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ يَحْيَى، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ، ح وَحَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ بِشْرٍ الْحَرِيرِيُّ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ، - يَعْنِي ابْنَ سَلاَّمٍ - عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ، أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ عَنْ صَلاَةِ، رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّ فِي حَدِيثِهِمَا تِسْعَ رَكَعَاتٍ قَائِمًا يُوتِرُ مِنْهُنَّ .

(1725) अबू सलमा ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ के बारे में पूछा तो उन्होंने जवाब दिया, आप खड़े होकर वित्र समेत नौ रकआत पढ़ते थे।

وَحَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي لَبِيدٍ، سَمِعَ أَبَا سَلَمَةَ،

(1726) अबू सलमा बयान करते हैं, मैं हज़रत आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूछा, ऐ अम्मी! मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ के बारे में बताइये तो उन्होंने

قَالَ أَتَيْتُ عَائِشَةَ فَقُلْتُ أَىْ أُمَّهْ أَخْبِرِينِي عَنْ صَلاَةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَقَالَتْ كَانَتْ صَلاَتُهُ فِي شَهْرِ رَمَضَانَ وَغَيْرِهِ ثَلاَثَ عَشْرَةَ رَكْعَةً بِاللَّيْلِ مِنْهَا رَكْعَتَا الْفَجْرِ .

कहा, आपकी नमाज़ रात को रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में फ़ज्र की सुन्नतों समेत तेरह (13) रकआत थीं।

حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا حَنْظَلَةُ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، قَالَ سَمِعْتُ عَائِشَةَ، تَقُولُ كَانَتْ صَلاَةُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنَ اللَّيْلِ عَشْرَ رَكَعَاتٍ وَيُوتِرُ بِسَجْدَةٍ وَيَرْكَعُ رَكْعَتَىِ الْفَجْرِ فَتِلْكَ ثَلاَثَ عَشْرَةَ رَكْعَةً .

(1727) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रात को दस रकआत पढ़ते और एक वित्र पढ़ते और दो रकअत सुन्नते फ़ज्र पढ़ते, ये तेरह (13) रकआत हुईं।

(सहीह बुख़ारी : 1140, अबू दाऊद : 1334)

फ़ायदा : इन अहादीस़ से मालूम होता है कि रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में आपका मामूल यकसाँ (बराबर) था, जो आम तौर पर वित्र समेत ग्यारह (11) रकआत था, उनमें कमी व बेशी किसी सबब या उज़्र की बिना पर हुई है।

وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ سَأَلْتُ الأَسْوَدَ بْنَ يَزِيدَ عَمَّا حَدَّثَتْهُ عَائِشَةُ، عَنْ صَلاَةِ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ كَانَ يَنَامُ أَوَّلَ اللَّيْلِ وَيُحْيِي آخِرَهُ ثُمَّ إِنْ كَانَتْ لَهُ حَاجَةٌ إِلَى أَهْلِهِ قَضَى حَاجَتَهُ ثُمَّ يَنَامُ فَإِذَا كَانَ عِنْدَ النِّدَاءِ الأَوَّلِ - قَالَتْ - وَثَبَ - وَلاَ وَاللَّهِ مَا قَالَتْ قَامَ - فَأَفَاضَ عَلَيْهِ الْمَاءَ - وَلاَ وَاللَّهِ مَا قَالَتِ اغْتَسَلَ .

(1728) अबू इस्हाक़ कहते हैं, मैंने अस्वद बिन यज़ीद से उस हदीस़ के बारे में पूछा जो उसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ के बारे में बयान की थी आइशा (रज़ि.) ने बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रात के पहले हिस्से में सो जाते और आख़िरी हिस्से में बेदार हो जाते, फिर अगर बीवी से कोई ज़रूरत होती तो अपनी ज़रूरत पूरी करते फिर सो जाते। जब पहली अज़ान का वक़्त होता तो (बिस्तर से) उछल पड़ते, अल्लाह की क़सम! आइशा ने वस़ब (कूदना, उछलना) कहा, क़ामा (उठना) नहीं कहा। फिर अपने ऊपर पानी बहाते, अल्लाह की

وَأَنَا أَعْلَمُ مَا تُرِيدُ - وَإِنْ لَمْ يَكُنْ جُنُبًا تَوَضَّأَ وُضُوءَ الرَّجُلِ لِلصَّلاَةِ ثُمَّ صَلَّى الرَّكْعَتَيْنِ .

क़सम! आइशा ने ग़ुस्ल नहीं कहा, अफ़ाज़ अलैहिल माअ कहा। मैं आपकी मुराद को ख़ूब समझता था। अगर आप जुन्बी न होते तो इंसान के नमाज़ के लिये वुज़ू की तरह वुज़ू फ़रमाते फिर दो रकअ़त (सुन्नते फ़ज्र) पढ़ते।
(नसाई : 1639)

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है कि आप कभी रात को जल्द उठकर, रात की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर बीवी से ताल्लुक़ात क़ायम करने के बाद सो जाते और सुबह की अज़ान के बाद जल्दी बेदार होकर ग़ुस्ल फ़रमाकर फ़ज्र की सुन्नतें पढ़ते, सुबह की सुन्नतें हर हाल में नमाज़े फ़ज्र से पहले पढ़ते।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا عَمَّارُ بْنُ رُزَيْقٍ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ حَتَّى يَكُونَ آخِرَ صَلاَتِهِ الْوِتْرُ .

(1729) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रात को नमाज़ पढ़ते और नमाज़ के आख़िर में वित्र होता।

फ़ायदा : आम तौर पर आपकी रात की नमाज़ का इख़्तिताम वित्र पर होता था लेकिन कभी-कभार वित्र के बाद दो रकअ़त बैठकर पढ़ लेते।

حَدَّثَنِي هَنَّادُ بْنُ السَّرِيِّ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَشْعَثَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ سَأَلْتُ عَائِشَةَ عَنْ عَمَلِ، رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ كَانَ يُحِبُّ الدَّائِمَ . قَالَ قُلْتُ أَىَّ حِينٍ كَانَ يُصَلِّي فَقَالَتْ كَانَ إِذَا سَمِعَ الصَّارِخَ قَامَ فَصَلَّى .

(1730) मसरूक़ बयान करते हैं कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) के अ़मल के बारे में पूछा तो उन्होंने जवाब दिया, आप अ़मल पर दवाम व हमेशगी को पसंद फ़रमाते थे। मैंने पूछा, आप किस वक़्त नमाज़ पढ़ते थे? कहा, जब मुर्ग़ अज़ान देता तो आप उठकर नमाज़ पढ़ते।
(सहीह बुख़ारी : 1132, 6461, अबू दाऊद : 1318, इब्ने माजह : 1197)

फ़ायदा : आप कभी आधी रात को, कभी आधी रात से कुछ पहले या कुछ वक़्त बाद में उठते और कभी मुर्ग़ की अज़ान पर उठते और वो मुर्ग़ अज़ान आधी रात के बाद देता है।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ بِشْرٍ، عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ سَعْدٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ مَا أَلْفَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم السَّحَرُ الأَعْلَى فِي بَيْتِي - أَوْ عِنْدِي - إِلاَّ نَائِمًا .

(1731) हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि मैंने हमेशा आपको रात के आख़िरी हिस्से में अपने घर में या अपने पास सोये हुए पाया (यानी रसूलुल्लाह (ﷺ) को रात के आख़िरी हिस्से में, मेरे घर में या मेरे पास सोये हुए पाया)।

(सहीह बुख़ारी : 1132, 6461, अबू दाऊद : 1318, इब्ने माजह : 1197)

मुफ़रदातुल हदीस़ : (1) मा अल्फ़ा : नहीं पाया। **(2) सहरल अअ्ला :** रात का आख़िरी हिस्सा, सुबह के क़रीब का वक़्त।

फ़ायदा : हुज़ूर (ﷺ) जब रात की नमाज़ से सुबह से पहले फ़ारिग़ हो जाते तो लेट जाते थे और कई बार सो भी जाते थे।